॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥ ॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य शतोत्तर पञ्चसहस्राब्दी
(५१००वें) जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष में

विराट् सनातन धर्म सम्मेलन

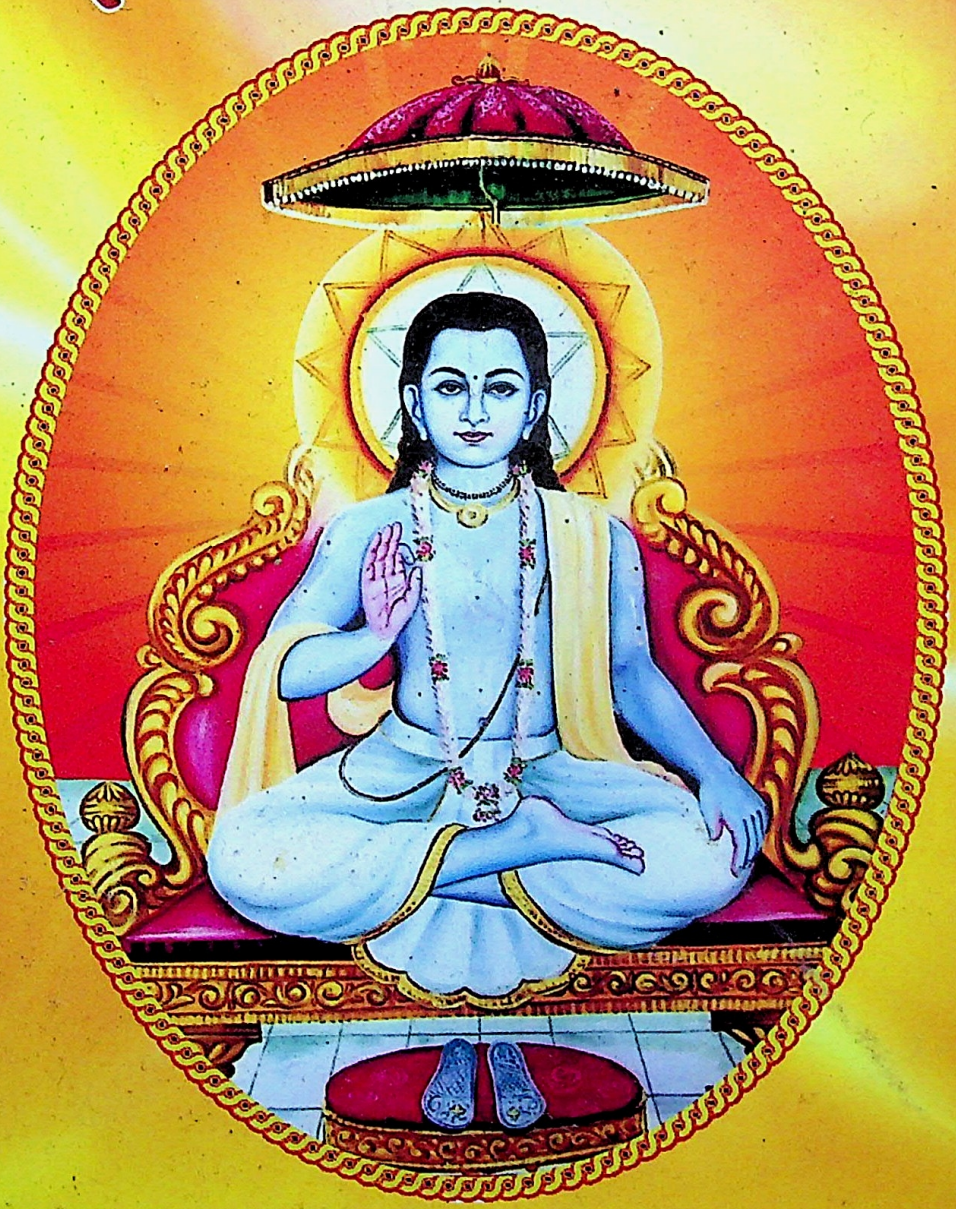

स्मारिका

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्क तीर्थ-सलेमाबाद, किशनगढ़, पुष्करक्षेत्र, जिला-अजमेर (राज.)

।। श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय की आचार्य परम्परा ।।

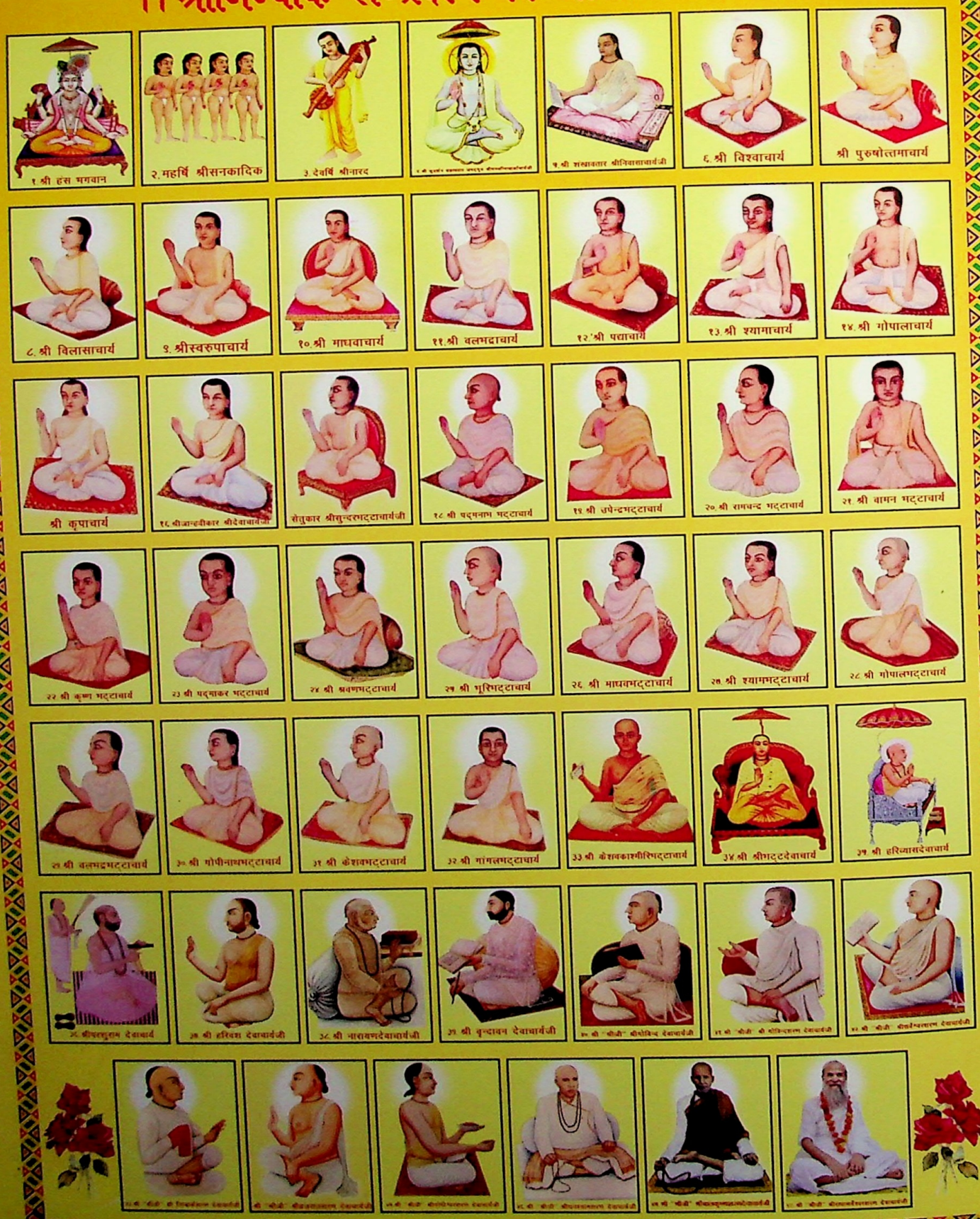

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥ ॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य शतोत्तर पञ्चसहस्राब्दी
(५१००वें) जयन्ती महोत्सव
के उपलक्ष में

विराट् सनातन धर्म सम्मेलन

(कार्तिक शुक्ल अक्षय नवमी शनिवार सं.२०६१ से
मार्गशीर्ष कृष्ण १ शनिवार दि० २०-११से २७-११-२००४ पर्यन्त)

प्रेरक व संरक्षक जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज

स्मारिका

प्रधान सम्पादक	-	श्री वासुदेवशरण उपाध्याय
सम्पादक	-	पं. श्री रामस्वरूप गौड़
	-	श्री ओमप्रकाश शर्मा
लिपिकार	-	श्री अशोक शर्मा (हाथरस)

प्रकाशक :

श्री भगवान्निम्बार्काचार्य ५१००वाँ जयन्ती
विराट् सनातन धर्म सम्मेलन - महोत्सव समिति
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्क तीर्थ-सलेमाबाद, किशनगढ़, पुष्करक्षेत्र,
जिला-अजमेर (राज.) फोन नं. 01497 - 227831

© निम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्क तीर्थ

संस्करण
विक्रम संवत् २०६६, सन्- 2009

प्रधान सम्पादक
श्री वासुदेवशरण उपाध्याय
सम्पादक
पं. श्री रामस्वरूप गौड़
श्री ओमप्रकाश शर्मा

प्राप्ति स्थान:
जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्क तीर्थ,
सलेमाबाद, अजमेर, (राज.)

कम्प्यूटर टाईप सेटिंग व प्रिंटिंग :
जयपुर प्रिंटिंग सेन्टर
एफ-23, सी-5, मालवीय इंडस्ट्रीयल एरिया,
फोन नं. 0141- 4028896, 4015220
जयपुर-302012

क्रमणिका

१.	क्रमणिका	१
२.	जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' महाराज का शुभाशीर्वाद	२
३.	सम्पादकीय	४
४.	श्रीनिम्बार्काचार्य सनातन धर्म व सनातन धर्म सम्मेलन	६
५.	सुदर्शन चक्रावतार नियमानंद से जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य	१०
६.	वेदान्त कामधेनु-दशश्लोकी	१३
७.	प्रातः स्मरणस्तोत्रम्	१६
८.	श्रीराधाष्टकम्	१८
९.	श्रीनिम्बार्काचार्य का आविर्भाव वृतान्त	२०
१०.	श्री निम्बार्काचार्य पीठ द्वारा संचालित पारमार्थिक संस्थाएँ एवं सेवायें	२१
११.	महोत्सव समिति	२३
१२	विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का संक्षिप्त कार्य विवरण	३७
१३.	उद्घाटन सत्र	१
१४.	शिक्षा सम्मेलन	१३
१५.	संस्कृत संस्कृति सम्मेलन	३५
१६.	मातृ शक्ति सम्मेलन	५०
१७.	मानव धर्म सम्मलेन	७५
१८.	देवस्थान सुरक्षा सम्मेलन	९२
१९.	गोरक्षा सम्मेलन	११७
२०.	षड् दर्शन सम्मेलन	१४६
२१.	वैदिक सम्मेलन	१८१
२२.	वैष्णव धर्म सम्मेलन	२१७
२३.	निम्बार्क दर्शन सम्मेलन -प्रथम भाग	२५४
२४.	निम्बार्क दर्शन सम्मेलन -द्वितीय भाग	२७८
२५.	श्रीभगन्निम्बार्काचार्य जन्मदिन महोत्सव	२९५
२६.	अभिनन्दग्रन्थ ''निम्बार्क गौरव '' समर्पण एवं परिचय अभिनन्दनीय निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वर शरण देवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज के व्यक्तित्व का संस्तवन	२९७
२७.	समापन सत्र	३०९

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीमन्निखिलमहीमण्डलाचार्य, चक्रचूड़ामणि, सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र, द्वैताद्वैतप्रवर्तक, यतिपतिदिनेश, राजराजेन्द्रसमभ्यर्चितचरणकमल, भगवन्निम्बार्काचार्यपीठविराजित, अनन्तानन्त श्रीविभूषित

जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

की

शुभाशीर्वादात्मक मंगलमयी अभिकामना

भारतवर्ष की अति पावन सुरम्य धरा की अनन्त असीम महिमा है जहाँ पर समय-समय पर अनादि वैदिक सनातन धर्म के अभिवर्द्धन एवं उसके संरक्षण के लिए अनन्तकोटिब्रह्माण्डाधिपति अखिलान्तरात्मा भगवान् श्रीसर्वेश्वर कभी मर्यादापुरषोत्तम भगवान श्रीरामरूप में तो कभी लीला पुरूषोत्तम व्रजवृन्दावनविहारी श्रीकृष्ण के रूप में तो कभी विभिन्न अवतारों एवं अपने नित्य दिव्यपार्षदों के रूप में अवतीर्ण होते हैं।

उन्हीं परम दिव्य भगवत्पार्षदों में चक्रराज श्रीसुदर्शन हैं जो सदा सर्वदा वेणुवत् श्रीहरि के करसरोरुहों में सुशोभित रहते हैं। ये ही आयुधराज श्रीसुदर्शन भगवान् श्रीकृष्ण की इस आज्ञा --

सुदर्शन! महाबाहो! सूर्यकोटिसमप्रभ! । अज्ञानतिमिरान्धानां विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय ।।

को शिरोधार्य कर इस भारत के दक्षिणाञ्चल में वैडूर्यपत्तन अर्थात् वर्तमान में पैठण निकट परम पुण्यसलिला श्रीगोदावरी तटवर्ती मूंगी ग्रामस्थ अरुणाश्रम में माताजयन्ती के यहाँ प्रकट होकर कुछ ही कालान्तर में व्रजस्थ श्रीगोवर्धन समीपवर्ती रमणीय आश्रम में अपने पितृचरण एवं माताश्री के साथ पधार कर श्रीभगवत्-आराधना में तथा तपश्चर्या में तत्पर हुए। जिस पावनआश्रम में आपश्री ने तपःसाधना की उस स्थल का आपश्री के निम्बार्क नाम से ही निम्बग्राम (नीमगाँव) नाम प्रसिद्ध हुआ। आपका शैशवावस्था का नाम नियमानन्द सर्वविदित था। जब आपश्री ने दिवाभोजी यतिरूप जगत्स्रष्टा श्रीब्रह्मा को सूर्यास्त होने पर पुनः निम्बवृक्ष पर सूर्य का दर्शन कराके उनको भगवत्प्रसाद (भोजन) कराके आतिथ्य किया उसी से श्रीब्रह्मदेव ने आपश्री को ''निम्बार्क'' नाम से सम्बोधित किया। तभी से आप सर्वत्र श्रीनिम्बार्क नाम से विख्यात हुए। देवर्षिप्रवर श्रीनारदजी द्वारा

श्रीगोपालमन्त्रराज के उपदेश के साथ महर्षिवर्य श्रीसनकादि संसेवित भगवान् श्रीसर्वेश्वर की सेवा प्राप्त की। श्रीसर्वेश्वर प्रभु दक्षिणावर्ती चक्राङ्कित गुञ्जाफलसदृश शालग्राम विग्रह स्वरूप हैं और महर्षिवर्य श्रीसनकादि परिसेवित हैं, जो आपसे देवर्षि श्रीनारदजी को प्राप्त हुए और यही सेवा विग्रह देवर्षि श्रीनारदजी से श्रीनिम्बार्क भगवान् को सम्प्राप्त हुए। जो आचार्य-परम्परा परिसेवित अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) पुष्करक्षेत्र किशनगढ़, जि. अजमेर (राजस्थान) में विराजमान हैं।

निम्बार्क-सम्प्रदाय-प्रवर्तक आद्याचार्य जगद्गुरुवरेण्य सुदर्शनचक्रावतार श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य का प्राकट्य द्वापरान्त एवं कलियुग के प्रारम्भ काल में हुआ था। आपने प्रस्थानत्रयी पर भाष्यों की रचना कर अपने दर्शनिक सिद्धान्त स्वाभाविक-द्वैताद्वैत का प्रतिष्ठापन किया। आप द्वारा प्रणीत ''ब्रह्मसूत्र'' पर ''वेदान्तपारिजातसौरभ'' नामक वृत्त्यात्मक भाष्य परम द्रष्टव्य है। नित्यनिकुञ्जवृन्दावनबिहारी सर्वेश्वर श्रीराधाकृष्ण की दिव्य उपासना ही आचार्यवर्य का परम लक्ष्य है और एकादशीव्रतादि में कपालवेध सिद्धान्त को ही मान्यता दी है।

अ०भा० श्री निम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में सम्पादित श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यवर्य का पाँच हजार एकसोवां (५१००) जयन्ती समारोह के अन्तर्गत विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का यह मङ्गलमय महान् समारोह भी अनुपम एवं अनिर्वचनीय रहा है। वस्तुतः यह प्रस्तुत प्रसङ्ग लेखनी का माध्यम नहीं है। जिन महानुभावों ने इसे प्रत्यक्ष रूप से दर्शन कर आनन्द लाभ एवं अद्भुत प्रेरणा प्राप्त की है वह निश्चय ही अवर्णनीय है।

सम्प्रति उसी अनुपमेय समारोह की 'स्मारिका' का प्रकाशन अत्यन्त हृदयग्राही कार्य हुआ है। इसके सम्पादक, मुद्रक तथा सामग्री संकलनकर्ता प्रभृति सभी अतीव धन्यवादार्ह हैं। जो भी उत्तमोत्तम कार्य होता है उसमें एकमात्र सर्वनियन्ता सर्वज्ञ सर्वप्रेरक भगवान् सर्वेश्वर श्रीराधामाधव प्रभु का एवं उन्हीं के अनुग्रहविग्रहस्वरूप श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यश्री का अनुकम्पा विधान ही प्रमुख है।

मिति - कार्तिक कृष्ण १४ शनिवार
वि० सं० २०६६

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

सम्पादकीय ...✍

अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद (अजमेर) में कार्तिक शुक्ल ९ शनिवार संवत् २०६१ दिनांक २०-११-२००४ से मार्गशीर्ष कृष्ण १ शनिवार दि. २७-११.२००४ पर्यन्त अष्टदिवसीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का भव्य एवं विशाल आयोजन किया गया यह आयोजन सुदर्शन चक्रावतार श्री भगवन्निम्बार्काचार्य की ५१००वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में रखा गया। सम्प्रदाय परम्परा की मान्यता है कि गोलोक बिहारी भगवान् श्री कृष्ण की ''सुदर्शन महाबाहो सूर्यकोटि समप्रभ। अज्ञानतिमिरान्धानां विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय।'' इस आज्ञा से आज से ५ हजार एक सौ वें वर्ष पूर्व चक्रराज सुदर्शन दक्षिण भारत में महाराष्ट्र प्रदेश के गोदावरी तटवर्ती वैदूर्यपतन (पैठनसमीप मूंगी ग्राम) में महर्षि अरुण की धर्मपत्नी जयन्ती देवी के गर्भ से बालक नियमानन्द रूप से प्रकट हुए। इसका उल्लेख भविष्य पुराण में ''श्री निम्बार्क जन्म कथा के नाम से एक अध्याय में है। महर्षि श्री अरुण भृगुवंशी तैलंग ब्राह्मण थे।'' कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को सायंकाल चन्द्रोदय वेला में नियमानन्द का जन्म हुआ था। लगभग ८ वर्ष की अवस्था में निम्बग्राम में आकर निवास करते हुए तपश्चर्या की। एक दिन सायं सूर्यास्त के समय समागत दिवाभोजी यतिराज को निम्बवृक्ष की ओर संकेत करते हुए अर्क विम्ब का दर्शन कराकर भगवत्प्रसाद कराया। कहते हैं वे यति स्वयं जगत्स्रष्टा ब्रह्मा थे। उन्होंने नियमानन्द को सुदर्शनचक्रावतार जानकर कहा भगवन् आप साक्षात् सुदर्शन हो निम्बवृक्ष पर अर्कविम्ब दिखाने से लोक में निम्बार्काचार्य नाम से विख्यात होंगे। ऐसा कह कर वे अन्तर्हित हो गये। फिर कालान्तर में देवर्षि श्रीनारद जी का शुभागमन हुआ उनसे वैष्णवी दीक्षा एवं शालग्राम स्वरूप श्री सर्वेश्वर की सेवा प्राप्त कर वैष्णवता का प्रचार-प्रसार किया। इस प्रकार श्री भगवन्निम्बार्काचार्यजी की जन्म स्थली मूंगीग्राम और तपस्थली निम्बग्राम परम प्रसिद्ध हैं।

अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वर शरण देवाचार्य श्री श्रीजी महाराजके सत्संकल्प और सम्प्रदाय के अनुयायी वैष्णव जनों के सत्प्रयास से तपस्थली में वैशाख शुल्क १३ सोमवार, विक्रम सम्वत् २०४४ दिनांक ११/५/१९८७ को विशाल मंदिर का निर्माण होकर उस में आचार्य पञ्चायतन व श्री निम्बार्क राधाकृष्ण विहारी भगवान् के युगल विग्रह की प्रतिष्ठा हुई। यहाँ अनवरत सेवा चल रही है। प्राचीन मंदिर भी यथावत् है उसमें भी सेवा पूजा चलती है। इसके अतिरिक्त, संस्कृत विद्यालय, गोशाला, शिवालय, सन्तसेवा, अतिथिसेवा, औषधालय आदि अनेक पारमार्थिक संस्थायें एवं प्रकल्प चल रहे हैं तथा अतिप्राचीन सुदर्शन सरोवर भी परम दर्शनीय है।

इस प्रकार अपनी ऐतिहासिक व्रजयात्रा प्रसंग में संकल्पित श्रीनिम्बार्कतपः स्थली के विकास कार्य सम्पन्न होने के अनन्तर श्री निम्बार्कजन्मस्थली मूँगी पैठण के विकास सम्बन्ध में भी पूज्य आचार्य श्री के वर्षों से संकल्पित योजना को मूर्त रूप देने के लिए स्थल का चयन, ६ एकड भूखण्ड का क्रय, समारोह पूर्वक भूमि पूजन, भवन निर्माण का शिलान्यास भी आप श्री के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। तदनन्तर आचार्य पीठ से नियुक्त सन्त भक्तों एवं मूँगी ग्राम के विशिष्ट महानुभवों के परिश्रम से स्मारक स्वरूप भव्य विशाल मंदिर का निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ। निर्धारित कार्य क्रमानुसार पूज्य आचार्य श्री के तत्वावधान में विक्रम संवत २०६० माघ कृष्ण ७ दिनांक १४-१-२००४ से माघकृष्णा ११ दिनांक १८-१-२००४ पर्यन्त श्री निम्बार्क भगवान् के नूतन विग्रह स्थापना हेतु पञ्चदिवसीय प्रतिष्ठा महोत्सव का समायोजन किया गया। प्रतिष्ठा महोत्सव में श्री निम्बार्कसम्प्रदाय के महामण्डेलश्वर, मण्डलेश्वर, श्री महन्त, महात्मा, विद्वान, भक्त एवं युग सन्त श्री मुरारी बापू एवं

सहस्त्रों-सहस्त्र श्रद्धालु भगवज्जन उपस्थित थे। उस समय पूज्य जगद्गुरु श्री श्रीजी महाराज ने अपने सदुपदेश प्रसंग में अपना अमोघ संकल्प व्यक्त किया -''आगामी सं. २०६१ कार्तिक शुक्ल १५ को सुदर्शन चक्रावतार जगद्गुरु श्री भगवान निम्बार्काचार्य जी के प्राकट्य के शतोत्तर पश्चसहस्त्राब्द (५१००वर्ष) पूर्ण हो रहे हैं। इस अवसर पर आचार्यपीठ में विराट् रूप में जयन्ती महोत्सव का समायोजन हो, जिससे सबको अवबोध व प्रेरणा प्राप्त हो सके'' करतल ध्वनि से हर्ष व्यक्त करते हुए जन समुदाय ने आचार्य श्री के संकल्प का अनुमोदन किया।

तदनुसार यथासमय समिति का गठन करके ५१०० वें जयन्ती महोत्सव के उपलक्षय में उक्त अष्टदिवसीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के आयोजन की रूपरेखा के साथ भारत के महामहिम उपराष्ट्रपति श्री भैंरूसिंह शेखावत के करकमलों द्वारा समुद्घाटन कराने का निश्चय किया गया। इससे पूर्व आप श्री ने अपनी ऐतिहासिक नेपाल यात्रा के अवसर पर नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में चैत्र शुक्ल ९(रामनवमी) २०६० को ''सनातन धर्म सेवा समिति-काठमाण्डू द्वारा समायोजित अभिनन्दन समारोह में शुभाशीवर्चन देते हुए कहा था'' निकट भविष्य में श्री निम्बार्काचार्यपीठ पर एक विशाल धार्मिक आयोजन करने का संकल्प है उस समय आप सभी को वहां उपस्थित होना है। इसी का प्रभाव था नेपाल नरेश श्री ५ ज्ञानेन्द्रवीरविक्रमशाहदेव का शुभकामना सन्देश लेकर नेपाल के वरिष्ठ विद्वज्जन एवं बड़ी संख्या में भावुक आत्मीय जन उपस्थित हुए। इस विराट् सनातन धर्म सम्मलेन में वैष्णव चतुः सम्प्रदाय के जगद्गुरु पीठाचार्य, चारों पीठों के जगद्गुरु श्री शंकराचार्य अन्यान्य विभिन्न सम्प्रदाय के धर्माचार्य, षड्दर्शन के महामण्डलेश्वर, तीनों अनी के श्री महन्त, विभिन्न खालसाओं के श्रीमहन्त, सहस्रशः सन्त महन्त महात्मागण, विभिन्न प्रदेशों से मूर्धन्य मनीषी विद्वान, मुख्य मंत्री, राज्यपाल, मन्त्री,सांसद, विधायक प्रभृति राजनेता, प्रशासनिक दल, सुरक्षाबल, पत्रकार-सम्पादक एवं लक्षशः जन समुदाय की उपस्थिति रही।

सम्मेलन में धर्माचार्यों के सदुपदेश, विद्वानों के प्रवचन, कलाकारों की विविध कला प्रस्तुति आदि का संकलन कर सचित्र स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। प्रकाशन में सम्पादक मण्डल के साथ कैसेटों द्वारा सम्बाद संकलन का सर्वाधिक परिश्रम हाथरस निवासी श्री अशोक जी शर्मा (तबला विशेषज्ञ) का रहा जिन्होंने दिन-रात एक करके उपदेश, प्रवचनों को लिपिवद्ध किया वे भूरि-भूरि बधाई के पात्र हैं। लिपिबद्धसम्वादों को पठनीय साहित्य बनाने, मुद्रित कराने, प्रूफसंशोधन करने में पं. श्रीरामस्वरूप जी गौड़ मोखमपुरा, जयपुर(सम्पादक) ने अथक परिश्रम करके स्मारिका को मूर्तरूप प्रदान किया। श्री ओमप्रकाश शर्मा (निजी सचिव जगद्गुरु निम्बार्काचार्य) और श्री ऋषिकुमार जी जासरावत ने चित्रावली का संकलन, उनका यथास्थान विन्यास, सम्वादानुसार व्यवस्थित करने में सक्रिय पूरा सहयोग प्रदान किया। ये सभी महानुभाव बधाई के पात्र हैं।

कतिपय परिस्थितियों, अन्तरायों के कारण स्मारिका प्रकाशन में विलम्ब हुआ। फिर भी श्रद्धालुजनों को दुग्धसार नवनीत की तरह लोकोत्तर आनन्द दायक, मन-बुद्धि को ऊर्जा एवं प्रेरणादायक यह स्मारिका रूपी सम्मेलन सार अवश्य रुचिकर होगा ऐसा विश्वास करते हैं।

'गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः। हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः।'' के अनुसार कहीं प्रकाशन, कहीं मुद्रण की त्रुटी, कहीं भाषा की अशुद्धि कहीं भाव की असंगति इत्यादि कोई त्रुटि रह गयी हो तो सज्जन महानुभाव उसका समाधान करते हुए अध्ययन करेंगे ऐसी विनम्र प्रार्थना करते हैं।

पं. वासुदेव शरण उपाध्याय

❑❑❑

श्री निम्बार्काचार्य, सनातन धर्म व सनातन धर्म सम्मेलन

आद्याचार्य श्री भगवन्निम्बार्काचार्य श्रुति, स्मृति, परम्परा के सम्बर्धक, समन्वयक प्रेरक व संरक्षक, है। वेदानुगत सम्प्रदाय में श्री निम्बार्क सम्प्रदाय सर्वाधिक-प्राचीन है। यह सम्पूर्ण मानव समाज में सनातन धर्म की कल्याणकारी परम्पराओं का प्रेरक व पोषक होने से जनसमाज में लोक प्रिय रहा है। जिसकी लोकोपकारी-आचार परम्परायें वैष्णवता के नाम से विख्यात रही है। सात्विकता, सदाचार, धर्म-सहिष्णुता भगवद् भक्ति का यह सम्प्रदाय पर्याय रहा है। समग्रता से सनातन धर्म के आचार-व्यवहार को आत्मसात् करने के कारण वैष्णवता ही सनातन धर्म मानी जाती है।

भगवान् श्रीराधा-कृष्ण की उपासना के साथ श्रुतिस्मृतियों में उल्लिखित समस्त उपास्य स्वरूप, उपासना विधि व धर्माचार व्यवस्थाओं को यथायोग्य रूप से प्रशस्त करने के कारण धार्मिक-समाज में श्री निम्बार्काचार्य, सर्वमान्य जगद्गुरु है।

श्री हंस सनक-सनन्दन सनातन, सनत्कुमार, देवर्षि नारद आदि पूर्ववर्ती आचार्यो की धर्मानुगामी शिक्षाओं का श्रीनिम्बार्काचार्य ने श्रीराधाकृष्ण की उपासना के साथ अभ्युदय किया। आद्य -निम्बार्काचार्य जी के पट्टशिष्य, श्री निवासाचार्य जी से प्रवाहमान निम्बार्काचार्य पीठाधीपति आचार्यों की परम्परा में वर्तमान पीठाचार्य पूज्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज विराजमान है। जो इस प्रवाही परम्परा के ४८वें पीठाचार्य है। श्री निम्बार्काचार्य परम्परा के सभी आचार्य जन्म से, कुल से, गुरुदीक्षा-शिक्षा व साधना-तप से आध्यात्मिक उच्चता को प्राप्त ओजस्वी, तेजस्वी और दिव्य प्रतिभा, सम्पन्न गरिमामय व्यक्तित्व के धनी रहे है। जिन्होनें अपने -अपने समय में, धर्म व भक्ति की सर्वोत्तम प्रवृत्तियों से, जन जन में धर्म-भक्ति की नई चेतना को प्रवाहित किया है। आचार्य परम्परा में द्वादश-आचार्य, अष्टादश -भट्टाचार्य व श्रीहरिव्यासदेवाचार्य से श्रीपरशुराम देवाचार्य आदि की देवाचार्य परम्परा विद्यमान है। निम्बार्क सम्प्रदाय की आचार्य पीठ पर नैष्ठिक ब्रह्मचारी विरक्त सन्त ही विराजमान होते हैं।

श्री निम्बार्क सम्प्रदाय की प्रधान आचार्य पीठ के अनुगतविरक्त सन्त महन्त, साधु व गृहस्थ आदि वैष्णव जन है। उन सन्त महन्त साधु वैष्णवों के अपने आश्रम स्थान व भ्रमणशील जमातें हैं व उनका अपने व्यक्तित्व के अनुरूप, अपना साधना मय जीवन है। सम्प्रदाय के अनुगत गृहस्थ जन समुदाय है जो वेद मर्यादित धर्म प्रवृत्तियों का निर्वाह करते हुए भगवद् भावमय जीवन चर्या में लगे हुए हैं। इस सम्प्रदाय के गाँव-गाँव व शहर-शहर में श्री राधा-कृष्ण व अन्य देवों के सेव्य मंदिर हैं। इस भक्ति सम्प्रदाय के अनुगत समय समय पर देश-प्रदेश के नरेश, सिद्ध, तपस्वी, परमार्थी भक्त,

विद्वान, कवि, जन-नायक मंत्री अधिकारी अर्थ सम्पन्न श्रेष्ठी जन, चिकित्सक कुशल कामगार संगीत आदि विविध विद्याओं में पारंगत विशिष्ट व आमजन रहे हैं।

स्वाभाविक द्वैता-द्वैत या भिन्नाभिन्न दर्शन जगद्गुरु निम्बार्काचार्य का यर्थाथ वेदान्तिक दर्शन है। परमेश्वर श्रीराधासर्वेश्वर का सृष्टि कर्तृत्व, व्यापकत्व, नियन्त्रित्त्व, कृपाकरुणाकारितत्व, धर्म-भक्ति समुद्धारकत्व, षड्ऐश्वर्य सम्पन्न, धर्मोद्धारकत्व, प्रेमस्वरूपत्व, स्वामित्व, देहात्म स्थितत्व, सर्वसमर्थता, लीला स्वरूप धारकत्व, सरसता, सुन्दरता, आनन्ददातृत्व निर्लिप्तता व वर्धकत्व, परमसुखत्व जीवोद्धारक निंकुजलीला विहारत्व आदि अमोघ प्रभाव से परमेश्वर अद्वैत स्वरूप में है। सर्वकर्ता सर्वनियन्ता सर्वव्यापकता सर्वसार्मर्थ्य और परमेश्वर की विलक्षण परमगुण धर्मता से जीव व प्रकृति पदार्थ इन से भिन्न भी है। अपर प्रकृति में सीमत्व, भयत्व,क्लेश - भोग्यत्व, अनित्यत्व, अहंत्व मोहत्व, अधीनत्व, प्रकृति -बन्धत्व, दु:खत्व बाधकत्व, द्वेषत्व, विषमत्व परिवर्तनत्व, कालगतत्व मुक्तत्त्व और जन्मजरा तथा मृत्युत्व है।

भौतिक प्रकृति, चेतना, काल व पदार्थ के सहयोग से अस्तित्ववान है इसमें विभिन्न गुणत्व पदार्थत्व, धनत्व, द्रव्यत्व, प्रकृतित्व विकृतित्व, रूपत्व, वृद्धित्व, स्पर्शत्व, शब्दत्व, गन्धत्व, रसत्व, कृतत्व, संयोगत्व, प्रवृत्तित्व होने से प्राकृत जगत में विभिन्नता है, विविधता है।

यह सृष्टि जड़ चेतनात्मक है जो दैविक, दैहिक, भौतिक प्रभावों में प्रवृत्त हो रही है। दैविक जगत समस्त ब्रह्माण्ड है जिसके प्रकृत प्रभाव में दैहिक प्राणी (जीव) व भौतिक पदार्थ प्रवृत्त है। दैविक -प्रकृति के नियन्ता स्वयं भगवान सर्वेश्वर श्रीकृष्ण है। दैहिक प्राणी (जीव) का जड़ पदार्थ प्रकृति भोग्य है। इस तरह नियन्ता तो परम प्रभु है भोक्ता देहधारी जीव है व भौतिक पदार्थ प्रकृति भोग्य है।

दैविक-भौतिक प्रकृति व नियन्ता परमेश्वर के शाश्वत नियमों से कालगति के अनुसार जीव परमचैतन्य द्वारा प्रवाही है। जीव कर्मआवरण से जीवन धारणकर्ता है। परमेश्वर अंश होने से जीव चैतन्य प्रभाव वाला है और अपर प्राकृतिक संगठन में प्रवृत्त होने से जीव माया प्रवाही व बद्ध होता है। अत: जीव चैतन्य प्रभाववाला भी है और कर्म आवरण से प्रकृति स्वभाव वाला भी हैं। दैविक प्रकृति में चैतन्य प्रवाह से जीव अपनी दैहिक क्षमता में अपनी बुद्धि विवेक से सोचकर कर्म करने में स्वतन्त्र है। जहाँ प्राकृत जीवन व भौतिक प्रकृति जिसकी कर्मसंयोगी व भोग्य होती है। **''ज्ञान स्वरूपञ्च हरेरधीनम् शरीर संयोगवियोग योग्यम्, अणुं हि जीवं प्रतिदेहभिन्नं ज्ञातृत्ववन्तं यदनन्त माहु:।''** जीव व जीवधारी के बारे में यह निम्बार्काचार्य जी के वचन हैं और कहा है कि **''अनादिमाया परियुक्तरूपं''** जीव इस माया से परिवेष्टित या आवृत्त है। जीव की मुक्त, बद्ध व बद्धमुक्त वाली श्रेणियाँ है।

''सदाभव: सनातन: सनातनंकरोतीति सनातनयति परमात्म स्वरूपं प्रापयति सनातनयति इति सनातन श्चासौधर्म: सनातन धर्म:''

इस व्युत्पति से शाश्वत नित्य-स्वरूपावस्थित विश्व संचालक, नियामक, परमप्रभु परमात्मा श्रीकृष्ण सनातन

पुरुषोत्तम हैं एवं सनातनपरमेश्वर को प्राप्त कराने वाले प्रशस्त पथ को सनातन धर्म कहा है।

इस सनातन धर्म का प्रतिपादन वेद, धर्म शास्त्र व आप्त पुरुषों के वचन व ग्रंथों में हुआ है। इसी धर्माभ्युदय के लिए समय-समय पर परमप्रभु परमेश्वर अवतार धारण करते है व इसी धर्म आचार को साधु सज्जन अपने जीवन में उतारते हैं, व्यवहार करते है और धर्म प्रेरणा जागृत करते है। इसी धर्म को विद्वान साधु सन्त, कवि, सज्जन व राजा उत्तरोत्तर व्यवहित, संरक्षित और संवर्धित करते हैं।

धर्माभ्युदय के लिए जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य जी का अवतरण द्वापरान्त में हुआ। जिनके उपदेश से मनुष्य का लौकिक पारमार्थिक अभ्युदय होता है। श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय की प्रवाही परम्परा में करोड़ों अनुयायी है और यह वेदानुगत सनातन धर्म समाज का आधारभूत स्तम्भ है। भगवान निम्बार्क की प्रधान पीठाचार्य परम्परा में वर्तमान आचार्य जगद्पूज्य श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य, आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क के प्रखर प्रतिरूप है।

आपके निर्देश से धर्मक्षरण के इस काल में धर्म, अभ्युदय के महत्तम कार्य सदैव होते रहते हैं जिनमें सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन मुख्य है आपश्री के सत् संकल्प से प्रथम सनातन धर्म सम्मेलन-रसिक राज राजेश्वर जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री हरिव्यासदेवाचार्य जी के ६००वें पाटोत्सव के उपलक्ष्य में वि.स. २०३१ ई. १९७५ को पञ्च दिवसीय आयोजित हुआ। द्वितीय सनातन धर्म सम्मेलन आपश्री के ५०वें पाटोत्सव के अवसर पर वि.सं. २०५०ई०१९९३ को सप्त दिवसीय आयोजित हुआ और यह आद्य जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य जी के ५१०० वें जयन्ती महोत्सव पर वि.सं.२०६१ ई. २००४ में तृतीय विराट् धर्म सम्मेलन अष्टदिवसीय आयोजित हुआ है।

आज भोगवादी आधुनिक सभ्यता की चपेट में मानवता व धर्म परक संस्कार संस्कृति का चलन, चिन्तन व प्रेरणा लुप्त होती जा रही है। विवेकहीनता बढ़ रही है। विलासी मनोवृत्ति से मानवीय मानदण्डों का क्षरण हो रहा है। मानवविवेकहीन, संवेदनहीन, स्वार्थी, संकुचित और जड़ होता जा रहा है। अपने शाश्वत अवलम्बनों को विकृत, दूषित, विरूप, रोगाक्रान्त, अनुपयोगी और नष्ट कर रहा है। सदाचार को छोड़कर मानव दानव होता जा रहा है।

इन धर्महीन परिस्थितियों को देखकर धर्म प्रेरणा जागृत करने के लिए परम्परागत समन्वय व सर्वधर्म समभाव को स्थापित करते हुये वर्तमान आचार्य श्री ने विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन करवाया। जिनमें धर्म-प्रेरक विविध विषयों पर अलग-अलग गोष्ठियाँ अर्थात् सम्मेलन रखे गए। शिक्षा के स्वरूप, समानता, आधुनिकीकरण की समीक्षा, शिक्षा के व्यवसायिक रूप व नीजी स्वतन्त्रविद्यालयों आदि विषय पर शिक्षा सम्मेलन में संस्कृत, राष्ट्रीय एकता, भारतीय संस्कृति, विदेशी व अप संस्कृति के भारतीय संस्कृति पर आक्रमण, सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण तथा संस्कृत संस्कृति के संदर्भ से समाज व सरकार के दायित्व पर व देवालयों पर सरकारी नियन्त्रण, जीर्णोद्धार, समाज के दायित्व, पूजा प्रशिक्षण, देवालायों में सम्प्रदाय परम्परा के निर्वहन, रामजन्म भूमि, कृष्णजन्म भूमि, गोवंश वध निषेध राष्ट्रीय

कानून गोचर भूमि सरंक्षण, गौशालाओं के अनुदान व गोपालन में समाज का दायित्व व गोमय वस्तुओं का अधिकाधिक उपयोग हेतु प्रेरणा प्रवचन हुए। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मातृशक्ति के स्वरूप, विज्ञापन में अश्लील रूप, समानाधिकार, सहशिक्षा, संयुक्त परिवार व मातृ शक्ति के सम्मान के साथ मानव के सामान्य धर्म सहिष्णुता, धर्म निरपेक्षता का वास्तविक अर्थ मानवीय संदेवदनाओं के ह्रास धार्मिक समन्वय, धर्मान्तरण व हिंसक प्रवृत्ति से पीड़ित मानवता व हमारा कर्त्तव्य मानव धर्म गोष्ठी में चिन्तन हुआ दर्शनों के मूल सिद्धान्त जीवन में महत्व तथा भारतीय एवं पश्चात् दर्शनों का तुलनात्मक विवेचन आदि पर विद्वानों द्वारा विचार प्रस्तुत किये गये वेद के मूल स्वरूप व भक्ति संदर्भ, संस्कृति के मूलाधार वेद, ब्राह्मण आरण्यकों का वेदत्व व वेदों के स्वाध्याय आदि संदर्भ से वैदिक सम्मेलन में आचार्य व विद्वानों के प्रवचन हुए, वैष्णव परम्परा, आचार संहिता, सिद्धान्त एवं उपासना आदि पर वैष्णव धर्म सम्मेलन में आचार्यों ने उद्बोधन दिये। भगवन् श्री निम्बार्काचार्य का जीवनवृत, आचार्य परम्परा, सिद्धान्त निम्बार्कीय रसोपासना, श्रीराधाकृष्ण युगल उपासक व आचार्यों के वाणी ग्रन्थों पर विद्वानों व आचार्यश्री के प्रेरणाप्रद उद्बोधन हुए। जिनमें सनातन धर्म के प्रमुख आचार्य श्रीशंकराचार्य व श्री वैष्णवाचार्यादि देश के विशिष्ट विद्वान् गणमान्य मनीषी पधारे और धर्म विषयक विचार मंथन किया। प्रत्येक सत्र में एक डेड लाख की विशाल संख्या में आमजन की भागीदारी रही और सबने मिलकर धर्म के मौलिक तथ्यों पर समयानुकूल चिन्तन, मनन व विचार- विमर्श किया।

इस विराट् धर्म सम्मलेन के अन्तर्गत हुए विचार विमर्श व प्रवचनों का संकलन कर स्मारिका का सचित्र प्रकाशन किया जा रहा है। जिसके अध्ययन से धर्मप्राण जन-समुदाय सत्-प्रेरणा ले सके और आचार्यों तथा मनीषियों का दिया चिन्तन अक्षुण्ण रह सके।

निम्बार्क भूषण **पं. रामस्वरूप गौड़**
मोखमपुरा, जयपुर

❒❒❒

सुदर्शन चक्रावतार नियमानंद - जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य

आज से ५१०० सौ वर्ष पूर्व जगद्गुरु भगवन्निम्बार्काचार्य का अविर्भाव हुआ। यह समय द्वापर के अन्त और कलियुग के आरम्भ का है। उस समय महाराज परीक्षित का शासन काल था। द्वापर के अन्त व कलियुग के प्रारम्भ में मानव में अत्याचार, अनाचार, ईर्ष्या, द्वेष व छल-पाखण्ड आदि आसुरी प्रभाव बढ़ गये थे । जादू टोना व दूसरे छद्म अध्यात्मिक प्रभाव से जनता त्रस्त व भ्रमित हो रही थी। मानव में सात्विक सनातन संस्कृति व पावन वैष्णव धर्म का स्वरूप लुप्त होता जा रहा था। धर्महीनता के कारण विश्व जन जीवन को क्लान्त भ्रान्त और त्रस्त जानकर ऋषि महर्षियों ने भगवान विष्णु से कलियुग के इस क्लेश से उबारने की प्रार्थना की। दीनजनों की प्रार्थना सुनकर श्री कृष्ण ने चक्रराज श्री सुदर्शन को आदेश दिया-आप अपनी परम प्रभा सहित धरातल पर जावें और कलियुग के लोभी, लालची तामस व अनाचारी लोगों से सात्विक जनों की रक्षा करें, ज्ञान व सद्मार्ग दिखावें, परम पावन भक्ति मार्ग बतावें।

चक्रराज सुदर्शन ने भगवद् आज्ञा के अनुसार परिपूर्ण प्रभा के साथ दक्षिण भारत के गोदावरी तटवर्ती पैठण के निकट मूंगी ग्राम में दम्पति परमऋषि अरूण व इनकी भार्या, माता जयन्ती के यहाँ जन्म धारण किया। युधिष्ठिर शकाब्द ६ कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को सायंकाल मेष लग्न में श्री सुदर्शन चक्रावतार हुआ। आप की कुण्डली में पांच ग्रह उच्च के हैं जो युगान्तर के समय ही सिद्ध होते है। सनातनी संस्कार सरणी के अनुसार नामकरण पर बालक को ''नियमानन्द'' सम्बोधन दिया गया।

ब्रह्मऋषि अरूण और माता जयन्ती परम तपस्वी भगवद् भक्त और निस्पृह दम्पति थे। धार्मिक संस्कृति निष्ठा के अनुसार -गृहस्थ ब्राह्मण को भी माया आसक्त कर्म करने की प्रथा नहीं है। अपने प्रारब्ध से कई योनियों के भोग भोगकर ब्राह्मण तो अपने कुलगत जन्म से भगवत् प्राप्ति रूप परम पुरुषार्थ व मुक्ति के अत्यन्त संन्निकट आ गया है। ब्राह्मण को तो अपने परम पुरुषार्थ को सफल बनाने के लिए, निष्काम भाव से जीवन यापन के सामान्य लोक व्यवहार करते हुये, भक्ति व ज्ञान के श्रेष्ठ साधन में ही लगे रहना चाहिये। माया मोह में पड़कर अपने अभ्युदय का पतन नही करना चाहिये। उस समय यह धर्म संस्कार सात्विक लोगों में थे और अपने सत् संस्कारों को येन-केन दुर्जनता से बचा कर रखते थे।

सत्संस्कारी अरुण ऋषि परिवार सहित भगवद् भाव प्रवणता से भगवद्लीलास्थली व्रजमण्डल में आ गये। गिरिराज गोवर्धन की तलहटी के गांव में अपना आश्रय बना लिया और जप तप के साथ अध्ययन अध्यापन करने लगे। यहीं ''अरुणाश्रम'' नीमगावं में बालक नियमानन्द का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। ब्रह्मचारी नियमानन्द

ने ''अरुणाश्रम'' में ही अपने पिता से वेद-वेदान्त का अध्ययन अनुशीलन किया। भगवदाज्ञानुसार जीवों के परम उद्धार सुदर्शनचक्रावतार लीला वपुधारी श्री नियमानन्द का वैष्णवी दीक्षा संस्कार करने के लिए देवर्षि नारद जी महाराज पधारें। गिरि गोवर्धन स्थित गांव अरुणाश्रम में देवर्षि नारद जी ने नियमानन्द जी को पञ्च संस्कार पूर्वक पञ्चपदी श्री गोपाल मंत्र राज की विरक्त वैष्णवी दीक्षा प्रदान की। देवर्षि नारद जी ने श्री हंस भगवान् से महर्षि श्री सनकादिक व महर्षि श्री सनकादिक से देवर्षि श्रीनारद जी को प्राप्त दीक्षा श्रीनियमानन्दजी को प्रदान की आगे कलियुग के कलुषित वातावरण में दिव्यात्मा अजर अमर ऋषियों का प्रत्यक्ष जीवन व्यवहार सम्भव न हो सकने के कारण, सनकादिक परम ऋषियों से प्राप्त श्रीसर्वेश्वर शालिगराम भी देवर्षि ने श्री नियमानन्द जी को प्रदान कर दिया और कलियुग में उत्तरोत्तर शिष्य परम्परा से प्रधान पीठासीन को सर्वेश्वर की सेवा दी, श्री सर्वेश्वर की सेवा व दीक्षा की अनुमति देने के साथ इस आचार्य परम्परा में वे स्वयं प्रवाही हो गये। एक बार देशाटन पर ऋषि - महर्षियों के दर्शन करते कराते श्री नियमानन्द नैमिषारण्य में पहुंचे। नैमिषारण्य में उस समय जल का अभाव देखकर भूमि पर चक्र छोड़ा, उस चक्र से तत्काल एक कुण्ड बन गया जिसमें जल निकल आया और कुण्ड जल से परिपूर्ण भर गया उस कुण्ड का नाम **चक्रतीर्थ** है। देशाटन द्वारा धर्म भक्ति का प्रचार-प्रसार करते श्री नियमानन्द पुनः गिरिराज गोवर्धन की तलहटी में आ गये ओर श्री सर्वेश्वर पूजा आराधना में संलग्न हो गये।

इस समय तक आपका धर्मोद्धारक यश चारो तरफ फैल चुका था सद् शिक्षा-दीक्षार्थी नियमित आने लगे थे। ब्रह्माजी तक भी श्री नियमानन्द जी की ख्याति पहुची और वे चक्रावतार श्री सुदर्शन की पहचान करने व दर्शन करने नीमगांव नियमानन्द जी के आश्रम पर आये। दोनों में दर्शन व शास्त्र चर्चा हुई इतने में सूर्य देव अस्ताचल को चले गये।

सूर्यास्त जानकर यतिरूप ब्रह्मा प्रस्थान की अनुमति चाहने लगें। श्रीनियमानन्दजी ने उन्हें प्रसाद पाने का आग्रह किया। यतिरूप ब्रह्मा ने सोचा, शास्त्र चर्चा व दर्शन स्पर्शन से तो यह सिद्ध हो गया कि यह भगवद्‌ज्ञा से कलियुग में जगद्‌उद्धार के लिए प्रकट हुये चक्रसुदर्शन अवतार ही है, पर चलो पहचान के लिए एक परीक्षा और भी ले ली जावें अतः उन्होंने स्वामी नियमानन्द जी के आग्रह पर कहा-''ऋषिराज हम सूर्यास्त के बाद भोजन नहीं करते।'' किसी के घर आश्रम से किसी का भूखा लौट जाना या भूखा सो जाना, गृह स्वामी के पुण्यों को क्षीण कर देता है।

स्वामी श्रीनियमानन्द जी ने अपनी अलौलिक अनन्त कोटि सूर्य रूप चक्रराज-श्रीसुदर्शन प्रभा को प्रवाहित किया और समीपस्थ नीम के वृक्ष में देदीप्यमान हो गयें। अतिथि से कहा-महात्मा देखिये सूर्य आभा अस्त नहीं है, पूरा परिमण्डल प्रकाश से आलोकित हो रहा है ब्रह्मा जी आश्चर्यचकित हुये और सूर्य दीप्ति देखकर प्रसाद पाने को तैयार हो गये।

चक्र सुदर्शन अवतार नियमानन्दजी ने ब्रह्मा जी को पूर्णतः संतुष्ट करने व कृतार्थ करने की सोच ली थी। प्रसाद पाने से पूर्व हाथ-पैर धोने के लिए शुद्ध निर्मल जल की आवश्यकता पड़ी। श्री सुदर्शन चक्रावतार नियमानन्द ने अपनी किरणों से भूमि पर ताप बढ़ाया। तापग्रस्त पृथ्वी से जल खींचकर उपर चला आया, एक

छोटा सा सुन्दर सरोवर बन गया जिससे अतिथि यतिरूप ब्रह्माजी ने हस्त प्रक्षालन करके प्रसाद पाया। यह सरोवर 'सुदर्शन कुण्ड' के नाम से आज भी विद्यमान है।

यति रूप ब्रह्मा जी के आचमन करते ही सुदर्शन चक्रावतार ने नीम वृक्ष से सूर्यसम प्रकाशमान प्रभा को समेट लिया। एकाएक एक प्रहर रात्री का समय हो गया। श्रीसुदर्शनचक्रावतार के अलौकिक . प्रभाव से यतिरूप ब्रह्माजी आश्चर्यचकित हो गये। तप, विद्या, ज्ञान और इन आश्चर्यजनक अलौकिक कृत्यों से प्रभावित हो कर श्री ब्रह्माजी आश्वस्त हो गये कि ''यह नियमानन्द नाम के मुनिवेषधारी बालक भगवद् आज्ञा से अवतीर्ण सुदर्शन चक्रावतार ही है और अपने मेघा प्रभाव से जगद् को सन्मार्ग बताने वाले सहस्त्र कोटि सूर्य के समान है।'' ब्रह्माजी अपने वास्तविक स्वरूप में आये और मुनिवर को प्रणाम करते हुए कहा- ''आप जगत् का अन्धकार हरण करने वाले अनन्त कोटि सूर्य की प्रभा से परिपूर्ण हैं, आप जन जीवन को धर्म ग्लानि से उभारने वाले है आप अज्ञान अन्धकार का हरण वाले है अत:भविष्य में आप नियमानन्द ''निम्बार्क व निम्बादित्य'' नाम से प्रसिद्ध होंगे और भक्ति के आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित होंगे।

पुराण रचयिता श्रीकृष्ण द्वैपायन व्यास जी ने पुराणों में श्री सुदर्शन चक्रावतार श्रीनिम्बार्काचार्य को आचार्य व ''जगद्गुरु'' आदि सम्बोधन देकर समादर किया है। स्वयं देवर्षि नारद जी ने अपने भक्ति सूत्र ग्रंथ में भक्ति के आचार्य के रूप में 'आरुणी' कहकर इन्हें परिगणित किया है। 'आरुणी' ऐसा सम्बोधन सम्भत: शिष्य स्नेह वश और पिता कुल की प्रशंसा हेतु देवर्षि नारद जी ने दिया है। अरुण के पुत्र होने से श्रीनिम्बार्काचार्य कहीं 'आरुणी' कहीं 'नियमानन्द' और अधिकांशत: 'निम्बार्क' या 'निम्बादित्य' नाम से उल्लिखित है। इस तरह आद्य जगद्गुरु निम्बार्काचार्य अपने जीवन में ही ' श्रीसुदर्शनचक्रावतार के रूप में पहचाने गये और भक्ति तथा वेदान्त दर्शन के आचार्य के रूप से प्रतिष्ठापित हुये 'जगद्गुरु' के रूप में समादरित हुयें। श्रीनिम्बार्काचार्यजी से सतत् द्वापरान्त से ही शिष्य-प्रशिष्य से यह परम्परा श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वरों के रूप में प्रवाही है। और वर्तमान में ४८ वें आचार्य अनन्तान्त श्रीविभूषित निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज विराजमान है।

जगद्गुरु आद्य निम्बार्काचार्यश्री ने युगल किशोर श्री राधाकृष्ण की उपासना-भक्ति को विशेष रूप से प्रवृत्त किया और वेदान्त दर्शन में आप स्वाभाविक द्वैताद्वैत या भिन्नाभिन्न मत के प्रर्वत्तक माने जाते हैं। आपके ग्रन्थों में ब्रह्मसूत्र पर ''वेदान्त पारिजात सौरभ'' नामक भाष्य है और भक्ति वेदान्त का सार-भूत ग्रंथ है। ''वेदान्त कामधेनु दशश्लोकी'' इस के अतिरिक्त ''मंत्र रहस्य षोड़शी'' ''प्रपन्नकल्पवल्ली'', ''राधाष्टक'' तथा 'प्रात: स्मरण स्तव' आदि आपकी प्रसिद्ध रचनायें हैं।

- पं. रामस्वरूप गौड़

❒❒❒

जगद्गुरु आद्य निम्बार्काचार्य प्रणीत ...

वेदान्त कामधेनु-दशश्लोकी

[1] चित्स्वरूपम्

ज्ञानस्वरूपञ्च हरेरधीनं शरीरसंयोगवियोगयोग्यम्।
अणुं हि जीवं प्रतिदेहभिन्नं ज्ञातृत्ववन्तं यदनन्तमाहुः।।

यह जीवात्मा ज्ञानस्वरूप नित्य चेतन ज्योतिस्वरूप अर्थात् प्रकाश स्वरूप है तथा ज्ञातृत्ववान् अर्थात् ज्ञानाधिकरण ज्ञान का आश्रय है। यह जीवात्मा सर्वान्तरात्मा सर्वेश्वर श्रीहरि के सर्वदा अधीन है सभी अवस्थाओं में परतन्त्र है, परिमाण में यह अणुरूप अतिन्द्रिय है, नाना शरीरों के साथ संयोग-वियोग योग्य प्रत्येक देह में भिन्न-भिन्न और अनन्त है — वेदान्त वचन एवं महर्षियों के उपदेश इसी का प्रतिपादन करते हैं।

[2]

अनादिमायापरियुक्तरूपं त्वेनं विदुर्वै भगवत्प्रसादात्।
मुक्तञ्च बद्धं किल बद्धमुक्तं प्रभेदबाहुल्यमथापि बोध्यम्।।

ज्ञान स्वरूप एवं ज्ञातृत्ववान् होने पर भी जीव परात्पर परब्रह्म सर्वेश्वर श्रीहरि की अनन्त अचिन्त्य अघटघटनापटीयसी अनादिकर्मात्मिका त्रिगुणात्मिका माया से परिव्याप्त है अतएव अपने स्वरूप का यथार्थ बोध नहीं कर पाता, परन्तु उन सर्वज्ञ अखिलान्तरात्मा श्रीहरि की जब अहैतुकी कृपा हो जाती है तब वह जीव अपने स्वरूप का यथार्थ परिज्ञान करने में समर्थ हो जाता है। बद्ध और मुक्त भेद से द्विविधरूप जीवात्मा बुभुक्षु-मुमुक्षु इत्यादि विविध भेदों में विभक्त रूप से अवस्थित है।

[3] अचित्स्वरूपम्

अप्राकृतं प्राकृतरूपकञ्च कालस्वरूपं तदचेतनं मतम्।
मायाप्रधानादिपदप्रवाच्यं शुक्लादिभेदाश्च समेऽपि तत्र।।

ज्ञानस्वरूपता एवं ज्ञातृत्व शक्ति से रहित को 'अचेतन' कहते हैं जो तीन रूप में विद्यमान है अप्राकृत-प्राकृत तथा कालस्वरूप। इनमें 'माया' 'प्रधान' प्रभृति शब्दों से अभिहित त्रिविध गुणों का आश्रय 'प्राकृत' रूप अचेतन कहा गया है जो शुक्ल-कृष्णादि भेद से विद्यमान है। प्राकृत तथा काल से विलक्षण प्रकाश स्वरूप नित्य दिव्य भगवद्धाम को अप्राकृत अचेतन में प्रतिपादित किया गया है।

[4] ब्रह्म-स्वरूपम्

स्वभावतोऽपास्तसमस्तदोषमशेषकल्याणगुणैकराशिम्।
व्यूहाङ्गिनं ब्रह्म परं वरेण्यं ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिम्।।

जो स्वाभाविक रूप से यावन्मात्र निखिल दोषों से रहित हैं। सौन्दर्य-सौकुमार्य-माधुर्य लावण्य, कारूण्य, मार्दवादिअनन्त दिव्य गुणों के असीम परमनिधि हैं। वासुदेव संकर्षण, प्रद्युम्न एवं अनिरूद्ध प्रभेद से चतुर्व्यूह एवं नानाविध अवतारों के जो मूल अङ्गी हैं। विधि-शिव-पुरन्दरादि सुरवृन्दों एवं पराभक्तिपरायण रसिक प्रपन्नभक्तों द्वारा सर्वदा वरेण्य अर्थात् परम उपासनीय है। ऐसे नयनाभिराम अरविन्दलोचन परात्पर परब्रह्म सर्वेश्वर श्रीहरि भगवान् श्रीकृष्ण का हम सभी अनन्त जीवात्मा प्रतिपल ध्यान करें।

[5] ब्रह्म स्वरूप

अंगे तु वामे वृषभानुजां मुदा विराजमानामनुरूपसौभगाम्।
सखीसहस्त्रैः परिसेवितां सदा स्मरेम देवीं सकलेष्टकामदाम्।।

ऐसे अनन्तदिव्यगुणगणनिलय सर्वेश्वर सर्वद्रष्टा भगवान् श्रीकृष्ण के वामाङ्ग में परमानन्द पूर्वक नित्य विराजमान उन्हीं अनन्तकृपासिन्धु श्रीप्रभु के अनुरूप सौन्दर्यमाधुर्यस्वरूपा परमाह्लादिनी श्रीवृषभानुनन्दिनी अतिशय सुशोभित हैं। अगणित नित्य सखी परिकर से प्रतिपल संसेवित हैं। प्रपन्न रसिक भगवद्-भक्तों के मङ्गलमय मनोरथों को पूर्ण करने वाली श्रुतिप्रतिपाद्य देवी श्रीराधिका का हम समस्त जीव मात्र सर्वदा स्मरण करें।

[6] उपासना

उपासनीयं नितरां जनैः सदा प्रहाणयेऽज्ञानतमोऽनुवृत्तेः।
सनन्दनाद्यैर्मुनिभिस्तथोक्तं श्रीनारदायाखिलतत्त्वसाक्षिणे।।

जागतिक अज्ञानान्धकार जिससे प्राणी सर्वदा विविध कष्टानुभूति करता है, उसकी सर्वथा निवृत्ति के लिए भगवज्जनों को भगवान् श्रीराधाकृष्ण की सर्वविध रूप से निरन्तर उपासना करनी चाहिए। उक्त उपासना परम्परा का श्रीसनकादि महर्षियों ने निखिलतत्त्वसाक्षी सर्ववेत्ता देवर्षिवर्य श्रीनारदजी जो हमारे सर्वस्व भगवत्स्वरूप श्रीगुरुदेव हैं, उन्हें यह उपेदश प्रदान किया और यही उपदेश श्रीदेवर्षि से हमें प्राप्त हुआ। अतः इसी युगल-उपासना का श्रीभगवद्दर्शनाभिलाषी परम रसिक भावुक उपासकों के हितार्थ यहाँ निर्देश किया है। वस्तुतः उक्त श्लोक में निर्दिष्ट अपनी उपासना गुरु परम्परा का प्रतिपादन भी स्पष्ट है, इससे श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय का अनादित्व एवं वैदिकत्व भी सम्यक् प्रकार अभिव्यञ्जित हुआ है।

[7] द्वैता द्वैत तत्त्व

सर्वं हि विज्ञानमतो यथार्थकं श्रुतिस्मृतिभ्यो निखिलस्य वस्तुनः।
ब्रह्मात्मकत्वादिति वेदविन्मतं त्रिरूपताऽपि श्रुतिसूत्रसाधिता।।

विचित्ररचनारूप चेतनाचेतनात्मक यह समग्र जगत् ब्रह्मात्मक है। पुराणपुरुषोत्तम परब्रह्म सर्वेश्वर श्रीकृष्ण समस्त जगत् की एकमात्र अन्तरात्मा है सुतरां सम्पूर्ण विज्ञान ध्रुव रूप से यथार्थ है। भोक्ता, भोग्य, नियन्ता यह त्रिविध त्रिरूपता श्रुति सूत्र-स्मृति द्वारा भिन्न स्वरूप प्रतिपादित होने से यह ब्रह्म से भिन्न भी है। एवंविध यह चेतनाचेतनात्मक जगत् ब्रह्म

से भिन्न भी है एवं अभिन्न भी वस्तुतः यही स्वाभाविक भिन्नाभिन्न, भेदा-भेद या स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त है इसे ही वेदतत्त्वज्ञ श्रीसनकादि महर्षि एवं श्रीनारदादिदेवर्षि या महर्षि व्यास ने प्रतिपादित किया।

[8] शरणागति

नान्या गतिः कृष्णपदारविन्दात् संदृश्यते ब्रह्मशिवादिवन्दितात्।
भक्तेच्छयोपात्तसुचिन्त्यविग्रहा-दचिन्त्यशक्तेरविचिन्त्यसाशयात्।।

भगवान् श्रीकृष्ण के ब्रह्मशिवादिवन्दित युगलपदारविन्द के अतिरिक्त जीवों के लिए अन्य कोई गति अर्थात् मार्ग या अवलम्ब दृष्टिगत ही नहीं है। शरणापन्न भक्तों की उत्तम इच्छा के अनुरूप मङ्गलमय विग्रह स्वरूप धारण करने वाले अचिन्त्य शक्ति स्वरूप विधि-शिव-पुरन्दरादि द्वारा जिनके आशय को समझना अचिन्त्य एवं अतर्क्य है। अतः एवंविध स्वरूप विराजित भगवान् श्रीकृष्ण के चरणकमल के बिना कोई मार्ग अर्थात् शरण्य नहीं है। श्रीभगवत्-शरणागति ही इस श्लोक का अति संक्षिप्त भावार्थ है।

[9] परा-अपरा भक्ति

कृपास्य दैन्यादियुजि प्रजायते यया भवेत्प्रेमविशेषलक्षणा।
भक्तिर्ह्यनन्याधिपतेर्महात्मनः साचोत्तमा साधनरूपिकाऽपरा।।

अनन्त कृपापयोधि भगवान् श्रीकृष्ण की अनिर्वचनीय कृपा दैन्यादि लक्षण समन्वित शरणागत भक्तों पर होती है। जिस दिव्य भगवदीय कृपा से उन दयार्णव सर्वेश्वर के पादपद्मों में जो भक्ति है वही फलरूपा एवं प्रेमलक्षणा उत्तमा पराभक्ति कही गई है, और यह पराभक्ति उन अनन्य रसिकशेखर महात्माओं के अन्तःकरण में ही आविर्भूत होती है तथा बहुजन्मार्जित सत्कर्म साधन से प्राप्त होने वाली साधनरूपा अपरा भक्ति कहलाती है। यही इस श्लोक का संक्षिप्त भावार्थ है।

[10] अर्थ पञ्चक विवेक

उपास्य रूपं तदुपासकस्य च कृपाफलं भक्तिरसस्ततः परम्।
विरोधिनो रूपमथैतदाप्ते र्ज्ञेया इमेऽर्था अपि पञ्च साधुभिः।।

(१) उपास्य — परात्पर रसपरब्रह्म नित्यनवयुगलकिशोर सर्वेश्वर श्रीराधाकृष्ण के दिव्य स्वरूप का परिज्ञान (२) उपासक — इस जीवात्मा के स्वरूप का ज्ञान (३) कृपाफल — भगवान् श्रीराधाकृष्ण की कृपा का श्रीभगवत्प्राप्ति फल (४) भक्तिरस — अर्थात् श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु के युगलपदाम्बुजों में अनन्य पराभक्ति। (५) विरोधी स्वरूप — अर्थात् श्रीभगवद्विग्रह में प्राकृत बुद्धि करना, भगवत्परक मंत्रों को सामान्य शब्द श्रीभगवद् गाथाओं में संदेह प्रकट करना आदि तथा काम, क्रोध, लोभ-मोहादि ये सभी भगवत्प्राप्ति में परम विरोधी रूप हैं। एवंविध इन पाँच प्रकार के अर्थपञ्चक का साधकजनों को अवश्य ही परिज्ञान करना नितान्त आवश्यक है।

[नवनीत सुधा से]

❑❑❑

जगद्गुरुआद्यनिम्बार्काचार्य प्रणीत प्रातः स्मरणस्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि युगकेलिरसाभिषिक्तं वृन्दावनं सुरमणीयमुदारवृक्षम्।

सौरीप्रवाहवृतमात्मगुणप्रकाशं युग्माङ्घ्रिरेणुकणिकाञ्चितसर्वसत्वम्।।१।।

युगलकिशोर नन्दनन्दन तथा वृषभानुनन्दिनी के प्रेम रस से जिसका अभिषेक होता रहता है, जो परम स्मरणीय है, जहाँके वृक्ष भी मनोवाञ्छित वस्तु देने में दक्ष होने के कारण अत्यन्त उदार हैं, सूर्य-कन्या यमुना के जल प्रवाह ने जिसे सब ओर से घेर रखा है, जहाँ का प्रत्येक जीव-जन्तु श्रीव्रजराजकिशोर किशोरी की चरणरेणुओं की कणिका से पूजित एवं धन्य-धन्य हो गया; अपने अलौकिक गुणों को प्रकाशित करने वाले उसी श्रीवृन्दावन का मैं प्रातःकाल स्मरण करता हूँ।।१।।

प्रातः स्मरामि दधिघोषविनीतनिद्रं निद्रावसानरमणीयमुखानुरागम्।

उन्निद्रपद्मनयनं नवनीरदाभं हृद्यानवद्यललनाञ्चितवामभागम्।। २।।

प्रातःकाल दही मथने की ध्वनि सुनकर जिनकी निद्रा दूर हो गयी है, नींद से उठने पर जिनके मुख का रंग बहुत ही रमणीय दिखायी देता है, नेत्र विकसित कमल-पुष्प के समान सुन्दर और विशाल जान पड़ते हैं, श्रीअंङ्गों की कान्ति नवीन जलधर के समान श्याम है; तथा जिनका वाम भाग मनोहर और अनिन्द्य सौन्दर्य-राशि से सुशोभित गोपाङ्गनाद्वारा लालित एवं पूजित है, उन श्रीश्यामसुन्दर श्रीकृष्णका मैं प्रातःकाल स्मरण करता हूँ।।२।।

प्रातर्भजामि शयनोत्थितयुग्मरूपं सर्वेश्वरं सुखकरं रसिकेशभूपम्।

अन्योन्यकेलिरसचिह्नसखिदृगौघं सख्यावृतं सुरतकाममनोहरं च।।३।।

युगल स्वरूप श्रीकिशोरी और नन्दनन्दन निकुञ्ज में शयन से उठे हैं, उनका एक-एक अंग परस्पर के प्रेम-मिलन रस से चमत्कृत जान पड़ता है, मधुर मिलन-कामनासे उनका रूप और भी मनोहर हो उठा है, उन्हें सखियों ने सब ओर से घेर रखा है, वे रसिकशेखरों के राजा युगल विहारी सबके अधीश्वर तथा सभी को सुख देनेवाले है; मैं प्रातःकाल उन्हीं प्रिया-प्रियतमका भजन-ध्यान करता हूँ।।३।।

प्रातर्भजे सुरतसारपयोधिचिह्नं गण्डस्थलेन नयनेन च संदधानौ।

रत्याद्यशेषशुभदौ समुपेतकामौ श्रीराधाकावरपुरन्दरपुण्यपुञ्जौ।४।।

जो अपने कपोलों और नयनों के द्वारा प्रेममिलन के सारभूत आनन्द-समुद्र में अवगाहन के चिह्न धारण करते हैं, जो पूर्णकाम हैं तथा प्रेमी भक्तों को माधुर्यरति आदि अशेष कल्याणमय कृपा देते हैं, उन पुण्य पुञ्ज श्रीराधिका तथा राधावल्लभ श्रीकृष्ण युगल दम्पतिका मैं प्रातःकाल भजन करता हूँ।।४।।

प्रातर्धरामि हृदयेन हृदीक्षणीयं युग्मस्वरूपमनिशं सुमनोरमं च।

लावण्यधाम ललनाभिरुपेयमानमुत्थाप्यमानमनुमेयमशेषवेषैः।। ५।।

जो हृदय में निरंतर दर्शन करने योग्य हैं, जिनकी झांकी अत्यन्त मनोरम है, जो लावण्य के भण्डार हैं,

असंख्य ललनाएँ जिनकी सेवामें उपस्थित होतीं और उठाती-बैठाती हैं, सभी लीला वेशों में जिनका स्वरूप साकार हो सकता है, उन युगलस्वरूप श्रीराधा-कृष्णको मैं प्रातःकाल अपने हृदय में धारण करता हूँ।।५।।

प्रातर्ब्रवीमि युगलावपिसोमराजौ राधामुकुन्दपशुपालसुतौ वरिष्ठौ।

गोविन्दचन्द्रवृषभानुसुतावरिष्ठौ सर्वेश्वरौ स्वजनपालनतत्परेशौ।।६।।

जिनके श्रीअंग देवताओं के समान तेजस्वी हैं, तथापि जो श्रेष्ठ ग्वालबाल के रूप में अवतीर्ण हो श्रीराधा और मुकुन्द नाम से विख्यात हैं, जो सबके ईश्वर हैं और स्वजनों के पालन में सदा तत्पर रहनेवाले हैं, उन श्री कृष्णचन्द्र और वृषभानुनन्दिनी-युगल दम्पतिका मैं प्रातःकाल उच्चारण करता हूँ।।६।।

प्रातर्नमामि युगलाङ्घ्रिसरोजकोषमष्टाङ्गयुक्तवपुषा भवदुःखदारम्।

वृन्दावने सुविचरन्तमुदारचिह्नं लक्ष्म्या उरोजधृतकुङ्कुमरागपुष्टम्।।७।।

मैं प्रातःकाल किशोर-किशोरी के उन युगल चरणों को साष्टांग प्रणाम करता हूँ, जो कमलकोश के समान कमनीय और सांसारिक दुःख को विदीर्ण करने वाले हैं, जिनमें उदारतासूचक चिह्न अंकित हैं, जो वृन्दावन में विचरते हैं और लक्ष्मीजी के उरोजो में लगे हुए केशर के राग से परिपुष्ट होते हैं।।७।।

प्रातर्नमामि वृषभानुसुतापदाब्जं नेत्रालिभिः परिणुतं व्रजसुन्दरीणाम्।

प्रेमातुरेण हरिणा सुविशारदेन श्रीमद्व्रजेशतनयेन सदाऽभिवन्द्यम्।।८।।

परम चतुर व्रजेन्द्र-नन्दन श्रीहरि प्रेमसे व्याकुल हो जिनकी सदा वन्दना किया करते हैं तथा व्रज-सुन्दरियों के नेत्ररूपी भ्रमर जिनकी स्तुति करते हैं, वृषभानुनन्दिनी श्रीराधा के उन चरणारविन्दों को मैं प्रातःकाल प्रणाम करता हूँ।।८।।

सञ्चिन्तनीयमनुमृग्यमभीष्टदोहं संसारतापशमनं चरणं महार्हम्।

नन्दात्मजस्य सततं मनसा गिरा च संसेवयामि वपुषा प्रणयेन रम्यम्।।९।।

जो सब प्रकार से चिन्तन करने योग्य, श्रुतियों के अनुसंधान के विषय, मनोवांछित वस्तु देने वाले, संसार-तापको शान्त करने वाले तथा असीम हैं, नन्दनन्दन श्रीकृष्ण के उन रमणीय चरणों का मैं सदा मन, वाणी और शरीर द्वारा प्रेमपूर्वक सेवन करता हूँ।।९।।

प्रातः स्तवमिमं पुण्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत्।

सर्वकालं क्रियास्तस्य सफलाः स्युः सदा ध्रुवाः।।१०।।

जो प्रातः काल उठकर इस प्रातःस्मरण नामक पवित्र स्तोत्रका सदा पाठ करता है, उसकी सभी क्रियाएँ सदा सफल एवं अक्षय होती हैं।।१०।।

❑❑❑

जगद्गुरुआद्यनिम्बार्काचार्य प्रणीत श्रीराधाष्टकम्

नमस्ते श्रियै राधिकायै परायै नमस्ते नमस्ते मुकुन्दप्रियायै।

सदानन्दरूपे प्रसीद त्वमन्तःप्रकाशे स्फुरन्ती मुकुन्देन सार्धम्।।१।।

श्री राधिके! तुम्हीं श्री (लक्ष्मी) हो, तुम्हें नमस्कार है, तुम्हीं पराशक्ति राधिका हो, तुम्हें नमस्कार है। तुम मुकुन्द की प्रियतमा हो, तुम्हें नमस्कार है। सदानन्दस्वरूपे देवि! तुमे मेरे अन्तःकरण के प्रकाश में श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण के साथ सुशोभित होती हुई मुझपर प्रसन्न होओ।।१।।

स्ववासोपहारं यशोदासुतं वा स्वदध्यादिचौरं समाराधयन्तीम्।

स्वदाम्नोदरे या बबन्धाशु नीव्या प्रपद्ये नु दामोदरप्रेयसीं ताम्।।२।।

जो अपने वस्त्र का अपहरण करने वाले अथवा अपने दूध-दही, माखन आदि चुरानेवाले यशोदानन्दन श्रीकृष्ण की साधना करती हैं, जिन्होंने अपनी नीवी (प्रेम) के बन्धन से श्रीकृष्ण के उदर (रस) को शीघ्र ही बांध लिया, जिसके कारण उनका नाम 'दामोदर' हो गया; उन दामोदर की प्रियतमा श्री राधा-प्रियतमा की मैं निश्चय ही शरण लेता हूँ।। २।।

दुराराध्यामाराध्य कृष्णं वशे त्वं महाप्रेमपूरेण राधाऽभिधाऽभूः।

स्वयं नामकीर्त्या हरौप्रेम यच्छ प्रपन्नाय मे कृष्णरूपे समक्षम्।।३।।

श्री राधे! जिनकी आराधना कठिन है, उन श्रीकृष्ण की भी आराधना करके तुमने अपने महान् प्रेमसिन्धु की बाढ़ से उन्हें वश में कर लिया। श्रीकृष्ण की आराधना के कारण तुम राधानाम से विख्यात हुई। श्रीकृष्णस्वरूपे! अपना यह नामकरण स्वयं तुमने किया है, इससे अपने सन्मुख आये हुए मुझ शरणागत को श्रीहरिका प्रेम प्रदान करो।।३।।

मुकुन्दस्त्वया प्रेमदोरेण बद्धः पतङ्गो यथा त्वामनुभ्राम्यमाणः।

उपक्रीडयन् हार्दमेवानुगच्छन् कृपा वर्तते कारयातो मयीष्टिम्।। ४।।

तुम्हारी प्रेम डोर में बँधे हुए भगवान् श्रीकृष्ण पतंग की भाँति सदा तुम्हारे आस-पास ही चक्कर लगाते रहते हैं, हार्दिक प्रेम का अनुसरण करके तुम्हारे पास ही रहते हुए क्रीडा करते हैं। देवि! तुम्हारी कृपा सबपर है, अतः मेरे द्वारा अपनी आराधना (सेवा) करवाओ।। ४।।

ब्रजन्तीं स्ववृन्दावने नित्यकालं मुकुन्देन साकं विधायाङ्कमालम्।

सदा मोक्ष्यमाणाऽनुकम्पाकटाक्षैः श्रियं चिन्तयेत् सच्चिदानन्दरूपाम्।। ५।।

जो प्रतिदिन नियत समयपर श्रीश्यामसुन्दर के साथ उन्हें अपने अङ्ककी माला अर्पित करके अपनी लीलाभूमि-वृंदावन-में विहार करती हैं, भक्तजनों पर प्रयुक्त होने वाले कृपा-कटाक्षों से सुशोभित उन सच्चिदानन्दस्वरूपा श्री लाड़िली का सदा चिन्तन करे।।५।।

मुकुन्दानुरागेण रोमाञ्चिताङ्गैरमहं व्याप्यमानां तनुस्वेदविन्दुम्।

महाहार्दवृष्ट्या कृपापाङ्गदृष्ट्या समालोकयन्तीं कदा त्वां विचक्षे।। ६।।

श्रीराधे! तुम्हारे मन-प्राणों में आनन्दकन्द श्रीकृष्ण का प्रगाढ अनुराग व्याप्त है, अतएव तुम्हारे श्रीअङ्ग सदा रोमाञ्चसे विभूषित हैं और अंग-अंग सूक्ष्म स्वेद-बिन्दुओं से सुशोभित होता है। तुम अपनी कृपा-कटाक्ष से परिपूर्ण दृष्टिद्वारा महान् प्रेम की वर्षा करती हुई मेरी ओर देख रही हो; इस अवस्था में मुझे कब तुम्हारा दर्शन होगा?।।६।।

यदाङ्कावलोके महालालसौघं मुकुन्दः करोति स्वयं ध्येयपादः।

पदं राधिके ते सदा दर्शयान्तर्हृदीतो नमन्तं किरद्रोचिषं माम्।। ७।।

श्रीराधिके! यद्यपि श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण स्वयं ही ऐसे हैं कि उनके चारू-चरणों का चिन्तन किया जाए, तथापि वे तुम्हारे चरण-चिह्नों के अवलोकन की बड़ी लालसा रखते हैं। देवि! मैं नमस्कार करता हूँ। इधर मेरे अन्तः करण के हृदय-देश में ज्योति-पुञ्ज बिखेरते हुए अपने चिन्तनीय चरणारविन्द का मुझे दर्शन कराओ।।७।।

सदा राधिकानाम जिह्वाग्रतः स्यात् सदा राधिकारूपमक्ष्यग्र आस्ताम्।

श्रुतौ राधिकाकीर्तिरन्तः स्वभावे गुणा राधिकायाः श्रिया एतदीहे।। ८।।

मेरी जिह्वा के अग्रभागपर सदा श्रीराधिका का नाम विराजमान रहे । मेरे नेत्रों के समक्ष सदा श्रीराधा का ही रूप प्रकाशित हो। कानों में श्रीराधिका की कीर्ति-कथा गूँजती रहे और अन्तर्हृदय में लक्ष्मीस्वरूपा श्रीराधा के ही असंख्य गुणगणों का चिन्तन हो, यही मेरी शुभ कामना है।।८।।

इदं त्वष्टकं राधिकायाः प्रियायाः पठेयुः सदैवं हि दामोदरस्य।

सुतिष्ठन्ति वृन्दावने कृष्णधाम्नि सखीमूर्तयो युग्मसेवानुकूलाः।। ९।।

दामोदरप्रिया श्री राधा की स्तुति से संबंध रखने वाले इन आठ श्लोकों का जो भावुकजन सदा इसी रूप में पाठ करते हैं, वे श्रीकृष्णधाम वृन्दावन में युगल सरकार की सेवा के अनुकूल सखी-शरीर पाकर सुख से रहते हैं।।९।।

❑❑❑

भविष्यपुराण में जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य जी का आविर्भाव वृतान्त

भविष्यपुराणे —

सुदर्शनो द्वापरान्ते कृष्णाज्ञप्तो जनिष्यति।
निम्बादित्य इतिख्यातो धर्मग्लानिं हरिष्यति।।७२।।

सूत उवाच —

शृणुष्व चरितं तस्य निम्बार्कस्य महात्मनः।
यमाह भगवान् कृष्णः कुरु कार्यं ममाज्ञया।।७३।।

मेरोश्च दक्षिणे पार्श्वे देवनद्यास्तटे शुभे।
देशे तैलंगके रम्ये देवर्षिवरसेविते।।७४।।

तत्रावतीर्य सद्धर्मान्नारदाद्देव दर्शनम्।
लब्ध्वा भूमौ वर्तयस्व नष्टप्रायान्ममाज्ञया।।७५।।

माथुरे नैमिषारण्ये द्वारवत्यां ममाश्रमे।
सुदर्शनाश्रमादौच स्थितिः कार्या त्वयाऽनघ।।७६।।

ॐमित्यादेशमादाय भगवान् -श्रीसुदर्शनः।
भक्ताभीष्टप्रदः साक्षादवतीर्णो महीतले।।७७।।

देशे तैलंगके पुण्ये द्विजवर्य्यो महामना।
सुदर्शनाश्रमे पुण्ये भृगुवंशसमुद्भवः।।७८।।

नाम्नाऽरुण इति ख्यातो वेदवेदाङ्गपारगः।
ऋषिरूपधरश्चासीज्जयन्त्या भार्य्यया सह।।७९।।

समाहितं तेन तेजो विष्णुचक्रसमुद्भवम्।
दधार मनसा देवी जयन्ती पतिदेवता।।८०।।

तेजसा शुशुभे तेन चन्द्रेणैव दिशाऽमला।
अथ सर्वगुणोपेते काले परम शोभने।।८१।।

कार्तिकस्य सिते पक्षे पूर्णिमायां वृषे बुधौ।
कृत्तिकाभे महारम्ये उच्चस्थे ग्रहपञ्चके।।८२।।

सूर्यावसानसमये मेषलग्ने निशामुखे।
जयन्त्यां जयरूपिण्यां जजान जगदीश्वरः।।८३।।

येन सर्वमिदं विश्वं वेदधर्मे नियोजितम्।
विरञ्चिरेकदा तस्यनिम्बार्कस्याश्रमे शुभे।।८४।।

समागत्याह भो ब्रह्मन्! प्राप्तोऽहं क्षुधयान्वितः।
यावत्सूर्यः स्थितो व्योम्नि तावन्मां भोजयद्विज।।८५।।

इति श्रुत्वा तथेत्युक्त्वा ददौ तस्मै च भोजनम्।
तदा तु भगवान् सुर्यो ह्यस्ताचलमुपागतः।।८६।।

मुनिना ऋषिणा तेन निम्बवृक्षे तदा शुभे।
स्थापितं तेजसा स्वेन तेजस्तत्त्वं सुदर्शनम्।। ८७।।

तत्तेजः सूर्यसंकाशं दृष्ट्वा वेधा स्मयाऽन्वितः।
भिक्षुरूपधरं बालं मुनिं सूर्यमिवापरम्।।८८।।

निम्बादित्य इति ख्यातो वसुधायां भविष्यति।।।।८९।।

❒❒❒

पारमार्थिक संस्थाएँ एवं सेवायें

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठ द्वारा संचालित संस्थाऐं व सेवायें—

१. श्रीसर्वेश्वर मासिक पत्र

२. श्रीनिम्बार्क पाक्षिक पत्र

३. श्रीनिम्बार्क साहित्य प्रकाशन व साहित्य संस्थान

४. श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, निम्बार्क तीर्थ, सलेमाबाद (अजमेर)

५. श्रीसर्वेश्वर वेद विद्यालय, निम्बार्क तीर्थ

६. श्रीराधासर्वेश्वर छात्रावास, निम्बार्काचार्य पीठ निम्बार्क तीर्थ

७. श्रीनिम्बार्क दर्शन विद्यालय, निमग्राम(उ.प्र.)

८. श्रीनिम्बार्क छात्रावास, नीमगाँव (उ.प्र.)

९. श्रीनिम्बार्क शिशु मंदिर, वृंदावन (उ.प्र.)

१०. श्रीराधामाधव गोशाला, निम्बार्काचीर्यपीठ निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद (अजमेर)

११. श्रीनिम्बार्क गौशाला, नीमगाँव (उ.प्र.)

१२. श्रीनिम्बार्क पुस्तकालय, निम्बार्काचार्यपीठ, सलेमाबाद (राज.)

१३. श्रीहंस वाचनालय, निम्बार्काचार्य पीठ, सलेमाबाद, अजमेर

१४. श्रीहरिव्यास पारमार्थिक औषधालय, निम्बार्क तीर्थ-सलेमाबाद, अजमेर,

महोत्सव आयोजन —

१. श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी महोत्सव, निम्बार्काचार्यपीठ

२. श्री रामनवमी महोत्सव, निम्बार्काचार्यपीठ

३. शरद पूर्णिमा महोत्सव, निम्बार्काचार्यपीठ

४. श्रीगुरुपूर्णिमा महोत्सव, निम्बार्काचार्यपीठ

५. श्रीनिम्बार्क भगवान का छट्टी महोत्सव, निम्बार्काचार्यपीठ

६. श्रीराधाष्टमी महोत्सव श्रीराधासर्वेश्वर मंदिर, मदनगंज-किशनगढ़

७. श्रीभागवत जयन्ती, निम्बार्ककोट, अजमेर,

श्रीनिम्बार्क जयन्ती महोत्सव

(क) श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ

(ख) श्रीपरशुराम द्वारा, पुष्कर, **विशेष जन्म दिन महोत्सव**

(ग) श्रीनिम्बार्क तपस्थली, नीमगाँव,

(घ) श्री श्रीजी की बड़ी कुंज, वृदावन

(ङ) श्री निम्बार्काचार्य मंदिर, मूंगीपैठन, महाराष्ट्र

(च) सर्वेश्वर संसद, जयपुर,

(छ) भगवन् निम्बार्काचार्य प्राकट्य धाम, मूंगी पैठन, महाराष्ट्र

(ज) श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय, बैरागी मठ, पढ़रपुर, महाराष्ट्र

५. झूलन महोत्सव, श्रीश्रीजी की बड़ी कुंज, वृन्दावन,

६. पुरूषोत्तममास महोत्सव।

अखिल भारती श्री निम्बार्काचार्यपीठ द्वारा संचालित विभिन्न देवालय

१. मन्दिर श्रीविजयगोपाल जी— निम्बार्कतीर्थ

२. मन्दिर नृसिंह जी— निम्बार्कतीर्थ

३. श्री वृन्दावनेश्वर मंदिर आचार्य समाधि स्थल

४. मन्दिर श्रीनिम्बार्क महादेव, सूर्यमन्दिर—निम्बार्कतीर्थ

५. मन्दिर हनुमानजी, गंगासागर —निम्बार्कतीर्थ

६. मन्दिर बाली वाले हनुमान जी —निम्बार्कतीर्थ

७. मन्दिर निम्बार्क मारुति—खातोली मोड़

८. मन्दिर राधासर्वेश्वर जी —मदनगंज (किशनगढ)

९. मन्दिर गोपालबिहारी जी —किशनगढ़

१०. मन्दिर निम्बार्कगोपीजनवल्लभजी—अजमेर

११. मन्दिर श्री गिरिधरगोपालजी परशुराद्वारा पुष्कर,

१२. मन्दिर गोपाल जी महाराज— झीट्रियाँ

१३. मन्दिर जगमोहनद्वारा— रूपनगर

१४. मन्दिर गोपालद्वारा—रूपनगर

१५. मन्दिर युगलबिहारी जी — फतेहगढ

१६. मन्दिर गोपाल जी, त्रिपोलिया —जोधपुर

१७. मन्दिर निम्बार्कनिकुञ्जबिहारी जी (निम्बार्क नगर)—जयपुर

१८. मन्दिर नृसिंह टेकरी—महू (म.प्र.)

१९. मन्दिर द्वारकाधीशजी — अमरावती (महाराष्ट्र)

२०. मन्दिर नृसिंह जी — नागपुर (महाराष्ट्र)

२१. मंदिरश्री निम्बार्क राधागोविन्द, निम्बार्क सम्प्रदाय वैरागी मठ, भजनदासचौक—पंढरपुर (महाराष्ट्र)

२२. मन्दिर भगवन्निबार्काचार्यजी प्राकट्य धाम— मूँगीपैठन (महाराष्ट्र)

२३. मन्दिर निम्बार्कराधाकृष्ण बिहारी जी निम्बार्क तप:स्थली—नीमगाँव (उ.प्र.)

२४. मन्दिर आनन्दमनोहरवृन्दावनचन्द्रजी— श्रीजी बड़ी कुञ्ज, वृन्दावन

२५. मन्दिर श्रीमुरलीमनोहर जी, श्रीजी की बड़ी कुंज— वृन्दावन

२६. मन्दिर रूपमनोहरचन्द्रजी, बाँदी कुंज—वृन्दावन

२७. मन्दिर कृष्णचन्द्रमाजी, छोटी कुंज— वृन्दावन

२८. मन्दिर नागरबिहारीजी, नागरकुंज—वृन्दावन

२९. मन्दिर सहजबिहारजी, जीवाराम कुञ्ज—वृन्दावन

३०. मन्दिर राधाकृष्णबिहारी जी, पन्नावाली कुंज— वृन्दावन

३१. मन्दिर सर्वेश्वर वाटिका—वृन्दावन

३२. मन्दिर बिहार घाट— वृन्दावन

३३. मन्दिर परशुराम द्वारा—मथुरा

३४. मन्दिर निम्बार्क निकेतन, चौक बाजार—मथुरा,

३५. श्रीजी का बड़ा बगीचा (पक्का बगीचा)— परिक्रमा मार्ग, वृन्दावन

❒❒❒

अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन

महोत्सव समिति

प्रधान संरक्षक — अनन्त श्री विभुषित जगद्गुरु श्री श्रीनिम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज

संरक्षक मण्डल

युवराज श्रीश्यामशरण देवजी-निम्बार्काचार्यपीठ

श्रीमहन्त श्रीरासविहारीदासी जी काठिया, वृन्दावन

महन्त श्री हरिवल्लभदासजी महाराज, किशनगढ़-रेनवाल

मेवाड़ महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी शास्त्री, उदयपुर

महन्त श्री पुरुषोत्तमदासजी, अजमेर

महन्त श्री युगल शरण जी पाटनारायण, आबूरोड

श्री महन्त वृन्दावनदासजी, काठिया, सुखचर-कलकत्ता

बाबा श्री शुकदेवदास जी, निम्बार्कपुरम्, जयपुर

युगसन्त श्रीमुरारी बापू, महुवा, गुजरात

परामर्श मण्डल

श्री महन्त श्री ललिताशरण जी, टोपी कुंज, वृन्दावन

महन्त श्री ललिताशरण जी, विहारी जी का बगीचा

महन्त श्री रूपकिशोरदास जी, वृन्दावन

महन्त श्री गर्वीलीशरण जी, किलोलकुण्ड-वृन्दावन

श्री महन्त श्रीबनवारीशरण जी, नवेलीकुंज-वृन्दावन

श्री महन्त श्रीराधाकिदास जी, मल्हारगढ-मध्यप्रदेश

श्री महन्त श्रीमदनमोहन जी, बीना-मध्यप्रदेश

महन्त श्रीमुकुन्दशरण जी, वल्लभीपुर, गुजरात

महन्त श्री ललिताशरण जी लिम्बड़ी-गुजरात

महन्त श्री राधेश्यामशरण जी, लिम्बड़ी-गुजरात

महन्त श्री गोपालदास जी, भावनगर-गुजरात

महन्त महाराज गोपालमठ, सम्बलपुर-उड़ीसा

महन्त श्री गोपालशरणदेव जी केलादीघाट (नेपाल)

महन्त श्री माधवशरणजी, निम्बार्क सत्संग आश्रम-नेपाल

महन्त श्री लक्ष्मीकान्तशरणजी, सनकादि आश्रम, वृन्दावन

महन्त श्री चतुर्भुजदास जी, युगल भवन, वृन्दावन

महन्त श्री वृदावनदासजी, वृदावन

श्री महन्त बालकदासजी, फालेन

श्री महन्त प्रेमदास जी कोकिलावन

महन्त श्री बनवारीशरण जी जुसरी

महन्त श्री मनोहरशरण जी पलसाना

महन्त श्री राधाचरणदास जी, मिठड़ी

महन्त श्री बिहारीदास, झांसी

महन्त श्री नृसिंहदासजी, गंगवाल-जम्बू

महन्त श्री राधाकृष्णदासजी, डूंगरपुर

महन्त श्री मोहनीशरण जी, बाईराज, कुंड-उदयपुर

महन्त श्री हरिदास जी, नारनोल-हरियाणा

महन्त श्री दीनबन्धुशरण जी, भीलवाड़ा

श्री हरिशरण जी, निम्बग्राम (श्रीमहन्त निम्बार्क खालसा)

श्री माधवशरण जी, निम्बार्काचार्यपीठ

श्री दानविहारीशरण जी, निम्बार्काचार्यपीठ

प्राचार्य श्री वासुदेवशरण जी उपाध्याय, निम्बार्काचार्यपीठ

श्री ओमप्रकाश जी, निम्बार्काचार्यपीठ

विद्वत् परिषद् —

पं. श्री दयाशंकर शास्त्री, ब्यावर

पं. श्री वासुदेवशरण जी उपाध्याय, निम्बार्कतीर्थ

पं. डॉ. श्री रसिकविहारी जी जोशी,

पं. श्री विश्वनाथ जी मिश्र, बिहार

पं. वैद्यनाथ जी झा, वृन्दावन

पं. डा. श्रीवासुदेव कृष्ण जी चतुर्वेदी, मथुरा

डा. श्री प्रेमनारायण जी श्रीवास्तव, वृन्दावन

पं. श्री हरिशरण जी शास्त्री, नेपाल

पं. श्री खेमराज केशवशरण जी, काठमाडू-नेपाल

डॉ. श्री रामप्रसाद जी शर्मा, मदनगंज-किशनगढ़

पं. श्री भँवर लाल जी उपाध्याय, ब्यावर

पं. श्री सत्यनारायण जी शास्त्री, अजमेर

पं. श्री राधावल्लभजी शास्त्री, अजमेर

पं. श्री बद्रीप्रसाद जी पपुरना

पं. श्री परशुराम जी भारद्वाज, बौली

पं. श्री रामस्वरूप जी गौड़, मोखमपुरा, जयपुर

पं. डॉ. श्री कलानाथ जी शास्त्री, जयपुर

पं. डॉ. श्री प्रभाकर जी शास्त्री, जयपुर

पं. श्री नरेन्द्र जी शास्त्री, जयपुर

पं. श्री भास्कर जी श्रोत्रिय, जयपुर

पं. श्री मुकुन्दशरण जी शास्त्री, काठमांडू-नेपाल

पं. श्री पुरुषोत्तम जी शास्त्री, वृन्दावन

पं. श्री सुरेश जी जोशी, मुंगी

पं. श्री गायकवाड गुरुजी, मुंगी

पं. श्री विष्णुकान्त जी शास्त्री, वृन्दावन

पं. श्री राधामोहन जी पुरोहित, वृन्दावन

अध्यक्ष

श्री श्यामसुन्दर जी बेरीवाले, कलकत्ता

कार्यकारी अध्यक्ष

श्री सत्यनारायण जी राठी, इन्दौर

उपाध्यक्ष

श्री भीमकरण जी छापरवाल, इचलकरंजी
श्री ब्रजमोहन जी छापरवाल, सूरत
श्री ब्रजमोहन जी फोफलिया, सोलापुर
श्री रामेश्वरलाल जी फतेहपुरिया, अजमेर
श्री जयनारायण जी जाजू, ब्यावर
श्री सुखदेव जी मून्दड़ा, सम्बलपुर
श्री रतनलाल जी शर्मा, कांकरोली
श्री काशीरामजी अग्रवाल, सांचोर
श्री कन्हैयालाल जी कासट, मुम्बई
श्री सत्यनारायण जी गर्ग, किशनगढ़
श्री बाबू लाल जी अग्रवाल, बालोतरा
श्री रंगनाथ जी न्याती, धामनोद
श्री दीनदयाल जी सोमानी, जयपुर
श्री गोविन्द जी बंग, मुम्बई
श्री सुनील जी कोचर, मुम्बई

स्वागताध्यक्ष

श्री बंशी लाल जी राठी, चेन्नई

कार्यकारी स्वागताध्यक्ष

श्रीकालीचरण जी खण्डेलवाल, अजमेर

उप-स्वागताध्यक्ष

श्री सीतारामजी गोयल, अजमेर
श्री माणकचन्द जी नोगजा, सिंगापुर
श्री बसन्त जी झँवर, सिंगापुर
श्री बंकटलाल जी बाहेती, इचलकरंजी
श्री घनश्यामजी तोषनिवाल, बिजापुर
श्री दामोदर जी बंग, जोधपुर
श्री अनिल जी स्याल, चंडीगढ़
श्री गोपीकिशन जी बजाज, जोधपुर
श्री ब्रजकिशोर जी गोयल, जयपुर
श्री जोधराज जी लड्ढा, कलकत्ता
श्री श्यामसुन्दर जी कामदार, किशनगढ
श्री रमेश जी छापरवाल, मकराना
श्री रामनारायण जी कोगटा, जलगांव
श्री रामगोपाल जी, पींगलोदवाले, अजमेर
श्री आनन्द जी अरोड़ा, अजमेर
श्री अभय कुमार जी अग्रवाल, हाथरस
श्री श्याम सुन्दर जी सोनी, नागपुर
श्री गोविन्द जी कालानी, मुम्बई
श्री बालचन्द जी छापरवाल, बुरहानपुर
श्री गोपाल जी राठी, भीलवाड़ा

समन्वय समिति

श्री भागीरथ जी चौधरी, विधायक, किशनगढ़
श्री रासासिंह जी रावत, सांसद, अजमेर
श्रीमती प्रभा ठाकुर, राज्यसभा सदस्य, अजमेर
श्री ओंकार सिंह जी लखावत, अजमेर
श्री अशोक जी पाटनी, किशनगढ
श्री जयनारायण जी अग्रवाल, किशनगढ
श्री गोपाल जी बाहेती, विधायक-पुष्कर
श्री देवीशंकर जी भूतड़ा, विधायक-ब्यावर
श्रीमती अनिता भदेल, विधायक अजमेर
श्री सुभाष जी बहेड़िया, विधायक
श्री विष्णुजी मोदी, विधायक
श्री सुरेश जी दगड़ा, अध्यक्ष-नगरपालिका-किशनगढ
श्री जगजीत सिंहजी, पूर्व विधायक, किशनगढ

श्री नाथुरामजी सिनोदिया, पूर्व विधायक

श्री मांगी लाल जी अग्रवाल, किशनगढ

श्री किशन लाल जी चौधरी, सरपंच -सलेमाबाद

श्री भैरूलाल चौधरी सरपंच, पींगलोद

महामंत्री

श्री शंकर जी बंसल, अजमेर

मंत्री

श्री ओमप्रकाश जी शर्मा, निम्बार्काचार्यपीठ

श्री कैलाश जी काबरा, मकराना

श्री प्रकाश जी बाहेती, मुम्बई

श्री श्यामविहारी जी सूतवाले, जयपुर

श्री ओमजी राठी, मदनगंज-किशनगढ

श्री दिनेश जी किरण, रूपनगर

श्री अयोध्याप्रसाद जी, कच्छ-भुज

महोत्सव व्यवस्था महामंत्री -

श्री राधेश्याजी ईनाणी, किशनगढ

कोषाध्यक्ष -

श्री ओमप्रकाशजी झँवर, मदनगंज-किशनगढ

श्री हनुमानसहाय जी बिड़ला, जयपुर

श्री जयनारायण जी अग्रवाल, बबाइचा

श्री रमेश जी अग्रवाल, किशनगढ़

अर्थ समिति-

श्री दान विहारी जी, निम्बार्कतीर्थ

श्री ओमप्रकाश जी शर्मा, निम्बार्कतीर्थ

श्री रामगोपाल जी बाल्दी, निम्बार्कतीर्थ

श्री शंकरलाल जी गोंदवाले, किशनगढ़

श्री रमेश जी राठी, किशनगढ

श्री घनश्याम जी आगीवाल, किशनगढ

श्री विनोद जी बांगड़, किशनगढ

श्री रामस्वरूप जी चौधरी, किशनगढ

श्री ओमप्रकाशजी झँवर, किशनगढ

श्री जयनारायण जी अग्रवाल, किशनगढ

श्री शंकर लाल जी बंसल, अजमेर

श्री श्यामसुन्दर जी छापरवाल, अजमेर

श्री अशोक जी तोषनीवाल, अजमेर

श्री मदन लाल जी सोमानी, अजमेर

श्री जयनारायण जी गोयल, बबायचा

श्री रतन लाल जी शर्मा, कांकरोली

श्री दिनेश जी मित्तल, कांकरोली

श्री राधामरण जी राठी, कोटा

श्री कृष्णकुमार जी राठी, भवानीमण्डी

श्री दीनदयाल जी सोमानी, जयपुर

श्री चन्द्रविहारी जी सोढ़ानी, जयपुर

श्री मुरारीजी सूतवाले, जयपुर

श्री हनुमान सहाय बिड़ला, जयपुर

श्री गंगासहाय जी रेला, जयपुर

श्री कैलाश जी काबरा, मकराना

श्री रमेश छापरवाल, मकराना

श्री आत्माराम अग्रवाल, मकराना

श्री नटवर लाल जी रांदड़, मकराना

श्री बृजमोहन जी रांदड़, मकराना

श्री अनिल कुमार जी बांगड़, भीलवाड़ा
श्री रूपलाल जी डाड, भीलवाड़ा
श्री मूलचन्द जाखोटिया, भीलवाड़ा
श्री रतनलाल जी झँवर, शाहपुरा
श्री बालमुकुन्द जी बहैडिया, शाहपुरा
श्री मुरली जी मंदड़ा, शाहपुरा
श्री नारायण जी मंत्री, पुष्कर
श्री दयाशंकर जी शास्त्री, ब्यावर
श्रीसुखदेव जी बंसल, ब्यावर
श्री गोपाल जी मित्तल, ब्यावर
श्रीनथमल जी बिड़ला, मेड़तासिटी
श्री शिव बगसजी अग्रवाल, रूपनगर
श्री किशनलाल जी कुमावत, रूपनगर
श्री कमल किशोर जी मून्दड़ा, परबतसर
श्री गोपीकिशन जी बजाज, जोधपुर
श्री दुर्गाप्रसाद जी साबु, जोधपुर
श्री रविजीं सिंघवी, जोधपुर
श्री बाबूलाल जी अग्रवाल, बालोतरा
श्री नन्दकिशोर जी अग्रवाल, बालोतरा
श्री लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल, बालोतरा
श्री रामनिवास जी अग्रवाल, सांचोर
श्री गणपत लाल जी जैथलिया, अहमदाबाद
श्री रतन लाल समदाणी
श्री दीनदयाल जी वैष्णव, अहमदाबाद
श्री भूषण कुमार जी बंसल, अहमदाबाद
श्री सुरेशचन्द जी अग्रवाल, नवसारी
श्री राजकुमार जी मून्दड़ा, वापी
श्री ब्रजमोहन जी छापरवाल, सूरत
श्री विमल जी तोतला, सूरत
श्री ओमप्रकाश जी नोगजा, मुम्बई
श्री कन्हैयालाल जी कासट, मुम्बई
श्री प्रकाशचन्द्र जी बाहेती, मुम्बई
श्री गोपालकृष्ण जी छापरवाल, मुम्बई
श्री राजाराम जी छापरवाल, मुम्बई
श्री महावीर प्रसाद जी सोढ़ाणी, मुम्बई
श्री दिनेश जी बंग
श्री कमलकिशोर बियानी, मुम्बई
श्री गणेश जी भराड़िया, मुम्बई
श्री गोविन्द लाल जी कालानी, मुम्बई
श्री महेश जी बाल्दी, उरण
श्री हीरालाल जी नांवधर, सतारा
श्री रतनलाल जी शर्मा, पूना
श्री भीमकरण जी छापरवाल, इचलकरंजी
श्री बंकटलाल जी बाहेती, इचलकरंजी
श्री नन्दलाल बाल्दी, इचलकरंजी
श्री रामविलास जी मून्दड़ा, इचलकरंजी
श्री रामनारायण जी कोगटा, जलगांव
श्री बिरदीचन्द जी लाहोटी, भुसावल
श्री घनश्याम जी तोषनीवाल, बीजापुर
श्री राजगोपाल जी तोषनीवाल, बीजापुर
श्री सुभाष जी तोषनीवाल, बीजापुर
श्री शंकर लाल जी तापड़िया, शाहपुर-बेलगांव

श्री पूनमचन्द जी मून्दडा, शाहपुर-बेलगांव
श्री नन्दलाल जी बजाज, शाहपुर-बेलगावं
श्री विष्णुप्रकाश जी बजाज, भैंसा
श्री श्याम सुन्दर जी राठी, हैदराबाद
श्री गिरिधारी राठी, हैदराबाद
श्री जगदीशप्रसाद जी पोरवाल, पांडीचेरी
श्री श्याम सुन्दर जी बेरीवाला, कोलकाता
श्री भागचन्द जी मून्दड़ा, कोलकाता
श्री सूर्य प्रकाश जी, जम्बू
श्री अनिल कुमार जी गोयल, कच्छ-भुज
श्री सत्यनारायण जी राठी, नोएडा
श्री रंगनाथ जी न्याती, धामनोद
श्री सत्यनारायण जी राठी, इन्दौर
श्री रामकिशन जी सैनी, इन्दौर
श्री रामअवतार जी जाजू, इन्दौर
श्री अभय जी अग्रवाल, हाथरस
श्री चन्द्र बिहारी जी, हाथरस
श्री ओमप्रकाश जी तायल, सेन्धवा
श्री संजयजी लूटरीया, सेन्धवा
श्री बंकटलाल जी बंग, धुलिया
श्री ब्रजमोहन जी फोफलिया, सोलापुर
श्री गिरिधरजी सोनी, सोलापुर
श्री रमणलाल जी झँवर, सोलापुर
श्री राधेश्याम जी भराड़िया, बार्शी
श्री अमरचन्द जी कासट, आकोला
श्री देवकी नन्दन जी शर्मा, आकोला
श्री नन्दकिशोर जी राठी, हरदा
श्री ओमप्रकाश जी राठी, हरदा
श्री दीनानाथ जी, चौकड़ी-हरदा
श्री सोमप्रकश जी हरदा
श्री लक्ष्मीनारायण जी रांदड़, नागपुर
श्री मोतीलाल जी बियानी, नागपुर
श्री जुगलकिशोर जी बियानी, भीवंडी
श्री रामनिवास जी काबरा, मानवत
श्री बसन्त कुमार जी माहेश्वरी, सिंगापुर
श्री लालचन्द्र जी जैथलिया, दिल्ली
श्री राजकुमार जी राठी, दिल्ली

स्वागत समिति—

श्री बंशी लाल जी कामदार, — **मदनगंज**
श्री श्रवण कुमार जी अग्रवाल
श्री कल्याण जी बंसल
श्री हरिशचन्द्र जी शर्मा (पूर्वप्रधान)
श्री पवन कुमार जी गोयल
श्री घनश्याम जी सूतवाले
श्री श्याम सुन्दर जी दरगड़
श्री ओमप्रकाश जी खण्डेलवाल
श्री ओमप्रकाश जी मैनावत
श्री विष्णुदत्त जी राठी
श्री राजू जी गुप्ता
श्री रामबल्लभ जी छापरवाल
श्री हनुमान प्रसाद जी शर्मा

श्री श्यामसुन्दर जी कासट
श्री राधेश्याम जी कालानी एडवोकेट
श्री घनश्याम जी चौधरी एडवोकेट
श्री बनवारी लाल लाल जी एडवोकेट
श्री घनश्याम जी पुरोहित एडवोकेट
श्री दामोदर जी झँवर
श्री नौरतमल जी भट्टड़
श्री घीसू सिंह जी राठौड़ — **अजमेर**
श्री यज्ञ नारायण सिंह जी
श्री मुरारीलाल जी जौहरी
श्री अतुल जी माहेश्वरी
श्री दिनेश जी हेडा
श्री रामजसजी बाल्दी
श्री मोहन लाल जी साबु
श्री रमेश चन्द्र जी हेडा
श्री सीताराम जी मन्त्री
श्री सत्यनारायण जी अग्रवाल
श्री अरविन्द जी अग्रवाल
श्री सुनिल जी मून्दड़ा
श्री नीरज जी इनाणी
श्री ओमप्रकाश जी ईनाणी
श्री हरिप्रसाद जी खण्डेलवाल
श्री आनन्द जी गर्ग
श्री ओमप्रकाश जी मंगल
श्री नरेन्द्र जी खंडेलवाल
श्री जगदीश जी न्यू ला. क. ले.

श्री सत्यनारायण जी खण्डेलवाल
श्री देवकी नन्दन जी शर्मा
श्री मुकेश जी गुप्ता
श्री श्यामसुन्दर मंत्री — **पुष्कर**
श्री रमेश जी अग्रवाल
श्री दिनेश जी पारासर
श्री कुलदीप जी पाराशर
श्री सर्वेश्वर मिष्ठान भण्डार
श्री देवीलाल पाठक जी इंजिनियर
श्री रमजान खांजी पूर्व विधायक
श्री सत्यनारायण जी, पीसांगन
श्री सीतारामजी शर्मा — **मुकुन्दपुरा-जयपुर**
श्री नाथूलाल जी मेहता
श्री नाथुलालजी शर्मा
श्री प्रभुनारायण जी मेहता
ठा. श्री धूलाराव सा. — **जयपुर**
श्री गंगासहाय जी रेला
श्री द्वारका प्रसाद जी कामदार
श्री भगवानसहाय जी तोषनीवाल
श्री गोविन्द जी धोतीवाले
श्री सुरेश जी गोलच्छा
श्री भँवरसिंह जी शेखावत
श्री गजेन्द्र सिंह जी राठौड़
श्री रामबाबू जी मूर्तिवाले
श्री गोवर्धन जी माजूमवाले
श्री महेन्द्र जी गार्गीय

श्री गजानन्द जी अग्रवाल
श्री महेश जी बैराठी
श्री केशव जी झूमजीवाले
श्री गोकुल जी लोहिया
श्री मोहन जी यादव
पुजारी जी गोविन्ददेव का मन्दिर, — **दौसा**
श्री लक्ष्मणशरण जी
श्री संजय जी झाला
श्री ठा. विजयसिंह जी — **मकराना**
श्री रमेश जी व्यास
श्री रामअवतार जी मानधना,
श्री बृजकिशोर जी माहेश्वरी
श्री नौरतमलजी मालपानी
श्री दीपक जी बंसल
श्री सम्पत जी तोषनीवाल
श्री रामदेव जी अग्रवाल, नावां
श्री भैरू लाल जी चौयल मिस्तरी नावां
श्री गौरीशंकर जी बियाणी, रूपनगर
श्री किशन जी कुमावत, रूपनगर
श्री सत्यनारायण जी राठी, परबतसर
श्री नागरमल जी सोमानी — **कुचामन**
श्री रामनिवास जी तोषनीवाल
श्री गोविन्दगोपाल जी साबू
श्री सम्वपत लालजी लाहोटी
श्री शिवनारायण जी दाधीच, डेगाना
श्री गौतमजी सारस्वत, नागौर

श्री दौलतराम जी मून्दड़ा, केकड़ी
श्री गोविन्दजी वैष्णव, फतेहगढ़
श्री ठा. सा.केशरसिंहजी, फतेहगढ़
श्री जसराजजी डोडिया, सरवाड़
श्री भगवान स्वरूप जी झंवर, सरवाड़
श्री नेमीचन्द जी सोनी, नसीराबाद
श्री भँवरीबाई राठी, नसीराबाद
श्री जगदीश प्रसाद जी भूतड़ा, पाली
श्री हरिप्रसाद जी सोमानी, पाली
श्री मेघराज जी बिड़ला, चित्तौड़गढ
श्री रामनिवास जी धूत, निम्बाहेडा
ठा० श्री उम्मेद सिंह जी, धौली
श्री रतनलाल जी झँवर, शाहपुरा
श्री सोहनलाल जी मून्दड़ा, शाहपुरा
श्री बालमुकुन्द जी बहेड़िया, शाहपुरा
श्री रामस्वरूप जी मून्दड़ा, शाहपुरा
श्री ब्रजवल्लभजी राठी, रिड़,
श्रीनथमल जी बिड़ला, मेड़तासिटी
श्री नन्दलाल जी खण्डेलवाल, मेडतासिटी
श्री राधामोहन जी सोनी, मेड़तासिटी
श्री ओंकारलाल जी स्वामी, चांदारुण
श्री कमल जी नांवधर, चांदारुण
— **मुंबई**
श्री आशाराम जी काबरा
श्री तेजनारायण जी मान्धना
श्री गंगाराम जी झँवर

श्री गिरिराजशरण जी गोयल
श्री नोरतमल जी बाहेती
श्री रामनिवास जी रांदणड
श्री शम्भुदयाल जी गोयल
श्री राधेश्याम जी कासट
श्री किशनलाल जी तोषनीवाल
श्री महावीर जी काबरा
श्री रतनलाल जी बाल्दी, उरण
कैलाश शर्मा, पूना
श्री नारायण जी शर्मा — **कलकत्ता**
श्री ब्रजमोहन जी शर्मा
श्री दिलीपजी लोहिया
श्री भागचन्द्र जी मून्दड़ा
श्री चिंरजीलाल जी कामदार
श्री हीरालाल जी काबरा
— **शोलापुर**
श्री बिरदीचन्दी जी कासट
श्री सूरजनारायण जी राठी
श्री बसन्त कुमार जी अग्रवाल — **सेन्धवा**
श्री हरिच्रन्द्र जी लटुरिया
श्री रामस्वरूप जी जैथलिया, थांवला
श्री विष्णु जी अग्रवाल, नवसारी
श्री राधेश्याम जी बागडिया, तांडूर
श्री सुरेश जी राठी, हरदा
श्री श्यामसुन्दर राठी, हरदा
श्री लक्ष्मी नारायण जी राठी, हरदा

श्री आनन्दमनोहरशरण, जी हरदा
श्री रामचन्द्रजी पटेल — **चौकड़ी**
श्री सर्वेश्वरशरण जी (सोम)
श्री दीनानाथ जी
श्री जमुनादास जी पटवारी
श्री हीरालाल जी नांवधर, सतारा
श्री अमरचन्द जी कासट, आकोला
श्री शंकरलाल जी बियानी, आकोला
श्री राधावल्लभ जी राठी, कोटा
श्री रमणलाल जी राठी, कोटा
श्री रामानुजदास जी मारु, रेनवाल
श्री लक्ष्मीनारायण जी गिलडा आगार
श्री अशोक जी बजाज, सुसनेर
श्री अशोककुमार जी बाल्दी, आमेट
श्री बिहारी लाल जी अग्रवाल, भाटापारा
श्री नन्दलालजी मून्दड़ा, सम्बलपुर
श्री शंकरलाल जी तापड़िया, शाहपुर-बेलगांव
श्री पूनमचंद जी मून्दडा, शाहपुर-बेलगांव
— **इचलकरंजी**
श्री भागचन्द जी बाल्दी
श्री रामस्वरूप जी सोनी
श्री नन्दकिशोर जी भूतड़ा
श्री ओमप्रकाश जी छापरवाल
श्री नटवरलाल जी बाल्दी
श्री सत्यनारायण जी नवाल
श्री भँवर लाला जी सोनी

श्री पन्नालाल जी बिड़ला
श्री पन्नलालजी पालीवाल, इन्दौर
श्री बृजमोहन जी राठी, इन्दौर
श्री रामअवतार जी कचोलिया, इन्दौर
श्री रामस्वरूप जी कचोलिया, इन्दौर
श्री गोविन्द जी भराड़िया, इन्दौर
श्री अशोक जी राठी, इन्दौर
श्री रतन लाल जी बजाज, भैसा
श्री रामनिवास जी राठी, निजामाबाद
श्री सूर्यप्रकाश जी, जम्मू
श्री कृष्णकुमार जी गुप्ता, जम्मू
श्री आर० आर० गर्ग, गुड़गांव
श्री कुलदीप जी, गुड़गांव
श्री नवरतन जी झँवर, गुड़गांव
श्री मुनीराज जी, फरीदाबाद
— दिल्ली
श्री मनमोहन जी राठी
श्री सुरेश जी सुरेखा
श्री रमेश जी लड्डा
श्री चन्द्र विहारी जी **— हाथरस**
श्री हरिचन्द्र जी, मेरठ
श्री रामबाबू जी मानधना, जोधपुर
श्री नटवरगोपाल जी छापरवाल **- सूरत**
श्री विमलकुमार जी तोतला
श्री गोपीकिशन जी भण्डारी
श्री रमेशचन्द्र जी बाल्दी
श्री सुरेश जी तोषनीवाल
श्री रमेश जी बाहेती
श्री प्रदीप जी तोतला
श्री प्रवीण कुमार जी काबरा
श्री शिवरतन जी राठी
श्री रामनिवास जी लाहोटी
श्री सुरेश चन्द जी केला, **- नासिक**
श्री श्यामसुन्दर जी राठी **— हैदराबाद**
श्री घनश्यामदास जी राठी
श्री नारायण जी बाहेती
श्री सोहनलाल जी शर्मा
श्री जेठमल जी निमावत
श्री नन्दलाल जी मून्दड़ा, सम्बलपुर
श्री भूषणकुमार जी बंसल, अहमदाबाद
श्री गणपतलाल जी जैथलिया, अहमदाबाद
श्री दीनदयाल जी वैष्णव, अहमदाबाद
श्री राजेन्द्र जी शर्मा, उज्जैन
श्री रामनिवास जी काबरा, मानवत
श्री सतीश जी बल्दुवा, पैठण
श्री रतिलालजी नागोरी, पैठण
श्री प्रेमनारायण जी राठी, जबलपुर
श्री रमेश जी भराड़िया, ब्यावर
श्री जयनारायण जी जाजू, ब्यावर
श्री तेजभान जी खत्री, ब्यावर
कार्यालय पत्राचार समिति —
श्री वासुदेवशरणजी उपाध्याय, निम्बार्काचार्यपीठ

श्री ओमप्रकाशजी शास्त्री, निम्बार्काचार्यपीठ

श्री ओमप्रकाश जी झँवर, मदनगंज

गुप्ता जी, मकराना

श्री रामगोपाल जी बाल्दी, रिड़

कार्यालय व्यवस्था —

श्री ओमप्रकश जी झँवर, मदनगंज

श्री गोविन्द जी राठी, इन्दौर

श्री नाथूलाल जी यादव, जयपुर

श्री रमेश जी शर्मा, अजमेर

श्री बालकिशन जी शर्मा, निम्बार्कतीर्थ

श्री नटवरलाल जी पारीक, निम्बार्काचार्यपीठ

श्री मदनलाल जी पारीक, निम्बार्काचार्यपीठ

श्री ब्रजमोहन जी शर्मा, हाथरस

मन्दिर अर्चक —

पुजारी श्री राधिकादास जी

पुजारी श्रीश्यामसुन्दर जी

पुजारी श्रीगजेन्द्र जी

पुजारी श्री गिरिराज जी

मन्दिर व्यवस्था —

श्री ब्रजमोहजी छापरवाल

श्री त्रिलोकचन्द जी मुसद्दी

श्री मांगीलाल जी राठी, इन्दौर

श्री बंकट लाल जी बंग, धुलिया

श्री लक्ष्मीकान्त जी पोद्दार, मुम्बई

श्री नारायण जी मन्त्री, पुष्कर

श्री गोपालजी पूड़ीवाले, जयपुर

विद्वत्सेवा समिति —

पं. श्री रेवतीरमण जी शास्त्री, निम्बार्कतीर्थ

पं. श्री विश्वामित्रजी व्यास, निम्बार्कतीर्थ

पं. श्री दामोदर जी व्यास, निम्बार्कतीर्थ

पं. श्री विजयशंकर जी पारीक, निम्बार्कतीर्थ

पं. श्री सत्यप्रकाश जी शास्त्री, जयपुर

पं. श्री राजेश जी शास्त्री, किशनगढ़

पं. श्री मुकुन्दशरण जी, डीडवाना

पं. श्री रमाकान्त जी शास्त्री, धोलपुर

पं. श्री परमानन्द जी शास्त्री, तेवड़ी

पं. श्री परशुराम जी, केराप

पं. श्री शिवचरण जी, बरसाना

पं. श्री रामप्रसाद जी व्याख्याता, मदनगंज

पं. श्री प्रमोदजी शास्त्री, नाथावाला

पं. श्री हरिप्रसाद जी जोशी, सेन्धवा

प्रचार-प्रसार समिति —

संयोजक - श्री किशोरजी मोहता संस्कार

श्री दीनबन्धु जी चौधरी, अजमेर

श्री गुलाबजी कोठारी, जयपुर

श्री रमेश जी अग्रवाल - भोपाल

श्री प्यारे मोहनजी त्रिपाठी, अजमेर

श्री रमेशचन्द जी माहेश्वरी, अजमेर

श्री जय किशोरशरण जी, वृन्दावन

श्री जनार्दन जी शर्मा, पुष्कर

श्री धर्मचन्द जी लोढा, किशनगढ

श्री प्रदीपजी लोढा, जयपुर

श्री राकेश जी टंडन, रूपनगर
श्री पुरुषोत्तमजी खण्डेलवाल, रूपनगर
श्री अरविन्द जी दाधीच, रूपनगर
श्री मनोज जी
श्री भँवरलाल जी उपाध्याय, ब्यावर
श्री राधेश्याम जी उपाध्याय, ब्यावर
श्री ऋषि कुमार जासरावत, निम्बार्कतीर्थ
श्री प्रेमसागर जी शर्मा, किशनगढ

सन्त-महन्त स्वागत समिति —

श्री महन्त श्री बालकदास जी फालेन
महन्त श्री वृन्दावनदास जी अलि माधुरीकुटी-वृन्दावन
महन्त श्री नवलकिशोरदास जी गिरिधारी मंदिर-वृन्दावन
महन्त श्री मनोहरशरण जी पलसाना
महन्त श्री बनवारी शरण जी जूसरी
महन्त श्री ब्रजमोहनशरण जी अहमदाबाद
महन्त श्री सर्वेश्वरशरण जी पुष्कर
महन्त श्री श्यामदास जी थोब
श्री हरिशरण जी
श्री माधवशरण जी
श्री दानविहारीशरण जी
श्री मनोहरशरण जी, खातोली
श्री प्रेमकिशोरशरण जी, पुष्कर
श्री जमुनाशरण जी
श्री कृष्णविहारीशरण जी भण्डारी
श्री कृष्णदास जी भण्डारी
श्री श्यामदास जी, करकेड़ी
श्री रसिकशरण जी
श्री गोपाल शरण जी
श्री सनकादिशरण जी
श्री नवलकिशोरदास जी
श्री श्यामसुन्दर जी, वृन्दावन
श्री गोर्वधनशरण जी, वृन्दावन
श्री दामोदर शरणजी वृन्दावन
श्री जुगलकिशोरशरण जी, महू
श्री बनवारी शरणजी भीलवाड़ा
श्री सोहन जी निम्बार्कतीर्थ

धर्माचार्य-विशिष्ट महानुभाव व्यवस्था —

श्री ओमप्रकाश जी शर्मा, निम्बार्काचार्यपीठ
श्री जुगलकिशोर जी बाहेती, किशनगढ
श्री सरोज जी खेमका, जयपुर
श्री मदनलाल जी पालीवाल, ओडन-नाथद्वारा
श्री ब्रजमोहन जी छापरवाल, सूरत
श्री सत्यस्वरूप जी अग्रवाल
श्री रामप्रसाद जी साहू
श्री भागचन्द जी बाहेती
श्री प्रभु लाल जी काबरा
श्री प्रह्लाद जी काबरा
श्री मोहन जी काबरा

आचार्य श्री महल सेवा समिति —

श्री ओमप्रकाश जी शास्त्री
श्री ब्रजमोहनशरण जी शास्त्री
श्री रसिकशरण जी

लक्ष्मीशंकर शास्त्री

भोजन प्रसाद व्यवस्था —

श्री घनश्याम जी आगीवाल, मदनगंज

श्री विष्णु जी यादव, सेन्धवा

श्री मिश्रीलाल जी भांगड़िया, पनवेल

श्री विनोद जी बांगड़, मदनगंज

श्री गोकुलचन्द जी राठी, रिड

श्री गोपाल लाल जी काबरा, मदनगंज

श्री मुरली जी अग्रवाल, मदनगंज

श्री मोहन जी काबरा, मदनगंज

श्री देवकी नन्दन जी सोनी, जयपुर

श्री गोपाल जी मून्दड़ा

सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति —

श्री चन्द्रविहारी जी सोढ़ानी, जयपुर

स्वामी श्रीरामजी शर्मा,वृन्दावन

स्वामी श्रीगिरिराज जी शर्मा, वृन्दावन

स्वामी श्री भुवनेश्वर जी, वृन्दावन

श्री जुगल किशोर जी सैनी, जयपुर

श्री चन्द्रशेखर जी लहरी, जयपुर

श्री रामकुमार जी शर्मा, निम्बार्कतीर्थ

श्री उमेशचन्द्र जी जासरावत, निम्बार्कतीर्थ

सुरक्षा व्यवस्था —

ठा० श्री करणसिंह जी राठौड़, रोहिण्डी

श्री पृथ्वीराज जी, बबाइचा

श्री तेजसिंह जी अरड़का

श्री सर्वेश्वरसिंह जी, तित्यारी

श्री घीसू सिंह जी, निम्बार्कतीर्थ

श्री गजेन्द्र सिंह जी, निम्बार्कतीर्थ

श्री पप्पू जी शर्मा, निम्बार्कतीर्थ

श्री रामसिंह जी, अरट

श्री सुशीलकुमार जी ओझा, निम्बार्कतीर्थ

श्री गंगासिंह जी शेखावत, जयपुर

श्री सन्दीप सिंह जी, मायापुर

यातायात व्यवस्था —

श्री बंगजी करकेड़ी

श्री अजीतसिंहजी, खानपुर

श्री किशन जी जासरावत, निम्बार्कतीर्थ

श्री रतन जी शर्मा, निम्बार्कतीर्थ

श्री मानसिंह जी, निम्बार्कतीर्थ

श्री प्रभु जी, निम्बार्कतीर्थ

विद्युत व्यवस्था —

श्री रामगोपाल जी गोयल, अजमेर

श्री दामोदरप्रसाद जी शर्मा, जयपुर

श्री गंगास्वरूप जी शर्मा, जयपुर

श्री आनन्द जी सिंघल, जयपुर

श्री नन्दकिशोर जी गोयल, मदनगंज

श्री सुनील जी कामदार, मेरठ

श्री रमेश जी गहलोत, उज्जैन

श्री जगदीश जी जासरावत, निम्बार्कतीर्थ

श्री सत्यनारायण शर्मा, मदनगंज

श्री सुरेश जी जासरावत, निम्बार्कतीर्थ

मंच एवं पाण्डाल व्यवस्था

श्री ओम प्रकाश शर्मा निम्बार्काचार्य पीठ
श्री जमुना शरण जी निम्बार्कतीर्थ
श्री बालमुकुन्दजी अग्रवाल, किशनगढ
श्री प्रेमसागरजी शर्मा, किशनगढ
श्री सोहन जी बाबू, किशनगढ
श्री ताराचन्द्र जी माहेश्वरी
श्री निम्बार्क नवयुवक मण्डल
श्री ब्रजमोहन जी रांदड़, मकराना

जल व्यवस्था —

श्री घनश्याम जी जासरावत, निम्बार्कतीर्थ
श्री आनन्दीलाल जी पाराशर, नरवर
श्री राधेश्याम जी बियाणी, किशनगढ
श्री नोरतमल जी भट्टड, किशनगढ
श्री माहेश्वरी मित्र मण्डल, किशनगढ
श्री हरिश्चन्द्र जी यादव, निम्बार्कतीर्थ
श्री रामेश्वर लाल जी मुढंवाडिया
कावड संघ, मीठड़ी

चिकित्सा व्यवस्था —

वैद्य श्री हरिप्रसाद जी शास्त्री, मुंबई
वैद्य श्री धनाधीश जी, रतनगढ
वैद्य श्री जगदीशप्रसाद जी, खाटूश्यामजी
वैद्य श्री छगनलाल जी, मेहसाना
वैद्य श्री बाबूलाल जी, पालनपुर
डॉ. श्री गुणवन्तसिंह जी झाला, अजमेर
डॉ. श्री एस. आर. मित्तल, अजमेर
डॉ. एस. एस. अग्रवाल, जयपुर
डॉ. श्री पी. सी. टांक, अजमेर
डॉ. श्री श्यामसुन्दरजी भूतड़ा, अजमेर
डॉ. श्री कैलाशजी काबरा, भीलवाडा
डॉ. श्री मनमोहन जी अग्रवाल, अजमेर
वैद्य श्री बालमुकुन्दजी गौड़, निम्बार्कतीर्थ
वैद्य श्री धरणीधरजी उपध्याय, निम्बार्कतीर्थ
वैद्य श्री प्रज्ञावर्धन जी, अजमेर
वैद्य श्री हनुमानप्रसाद जी मिश्र, खाटूश्यामजी
वैद्य श्री राधागोविन्द, दिल्ली
वैद्य श्री गोविन्द जी,(काजल वाले) जयपुर
वैद्य श्रीमदनमोहन जी जासरावत, निम्बार्कतीर्थ
वैद्य श्री ब्रजेशकुमार जी दाधीच, निम्बार्कतीर्थ
वैद्य श्री रमेशजी जांगीड, निम्बार्कतीर्थ
श्री दुर्गालाल जी दाधीच, करकेड़ी
श्री नाथू लाल जी व्यास, निम्बार्क तीर्थ
श्रीघनानन्दजी शर्मा, बबाईचा

आवास व्यवस्था —

श्री रामगोपाल जी बाल्दी, रीड़
श्री राकेश जी शर्मा, हाथरस
श्री अनिल जी गोयल, कच्छ-भुज
श्री सुखदेव जी बंसल, मदनगंज
श्री चांदकरणजी लखोटिया, मदनगंज
श्री रामरतन जी न्याती, मदनगंज
श्री शेषकरण जी हेडा, मदनगंज
श्री नाथू लाल जी चौधरी, मदनगंज

❑❑❑

विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का संक्षिप्त कार्य विवरण

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य के शतोत्तरपञ्चसहस्राब्दी (५१००) वें जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष में अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन

(कार्तिक शु. अक्षय नवमी शनिवार सं. २०६१ से मार्गशीर्ष कृष्ण १ शनिवार तदनुसार दि० २०/११/२००४ से २७/११/२००४ पर्यन्त)

अनन्तश्रीयुतं श्रीमज्जगद्गुरुवरं परम्।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं वन्दे नित्यं सुदर्शनम्।।
राधाकृष्णाऽङ्घ्रिकञ्जेषु रम्ये वृन्दवाने ब्रजे।
निम्बग्रामे राजमानं भजे निम्बार्क देशिकम्।।

श्रद्धालु भावुक महानुभाव!

सर्वविदित है कि अत्यन्त प्राचीन अनादि वैदिक निम्बार्क सम्प्रदाय के आद्याचार्य श्री सुदर्शनचक्रावतार जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य इस पावन धराधाम पर द्वापरान्त में भारतवर्ष के दक्षिण में पैठन निकटवर्ती मूंगी ग्रामस्थ पुण्य सलिला गोदावरी के सुरम्य तट पर सुशोभित महर्षिवर्य श्री अरुण के पवित्र आश्रम में माताश्री जयन्तीदेवी के पुत्र रूप में अवतरित होकर श्रीनियमानन्द नाम से विख्यात हुए थे, और आप ही समागत यतिरूप ब्रह्मा द्वारा प्रदत्त श्री निम्बार्क नाम से विख्यात हुए और आपने स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धांत एवं भगवान् श्रीराधाकृष्ण की रसमयी उपासना का प्रतिष्ठापन किया। निम्बार्क सम्प्रदाय के प्रवर्तक आद्याचार्य आप ही लोक विश्रुत हैं। आपकी तपोभूमि व्रज में श्रीगोर्वधन समीप निम्बग्राम रही है। जिसका संरक्षण संचालन परम्परा से अ.भा. श्री निम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) राजस्थान के अधीनस्थ है। जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर रसिक राजराजेश्वर श्री हरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की आज्ञानुसार राजस्थान में पुष्कर क्षेत्रीय निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद में श्रीसनकादि संसेवित श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवासहित निम्बार्कचार्यपीठाधीश्वर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज ने व्रज से यहाँ पधार कर अ०भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ की संस्थापना की जो सम्पूर्ण विश्व में सर्वमान्य एकमात्र निम्बार्क सम्प्रदाय की प्रधान आचार्यपीठ यही है। जहाँ पर कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा सं. २०६१ को सुदर्शनचक्रावतार श्रीभववन्निम्बार्काचार्य का ५१०० वां जयन्ती महोत्सव मनाया गया। इस जयन्ती महोत्सव को अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज की भावनानुसार भव्य एवं विशाल रूप समायोजित करने हेतु अ०भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन रक्खा गया जिसमें चारों पीठों के जगद्गुरु शंकराचार्य, वैष्णव चतुः सम्प्रदायपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीवैष्णवाचार्य, विभिन्न सम्प्रदायों के धर्माचार्य तथा अनेक सन्त-महन्त, अनी-अखाडों-एवं खालसाओं के श्रीमहन्त, मण्डलेश्वर, महामण्डलेश्वर, विश्वविख्यात विद्वान् एवं राजनेता उपस्थि हुए।

इस विराट् सम्मेलन में विश्वहिताय श्रीसुदर्शन महायाग, षड्दर्शन सम्मेलन, वैष्णव धर्म सम्मेलन, देवस्थान सुरक्षा सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, कवि सम्मेलन, संगीत सम्मेलन, गोमहिमा बोधक भवन का उद्घाटन, श्री चरणों द्वारा रचित गोशतकम् ग्रन्थ का विमोचन, श्री

भागवन्निम्बार्काचार्य द्वारा प्रतिपादित दार्शनिक सिद्धान्त एवं रसोपासना तथा कपालवेध सिद्धान्त विषयक प्रवचन, धर्माचार्यों के सदुपदेश, सन्त महन्त, मण्डलेश्वर, महामण्डेश्वर एवं विद्वज्जनों द्वारा प्रवचन, भजन संध्या, प्रभृति बहुविध कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

इस अष्ट दिवसीय पुनीत आयोजन में प्रत्येक दिन के प्रत्येक कार्यक्रम में एक लाख से दो लाख के बीच सदैव जन समूह की उपस्थिति रही। स्वागत, आवागमन, आवास, भोजन, जल-पान, मञ्च पाण्डाल कार्य व्यवस्था निर्देशन आदि सभी कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न हुए। सभी कार्यों में राज्य सरकार व स्थानीय प्रशासन व भगवज्जनों का हार्दिक सहयोग रहा। धर्मानुरागियों ने श्री सनकादि संसेव्य श्री सर्वेश्वर प्रभु एवं संस्कृत रससिद्ध कवि श्रीजयदेव समाराधति श्रीराधामाधव भगवान् के दिव्य दर्शन तथा समागत धर्माचार्यों के उपदेशामृत और प्रख्यात मेधावी विद्वानों के प्रेरणाप्रद विचारों का श्रवण कर इस सुअवसर का लाभ उठाया।

श्रीभगवन्निम्बार्कायचार्य ५१०० वें जयन्ती महोत्सव समिति अ०भा० श्रीनिम्बाकार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबाद, पुष्करक्षेत्र, किशनगढ, जि० अजमेर राजस्थान ने महोत्सव सुसम्पन्नता के लिए विभिन्न समितियों का गठन कर लगन तत्परता व भाव से सेवा कार्य सम्पन्न किया।

जगद्गुरु आद्य निम्बार्काचार्य के पांच हजार एक सौवें जयन्ती महोत्सव पर अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के प्रेरक व संरक्षक अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री राधासर्वेश्वर शरण देवाचार्य श्री श्रीजी महाराज के सानिध्य में सनातन धर्म सम्मेलन का वैदिकविधि से आद्याचार्य पूजन, देव पूजन व ध्वज पूजन के साथ शुभारम्भ हुआ।

उद्घाटन सत्र २०-११-२००४

मंच संचालक मेवाड़ महामण्डलेश्वर महन्त श्री मुरली मनोहर शरण जी शास्त्री उदयपुर द्वारा विराट् सनातन धर्म सम्मेलन की पृष्ठ भूमि उपादेयता व विचारणीय विषयों का प्रवर्तन व रूप रेखा प्रस्तुत की गयी। स्वागत भाषण स्वागताध्यक्ष श्री वंशीलालजी राठी द्वारा हुआ।

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' महाराज, युवराज श्री श्यामशरण देव जी द्वारा उद्बोधन हुआ।

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी ' महाराज द्वारा विरचित 'गोशतकम् ग्रन्थ' का लोकार्पण महामहिम उपराष्ट्रपति महोदय द्वारा किया गया।

महामहिम श्री भैंरोसिंह शेखावत उपराष्ट्रपति द्वारा दीपप्रज्वलन पूर्वक उद्घाटन एवं उद्बोधन सम्पन्न हुआ।

श्री श्याम सुन्दर जी बेरीवाले का भाषण व जगद्गुरु रामानन्दाचार्य, श्री हर्याचार्य जी महाराज का उद्बोधन हुआ। रात्रि में रासलीला अनुकरण हुआ।

शिक्षा सम्मेलन २१-११-२००८ (प्रातः सत्र)

स्वागत भाषण श्री श्याम सुन्दर बेरीवाले, कोलकाता, श्री बंशीलाल जी राठी,चैन्नई(मद्रास) का हुआ, प्रो. खेमराज केशव शरणजी,नेपाल, महन्त श्री वृन्दावन दास जी काठिया (सुखचर), श्रीलकुट वल्लभ गौड़, उदयपुर, सुश्री विमला भास्कर,दिल्ली, प्रो. बद्री प्रसाद पंचोली (अजमेर), श्री मोहन लालजी छीपा कुलपति (अजमेर), श्री वासुदेव जी देवनानी (शिक्षा राज्य मंत्री), श्री पुरूषोत्तम लाल चतुर्वेदी (पूर्व कुलपति -अजमेर विश्वविद्यालय), जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्री हर्याचार्य जी महाराज अयोध्या प्रभृति महानुभावों के उद्बोधन हुए।

संस्कृत संस्कृति सम्मेलन २१-११-२००९

(सायं सत्र)

इन महाभाग विद्वानों ने संस्कृत में उद्बोधन दिया। लिपिकरण न होने से यहाँ स्मारिका में प्रकाशन नहीं हो पा रहा है। श्री विश्वनाथ जी स्वांई, धर्मशास्त्र विभागाध्यक्ष, श्री कानूशरण भट्टाचार्य, पुराण विभागाध्यक्ष, श्री ज्ञानेन्द्र त्रिपाठी, साहित्य विभागाध्यक्ष, सभी जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी उड़ीसा व श्री हरिशरण उपाध्याय नेपाल।

भक्ति,संगीत व नृत्य निम्बार्क शिशु मंदिर, वृंदावन के बालकों द्वारा संगीत भौरी लाल जी भट्टाचार्य, श्रीमती हर्षा जोशी, तबला पंडित श्री अशोक शर्मा हाथरस व वरिष्ठ चिकित्सकों का सम्मान हुआ।

वक्ता श्री डॉ. अजीत फडके, मुंबई, श्री वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी, मथुरा, श्री मुकुद शरण उपाध्याय, नेपाल, श्री ५ नेपाल नरेश का संदेश वाचन श्री खेमराज केशवशरण जी द्वारा, श्री प्रफुल देव, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्री हर्याचार्य, जीमहाराज, अयोध्या, श्री मनुदेव भट्टाचार्य वाराणसी।

रात्रि सत्र २१-११-२००४ भजन संध्या

श्री विनोद अग्रवाल (मुम्बई), श्रीमती सुशीला बाबेचा (कोलकत्ता) कुमारी प्रीति प्रेरणा श्रीवास्तव, श्री अशोक कुमार तबला वादक, श्री राजेन्द्र प्रसन्ना (दिल्ली) वासुरी वादक श्री बबू भाई।

मातृ शक्ति सम्मेलन २२-११-२००४
प्रातः १०-१ बजे तक

वैदिक मंगलाचरण श्री सर्वेश्वर वेद विद्यालय के छात्रों द्वारा डॉ. अनिल कुमार जी मुंबई को चरक ऋषि उपाधि द्वारा सम्मानित किया गया। वक्ता श्रीमती शोभा चन्दर, सुश्री वसुधा, डॉ. आशा शर्मा, सुश्री विमला भास्कर, श्रीमती शारदा दाहल,(नेपाल) डॉ. प्रभा ठाकुर, अजमेर, कुमारी मीना गोयल, श्रीमती कान्ता गौड़, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्री हर्याचार्य जी महाराज, श्रीमती कमलेश कुमारी, किशनगढ युवराज श्री श्याम शरण देव जी, जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज।

मानव धर्म सम्मेलन २२-११-२००४
सायम् ३-६ बजे

उद्बोधन जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज, श्री मुकुन्द शरणजी, (नेपाल) श्री अनिल जी लोढा, दिल्ली, श्री महन्त वृदावन बिहारी दास जी(सुखचर-कलकत्ता) प्रो. सुभाष चन्द्र जी धर, श्री पाना चन्द्र जी जैन, माननीय अली जनाब अहमद मौलाना जमील अहमद इलाइसी, रामस्नेही सम्प्रदायाचार्य स्वामी श्री रामदयाल दास जी महाराज (शाहपुरा-भीलवाड़ा) (सत्राध्यक्ष), माननीय अहलाद सयद अब्दुल वरी चिश्ती, श्री सुरेन्द्र पगारिया।

देवस्थान सुरक्षा सम्मेलन २३-११-२००४
प्रातः १०-१.०० बजे

वक्ता महन्त श्री राधा किशन दास जी, डूंगरपुर (राज.) महन्त श्री हरिवल्लभ दासजी, (किशनगढ़-रेनवाल) श्री ज्योति शंकर जी त्रिपाठी(वाराणसी), डॉ. श्री वृदावन बिहारी दास जी सुखचर श्री त्रिलोकी नाथ, स्वामी श्री हरिनारायणानन्द जी-दिल्ली, श्री अवधेश कुमार दास जी जयपुर।

श्री केशव शरण जी मुकुद शरण जी के नेतृत्व में 'नेपाल वैष्णव परिषद्' द्वारा जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर अनन्त श्री विभूषित श्री श्रीजी महाराज का अभिनन्दन। वक्ता श्री खेमराज केशव शरण, श्री कृष्ण प्रसाद गुरागाई, श्री भरतराज रेगमी सभी नेपाल वैष्णव परिषद् से। दादू सम्प्रदायचार्य स्वामी गोपाल दास जी महाराज नरेना (सत्राध्यक्ष) पूज्य श्री श्रीजी महाराज का आशीर्वचन।

गोरक्षा सम्मेलन २३-११-२००४,
समय सायम्: ३-६.०० बजे

पद गायन श्री राम कुमार शर्मा

वक्ता एवं उपदेष्टा श्री मुकुन्द जी सोनी, श्री अवधेश कुमार दास जी, श्री रासासिंह जी रावत, अजमेर माननीय श्री भागीरथ जी विधायक, डॉ. वृदावन बिहारी दास, श्री खेमराज केशव शरण, माननीय श्री घनश्याम जी तिवाड़ी, (शिक्षा मंत्री), स्वामी हरिनारायणानन्द जी, जगद्गुरु शंकराचार्य गोवर्धन पीठाधीश्वर स्वामी श्री निश्चलानन्द जी महाराज पुरी, (सत्राध्यक्ष) श्री रामस्नेही सम्प्रदायचार्य स्वामी श्री रामदयाल दास जी महाराज (शाहपुरा), जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पूज्य श्री श्रीजी महाराज।

रात्रि सत्र २३-११-२००४
विशिष्ट कवि सम्मेलन

मंच संचालक श्री रासाबिहारी गौड़, कवि डॉ. सरिता शर्मा, श्री राजेश जैन चेतन, श्री माधव जी दरक, श्रीमती मंजू दीक्षित, श्रीप्रकाश नागौरी, सरदार प्रताप फौजदार, डॉ. विष्णु सक्सेना, श्री लाजपत राय, श्री रास बिहारी गौड़।

षड्दर्शन सम्मेलन २४-११-२००४
समय प्रातः १०-१.०० बजे

वक्ता एवं उपदेष्टा स्वामी श्री अवधेशानन्द जी महाराज, श्री विश्वनाथ जी शास्त्री बीकानेर (न्याय दर्शन), श्री रामनिवास जी लखोटिया, दिल्ली (योग), स्वामी श्री अभिराम दास जी महाराज-जूनागढ (वेदान्त), देवर्षि श्री कला नाथ जी शास्त्री -जयपुर (भक्ति दर्शन), श्रद्धेय श्री अलवेली शरण जी महाराज, श्री राधे बाबा जयपुर (तुलसी साहित्य), कार्ष्णि पीठाधीश्वर श्रद्धेय श्री गुरु शरणानन्द जी महाराज-रमणरेती गोकुल-मथुरा, श्री सत्यदेव जी मिश्रा (कुलपति ज.रा. राजस्थान संस्कृत वि. वि., जयपुर) सत्राध्यक्ष।

वैदिक सम्मलेन २४-११-२००४
समय ३-६ बजे

वक्ता तथा उपदेष्टा डा. धर्मवीर-अजमेर, प्रो. डा. दयानन्द भार्गव-जयपुर, महामण्डलेश्वर स्वामी हरिनारायणा नन्द जी, श्री दिवाकर जी वेदाचार्य, प्रो. कृष्ण पाल सिंह , पं. कृष्णा नन्द उपाध्याय-किशनगंज (बिहार), स्वामी श्री मंगलानन्द जी महाराज अध्यक्ष, भारत साधु समाज , (दिल्ली) जगद्गुरु वल्लभाचार्य, श्री वल्लभराय जी महाराज, स्वामी श्री राघवाचार्य जी महाराज (रेवासा) सत्राध्यक्ष, जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज, धन्यवाद ज्ञापन श्री रमेश माहेश्वरी।

रात्रि सत्र २४-११-२००४

भजन संगीत इन्दौर निवासी शर्मा बन्धु श्री राजीव शर्मा, संजीव शर्मा, मुकेश शर्मा, शैलेश शर्मा एवं साथी तथा कुमारी श्रुति शर्मा एवं मुम्बई निवासी श्री सतीश देवेश एवं साथी द्वारा भजन प्रस्तुति।

वैष्णव धर्म सम्मेलन २५-११-२००४
समय प्रातः १०-१ बजे

मंगलाचरण श्री रमानाथ शास्त्री

वक्ता एवं उपदेष्टा पद्मश्री श्रीमती तीजन बाई-छत्तीसगढ, श्री हरिशरणजी शास्त्री, महन्त श्री हरिवल्लभ दास जी, श्री खेमराज केशव शरण जी-नेपाल, जगद्गुरु शंकाराचार्य द्वारिका ज्योतिष पीठाधीश्वर स्वामी श्री स्वरूपानन्द जी महाराज का पावन संदेश वाचक प्रो. जयप्रकाश नारायण द्विवेदी, स्वामी श्री मंगलानन्द जी महाराज, स्वामी श्री कौशलेन्द्र प्रपन्नाचार्य जी-जयपुर, श्री रमेश जी अग्रवाल (भास्कर) समूह स्वामी श्री विष्णु प्रपन्नाचार्य जी महाराज-डीडवाना, श्री उमेद सिंह जी,

धौली स्वामी श्री रामलखन दास जी, युवराज श्री श्याम शरण देव जी, स्वामी श्री चिन्मयानन्द जी महाराज, जगद्गुरु वल्लाभाचार्य पीठाधीश्वर गोस्वामी श्री वल्लभराय जी महाराज-सूरत, जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज।

निम्बार्क दर्शन सम्मेलन (प्रथम भाग)
२५-११-२००४ समय ३-६ बजे

पदगायन श्री भगवान दास, तबला श्री अशोक शर्मा, बृज लोक गीत निम्बार्क संत्सग मण्डल ग्राम-सकना (मथुरा) पूज्य श्री श्रीजी महाराज द्वारा अजमेर के वरिष्ठ चिकित्सकों का सम्मान

वक्ता पं. श्री दयाशंकर शास्त्री-ब्यावर, महन्त श्री राधाकृष्ण दास जी-डूंगरपुर, महन्त श्री वृदावन बिहारी दास जी, श्रद्धेय स्वामी श्री राघवानन्द जी महाराज-राज राजेश्वरी धाम, धामनोद, जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष् पीठाधीश्वर स्वामी श्री वासुदेवा नन्द जी सरस्वती महाराज-बद्रीकाश्रम।

रात्रि सत्र २५-११-२००४
नृत्य नाटिका एवं भजन संगीत

पद्मश्री, पद्मविभूषण श्रीमती तीजनबाई-छत्तीसगढ़ ,श्रीमती पलमा जोशी, श्रीमती शीला वर्मा, कुमारी अपूर्वा, श्री चिरंजी लाल, कुमारी उमा लहरी-जयपुर।

निम्बार्क दर्शन दर्शन सम्मेलन (द्वितीय भाग)
२६-११-२००४
समय प्रातः १०-१ बजे

वक्ता डॉ. परमानन्द शर्मा-बैराट (जयपुर), महन्त श्री युगलशरणजी-पाटनारायण(आबू), महन्त श्री हरि वल्लभ दास जी, श्री वासुदेव शरण जी उपाध्याय-निम्बार्कतीर्थ, स्वामी श्री कौशलेन्द्र प्रपन्नाचार्य जी महाराज, श्री खेमराज केशवशरणजी, श्री भास्कर श्रोत्रिय-जयपुर, युवराज श्री श्यामशरणदेवजी जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पूज्य श्री श्रीजी महाराज, युगसन्त श्री मुरारी बापू।

आद्य भगवन्निम्बार्काचार्य जन्मदिन महोत्सव
२६-११-२००४ सायं ३-९ बजे
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा संवत् २०६१ शुक्रवार

निखिलमहीमण्डलाचार्य, यतिपतिदिनेश राज राजेन्द्र समभ्यर्चित चरणकमल, अनन्तानन्त श्री विभूषित जगद्गुरु आद्य निम्बार्काचार्य का ५१०० वाँ जन्मदिन महोत्सव।

इस दिन पीठ परिसर, पीठस्थ मंदिर में ठाकुर जी व आचार्य श्री विग्रह का अभिषेक वेद मन्त्रों के साथ शास्त्र विधि से किया गया व आद्य आचार्य श्री के जन्मोत्सव की सेवा सजोई गयी। आचार्य जन्म की लीला दिखाई गई। श्री निर्म्बाकाचार्य श्री के जन्म उत्सव की बधाईयाँ गायी गई। महिमा गान हुआ पूरे पीठ परिसर व महोत्सव परिसर को दीपमाला से विशेष रूप से सजाया गया व निर्म्बाक तीर्थ पर पाँच हजार एक सौ दीपों की ज्योति जलाई गयी। पूज्य जगद्गुरु निम्बार्कपीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज ने प्रथम दीप जलाकर शुभारम्भ किया। विशाल श्रद्धालुजन समुदाय ने जन्मोत्सव में सम्मिलित होकर परम आनन्द का अनुभव किया प्रसाद व बधाईयाँ बांटी गयी।

इस सत्र में मंच पर वर्तमान जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज श्री राधा सर्वेश्वर शरण देवाचार्य जी के कर कमलों में श्रद्धा स्वरूप श्रद्धालुजन समुदाय की ओर से राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे द्वारा अभिनन्दन ग्रंथ 'निम्बार्क गौरव' का सादर समर्पण किया गया।

स्मारिका में जगद्गुरु निम्बार्कपीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज को समर्पित अभिनन्दन ग्रन्थ (निम्बार्क गौरव) का संक्षिप्त परिचय व अभिनन्दनीय आचार्य श्री के

व्यक्तित्व पर पं. रामस्वरूप गौड़ द्वारा प्रकाश।

इसी दिन आचार्य पीठ के अर्न्तगत गंगा सागर स्थान पर नवनिर्मित गोमहिमाबोधक-भवन (गौशाला) का मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे जी द्वारा गो सेवार्थ अर्पण किया गया।

वक्ता श्री लक्ष्मी नारायण दवे (पर्यावरण मंत्री) स्वामी श्री विद्यानन्द जी महाराज, जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष पीठाधीश्वर, स्वामी श्री वासुदेवानन्द जी सरस्वती महाराज, श्रद्धेय श्री श्याम शरण देव जी जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज, श्री भागीरथ जी चौधरी विधायक, श्रीमती वसुन्धरा राजे मुख्यमंत्री राजस्थान का उद्बोधन हुआ।

रात्रिसत्र २६-११-२००४

भजन संगीत

श्रीमती हर्षा जोशी, श्री कैलाश पीयूष अनूज एवं साथी

समापन सत्र २७-११-२००४

श्री बंशीलाल जी राठी, स्वागताध्याक्ष, महन्त श्री मोहन शरण जी, स्वामी श्री वृदावन बिहारी दास जी, श्री उमेद सिंहजी-धोली, स्वामी श्री क्षमा राम जी महाराज-जोधपुर, श्री हरिप्रसाद जोशी, श्री सत्यनारायण राठी, जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री वासुदेवानन्द जी महाराज, रास के स्वामी श्री भुवनेश्वर जी वशिष्ठ, रासस्वामी श्री गिर्राज प्रसाद जी-वृन्दावन, महन्त श्री हरिवल्लभ दास जी, जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पूज्य श्री श्रीजी महाराज का सदुपदेश, मंच संचालक मेवाड़ महामण्डलेश्वर महन्त श्री मुरली मनोहरशरण जी शास्त्री उदयपुर, का सनातन धर्म सम्मेलन का सार वतव्य, धन्यवाद ज्ञापन व उद्बोधन के साथ सम्मेलन का मंञ्चीय कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

मार्गशीर्ष कृष्णं प्रतिपदा शनिवार

दि० २७-११-२००४

यज्ञ मण्डप में यज्ञ की पूर्णाहुति हुई महोत्सव समिति द्वारा समागतो का सम्मान व भेट विदाई हुई पूज्य आचार्य श्री के आशीर्वचन व महोत्सव समिति के आभार प्रदर्शन के साथ समारोह का विसर्जन हुआ।

❒❒❒

भगवान श्रीराधामाधव

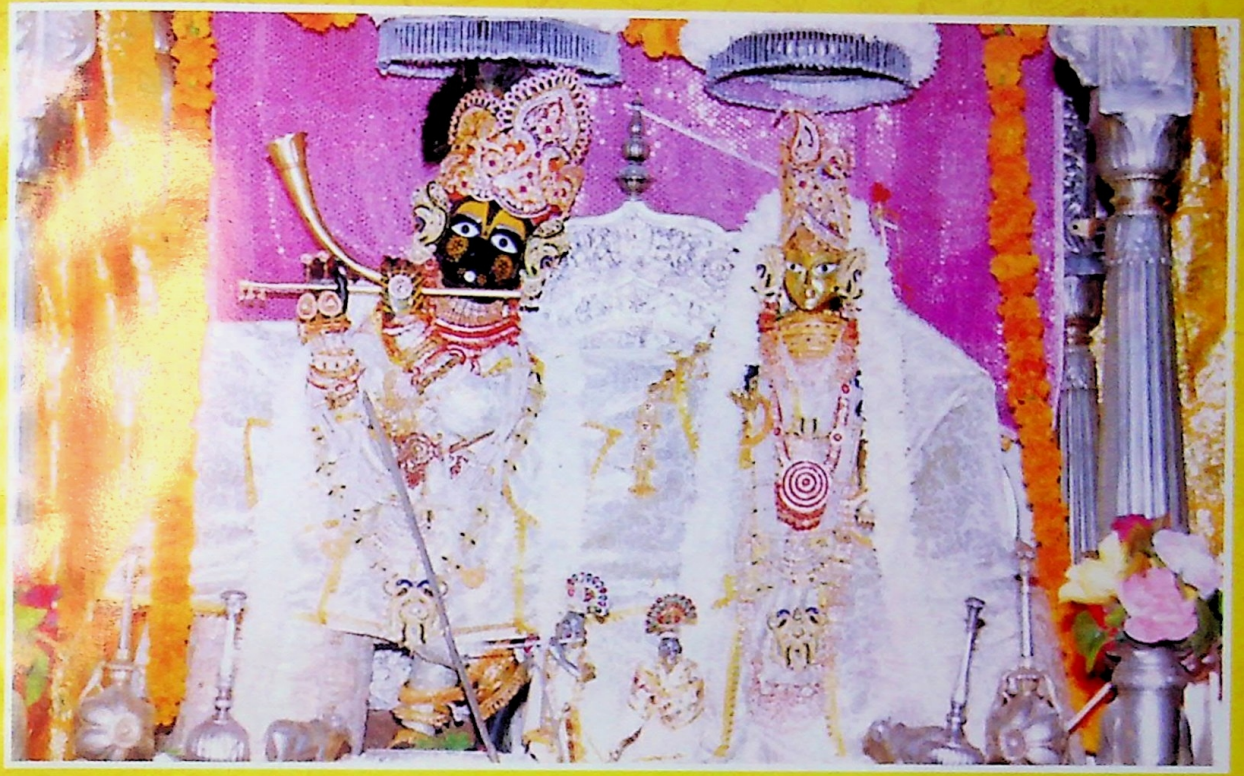

भगवान श्री सर्वेश्वर प्रभु

श्रीहंस भगवान, महर्षिवर्य श्रीसनकादि,देवर्षि श्रीनारद,
सुदर्शन चक्रावतार श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य, पाञ्चजन्य
शंखावतार श्रीश्रीनिवासाचार्य, आचार्य पंचायतन

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

उद्घाटन समारोह

जगद्गुरुआद्य निम्बार्काचार्य के पांच हजार एक सौ वें जयन्ती महोत्सव पर आयोजित

अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन

(1) उद्घाटन समारोह 20/11/2004

वैदिक मंगलाचरण श्री निम्बार्काचार्य पीठ ''सर्वेश्वर वेद विद्यालय'' के छात्रों द्वारा प्रसारित हुआ।

वैदिक स्वस्ति संगीत की स्वर लहरी जयपुर के श्री युगल किशोर सैनी एवं साथियों द्वारा निनादित हुई।

स्वागत गान

निम्बार्क वन्दना, राष्ट्र गान एवं संकल्प गीत । श्री निम्बार्क शिशु मन्दिर वृन्दावन के छात्र एवं छात्राओं द्वारा गाया गया।

धर्म सम्मेलन के संरक्षक व प्रणेता

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री राधासर्वेश्वर शरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

उद्घाटन समारोह के विशिष्ट अतिथि व उद्घाटन कर्ता

महामहिम श्री भैरोंसिंह शेखावत, (उपराष्ट्रपति भारत)

उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्री हर्याचार्य जी महाराज काशी पीठाधीश्वर

सभा संचालक

मेवाड महामण्डलेश्वर श्री मुरली मनोहर शरणजी द्वारा कार्यक्रम का संक्षिप्त परिचय :-

राजस्थान ही नही देशभर में वैष्णव परम्पराओं में सबसे प्राचीन यदि कोई आचार्य है तो निम्बार्क सम्प्रदाय के आदि आचार्य श्री निम्बार्क हैं। उनका प्रादुर्भाव आज से ५१०० वर्ष पहले दक्षिण भारत में हुआ और इधर वृन्दावन में गोवर्धन के समीप नीमगाँव में आपकी तपस्थली रही,आपका आश्रम बना। नीम के वृक्ष पर सूर्य के दर्शन कराने के कारण आप निम्बार्क कहलाये। संस्कृत में नीम को ''निम्ब'' कहतें हैं सूर्य को ''अर्क'' कहते हैं नीम और अर्क से निम्बार्क नाम हुआ। जो दिवा भोजी थे नीम गांव आचार्य के आश्रम पर आये। संध्या हो गयी भोजनार्थ प्रार्थना की गयी तब उन्होंने कहा, भैया हम तो रात्रि को भोजन नहीं करते। तब भगवान निम्बार्काचार्य ने जो साक्षात् सुदर्शन के अवतार है, ***सुदर्शन महाबाहो कोटिसूर्यसमप्रभ। अज्ञान-तिमिरान्धानां विष्णोर्मार्ग प्रदर्शय।*** विष्णु का पथ दिखाने के लिये, विष्णु का मार्ग दिखाने के लिये परम आयुध सुदर्शन के अवतार आदि आचार्य ने निम्ब वृक्ष पर सूर्य दिखाकर उन्होंने उनको रात्रि में भोजन कराया। इस तरह सम्प्रदाय व आद्याचार्या का नाम निम्बार्क बना। यह ५१०० वर्ष पुराना इतिहास मैंने आपके सामने रखा है॥

वर्तमान में इस सम्मेलन के लिए इतना बड़ा आयोजन क्यों किया गया है। माननीय उपराष्ट्रपति महोदय को यहाँ क्यों कष्ट दिया गया है ? इतने सन्त महात्मा यहाँ

क्यों आये हैं ? इतनी जनता जनार्दन यहां क्यों पधारी हैं ? उसके पीछे एक बड़ा महत्वपूर्ण दृष्टिकोंण हैं। वर्तमान समय में विविध आयामों द्वारा विविध माध्यमों के द्वारा समाज का जो स्वास्थ्य हैं, समाज का जो मानसिक स्वास्थ्य है, उसमें कुछ कठिनाइयाँ आ रही हैं समाज के मानसिक स्वास्थ्य को ठीक करने, क्योंकि निम्बार्क सम्प्रदाय ने अपने कार्यकाल में वेदान्त के द्वारा, दर्शन के द्वारा जहाँ समाज के स्वास्थ्य को ठीक रखा। भक्ति के द्वारा समाज के स्वास्थ्य को ठीक रखा, उपासना के द्वारा समाज के स्वास्थ्य को ठीक रखा और इस उपासना के द्वारा समाज की सेवा की उसी निम्बार्क सम्प्रदाय के सामने वर्तमान में एक बड़ा जबर्दस्त प्रश्न आ पड़ा है कि समाज की बाल पीढ़ी, समाज की युवा पीढ़ी समाज के सामाजिक लोग, समाज की राजनीति, समाज की और नितीयाँ, धर्मनीतियाँ इन सब में अपने स्थान से हटने या गड़बड या इधर-उधर होने की गुंजाइश नजर आने लगी हैं। उस गुंजाइश को ठीक करने का दायित्व यदि समाज के लोगों का है, यदि समाज के राजनेताओं का है तो आदरणीय बन्धुओं धर्मगुरूओं का भी उसमें कम दायित्व नहीं होता। इस दायित्व को निर्वाहित करने के लिए समाज का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा बने, समाज में नैतिकता की प्रतिष्ठा हो, जिस भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए माननीय उपराष्ट्रपति महोदय के संदेश बार बार अखबारों में पढ़ने को, देखने को मिलते हैं उस तरह के इस भयानक भ्रष्टाचार के रावण को और अनैतिकता के मेघनाद को और प्रमाद और आलस्यों के कुंभकरण को समाप्त करने के लिए कोई मार्मिक और तेजस्वी आयोजन होना चाहिये। निम्बार्काचार्य पीठ में यह तेजस्वी आयोजन इस समाज को दिशा देने के लिए और भक्ति पथ में प्रवृत्त करने के लिए हुआ है। आज सामाजिक रूप से देखा जाए तो भक्ति भाव दिखावट के रूप में आ गया है, आत्मा में नहीं बैठा, भक्ति आत्मा का विषय है, भक्ति मन का विषय है, भक्ति कल्याण का विषय है, भक्ति इन्द्रियों का विषय है, भक्ति पर्वो का विषय है, यह पर्वोत्सव आत्मा मन इन्द्रियाँ इन सबको केन्द्रित करके अन्तर्मुखी बनाने के स्थान पर बहिर्मुखी जाने वाले समाज को और बहिर्मुखी जाने वाली आध्यात्मिक व्यवस्था को पुनः अन्तर्मुखी बनाने के लिए इस सम्मेलन द्वारा एक जनजागरण का अभियान छेड़ा जायेगा, इस सम्मेलन के द्वारा संतो में जागरण का अभियान छेड़ा जायेगा। इस सम्मेलन के द्वारा राजनेताओं को इधर आकृष्ट किया जायेगा इधर बुलाया जायेगा इधर योजित किया जायेगा और समाज के मूर्धन्य विभिन्न वर्गो में लोग है जिस बन्धुत्व की स्थापना निम्बार्काचार्य ने की जिस प्रेम का सन्देश निम्बार्काचार्य ने दिया। रस उपासना के नाम से, निकुँज उपासना के नाम से राधाकृष्ण के प्रेम के नाम से, राधाकृष्ण की भक्ति के नाम से जिस परम प्रेम साधना उपासना, का सन्देश भगवन् निम्बार्काचार्य ने दिया, उस सन्देश को वर्तमान जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री राधा सर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी महाराज की कृपा से राजस्थान की भूमि में पुनः प्रतिष्ठित करने के प्रयत्न में यह आयोजन आरम्भ किया गया है, मैं समझता हूँ भगवान राधासर्वेश्वर की कृपा से यह आयोजन राजस्थान में एक ऐतिहासिक आयोजन समझा जायेगा वह मील का पत्थर समझा जायेगा।

जहाँ से आत्मीयता शुरु होगी, प्रेम प्रारम्भ होगा, बन्धुता प्रारम्भ होगी, आकर्षण प्रारम्भ होंगे, सदाचार प्रारम्भ होगा, और राष्ट्रीयता विकसित होगी, इन्हीं उद्देश्यों को लेकर के भिन्न-भिन्न प्रकार के दश-ग्यारह सम्मेलन इस अवसर पर किए जा रहे हैं। संस्कृति, शिक्षा को बढ़ावा देना, शिक्षा में आदर्शों की स्थापना करना, देवस्थानों के मंदिरों की सुरक्षा करना। हम देखते हैः- रोज पढ़ते हैं अमुक मंदिर का आधिपत्य सरकार ने ले लिया, अमुक मंदिर को सरकार लेना चाहती है, अमुक

मंदिर में अव्यवस्था है, यह सारे जो संकट हैं, इन संकटों पर गम्भीर चिन्तन मंथन करने के लिए यह सात दिन का लम्बा सम्मेलन पूज्य ''श्रीजी'' महाराज की प्रेरणा से हम लोगों ने, सब लोगों ने आयोजित किया है। हमारे माननीय अतिथि उपराष्ट्रपति महोदय जी पधारे, मंत्रीगण पधारे, विधायक-सांसद पधारे, कार्यकर्ता पधारे, जनता जर्नादन पधारी। मैं इस मंच की ओर से आप सबका हृदय से स्वागत करता हुआ आगे कार्यक्रम के लिए अनुरोध करता हूँ- **धन्यवाद।**

स्वागताध्यक्ष श्री वंशीलालजीराठी द्वारा स्वागत भाषण

प्रेम से बोलिये श्री सर्वेश्वर भगवान की जय, अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु श्री ''श्रीजी'' महाराज, अयोध्या से पधारे जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य श्री हर्याचार्य जी महाराज, हमारे राजस्थान में जन्मे महामहिम उपराष्ट्रपति श्री भैंरोसिंहजी शेखावत साहब, हमारे युवराज श्री श्याम शरण देव जी महाराज, एवं पधारे हुये महन्तगण, मंत्री महोदय सांसद महोदय मेरे साथीगण एवं धर्मप्रेमी साधुगण। आज बड़ा ही हर्ष का दिन है कि श्री भगवान निम्बार्काचार्य जी की ५१०० वीं जयन्ती के पावन सुअवसर पर विराट् सनातन धर्म सम्मेलन और मानव धर्म सम्मेलन का उद्घाटन महामहिम उपराष्ट्रपति श्री भैंरोसिंह जी के कर कमलों द्वारा हो रहा है। श्री भगवन् निम्बार्काचार्य का प्रार्दुभाव महाराष्ट्र के छोटे से गांव मूँगी पैठण में हुआ जिसकी महिमा मैंने एक छोटी सी पुस्तक में की है, वह वितरित की जा रही है। सनातन धर्म-सम्मेलन में सभी धर्मों का समावेश करते हुए जगद्गुरु श्री ''श्रीजी'' महाराज द्वारा हो रहा है। यह हमारे मानव जीवन की संजीवनी है। सप्तदिवसीय आयोजन को राज्यप्रशासन, सांसद, विधायक एवं श्री ''श्रीजी'' महाराज के भक्तगणों ने अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया है। विशेषकर श्री राधेश्याम जी ईनानी, रमेशजी सोनी एवं सांसद, कार्यकर्ताओं को इस कार्य का उल्लेखनीय श्रेय जाता है। यह धर्म सम्मेलन धर्म, समाज, संस्कृति, जनता व राजनीति के लिए हितकर व गौरव की बात है। मेरा ऐसा मानना रहा है कि आने वाला समय मानव मात्र के लिए संस्कारी और सनातन धर्म के लिए अभ्युदयकारी रहेगा। आज मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि ५३ वर्ष के बाद राजस्थान के सपूत देश के इतने उच्च पद को गौरवान्वित कर रहे है। मैं प्रभु से इनके लिए शतायु होने की प्रार्थना करता हूं। सरल स्वभाव उदार हृदय जगद्गुरु श्री ''श्रीजी'' महाराज के ऐसे भाव उजागर हुये कि निम्बार्क भगवान की ५१०० वीं जयन्ती को महोत्सव के रूप में मनाया जाए और इसी के अनुसार इस सुअवसर पर विराट् सनातन धर्म सम्मेलन करना चाहिए। वह भाव आज साकार हो रहा है। इसकी सुगन्ध पूरे भारत में फैलेंगी इसके लिए मैं महाराज श्री को बार बार नमन करता हूँ। महोत्सव निर्विघ्न सफल होंवे यह कामना श्री चरणों में करता हूं। गोशतकम् ग्रन्थ का विमोचन महामहिम श्री उपराष्ट्रपति के द्वारा किया जावेगा। समय के अभाव के कारण यहीं विराम देते हुए इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ इस विराट धर्म सम्मेलन व श्री निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज की जय! सनातन धर्म की जय!

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री ''श्रीजी'' महाराज

समुपस्थित हमारे इस भारत राष्ट्र के उपराष्ट्रपति महोदय आप जिस पद पर अर्थात् उपराष्ट्रपति पद पर सुशोभित हैं और साथ ही हमारे वैष्णव जगत के परमभूषण जगद्गुरु आचार्यप्रवर रामानन्दाचार्य श्री हर्याचार्य जी महाराज तथा हमारे श्री महन्त, महन्त, मण्डलेश्वर, महामण्डलेश्वर एवं विशिष्ट समिति के सदस्यगण तथा हमारे विभिन्न मंत्री महानुभाव, विधायक महानुभाव तथा

भगवत् पदारविंद मकरन्द सेवन परायण समस्त श्रद्धामयी ये भावुक जनता। आज का दिवस कितना अनुपम है, कितना महिमामय हैं, हमारे सीमित शब्दकोष में शब्दराशि नहीं है जो अपने भावों को अभिव्यक्त कर सकें। जिस उद्देश्य को लेकर के यह आयोजन आपके सामने उपस्थित है उसकी भूमिका, उसकी रूपरेखा, उसका पावन स्वरूप हमारे मेवाड महामण्डलेश्वर महन्त प्रवर श्री महन्त श्री मुरलीमनोहर शरण जी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य जी ने स्पष्ट कर दिया हैं, हमे विशेष कहने की अपेक्षा नहीं है।

इस भूतल पर आज से ५१०० वर्ष पूर्व श्रीसुदर्शन चक्रावतार श्रीभगवन् निम्बार्काचार्य आविर्भूत हुये। उन्होंने अपने वेदान्त कामधेनु दशश्लोकी में एक इतना सुन्दर विलक्षण मानव मात्र के लिए उपदेश दिया है- **''उपासनीयं नितरां जनैः सदा''** यहाँ पर बहुवचन का प्रयोग किया हैं, जनैः प्रत्येक मानव मात्र को अपने जीवन में अजस्त्र शान्ति प्राप्त करने के लिए परमानन्द प्राप्त करने के लिए अपने जीवन में जो अस्तव्यस्तता हैं, उसके निवारण के लिए अनरत जो इस जगत के एक मात्र आधार है जो चर्कर्ति वभर्ति, जर्हर्ति जगत, सारे जगत का निर्माण करते है, सारे जगत का सम्पोषण करते हैं, सारे जगत का संहरण भी करते हैं ऐसे जो सर्वान्तरात्मा सर्वाधिष्ठान भगवान् सर्वेश्वर हैं उनकी उपासना करनी चाहिये उनकी आराधना, उनका चिन्तन, उनका अनुस्मरण, सतत करना चाहिए, **उपासनीयं नितरां जनैः सदा**, सदा का प्रयोग किया है, अनवरत? ''सततमावर्तयेत् सततं भावयेत्''के अनुसार आपने वेदान्त दर्शन में जो भाव व्यक्त किये हैं उसी की चर्चा अपने वेदान्त कामधेनु दशश्लोकी में की है। आपके अनेक महनीय दिव्य पावनतम उपदेश है, और वे राष्ट्र के लिए कितने हितप्रद है, राष्ट्र को जो आपने संदेश दिया है, सारे विश्व को जो सन्देश दिया है वो इतना- जिस प्रकार भगवान वेदव्यास जी नेअपने महाभारत में **'स्वं स्वं चरित्रम् शिक्षेरन् पृथिव्याम्'** यह जो उपदेश किया हैं, इसी प्रकार श्री निम्बार्क भगवान् ने भी अपने वेदान्त कामधेनु दशश्लोकी में अपने भाव व्यक्त किए हैं। हमारे देश में आज जो विश्रृंखलस्थिति चल रही हैं, हिंसावृत्ति हमारे जीवन में आ रही हैं, दूरदर्शन में जो अश्लील प्रदर्शन हो रहा है जो हमारे जीवन के लिए अत्यन्त घातक हैं। उसके अतिरिक्त और भी ऐसे बहुत से प्रसंग हैं कि जिनके कारण से हमारा जनजीवन अस्तव्यस्त होता जा रहा है। देव स्थानों की सुरक्षा, गोमाता की सुरक्षा, श्रीराम जन्मभूमि की सुरक्षा, आदि आदि अनेक ऐसे पावनतम प्रसंग हैं कि जिनके सम्बन्ध में हमें गम्भीरता से चिन्तन करना होगा। इन अनेक प्रसंगो को ले करके हमारे जितने शीर्षस्थ राजनेता हैं, हमारे धर्माचार्य प्रवर हैं, सन्त महात्मा हैं, मण्डलेश्वर हैं, महामण्डलेश्वर हैं, सभी एक मंच पर समासीन हो करके स्वस्थ, सुन्दर शुद्ध नवनीत प्रदान करें जिससे आज अशांतिकर जो साम्राज्य हो रहा है उसका निराकरण हो, स्वस्थता हमें प्राप्त हो, हमारे जीवन की दिशा सुन्दर बने, ये हमारे समस्त आचार्य प्रवरों ने जो दिशा प्रदान की है, प्रेरणा प्रदान की है, उसका हम अनुगमन करें तदनुकूल हमारे जीवन की चर्या बनें सौभाग्य की बात है।

ऐसे इस पावन अवसर पर उसका शुभारम्भ किया है। हमारे यहाँ पर जितने देव हैं, क्षेत्रपाल हैं, जब हम अपनी आराधना, उपासना करते हैं तो क्षेत्रपालों का हमें चिन्तन करना होता है। उन्हीं में एक क्षेत्रपाल, विशिष्ट क्षेत्रपाल हैं उनका भी हमें चिन्तन करना होता है और वो हैं, भैरव और भैरव हमारे भैरोंसिंहजी के रूप में आज यहाँ पर हमारी रक्षा करने के लिए हमारी सुरक्षा करने के लिए विद्यमान है। हमारे इस राजस्थान की भूमि को अलंकृत करने वाले और आज उपराष्ट्रपति के पद पर सुशोभित हो करके पावन प्रेरणा प्रदान करने वाले हमारे मध्य में विराजित हैं, वह हमें ऐसी सुन्दर स्वरूप दिशा

अपने उपदेश में देंगे। जो दिग भ्रमित हो रही हैं। हमारे राष्ट्र की और विश्व की स्थिति विश्रृंखलित होती जा रही है, उसमें पावनता हो, उसमें सात्विकता हो, उसमें सौहार्द्र भाव हो, प्रेमभाव हो, किसी प्रकार का विकार न हो। ये जो आज हमारे राजनीति में भी एक अस्तव्यस्तता हैं उसमें भी संशोधन हो ये भी हमारे लिए परम अपेक्षित है। ऐसे अनेक प्रसंग हैं जो गहन चिन्तनीय हैं वह यहाँ पर पधारे हुये जगद्गुरु वरेण्य सब अपने भाव अभिव्यक्त करेंगे और शुद्ध ऐसी दिशा प्रदान करेंगे जिससे केवल यहाँ प्रवचन मात्र न हो करके उसे कार्यान्वित करने के लिए हम यथेष्ट प्रयास करें। केवल प्रवचन मात्र न हो उपदेश मात्र न हो, वह हमारे जीवन में चरितार्थ हो और उसके अनुसार हमारे जीवन की चर्या चले, इसी दृष्टि से यह आयोजन यहाँ पर आयोजित किया है और वह श्री निर्म्बाक भगवान की ५१०० वीं जयन्ती के अवसर पर अखिल भारत वर्षीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के रूप में यहाँ पर समायोजित हुआ और इस अवसरपर आज आप सभी यहाँ पर विराजित हैं।

संक्षेप में हम इन्हीं भावों को अभिव्यक्त करते हुये, ये ऐसी भावना हम रखते हैं, कि हमारे उपराष्ट्रपति महाभाग अपने ऐसे पावन सन्देश दें जिससे कि आज जो वर्तमान में विभिन्न प्रकार की परिस्थितियाँ विकृत परिस्थितियाँ होती जा रही हैं, उनका हम कैसे निवारण करें, कैसे हमारा मार्ग प्रशस्त हो, इस दिशा को आप प्रदान करेंगे ऐसी हम भावना रखते हुये अपने व्यक्तव्य को बहुत शीघ्र ही विराम देना उचित समझते हैं।

युवराजश्री श्रीश्याम शरण देव जी, निम्बार्काचार्य पीठ, निम्बार्क तीर्थ

प्रातः स्मरणीय परमपूज्य आचार्य चरण, रामानन्दाचार्य श्री हर्याचार्य जी महाराज एवं उपराष्ट्रपति महोदय, परमभावुक भक्त महानुभाव। आज समस्त सनातन धर्म के लिए गौरव का विषय है कि भगवान् निम्बर्काचार्य जी के जन्म महोत्सव के उपलक्ष में विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का समायोजन हो रहा है। यह आप सभी को विदित है कि द्वापर के अन्त में जब धर्म का नाश होने लगा तब भगवान् श्रीकृष्ण की आज्ञा पाकर निम्बार्क भगवान् ने अधर्म निवृत्तिपूर्वक धर्म संस्थापनार्थ जो ऐतिहासिक कार्य किए उन्हीं पद चिन्हों का अनुसरण हमारे वर्तमान आचार्य श्री कर रहे है। उसका उदाहरण आप सभी के सामने इस विराट् सनातन धर्म के रूप में यहाँ प्रस्तुत है। हमारे आचार्य श्री ने ऐसे कई समायोजन कराये हैं जिनके द्वारा इस देश को नई गति प्रदान हुई है। मेरा मानना है यदि हमारे आचार्य श्री के अनुसार इसी प्रकार सभी धर्माचार्य, हमारे देश के सभी सन्त महन्त समन्वयात्मक दृष्टि से, समन्वयात्मक भावना से कार्य करते रहें तो आने वाले समय में एक धार्मिक नये भारत राष्ट्र का उदय होगा, ये मेरा मानना है। आज हम सभी के जन्म-जन्मान्तरों के, कल्प-कल्पान्तरों के, युग-युगान्तरों के पुण्यों का उदय हुआ है जो हम सभी के इस कार्यकाल में हमें इस जयन्ती उत्सव को मनाने का सौभाग्य मिला है। आप सभी इस उपलक्ष में यहाँ आकर सभी धर्माचार्यो के दर्शन कर रहे हैं, मैं सभी की मंगल कामना करते हुये

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

जगद्गुरुश्री निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज द्वारा विरचित :-

''गोशतकम् ग्रन्थ'' का लोकार्पणः-

माननीय महामहिम उपराष्ट्रपति महोदय द्वारा

श्री भैंरोसिंह शेखावत उपराष्ट्रपति भारत

परम आदरणीय जगद्गुरु निम्बार्काचार्य जी महाराज, जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य जी महाराज, युवराज श्री श्यामशरण देव जी, राज्य के सिंचाई मंत्री श्री सांवरमलजी, सांसद श्री रासासिंहजी, सांसद श्रीमती प्रभा ठाकुर, उच्चशिक्षा राज्य मंत्री श्री वासुदेवजी, पूर्व सांसद श्री रामलाल जी अग्रवाल, पंचायत मंत्री श्री कालू लाल जी गुर्जर, विधायक श्री भागीरथ जी चौधरी, उपस्थित सज्जनों और देवियो- मैं सबसे पहले जगद्गुरुश्री निम्बार्काचार्य जी के प्रति आभार प्रकट करना चाहुँगा कि निम्बार्काचार्य सम्प्रदाय के इस महाकुम्भ का उद्घाटन करने के लिए उन्होंने मुझे आमन्त्रित किया। यह जो इस प्रकार की उपस्थिति हुई है वह एक प्रकार का महाकुम्भ है। आप इस पर विचार करिये कि-निम्बार्काचार्य जी महाराज का जन्म ५१०० वर्ष पूर्व हुआ था। द्वापर में उनका जन्म हुआ और आज उनके जन्मदिन पर हम यहाँ एकत्रित हुये हैं- आज कोई लड्डू तो मिलने वाले हैं नहीं आप सब अपने गाँवो से आये हैं। कोई पैदल चलकर आये हैं, कोई बस में आये हैं, कोई साइकिल से आये हैं- और अब वापस जायेंगे तो जो नहीं आये हैं वो आपसे पूछेंगे कि आप सलेमबाद से क्या लाये, आप अपने मन में विचार करो कि जाने पर इसका आप क्या उत्तर देंगे। यदि आपके पास कोई उत्तर नहीं हैं, तो मैं समझता हूँ या तो केवल यही कहा जा सकता हैं- मेला देखने आये थे और मेला देखकर वापस जा रहे हैं- लेकिन मेले में अन्तर हैं, आज पुष्कर का भी मेला लग रहा है, पुष्कर हमारा तीर्थस्थान है-वहाँ कुण्ड है उस कुण्ड में हम स्नान करते हैं, और स्नान करने के पश्चात् अपने गाँव जाते है, या अपने घर जाते हैं तो एक उत्तर दे देते हैं कि हम पुष्कर गये पुष्कर तीर्थ में हमने स्नान किया, ब्रह्मा जी के मंदिर में गये उनके दर्शन किए और वहाँ ऊंट और घोड़े बहुत अच्छे-अच्छे इक्ट्ठे हुये थे, उनको दौड़ते हुये भी खूब देखा लेकिन यहाँ के लिए आप क्या कहेंगे।

आपको कोई न कोई बात मन में तय करनी पडेगी यहां से क्या संदेश हम मन में लेकर जांय- सीधी बात ये है पहले आप ही इस बात का मनन करो कि ५१०० सौं वर्ष पहले जिस आदमी ने जन्म लिया जो सन्यासी बने और सन्यासी बनने के बाद में आज इतने वर्षो के बाद में भी उनकी जयन्ती मनाई जा रही है तो आप अपने ऊपर विचार कर लें, कि बाप, दादा, परदादा, ये तो आपके भी सबके हुये हैं हम किनकी जयन्ती मनाते हैं ज्यादा से ज्यादा कभी कोई धनपति हो तो उनकी तस्वीर लगा देंगे, गांव में अच्छा प्रभाव रहा हो उनको कुछ दिनों के लिए याद कर लेंगे लेकिन कहाँ तो ५१०० सौ वर्ष और कहाँ सौ वर्ष। हम सौ वर्ष में अपने पुरखाओं को भूल जाते है, और ५१०० सौ वर्षो के बाद एक व्यक्ति जिसने सन्त बनकर समाज का मार्ग दर्शन किया आज हम, उसको याद करते हैं- इन दोनों में अन्तर है ये विचार अवश्य करना पड़ेगा और इतना ही कह सकता हूँ जैसे महाराज श्री भी अभी कह रहे थे कि मैं आपको कोई रास्ता बताकर जाऊंगा मैं तो खुद रास्ता ढूढ़ने वालों में से हूँ मैं रास्ता बता ही नहीं सकता इतना मैं कह सकता हूँ कि जैसे आप बैठे है मैं भी एक छोटे गाँव में पैदा हुआ, सामान्य परिवार में पैदा हुआ, हाथों से खेती की हाथों से मैंने सिंचाई की। १९५२ में विधायक बन गया और २००२ में हिन्दुस्तान का उपराष्ट्रपति बन गया। अब आप भी दिमाग से निकाल दें कि हम सामान्य घर में पैदा हुये हैं तो आगे नहीं बढ़ सकते हम छोटे से गाँव में पैदा हुये हैं हम आगे न ही बढ़ सकते, हमारे पास खाने पीने को कुछ नहीं था हम आगे नहीं बढ़ सकते। मैं आज आपको कह सकता हूँ कि देश गरीब नहीं है, इस देश में खाने पीने के सब प्रकार के साधन

हैं। इस देश की प्रकृति इस देश की संस्कृति इस देश की धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था ये कोई ऐसा कठिन कार्य नहीं हैं जिसका इसमें समाधान नहीं मिलता हो। हम समाधान ढूंढ़ें और समाधान ढूंढ़ने से एक ही वाक्य मिलेगा मैं जब पहली बार राज्य सभा में चुनकर गया तो मैंने एक ही बात कही जो आज तक लोगों को याद है और मुझे कहते भी है - मैंने कहा था कि मेरे अपने ५० वर्ष के राजनैतिक जीवन में विरोधी तो हो सकते है विरोधी तो है पार्टियों में विरोध होता हैं लेकिन मेरा हिन्दुस्तान में कोई दुश्मन एक भी नहीं है। अब आज भी मैं कहता हूँ, आप काम करिये इसकी कोई चिन्ता की बात नहीं है जिसका विरोध करना हो विरोध करिये जो गलत काम करता हो उसको टोकिये, मत करने दीजिये उसकी तो प्रशंसा होगी लेकिन गलत काम आपने खुद ने करना शुरु कर दिया तो घर-घर में आपके विरोध में दुश्मन पैदा हो जायेंगे। पहली व्यवस्था तो ये करें और दूसरा आज हमारे यहां गिरावट क्यों आ रही है आपको मालुम है हिन्दुस्तान में एक सौ दो करोड़ की आबादी मे २६ प्रतिशत आदमी गरीबी की रेखा के नीचे है सौ में २६ प्रतिशत आदमी गरीब हैं- जिनके सामने रोटी रोजी की समस्या है, जिनके सामने दवाई की समस्या हैं, पीने के पानी की समस्या है, बच्चों को शिक्षा किस प्रकार से दिलाई जाय इसकी समस्या है, २६ प्रतिशत आदमी गरीब है और मैं ये कह सकता हूँ आज से लेकर कोई भी सरकार ऐसी नहीं होगी कि गरीबी मिटाने के लिए और गाँवों का विकास करने के लिए धन की व्यवस्था नहीं हो, मुझे मालुम है ५२ से लेकर मैं देखता आया हूँ राज्य चाहे किसी पार्टी का रहा हो लेकिन गरीब की गरीबी मिटे इसके लिए धन की व्यवस्था की गाँवो का विकास हो इसके लिए धन की व्यवस्था की लेकिन व्यवस्था करने के बाद भी आज पीने के पानी की समस्या है, गरीब का कोई बच्चा बीमार हो जाए तो दवाई की समस्या है, वर्षात आ जाए तो छप्पर को पूरा तैयार करने की समस्या है, बच्चा पढ़ना चाहे तो पढ़ा नहीं सकते उसकी समस्या है, तो इस समस्या का दोष केवल सरकार पर नहीं है, इसके दोषी हम भी हैं। मन में विचार करें कि आपके गाँव में गरीबों का काम और रोजगार देने के लिए गाँव का विकास करने के लिए कितना धन आया और ईमानदारी से निम्बार्काचार्य जी का नाम लेकर बैठ जाय और बैठ कर ये सोचे जितना आया उसमें कितना लोग खा गये और कितना काम आया है जिस दिन ये विचार कर लेंगे गाँव-गाँव में इस प्रकार का सोच लेंगे तो मैं कह सकता हूँ आपको कि हिन्दुस्तान में न गरीबी रहेगी न गाँव में किसी प्रकार की समस्या रहेगी लेकिन जब गरीबी मिटाने के लिए पैसा लोग खा जाते हैं। उनको तो भगवान ही दण्ड देगा सरकार तो दण्ड नहीं दे सकती सरकार दण्ड दे नहीं पा रही है और वो खाने की आदत छोड़ नहीं सकते अब इन दोनों के बीच में तालमेल तो ये बैठाना है कि जिनका खा जाय वो सबसे पहले लाठी उठाकर खड़ा हो कि धन मेरे लिए आया था तुम कैसे खा गये जिस दिन गाँव गाँव में इस प्रकार की व्यवस्था होगी, मैं निश्चित रूप से आपको कह सकता हूं ग्रामीण विकास होगा और ये सारी व्यवस्थाऐं चलेंगी। दूसरा प्रश्न आता है कि थोड़ी हमारी भी गलती है इसमें जब आपको मालूम है मैं अपनी ही कहता हूँ जब मैं प्राइमरी क्लासेज में पढ़ता था तो मेरी दादीजी पूजन करके उठती थी और वह कहती थी ३३ करोड़ देवी-देवता को नमस्कार, अब हम कहते थे कहाँ है ३३ करोड़ देवी-देवता २-४ मंदिर में जाओं कहीं हनुमानजी मिल जायेंगे, कहीं रामचन्द्र जी मिल जाएगे, भगवान् कृष्ण मिल जांएगे लेकिन ३३ करोड़ देवी-देवता कौन से है। उस समय कहा करती थी कि हिन्दुस्तान की आबादी ३३

करोड़ की है। इसलिए जिसने भी जन्म लिया वो देवता के रूप में आया अब ३३ करोड़ देवी-देवताओ जिस समय थे इस देश में उतनी समस्यायें नहीं थी लेकिन आज देवता एक सौ दो करोड़ है अब उससे कितनी समस्यायें है इसका आप अंदाज लगाओ और यदि ये इसी प्रकार से देवी-देवता बढ़ते गये तो फिर इस देश की क्या हालत होगी ये तो आप किसानों से पूछ लो जिसके पास बीस बीघा जमीन थी और चार देवता पैदा हो गये तो पाँच-पाँच में चली गई और ५ में चार हो गये तो जमीन बेचकर मार्बल वाले किसी इण्डस्ट्रीज को देकर सड़क पर मजदूरी करने चला जायेगा अब ये तो अपने में दोष है इन सब बातों पर विचार करना पड़ेगा लेकिन एक विचार के लिए मैं आपको कहना चाहता हूँ कि भारत में आपको याद होगा। 1938 ई० में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ जिसमें महात्मा गाँधी जवाहर लाल नेहरुथे वहाँ पर सुभाष चन्द्र बोस अध्यक्ष बने और उन्होंने अध्यक्षीय भाषण दिया उस समय आबादी थी 1938 में ३८ करोड़ की कि ३८ करोड़ आदमियों की रोटी रोजी और शिक्षा का हम इन्तजाम नहीं कर सकते तो इस आबादी पर नियन्त्रण करने की बात की जाए 1938 से मामला चल रहा है आज से नहीं कि आबादी को नियंत्रित किस प्राकर से किया जाय इस पर विचार किया जाय। मैं ज्यादा इस पर कहना नहीं चाहता आप खुद ही इसके ऊपर विचार करें लेकिन इतना मैं जरूर कहना चाहुँगा कि जब तक हिन्दुस्तान में महिला अशिक्षित रहेगी आज बच्ची स्कूल में नहीं जाती इससे बड़ा तो कोई दुःख नहीं हो सकता। बच्चे स्कूल में चले जाते हैं लेकिन वो पाँचवी पढ़ेंगे, कोई आठवीं तक पढ़ेंगे कोई दसवीं तक पढकर आ जायेंगे बच्चियाँ स्कूल में नहीं जायेंगी तो जब तक हिन्दुस्तान में अशिक्षा है यह मानकर चलो कि देश तरक्की नहीं कर सकता। ये जो माता बहिने बैठी हैं में इनको सन्देश देना चाहता हूँ यहाँ हाथ करो निम्बार्काचार्य जी महाराज की तरफ यदि मन से बात करना चाहती हो और इधर कहो कि हमारे घर में कोई भी बच्ची ऐसी नहीं होगी जो स्कूल में नहीं जाय मैं समझता हूँ हाथ उठाकर एक बार कहो, उठाओ देखें हाथ सब, अब हाथ तो उठा लिए और सन्तों के सामने हाथ उठाये हैं, अब आप ये कहोगे हम तो बच्ची को भेजना चाहते हैं लेकिन घर वाले मना कर रहें हैं, ये आप कह सकती हो कि मैं जानता हूँ सबका स्वभाव है, और स्वभाव जानता हूँ तो मैं घरवालो को भी कहना चाहता हूँ कि मैं एक बात बताऊ कि घर में लक्ष्मी यदि शिक्षित है तो आपकी आवश्यकताओं की पूर्ति अपने आप होगी अब ऐसी स्थिति में गरीबी भुखमरी और बेकारी ये जितनी बढ़ रही है जैसा महाराज ने कहा इसका मूल कारण तो भ्रष्टाचार है भ्रष्टाचार करने वाले अच्छी तरह समझ लें, पनपेंगे नहीं। मैं कई लोंगो को देखता हूँ कि भ्रष्टाचार से खूब धन कमाया हैं पनप नहीं सकते, गरीब की आह खा जायेगी गरीब का पैसा किसी ने खालिया तो ये मानकर चलों कि पाँच जन्म तक गरीब नहीं छोड़ेगा आज तो वो शायद चुप बैठा है लेकिन पाँच जन्म तक छोड़ने वाला नहीं है। अब आप खुद ही अन्दाज लगाओं। मुझे अभी साँवरमलजी मिले थे कह रहे थे राजस्थान में अब के अकाल पड़ गया। राजस्थान में अकाल पहले भी पड़ता था और अब भी पड़ गया पहले अकाल पड़ता था उस समय ट्यूबवैल नहीं थे उस समय हेण्डपम्प नहीं थे, उस समय नये नये बड़े बांध नहीं बनवाये गये थे पानी को अपने नियन्त्रण में नहीं रख पाते थे आज सब कुछ होने के बाद जितना भी ट्यूबवैल बताते है पानी पाताल में जाता है और ट्यूबवैल सूख जाता है हेण्डपम्प में पानी नहीं आता, ये किसके कारण से है। ये केवल जनसंख्या बढ़ी है

ये इसके कारण से नहीं है हमने प्रकृति के साथ अन्याय किया है ये भारत वो है जिसमें हमने सांप की पूजा की है जिसकी समय के ऊपर उसकी पूजा नही की हो कोई पेड़ पौधा नहीं है जिसकी हमने पूजा नहीं की हो, लेकिन आज दुर्भाग्य है कि हमने प्रकृति से संघर्ष कर लिया सामाजिक संघर्ष तो कर रहे हैं लेकिन प्रकृति से लड़ने को भी तैयार हो गये पेड़ काट रहे है-

धड़ाधड़ पेड़ काट रहे हैं तो उसका नतीजा क्या है जिस खेत में पेड़ ज्यादा है उसमें जब भी वर्षा होगी पैदावार होगी। आज नदी नालों का पानी हम उसका दुरूपयोग करते हैं अगर इसका उपयोग करने लग जाये तो वही नदी नालों का पानी आज हमारे खेत में आ सकता है। प्रकृति बदल गई है और इसलिए आज आपको ये कहना चाहता हूँ कि आज बड़े बड़े सारे संसार के व्यक्ति दो बात की घोषणा करते हैं। अनुमान है उनका, कोई शास्त्र के आधार पर नहीं कहते लेकिन सारा हिसाब लगा करके कहते हैं। कि आजकल तो आदमी जो मरता था धीरे-धीरे आप लोगों ने देखा होगा मेरे पिताजी की मृत्यु वह ४५ वर्ष के थे उस समय हुई थी मैं छोटा सा ही था। जब उनके दाह संस्कार में गये तो गाँव वालों ने कहा और तो ठीक ही है मतलब ४५ वर्ष में मरना ठीक है, और तो ठीक है लेकिन बच्चे छोटे छोटे है ये मैंने अपने कानसे सुना और आज मैं कहना चाहता हूँ आज तो सौ-सौ वर्ष के बैठे हैं और ये ही नहीं अब लोग ये कहते हैं कि जिस प्रकार से जीवन की ''लोगंविटी'' बढ़ रही है, ज्यादा जीवन की उम्र बढ़ रही है आज के ५० वर्ष के बाद में लोग कहेंगे, कोई आदमी ११६ वर्ष का मर गया तो कहेंगे ये तो बचपन की, जवान मौत हो गई बूढ़े की मौत नहीं हुई। उसी प्रकार से मैं दूसरी बात कहना चाहता हूँ कि आज यदि प्रकृति को आपने उठा दिया, प्रकृति का आपने साथ नहीं दिया तो ये मानकर चलो कि लोग ये कह रहे हैं कि अब के विश्व युद्ध होगा तो जमीन के लिए नहीं होगा, कोई अधिकार प्राप्त करने के लिए नहीं होगा, अब के विश्वयुद्ध होगा तो पानी के लिए विश्वयुद्ध होगा और पानी का सब जगह संकट है। इस संकट को बचाने का केवल मात्र एक तरीका है, हेण्डपम्प, ट्यूबवैल ये-काम वाटर कण्डरेशन का काम ये तो चलता ही है लेकिन इसके साथ साथ आप इस बात का ध्यान रखे कि प्रकृति को नही छेड़े। एक बार मैं किसी सम्मेलन में गया था, जिसमें पेड़ लगाने का कार्यक्रम था। बाड़मेर की बात है। बाड़मेर में मैंने लोगों से कहा कि आप सड़क के ऊपर क्यों चलते हो अच्छी सड़क होगी तो जल्दी चलोगे ये बादल भी सड़क देखकर चलते है जहाँ अच्छे अच्छे पेड़ है वहां वर्षात हो जाती है जहां पेड नहीं वर्षात नहीं होती, तो हर आदमी सुविधा से चलता है। प्रकृति भी सुविधा से चलती है कि जहां हरी भरी चीजें होंगी हरियाली होगी वहाँ वर्षात हो जायेगी। पहाड़ों को अक्सर देखा होगा आपने वर्षात होती है कि वहाँ हरियाली है जंगलों में वर्षा होती है इसलिए मैं आपसे कहना चाहता हूँ अब पेड़ कटे नहीं, हरियाली रहे, तो निश्चित रूप से मैं मानकर चलता हूँ कि प्रकृति से संघर्ष कर इस हरियाली को मिटाओ मत। ये हरियाली मिटा दी तो घर की हरियाली खत्म हो जायगी इसको रोकने वाला कोई भी नहीं मिलेगा। मैं समझता हूँ आज के इस मौके पर महाराज ने इस प्रकार का कार्यक्रम बनाया है इस कार्यक्रम में कुछ कुछ शिक्षा लेकर जाओं कि अब पेड़ नहीं काटेंगे नम्बर एक हम अपना कमाया हुआ धन खायेंगे, दूसरे के धन को खायेंगे नहीं, हम पशु पक्षी के साथ दया भाव रखेंगे हम दया भाव छोड़ेगे नहीं। यदि प्रकृति के नियमों का आपने पालन किया तो मैं विश्वास से कह सकता हूँ इस भारत को आगे बढ़ने से कोई दुनियां नहीं रोक सकती अमेरिका आ जाओ चाहे रूस आओ भारत आगे बढ़ेगा और यही बात कहकर मैं

आपसे विदा लेना चाहता हूँ, आपने समय दिया और महाराज के प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूँ कि मुझे आज इस एक अच्छे कार्यक्रम के लिए उन्होनें बोलने का अवसर दिया और मुझे बुलाया बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री श्याम सुन्दर जी बेरी वाले, कलकत्ता

परमपूज्य समस्त धर्माचार्य चरण, महामहिम, श्री भैंरोसिंह जी शेखावत उपराष्ट्रपति भारत सरकार, सम्माननीय महामण्डलेश्वर, मण्डलेश्वर, श्रीमहन्त, सन्त महात्मा, आदरणीय विद्वद्वृन्द, श्रद्धेय माहनुभाव, मातृ शक्ति। जब जब धरातल पर अधर्म एवं अनाचार फैलता हैं तो प्रभु स्वयं या अपने प्रिय पार्षदो को आचार्य रूप में भेजते है। उन्हीं पार्षदो में से भगवान् श्री निम्बार्क हैं। जहाँ आज आप हम स्थित हैं यह अति प्राचीन पुराण में वर्णित श्री निम्बार्क के नाम से प्रसिद्ध तीर्थस्थल है। पद्म पुराण में प्रसंग है कि एक बार एक भंयकर कोलाहल नामक दैत्य के भय से भगवान् शिव ने विल्व वृक्ष में, विष्णु ने पीपल में और सूर्य ने निम्ब वृक्ष में आश्रय लिया था। महाविष्णु ने प्रकट होकर उस दैत्य का नाश किया। निम्ब वृक्ष में सूर्य ने जहाँ आश्रय लिया वह यही स्थल निम्बार्क तीर्थ कहलाया। इसी पुष्कर क्षेत्र के अंचल में अवस्थित यह श्री निम्बार्काचार्य पीठ धर्म, ज्ञान, भक्ति की अजस्र धारा प्रवाहित करते हुये लोक मंगलकारी बृहद् आयोजनों में सदा अग्रसर है। यह भी एक परम गौरव का विषय है कि आद्य निम्बार्काचार्य जी की ५१०० सौं वीं जयन्ती का भव्य आयोजन विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के रूप में हो रहा हैं जिसका उद्घाटन भारत सरकार के उपराष्ट्रपति महामहिम श्री भैरोसिंह शेखावत के द्वारा सम्पन्न हुआ। अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरुश्री ''श्रीजी'' महाराज का संकल्प आज सम्पन्न हुआ। आप संकल्प सिद्ध आचार्य और सनातन धर्म जगत के निर्विकल्प धर्माचार्य हैं। जैसा श्री निम्बार्क भगवान का शास्त्र सिद्ध स्वाभाविक भेदाभेद रूप सिद्धान्त है। उसको पूज्य अयार्च श्री ने कार्यरूप में लोक प्रसिद्ध समन्वय करके जन-जन को प्रत्यक्ष करवाया। यह महान् गौरव का अवसर है कि छोटे से ग्राम तथा पावन तीर्थ में लघुकुम्भ का दर्शन हो रहा है। जीवन में ऐसे अवसर भगवान् की कृपा से ही मिलते हैं। समस्त धर्माचार्यों महामहिम उपराष्ट्रपति जी एवं उपस्थित महानुभावों का मैं कृतज्ञता के साथ आभार प्रकट करता हूं। यथा साध्य व्यवस्थित व्यवस्था रखने का प्रयास किया गया है फिर भी आपके स्वरूपानुकूल व्यवस्था नहीं हो सकी है एदतर्थ समिति की ओर से और व्यक्तिगत रूप से मैं भी क्षमा प्रार्थना करता हूं। इस महामहोत्सव को सफल करने में राज्य की माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे का प्रशंसनीय सहयोग प्राप्त हो रहा है। प्रशासन के समस्त अधिकारियों का योगदान भी हृदय से प्रशंसनीय है। प्रचार प्रसार के लिए समाचार पत्र दूर संचार विभाग आदि समस्त धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इस अभाव ग्रस्त क्षेत्र में आकर अपना सक्रिय योगदान दिया है मैं पुनः उन्हें आयोजन समिति की ओर से एवं अपनी ओर से समस्त महानुभावों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। **जै जै श्री राधे-श्याम।**

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य काशीपीठाधीश्वर श्री हर्याचार्य जी महाराज

हम सबका परम सौभाग्य है जो भगवान् श्री निम्बार्काचार्य जी का ५१०० सौ वां जयन्ती महोत्सव बड़े ही तथ्यता और भव्यता के साथ आचार्य श्री के द्वारा मनाया जा रहा है। यह एक ऐतिहासिक कार्य है- **''आचार्यम् माम् विजानीयात्''** आचार्य भगवान् का

ही स्वरूप होता है। कलियुग में जो आचार्य आये, वह जो कार्य भगवान् ने अवतार ग्रहण करके किया हैं वैसा कार्य आचार्यों ने भी अवतार ग्रहण करके संसार को अपने उपदेशामृत से सींचा है- जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव आज भी समाज पर विद्यमान है। भगवान् निम्बार्काचार्य का प्रादुर्भाव जैसा कि आप सुने उनको नीम के वृक्ष पर जो ज्ञान, जो भक्ति, जो कर्म, जो उपासना प्राप्त हुई वहीं हमारा जीवन दर्शन है। निम्बे अर्कः निम्बार्कः निम्बस्य अर्कः निम्बार्कः निम्बाय अर्कः निम्बार्कः निम्बश्चासौ अर्कः निम्बार्कः चाहे जो करलें आप, जीव का सम्बन्ध भगवान् से आठ प्रकार का है उसमें से कोई भी स्वीकार कर लें। भगवान् निम्बार्क ने सारे संसार को अपने ज्ञानामृत से भक्तिरूपी अमृत से अभिसिंचित किया है। जयन्ती का तात्पर्य होता है उसका व्यक्तित्व उसका कृतित्व और इसका अस्तित्व। अस्तित्व तो आप देख रहे है आचार्य श्री ने यह ऐतिहासिक सभा स्थापित करके मानव जीवन को ज्ञान, भक्ति तथा कर्म की गंगोत्री में स्नान कराया है जो सदा स्तुत्य है और वन्दनीय है। आज हमारे आचार्यों को इस प्रकार का समन्वय स्थापित करना चाहिये लेकिन सत्य जो है वह प्रकाश होता है कहना तो बड़ा सरल है लेकिन कर पाना बहुत कठिन है। जो लोग यह कहते हैं वास्तव में वह सत्य नहीं है। सत्यमेव जयते सत्य हमारे जीवन का वह प्रकाश है जो व्यष्टि को नहीं समष्टि को सदा आलोकित करता रहा हैं, जिससे हम आज हट गये, यही कारण है कि हमारा व्यक्तित्व अस्तित्व और कृतित्व तीनों खतरे में हैं। आज सत्य रूप में धर्म का राजनीति करण हो गया है। दलीय राजनीति ने हमको बाँटकर, काटकर और छाँटकर एक देसीय बना दिया है। इसको चाहे जितना कहो, झुठलाया नहीं जा सकता है। और जब तक धर्म राजनीतिक परक रहेगा, याद रखना दलीय राजनीति से धर्म यदि प्रभावित रहा तो वह दिन दूर नहीं है जब धर्म को विधर्मी उन्मूल कर लेंगे ओर इनका अस्तित्व, व्यक्तित्व दोनो खतरे में हो जायेंगे आज इससे बचना होगा यदि नहीं बचोंगे तो तुम्हारा अस्तित्व खतरे में है। आज राजनीति के मंच पर आचार्य के कंधे पर बन्दूक धरके और खींचकर नेता जहाँ चाहे वहाँ बैठा दे, तुम बैठे रहो। यह कभी नही था, हमारी शिक्षा यह कभी नहीं थी। हमारे जब संस्कार बिगड़ जायेंगे तो प्रकृति भी बिगड़ जायेगी। हमारे यहाँ तो प्रकृति थी, शिक्षा की, क्या प्रकृति थी **''सत्यंवद-धर्मंचर स्वाध्यायान्मा प्रमदः मातृदेवो भव पितृ देवो भव अतिथि देवो भव''** पिता को तुम प्रणाम नहीं करते तब तो तुम आचार्य को कैसे प्रणाम करोंगे, धर्माचार्य को कैसे प्रणाम करोंगे, तुम में प्रकृति कहाँ से आ जायगी कौन दे देगा प्रकृति, प्रकृति तुम्हारी बपौती नहीं है। प्रकृति परमात्मा का स्वरूप है उसको दुनियां में कोई झुठला नही सकता। इसलिए आज का धर्माचार्य और आज का आचार्य आज राजनीति से बचे मैं ये नहीं कहता कि राजनीति पहले नही थी पहले भी राजनीति थी लेकिन दलीय राजनीति नही थी जो समाज को काटे। समाज को बांटे, और समाज को छांटे ये राजनीति नहीं थी। इसलिए राजनीति **बिन धन बिन धर्माः और हारे समर्पी बिनसत्कर्मा** - गोस्वामी जी लिखते हैं जब तक इसका प्रयोग सत्कर्म में नहीं होगा तब तक जैसे आज किसी को नेता कह देना और गाली दे देना मैं दोनो बराबर मानता हूँ क्योंकि आज का नेता अपने स्वरूप से हट गया है और वह धर्म का प्रयोग गलत अर्थ में कर रहा है और यह गलत अर्थ में धर्म का प्रयोग हुआ तो हमारे भगवान् आचार्य जो हमें उपदेशामृत से - अभिसिंचित किये थे, यदि वह पक्ष विशेष में ही झुक करके एक वर्ग का पोषण किए होते तो आज भक्ति से ज्ञान से और उपासना से सारा संसार अभिसिंचत हो करके और उनकी शरण में न गया होता। इसलिए सूर्य की किरणें

बराबर मलिन वस्तु पर से लेकर और एक हीरा पर बराबर बराबर पड़ती है। यदि उसमें कोई कांट छांट हो गया तो सूर्य का सूर्यत्व खतरे में पड़ जायेगा वह विकसित नहीं होगा।

आज समाज को इसकी आवश्यकता है। जब नेता बेईमानी करता है, जब राजनैतिक बेईमानी पूर्वक बोलता है और कहता है जनता से कि तुम सत्य बोलो, जनता ढ़ेला मारती है, जूता फेंकती है काला झंड़ा दिखाती हैं। इसलिए आज यह आचार्य जयन्ती महोत्सव का जो सिद्धान्त संसार में दिखाई पड़ रहा है। यह व्यष्टि परक नहीं था यह समष्टि परक था सारे संसार को भक्ति के माध्यम से, ज्ञानके के माध्यम से, कर्म के माध्यम से, उपासना के माध्यम से, संस्कार के माध्यम से, हमको जीवन दर्शन दिया था। भेदाभेद का तात्पर्य यही है भगवन्निम्बार्काचार्य के सिद्धान्तानुकूल श्री राधा सर्वेश्वर शरण देवाचार्य जी महाराज के सत्संकल्प से आज हम यह अधिवेशन कर रहे हैं। यद्यपि इस प्रकार का कार्यक्रम बहुत कम हो पा रहा है लेकिन आप श्री जीवन दर्शन को जिस रूप में आचार्य को गौरव प्रदान करके और सही अर्थ में सत्य अर्थ में समाज को प्रेरणा प्रदान कर रहे हैं इतना नव्य और भव्य कार्यक्रम करके इससे सभी आचार्यों को गौरव प्राप्त करना चाहिये कि हमारे आचार्य में उस प्रकार की निष्ठा आज बनाओं। आज आचार्य निष्ठा बहुत पीछे पड़ गई है, बहुत पीछे चली गई है इसलिए प्रकृति हमको लाभ नहीं कर रही है **'सत्यमेव जयते'** के इस उपनिषद् वाक्य से हम बहुत अलग हो गये हैं यही कारण है कि प्रकृति रियक्षन कर रही है, प्रकृति की गैसिंग हो रही है, समाज में माडलिंग हो रही है। पहले आप इससे बचिये समाज भौतिकता के चकाचोंध में चोधिया चुका है। जब तक वह चौधियाया रहेगा तब तक आचार्य, आचरण संहिता, धर्म, भक्ति और सत्यता हमें रियक्षन करती रहेगी, हानि पहुँचाती रहेगी, वह मेरे लिए लाभप्रद नहीं होगी। इसलिए उसको एवाइड करने के लिए, उसको दृढ़ता प्रदान करने के लिए आज हमारी शिक्षा, हमारी प्रकृति जब तक पूर्ववत् अपनी आचार्य परम्परा पर लौट करके नहीं आयेगी तब तक वह हमें लाभ नहीं पहुंचा सकती। यह प्रवचन नही है हमारे यहाँ श्रुति बोलती है, अनुग्रह करती है- **''स्वाध्याय प्रवचनाभ्याम् न प्रमदितव्यम् धर्मान्न प्रमदितव्यम्''** हम स्वाध्याय प्रवचन से प्रमाद न करें, हम धर्म के साथ छल न करें, सत्य को कहना पड़े तो नम्र हो करके जिस दिन आप कह देंगे उसी दिन प्रकृति हमको लाभ करने लगेगी और हमारी खोई हुई जो परम्परा है वह लौटकर समाज में आ जायेगी॥ आचार्य श्री के चरणों में हम अपनी नती प्रस्तुत करते हैं कि वर्तमान श्री 'श्रीजी' महाराज, वीतराग- तपोनिष्ठ हैं आचार्य जयन्ती महोत्सव को यह भव्यता प्रदान करके भारतीय संस्कृति को एक प्रेरणा प्रदान किया है जो सभी के लिए अमृत तुल्य है यही हमारे आचार्यों का उपदेश रहा है, आदेश रहा है और जीवन सन्देश रहा है यही कारण है कि आज तक यह सम्प्रदाय जीवित है।

आचार्य श्री निम्बार्क भगवान् का उपदेश अमृत की तरह आज भी समाज में पूर्ण रूपेण चरितार्थ हैं जिसका हम लोग समय-समय पर दर्शन करते हैं हम तो पूरे हिन्दुस्तान भर में जाते हैं और यह देखते हैं कि वास्तव में भगवान् निम्बार्क के प्रति श्रद्धा भक्ति से आज भी जन मानस समर्पित है- उसका यही कारण है कि उस उपदेशामृत में अमृत भरा है, आचार्य उपदेशामृत में अमृत भरा है जो हमें जीवन दर्शन का सन्देश देता है- इन्हीं शब्दों के साथ आचार्य श्री के चरणों में हम अपनी नती प्रस्तुत करते हैं।

❑❑❑

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठ के मुख्य द्वार

जयन्ती महोत्सव के अवसर पर विभिन्न दिवस पर श्रीराधामाधव भगवान् के अनुपम श्रृंगार

पुष्प बंगला के दर्शन

छप्पनभोग के दर्शन

जयन्ती महोत्सव के अवसर पर विभिन्न दिवस पर श्रीराधामाधव भगवान् के अनुपम श्रृंगार

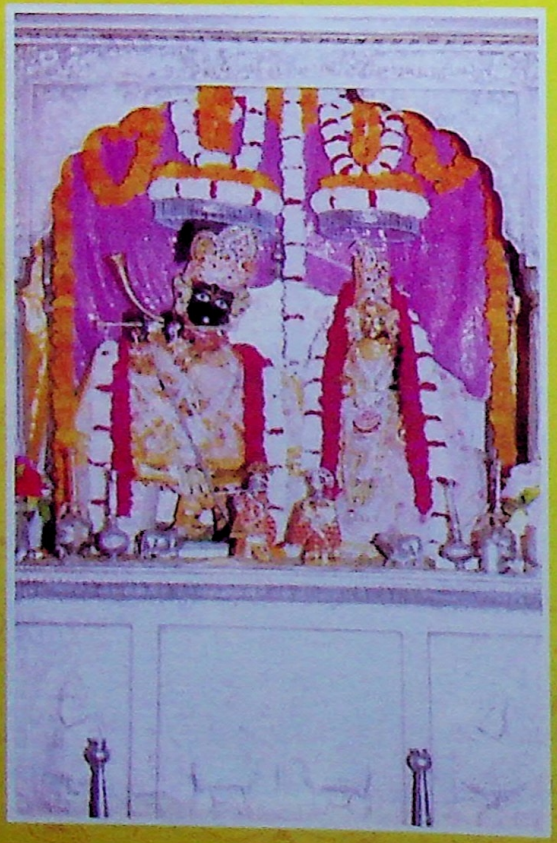

पुष्प बंगला के दर्शन

छप्पनभोग के दर्शन

सनातन धर्म सम्मेलन के ध्वज का पूजन
करते हुए श्री श्रीजी महाराज व युवराज श्री

ध्वजारोहण करते हुए
पूज्य श्री श्रीजी महाराज

सम्मेलन मंच पर विराजमान जगद्गुरु
आद्यनिम्बार्काचार्य का अर्चन करते हुए आचार्य श्री

आचार्य पीठ के मंदिर द्वार से भगवद् दर्शन हेतु
पधारते हुए उप राष्ट्रपति श्रीभैरूसिंह शेखावत

पूज्य आचार्य श्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए
उपराष्ट्रपति श्री भैरूसिंह जी शेखावत

मंच संचालक मण्डल के सदस्य श्रीवासुदेवशरण
उपाध्याय, पंडित रामस्वरूप गौड़ व अन्य

उद्घाटन सत्र में मंच पर रामानंदाचार्य श्रीहर्याचार्य जी, युवराजश्री, निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज,
उप राष्ट्रपति श्री शेखावत जी, म.युगलशरण जी,
चतुः सम्प्रदाय श्रीमहन्त रासबिहारीदास जी, श्रीमहन्त वृंदावन बिहारीदासजी

निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज प्रणीत 'गोशतक' ग्रन्थ का लोकार्पण करते हुए महामहिम उपराष्ट्रपति

उद्घाटन – सत्र

मंच संचालक श्री महन्त मेवाड महामण्डलेश्वर
श्रीमुरलीमनोहर शरण जी समारोह की
पृष्ठ भूमि पर प्रकाश डालते हुए

सत्राध्यक्ष जगद्गुरु रामानंदाचार्य
श्री हर्याचार्य जी महाराज

वैदिक मंगलाचरण करते हुए पीठस्थ
श्रीसर्वेश्वर वेद विद्यालय के ब्रह्मचारी

उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए
महामहिम उपराष्ट्रपति श्रीभैरूसिंह जी शेखावत

उद्घाटन सत्र में उपस्थित विशाल जन समूह

उद्घाटन के अवसर पर आशीर्वचन प्रदान
करते हुए - पूज्य आचार्य श्री

रात्रिकालीन सत्र में राष्ट्रपति पुरष्कृत स्वामी श्रीराम शर्मा जी वृन्दावन की रासमण्डली द्वारा रासलीलानुकरण

संस्कृत संस्कृति सम्मेलन में नेपाल नरेश के संदेश का वाचन करते हुए श्रीखेमराज केशव शरणजी एवं नेपाल निम्बार्क वैष्णव परिषद् के अध्यक्ष श्रीभरतराज रेग्मी एवं नेपाल से समागत जन

शिक्षा सत्र- मंचासीन (बायं से) महन्त श्री वृदांवन बिहारी दास जी, श्री मोहन लाल जी छिपा, कुलपति अ.वि.वि., श्री देवनानी जी, पूर्व कुलपती पुरुषोत्तम चतुर्वेदी जी, म. श्री युगलशरणजी, म. श्री हरि वल्लभ दास जी,

श्री हरिशरण जी शास्त्री (नेपाल) सम्मेलन में उद्बोधन देते हुए

सं. सं. सम्मेलन में श्रीखेमराज केशव शरणजी सम्बोधन करते हुए

श्रीमुकुन्द शरण उपाध्याय काठमांडू का सम्बोधन

आशीर्वचन प्रदान करते हुए
पूज्य निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज

उद्‌बोधन देते हुए श्रद्धेय युवराजश्री श्यामशरणदेव जी
निम्बार्काचार्य पीठ

श्रीवासुदेवकृष्ण जी चतुर्वेदी सत्राध्यक्ष का सम्बोधन

मातृशक्ति सम्मेलन में उपस्थित महिला समूह

अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते हुए
श्रीमती कमलेश कुमारी जी, किशनगढ

मातृशक्ति सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि
सांसद प्रभा ठाकुर को आशीर्वाद स्मृति
प्रदान करते हुए पूज्य आचार्य श्री

शिक्षा सम्मेलन

स्वागत भाषण :- श्री श्याम सुन्दर जी बेरीवाल

अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी महाराज, जयगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य जी, महामण्डलेश्वर, मण्डलेश्वर, महन्त, श्री महन्त, हमारे माननीय शिक्षा मंत्री श्री देवनानी जी एवं विद्वद् वृन्द, सहयोगी, एवं मातृशक्ति- यह एक सुन्दर अवसर है कि हम लोग भारत वर्ष की विकटतम् समस्याओं पर विचार करने के लिए अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के अवसर पर उपस्थित है। इन विद्वद् वृन्दों के कार्यक्रम के बीच में कुछ भी बोलना धृष्टता होगी, किन्तु परम्परा के हिसाब से आज के इस शिक्षा सत्र पर मैं सभी आगन्तुकों का हृदय से स्वागत करता हूँ। विद्या विनय प्रदान करती है और विनय सभी झंझटो को, सभी क्लेश, सभी आपदाओं को दूर करने का एक सशक्त साधन है। शिक्षा के ऊपर जितना कहा जाए उतना कम है। हमारे आद्यशंकराचार्यजी महाराज ने तो विद्या को अपनी छोटी सी उम्र में परिपूर्णतः ग्रहण किया, ३२ साल की उम्र में उन्होंने इस संसार से अपनी लीला का सम्वरण कर लिया। उन्होंने तो शिक्षा को मोक्ष का साधन तक कहा है। हमारे वेदों में कहा गया है **''कल्पलतेव विद्या''** अर्थात् शिक्षा कल्पलता सदृश वांछित फल प्रदान करने वाली है। सत् शिक्षा संस्कारो से शिक्षित हुये व्यक्ति का आचरण सत् शिक्षा के अनुरूप होता है। किन्तु आज शिक्षा के बिगड़ते हुये स्वरूप को सुधारने की , उसमें वांछित परिवर्तन लाने की अत्यन्त आवश्यकता है, जो संस्कार हमारी शिक्षा से हमारे जीवन के प्रारम्भकाल में हमें मिलते है, वैसे संस्कार जीवन पर्यन्त हमारा साथ देते हैं। आज चारों तरफ फैला हुआ भ्रष्टाचार, चारों तरफ फैला हुआ आतंक, मूलतः शिक्षा की विकृति के कारण है- यदि शिक्षा के वर्तमान स्वरूप को बदलकर आज हम सत् संस्कार सहित शिक्षा को ग्रहण करें तो भयंकरतम अपदाओं, भयंकरतम विपदाओं एवं संकटों से हम लोग निजात पा सकते है।

स्वागत भाषण :- श्री वंशी लाल जी राठी

आज शिक्षा सम्मेलन है जो कि आँखें है। हमारे परमपूज्य निम्बार्क पीठ के श्री 'श्रीजी' महाराज एवं रामानन्द पीठ के हर्याचार्यजी को मैं नमन करता हूँ। परम गौरव है कि पीठ द्वारा जो ऐसा शिक्षा सम्मेलन भी रखा। आज हमारे सामने मुख्य वक्ता शिक्षा राज्यमंत्री देवनानी जी पधारे। ये राजस्थान में शिक्षा को गौरव प्रदान करने वाले हैं और बहुत ही हर्ष और खुशी की बात है कि दो दो कुलपति दो-दो विश्व विद्यालय के, कुलपति यहाँ पधारे है, उनको मैं नमन करता हूँ। विद्या एक ऐसी चीज है विद्या हो जाए, भोजन कम हो पर जैसे तैसे विद्या ग्रहण करो क्योंकि मैं विद्या के कारण बहुत तकलीफ पाया। कल भैरोंसिंह जी ने कहा था कि मेरे पिताजी ४५ साल की उम्र में चले गये परन्तु मैंने रन को नहीं छोड़ा वैसे मैंने रण को नहीं छोड़ा। मेरे ऊपर पिताजी का साया दो साल की उम्र में चला गया और एक छोटे से गांव में मेरा जन्म हुआ आज चैन्नई में भगवान की

कृपा से महाराज श्री की कृपा से, खूब आनन्द हो रहा हैऔर मैंने काफी तरक्की की है परन्तु मैं जब विदेश गया तो शिक्षा का पछतावा इतना आया, इतना आया एक दिन तो आँखों में आँसू आ गये कि मैंने ये ५ वीं क्लास के आगे क्यों नहीं पढ़ा। मैं सभी विराजमान बन्धुओं से प्रार्थना करता हूं- हर बच्चे को चाहे एक टाइम भोजन करा लेना पर शिक्षा जरु कराना क्योंकि शिक्षा ही इस वक्त सरस्वती के रुप में, महालक्ष्मी के रुप में जानी गई, इसी आशा के साथ आप सबको नमन करते हुये- महामण्डलेश्वरों को नमन करते हुये, हमारे साथियों को नमन करते हुये स्थान ग्रहण करता हूँ।

प्रो. केशव शरणजी (नेपाल) :-

आज हम शिक्षा पर विचार करने के लिए इकठ्ठे हुये है, और हम जिस धरती पर अभी खड़े है उस धरती का भी स्मरण करते हुये हमे शिक्षा के मूलभूत तत्वों को राजस्थानी भाषा में जिस तरह से उभारा गया, संतो की वाणी में, उसकी दो चार पंक्ति स्वयं बोलते हुये और आप सबसे भी उसमें साथ निभाने के लिए अनुरोध करते हुये, थोडा सा उच्चारण करना चाहिए।

करले करले रे गोविन्द जी न याद, जिन्होंने थारी देह रची। भाई रे इतनो काहे कर र गुमान।।

मुझे लगता है कि हमारी शिक्षा का प्राण इस भजन मे निहित है हमें सबसे पहले हमारे जीवन में कृतज्ञता का विकास करना है क्योंकि भारतीय संस्कृति कहें, हिन्दू संस्कृति कहें, आर्य संस्कृति कहें, वैदिक संस्कृति कहें, सनातन संस्कृति कहें, इसका प्राण है कृतज्ञता का भाव है। हम भगवान् के भक्त बनकर के जियें, प्रभु के आराधक- उपासक बनकर के जिये यह हमारे लिये- शिक्षा की बुनियाद बननी चाहिए। तभी हम कुछ बनेंगे। जो बनने के लिए मानव बनकर के आये, जिसके लिए प्रभु ने वरदान स्वरुप में मानव जीवन बक्शा वह तभी सफल होगा। हमारे जीवन के सारे मानवीय जीवन मूल्यों का आदर्श प्रतिपादन हम तब कर सकते हैं, जब हमारे हृदय में भगवान् के चरणों में कृतज्ञता होगी- गीताञ्जली का वह प्रथम पद कि इतना आकर्षक है, कितना प्रेरणादायी है। रविन्द्रबाबू ने कितना सुन्दर भावमय भाषा में आबद्ध कर सुन्दर पंक्तियां गायी है:-

आमार माथार नत परलाओं हे, तोमर चरण धुलारतले
सकल अहंकारो आमार डुबाओं चोखेर जले।।

आमार जे करी न प्रचार आमार आपोन काजे,
तोमर इच्छा पूर्ण करो हे, आमार जीवन मांझे।।

हम भगवान् के होकर के जीयें, हमारा जीवन प्रभु का मंत्र बने, वह यंत्री बने ओर हम यंत्र बनकर के उनकी सद्‌च्छा को पूर्ण करने वाले सेवक बनकर के हम जीवन में जीयें यह हमारी संस्कृति का मूल है।

''इशावास्यमिदं सर्व यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेनत्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम्।।''

यही तो हमारे धर्म ने मूल रुप में सिखाया हैं तो हम भगवान् गोविन्द के भक्त बन करके जीयें ये हमारे जीवन का शाश्वत सनातन मूल्य होना चाहिये- जब हम आदर्श शिक्षा को आगे बढ़ाने की उम्मीद मन में ले करके आगे बढ़े हैं क्यों कि शिक्षा की ये जड़ है। कृतज्ञता का भाव नहीं रहा तो वो क्या करेगा, आगे जाके, जो अपने जीवन दाता प्रभु को ही भुलाये बैठा है वह आगे किनको याद करेगा और क्या मूल्यों को, उसूलों को अपने जीवन के आदर्श रुप परिपालन करेगा। इसलिए हमारी शिक्षा की बुनियाद हमारे जीवन के आदर्शों को पनपाने वाला वह सुन्दर सरस भाव भगवान् के चरणों में, हमारी भक्ति होनी चाहिये। एक नीतिकार ने बहुत सुन्दर में कहा है- हमको केवल साक्षर नहीं होना है, हमको केवल सूचनाओं का संकलन नहीं करना है, आज के पाश्चात्य जगत् में मूर्धन्य शिक्षा जिन्होंने एक

स्वर से घोषित किया है- **ऐजूकेशन इज नॉट आनली कलेक्सन ऑफ इनफॉरमेशन, बट ऐजूकेशन इज ब्येवियर**- शिक्षा केवल सूचनाओं का संकलन नहीं है कि अमुक जगह यह लिखा है, अमुक जगह यह लिखा है, अमुक ने ये कहा, अमुक ने यह कहा- शिक्षा का प्राण है हमारा व्यवहार हमारे जीवन के वो आदर्श जिनके द्वारा हम, स्वयं बनकर हम स्वयं, जीते हैं और उस समाज को भी बनाने की दृष्टि से हम उठ सकें। ऐसी प्रेरणा जहाँ से हमें मिलतीं हों वह शिक्षा का मूल स्रोत है और उसी स्रोत का विकास करके हमें समाज में जीना है। जिन प्रभु ने हमारे जीवन में कृपा की हमें मानव बन करके जीने का सौभाग्य दिया। हम कीड़े मकोड़े बनकर भी आ सकते थे, पर प्रभु ने हमें मुक्ति का द्वार, मनुष्य जीवन दे करके भेजा। उन प्रभु के प्रति हम कृतज्ञ नहीं रहेंगे उनको भुलाके जीयेंगे तो हमारे जीवन में कौन से मूल्य, आदर्श स्र लेकर के खड़े होंगे। सबसे बड़ी बात हमारे जीवन में प्रभु का हो करके जीने की तमन्ना जगनी चाहिये उस प्रभु के भक्त हो करके जीयें। दूसरी बात है हमारे आज सम्पूर्ण संस्कृति के चिन्तन के क्रम में, शिक्षा के चिन्तन के क्रम में जो चिन्तनींय बिन्दु हैं वह है इस सृष्टि के भीतर तीन कृतियाँ है- एक प्रकृति है, और एक विकृति भी है परन्तु एक संस्कृति है जिसके द्वारा मानव खड़ा है, उसका नाम है संस्कृति।

देखिये प्रकृति सभी में समान रहती है। प्राणी होने के नाते सबको खाना पड़ता है, सबको अपना आश्रय तो ये धूप छाँव के बचाव के लिए छतवाला घर चाहिये, सबको लज्जा ढ़ाकने के लिये, लज्जा का आवरण करने के लिए वस्त्र आदि की आवश्यकता पड़ेगी ये सब सामान्य चीजें हैं। प्रकृति है यह समस्त प्राणी खाते हैं क्योंकि सबके प्राण है प्राणी को खाना चाहिये, मानव भी खाता है अन्य प्राणी भी खाते हैं, ये प्रकृतिकी बात हुई परन्तु मानव संस्कृति से जीने वाला प्राणी है। और पशु खायेंगे तो स्वयं ही खाना चाहेंगे और किसी को बाँटने की भावना उनमें नहीं रहेगी- आप दस टुकड़े रोटी के फेंक दीजिये सड़क पर, आठ दस कुत्ते इकट्ठे हुये तो छीना झपटी करेंगे। उनमें बांट करके खाने की बात नहीं है। लेकिन यह विश्व सृष्टि के भीतर मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो औरों को खिलाके खाने में आनन्दित होगा ये संस्कृति है और इसी में मानवता है। अपने घोंसले में अकेले रहेने की तमन्ना सब प्राणियों को होती है, परन्तु अपने आश्रय स्थल में औंरो को भी आश्रय देकर अपना मकान बनाते हुये उसी में एक अतिथि कक्ष का एक सुन्दर अतिथिशाला का भी संकल्प मन में लेकर भवन बनाने वाला केवल प्राणी मनुष्य ही है। इसी प्रकार औंरों को पहनाकर पहनने में जो आनन्द आता है वो आदमी ही अनुभव कर सकता है और किसी को इन बातों की न सोच है न उनमें कोई संकल्प जगता है। तो जो संस्कृति है औंरों को सुखी बनाकर स्वयं सुखी बनने की ''परसुख सुखित्व'' यह मानव की विशेषता है, यही मानवीय संस्कृति है। हमें इन मानवीय जीवन मूल्यों को आधार बिन्दु बनाकर, इसी को प्राण बिन्दु बना करके शिक्षा का विकास करना चाहिए, तभी हमारी शिक्षा जीवन्त होगी। आज तक सारे विश्व में सारे संसार के लोग स्वीकार कर रहे हैं कि अगर किसी धर्म के द्वारा किसी आस्था के द्वारा मानव समाज के बीच शान्ति को बोया जा सकता है शान्ति का निस्रण पाया जा सकता है तो वो धर्म, वह संस्कृति वैदिन सनातन हिन्दु संस्कृति, वैदिक सनातन हिन्दू धर्म ही है और कोई धर्म नहीं है। सारे संसार के मनीषी इसे स्वीकार करते हैं।

आज पाश्चात्य जगत् में एक अभियान चल रहा है, आज हमारे पावन उपनिषद् की दिव्य प्रेरणा **''आत्मा वाऽरेद्रष्टव्यः श्रोतव्यः मंतव्यो निदिध्यासितव्यः''**

आत्म निरीक्षण की ओर लगो अपने बारे में सोंचो हम मानव बन कर आये क्या किया क्या नहीं किया, थोड़ा अपने जीवन का मूल्यांकन भी किया करो। इन बातों की जो दिव्य प्रेरणा हमारे धर्म ने, हमारी संस्कृति ने दी है उपनिषद् काल से, वैदिक काल से, वही सारे विश्व जगत् के मानव मात्र के लिए आज अनुकरणीय बना हुआ है। संसार में चाहे जहाँ भी जाये शान्ति की मंगल कामना पूरा करने वाला धर्म यदि विश्व में कोई है तो केवल सनातन हिन्दू धर्म ही है, यह संसार भर के लोग स्वीकार कर रहे हैं और आदर के साथ स्वीकार कर रहे हैं। क्योंकि तुम्हारे मजहब को, तुम्हारे पैगम्बर को जो न माने उनको समाप्त कर दो ऐसी घोषणा करने वाले धर्म तो जगह-जगह मिलेंगे परन्तु सारी बहती हुई जलधारायें जिस प्रकार से अन्त में एक ही महासागर में विलीन होती हैं, उसी प्रकार समस्त मानव जाति की साधनायें, उपासनायें अन्त में जहाँ जाकर विलीन होंगी वह प्रभु सर्वेश्वर ,सर्वात्मा, श्रीहरि के श्री चरण ही हैं, उनका दिव्य स्वरूप ही है ऐसा बताने वाला विश्व में एक मात्र धर्म ये विशाल सर्वज्येष्ठ, जगत् श्रेष्ठ धर्म सनातन हिन्दू धर्म है। यह सगौरव सर्वत्र स्वीकारा जा रहा है। मैं १९८४ में विश्व संस्कृति सम्मेलन में अमेरिका में नेपाल का प्रतिनिधित्व करने के लिए गया था और लौटते वक्त न्यूयोर्क में दो तीन दिन रहने का हुआ और हमारे संयुक्त राष्ट्र संघ में हर मंगलवार को एक शांति प्रार्थना संचालित है आज भी चल रही है। और देखकर के मैं परमानन्दित हुआ कि उस विश्व संस्था के भवन में हर मंगलवार को संचालित की जाने वाली शान्ति प्रार्थना एक हिन्दू संस्था चला रही है जिसका नाम है ''चिन्मय मिशन'' ये सारे विश्व जन मानस की आस्था और श्रद्धा का विषय है कि हिन्दू धर्म संस्कृति ही वो स्थिति में है जो ये शान्ति का मिशन लेकर के विश्व संस्था के नियमित कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रार्थना संचालित कर सके। हमें नाज है हमें गौरव है कि हम उस महान संस्कृति के उपासक हो करके जीने का सौभाग्य पा रहे हैं। और इसको हम बालकों के मन मस्तिष्क में, हमारे आने वाले युगों के राष्ट्र के, कर्णधारों के मन मस्तिष्क में विराजमान कराने के लिए प्रतिष्ठापित कराने के लिए प्रयत्न करें और इन मूल्यों को भूल करके जिये तो हमारा जीवन, जीवन नहीं रहेगा। इन बातों को ध्यान में रख करके सदा अपनी संस्कृतिमय शिक्षा के विकास और अभिवृद्धि के लिए सतत संलग्न रहें।

स्वामी श्री वृन्दावन विहारी दास :-
(महन्त, सुखचर काठिया आश्रम कलकत्ता)

जहाँ हमारे शिक्षा की बात आती है वहाँ पर वैदिक युग से लेकर के आधुनिक युग तक शिक्षा की जो परम्परा है उसमें बदलाव आया है। वेद में शिक्षा कर्त्तव्य पालन, शिष्टाचार व अनुशासन पूर्वक सद्जीवन के लिए बताई है। शिक्षा के लिए पालनीय व्याकरण अनुशासन है। विद्या गजेन्द्रस्य का गजेन्द्र की क्या विथा थी। जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य जी उपस्थित हैं। कल भी उपराष्ट्रपतिजी की उपस्थिति में कहा है- **उपासनीयं नितरां जनैः सदा, प्रहाणये ऽज्ञान तमो ऽनुवृत्तेः** - अज्ञान अंधकार को दूर करने के लिए एक मात्र भगवान् श्री कृष्ण चरण कमल में आश्रय ग्रहण करना ही जीवन की एक मात्र शिक्षा है। जो शिक्षा के बारे में बताते हुये हमारे केशवशरण जी ने उल्लेख किया है। शिक्षा संस्कार अंहकार का निवारण करने के लिए, उन भगवान् के चरण कमलों का स्मरण करने के लिए है। इसी के लिए चैतन्य भागवत में चैतन्य महाप्रभु ने भी कहा है-''**पढ़ने से क्या फायदा अगर कृष्ण भक्ति प्राप्त न हो**'' उन्होंने एक व्याकरण को रचना की उस व्याकरण का नाम है, **हरिनामामृत व्याकरणम्** हरिनाममृत व्याकरण में आपने

जीवन के प्रत्येक स्तर का, प्रत्येक प्रवाह का, जीवन के चाल चलन आदि शिक्षा को हरिनाम से जोड़ दिया है। भोजन से ले करके जीवन के शयन तक सुबह उठ करके शाम को सोने तक समस्त जीवन यात्रा को कृष्णमय कर दिया। हमारे जीवन की ये जो शिक्षा है नैतिक शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा, वह शिक्षा मैकालेकी शिक्षा नहीं हैं। लार्ड मैकालेकी शिक्षा पद्धति से आज दो पद्धति की शिक्षा चल रही है एक तो उच्चवर्ग की शिक्षा जो काफी पैसा से ही वह शिक्षा खरीदी जा सकती है। वो शिक्षा हमारे देश की शिक्षा नहीं है। हमारे उपनिषद् की शिक्षा नहीं है हमारे वैदिक पद्धति की शिक्षा नहीं है शिक्षा जो कि बुनियादी शिक्षा महात्मागांधी की शिक्षा है जो कि राजाराम मोहनराय जी की शिक्षा। निम्बार्क भगवान की शिक्षा के अनुसार ''उपास्य रुपं तदुपाकस्य च '' उपास्य उपासक और प्रकृति को जान समझ कर सर्वजन कल्याणकारी भगवद् भक्ति भाव समृद्धक शिक्षा संस्कार व आचरण हीं जीवन में अभ्युदयकारी है।

आध्यात्मिकता की जो शिक्षा है उसकी भाव भूमि के बिना सत् शिक्षा पद्धति कभी पनप नहीं सकती है। केवल कुछ पुस्तकों का अध्ययन लाभ करके बुद्धि को प्रखर करना ही शिक्षा नहीं है।

श्री मुकुट बल्लभगौड़ :-

शिक्षा के वर्तमान स्वरूप पर अपने कुछ विचार रख रहा हूँ। आज ५६-५७ वर्ष देश को आजाद हुये हो गये लेकिन हम इन ५६-५७ वर्षो में, बडे दुःख की बात है कि हम, शिक्षा की अवधारणायें निश्चित नहीं कर पाये। आज तक इस जगत् को हमने प्रयोगशाला के रूप में प्रयोग किया। हर पाँच वर्ष में जब सरकार बदलती हैं, तब तब अवधारणायें बदल जाती है, उसके मन्तव्य बदल जाते हैं। निवेदन है कि शिक्षा को सरकार के हाथो से मुक्त करवाकर एक स्वतन्त्र निकाय को सौप दिया जाय और उसमें केवल विद्वज्जनों का ही समावेश हो उनका ही हस्तक्षेप, हो यह व्यवस्था होनी चाहिये, तो मैं मानता हूँ कि शिक्षा में आमूल चूल परिवर्तन हो सकते हैं। दूसरे जैसा कि त्रिभुवन विश्वविद्यालय के प्रो. के शवशरण ने फरमाया था कि आज शिक्षा के नाम पर केवल सूचनायें दी जा रही है और सूचनाओ को हम गलती से ज्ञान मान बैठे हैं। स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो विश्व धर्मसम्मेलन में एक बार फरमाया था कि अगर सूचनाओं का आदान प्रदान करना ही शिक्षा है तो लाईब्रेरी से बढ़कर, वाचनालय से बढ़ करके कोई शिक्षक नहीं हो सकता है क्योंकि वहाँ सभी सूचना एकत्रित है, वहाँ जाके पढ़ लीजिये फिर गुरुजनों की और शिक्षकों की और विद्यालयों की क्या आवश्यकता है। इसलिए सूचना प्रदान न करके नैतिक मूल्यों का समावेश भी इसमें किया जाए। सूचनायें देना बहुत जरूरी है, लेकिन सूचना को ही मात्र शिक्षा का सोपान नहीं माना जाय, ये मेरा निवेदन है। दूसरा आज शिक्षा के स्रोत अधिक हो गये है, लेकिन शिक्षा कैसे दी जाए और क्यों दी जाए, और किसको दी जाए, यह निश्चित करना बड़ा कठिन हो गया है। तो शिक्षा का एक सांगोपांग अध्ययन करने के बाद में यह निवेदन किया जाय यह मेरा निवेदन है कि शिक्षा में जितने भी गुणात्मक तत्व हैं उनको सम्मिलित करके शिक्षा को गुणात्मकता की दृष्टि से सुदृढ़ बनाया जाए। संख्यात्मक दृष्टि से सुदृढ़ बनाना आज की आवश्यकता नहीं है। आज गली गली में स्कूल है, गली गली में विश्वविद्यालय है। हर कोई व्यक्ति विश्वविद्यालय खोल करके स्कूल खोल करके, अपनी रोजी रोटी के साधन निश्चित कर रहा है। लेकिन किसको क्या शिक्षा देनी है, वहां पर क्या दिया जा रहा है इसकी मौनेटिंग करने वाला इसको व्यवस्थित करने वाली कोई एक बौंडी होनी चाहिये कोई एक व्यवस्थित प्रक्रिया होनी

चाहिये। दूसरा शिक्षा को हमने साधन मान लिया। शिक्षा साधन नहीं है शिक्षा साध्य है। शिक्षा को साधन मानने का तात्पर्य यह है कि हमने शिक्षा को रोजगार से जोड़ दिया। जब व्यक्ति शिक्षा प्राप्त करता है तो शिक्षा प्राप्त करते समय उसके जहन में ये बात होनी चाहिये कि हमें नैतिक मूल्यों का विकास करना है, हमें देश की सेवा करनी है। स्वामी विवेकानन्द ने यहाँ तक कहा कि वह शिक्षा क्या काम की जो सिंह के समान व्यक्ति में साहस न पैदा कर सके, देश भक्ति की भावना निश्चित न कर सकें। आज ये जो अराजक तत्व हैं देश में विद्यमान है, हमारे राजस्थान में भी विद्यमान हैं जहां कहीं भी है उनके पीछे शिक्षा की विकृति है। तो यहाँ पर सभी विद्वान् महापुरुष विराजे हैं उनसे निवेदन है कि शिक्षा में विकृतियों को दूर करने का सबसे पहले प्रयास किया जाए। एक जो महत्वपूर्ण बिन्दु है कि शिक्षक चयन प्रणाली बहुत दोषपूर्ण व विकृतिपूर्ण है। अध्ययन प्रणाली में इतनी विकृति हो चुकी है, चयन प्रणाली में कोई मापदण्ड नहीं है। जिन्हें कोई साधन नहीं मिलता वह व्यक्ति शिक्षक बनते हैं आखिरी स्टेज के रूप में। सबसे पहले व्यापार करना चाहेगा यदि व्यापार नहीं कर पाता है तो वह व्यक्ति आई.एस. बनना चाहता है, आई. एस. नहीं बन पाता तो वह व्यक्ति आर.एस. बनना चाहेगा फिर अगर कुछ भी नहीं बन सकता है तो चलो ठीक है गुरुजी बन जाते हैं। शिक्षा, चरित्र और व्यवहार में परिवर्तन लाने का महत्वपूर्ण साधन होना चाहिये लेकिन बड़े दुःख की बात है कि शिक्षा की आज वर्तमान पद्धति को शिक्षक, शिक्षा की जो वर्तमान पद्धति हैं उसमें न तो ज्ञान न संस्कार, ज्ञान के नाम पर सूचनायें दी जा रही है, और चरित्र का तो कहना ही क्या? चरित्र किस तरह से विकसित हो रहा है, चरित्रवान् व्यक्ति इस शिक्षा के द्वारा बनाये जाये ऐसे प्रयास किये जाए और व्यवहार में परिवर्तन, व्यवहार में परिवर्तन के लिए देश सेवा विकसित हो अपने गुरुओं के प्रति श्रद्धा हो। सबसे बड़ा जो झगड़ा है जो उसकी जड़ है, शिक्षा में विकृत का जो मूल है वह शिक्षक चयन प्रणाली है। आज शिक्षा के नाम पर अयोग्य व्यक्तियों का चयन किया जा रहा है जिनको शिक्षा से कभी कोई लेना देना ही नहीं था ऐसे लोंगो की चयन प्रणाली होगी, मेरा मानना है। शिक्षा में परिवर्तन कदापि नहीं हो सकता। इसलिए चयन प्रणाली को सुधारा जाय। शिक्षा में उन्हीं लोगों का समावेश किया जाय तो शिक्षा में तनमन से जूझना चाहते है। आखिरी स्टेज के रूप में नही, प्रथम स्टेज के रूप में उन लोगों का चयन किया जाए कि आपको प्रथम में ही शिक्षक बनना है और शिक्षक बन करके ही अपना जीवन निर्माण करना है, इसी को समर्पित हों। शिक्षक शिक्षार्थी का सम्बन्ध आज बहुत तनावपूर्ण हो गया है। शिक्षक शिक्षार्थी के प्रति उतना समर्पित नहीं है और शिक्षार्थी भी शिक्षक के प्रति उतना समर्पित नहीं है। इस कारण भी हमारी जो शिक्षक चयन प्रणाली है उसके पीछे भी यही कारण है। मैं पुनः निवेदन करना चाहता हूं कि **''सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा''** अगर ये बनाना चाहते है तो शिक्षा की चयन प्रणाली को दुरुस्त किया जाय। उसमें आमूल चूल परिवर्तन किया जाय तभी हम शिक्षा में आगे बढ़ सकेंगे, मेरा इतना ही निवेदन है।

प्रो. कु. विमला भास्कर :- रोहतक हरियाणा

आज के सत्र का मुख्य विषय है, शिक्षा, जिस पर अभी तक आपने विविध रूपों में विद्वजजनों के विचारों को सुना है। शिक्षा का अर्थ किसी प्रकार से केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं है, यह मानव भावों को उद्भूत करने वाली एक ऐसी कला है जो संसार, मानव और उसके क्रियाकलापों का आपसी गठबन्धन कराती है। यद्यपि प्रकृति मानव के लिए अपने आप में सबसे बड़ी

शिक्षक है और मानव स्वयं भी तो अपना शिक्षक है। ऐसे में उसे अन्य शिक्षा की आवश्यकता नहीं, फिर भी मानव को निश्चित रूप से ऐसी शिक्षा प्राप्त करनी ही है जो कि मानव को धरातल पर ला सके उसमें शिष्टाचार, सदाचार, विनम्रतादि, भावों को भर के समाज में जीने की राह दिखा सके। इसके लिए बच्चा माँ की गोदी से निकल कर जिन विद्यालयों की शरण में जाने को बाध्य हो जाता है वह आज का आलोच्य विषय है। कहने के लिए शिक्षा के स्तर में निरन्तर परिवर्तन हो रहा है मासूम बच्चों के कंधो पर चार-चार पाँच-पाँच किलो का बोझा बस्ते का है और उन बस्तों के अन्दर क्या है ये केवल खोलने पर ही पता चलता है कि उसमें भरी सामग्री क्या है? आज एक तरफ सरकारी स्कूल केवल कहने के लिए ही चल रहे हैं। तो दूसरे तरफ स्वतंत्र संस्थायें पूरेजोर शोर से चलती दिखाई देती है। निजी संस्थाओं में अपने बच्चों को भेजने का हर कोई साहस नहीं जुटा सकता एडमीशन-प्रवेश हेतु हजारों रुपयों का डोनेशन प्राप्त किया जाता है। फीस की तो बात ही मत पूछो? पहली दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए भी चार-पाँच सौ रुपये तक, और इससे भी अधिक फीस ली जाती है। स्कूल की यूनीफार्म स्कूलों से हो, कापी स्कूल से हो, टाई बैल्ट स्कूल से हो, जुर्राब स्कूल से लें- इधर उधर से कापी लेकर यदि कोई बच्चा स्कूल में जाता है तो अध्यापक उसको कक्षा से बाहर निकाल देता है। आखिर क्यों, क्या एक गरीब परिवार का बच्चा, वो शिक्षा को प्राप्त नहीं कर सकता है क्या वह एक हल्की कापी ले करके नहीं जा सकता है, कभी हमने इस बात का चिन्तन करने का प्रयास ही नहीं किया। इन स्कूलों में जाने वाले अपनी भारतीय संस्कृति को क्या समझेंगे। समय था जब गुरुकुल प्रणाली थी जहाँ भारतीय संस्कृति का ज्ञान कराते हुये उसे स्वावलम्बन सीखलाया जाता था, जहाँ ऊंच नीच का भेदभाव नहीं था। कहने के लिए आज भी होस्टल है, स्कूलों में यूनीफॉर्म है पर ये सब पैसा ऐंठने के लिए है, जहाँ शिक्षा बिक रही है। यों तो आज उच्चशिक्षा के लिए डाक्टर बनने के लिए पहले परीक्षा पास करनी पड़ती है। पर विद्वत् समाज यह भली भांति जानता है कि चार-पाँच -छं, लाख रुपये की डोनेशन दे करके बड़ी आसानी से एम.बी.बी.एस. के अन्दर भी प्रवेश पाया जाता है। पर दें भी तो क्यों न दे, क्योंकि उनको मालूम है कि कल गरीब जनता से उसको वसूल करना है। मानव हो करके मानव का शोषण करते चले जायं, मानवता को ताक में रख दो और समेट लो पैसा, दो-दो नहीं दस-दस हाथों से! स्कूल-कॉलेजों में, कक्षा में तो कुछ पढ़ाना नहीं, ट्यूशन से जितना चाहो कमा लो यह रहस्य कौन नहीं जानता। शिक्षा की नहीं पैसे की कीमत है आज हमारे देश के बड़े बड़े नेता अपने उपचार के लिए विदेशों में क्यो जाते है? इसलिए न कि उन्हें पता है कि डाक्टर कैसा है? व्यवसाय के अड्डे बनें शिक्षा केन्द्रों की और हमारे नेताओं का ध्यान क्यों नहीं जाता, किसको नहीं मालूम है। बड़े ठाठ से कहा जाता है कि हमारा बच्चा पब्लिक स्कूल के अन्दर पढ़ता है। शर्म आती है हमारे उच्चाधिकारियों को जिनकी वजह से हमारा बच्चा भी हमारे द्वारा चलाये गये स्कूलों के, अन्दर संस्थाओं के अन्दर जा करके विद्या अध्ययन नहीं करता हैं क्योंकि मालूम है कि वहाँ बच्चा टाट के ऊंपर बैठता है जहाँ कितनी गन्दगी होती है, जहाँ पीने के लिए पानी नहीं होता है और जहाँ गर्मी के अन्दर तपते हुये बच्चें दिखाई देते है। शिक्षाविभाग का व्यक्ति अपने बच्चों को इन स्कूलों में नहीं डालता। आज कहीं आई.ई.एस. कहीं एम.बी.बी.एस. के पेपर आउट हो रहे है तो कहीं छट्टी, सांतवीं, आठवीं नौवीं, दसवीं, ग्यारवीं और बारहवीं के। पेपर पैसा दे करके खरीद लो पैसा देकर पा लिजिए ७०-८५ प्रतिशत अंक। गाँवो की स्थिति तो और भी बदतर है, स्वयं इस सच्चाई को ध्यान

से देखियेगा, दसवीं और बारहवीं कक्षा में ३-४ बार फेल हो जाने वाला बच्चा भी अपने घर के अन्दर, गली, मोहल्ले के अन्दर स्कूल खोले हुये बैठा हुआ है। और ऐसा बच्चा हमारे समाज में उन बच्चों को जो अभी मासूम कलिका के रूप में है शिक्षा के लिए जाता है। तो वह भला क्या शिक्षा देंगे जिस बच्चे का अपना व्यक्तित्व नहीं हैं जिसके पास अपनी शक्ति और सामर्थ्य नहीं है। लेकिन हम सोचते हैं कि घर के पास स्कूल है कोई बात नहीं है। बाजार में बिकने वाले चीफ नोट्स शिक्षकों को पूरी तरह में व्यवसायिक बनाते चले जा रहे है। स्वतन्त्र विद्यालयों के नाम से समाज का शोषण हो रहा है इसमें कोई दो मत नहीं है पर समाज स्वतः शोषित हो रहा है। सच्चाई तो यह है कि एक मिथ्या अहम् इन्सान पाल रहा है, प्रैस्टीज इशू है सबके सामने, फिर शोषण तो होगा ही, चाहे वह स्वतन्त्र संस्थाओं के माध्यम से या काम धन्धों के माध्यम से इसके लिए हमें स्वयं कदम उठाने होंगे समाज क्या कहेगा इसकी परवाह किये बिना। यहाँ मैं यह बात कहुँगी, हम बार बार एक बात कहते है कि सरकार क्या करती है, सरकार को आखिर कुछ सोचना चाहिये लेकिन हम यह सोचें कि आखिर सरकार क्या है, सरकार कहाँ से आई है, सरकार किसकी बनायी हुयी है, सरकार में हमारे ही तो बन्दे हैं, इसलिए हम केवल सरकार को दोषी क्यों ठहरायें बस हमें स्वयं अपने आपको जागरूक होना है।

प्रो. बद्री प्रसाद जी पंचौली, अजमेर :-

पूज्य आचार्य चरण, सम्मानित मंच! शिक्षा के ऊपर विचार हो रहा है और आचार्य जी ने कहा था उपनिषद् की शिक्षाबल्ली के बारे में, शिक्षाबल्ली में सबसे पहले ये आता है- '' **शीक्षां व्याख्यास्यामः**'' इसके बाद शीक्षा की व्याख्या करते है। शिक्षा नहीं है, शीक्षा है और शीक्षा का अर्थ है- ''**शयनं ईक्षते**'' जो हमारे भीतर छुपी हुई है उसका दर्शन करना कराना, अपने भीतर छुपी हुई का दर्शन कैसे करें, इसके लिए विद्यार्थी को तैयार किया जाता है। हमारे यहाँ छोटे से छोटे स्कूल में बहुत पहले जिस तरह से शिक्षा आरम्भ होती थी वह मुझे याद है। बालक को जब नामकरण संस्कार होता था उसी समय यह कहा जाता था ''**वेदोसि, वेद नामासि**'' है, होने वाले होनहार बालक देश के नौनिहाल तू वेद स्वरूप है तेरा नाम वेद है अर्थात तू साक्षात् शीक्षा स्वरूप है, विद्या स्वरूप है, ज्ञान स्वरूप है। आज सबसे पहले जब बालक आता है तो जैसा बहिन जी कह रहीं थी उसकी जेब देखी जाती है, कितनी मोटी है, उसके पिताजी कहाँ काम करते हैं उनसे क्या काम बन सकता है इसको देखा जाता हैं। मैं सबसे पहले जब विद्यालय में गया गणेश चतुर्थी के दिन उसके चटला चौथ कहते हैं। उस दिन चट्टे बन करके चटशाला में जाते है। तो वहाँ पर जिस महानुभाव के दर्शन सबसे पहले हुये वे छोटे से आकार के थे, नाम था किशोर सिंह, उन्होंने कहा सिंह लगता हूँ अब बच्चों ने हँसकर के कहा नही आप तो आदमी लगते हैं। उन्होंने कहा आदमी हूँ इसलिए आदमी लगता हूँ किशोरसिंह मैंने या मेरे माता-पिता ने नाम इसलिए रखा है कि तुम्हारे लिए मैं कुछ प्रस्तुत कर सकूँ और वह यह है कि किशोर तो तुम हो, तुमको अपने जीवन में सिंह की तरह बनना है, अपने जीवन को आदर्श बना करके। शिक्षक अपने नाम की व्याख्या करता हुआ कहता है किशोर तुम हो और तुमको सिंह बनना है, मेरा तो नाम मात्र है लेकिन इस नाम को सार्थक करना है तुमको, अपने जीवन में। और इसके बाद जब मैं बारहवे स्कूल में गया तो वहाँ पर मेरे दूसरे शिक्षक ने मुझसे ये कहा कि- मैं ज्ञान चन्द्र हूँ -ज्ञान तो तुम्हारे भीतर पलेगा उसके चन्द्रमा तुमको बनना है लेकिन मुझे समाज ने इस के लिए खड़ा कर दिया है चयन

प्रक्रिया की बात थी, तो एक चयन होने वाला अध्यापक अपने नाम की व्याख्या करता हुआ कहता है कि ज्ञान स्वरूप तो सामने बैठा हुआ बालक है उसको ज्ञानियों में चन्द्रमा की तरह से प्रकाशमान बनना है और अध्यापक केवल निमित्त मात्र है इसलिए ज्ञान चन्द्र है क्यों कि वह उस बालक के सामने अपना आदर्श रूप प्रदर्शित कर रहा है। यह इस देश की शिक्षा का स्वरूप है। ''मैकालय'' की बात कहीं, मैकालय जितना शिक्षक था शिक्षा के बारे में समझता था उसके बारे में हम कल्पना नहीं करते। कारण यह है कि नई शिक्षा को प्रवर्तित करते समय उसने भारतवर्ष का सर्वेक्षण करके और यहाँ की स्थिति को देखा यह था कि भारतवर्ष में कोई अशिक्षित नहीं हैं। उसका पहला कथन था। इग्लैण्ड की पार्लियामेन्ट में कि, भारतवर्ष में एक भी अशिक्षित नहीं है, भारतवर्ष में एक भी गरीब नहीं है, भारतवर्ष में कोई भूखा नहीं सोता है, और भारतवर्ष में कोई झूठ नहीं बोलता है- ये खोज विशेषरूप से मैकालय ने इग्लैण्ड की पार्लियामेन्ट के सामने रखी थीं। और बाद में कहा था कि ऐसे समाज में हमारे लिए कोई स्थान नही हो सकता, हमारे लिए पैर टिकाने की भी गुजाइंश नहीं है और अगर वहाँ पर हम टिकना चाहते है तो वहाँ की शिक्षा को ध्वस्त करना चाहिये- तो जो शिक्षा मैकालय के द्वारा प्रवृत्त की गई वह जितनी मजबूत होती जायेगी, मैकालय का उद्देश्य पूरा होता जायगा। उससे भिन्न एक शिक्षा पद्धति जो, इस जीवन से जोड़ती हो, हमको इस तरह की पद्धति चाहिये और वह पद्धति आविष्कृत कैसे हो, समाज में प्रकट कैसे हो, इस देश के लिए लाभदायी कैसे हो, यह सोचना है। इस नाते एक उदाहरण देना चाहुँगा- झांसी में बी.बी.सी.की ओर से एक टीम आई और उसने वहाँ कन्या महाविद्यालय में जिसमें साड़े तेरह सौ कन्यायें पढ़ती थीं तो उसी अनुपात में अध्यापिकायें भी होंगी सबसे पहले पूछा कि- खूबलड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी- ये किनको याद है तो किसी बच्ची को दो पंक्ति याद होगी, किसी को उसकी पाँच पंक्तिया याद होगी, किसी को एक ही होगी, सबने उसका समर्थन किया -इसके बाद यह पूछा कि उसका रचनाकार कौन है, सुभद्रा कुमारी चौहान, जिनका ये जन्मशती वर्ष है उसका नाम कोई भी नहीं जानता था। कविता तो पढ़ली लेकिन उसे जानते नहीं थे। तीसरी बात उनसे ये पूछा गया कि वो झांसी कौन सी थी जिस झाँसी के लिए झाँसी की रानी लड़ी थी। इसका उत्तर एक भी नहीं दे सकी अध्यापिकायें और न छात्राएं। वह शिक्षा कैसी है जिसके बारे में हम इतने, बिल्कुल तटस्थ हो जाए- जहाँ चल रहे है, उसके बारे में नहीं जानते, जहाँ सोच रहे है, उसके बारे में नही जानते थे। ऐसी अपूर्ण शिक्षा इस लिए दी गई कि देश का जो मानस विकसित हो आधा अधूरा हो, देश का युवक आधा अधुरा रहे, वह अपने बारे में कुछ जाने ही नहीं। इस नाते अगर नई शिक्षा को प्रवर्तित करना है, तो ये सोचना होगा कि इस देश के साथ लगाव कैसे बढ़े? यहाँ की परम्पराओं के साथ लगाव कैसे बढ़े? यह भारत मूलतः वेद का देश है, वेद का प्रादुर्भाव जहाँ हुआ और जहाँ पर वेदाभ्यास करने वालों की एक परम्परा रही है। हजारों -हजारों वर्षों से लोग लंगोटी लगा करके भी वेद का अभ्यास करते रहे है। उस देश में जहाँ पर बालक को पैदा होते ही वेद कह करके सम्बोधित किया जाता था वहाँ पर ऐसी ढकोसले वाली शिक्षा ऊपर से तो चिमचिमाता हुआ बना सकती है लेकिन भीतर से खोखला बनाती है उसका कोई अस्तित्व बनता ही नहीं है और इस नाते भारतीय शिक्षा पद्धति के उन जीवन मूल्यों को यदि जीवित करना है तो उसके लिए हमारे पास समर्थ भाषा होनी चाहिये। इस समय यहाँ पर कई शिक्षाविद् मेरे पीछे बैठे हुये हैं, और उनसे किसी शब्द विशेष के बारे में नहीं बता सकते कल की बात है। उसने कहा शिक्षा

और सम्वेदना के ऊपर चर्चा करनी थी तो सम्वेदना शब्द कहते हैं कोश में नहीं मिला और उसका अर्थ तो फिर कहां से मिले। मैनें कहा कि उसमें ज्ञान शब्द भी नहीं मिलेगा क्योंकि ज्ञान में ज्ञ कहाँ आता है ये पता नहीं है। सारे के सारे राजस्थान में चुनौती है कि सारे के सारे शिक्षकों से दो शब्द कोश में ढुढ़वा लीजिए एक ज्ञान शब्द और दूसरा क्षण शब्द उन दोनों शब्दों को यहाँ के ८० प्रतिशत अध्यापक, प्राध्यापक नहीं ढूढ़ सकते कोश में। जब यह स्थिति है अपने उच्चारण को नहीं जानते अपनी परम्परा को नहीं जानते, अपने भविष्य को नहीं जानते तब क्या हो सकता है शिक्षा के माध्यम से ये गम्भीरता से सोचने की बात है। समय की सीमा है उसका पालन करता हुआ मैं आपसे निवेदन करना चाहुँगा कि हमारी उस शब्दावली का एक बार पुनः गम्भीरता से आविष्कार करने की आवश्यकता है॥ एक शब्द भी अगर जीवन में जान लिया उसका अच्छी तरह से प्रयोग कर लिया उसको सम्यक प्रकार से हमने अपने जीवन का आधार बना लिया तो उसके द्वारा ही हम स्वर्गलोक में भी कामधेनु से जैसे सारे के सारे काम सिद्ध होते है ऐसे अपने जीवन में सारे के सारे काम सिद्ध करके और इस धरती के लिए और स्वर्गलोक के लिए दोनों के लिये उपयोगी बन सकेंगे। अपने जीवन को सम्वेदना से दुरुस्त कैसे कर सकें अपने जीवन को अपने लक्ष्य के साथ कैसे जोड़ सकें, इस धरती के संस्कारों के साथ हम परिचित कैसे हो सकें उन धरती के संस्कारों से अपने मन मानस को कैसे रख सकें यह शिक्षा यहाँ पर आवश्यक है इस देश के लिए। मैं आप सबसे निवेदन करना चाहुँगा कि अपने बालकों को अपने होने वाली पीढ़ी को इस तरह के संस्कार देने के लिए जहाँ जैसे भी साधन सुलभ हों सकें उनको उपलब्ध करायें।

श्री मोहन लाल जी छीपा (कुलपति, अजमेर विश्वविद्यालय)

कॉलेज में और विश्वविद्यालय में हमारे पास आपका बच्चा १५-१६ साल बाद में आता है। स्कूल में भी पहले तो आपका बच्चा पाँच वर्ष बाद आता था, अब मातायें दो-ढाई साल में भेज देती हैं लेकिन चार-पाँच वर्ष तक तो बच्चा आपके पास में रहता है। सबसे पहला जो शिक्षा का केन्द्र है वह परिवार है। स्कूल व कॉलेज में जाने के बाद भी बच्चा परिवार में जाता है। मेरा आप लोगो से आग्रह है कि आप अपने बच्चें को कम से कम आप के जो परिवार के संस्कार हैं, अपने समाज के जो संस्कार हैं, वो यदि प्रदान करेंगे उनका ख्याल रखेंगे तो निश्चित रूप से वो बच्चा स्कूल और कॉलेज में आकर भी संस्कारमय बनेगा। अभी बहिन विमला ने निजी शिक्षण संस्थाओं के सम्बन्ध में कुछ बाते कहीं, डाक्टरों के सम्बन्ध में कुछ बाते कहीं। मैं अर्थशास्त्र का विद्यार्थी हूं और आप जो इस विशाल जनसमूह के रूप में बैठे हैं आप उपभोक्ता हैं - आप लोग तय करते हैं कि क्या मांग हो, आप लोग तय करते हैं कि शिक्षा किस प्रकार की हो, आप लोग तय करते हैं कि हमारी चिकित्सा व्यवस्था किस प्रकार की हो, आप लोग तय करते हैं कि शासन व्यवस्था किस प्रकार की हो जब तय करने वाले आप लोग तो फिर हम शिक्षकों का दोष किस बात का। यदि आपने मन में ठान ली तो आप सारी शिक्षा व्यवस्था को बदल सकते हैं- आपने ऐसे-ऐसे करिश्मे किये है कि शासन व्यवस्थायें ही बदल दी यदि आपको ये पब्लिक स्कूल की शिक्षा प्रणाली पसन्द नहीं है तो आप मत भेजिये बच्चों को। आप पर किसी प्रकार का दबाव नहीं आपको कोई कहने को नहीं जाता है कि आप अपने बच्चें को पब्लिक स्कूल में भेजें। लेकिन चूकिं ये जो आधुनिक तड़क-भड़क है, उससे आप

तुरन्त प्रभावित हो जाते हैं इस चक्कर में आपको मजबूर होकर के अपने बच्चें को अपनी सारी सुख सुविधायें त्याग कर स्कूल में भेजना पड़ता है। माताएँ-बहिनें यहाँ सामने विद्यमान हैं आज अब ऐसे स्कूलों की कमी नहीं है जो भारतीय संस्कृति के आधार पर, भारतीय मूल्यों के आधार पर शिक्षा प्रदान करा रहे हों। निम्बार्काचार्यपीठ ने स्कूल खोला, कई स्कूल होंगे इनके कई सामाजिक संस्थायें हैं उनकी तुलना कर लीजिए। किस प्रकार के विद्यालय में नैतिक शिक्षा पर जोर दिया जाता है परिवार में किस प्रकार के संस्कारमय वातावरण बनाया जाता है। उस पर जोर दिया जाता है तो फिर इन संस्थाओं का किस प्रकार का दोष जब बच्चा उनमें पढ़कर उद्दण्डी हो जाए या आप लोंगो का सम्मान नहीं करें, इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है जागरूक बनें आप तय करे हमें किस प्रकार की शिक्षा चाहिए।

मुझे बड़ी खुशी है कि हमारे संतो ने यह तय कर लिया है कि समाज में शिक्षा व्यवस्था को बदल देंगे और जब जिस-जिस कार्य के लिए सन्त समाज आगे आ गये उन्होंने आवाहन कर दिया है तो निश्चित रूप से वह शिक्षा बदल जाएगी। मुझे बड़ी खुशी है कि अब सन्तों का आशीर्वाद स्कूलों को, कॉलेजों को मिलने लगा है और मै निम्बार्काचार्यपीठ तथा यहाँ पर जितने विद्वान् बैठे हैं उनसे आग्रह करता हूँ कि हमारे विश्वविद्यालयों का आप मार्गदर्शन करें। मेरी ऐसी धारण है कि जब तक हमारे पाठ्यक्रमों में भारतीय मूल्यों का समावेश नहीं होगा तब तक इस शिक्षा की दिशा नहीं सुधरेगी। लेकिन भारतीय मूल्य क्या है हमें इतनी जानकारी नहीं है, ये जानकारी सन्तों को है हम तो अब इतने स्वार्थी हो गये है और आप लोग भी इतने स्वार्थी हो गये हो कि आप अपने बच्चों का कैरियर पहले देखते हो कि हमारा बच्चा डॉक्टर बनेगा, इंजीनियर बनेगा, बहुत पैसा कमायेगा तो यह धन के प्रति जो लालसा है, धन के प्रति हमारा जो भाव है उसने इस दिशा को चौपट कर दिया है। आज मुझे खुशी है कि रामदेवजी महाराज ने स्वस्थ भारत बनाने की जो उनकी प्रतिज्ञा है, उनका सपना है, उनको साक्षात् रूप में परिणत कर रहे हैं वह खुले आम आह्वान कर रहे है। आप शिविर में जाकर के देखें कि २०-२०, हजार २५-२५ हजार लोग योग कर रहे हैं आप योग के द्वारा स्वास्थ्य का लाभ कर रहे हैं यदि एक घंटा अपने शरीर को आप लोग देना शुरु कर दें तो डॉक्टरों के पास जाने की जरूरत नहीं होगी और जो पैसा बचेगा आप अपने बच्चों को संस्कारमय शिक्षा जो विद्यालय प्रदान कराते हैं उन्हें दीजिए न। मेरे डॉक्टर भाई नाराज हो रहे होंगे कि रामदेव जी हमारे व्यवसाय को चौपट कर रहे हैं, लेकिन आप भी अपने जो डॉक्टरी व्यवसाय है एलोपेथी व्यवसाय उसके साथ ही योग को जोड़ दीजिये न। इसी तरह आज शिक्षा में आवश्यकता है वैदिक चिन्तन की। मैं अपने सन्तों का आह्वान करता हूँ कि वैदिक चिन्तन है उनके सम्बन्ध में हमें बतायें यदि आपने वैदिक चिन्तन का आह्वान कर दिया, हमारे शिक्षक समुदाय को तो निश्चित रूप से आज शिक्षा का जो स्वरूप है वो बिल्कुल निखर जायेगा। हमने ऐसा प्रयास किया था कि पाठ्यक्रमों में भारतीय चिन्तन का समावेश हो हम हमारे जितने विषयों के अध्ययन मण्डल हैं उसमें हम इस बात की कोशिश कर रहे हैं। यदि हम हमारे पाठ्यक्रमों में कुछ वैल्यूज जोड़ दें, हम बच्चों को ये बतायें कि भारतीय चिन्तन व समन्वय क्या है तो निश्चित रूप से शिक्षा का स्वरूप बदल जाएगा। हमारे जितने विद्वान् यहाँ बैठे हैं हम जानते हैं कि हम हरेक विषय में पाश्चात्य चिन्तन से शुरु करते हैं हमारा कन्ट्रीब्यूशन कुछ नहीं है। जैसा अभी भाई ने बताया कि हम मैकालय पुत्र उत्पन्न कर रहे हैं उसमें सफल हो गये लेकिन भारतीय पुत्र तो अब आप उत्पन्न कर सकते हैं।

इसलिए मेरा सन्तों से आग्रह है कि जो वैदिक विद्वान् आपकी नजर में है, जो शिक्षक आधुनिक ज्ञान से परिचित हैं संस्कृत विद्वान् हैं आज उनके समन्वय की आवश्यकता है यदि आज वैदिक विद्वान् और हमारा आधुनिक ज्ञान का जो शिक्षक है वे दोनों इकट्ठे होकर एक जगह बैठ जाएँ तो एक ऐसा पाठ्यक्रम तैयार हो सकता है जिसमें कि आधुनिक और हमारा प्राचीन जो वेल्यूज है उनका समावेश हो। बन्धुओं बातें तो बहुत कहने की हैं लेकिन मेरा पूज्य श्रीजी महाराज से आग्रह है कि वे हमें कुछ ऐसे वैदिक विद्वान् उपलब्ध करायें जो कि हमारे शिक्षकों के साथ बैठकर कुछ उनको ये बता सकें कि फिजिक्स में वैदिक चिन्तन क्या हैं, रसायन शास्त्र में क्या है, भूगोल मे क्या है, अर्थशास्त्र में क्या है, राजनीतिशास्त्र में क्या है। जब हम आधुनिक बातें पढ़ाते है उनके साथ-साथ यदि एक दो बाते प्रचीन शास्त्रों की बता दें तो विद्यार्थियों का अहित होने वाला नहीं है- विद्यार्थी का हित होगा। इसलिए मैं कोशिश कर रहा हूँ कि हम इस प्रकार से कोर्डीनेशन करें और उस कोर्डीनेशन के द्वारा पाठ्यक्रमों में भारतीय चिन्तन का समावेश कर पाये।

आज उपभोक्तावाद सबसे बड़ी समस्या है। जो आज पूरे विश्व में और हमारे यहाँ भी अब उपभोग के प्रति जो जागृति बढ़ी है, उसके कारण पर्यावरण का संक्रट हो रहा है। जों पाश्चात्य चिन्तन है एक बार एक फाइवस्टार होटल में ठहरने का मौका मिला। आपको जानकर आश्चर्य होगा वहाँ पर होली बुक पड़ी थी, पवित्र ग्रन्थ का उसके मैंने दर्शन किये उसमे श्लोक था कि इस धरती पर जितने प्रकृति पदार्थ है मनुष्य तेरे लिए है, मनुष्य तू इनका खूब उपयोग कर ये वनस्पति है जल में जितने जीव हैं यह तेरे उपयोग के लिए ही है। और जो पाश्चात्य संस्कृति है, उनके इस सिद्धान्त से गवर्न होती है। इसलिए यूरोपीय लोग पाश्चात्य लोग अपनी आवश्यकता से भी ज्यादा उपयोग कर रहे हैं। आप तो जानते है कि पूरे विश्व में जितने संसाधन है उसका चालीस प्रतिशत भाग अकेला अमेरिका उपयोग कर रहा है। ये प्रवृत्ति धीरे धीरे बढ़ रही है। हमारा सोच क्या है भारत का सोच क्या है भारत का सोच यह है कि ''हे मनुष्य इस धरती पर जितने संसाधन है ये तेरे नहीं है इनका मालिक भगवान है और इसलिए इनका त्याग पूर्वक उपयोग कर जितनी तेरी आवश्यकता है उतना ही उपयोग कर''। ये हमारे उपनिषेदों का सन्देश है हम कितना मान रहे है हमारी माताएँ बहिनें उनकी आप आलमारी खोल के देखिए यदि सात साड़ियो की आवश्यकता है तो करीब पचास साड़ियाँ तो इनके पास मिल जाएगी। हम घरों में जितनी आवश्यकता है उससे कितना ज्यादा उपयोग कर रहे हैं तो थोड़ा विचारिए आप जितना ज्यादा उपयोग कर रहे हैं उतना आप गरीबों के संसाधनों पर अधिकार कर रहे हैं आप उपभोग बढ़ा रहे तो इन गरीबों को जिनकों मिलना चाहिए उनको नहीं मिल पायगा इसलिए हमारे धर्मो में सीमित उपभोग की बात है, हमारे शास्त्रों में सीमित उपभोग की बात कही है हमारे यहाँ सदुपयोग की बात है, बांट कर खाने की बात है। अभी यहाँ एक विद्वान् ने बताया है कि खुद कमाना व खुद खाना यह तो पशु प्रवृत्ति है। क्या कर लिया आपने आप कमाते हो और खाते हो लेकिन खुद कमावों और दूसरों को खिलाओं यह संस्कृति है, यह आज हमारी भारतीय संस्कृति में है। हम जानते हैं कि मातायें बहिनें इतनी बैठी हैं जब बोले हम कितना ख्याल रखती है आप लोग खाना बनाती है, पहली रोटी किसकी निकालती है - गाय की रोटी निकालती है। आप गाय की रोटी निकालने के बाद साधु सन्त जब आपके मोहल्लें में आता है तो उसकी रोटी अलग रखती है, आप चिड़ियों को दाना डालती है, आप पीपल की, ऑवले की, खेजड़ी की, सबकी पूजा करती है, क्यों करती है, क्योंकि हमारी

संस्कृति में ऐसा है हमारा प्रकृति के साथ में सद्भाव है हम उसका आदर करते है। लेकिन यह पाश्चात्य संस्कृति में नहीं है वहाँ मनुष्य की आर्थिक परिकल्पना है। पैसा कमाओं खूब कमाओं और इसलिए वहाँ जो सिद्धान्त है वह है **''स्ट्रेगल फौर ए डिस्टैन्स''** वहाँ अस्तित्व के लिए लड़ाई होती है। हमारे यहां लड़ाई नहीं होती हमने तो पूरे विश्व को एक परिवार माना है **''वसुधैव कुटुम्बकम्''** की अवधारणा है। वहाँ पाश्चात्य लोगों में सोचतें हैं कि सबसे सर्वोत्तम ताकतवर व्यक्ति होगा वही जिन्दा रहेगा, हमारे यहाँ नहीं है। हम तो अन्त्योदय जो समाज के अन्त में बैठा है उसकी चिन्ता करते है। हमारे यहाँ परिवार में कितना ख्याल रखा जाता है। मेरे आज जो ग्रामीण भाई आये हुये हैं वो सब जानते हैं।

एक बार हमारे मित्र को अमेरिका जाने का मौका मिला वहाँ पर एक अमेरिकन महिला और भारतीय महिला दो, बातें कर रही थी। जो अमेरिका महिलायें है उनके पास में टौपिक क्या होता है कि तूने कितने को, ये कौन सा पति है, कौन से पति के साथ रह रही हैं। लेकिन हमारे यहाँ तो पतिव्रता स्त्री होती है एक ही पति होता है। **''खड़ी खड़ी आना और आड़ी हो के जाना''** ये हमारी संस्कृति में है। पाश्चात्य संस्कृति में ऐसा नहीं है। तो मैं बात बता रहा था कि वंहा जो अमेरिकन महिला और भारतीय महिला जो बाते कर रही थीं तो उतनी देर में अमेरिकन महिला की एक बेटी वहां आ गई। तब भारतीय महिला कहती है कि भाई तेरी बेटी बहुत दूर से आई है तुम दोनों बाते करो और मैं इसके लिए खाना बना देती हूँ ये खाना खालेगी। शाम का समय था। वह अमेरिकन महिला नाराज हो गई वह क्या कहती है खाना क्यों बनायेगी-भारतीय महिला ने कहा तेरी बेटी है बहुत दूर से चलकर आई है शाम का समय हो गया है खाना तो खाकर ही जायेगी, या नहीं। नहीं उसने मुझे सूचना नहीं दी कि मैं खाना खाउंगी। आप ऐसा करती हो क्या! तो जिस संस्कृति मे ऐसा भाव हो **''डिड नोट इनफॉर्म मी''** उसने सूचना नहीं दी वह सूचना दे तभी मैं खाना खिलाउंगी तो ऐसी संस्कृति के पीछे अपन क्यों भाग रहे हैं। हमारा यहाँ प्रकृति का दोहन होता है शोषण नहीं होता, वहां पर जो पाश्चात्य संस्कृति में हैं। प्रकृति के शोषण के आधार पर आज सारे विकासशील देश संसाधन को हजम कर गये हैं। हमारे यहाँ कर्त्तव्य पर जोर है अधिकारों पर नहीं। वहाँ पर अधिकारों पर जोर है वह यह डिमाण्ड करते हैं कि चाहे जो मजबूरी हो, हमारी मांगे पूरी हो, हमारे यहां ऐसा नहीं है, हमारी संस्कृति में हम कर्त्तव्य पहले देखते हैं और यदि हम सब जो यहाँ बैठे हैं अपने अपने कर्त्तव्यों का पालन करें, अपनी अपनी ड्यूटी है उसको पूरा करें तो दूसरे के अधिकारों की अपने आप रक्षा हो जायेगी। यदि पिता, पिता का कर्त्तव्य है कमाना, परिवार का पालन पोषण करना। यदि पिता कमाता है तो परिवार के अधिकार की अपने आप रक्षा हो जायेगी। राजा है, मंत्री जी बैठे है, राजा का कर्त्तव्य है प्रजा की सेवा करना यदि प्रजा की सेवा होती है तो जनता के जो अधिकार है वो अपने आप पूरे हो जायेंगें। इसलिए भारतीय संस्कृति यह कहती है कि अपने अपने कर्त्तव्यों का पालन करो दूसरों के अधिकारों की अपने आप रक्षा हो जायेगी। बन्धुओं तो इसलिए आज की शिक्षा का यदि कोई भविष्य है और वह सुधर सकती है तो भारतीय मूल्यों से ही सुधर सकती है। जब तक भारतीय मूल्य और भारतीय संस्कृति का समावेश हमारे पाठ्यक्रमों में नहीं होगा तब तक उसकी दशा में सुधार होना संभव नहीं है।

मैं माननीय मंत्री जी से आग्रह करूंगा कि वह प्राईमरी स्कूल, माध्यमिक स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय इन सबमें भारतीय मूल्यों का, भारतीय संस्कृति का, पाठ्यक्रमों में समावेश हो ऐसी अलख जगा दें। मेरा संतों से आग्रह है जो वैदिक विद्वान हैं उनकों आदेश दें

वह यह बतायें कि किस-किस विषय में वैदिक चिन्तन क्या हैं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि हमारे विश्वविद्यालय स्तर पर क्या चीज जुड़ सकती है, पाठ्यक्रम में उसके लिए पुस्तक है या नहीं यदि सन्त लोग इस कार्यक्रम में अपना योगदान शुरुकर दें तो निश्चित रूप से ये जो शिक्षा पद्धति है वह सुधरेगी और एक ऐसा अलख जगेंगा कि भारत पुनः विश्वगुरु बनेगा। इसलिए मेंरी माताओं से और ग्रामीण भाईयों से जितने पधारे हुये है अब यह ध्यान देकर सुन लें कि आप लोग जो चाहेंगे वैसा ही होगा। इसलिए आप अपने बच्चों को ऐसी स्कूलों में भेजें जहाँ पर संस्कारमय शिक्षा दी जा रही है।

श्री वासुदेव देवनानी (शिक्षा राज्य मंत्री):-

काफी चर्चायें हुई विद्वाज्जनों ने अपने विचार रखे कुछ प्राईमरी शिक्षा के लिए, कुछ उच्चशिक्षा के विचार हमारे सामने आये। एक बात बड़ी विरोधाभासी लगी। किसी का कहना था कि शिक्षा को स्वायत्त बनाया जाए राज्य का कोई हस्तक्षेप नहीं हो, दूसरी ओर राज्य से अपेक्षा की जाती है कि वह शिक्षा में इस प्रकार का परिर्वतन करें लेकिन दोनों बातों को कहीं न कहीं सामान्य करने की आवश्यकता है। जैसा कि अभी अभी छीपाजी ने कहा शिक्षा को हमने स्कूलों और कॉलेजो के भरोसे छोड़ दिया वास्तव में शिक्षा तो परिवार में होती हैं। छत्रपति शिवाजी ने कभी स्कूल में शिक्षा प्राप्त नहीं की मां जीजाबाई ने जो कुछ बताया उसके आधार पर वो छत्रपति शिवाजी बने। पहले हम गुरुओं के पास भेजतें थे वे वहां शिक्षा ग्रहण करता था केवल किताबी शिक्षा नहीं पूरे जीवन की शिक्षा लेता था और उसमें अपना जीविकोपार्जन की शिक्षा ग्रहण करके स्वयं के लिए और अपने गुरु के लिए लाता था। व्यवस्था में परिवर्तन हुआ और हम वर्तमान में मैकालय की शिक्षा कहने लगे, वास्तव में आज सत्तावन वर्ष हो गया हम कब तक मैकालय को गालियां देते रहेंगे या मैकालय की शिक्षा का स्मरण करते रहेंगे।

अब हमें हमारे मूल पर आना होगा और जब शिक्षा में कुछ परिवर्तन की बाते करते हैं भारतीयता की बात करते हैं, भारतीय संस्कृति की बात करते है तो तुरन्त हम विदेशी विचार के लोग भगवाकरण का नाम देकर के बदनाम करते हैं और जब कभी शिक्षा में परिर्वतन होने लगता है तो कहते हैं कि शिक्षा का भगवाकरण किया जा रहा है मुझें समझ नहीं आया कि यह भगवाकरण ये विदेशी निष्ठा क्यों कहते हैं। भगवा का तात्पर्य क्या हैं भगवा का हो स्पष्ट तात्पर्य है त्याग और समर्पण। यदि त्याग और समर्पण की बात भारत में नहीं होगी तो इंग्लैण्ड, अमेरिका में होगीं क्या, इसकी चर्चा तो भारत में ही होगीं। इसलिए यदि किसी भी कार्यक्रम का उद्घाटन होता है तो सरस्वती की पूजा होती है। मुझे ध्यान हैं कि पहले जब शिक्षा मंत्री माननीय मुरलीमनोहर जी थे उन्होंने शिक्षा मंत्रियों का समारोह बुलाया, नौ राज्यों के मंत्रियों ने सरस्वती पूजा को लेकर के बहिष्कार किया। कहा यह तो भगवाकरण किया जा रहा है। सरस्वती पूजा तो हमारे आदिकाल से होती आई हैं। अभी पिछ़लें दिनों समाजकल्याण विभाग ने भोजन मंत्र की बात कही तो कहा गया यह भगवाकरण किया जा रहा है। भोजन मंत्र न तो किसी पार्टी का है यह तो अनादिकाल से है लेकिन दुर्भाग्य से शिक्षा एक राजनैतिक जकड़न में आ गई है। आज हम तय नहीं कर पा रहे है हमारे बालक में किस प्रकार के संस्कार निर्मित करना चाहते हैं। शिक्षा वह जो मानव बनाए, जीवन मूल्यों के आधार पर वह मानव बनें। लेकिन इसके लिए जो आवश्यक

चीजें है उसके लिए मैं काफी प्रयत्नशील हूँ पर शिक्षा राजनीति से ऊंचा उठकर के सोचा जाना चाहिए। एक दल आयेगा और दूसरा दल बदलेगा आज एक की सत्ता होंगी कल दूसरी की हो सकती है। लेकिन वास्तव में हम सृष्टि में शिक्षा किस प्रकार देना चाह रहें है इसमें किसी तरह की कोई राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। संतो जो तय करें कि वास्तव में किस प्रकार का आध्यात्मिक व्यक्ति तैयार करके भारत का हम किस प्रकार निर्माण करना चाहते। उसके लिए एक वाक्य शिक्षा में समेटने की कोशिश करूंगा की **''आओ वेद की ओर लौट चलें ।''** हम वेदों से बहुत दूर हो गये है वेदों में इस प्रकार का भाव भरा पड़ा हैं कि विदेशी वेदों से ग्रहण कर रहे हैं। अर्थवेद में जितना विज्ञान भरा पड़ा है उतना संसार की किसी भी पुस्तक में नहीं है और उसी से विचार करलें कि हम कहां पीछे थे। विद्यार्थियों में जाता हूँ तो पूछता हूँ टी.वी. का आविष्कार किसने किया। एक व्यक्ति का नाम लें लेते हैं। मैं उनसे पूछता हूं क्या महाभारत में मीलों दूर बैठकर क्या धृतराष्ट को युद्ध का हॉल नहीं बताया था। क्या उस समय ये टी.वी. विज्ञान नहीं था निश्चित रूप था। हमने रामानन्दसागर का रामायण सीरियल देखा है उसमें क्या पुष्पकविमान हमने उड़ता हुआ नहीं देखा। तो क्या ऐसे प्लेन आज के ही है, क्या डवलपमेंट उस समय नहीं था निश्चित रूप से उस समय था। मैं अजन्ता ऐलोरा गया वहां पर दो हजार वर्ष पूर्व की पेन्टिंग देखी उसमें कहीं किसी प्रकार का अन्तर नहीं आया, तो उस समय कैमिकल इंजनियरिंग नहीं थी क्या ? यह सारा विज्ञान उस समय था। लेकिन धीरे धीरे उसकों भूल गए।

हम धीरे-धीरे परिर्वतन ला रहे। यदि वास्तव में वेदों की ओर लौट चलना है तो निश्चित रूप से जो हमारी भाषा है देववाणी संस्कृत उसकी शिक्षा बढ़ाने की आवश्यकता है। संयोग से संस्कृत विभाग भी मेरे पास है। मेरे आने के बाद हमने कुछ प्रयत्न किया। संस्कृत के कई स्कूल हमनें नये-नये प्रारम्भ किये, मूल रूप से संस्कृत में संस्कृत सम्भाषण नहीं कराया जाता था। हमने निर्देश जारी कर दिये कि सारे संस्कृत स्कूलों में संस्कृत सम्भाषण में पढ़ाया जायेगा। संस्कृत में विद्या दी जायेगी। इस निर्णय के आगे हम बढ़े है संस्कृत विश्वविद्यालय हमने खोला है। उसके अन्दर कई शोधकेन्द्र भी है। आज के बदले हुए युग में विद्यार्थी को शिक्षाविद् हर बात को वैज्ञानिक दृष्टि से करके सामने रखेंगे। हम तुलसी का पौधा क्यों लगाते हैं, पीपल का पेड़ क्या हैं केवल पूजा के लिए नहीं इसमें विज्ञान भरा पड़ा है। यह विज्ञान आधारित बातें हम बच्चों को समझायेंगे तो सभी बच्चों को जल्द समझ में आएगी। यह संस्कृत में हम पढ़ायेंगे और संस्कृत भाषण होगा तो ये जो संस्कृत भाषा है वास्तव में वह विज्ञान वाणी है वह जनवाणी बनाने की आवश्यकता है। जितना हम संस्कृत का प्रचार-प्रसार करेंगे अपने बच्चों को संस्कृत पढ़ायेगे और घर में वेदों का अध्ययन करेंगे तो आप देखेंगे कि जो वर्तमान में यह भोगवादी संस्कृति उसमें स्वत: कमी आएगी। आज जिस संस्कृति के पीछे हम भाग रहे हैं मुझे उसका एक उदाहरण याद आता है। पिछ़ले वर्ष एक परिवार में गया घर में माताजी थी मैंने उनसे पूछा कि आप अपने बच्चों को क्या बनाना चाह रही हो? माताजी का एक सहज उत्तर था मैं एक इन्जीनियर बनाना चाह रही हूं। मन में बड़ी प्रसन्नता हुई। पूछा कि- इन्जीनियर क्यों बनाना चाह रही हैं- तो मां कहती है कि दो साल के अन्दर अपना मकान और कार खरीद लेगा। यदि ये सोच भोगवादी रहेगी तो ईमानदार व्यक्ति कहां से तैयार होंगे। उसके लिए आवश्यक है कि परिवारों में संस्कार शिक्षा दी जाए। उसके लिए नैतिक शिक्षा और योगशिक्षा

का हम लोग समावेश कर रहे हैं। निश्चित रूप से एक शिक्षा का केंन्द्र मीड़िया भी माना जाता था मुझे प्रसन्नता है कि पिछ्ले चार-पाँच वर्षों में इस आध्यात्मिक शास्त्र सन्तो की बात सामाजिक उत्थान की बात भी मीड़िया छापने लगा है, चाहे वह प्रिन्ट मीड़िया हो चाहें इलेक्ट्रोनिक मीड़िया हो, यह निश्चित रूप से हमारे लिए प्रेरणादायी बात है। लेकिन हम ऋषि मुनियों के प्रवचनों में हजारों की संख्या में पहुंचते है चाहे मुरारी बापू हो, चाहें आसाराम बापू का हो चाहें जहां पर हो। लेकिन आज धर्म के आधार पर आचरण की ज्यादा आवश्यकता हैं वहीं सच्ची शिक्षा है। शिक्षा को निश्चित रूप से स्वायत्त बनाना चाहिए बहुत कमियां है लेकिन उन कमियों को ठीक करने के लिए हमें अभिभावकों की विशेष आवश्यकता है जब तक यह अभिभावक आगे नहीं बढ़ेंगे तब तक यह चीजें ठीक नहीं होगी इसलिए मैं सारे अभिभावकों को और शिक्षकों को और पूज्य सन्तजनों के चरणों में प्रणाम करता हुआ यह निवेदन करूंगा कि हमारी सारी भारतीय संस्कृति का जो एक वैज्ञानिक दृष्टिकोंण है वह जनता के सामने रखेंगे तो निश्चित रूप से बहुत जल्दी में ग्राह्य होगी और जीवन में उसका आचरण करेगी आज इसकी आवश्यकता है। संस्कृत शिक्षा को बढावा हो इसके लिए सरकार ने भी एक नई योजना शुरुकी हैं। हम हर जिलें में एक वेद विद्यालय स्थापित करने जा रहे है उसमें वेदों का अध्ययन कराया जायेगा प्रत्येक विद्यालय में हम दस बालक लेंगे। बत्तीस जिलें है। हमने उसके लिए अलग से बजट का प्रोविजन भी कर लिया है। संस्कृत जनवाणी बनायें इसी के लिए आधुनिकीकरण में भी हम इस व्यवस्था को लागू कर सकें।

व्यवसायीकरण शिक्षा की बात। धीरे-धीरे शिक्षा एक व्यवसाय बनती जा रही है मेरा मानना है कि व्यवसाय शिक्षा तो आवश्यक है बढ़े, लेकिन शिक्षा व्यवसाय न बढ़ सके। पूज्य संत आगे आ रहे हैं इनकी प्रेरणा से नये -नये स्कूल कॉलेज विश्वविद्यालय खुलें और उसमें सेवाभावी लोग आगे आयें जो उसको एक सेवा का प्रकल्प मानते हुए आगे बढ़ें तो निश्चित रूप से उसमें सही शिक्षा होगी, वेदों के आधारित शिक्षा होगी, संस्कृत की शिक्षा होगी, तो निश्चित रूप से भोगवादी संस्कृति समाप्त होगी। आज सारा विश्व दु:खी है भारत की ओर देख रहा है। अभी पुष्कर मेला चल रहा है आप जाकर के वहां देखें की कई विदेशी लोग वहां पर आए हुये है। विदेशी क्यों आये है। मैं हरिद्वार भी गया वहां पर कई विदेशी लोग मिट्टी में लोटपोट हो रहे है मैनें पूछा कि यह सब क्या है तो बोलें यहां हमारे मन को शान्ति मिलती है। हम मेन्टल पीस के लिए आए है। आज मैं साइंस ऑफ इण्ड़िया का एक आर्टिकल पढ़ रहा था उसमें लिखा था कि अमेरिका में पैसे की कोई कमी नहीं है लेकिन फिर भी वहां ग्यारह प्रतिशत लोग पागल है, और तैतीश प्रतिशत लोग, नींद की गोलियां लेकर सोते हैं। इसलिए पैसा ही सब कुछ नहीं है संस्कारों की आवश्यकता है और यह संस्कार और ये जो मानसिक शांति है वह भारत में मिल सकती है शिक्षा द्वारा मिल सकती है इसके लिए पूज्य संतजनों ने यह विराट् सनातन धर्म सम्मेलन बुलाया है, इसके तहत जो कई प्रकार की संगोष्ठियाँ हो रही है, आज यह शिक्षा पर संगोष्ठी है इसमें इतना ही निवेदन करना चाहूंगा कि पूज्य चरण हमारा मार्ग दर्शन करें और भोगवादी संस्कृति से अगल हटकर के जीवन मूल्यों के प्रति आस्था बढे भारतीय संस्कृति की आस्था बढ़े संस्कृत को बढ़ावा देते हुए हम जनवाणी बनायें और हम वेद विद्यालयों की ओर बढ़ें आप अपना आशीर्वाद प्रदान करें यही निवेदन करता हुआ श्रीचरणों में प्रणाम करता हुआ, अपनी वाणी को विराम देता हूं।

प्रो. श्री पुरुषोत्तम लाल चतुर्वेदी :-

(पूर्व कुलपति अजमेर विश्व विद्यालय)

लगभग ढाई घंटे से आप शिक्षा सम्मेलन में विराजे हुये शिक्षाविदों के विचार सुन रहे हैं इस अवसर पर अनेक बन्धुओं ने अपने विचार व्यक्त किये हैं। आयोजक बन्धुओं ने इस सम्मेलन के निमित्त छः विषय निर्धारित किए थे। उन्होंने प्रयत्न किया था कि वक्तागण उन छः बिन्दुओं पर अपने विचारों को केन्द्रित करें वह योजना तो कितनी सफल हुई इसका आंकलन आप स्वयं कर लें, किन्तु मैं ये निवेदन करना चाहुंगा इस अवसर पर कि हमारे यहां की शिक्षा व्यवस्था आज कैसी जकड़न में है। अभी-अभी कुलपति डॉ. मोहनलाल छीपा ने वर्तमान समाज की स्थिति आपके समक्ष वर्णन की, मान्यवर शिक्षा राज्यमंत्री जी ने एक दूसरा पक्ष आपके समक्ष प्रस्तुत किया। हम सभी यहां निम्बार्कपीठ के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं। मैं ये अनुभव करता हूँ कि इस बात को हम दृष्टिगत रखें एक शिक्षा सम्मेलन तथा कथित शिक्षाशास्त्रियों द्वारा आयोजित किए जाते हैं और ये शिक्षा सम्मेलन आयोजित हो रहा है निम्बार्कपीठ के तत्वाधान में जो निम्बार्काचार्यपीठ एक तीर्थ स्थान है।

५१०० वर्ष पूर्व निम्बार्क महाराज ने कुछ सन्देश दिया था उस सन्देश को हम स्मरण करें। भारत कोई आज का नया राष्ट्र नहीं है। यद्यपि वर्तमान शासन व्यवस्था में लगे हुये कुछ लोग इसको नये राष्ट्र के रूप में जन्म देने का प्रयत्न करते हैं किन्तु भारत एक अति प्राचीन राष्ट्र है और इस प्राचीन राष्ट्र की अपनी अलग संस्कृति रही है उन संस्कृति के उन अनेक विन्दुओं को मान्यवर छीपा जी ने आपके समक्ष रखा था। जब हम भारत की शिक्षा नीति के बारे में विचार करते हैं तो हमको विचार भी आवश्यक रूप से उस परिधि में करना चाहिये ऐसा मुझे लगता है। हम तुलना करते समय उस अनुष्ठान को स्वीकार करते हुये जब भारत एक विशिष्ट दिशा में चला था और विश्व गुरु बना था। विश्व के अनेक देशों से लोग यहां के जो विश्वविद्यालय थे तक्षशिला और नालन्दा उन विश्वविद्यालयों में हजारों की संख्या में अध्ययन करने के लिए यहां आते थे। किन्तु दुर्दैव से देश में पराधीनता आई और उस पराधीनता के परिणाम स्वरूप हमारी जो शिक्षा व्यवस्था थी वह शिक्षा व्यवस्था भी तहस-नहस कर दी गयी। अभी मान्यवर देवनानी जी कह रहे थे ''मैकालय'' ने योजनबद्ध नीति से यहां अभारतीयकरण करने का प्रयत्न किया था यह प्रयत्न केवल ''मैकालय'' ने ही नहीं किया था इससे पूर्व का पाँच सौ वर्ष का इतिहास उठाकरके देंखे तो इतिहास इस बात का साक्षी है, इस देश के ग्रन्थों को इस देश के ग्रन्थालयों में जो कुछ सामग्री थी वह वर्षानुवर्ष अग्नि को प्रज्वलित करने के लिए काम में लाई जाती रही। हमारे सारे ग्रन्थ नष्ट करने का प्रयत्न उस समय के सत्तासीन लोगों ने किया था। आज आवश्यकता उन सभी को पुनर्जीवित करने की है और पुनर्जीवित करने की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि जहां एक ओर भारतीय चिन्तन है और दूसरी ओर पाश्चात्य चिन्तन है। भारतीय चिन्तन के आधार पर, मानवता का चिन्तन, भातवर्ष के इस वैदिक चिन्तन में से निकला था, सम्पूर्ण सृष्टि का चिन्तन इसमें से निकला था। और जब कि पाश्चात्य जगत् के इस पाश्चात्य विचार के आधार पर जो कुछ निकल रहा है वह आपके सामने है। डॉ. छीपा जी ने अभी आपके समक्ष कुछ तुलनात्मक बातें प्रस्तुत की थीं, वह शोषण पर आधारित है, हमारे यहां कर्त्तव्यों की चिन्ता थी यह संघर्ष के ऊपर आधारित है, **वसुधैव कुटुम्बकम्** का सन्देश दिया था तो उनके यहां विश्व को बाजार बनाने की कल्पना है। उन पाश्चात्य कल्पनाओं के आधार पर विश्व के रंगमंच पर जो कुछ हम देख रहे हैं वह कलह देख रहे हैं, उस संघर्ष में से

रक्त पिपासा स्पष्ट दृष्टि गोचर हो रही है। दूसरी ओर भारतीय जो चिन्तन था उस चिन्तन में मानवता की चिन्ता थी, सृष्टि की चिन्ता थी। प्रत्येक जीव की चिन्ता थी, आज आवश्यकता उस भारतीय चिन्तन को इस शिक्षा व्यवस्था में से भी उभार करके लाने की है। मैं निवेदन करना चाहुंगा कि भारतीय चिन्तन के उन प्रमुख तत्वों को हमारे सम्पूर्ण पाठ्यक्रमों के माध्यम से आज ऊपर उभार कर लाया जाना चाहिये आज जो विद्यार्थी पढ़ता है, स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के पाश्चात भी डॉक्टर की उपाधि लेने के पश्चात भी, इन्जीनियर के नाते, से व्यवसाय करने के लिए आज जो आधुनिक शिक्षा प्राप्त करते हैं वह केवल पाश्चात्य दर्शन को जानते है, उनमें से कोई भी भारतीय दर्शन से परिचित नहीं होता और ऐसी स्थिति में उनका जो दृष्टिकोंण है वह दृष्टिकोंण भी उसी रूप में बना रहता है। भारतीय जो सांस्कृतिक चिन्तन है उसका प्रारम्भ होता था इस आध्यात्मिकता के आधार पर जिस में हम प्रत्येक वस्तु में आत्मा के दर्शन करते हैं समान आत्मा की अनुभूति की जाती थी। और जब समान आत्मा की अनुभूति का पृष्ठ उपस्थित होता है तो फिर किसी के शोषण का विचार नहीं आ सकता, उस स्थिति में किस पर अत्याचार करने का विचार नहीं आ सकता। वहां तो प्रत्येक के प्रति उस प्रकार की सम अनुभूति होने की बात ही आती है। हमारा दृष्टिंकोंण भूमि के प्रति था, भूमि को अपनी माता मान करके चलते थे। जब हम देश को अपनी माता मान करके चलते थे। भूमि के लिए हमारे मुंह से प्रातः काल ये उच्चारण होता था, **''समुद्रवसने देवि पर्वतस्तन मण्डलोविष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे''** और आज हमारा दृष्टिकोंण उस भूमि माता के प्रति कौन सा देखने का हो रहा है वह आध्यात्मिक निर्ममता के साथ प्राकृतिक साधनों के विदोहन, शोषण के नाम पर अधिकाधिक भोग सामग्री अर्जित करने का दृष्टिकोंण हो रहा है। भारतीय सांस्कृतिक चिन्तन के अन्तर्गत जड़ और चेतन दोनों में समान रूप से हमारी अनुभूति उसी परमात्मा की सृष्टि के रूप में होती थी। और इस कारण से उन सबमें उसी प्रकार की समपूरकता का दुष्टिकोंण होता था।

हमारे यहां भी सामाजिक व्यवस्था धर्माधिष्ठित व्यवस्था थी किन्तु धर्म का अर्थ किसी विशिष्ट तीर्थ स्थान से, किसी विशिष्ट देवता के साथ ही नहीं होता था। यदि हमने देवरूप में स्वीकार किया था तो देवरूप में इस सम्पूर्ण प्रक्रिया को देवरूप में स्वीकार किया था। जिसके अन्तर्गत पृथ्वी है यह आकाश है, जल है, चन्द्र है, इन सबमे हमने देवत्व के दर्शन किये थे किन्तु किसी व्यक्ति इष्टदेवता, पुस्तक या उसके आधार पर हमने धर्म को एकांत सीमाओं में नहीं बांधा था। हमारा धर्म कर्त्तव्य पर आधारित था, हमारा धर्म उन गुणों को अपने मन में, अपने हृदय में अपने जीवन में आत्मसात् करने की ओर दृष्टि रखता है। **''धृतिः क्षमादमोऽतेयं शौचमिन्दियनिग्रहः। धी र्विद्या सत्यमकोधो दशकं धर्म लक्षणम्॥''** बताये गये थे। किन्तु दुर्भाग्य से पाश्चात्य अवधारणा को स्वीकार करते हुये हमने धर्म की जो अवधारणा स्वीकार की उसके अन्तर्गत उसको बांध दिया। इष्ट देवताओं के साथ, पूजा पद्धति के साथ, पुस्तकों के साथ अपने केन्द्रो के साथ उसके परिणाम स्वरूप पश्चिम में धर्म के नाम पर संघर्ष हुये थे।

हमने भी कहा कि धर्म निरपेक्षता चाहिये। यह विचार करने की आवश्यकता है भारतीय संकल्पना समग्रता लिये हुऐ है और पाश्चात्य संकल्पना एकांगी, भारत में यदि धर्मनिरपेक्ष राज्य होगा तो वह धर्म निरपेक्ष राज्य कर्त्तव्यविहीन होगा वह गुणों से विहीन होगा और ऐसी स्थिति में समाज रहने लायक नहीं होगा। वस्तुतः धर्माधिष्ठित समाज की स्थापना चाहिये किन्तु वह अपनी

भारतीय कल्पना के आधार पर होना चाहिये। हम ने अवधारणायें पश्चिम से जिस रूप में स्वीकार की हैं मैं और निवेदन करना चाहूंगा हमने एकाकी भाव स्वीकार किया आज हमें बांटने की कोशिश की, जातियों में, स्त्री पुरुष के रूप में। आज चाहे कहीं हो आप सुनते है, उसी प्रकार नारी अधिकारों की बात होती है महिला शिक्षा के नाम पर अलग से चर्चा की जाती है। भारतवर्ष ने कभी भी महिला को भोग्या के रूप में स्वीकार नहीं किया। भारत ने कभी भी महिलाओं को देखा है तो जननी के रूप में, अर्धांगिनीं के रुप में, गृहणी के रुप में, अचार्या के रूप में , उपाध्याया के रूप में और उसको सर्वाधिक प्रतिष्ठित स्थान दिया था। किन्तु हमने जब बराबरी की नाम पर अधिक अधिकारों की बात करना प्रारम्भ कर दिया तो परिणाम ये हुआ है कि आज उस भारतीय महिला को बाजार में नंगा खड़ा करने की स्थिति पैदा कर दी गई है। ये विचार करने की आवश्यकता है कि हम किस प्रकार की पद्धति को अपनाना चाहते हैं हम उस पद्धति को जो पाश्चात्य पद्धति इतने सारे दुर्गुणों को लेकर के आ रही है उस पद्धति को अपनाना चाहते हैं अथवा भारतीय चिन्तन जो सब प्रकार की श्रेष्ठतायें अपने में रखता रहा है जिसने सम्पूर्णता के साथ विचार किया है। अरे हमारे यहां तो सब प्रकार से आश्रम व्यवस्था थी हमारे यहां सब प्रकार के प्राणी से लेकर के व्यक्ति से लेकर समष्टि तक का विचार था, समष्टि से लेकर सृष्टि तक का विचार था, सृष्टि से ले करके और परमेष्ठी तक का विचार किया जाता था। हमारे यहां तो चारों पुरुषार्थ की बात की जाती रही है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की बात की जाती रही है। मैं निवेदन करना चाहुंगा आज आवश्यकता इस बात की होगी कि उस भारतीय चिन्तन के आधार पर शिक्षाव्यवस्था का विकसित किया जाय जिस श्रेष्ठता को मनिषियों के द्वारा अत्यधिक विचार पूर्वक प्राप्त किया था। उन श्रेष्ठताओं को स्पष्ट ज्ञान आने वाली सन्तति को कराया जाय, तब सन्तति उस भारतीय ज्ञान के आधार पर अपने मन में गर्व की अनुभूति कर सकेगी। देश के उस सम्यक इतिहास के बारे में बताया जाय, देश के उस गौरवशाली इतिहास के बारे में बताया जाय, उस इतिहस के आधार पर वह यह गौरव अनुभव कर सकेंगे कि हम उस प्रकार के वीरों की सन्तान हैं हम ऋषियों की सन्तान हैं हम उन श्रेष्ठ पुरुषों की सन्तान हैं। उसके बजाय केवल भीख का टोकरा ले करके और विश्व से आयातित जो विचार हैं उनके ऊपर अवलम्बित रहने का जो प्रयत्न पिछले ड़ेड सौ वर्षो से चल रहा है। प्रारम्भ में मैकालय शिक्षा के नाम पर और वर्तमान में जो **''लिवरराइजेशन''** के नाम पर जिस प्रकार की स्थितियां आ रही हैं उन स्थितियों को भी हमें चुनौती के रूप में स्वीकार करना पड़ेगा। भारतीय सांस्कृतिक कृति वृत्ति व चिन्तन के अधिष्ठान पर अपनी शिक्षा व्यवस्था को खड़ा करना पड़ेगा। उन शिक्षण संस्थानों के पाठ्यक्रम में इन बातों को ठीक प्रकार से समाविष्ट किया जाय। आज उस प्रकार की संस्थायें खड़ी हो रही है मैं निवेदन करना चाहुंगा आपके यहां का निम्बार्काचार्यपीठ इस प्रकार का प्रयत्न कर रहा है अनेक संस्कृत विद्यालय उस प्रकार का काम कर रहे हैं। जो छब्बीस हजार विद्यालय चलाकर अट्ठाईस लाख विद्यार्थियों को शिक्षण देकर प्रतिवर्ष भारतीय संस्कृति, भारतीय इतिहास, भारतीयता और भारतमाता की संस्कृति विद्या ओर ज्ञान बता रहे हैं। उनके माध्यम से सम्पूर्ण मानवता की सेवा का व्रत लेकरके काम करने के लिए वो बालक प्रारम्भ से अपने आप को तैयार करे जीवन की श्रेष्ठतायें अर्जित करें, किन्तु शिक्षा अर्जित करने के पश्चात उन श्रेष्टताओं का उपभोग केवल अपने लिए, अपने परिवार के लिए न करते हुये, अपने सम्पूर्ण समाज के लिए मानवता के लिए सृष्टि के कल्याण के लिए करेगा ये भाव ले करके हम अपनी शिक्षापद्धति को बनायें।

जगद्गुरुरामानन्दाचार्य काशीपीठाधीश्वर श्री हर्याचार्य जी महाराज

बड़े प्रमोद का विषय है कि शिक्षा पर बड़ी उच्चकोटि की चर्चायें आप लोगों की चल रही है। बड़े-बड़े अच्छे-अच्छे विद्वान् शिक्षा का उद्देश्य और विधेय प्रकट किए। हमारे उपनिषदों में जैसा कहा गया है। **विद्या चरणैः प्रचारणीया,विद्या** की चार प्रकार से उपयोगिता है। जिस दिन से बालक अध्ययन करता है उसके वही संस्कार स्नातक और स्नातकोत्तर, तक चले जाते है, मेरे समझ से नया कुछ भी अध्ययन नहीं करता है। विद्या अध्ययन काल, आचरण काल, प्रवचनकाल, प्रयोगकाल चाहे प्रचार काल कह लीजिये, चे चार प्रकार से विद्या की उपयोगिता सदैव ही है। आप सब सुन चुके है। उपनिषद् विद्या को परिभाषा करते हुये अनुग्रह करती है। **या विद्या सा विमुक्तये** जिस विद्या से आत्मा की विमुक्ति नहीं हुई वह विद्या हो ही नहीं सकती। आत्मविमुक्ति का तात्पर्य है सन्तोष। आत्म ज्ञान शिक्षा का तात्पर्य यही है हमारे हृदय में सुपुप्त ज्ञान के तार कों बडी तत्परता के साथ ईक्षण किया जाय, **''शयनं ईक्षते, ईक्षण किया जाय वह शिक्षा है जो हमारा संस्कार है संस्कार जन्यं ज्ञानं स्मृति''**- एक संस्कार अनुभव का होता है, एक संस्कार **''बुकीज नॉलेज''** जो रट लिया उसको उल्टी कर दिया, बस और कुछ नहीं होता। इसलिए विद्या मेरे समझ से जब तक रसायन नहीं बनेगी, विद्या केवल **''बुकीज नॉलेज''** केवल पढ़ करके और उसको गणन करके बी.ए. परीक्षा पास करके नहीं हो सकती। उसका जब तक रसायन न बन जाय तब तक विद्या लाभ नहीं करती विद्या पचती नहीं तब तक वह रसायन नहीं बनती जब तक रसायन नहीं बनती तब तक मानव और मानवता तक नहीं पहुंच सकती। हम मे प्रेम, करुणा, दया उत्पन्न नहीं कर सकती। वेद विद्या को वर्तमान सरकार ने उपेक्षित कर दिया है वेद में सब कुछ भरा पड़ा है। अदिति के गर्भ में इन्द्र ने प्रवेश किया गर्भस्थ शिशु को काट दिया, सात खण्ड कर दिया और सातों जीवित रहे पुनः उनको उसमें प्रवेश करके लड़ने लगे फिर काट दिया। यजुर्वेद में लिखा है वह सात सतह उनन्चास वायु हुये जो सबके सब जीवित रहे। यहां तक ऑपरेशन हुये, जगत् अभी नहीं पहुंच सका है, यह हमारे वेदों की देन है। अभी तक कोई ऑपरेशन ऐसा नहीं पहुंच पाया है कि किसी पिण्ड को, गर्भस्थ शिशु को काटकर कई खण्ड कर दे और वह जीवित रहे।

हमारे वेद विद्यालय हैं उनको सरकार शिक्षा के रूप में कुछ दे देती है यहीं के मनीषियों से पढ़कर फॉरेन के लोग गये वहां आज का विद्यार्थी ऋग्वेद को पढ़ता है कहता है स्वामी जी, मेग्डानल ने ये लिखा, पिटर्सन ने ये लिखा है, गेटे ने ये लिखा है, टुईश ने ये लिखा है, किम्बन ने ये लिखा है, हम कहे ये सब कहां पढ़े हैं, जो लिखें हैं, इनका निरुक्त किसने किया बिना निरुक्त के वेदों के शब्दार्थ नहीं आ सकते इसका ज्ञान किसने कराया ये यहीं पढ़े। मैम्समूलर ने चौदह वर्ष तक भारत में अध्ययन किया और हरिहर कृपालु के पास गया काशी में कहा, लिख दीजिये - कि मैं आपके यहां के वेदों का विद्वान् हो गया। हरिहर कृपालु ने कहा कि वैदिक वांग्मय पर पहले आप भाषण करें। मैक्समूलर वैदिक वाग्मय में पचपन मिनट बोला, रोने लग गये हरिहर कृपालु मैक्समूलर ने कहा **''सर व्हाई आर यू वीपिंग''** क्यों रो रहे हैं आप, कहे इतना देर बोलने के बाद एक लाइन भी वैदिक वांग्मय का शुद्ध उच्चारण तुम नहीं कर सके, तुम्हारे इतने साल बर्बाद हो गये भारत में। आप समझो इस बात को, ग्यारह महीना रह कर वहां स्वर वैदिकी पढ़ा वेद का उदात्त, अनुदात्त और स्वरित और उसमें भी निघात कहां होगा, इसका जब ज्ञान किया, तो मैक्समूलर ने नाम बदल दिया। अपना नाम

लिखा उसने मोक्षमूलर। हमारे वेदों में है क्या नहीं सब भरा पड़ा है लेकिन उनको निकालने वाला विद्वान् अपने परिवार का पोषण नहीं कर पायेगा, तो वेद पर कौन टीका लिखेगा। यहां का जो एम.ए. करता है महीधर ऊबट का टीका वह यहां नहीं पढ़ता खाली परीक्षा पास कर लिया कि संस्कृत से एम.ए. हो गये। कहे कहां से कहे, हम तो लन्दन रिटर्न हैं। ये लन्दन में किसने महाभारत पढ़ा दिया तुमको, भारत से अधिक कौन जानता है।

आप सोचों इस बात को लक्ष्मण जी ने जो रेखा खींची थी रामायण विज्ञान, उसमें शत्रुपक्ष का व्यक्ति आवे तो जलने लगे और मित्रपक्ष का व्यक्ति जाय तो शीतल पड़ जाय यहां तक विज्ञान पहुंचा है। अभी अगर पहुंच गया होता तो जितने आतंकवादी भारत को त्रस्त किए हैं लक्ष्मण रेखा खींच दिया जाता और उससे सुरक्षा मिल जाती, इस रेखा को आज का विज्ञान क्यों नहीं खोज रहा है। आज का भूगोल और खगोल आज वह क्यों नहीं दे रहा है। रामायण में जो कुछ प्राप्त हुआ है, आज वह सत्य माना जा रहा है। महाभारत में संजय, ऐसा फैक्स कहां होगा जो बताये इसके बाद कृष्ण क्या बोलेंगे यह भी संजय धृतराष्ट्र को बतला देता था यहां तक विज्ञान पहुंचा है। पुष्पक विमान में जितने बैठे जाए फिर भी एक सीट खाली रह जाय क्या यहां तक विज्ञान अभी तक पहुंचा है। पुष्पक विमान में किसी ड्राईवर की आवश्यकता नहीं थी, बंम धर दो जहां कहो वहां वर्षा करके लौट आवे यहां विज्ञान अभी पहुंचा नहीं।

दया, करुणा, प्रेम ये जो आचरण संहिता हमारी है खान-पान, उठना-बैठना, स्पर्श-अस्पर्श ये सबका विधान हमारे शास्त्रों में नागरिक शास्त्र का भूगोल का, खगोल का, इतिहास का, रोग का, विज्ञान का सबका एक-एक खण्ड भरा पड़ा हुआ है। लेकिन आज उसका शोधन करने की आवश्यकता है। किसी भाषा का उत्थान और विकास तभी हो सकता है जब वह राजाश्रित हो जब तक राजाश्रित नहीं होगी तब तक उसका महत्व नहीं होगा। इसलिए आज जो हमारी सरकार और मालिक हैं उसमें अस्सी प्रतिशत मूर्ख भरे हुये हैं उनको न शास्त्र से लगाव है न वेदों से लगाव है, न हमारे ऋषि-मुनियों, संत की परम्पराओं से लगाव है। वह तो इसलिए दण्डवत करते हैं कि इनके अण्डर में वोटर्स बहुत हैं ये निर्देश कर देंगे तो हम जीत जायेंगे बस इसके अलावा कुछ नहीं न कोई निष्ठा है, न कोई प्रेम है। अगर हमारी इस परम्परा में जो अपने ऋतम्भरा प्रतिभा के द्वारा ऋषियों ने देखा था वह ज्ञान पुरानी आलमारियों की शोभा बढ़ा रहा हैं वह वेद पड़ा हुआ है। आज का छात्र वेद कैसे पढ़े क्योंकि उसको रोटी नहीं मिलना है सस्वर वेद वाचन करें तो ये जो बैठे है इतने, उसको पागल समझेंगे ये क्या कर रहा है हटाओं इनको इतना समय क्यों दे दिया इतना समय इनको क्यों दे देखो न नग्न सत्य है , है न। कलश धराया जाता है एक दो बहुत बड़े लोगों के यहां, अब नाम नहीं बतायेंगे गये थे तो कलश धराया गया। और वेदिक पण्ड़ित को जहां वैठाया गया वो नाली थी और उसमें गंदा बह रहा था। हमने पूछा पण्डित जी यहां क्यों बैठे हो कहा महाराज सवेरे से घूम रहे हैं और यहां कलश धरा दिया है कोई पूछता नहीं है। न खाये न पीये सवेरे से ही आये है, जो उपेक्षाभाव ये जो, सौतेला भाव है प्यारे! इससे वेदों के तात्पर्य को आप नहीं समझ सकते। एक लाइन का अर्थ लगाने के लिए आपको घी खाना पड़ेगा नहीं तो एक ही दिन में चाय पीकर उलट जाओगे। ऋग्वेद का अर्थ नहीं लगेगा सर्वप्रथम संस्कृति शब्द का प्रयोग ऋग्वेद सातवां मण्डल का नौवा मन्त्र है। उसका अर्थ है यह वह संस्कृति है जो पूरे विश्व को विस्तारपूर्वक जीना सीखाया हैं इसलिए इसको विश्ववारा कहा गया है। कोई पूछे कि भारत का गौरव काल कब था तो मैं यही कहुंगा कि भारत का गौरवकाल उपनिषद् काल था। इससे पहले कोई गौरवकाल भारत का नहीं

था सच पूछिये तो उपनषिद् काल ही गौरवकाल है। वह हमारी शिक्षा है। आज अध्यापक को प्रणाम करने में छात्र डरता नहीं, लजाता है, माता-पिता को प्रणाम करने में वह लजाता है, कि हमने अंगेजी दो लाइन पढ़ लिया है क्यो प्रणाम करें, किसी सन्त महात्मा को देख करके वो कन्नी काट जाता है कि इतने सूटेड बूटेड हो करके हम इतनी लम्बी दण्डवत करेंगे तो ये सब गन्दा हो जायेगा, ये भारत की संस्कृति नहीं है ये यहां का संस्कार नहीं है, ये संस्कार बाहर का है, बाहर का संस्कार है, यह फॉरेन का संस्कार है। हम यह नहीं कहते कि मैकालय शिक्षा पद्धति ने सब बिगाड़ दिया। मैकालय शिक्षा पद्धति ने कुछ लाभ किया है केवल बटोरकर इकट्ठा कर लिया है कुछ तो किया है। नागरिक शास्त्र में क्या क्या होना चाहिये आप पढ़ लीजिये, वेद में उठा करके एक पैर धरने का भी क्या विधान है, पिता-पुत्र कैसे रहें, पति-पत्नि कैसे रहें, बेटी कैसे रहे, पुत्रवधू कैसे रहे अनुमोदन कैसे करें, ये सबका वर्णन है वेदों में, सूत्र रु प में वर्णित है। वेद कहता है, जो मन से ध्यान करता है वहीं वाणी से बोलता है, जो वाणी से बोलता है वही कर्म से करता है जो कर्म से करता है उसी को प्राप्त हो जाता है। इसलिए जैसा तुम सोचोगे वैसा तुम बन जाओगे।

आज का बच्चा टी.वी. के सामने डिस्को डान्सिंग कर रहा है, वही लड़की का चित्र जो टी.वी. पर आ रहा है रात-दिन उसी का चिन्तन करता है आठ प्रकार के मैथुन में डूबा है। वह क्या रट करके तैयार करेगा क्या सोचेगा वह । टी.वी. आप को इसलिए दे दिया गया है कि जिससे आप दूसरी बात कुछ न सोच सकें। इसलिए इसको हटा करके शुद्ध शिक्षा पद्धति, उपनिषदीय शिक्षा पद्धति, वैदिकीय शिक्षा पद्धति जब तक हमारे बच्चों के संस्कार में नहीं आयेगा तब तक उच्चशिक्षा हमारे जीवन में विकसित नहीं हो सकती ये हमारी, अपनी मान्यता है। कुछ बन्धु कह रहे थे कि वैदिक शिक्षा शास्त्र, ऋषि लोग, विद्वान् लोग दें तो ये ऋषि लोग तो अब बुड्ढे हो चुके है इनसे तो आप टीका करके समझ लो और इतने अर्थ एक शब्द के हैं उनको व्यवस्थित करिये तो कम से कम इस समय पचास लाख रुपया लगेगा बहुत कम लगेगा तब, और वो व्यवस्थित कर पाना व्यक्ति विशेष के बूते का नहीं। वेद का सांगोपांग अध्ययन करने वाले अभी भी कुछ लोग है नहीं तो खत्म होते जा रहे है-वह मिलेगे भी नहीं। इसलिए उनको लाकर उस वैदिक परम्परा को पुनर्जाग्रत व समृद्ध करना चाहिये।

पहली कक्षा की पुस्तक में लिखा है पढ़ाया जाता है **''सदा सत्य बोलो''** एम.ए. बी.ए. में उसकी आवश्यकता नहीं है क्या, केवल कक्षा एक में इसकी आवश्यकता है ये आचरण तुम करो **''सत्यंवद, धर्मचर, स्वाध्यायान्मा प्रमदः स्वाध्याय से आलस्य न करो, प्रवचन से आलस्यन करो, धर्म से आलस्य न करो, धर्मान्न प्रमदितव्यम् कर्मान्न प्रमदितव्यम, देव पितृ कार्याभ्याम् न प्रमदित व्यम् मातृ देवो भव, पितृ देवो भव अतिथि देवो भव श्रिया देयं,''** ये जो लिखा वेद में यही तो हमारा कनवोकेशन है। **''अधीत विद्या चरणैः प्रचारणय''** वेदविज्ञान, रामायण विज्ञान, उपनिषद्विज्ञान, भाषाविज्ञान हमारे वेदों में आज भी भरा हुआ पड़ा है। इसी प्रकार सूत्रात्मक रूप से जब हमारा आचरण पक्ष, जब हमारा सत्यपक्ष, जब हमारा अध्ययन पक्ष, जब हमारा प्रवचन पक्ष बलवान हो जायेगा तब वास्तव में हमारी शिक्षा जो होगी वो थोड़ी ही क्यों न हो, ठोस होगी और वे समाज बना सकेगी, जीवन बना सकेगी और जीवन में प्रकाश प्रदान कर सकेगी। आज ऐसे शिक्षा की परम आवश्यकता है। जैसा तुम सोचोगे वैसा तुम बन जाओगे। शिक्षा जगत हल्का होता जा रहा है छिछला होता जा रहा है अध्यापक जगत हल्का होता जा रहा है छिछला होता जा रहा है उसका अध्ययन कुछ नहीं है जो पैतीस मिनट में पन्द्रह मिनट कहानी सुनाता है और बाकी थोड़ा बहुत भूलता लड़खड़ाता हुआ अपने जिस पुस्तक के आधार पे पढ़ाना है उसकी बात को कहता है।

❑❑❑

संस्कृत-संस्कृति सम्मेलन

जगद्गुरु श्री श्रीजी महाराज द्वारा :- डा. अजीज फड़के का सम्मान

डा.अजीत फड़के :- मुम्बई

मंच पर उपस्थित माननीय व्यक्ति, भाई एवं बहिनों अभी श्री ''श्रीजी'' महाराज ने जो मेरा सम्मान किया उसको स्वीकार करते हुये मुझे बहुत संकोच हो रहा है, व्यवसाय में डाक्टर हूँ और मरीजों की सेवा करना यह डाक्टर का कर्त्तव्य है। मैंने इससे ज्यादा कुछ भी नहीं किया। मगर पूज्य ''श्रीजी'' महाराज को मेरी सेवा पसन्द हुई, उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया ये मैं मेरा खुद का अहो भाग्य समझता हूँ। मेरी भगवान् से यही एक प्रार्थना है कि मेरा जो कुछ आयुष अभी बांकी है उसमें मरीजों की सेवा, मेरे हाथ से हो ऐसा आशीर्वाद मुझे ''श्रीजी'' महाराज दें ।

प्रो. श्री वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी, मथुरा

शिक्षा के सम्बन्ध में आपने प्रातःकाल सुना ही कितना सुन्दर विवेचन हुआ है। एक बात निवेदन कर दूँ इस मण्डप से जो चीज़ निकलेंगी वह सफल होगी। कारण पहली बार सनातन धर्म सम्मेलन हुआ महाराज श्री से मैंने निवेदन किया, प्रभु चरण उत्तर प्रदेश में जैसी संस्कृत अकादमी बनीं एक राजस्थान में बनवा दो, प्रस्ताव पारित कर दिया और राजस्थान संस्कृत अकादमी बनी जिससे न जाने कितने विद्वानों सन्त महन्तों को उसका लाभ मिल रहा है। तो प्रभु के चरणों मे जो संकल्प होते हैं वे पूर्ण होते हैं। इसलिए शिक्षा का संकल्प भी पूर्ण होगा। शिक्षा है क्या, आप वेद की चर्चा करते हो तो वेद का एक शरीर है। क्या शरीर है, छन्द तो हैं वेद के चरण और वेद भगवान का यदि साकार विग्रह देखें तो हाथ कल्पशास्त्र हैं और जिस शिक्षा की चर्चा हुई वह क्या है वेद की वह है नाक। जब तक नाक शरीर पर रहती है तो बड़ी शोभा होती है अन्यथा नहीं। वेद भगवान् की नाक क्या है, शिक्षा। अगर वेद समझना है तो पहले नाक का ध्यान रखना। अगर भारत अपनी नाक बचाना चाहता है, यदि वेद चाहता है तो पहले शिक्षा पर ध्यान दे। दूसरी बात मैकालय की चर्चा हुई औरों की भी चर्चायें हुई बड़ी सुन्दर-सुन्दर चर्चा हुई, शिक्षा पर प्रस्ताव भी आया। मेरा तो एक छोटा सा प्रस्ताव है, पुनः निरीक्षण हो, हमें कहां डाल दिया है क्या पढ़ाया जा रहा है आप लोगो को बहुतो को पता है बहुतो को नही पता, विश्वविद्यालय के कोर्स में एक भाषा विज्ञान पढ़ाया जाता है, भाषा विज्ञान, उसे विश्वविद्यालय वाले कम्परेटिव फिलोरोजी का पेपर बोलते है उसमें क्या पढ़ते है, हम पढ़ते हैं सारे जगत् की भाषाओं को चार भागों में बांटा गया। यह हमने पढ़ाये है विश्वविद्यालय की आगरा यूनीवर्सिटी सम्बन्धित पाठ्यक्रम में एम. ए. के छात्रों को वहां हमने यह पढ़ाया, सारे जगत् की भाषा चार भाग में है। आकृति मूलक वर्गी करण, पारिवारिक वर्गीकरण उनमें से समासप्रधान, प्रत्ययप्रधान, विभक्तिप्रधान, भाषाओं को तो अगल किया उन्होंने। और हमें क्या दिया है ऐसी चीजों को हटाओं यह शर्मनाक, चीजों की तरफ ध्यान दिलाता हूँ आपका।

उन्होंने कहा पांच भाषायें अफ्रीका परिवार, सुडान परिवार, हमेटिक परिवार और सैमेटिक परिवार पाँच भाषायें अफ्रीका में और उसके साथ अमेरिका की काफी भाषायें जिनका अभी तक वर्गीकरण नहीं हुआ ये कम्परेटि व फिलोरोजी के शब्द बोल रहा हूं और यूरारिटाई परिवार प्रशान्त सागर परिवार इसमें हमारी संस्कृत कहां रखी है। कुलपति जी तो चले गये नहीं तो पूछता आप क्या पढ़ा रहे हैं? अपने विश्वविद्यालय में हमारी संस्कृत को कहां रखा है आपने, इस भाषा विज्ञान के अनुसार मलयन परिवार, मलेशियन परिवार, पपुअन परिवार, आस्ट्रेलियन परिवार, एकाक्षर परिवार, चीनी परविार ये "हो हा" ओर उसके बाद भारोपी परिवार। अब सावधानी से सुनें यानी हमारी सर्व प्राचीन भाषा संस्कृत और उसे इन लोगों ने हमे घोट पिलाया क्या भारोपी परिवार में है। आप संस्कृत वाले कहते है? दो शाखा हुईं एक का नाम कैन्टुम एक का नाम शतम् कैन्टुम, एक से निकली इंग्लिश और दूसरी निकली शतम्, शतम् से निकली संस्कृत। धन्य विश्वविद्यालय के पाठ्य ग्रन्थ के रखने वालों, धन्य हमारे देश के इस संस्कृत के तथाकथित अध्यक्षों जो इसका संचालन करते है। बाबूराम सक्सैना जी विराजमान थे, आज्ञाप्रसाद जी थे उस भाषा सेमिनार में मैं भी उस मण्डल में था, सदस्य था जहां यह हटाये जा रहे थे मैं सुनने गया, क्या हो रहा है। बोले भूषण को हटा दिया जाय, क्यों इसमें हिन्दुत्व की ज्यादा गंध है। जो बढ़िया बढ़िया बातें थी वह हटाई जाती रहीं इन राजनीति के फच्चडों मे खच्चडौ में और हमारी ये भाषा जिसको इतने लोग पढ़ गये। मैं कहां तक नाम लूंगा आपका कम्परेटिव फिलोरोजी में प्लेटो इनका दार्शनिक है। प्लेटो, अरस्तू, थैस्ट, लौरेसन्स, कैडिल्क, हैल्डाजिलिस्ट, हरवलियम जौन्स, श्रेग्लेय, जैस्ट, वाफ, थोड़ा नाम है संक्षेप में पाठश्राई ये जर्मन का विद्वान् था। इन्होंने संस्कृत पढ़ी मूलर माने मैक्समूलर जिसकी सुबह चर्चा हो रही थी मूलर मिस्टिने, वर्नर, हरमम ये हमारे इस भाषा को बनाने वाले हुये। मैं बार बार प्रश्न करता रहा कि डॉटर कहां से आया कैन्टुम से आ हा हा बाहरे भारतीय मेधावियों। अरे दोहित्री शब्द से बना डॉटर पढ़ाते भी हैं। फिर भी हम भारतीय आवाज नहीं उठा पाये। आज तक दुहित्री शब्द से बना दोहित्री, दोहतर, डॉटर,। पिताजी से फादर बनाये तुम कम्परेटिंव फिलोरोजी वालों ने, पितृ-पितर से बने पिदर, पिटर, फादर और मातृ से मटर जी बन करके बन गई मदर। हमारे संस्कृत के शब्दों की चोरी करने वालों आपने संस्कृत को कहां रख दिया। और कोई कुछ नहीं कहता कि इनको फेंक दो ऐसे कम्परेटिव फिलोरोजी के निर्णयों को जो हमारी भाषा को जिसको विदेशी कहते थे। मैग्डोलन ने लिखा अगर भारत जाते हो तो वहां एक खिड़की खोलना, उस खिड़की में संस्कृत होगी जिसमें सबसे प्राचीन ग्रन्थ होंगे वेद। हमारे संस्कृत के शब्दों को ले गये तुम। कहां से आई ए.वी.सी.डी. । प्रारम्भ में मैकालय की चर्चा हो रही थी बहुत बुद्धिमान था, कह गया जैसा हमारे पूर्ववक्ता ने सुबह कहा था। इनको अंग्रेजी पढ़ाओं इनको इनकी भाषा से अलग कर दो। आज भाषा से हम अलग हो गये, हम भाषा से ही अलग नहीं हुये हमारी संस्कृति पर पत्थर मार दिये गये। हम पढ़ने लगे भगवान् का नाम छोड़कर डीओजी डाँग माने कुत्ता सीएटी कैट मानी बिल्ली। वाह, वाह, वाह, वाहरे भारतीय मेघा। कब तक बर्दाश्त करोगे इस विवेचन को। इन शब्दों के द्वारा क्या हुआ है आपको सब मालुम है। आपको मालुम है संस्कृति का सत्यानाश सिवाय अंग्रेजी के और किसी ने नहीं किया। अंग्रेज चले गये भाषा रख गये हमारी छाती पे। उसी का यह परिणाम है कि हम लेते तो संस्कृत से है, गीत गाते हैं पाश्चात्य सभ्यता के। यह नवम्बर चल रहा है यह क्या शब्द नवम वर नौवों में श्रेष्ठ अरे बताओं अंग्रेजी वालो कहां से

लाये जूली से जौलाई। वाह तुम्हें महिनों के नाम भी हमने दिये। अगस्त्य ऋषि के नाम पर अगस्त सप्तम वर से सितम्बर नवम वर से नवम्बर और दशम वर से दिसम्बर। हमारे शब्दों को लेकर झूठी अंग्रेजी को खिलाने वाले हम को ही पागल बना गये। आपको अब भी सावधान रहना है तो एक ही बात एक शब्द में कहना चाहता हूँ। आप सावधान हो जाइये किससे ? दूरदर्शनम् दूरदर्शनम् दूरदर्शनम्। आप कितना भी प्रयास कर लेना जब तक बच्चों को ये गंदी रसोई हम परोसते जायेंगे टी.वी. की, तव तक तुम्हारे दिये से कुछ नहीं होगा। सर्वप्रथम आप लोग निर्णय करे कि बच्चों को हरेक चैनल नहीं देखने देंगे। वाहरे दूरदर्शन, भारत में हमारी संस्कृति को पनपने देगा ? मैं हाथ जोड़ के कहता हूं मेरा विश्वास कहता है कि जब तक टी.वी. पे कन्ट्रोल नहीं करोगे तो आपकी संस्कृति और आपकी भाषा कुछ नहीं बचेगा। दूरदर्शन के रूप में सावधान हो जाओ। अपनी संस्कृति बचानी है तो यह एक ही बात निवेदन करता हूँ, टी.वी. पर कन्ट्रोल कर लो। दूरदर्शन वालों को सही शिक्षा आप दे दों। मैने कहा न शिक्षा नाक है वेद की, शिक्षा वेदभगवान् की नाक है अगर ये बिगड़ गई तो फिर कुछ नहीं होगा नकटों का गांव हो जायेगा, भारत। इसे सम्भालों शिक्षा यह वेद का अर्थ बताने के लिए जो ग्रन्थ रचा गया था उसका नाम था शिक्षा। जिस शिक्षा में उदात्त, अनुदत्त, स्वरितादि की शिक्षा दी जाती थी उसका नाम था शिक्षा। पहले शिक्षा कल प्रत्यय हो के बन गया शिक्षक, जो शिक्षा का पाठ पढ़ाते थे उनका नाम शिक्षक, अब सभी शिक्षक हो गये। इस कारण आप सावधान हो जाये और अपनी संस्कृति बचाने के लिए प्रभु से तो विनती करें ही जैसाकि सुबह वर्णन किया गया, हमारे एक वक्ता ने कहा वही मैं पुनरावर्ती करता हूँ। माता बहिन भाई इसको ध्यान में रखे बच्चों को प्रारम्भ से संस्कार दें। अन्यथा यह हाल हो जायेगा कि हिन्दुभेष धोती, जिसे मुझे पहनने से शर्म आती है मैं पेन्ट पहनना चाहता हूँ मैं कोट पहनना चाहता हूँ। राणा शिवा की धरती का जरूर लड़का हूं पर हूं तो अंग्रेजी भाषा का वेत्ता, वाहरे अंग्रेजी भाषा के वेत्ता। इन शब्दों के साथ मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि अगर हम अपने को बचाना चाहते है तो एक ही बात है कि हम को भारतीय शिक्षा संस्कार के साथ आधुनिक विषय पढ़ाने होंगे हमारे बच्चे होड़ ही होड़ में संस्कार हीन न हो जावे।

श्री मुकुन्द शरण उपाध्याय :- (काठमाण्डू नेपाल)

मैं परम पूज्य जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश श्री ''श्रीजी'' महाराज के चरण कमलों में अभिवादन करता हूँ और यहां विराजमान सभी सन्त, सज्जन महानुभाव और भक्तगण सभी को अभिवादन करता हूं और मुझे हिन्दी में बोलने का अभ्यास बहुत सा छूट गया है। क्योकि मैं नेपाल में रहता हूं मेरी अपनी मातृ-भाषा नेपाली है फिर भी टूटे-फूटे शब्दों में जो हिन्दी में कुछ कहूंगा उसको आप क्षमा प्रदान करेंगे। अभी अभी उद्घोषक महोदय ने नेपाल नरेश के संदेश के प्रसंग को ले करके कुछ शब्द कहें। मैं कुछ शब्द श्रीजी महाराज के चरण कमल के आगे यह निवेदन करना चाहता हूँ ,कि आप लोग विश्व के एक मात्र हिन्दू राज्य नेपाल के बारे में बहुत सुनते रहते होंगे। नेपाल हिमालय की कोंख में अवस्थित है। वहां पर जगद्गुरु श्रीजी महाराज को अत्यन्त प्रेम और सम्मान करने वाले लोगों की संख्या बहुत मात्रा में है। श्रीजी महाराज कुछ समय पहले नेपाल पधारे थे। जहां भी ''श्रीजी'' महाराज का पदार्पण हुआ, वहां पर बहुत भव्य स्वागत नेपालियों ने किया जो वैष्णव हों या अवैष्णव हों, जिनको निम्बार्क सम्प्रदाय से सम्बन्ध हो अथवा न हो सभी लोग श्रीजी महाराज के दर्शन करने के लिए लालायित पाये गये। नेपाल में जगद्गुरु श्रीजी महाराज बिल्कुल अपने ही आचार्य के रूप में पूजे जाते हैं।

नेपाल यद्यपि इस समय अत्यन्त अशांति के माहौल में है वहां पर बहुत बड़ा रक्तपात हो रहा है ये बात आप रेडियों से दूरदर्शन से पत्र-पत्रिकाओं से पढ़ रहे होंगे। फिर भी नेपाल की जो जनता है नेपाल की अधिकांश जनता जो है उसमें हिन्दू संस्कृति का रक्त कण-कण में व्याप्त है, वो अपनी हिन्दू सनातन संस्कृति परम्परा को संरक्षित करने लिए चिन्तित है। वहां पर बड़े दुःख की बात ये है कि धर्मान्तरण करने वाले लोग विशेषकर क्रिश्चियन धर्म के प्रचारक नेपाल में बहुत मा त्रा में घूम रहे हैं और सीधी-साधी नेपाली जनता को अनेक प्रलोभनों में ले करके हिन्दू संस्कृति से विमुख करा रहे हैं। ऐसी स्थिति वहां है। इस समय इस सम्मानित मंच से मुझे बोलने का जो अवसर मिला, इसका मैं बहुत आभारी हूँ। मैं यहां के अत्यन्त समादरणीय विद्वत् जन और पूज्यवर आचार्य चरण से निवेदन करता हूँ कि विश्वभर के हिन्दुओं को चाहिये कि नेपाल के मठ-मंदिर, वहां की जनता की संस्कृति प्रती निष्ठा वहां के सनातन धर्म की जो परम्परा है उसके संरक्षण के लिए, यहां के बड़े बड़े दिग्गज आचार्य लोग हैं, ऐसे बड़े बड़े धनिमानी लोग हैं जो सनातन धर्म पर अत्यन्त निष्ठा रखते हैं, उन लोगों का ध्यान उस ओर जाना चाहिये। यहां पर बहुत बड़े-बड़े विद्वान् लोग प्रवचन कर रहे हैं मुझ से पूर्व भी जिन लोगों ने कुछ बोला मैं बहुत सन्तुष्ट हो करके, बहुत प्रभावित हो करके मैं सुन रहा था और इससे भी आगे बहुत बड़े-बड़े विद्वान् है हमारे निम्बार्क सम्प्रदाय के ही यहां पर जो बड़े हस्ती नेपाल के विराजमान है पूज्य खेमराज केशवशरणजी और आचार्य श्रीहरिशरण उपध्याजी जो निम्बार्क दर्शन के और सनातन धर्म के और संस्कृत वांग्मय के लिए नेपाल में प्रख्यात हैं। आप लोगों का प्रवचन होगा विद्वान् प्रवचन करेंगे और जो भारत के बड़े बड़े विद्वज्जन यहां विराजमान है मैं किन्ही को जानता हूं किन्ही को नहीं जानता हूं उन लोगों का भी प्रवचन यहां सुनने का आपको शुभ अवसर यहां पर मिल रहा है इस अवसर पर मैं इन्ही शब्दों के साथ आप लोगों से विदा लेता हूं इन टूटे फूटे शब्दों को समाप्त करता हूँ। **जय श्री राधे।**

नेपाल नरेश के सन्देश का वाचन

डा. खेमराज केशवशरण शास्त्री द्वारा:-

मैं हमारे विश्व के एक मात्र हिन्दू नरेश वेद के पावन मंत्रो के द्वारा अभिषिक्त होकर सिंहासनारूढ़ होने वाले नरेश श्री पांच ज्ञानेद्रवीरविक्रम शाह देव उनका जो संदेश प्राप्त हुआ है वह मैं आपके समक्ष पढ़ करके सुनाता हूँ - मित्रराष्ट्र भारत के जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्क तीर्थ सलेमाबाद, अजमेर में, अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन होने जा रहा है। यह जानकारी प्राप्त होने पर हमें बहुत खुशी हुई है। कार्य वश हम इस सम्मेलन में उपस्थित होने मे असमर्थ हैं। निमन्त्रण के लिए श्री आचार्य चरण एवं उनके अनुगामी आयोजक वर्ग के प्रति हम हार्दिक धन्यवाद देना चाहते हैं। वैदिक सनातन धर्म अनादिकाल से मानव जाति के कल्याण एवं समाज के हित के प्रति सेवा में बनाकर समर्पित रहता आया है। विश्व ब्रह्मांड का रहस्य एवं पारमार्थिक शक्ति का उद्घाटन करने में इस धर्म के मनीषियों ने जो योगदान प्रदान किया है जो ज्ञान दिया उसके आलोक में मानव समाज युगों से लाभान्वित बनता आ रहा है, यह सर्वविदित तथ्य है। पारस्परिक सद्भाव करना मैत्री, प्रेम, और समन्वय, सनातन धर्म के वह उच्च विशेष गुण हैं, विशेषतायें हैं जिनसे मानव के जीवन पद्धति के रूप में शान्ति, अनुशासन एवं सच्चरित्रता को अपने जीवन मे विकसित करने में मदद पहुंचती है। वास्तव में धर्म जो कहा जाता हे वह भी पर्याय के रूप में कहें तो अनुशासन,

नियम एवं मर्यादा ही है। इसके पालन से समाज सदैव अनुशासित एवं मर्यादित रहता है। इसी भावना में "**धर्म एव हतोहन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः**" कहकर हमारे शास्त्रों ने इसको बल दिया है। हिन्दू अधिराज्य नेपाल सनातन धर्म के आदर्शों एवं जीवन मूल्यों के पालन के प्रति अर्पित एक शान्तिकामी राष्ट्र है। "**वसुधैव कुटुम्बकम्**" की भावना से ओत-प्रोत सनातन हिन्दू धर्म, सर्वजन सुखाय सर्वजन हिताय के इस पावन आदर्श के प्रति सदा अग्रसर रहा है और रहेगा ऐसा हमारा विश्वास है। अन्त में इस सम्मेलन के द्वारा सनातन हिन्दू धर्म का आदर्श और उसके अनुकूल विश्वशांति एवं मानव कल्याणकारी कार्यों में सदैव अग्रसर बनने के लिये यह सम्मेलन सभी को मंगलमय प्रेरणा दे सके। यही हमारी हार्दिक शुभ कामना है। भगवान श्री पशुपतिनाथ हम सबका कल्याण करें।

श्री हरिशरण उपाध्यायः- पूर्व प्राचार्य, श्री निम्बार्क संस्कृत आचार्य महाविद्यालय, (वृदावन)

प्रातः स्मरणीय श्री निम्बार्काचार्य चरण, वन्दनीय श्री रामानन्दाचार्य चरण, परमपूज्य संत भगवान् अन्य उपस्थित विद्वत् मण्डली और मंत्रिमण्डल-आज का विषय है संस्कृत और संस्कृति, भारत का प्राण क्या है बताया गया है कि "संस्कृतम् संस्कृतिश्च भारतस्यद्वे प्रतिष्ठे", भारत की दो प्रतिष्ठायें है संस्कृत भाषा और संस्कृति। अगर संस्कृति न हो न रहे और संस्कृत भाषा न रहे तो भारत की प्रतिष्ठा नहीं रहेगी। भारत का प्राण चला जाएगा, भारत सुस्त रह जायेगा, इसलिए संस्कृत भाषा का महत्व बताया गया है। मनु ने कहा है "**आदौ वेदमयी**" सबसे पहले जब मरीची आदि दस ऋषि उत्पन्न हुये और मनु इनकी परस्पर की जो भाषा थी वे संस्कृत बोला करते थे तो इसका मतलब है कि विश्व में जो मानव जाति है तो उसकी मूल भाषा संस्कृत भाषा है इसलिए संस्कृत का महत्व है और संस्कृत भाषा के द्वारा ही हमारी संस्कृति क्या है, हमारी आचार संहिता क्या है, मनुष्यों का कर्त्तव्य क्या है और मनुष्यों को कैसे क्या करना चाहिय ये सम्पूर्ण सांगोपांग वर्णन हम संस्कृत भाषा में पाते है इसलिए संस्कृत भाषा का महत्व हैं। हमको सिखाया है संस्कृत भाषा ने, कैसे सोना चाहिए, कैसे उठना चाहिए, कैसे भोजन करना चाहिये। आप छादोग्योपनिषद् उठाकर देंखेगे हमारे यहां पहले ये संस्कृति थी यह परम्परा थी पहले जो है पाँच प्राणों को पंच आहुति दी जाती थी और आहुतियों का क्या फल होता था छादोग्योपनिषद् उठा कर देखिए उसका बड़ा महत्वपूर्ण विधान हैं। आज हम लोग उस बात को भूल रहे है। संस्कृति क्या है, उसकी आचार संहिता क्या है, परम्परा क्या है, कैसे उठना चाहिये, कैसे बैठना चाहिए, कैसे बोलना चाहिए, किससे कैसे व्यवहार करना चाहिए यह जो सिखाने वाली यदि संसार में कोई भाषा है तो वह हमारी संस्कृत भाषा है। और संस्कृत भाषा में ही हम सब कुछ पाते है। संस्कृत भाषा यदि न हो तो भारत का प्राण चला जायेगा इसलिए संस्कृत भाषा का महत्व है। कहा जाता कि आज संस्कृत भाषा मृत भाषा है और दीनहीनों की भाषा है इसलिये इसको अलग कर दिया है। आज हमारी संस्कृति संस्कृत के भूल जाने से बहुत दूर होती जा रही है। हमारी परम्परायें खत्म होती जा रही जैसा कि अभी कहा जा रहा था कि हमको **परोपकाराय पुण्याय पापाय पर पीडनम्** उपदेश देने वाले हमारे वेदव्यासजी ने कहा था कि जो महाभारत में है वहअन्यत्र कहीं हैं और जो महाभारत में नहीं है वो अन्यत्र कहीं हो ही नहीं सकती, तो महाभारत की जो प्रतिष्ठा थी हमारी संस्कृत कि जो प्रतिष्ठा थी, बीच में किसी ने उद्घोष किया था "यदि संस्कृत है तो भारत है और संस्कृत रहे तो संस्कृति रहे" इसलिए हमारे यहां यह कहा गया है

कि संस्कृत भाषा जो है- भारत की एक प्राण है और संस्कृत भाषा के द्वारा संस्कृत होने वाली जो संस्कृति है वह मानव को बनाने वाली उसके आचार संहिता को सीखाने वाली है। कैसे प्रातःकाल में उठना चाहिए। वेद का उद्घोष है **''उत्तिष्ठित जाग्रत प्राप्यवरान्निबोधत ''** उठो जागो। विद्वानों आचार्यो का संग करो और उनसे समझो अपने संस्कार क्या है, अपनी आचार संहिता क्या है, अपनी शिक्षा क्या है, अपना कर्त्तव्य क्या है इनसे सीखो। यह सीखने की प्रवृत्ति जो आज खत्म हो चुकी है, इसलिए मानव आज खतरे में पड़ रहा है यह चरित्र था आप इतिहास उठाकर के देखेंगे जो संस्कृत विद्वान् थे आप चाणक्य को देखेंगे वो एक संस्कृत विद्वान थे शायद वो किसी राजा के मंत्री थे, हिमाद्री थे वो किसी राजा के मंत्री थे और यह जो संस्कृत पढ़ने वाले राज्यों का संचालन करते थे और राज्य की भावना को वो समझते थे। संस्कृत विद्वान् सेनापति हो सकता है, संस्कृत का विद्वान् सम्पूर्ण दण्ड का नेतृत्व कर सकता है और संस्कृत का विद्वान् एक सर्वलोक का अधिपत्य कर सकता है। पहले इन्हीं विद्वानो द्वारा निर्दिष्ट राजनीतिज्ञों को हमारे लोग चलाया करते थे। इसलिए उस समय की संस्कृति बहुत पवित्र थी आप को मैं बताऊं जब चीनी यात्री ''ह्वेनसांग'' भारत आया, भारत का भ्रमण किया अनेक धर्माचार्यों अनेक मठ-मंदिरो में गया विद्वानों के पास गया। एक दिन सांयकाल वो गया चाणक्य के पास सांयकाल का समय था तो चाणक्य बत्ती जला करके कुटियां में कुछ लिख रहे थे संध्या हो गयी और ''ह्वेनसांग'' वहां पर पहुंचा, उनके आते ही उसने प्रणाम किया। प्रणाम करने के बाद चाणक्य ने पहले जलायी हुई बत्ती को बुझा दिया और दियसलाई से दूसरी बत्ती उसने जला दिया। ह्वेनसांग ने पूछा चाणक्य से बाद में तो और बात करेगें। मेरे आते ही आपने यह एक बत्ती को तो बुझा दिया और दूसरी बत्ती जलाई इसका कारण क्या है। तो कहा कि अब तक मैं जो सरकारी काम कर रहा था सरकारी पैसे से खरीदे तेल को मैं जला रहा था और अब मैं जो आपसे बातचीत करूंगा मेरे पारिश्रमिक के जो पैसे है उनसे खरीदा गया तेल में जलाउंगा। मैं राज्य कोष का दुरूपयोग नहीं करता। यह आदर्श आज कहा है? अगर हम इतिहास को दुहराकर देखते हैं तो हम यह पाते हैं इस चरित्र को हम अपने जीवन में उतारते है तो भ्रष्टाचार होने की कहीं संभावना है? किसी प्रकार दुराचार होने की कहीं संभावना है? इस राजस्थान के चिम्मन लाल गोस्वामी जो राजस्थान के पहले एम.ए.करने वाले विद्वान् थे, जो गीता प्रेस के प्रधान संपादक थे, उनको पांच सौ रूपया वेतन मिलता था, उन्होंने कभी पूरा वेतन नहीं लिया। पेशाब करने जाते, समय दस मिनट लगा कि पांच मिनट लगा-कोई विद्वान आया उनसे बातचीत की और देखा कि कितने मिनट उसमें गये और उन मिनटो को घंटा करके जोड़ देते थे और हमने कितने घंटे काम किया उतना ही पैसा लेंगे कभी उन्होंने पांच सौ रूपया नही लिया है। यह चरित्र आज भारत में है यह चरित्र विश्व ने कहा से पाया।

पहली पाठाशाला बच्चों का अपना घर है माता की गोद है और प्रांगण है। वहीं पर आप अच्छी शिक्षा देते है वह प्रशिक्षित हो करके बाद में भारत के अच्छे नागरिक हो सकते है। लेकिन हमारी अंग्रेजियत भावुकता में बहकर के बच्चा कोई अंग्रेजी शब्द बोलता है तो हम खुश होते हैं। नेपाल में आज पांच-दस वर्ष पहले तो ऐसा नहीं था और अब ऐसा हो गया है घर में मां को मां न कह करके अम्मा बोलते है अम्मा न कह करके मम्मी, बाप को पिता न कह करके डैडी उसके बाद डेड हम कहे तो डैडी-डेड होते होते कहीं डैथ न हो जाये। और इनके बोलने से हम बहुत अंग्रेजी की भावुकता में आकर के बहुत प्रसन्न होते हैं। मां को मम्मी कहने वाले शब्द का मैंने काठमाण्डू में किसी से अर्थ

पूछा आप लोग लगा लीजिए उसका अर्थ क्या है? अपवित्र शब्द है वह। आपको अगर बच्चों को बनाना है तो अपने घर में भगवान् श्रीकृष्ण, भगवान् श्रीराम, गुरुवशिष्ठ विश्वामित्र जी बड़े बड़े जो धर्माचार्य उनका चित्र रखिए और उनको सुबह वन्दना कराइये। अत: शुरू से ही अपने प्रांगण को अपने आंगन को अपने घर को ही पाठशाला बनाये उसके बाद जो है आप आगे बढ़िये। प्रात:काल उठ करके हम कहते हैं कि **''कराग्रे वसति लक्ष्मी: करमध्ये सरस्वती''** आज कल कोई कहता है। मैं समझता हूं कि मारवाड़ी समाज कहते होगे लेकिन सार्वजनिक रूप में यह सब संस्कृति जो है हमारी लोप होती जा रही हैं। उन सब संस्कारो को उद्‌बोधन करना चाहिए यह कहां मिलेगा ये सब उपदेश कहां है। यह आप लोग टटोल कर देखेंगे तो संस्कृत भाषा में ही मिलेंगा। इसलिए संस्कृत और संस्कृति का ऐसा बेजोड़ सम्बन्ध है। यदि संस्कृत न रहे तो संस्कृति खत्म और संस्कृति खत्म होती है तो संस्कृत की तरफ कोई भी नहीं झांकेगा। इसलिए संस्कृत भाषा की प्रतिष्ठा संस्कृति की प्रतिष्ठा भारत के लिए विश्व के लिए बहुत जरूरी है। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अवकाश लेता हूं।

श्री प्रफुल्ल देव

(प्राध्यापक, एम.बी.ए. संस्थान, अहमदाबाद)

श्री ''श्रीजी'' महाराज को मेरा सादर प्रणाम तथा बैठे हुय विद्वानों को मेरा नमस्कार। मैं काफी साल फौज मे रहा पहले दिन जब फौज में गया था मैं तो दिवार पे एक वाक्य लिखा था। जो आज भी मेरे दिल में है और मैं उसको पढ़ सकता हूँ, मेरी आंखों के सामने है ये लिखा था- 'शान्ति के समय में अगर आप पसीना बहावोगे तो युद्ध के समय में खून कम बहेगा'। मैं इसमें थोड़ी बात करने आपसे जा रहा हूँ। ये मैनेजमैंट में मैं सिखाता हूँ एम.बी.ए. पढाता हूँ, पूरे देश में जाता हूँ, मुम्बई मैं काफी कॉलेजों में मैं सिखाता हूं एम.बी.ए. पढ़ाता हूं। एम.बी.ए. जब पढ़ाता हूँ तो पहला शब्द एम.बी.ए. के बारे में मेरे मन में आता है कि एम.बी.ए. क्या है मुझे बहुत से लोग पूछते है तो मेरी डेफीनेशन आज एम.बी.ए. की। एम.बी.ए. माने ''मारवाड़ी बाई ऐटीट्यूट''। ये सच है कि जब लड़का एम.बी.ए. हो जाता है तो अपना जीवन सम्भाल लेता है, लाख की नौकरी भी पा लेता है। अपनी पत्नी का अपने बच्चे का भला कर लेता है। लेकिन जब ''मारवाड़ी बाई एटीट्यूट'' आप बनते हो तो आप ''मनी मैनेजर'' नहीं रहते है आप ''मनीमेकर'' बन जाते है। आप एक इण्डस्ट्री की स्थापना करते हैं औरआप पचास आदमियों को नौकरी देते हैं। अगर आप पचास आदमियों को नौकरी देते हैं तो इनडाइरेक्टली आप इस देश में पचास आदमियों का भला करते हो। वह पचास आदमी काम पर लग जाते हैं तो बुरा काम नहीं करते हैं। अगर मनुष्य को काम मिलें उसको आनन्द हो और इनका जीवन चलता रहे, ऐसा एम.बी.ए. जीवन के लिए काम का है बजाय कि एम.बी.ए. हमारे मन में एक घमण्ड पैदाकर दे या हमारे मन में एक रोष पैदाकर दे या हम अपने आप को दूसरों से अलग समझने लगे। मुझे यह बड़ी खुशी है कि मैं उस एम.बी.ए. के बीच में हूँ जो एम.बी.ए. बचपन से ही है। और ये क्यों है क्यों कि अगर मैं बात कहने जाऊं आपको एक शब्द या एक सवाल पूछे कि जीवन में सिक्योरिटी जरूरी है या नहीं कहते हैं जरूरी है, मैं कहता हूं जीवन में सिक्योरिटी से ही सब प्राब्लम पैदा होते है। गरुकुल में पुराने जमानें में बच्चे को गरु ने आदेश दिया, पेड़ पर चढ़ जा। पेड़ बड़ा लम्बा था, पतला था, बच्चे को डर लग रहा था फिर भी चढ़ गया। उस जमाने में गुरु की गरिमा हुआ करती थी। जब बच्चा पेड़ पर चढ़ने लगा तो पेड़ हिलने लगा। बच्चे को डर लगने लगा तो उन्होंने विनती की गुरुदेव मैं उतर आऊं।

नहीं और चढ़ो चढ़ते रहो। पेड़ और हिलने लगा, बहुत हिलने लगा, अब बच्चे को बहुत डर लगने लगा। बोला गुरुदेव अब मैं उतर जाऊं, बोले नहीं और चढ़ो! अब बच्चे को बहुत डर लगने लगा कि गिर जाऊंगा बोले गुरुदेव अब मैं उतर जाऊं फिर गुरुदेव बोले ठीक है अब उतरजाओ। बच्चा उतरने लगा। दस फुट की दूरी रह गयी तो गुरु दौड़ते हुये आये और बताया कि बेटा ख्याल रखना गिर जायेगा। बच्चे को बड़ा गुस्सा आया कि ये गरुदेव क्या ढ़ोंगी है जब मेरे मरने के चान्स थे तब तो उन्होनें मेरी कोई फीकर नही की। अब पूछ रहे है कि बेटा गिर जायगा तब बोला गुरुदेव कोई जरूरत नहीं है मुझे आपकी, मैं अपने आप उतर जाऊंगा। बोले नही जब आदमी सिक्योरेटी में रहता है, तो गफलत में रहता है और वहीं उसका पतन शुरू होता है।

अगर मैं दूसरा उदाहरण दूँ। इस देश में सबसे महान आदमी कई पैदा हुये है, इसी देश में नहीं पूरे विश्व में तो सिर्फ यू.पी. बिहार में पैदा हुये है। मैं नाम गिनाता जाऊं- राम, कृष्ण, भरत, चाणक्य, चन्द्रगुप्त, अशोक, महावीर, बुद्ध, काफी नाम आप ले सकते हो ये सब यू.पी.बिहार में पैदा हुये। और गंगा की कोख से बनी हुई जमीन भगवान् ने सब कुछ दिया बिहार को माइन्स इतने मिलरल्स सब कुछ दिया। आज कहां है वह।

भगवान् ने मरुधरा को कुछ नहीं दिया और आज मरुधरा कहां पहुंच गई। यह ही मरुधरा का आदमी बाहर जाता है और एक इण्डस्ट्री खोलता है और पचास आदमी एम.बी.ए. को नौकरी देता है। और यह क्यों होता है? एक माध्यम से होता है यह माध्यम क्या है। मैं आप से बात कर रहा हूँ इसके हमारे गिरधर भाई माध्यम बने है हमें यहां पहुंचाने के लिए। अपने मन में कुछ अच्छी फीलिंग पैदा हो रही है। वह क्यो हो रही है एक छोटी सी बात है कि जीवन में जब आप क ख ग सीखते हैं तो उसको हम सीख सकते है शिक्षक हमको क ख ग सिखाता है उसके बाद में हमें कमल नयन वगैरह लिखाना सीखाता है उसको हम अध्यापक कहते हैं उसके बाद प्राध्यापक सैन्टैन्स लिखाता है उसके बाद आचार्य आता है कि इस सैन्टेन्स को हम जीवन में कैसे उपयोग करें यह बताना है। उसके बाद पण्डित आता है आपने जो सीखा उस से हम कैसे जीवन निर्वाह चलायें। लेकिन ये जीवन क्या है जीवन का उद्देश्य क्या है यह व्यक्ति को उसके गुरु सिखाते है अपने गुरु के माध्यम से हर चीज हर घटनायें जीवन में बनती है। मैं जब एक लैक्चर दे रहा था। मैं ब्राह्मण हूँ जन्म से कर्म से भी हूँ तो मुझे किसी ने कहा कि आप सब ब्राह्मण लोगो ने एकलव्य को मूर्ख बना के उसका अंगूठा ले लिया, आपने क्या किया। मैने बताया कि जब एकलव्य अपना पाठ पढ़ रहा था तो गरु द्रोणाचार्य की प्रतिमा उसके पास थी। इसको हम अंग्रेजी में ''कैडलिस्ट'' कहते है। ये आपकी कोई भी प्रक्रिया में भाग नहीं लेता है लेकिन उनका नाम स्मरण ही सिर्फ आपकी प्रक्रिया को तेज कर देता है तो यह गुरुदेव हैं जो आपकी प्रक्रिया को तेज कर देते हैं। ''फिलिप कोटलर'' नाम का एक आदमी है जिन्होंने अंग्रेजी में बुक लिखी है ''प्रिन्सीपल्स ऑफ मार्केटिंग'' वो कहते हैं कि मार्केटिंग करना है अगर आपको सफलता पाना है तो जीवन में चार पग की जरूर है। ''प्लेस ऑफ प्रमोशन्स'' खूब छानवीन की, खोज की। जीवन में बाकी चार पग की जरूरत है जो पाँच हजार साल पहले कृष्ण भगवान ने बताया था कुरूक्षेत्र में अर्जुन को वह चार पग है पहला पग है- प्यास लगनी चाहिये, प्यास लगी तो प्रयत्न हुआ, प्रयत्न हुआ तो प्राप्ति हुई, प्राप्ति हुई तो पूर्णता हुई। सांसारिक पूर्णता हो, आर्थिक पूर्णता हो, लेकिन पूर्णता जरूर चाहते हो। आध्यात्मिक पूर्णता जरूरी है लेकिन हमको प्यास नहीं लगती। मैं राजस्थान में लैक्चर की सीरीज पर था अशोक गहलोत साहब ने बुलाया था करीब चार पांच साल पहले एक

छोटे गांव से गुजर रहा था, बच्चे पानी बेचने आते हैं। ठण्डा पानी, ठण्डा पानी, ट्रेन में मेरे सहयात्री ने कहा, ऐ बच्चा इधर लाओं पानी, पानी का गिलास दो। फिर पूछा कितने पैसे का है बच्चे ने जवाब दिया पचास पैसा यह फिफ्टी पैसा सहयात्री ने सवाल दोहराया, बहुत मंहगा है, पच्चीस पैसे में दोगें। अक्सर हम जीवन में यह करते रहते है इसका बच्चें ने बहुत समझ से जवाब दिया जिनको प्यास लगी हैं पच्चीस पैसे की नहीं पूछते हैं। इस तरह जब प्यास जीवन में लग जाती है तो मोलतोल नहीं होता। हम गंगा का उदाहरण भी दे सकते है कि गंगा जब गंगोत्री से निकलती है, मन्द मन्द लहराती है उसको हम मन्दाक्रान्ता कहते हैं लेकिन जब विंध्याचल सामने आ जाता है तो शोर करके निकल जाती है, गर्जना करके निकल जाती है क्योंकि उसको गंगासागर जाने की प्यास लगी है। जीवन में कुछ नहीं हो सकता जब तक हमको प्यास नहीं लगती। उत्कृष्ट प्यास जब प्रहलाद को लगी, जब ध्रुव को लगी, तुलसीदास को लगी तब उनके जीवन में परिर्वतन आया, वहा है प्यास जरूरी है। उस प्यास के लिए एक पांचवा पग कृष्ण भगवान् ने बताया है कि अगर आप जीवन में दो घंटा सुखी होना चाहते हैं तो मन्दिर जाइये लेकिन आपको जीवन में सात-आठ घंटा सुखी होना है तो तफरी पर चले जाइये, घर से बाहर चले जाइये और अगर आप जीवन में सात आठ दिन सुखी होना चाहते है तो आप वैकेशन पर चले जाइये और यदि आप जीवन में तीन चार महीना सुखी होना चाहते है तो शादी कर लीजिए। लेकिन जीवन में जब तक सांस चले तब तक सुखी होना चाहते है तो अपने कर्म व प्रभु से प्यार करना सीख लीजिए। प्रेम बहुत जरूरी है और अहम चीज है। आप सबके जीवन में प्रेम बना रहे प्यार बना रहे प्यास बनी रहे। गुरुदेव के चरणो से आशीर्वाद मिलता रहे ऐसी मेरी कामना है।

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्री हर्याचार्यजी महाराज :-

परमाध्यक्ष श्रीराधाकृष्णजी समर्चनीय, वीतराग तपोनिष्ठ श्री श्रीजी महाराज, समर्चनीय वन्दनीय संत वृन्द, विद्वद् वृन्द, सुहृदवृन्द, सज्जनवृन्द तथा देवियों- अभी आप अनेक विद्वानों के द्वारा संस्कृत व संस्कृति की चर्चा सुन रहे थे। अपने जीवन दर्शन के बारे मे कुछ जानना चाहते हैं। अध्यात्म के बारे कुछ जानना चाहते हैं,सृष्टि के बारे कुछ जानना चाहते हैं तब हम संस्कृत की ही शरण ग्रहण करते हैं। संस्कृत में हमारे जीवन के वह संस्कार है जो हमें मानवता से देवत्व की ओर ले जाते है। इसलिए संस्कृत भाषा सब भाषाओं की जननी है। सभी भाषाओं में संस्कृत का मूल आपको प्राप्त हो जायेगा। जितनी भाषायें आज प्रचलित हैं उन सब में संस्कृत भाषा का मूल आपको मिलेगा सबकी संस्कृत ही आत्मा है। आत्मा पर चाहे कितनी धूल जम जाये चाहे, जितनी काई पड जाए लेकिन प्रकाश प्रकाश होता है इसको झूठलाया नहीं जा सकता है। स्वामी विवेकानंद जब विदेश गये थे तो वहां के विद्यार्थियों ने उनसे अपना पुस्तकालय देखने को कहा। स्वामी जी ने देखा सारे धर्म ग्रन्थो के नीचे गीता रखी है। स्वामीजी ने कहा ''ओ माई स्वीट चाइल्ड'' मेरे मधुर बच्चों आज तुमने सिद्ध कर दिया कि विश्व के समग्र धर्मो का जो नीवं है वह भगवद् गीता है। जिस दिन गीता नही रहेगी उस दिन विश्व का कोई धर्म स्थिर नहीं रहेगा। दूसरे दिन फिर मजाक किया लड़को ने, स्वामी जी से पुस्तकाल में आज देखना चाहेगें कहें ''यश यश'' ले गये। दूसरे दिन गीता को सभी धर्म ग्रन्थो के बीच रख दिया। स्वामीजी ने पूछा ''वेहर इज माई गीता टूडे'' आज मेरी गीता कहां है। लड़को ने कहा! महाराज सभी धर्म ग्रन्थों के बीच में आज गीता रखी हुई है, अब आप क्या कहेंगे,

स्वामी विवेकानंद ने कहा ''माई स्वीट चाल्डस'' मेरे मधुर बच्चों आज तुमने यह सिद्ध कर दिया कि विश्व के समग्र धर्मो का जो हृदय है वो भगवद्गीता है। जिस धर्म का हृदय नहीं रहेगा वह धर्म संसार में स्थायी नहीं रह सकता। तीसरे दिन बच्चों ने फिर मजाक किया, स्वामीजी से और अपने पुस्तकालय में ले गये-कहें स्वामीजी आज आपकी गीता सभी विश्व के धर्म ग्रन्थों के ऊपर रख दी गई है। सर आप क्या कहेंगे स्वामी जी ने कहा ''माई स्वीट् चाइल्स'' आज तुमने यह सिद्ध कर दिया, विश्व के धर्म ग्रन्थों का मस्तिष्क हमारी भगवद् गीता है जिसका मस्तिष्क नहीं रहेगा उसका धर्म स्थायी नहीं रहेगा। ये मेरी संस्कृति है जो आत्मा से ध्वनित होती है, इसका ध्वनन सुनाई भले न पड़े लेकिन ये सत्य है सत्य को सदा पकडे रहिये। कितने विधर्मी इस देश में आये पर आज भी यहां जन्म जयन्ती महापुरुषों की हो रही है। गीता श्रीमद्भागवत वेद पुराण आदि शास्त्र यहां आज भी है यह हमारी संस्कृति की सत्यता व शाश्वतता का परिचायक है। यदि संस्कृति नहीं होती तो आज ये सब नहीं हो सकते थे इसलिए यह स्पष्ट है कि संस्कृति हमारी आत्मा है आत्मा की जो ध्वनी होती है।

सभ्यता तो दिनभर में आप पच्चीस बार बदल दीजिए, कभी पगडी बांध लीजिए, कभी मूछें रख लीजिए, कभी छिलवा लीजिए, कभी पूरा मुण्डन करा लिजिए, कभी अण्डर वियर पहन लीजिए, कभी पेन्ट पहन लीजिए, कभी गमछा पहन लीजिए, कभी धोती पहन लीजिए, यह सब सभ्यता है। जो दिन भर में, रात भर में, दस बीस बार आप बदल सकते है। लेकिन संस्कृति जो है हमारा हृदय है, हमारी आत्मा है समझ लीजिए मातापिता है, हमारी आचार्य है। इनको बदला नहीं जा सकता इनके चरणों में प्रणीपात पूर्वक कुछ जिज्ञासा किया जा सकता है जानने का। वह संस्कृति भारत में आज भी निवसित है।

हमसे लोग कहते हैं- महाराज आपके यहां बहुत देववाद है। हम कहे इसलिए हमारे यहां बहुदेववाद है कि एक व्यक्ति अगर किसी देवता का खण्डन करदे तो दूसरा कहेंगा हम इनको मानते है तीसरा कहेगा हम इनको मानते है। यह हमारी तैतीस करोड भावनाएं जो है यह हमारा बहुदेववाद है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति पर इतने आघात हुये विद्यर्मियों के, इतने आक्रमण हुये, हमारे शास्त्रों में लिखवा करके बहुत अनर्गल बाते डाली गयी, लेकिन आज भी भारतीय संस्कृति अपनी अस्मिता को लिए हुये, अपनी दया, करुँणा, प्रेम परोपकार को लिये हुये इस देश की भूमि में खड़ी है इसका कारण यह बहुदेववाद है। एक बार कह दे कोई जहां एक देव की बात है, आपको कह दे कि मोहम्मद नहीं है तो इस्लाम उसी दिन खत्म हो जायेगा, जो जैनिष्ठ कह दे कि जिन नहीं है तो उसी दिन धर्म खत्म, बौद्ध कह दे की बुद्ध नहीं है तो उसी दिन वह खत्म शाक्त कह दें कि शक्ति नही है उसी दिन शाक्त सम्प्रदाय समाप्त लेकिन सनातन धर्म में आप कह दीजिये कि इस देवता को मैं नहीं मानता, तुम नहीं मानते तो क्या मैं इस देवता को मानता हूँ यह तैतीस करोड भावनाएं है जो आज तक हमारे दिव्य शक्ति को भारत की मिट्टी में पिरोये हुए है। वह नहीं निकल सकती।

वेद शास्त्र पुराण ये सब संस्कृत में है भारत के बारे में कोई कुछ जानना चाहेगा, अपने माता-पिता के बारे मे कोई कुछ जानना चाहेगा भाषा के बारे में कोई जानना चाहेगा तो उसको संस्कृत भाषा का ही शरण ग्रहण करना पडेगा। वास्तव में यह प्रकृति भाषा है प्राकृति से आई हुई। संस्कृत में हमारे जीवन अभ्युदय कराने वाले संस्कार है, वह संस्कार जो हमें समय समय पर संशोंधित करते रहे हैं। इसलिए शास्त्रकार यही कहते है कि **''अंङ्गीकृताः कोटिविधाश्चभाषा नांङ्गीकृतादेव गिरा च अन्या न शोभते तस्य मुखारविन्दं सिन्दूर विन्दू विधवा ललाटे''** जैसे विधवा के ललाट में सिन्दूर

सुशोभित नहीं होता। आप पचास भाषा पढ़ गये है लेकिन देवभाषा का जो संस्कार होगा वह अलग ही अपना परिचय देता रहेगा। यही इसके संस्कार का वैशिष्ट है इसलिये इसको देवगिरा कहा जाता है, गीर्वाण वाणी कहा जाता है देवभाषा कहा जाता है। वैसे मानों जीवन एक पाठाशाला है जहां पर व्यक्ति जीवन पर्यन्त कुछ न कुछ सीखता है। लेकिन सभी भाषा पढ़ने के बाद यदि देव गिरा जिसने अध्ययन नहीं किया उसका सब पढ़ना लिखना हमारे समझ से निरर्थक है क्योंकि उसमें संस्कार तो उद्भूत ही नहीं हुये। भारतीय मांटी का जो सोंध है वह संस्कृत में निवास करता है। जब तक ये नहीं पढी गई तब तक सभी भाषायें पढ़ना बेकार हैं। यद्यपि पुत्रनाभि से तथा ''**यद्यपि बहुना धीषे तथापि पठ पुत्र व्याकरणम् स्वजनःवजनोमाभूत् सकलं शकलं -सकृच्छकृत्।।** '' स्वजन- शकृत में अन्तर कर सको, इसका ज्ञान आपको हो सके यह कैसे आप जानेंगे ''शकृत में जो तालव्य शकार है और सकृव में जो दन्त सकार है बीस भाषा का विद्वान हो अन्तर नहीं दिखा सकता है कि इसमें क्या अन्तर है। एक का अर्थ ''एक बार'' होता है और एक का अर्थ ''विष्टा:'' होता है। सकार का प्रयोग दोनों में है लेकिन अगर संस्कृत को पढ़ा हुआ है तो वह बतायेगा ''कि सकृत्'' और ''शकृत'' में कुछ अन्तर अवश्य है वास्तव में संस्कृत वह भाषा है जो हमारे संस्कृति को दृढ करती है ''**भारते भातु भारती**'' हामरी युवा भारती भारत में सदादैदीप्यमान रहे यह मेरी भावना है। हमारी संस्कृति तब दृढ होगी जब हम संस्कृत भाषा के पण्डित होगे और संस्कार हमारे सम्पन्न होगे तभी हमारी संस्कृत और हमारी संस्कृति की सुरक्षा हो सकती है। आज भाषा और विद्या के नाम से यदि कोई जाना जाता है (भले आज न माने लोग, विज्ञान युग कहें) लेकिन विद्वान् का तात्पर्य आज भी हमारी संस्कृत भाषा से है। और कोई भाषा नहीं संस्कृत भाषा ये देव भाषा है और इस भाषा के अध्ययन करने पर हममें देवत्व आता है, उससे आचरण आता है, हममें सोचने की क्षमता आती है न, इसलिए संस्कृत भाषा हमारी वह भाषा है जो हमारी संस्कृति को सदा ऐडवाईज किया है सदा दृढ किया है दृढता प्रदान किया है। इसलिए इसकी रक्षा आज करना बहुत आवश्यक है। बहुत लोग यह कहते रहे, संस्कृत अब भारत में रही नहीं, जाएगी। इसका परिचय नहीं रह जायेगा। लेकिन जिस दिन संस्कृत नहीं होगी आपसे पूछा जाए कि आप भारतीय कैसे हैं तो आप क्या परिचय देगें। किस चीज में आप भारतीय हैं ? आपके क्या संस्कार हैं तो आपको वेद भगवान् की छाया में छिपना पडेगा। आपको अपने संस्कार बताने पडेंगे। षोडश संस्कार की परम्परा केवल हमारे सनातन धर्म में है और संसार में कहीं नहीं है इसलिए संस्कृत भाषा हमे संस्कार देती है, हमको देवत्व देती है, हमको सोचने की क्षमता देती है और वह वन में रह कर जो वेद के चार भाग है संहिता, भाष्य, आरण्य, ब्राह्मण ये चारों भाग में संस्कृत भाषा अभिव्याप्त है। इसका यदि ज्ञान करना हो तो हम कैसे करें? यह संस्कृत भाषा ही बतलायेगी, हम दान कैसे करे संस्कृत भाषा बतलायेगी।

हमारा जन्म हुआ तो हम कैंसे जन्मजात जातक का संस्कार करें यह संस्कृत भाषा हमें बतायेगी। पहले जन्म होता था बच्चे का तो पुरोहित या गुरु या विद्वान् आते थे और मधुपर्क कराते थे, ये मध्यमा ऊंगली से शहद में डूबो करके और जातक बच्चें का मुख खोलकर उस पर ''ॐ'' लिख देते थे। यह हमारे संस्कार है प्यारे, आज इन बच्चों को रमिंग कराया जाता है, रमिंग की जो संस्कृति है वह भौतिकता की ओर हमें ले जा रही है लेकिन जो ''ॐ'' हमारा संस्कार है वह बच्चों का प्रिय भाषी होता था, वह विद्वान् होता था, वह नम्र होता था और माता, पिता, गुरु, देवता, भूमि, राष्ट्र ये सबके प्रति

निष्ठा और प्रेम उसमें होता था क्योकि उसके संस्कार ''ॐ'' से प्रारम्भ होते थे। आज हमारा संस्कार ''रम'' से प्रारम्भ हो गया। आज जैसे साइकिल का ओवर हॉलिंग करा दो, मोटर का ओवर हॉलिंग करा दो ऐसे आज मनुष्य कभी डाक्टरी में ओवरहॉलिग होता है। हम कहें एक व्यक्ति से भाई ''रमिंग'' क्या होता है उसने कहा महाराज जच्चा बच्चा को शराब से स्नान कराया जाता है तो यह पाश्चात्य संस्कार है। वह हमको उधर ले जायेगे इसलिए इनसे बचकर के आज भी हमको संस्कृति की रक्षा करने के लिए संस्कृत भाषा का अध्ययन अध्यापन, उसका संरक्षण अत्यन्त आवश्यक है, इसके प्रति हम समर्पित हो तो वास्तव में हमें पूर्ण ज्ञान और उसका विकास प्राप्त होगा।

डा. श्री मनुदेवभट्टाचार्य

(वाराणसी)

पूज्य पाद आचार्य श्री चरण, युवराजश्री उपस्थित विद्वानों, सभा संचालको- आप लोगों का आदेश हो तो मैं हिन्दी में ही बोलू- दो प्रसंग आये है जिनको मैं प्रश्न के रूप में कह रहा हूँ- क्योंकि हमारे शास्त्र से सम्बन्धित है इसलिए यहां उसके ऊपर विचार हो जाय, एक मिनट की बात है हमको भी जल्दी है महाराज श्री का आशीर्वाद लेने की। कल ये प्रसंग आया था कि भारत के तैंतीस कोटि देवता कौन हैं शायद आज भी कहीं कुछ ऐसा आया होगा, मै भी श्रोता बनके बैठा था बड़ा आनन्द आ रहा था उस समय। कई लोगों ने मुझसे पूछा गरुजी यह क्या होते है तैतीस कोटि देवता इसकी लिस्ट कहां पर है। एक भाई साहब ने बडा अच्छा मनोरम प्रश्न किया। बताया कि एकलव्यजी गरुजी की मूर्ति स्थापित करके ही धनुविज्ञ हो गये थे। माने कहीं पर कोई आश्रय नहीं प्राय: ऐसा लोग पूछते रहते हैं जहां हमारे जैसे धोती कुरता वाले शिखा सूत्रधारी पहुंच जाते हैं वहां ऐसे लोग पूछते हैं, ये टोपी क्यों ये जनेउ क्यों, ये शिखा क्यों, साधु क्यो, तर्पण क्यों, यह है वो है सो, माताजी का शेर सवारी है इसका क्या मतलब है किसी का चुहा सवारी है, इसका क्या मतलब है। पूछते रहना चाहिए, न पूछने वाले तो नपुसंक हैं लेकिन जिज्ञासु बनके पूछिये आक्षेप मत करिये। सज्जनों तैंतीस करोड़ देवता कौन है, ये शायद आपको भी जिज्ञासा हो और न भी जिज्ञासा हो तो भी सुन लीजिये। हमारे शास्त्रों में जहां जहां ये प्रसंग आया है वहां पर **''त्रयस्त्रिंशत् कोटी''**ये शब्द आया है, आप लोग चाहें नोट कर सकते हैं। कोई प्रत्रकार भाई हो नोट कर लिजियेगा, मैं हस्ताक्षर कर दुंगा। **''त्रयस् त्रिंशत् कोटी''** यह शब्द यह हमारे साहित्य में नही है, कोटि शब्द कोटी का अर्थ में है कटधरा, मतलब ''प्रकार'' अर्थ में है। माने शास्त्र के अनुसार तैंतीस करोड़ संख्या तो बहुत कम है ब्राह्मण वाक्य का अध्ययन करिये देवता तो अनंत हैं लेकिन वो कितने भी अनन्त हो वह तैंतीस कटघरे में आ जाते है यह तैतीस कोटी है देवताओं, की माने आज के भाषा के कटधरा कहेंगे या क्या (प्रकार) कहेंगे जो समझ लीजिये। तैंतीस प्रकार है, तैंतीस स्टैण्डर्ड है, तैंतीस ढ़ग के देवता है बस यही तात्पर्य है कोटि शब्द पर भ्रम है। और तैंतीस कौन है आप चाहें तो वह भी बता दूँ बहुत सरल बात है, लेकिन आपकी जिज्ञासा जरूर होगी वह आप लोग गिन लीजियेगा कॉपी लेके, बारह आदित्य, ग्यारह रूद्र, अष्ट वसु और अश्वनी कुमार द्वै, गिन लीजिये ये तैंतीस हो गये। अनन्त कोटि देवता है लेकिन तैंतीस कोटि में आते है हमारे **त्रिदेव ब्रह्म, विष्णु, महेश** इसी कोटी में आते है। भगवान शंकर एकादश रूद्र के अन्तर्गत है विष्णु जो है वासु के अन्तर्गत हैं इसी कोटी में सब, जैसे प्रधामंत्री भी होता है तो संसद के किसी सदस्य में होता है न, वो भी सांसद है जो प्रधानमंत्री, गृहमंत्री होता हैं सांसद की कोटी में आता हैं। ठीक उसी प्रकार है देवताओं की

तैंतीस कोटियां है। अनन्त कोटि देवता हो, हर्जा नहीं है और अनन्त कोटि देवता हैं।

एक दूसरा प्रश्न भाई साहब ने बड़ा अच्छा उठाया एकलव्य वाली बात। आपने तो बड़ा अच्छा प्रसंग कहा लेकिन यह भी एक आक्षेप के रूप में कहा जाता है। मैं आपके लिये नहीं कह रहा हूँ इसको ''ऐज ए सब्जेक्ट'' हम कह रहे है आपने तो बड़ा अच्छा प्रसंग उठाया। एक आक्षेप है कि द्रोणाचार्य जी ने एकलव्य को नहीं पढ़ाया लिखाया। आक्षेप का सीधा तात्पर्य बना कि आश्रम में पण्डित जी ने हरिजन को नहीं पढ़ाया आजकल की भाषा में। चूंकि एकलव्य जी ब्रह्मण भी नही थे, क्षत्री भी नही थे, और वैश्य जी भी नहीं थे, जनेऊ नहीं पहनते थे, चोटी नही बांधते थे, पण्डित जी को शायद दक्षिणा भी नहीं देते थे जो कुछ भी हो उन्हें नही पढाया अथवा राजतन्त्र के वैभव के कारण नहीं पढ़ाया। एकलव्य वाली घटना आज का अध्ययन करिये, दुनियां में किसी देशमें ''मिलिट्री साइंस'' आपको नहीं पढ़ाया जाता है। कोई समाजवादी, साम्यवादी, एकात्मवादी और जगत हितैषीवादी आ के कह दे कि हमारे देश में ''मिलिट्री साइंस ऑपन्ली'' सबको पढ़ाया जाता है कोई बोल सकता है। आज तक दुनियां में कोई ऐसा देश नहीं हुआ जो यह कह सके कि ''मिलिट्री साइंस'' सबको ''ऑपन्ली'' पढ़ाया जाता है, नहीं होता कहीं भी, आज भी नहीं होता। आज भी देखिये, उसको आक्षेप के रूप में मत लीजिये व्यवहारी दृष्टि है आज भी मिलिट्री सेवा में जातिवाद काल जैसे पंजाब रैजीमेन्ट, जाट रैजीमेन्ट बंगाल ये हैं। आखिर वह व्यवस्था के अन्तर्गत है वह आक्षेप नहीं है। सज्जनों उस समय भी जो द्रोणाचार्य जी मिलिट्री सांइस वाला कॉलेज था आज की भाषा में वह केवल ''रॉयल फैमिली'' के लिए था वह भीष्म ने स्वयं अपने विशेषाधिकार से सौ पुत्र धृतराष्ट के और पाँच पुत्र पांण्डवो के, इनके लिए बनया था उसको। ''रॉयल फैमिली'' के कॉलेज को छोड दीजिये, साधारण गांव की पाठशाला में जिसका प्रवेश नहीं हुआ है और वह घुस जाय, और गरुजी से कहे पढ़ाओ हमको, तो कैसा सत्कार होगा उसका। अरे विद्यालय को छोडिये, मान लीजिये गांव के दो चार आठ दस लड़के आपस में कबड्डी खेल रहे हैं आपस में दो दल बना के और दो दल में जितने लड़के है आठ दस उसमें कोई बाहरी लड़का घुस जाय तो, क्या सत्कार होगा उसका । ये तो उस समय का समाज बहुत अच्छा था कि ''रॉयल फैमिली'' का कॉलेज वो भी जो उन्ही के लिए बनाया गया था पाण्डवों और कौरवों के अतिरिक्त किसी का उसमें अधिकार नहीं था, सौ कौरव पांच पाण्डव और प्रिन्सीपल कोटा में अश्वस्थामा वहां पढ़ते थे बस, उसमें एकलव्य जी घुस गये और उनको तुरन्त अरैस्ट नहीं कर लिया गया। यह तो बहुत अच्छा समय व समाज था उस समय। साक्षत् दिल्ली दरबार पवार के द्वारा स्थापित मिलिट्री साइसंके विद्यालय में कोई एक अन्य घुस जाये और बिना ''अरैस्ट'' हो के बाहर निकल आवे आज की राजनीति में सम्भव है। जरा कल्पना करिये अरे, आज तो पुलिस लाइन में घुस जाइये, महाराज उसका अच्छे से अच्छा सत्कार हो जायगा तुरंत, तो इसलिए जो लोग आक्षेप करते हैं वह आक्षेप करना बड़ा आसान है लेकिन दुनियाँ के किसी देश में किसी विद्यालय में ऐसा नहीं होगा वह तो ''रॉयल फैमिली'' का कॉलेज था। वह उन्हीं लोगों के लिये बनाया गया था। महाराज श्री का दरबार है यहाँ पर कोई भी प्रश्न जो है असमाहित होकर नहीं कहना चाहिये इसीलिए मैंने उसको निवेदन कर दिया।

अब ये बात संस्कृत-संस्कृति के ऊपर आई मैं एक बात कह दूं इस समस्या से मैं स्वयं ग्रस्त हूँ। एक संस्कृत का छोटा मोटा अध्यापक होने के कारण आज हमको तमाम जगह यह उत्तर देना पड़ता है। संस्कृत

क्यों पढ़ाया जाय? हमारी तो जीविका संस्कृत। मैंने अपनी मंद बुद्धि से इसका अध्ययन किया तो मैंने पाया। आज व्यक्ति का मस्तिष्क व जनता की चाह है वह यही है कि अपने लड़के को अधिक से अधिक जो है टेक्नीकल मिल जाय टैक्नीकल माइन्ड हो जाय, जिससे आजकल के दुनियाँ के लायक हो जाय, उसके टक्कर में हो जाय, उससे अधिक नहीं तो कम से कम उसके बराबरी में तो हो जायेगे। आज कल के शिक्षा प्रेमी कहिये या शिक्षा दिलाने वाले अभिभावक हैं उनका यह मस्तिष्क है ये उनकी एक चाह है। अरे सबकी बात सुनना चाहिये न भाई। संस्कृत को चाहें हम इतना बोलते रहते हैं। संस्कृत हैं तो संस्कृति है ये सब तो अच्छी अच्छी बातें है, यह सब तो संस्कृत को मानने के बाद की सब बातें है। संस्कृत में हमारी परम्परा है, लेकिन संस्कृत को ही क्यों माना जाय? यह कोई प्रश्न भर दे और उसमें जो उनकी वेदना आ रही है कि संस्कृत में ऐसा मैटर आना चाहिये जो संस्कृत पढ़ते हैं लोग। टैक्नीकल विज्ञ टैक्नीकल माइन्ड के हो जाये। इस पर बहुत गोष्ठियाँ हुई है इस पर बहुत विचार हुये हैं। मैं संक्षेप में कह दूँ। संस्कृत आप वर्तमान संस्कृत समाज संस्कृत शिक्षा केन्द्र और संस्कृत शिक्षा बोर्ड इत्यादि को देख करके आप परिपूर्ण संस्कृत विद्या मत समझिये। वर्तमान संस्कृत शिक्षा में कोई टैक्नीकल विषय का अध्ययन नहीं होता यह अवश्य दुःख का विषय है लेकिन संस्कृत में टैक्नीकल मैटर है नहीं यह हमारी अज्ञानता है। क्यों कि संस्कृत में वेद वाङ्मय है जो बहुत बड़ा है जिसके ऊपर सब लोग बोलते हैं लेकिन संस्कृत में वेद के साथ-साथ उपवेद भी हैं। उसमें पूरा उपवेद साहित्य टैक्नीकल है, चाहे धनुर्वेद या मिलिट्री साइंस हो, चाहे स्थापत्य कला हो स्थापत्य वेद हो चाहे गन्धर्व वेद हो चाहे आयुर्वेद हो। अयुर्वेद तो टैक्नीकल हैं बस दुःख इसी बात का है कि हम संस्कृत की पूर्णता को संस्कृत के नाम पर नहीं परोसपाते। इस विषय में एक थोड़ा सा दृष्टांत कह दूँ। दुनिया यह जानती है, सज्जनों आज के जमाने में आज के यांत्रिक युग में, टैक्नीकल युग में, टैक्नीकल लाइफ में, जब कि आज हम लोगों का सुबह उठकरके सांस लेने से लेके, रात में बिस्तर तक जाने तक पूरा जीवन जो टैक्नीक के आधार पर हो गया टैक्नीकल के अधीन हो गया है। यह मैं कोई अतिशयोक्ति नहीं कह रहा हूँ। सुबह उठ करके ही सब लोग घड़ी देखते हैं, बड़े से बड़े आचार्य घड़ी देखते हैं। रात को सोने के पहले भी घड़ी देखते हैं। और बीच में भी आप लोग सब जानते ही हैं सुबह जागने से लेकर सोने तक पूरा टैक्नीक के अधीन हो गये हैं। अतएवं या तो हम टैक्नीक के अधीन हो जायं या उसको हम अपने अधीन कर लें।

मैं एक और दृष्टांत दे दूं कि संस्कृत की पूर्णता को कैसे छिपाया गया, संस्कृत के टैक्नीकल मैटर को हटा करके अपना लेबल लगाया गया, मान्यता प्राप्त स्थिति में लाया गया है। सज्जनों, आज के जीवन में सब से बड़ी उपलब्धि एक विमान आविष्कार को माना जाता है। विमान का आविष्कार 'डवलप' करते करते रॉकेट तक पहुंच गया। आप जानते हैं 2003 ये है अभी जो बीता है एक साल पहले उसको विमान आविष्कार की शताब्दी के रूप में मनाया गया है। क्योंके 1903 ई. में सबसे पहले राइट ब्रदर्स ने आकाश में विमान उड़ाया था। वे दो भाई थे जो साइकिल मैकेनिक थे। जब तो 1903 में राइट ब्रदर्स ने विमान उड़ाया था सार्वजनिक रूप से अखबार में भी दिया है। सच क्या है देखिये कैसे सब इतिहासको पल्टाया गया है। कोई पत्रकार भाई हो तो इसको नोट करिएगा। बम्बई के उस समय बम्बई प्रान्त या गुजरात महाराष्ट्र माने उस समय कोई भेद नहीं हुआ था, बम्बई प्रान्त था। वर्तमान जो बड़ौदा है, बडौदा स्टेट उस समय था वह उस समय कोई भेद नहीं हुआ

था। चौपाटी में शिवकर बापू जी तलवदे नाम एक वैदिक ब्राह्मण ने वैदिक टैक्नीक के अनुसार,वैदिक प्रक्रिया के अनुसार चौपाटी में भारद्वाज संहिता के विधिविधान के अनुसार ''मरूद् सखा'' नाम के विमान का आविष्कार करके शोध के आधार पर प्रस्तुत किया। 1903 के 7 वर्ष पूर्व 1895 में बम्बई के चौपाटी में शिवकर बापूजी तलवदे नाम के एक विद्वान ने भारद्वाज संहिता के विधि विधानानुसार बनाकर उड़ाया। भारद्वाज संहिता में सौ प्रकरण हैं उसका चालीसवां प्रकरण है उसका नाम है वैमानकम् प्रकरणम् उसके अनुसार 'मरूद् सखा' नाम का विमान बना करके बम्बई के चौपाटी से सफल उड़ान किया था। वह पहली उड़ान में १५०० फीट ऊपर उड़ा रहा था। पहली उड़ान में १५०० फीट यह सारा विवरण 'धर्म दिग' नाम की हिन्दी पत्रिका जो आज कल बन्द है उसका जो पहला अंक था 1949 में उसका प्रवेशांक इसमें इस का विवरण निकला था उसमें सारे सचित्र फोटोवगैरा मौजूद थे। वह विमान कहां से फ्लॉइट किया, कहां लैण्ड किया, वहां कौन कौन पत्रकार हाजिर थे सारा सचित्र विवरण जो है छपा था। उस सारे कार्यक्रम में बहुत जनता थी, उसमें जो फोटू फाटा है उसमें महाराज सियाजी राव भी हाजिर थे, रामजी शास्त्री पाड़ले भी हाजिर थे इत्यादि सब अच्छे अच्छे न्यायाधीश बम्बई के उस समय, महाराज सियाजीराव गायकवाड़ बड़ौदा नरेश ने इसको आर्थिक सहायता देना कहा था। लेकिन भारत का दुर्भाग्य, हमारा दुर्भाग्य, उस समय भारत में ब्रिटिश शासन था। ब्रिटिश सरकार ने अपनी ओर से दबाव दे करके महाराज गायकवाड़ को रोक दिया था। आप लोग सारी घटनाओं को ख्याल करिये। इसका इतना सद्मा पहुंचा कि शिवकर बापू तलवदे जी का शरीर छूट गया था। अब सारी घटना आगे वाला अध्ययन सुनिये आप 1895 ये घटना घटी 1903 में राइट ब्रदर्स वाला विमान उड़ा। बीच के ८ वर्ष में क्या घटना हुई। जब वो शरीर छूट गया उनका तब ब्रिटेन के पारले कम्पनी में जिनका पारले जी बिकता है, उन्होंने इनका कॉपीराइट खरीदा। उनके पार्टस खरीदे और उसके कुछ दिन बाद जा के राइटब्रदर्स ने विमान का आविष्कार किया। उस पार्ट्स और राइट्स का क्या उपयोग हुआ, इसको अगर समीक्षात्मक अध्ययन करके लोग यह कह सकते है कि 'राइट ब्रदर्स का विमान आविष्कार क्यों यह तो शिवकर बापू तलवदे का आविष्कार है। मैंने आपका बहुत समय लिया अगर कोई भी संस्था कोई विश्वविद्यालय कोई भी देश इस विषय में रिसर्च करेगा तो मैं इसके ऊपर बहुत सामग्री दूंगा। जब आपोलो १४ ने चन्द्रमा पर जा करके धावा बौला था उस समय एक वैज्ञानिक ब्रुन्कफिल्ड आइरिस ने दावा किया था कि हम लोग जो इतना आविष्कारकर रहे हैं। प्राचीन भारत के साहित्य में अन्तरिक्ष विज्ञान इससे बहुत आगे है ये बात भी हो चुकीं थी। लेकिन रिसर्च आगे नहीं बढ़ पाया। मेरा तात्पर्य है संस्कृत को केवल मंगलचरण और माल्यार्पण और अंगवस्त्र प्रदानम् की भाषा न समझी जाय संस्कृत में ज्योतिष कला भी है, भूज्ञान परीक्षा, तमाम विज्ञान है। ऐसी संस्थायें होनी चाहिये यह अगर आचार्य श्री का आदेश होगा तो मैं भी अपनी सेवा समर्पित करूंगा ऐसी संस्थाओं की स्थापना हो कि जिसमें इन सब चीजों को सामने लाया जाय। इन तमाम शब्दों के साथ आप समस्त लोगों से, मैंने जो समय लिया इसके लिये क्षमा चाहते हुय आचार्य श्री चरण के चरणारविन्द में प्रणाम करते हुये मैं अपनी वाणी को यहीं पर विराम करता हूँ।

धन्यवाद!

❑❑❑

मातृशक्ति सम्मेलन

श्रीमती शोभा चन्दर, जयपुर द्वारा सम्मेलन की पृष्ठ भूमि

''माँ'' एक ऐसा शब्द है कि जिसमें पूरी सृष्टि समाई हुई है, क्योंकि माँ शक्ति भी है श्रद्धा भी है विश्वास भी है किसी भी विद्या, बुद्धि, लक्ष्मी का निवास भी है। परन्तु विचारणीय विषये है कि क्या आज यह सब स्थितियाँ मातृशक्ति में देखी जा रही है, या कि सिर्फ कहने भर को रह गया है, 'क्योंकि आज,हमारी माँ बहिन बेटी को स्थान स्थान पर प्रताडना के प्रहारों को सहना पड़ रहा है और उसकी भरी हुई 'आँखों को देखकर बरबस निकल पड़ता है', 'आँखों से जो ममता के आँचल पे गिरापानी, इस जसे गमें दिल से रोके न रूका पानी' उस दु:ख को देखकर हृदय विदीर्घ हो उठता है, यदि वास्तव में मातृशक्ति जो जगत की आधार है उसे मान देना है- सम्मान देना है तो समाज को दिशा प्रदान करना अति आवश्यक है। परम पूज्य जगद्गुरु श्री ''श्रीजी'' महाराज के मन में व्याप्त असीम करुणा ने इसे कार्यरूप में परिणत करके आज मातृशक्ति सम्मेलन का आयोजन किया। निम्बार्क सम्प्रदाय में मातृशक्ति का स्थान सर्वोपरि माना गया है। इस सम्प्रदाय की उपासना पद्धति में आह्लादिनी शक्ति श्री राधिका जी को सर्वोच्च स्थान उपलब्ध है, महाराज के प्रसंग में अनन्तकोटि ब्रह्मांड नायक परमात्मा परब्रह्म श्री कृष्ण रास करने से पूर्व रास प्रारम्भ करने की अनुमति प्रिया जी से मांगते हैं, इतना ही नहीं प्रिया जी के अत्यन्त प्रिय मयूर के मोर-पंख को अपने मुकुट में धारण करते है। ऐसे हजारों उदाहरण भारतीय संस्कृति में भरे पड़े हैं जिससे सिद्ध होता है कि भारतीय संस्कृति, शक्ति परक है। स्वार्थान्धों ने इसके सुसंस्कृत पक्ष को विकृत करके मातृशक्ति के सम्मान व गौरव को छीन लिया है। मातृशक्ति के संस्कारशील गौरव को समाज में पुन: स्थापित करने का संकल्प करना ही इस मातृशक्ति सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य है। आज इस सम्मेलन में आप सभी का अभिनन्दन करते हुये, स्वागत करते हुये, मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। आज इस मातृशक्ति सम्मेलन में हमारे बीच में, मुख्य अतिथि के रूप में आपकी अपनी आपके दिलों के बहुत करीब रहने वाली आदरणीया प्रभा जी ठाकुर पधारी है। जो सर्वदा आपके साथ जुड़ी रही, एक प्रखर राजनेता होने के साथ-साथ यह प्रसिद्ध कवियत्री, साहित्यकार और समाज सेविका के रूप में भी दूर तक जानी जाती हैं पहिचानी जाती हैं। समारोह की अध्यक्षता कर रही हैं श्रीमती कमलेश कुमारी जी, जो पंचायत समिति सिलोरा की पूर्व प्रधान है, आप का हार्दिक अभिनन्दन करते है, स्वागत करते हैं।

श्री श्याम सुन्दर बेरीवाले (अध्यक्ष आयोजन समिति)

अनन्त श्री विभूषित जगद्गरु श्रीनिम्बार्क पीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' महाराज, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्री हर्याचार्य जी महाराज, पुरीपीठाधीश्वर श्री निश्चलानन्द जी महाराज, महामण्डलेश्वर, मण्डलेश्वर, श्री महंत, महन्त, संत महात्मा, विद्वज्जन, भक्तवर, एवं मातृशक्ति, सबके चरणों में में अपना नमन करता हूँ। आज भारतवर्ष में व्याप्त एक विकट समस्या पर विचार किया जा रहा है महाराज श्री ने इस अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन

में जितने भी विषयों का चयन किया है जो सभी समयानुकूल विचारणीय प्रश्न है। आज का यह मातृशक्ति सम्मेलन विशेष विचारणीय है। विशेष विचारणीय इसलिए कि शिक्षा का इतना प्रसार-प्रचार होने के बाद भी आज जिस पावन धरा पर हम खड़े हैं जिस वीर भूमि राजस्थान पर हम खड़े है, भ्रूण हत्या का सबसे ज्यादा रिपोर्ट यहीं है। सरकारी आंकड़ों के हिसाब से राजस्थान में ही भ्रूण हत्या सबसे ज्यादा हो रही है। कन्याओं की जनसंख्या में अनुपात कम होता जा रहा है। आज इस मातृशक्ति सम्मेलन से शाश्वत प्रेरणाओं की आवश्यकता है। मनु स्मृति के अनुसार जहाँ नारियों की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं जहाँ इनकी पूजा नहीं होती है वहाँ सब क्रियायें निष्फल होती हैं। जगह-जगह अकाल महामारी बाढ़ आदि कहीं गर्भस्थ कन्या भ्रूण हत्या का प्रतिफल तो नहीं। नित्य की दुर्घटनायें एवं हत्यायें कहीं दहेज का अभिशाप या बलात्कार का दुर्दान्त परिणाम तो नहीं। आज हमारी सारी योजनायें निष्फल प्रमाणित होती जा रही है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् एक महान् विद्वान् एवं विचारक थे उनके अनुसार नारी नर की सहचरी, इसके धर्म की रक्षक, उसकी गृह लक्ष्मी तथा उसे देवत्व तक पहुँचाने वाली सारिका है। आज पुरुष देवत्व की ओर न जाकर पशुत्व की ओर अग्रसर है कहीं नारी की दुर्दशा ही तो इसका कारण नहीं। ''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी आँचल में है दूध और आँखों में पानी।'' आज मातृशक्ति की इस दुर्दशा का कारण मैं कुछ कटुशब्द में कहूँ तो मुझे क्षमा करेंगे, ज्यादातर दायित्व मातृ शक्ति अपना निज का है। मातृ शक्ति ने भारतीय जनमानस को सदा सर्वदा प्रेरित किया है वह मनुष्य की उन्नति का मनुष्य के जीवन के आधार का एक मूलस्रोत रहा है, किन्तु आज मातृशक्ति स्वयं जागरूक नहीं है इसका यह एक बहुत बड़ा कारण है। एक या दो बच्चों के बाद मातृशक्ति बच्चा होना रोक देते हैं यह एक बहुत बड़ा अभिशाप हैं जो परिवार बच्चों को पालने में सक्षम है उन्हें ऐसा न करना चाहिये। जो बड़े व्यापारी हैं किन्तु एक बच्चा हुआ और किसी कारण से अस्वस्थ हुआ तो उसके व्यापार को सम्भालने वाला कोई भी नहीं है। मातृ शक्ति को इस विषय में विचार करना चाहिये इन्हीं शब्दों के साथ में, अपनी वाणी को विराम देता हूं।

श्री बंशी लाल राठी (स्वागताध्यक्ष)

आज मातृशक्ति सम्मेलन, धर्म सम्मेलन हो रहा है, मातृशक्ति सम्मेलन नहीं मातृशक्ति धर्म सम्मेलन है, मातृशक्ति के लिये मैं क्या कहूं क्या तारीफ करूं ये तो जीवन की दाता है, ऐसी दाता है कि माँ प्रथम गुरु भी है। नारी मनुष्य को ऐसा साथ दे रही है कि मनुष्य को सब कुछ बना दिया परन्तु आज कुछ भटकाव आ गया है। वो क्या भटकाव आया पहनावे का, पहनावे का भटकाव ऐसा आया कि बच्चियां और हमारी बहिनें अपनी ड्रेस को चेन्ज करती हैं, आदमी आज वैसे का वैसा पूरे कपड़े पहनता है। मेरी तो एक ही प्रार्थना है बहिनों से कि आप हमारी दुर्गा हैं, आप हमारी गायत्री हैं, आज हमारी सरस्वती हैं और आप हमारी लक्ष्मी हैं, और आप हमारी जन्मदाता हैं। इस पहनावे को सुसंस्कृत रखना धर्म सम्मेलन में ये लेके जाना कि पहनावे के कपड़े पूरे पहनने हैं, यही मेरा निवेदन हैं इसी आशा के साथ सभी को नमन।

सुश्री वसुधा (लाडनूं)

भारतीय संस्कृतो नारीः (विषय पर संस्कृत में भाषण किया) इसका लिपि करण नहीं है

डॉ. आशा शर्मा

अध्यक्ष इतिहास विभाग

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, किशनगढ़

मैं इतिहास की सामान्य विद्यार्थी हूँ ,और सामान्य विद्यार्थी जिज्ञसु होता है, वह यह देखने का प्रयास करता है कि हम जो जीवन जी रहे हैं वह कहाँ से शुरू होता है और कहाँ खत्म होता है। इस मातृशक्ति सम्मेलन में जैसा कि पूर्व में हमारे सम्मानित कथन में आया था कि मातृधर्म सम्मेलन इसे कहं। शक्ति, युक्ति और बुद्धि का प्रतीक यह सम्मेलन हो मैं यही कामना करती हूँ। लोक संस्कृति क्या है लोक संस्कृति जीवन को जीवन से जोड़ती है। संस्कृति कोई आयातित और निर्यातित माल नहीं है संस्कृति वह अवधारणा है जो मूल को जन्म देती है हमें जड़ से फल से जोड़ती है, और जड़ में चेतनता देती है वह शक्ति है मातृ स्वरूप मेरा प्रयास इसी मातृशक्ति को आध्यात्मिक स्वरूप को समझने का है। भारतीय संस्कृति जीवन को दर्शन से जोड़ती है जहाँ संस्कृति मानव का सम्मिलित उद्यान है वहाँ लोक संस्कृति तो अपने आप में कानन श्री है और उससे महकता हुआ फूल संस्कार है जो हर घर के आंगन में हर माता आँचल के रूप में देती है।

मैं आपको चौबीस घंटे के आध्यात्मिक के यहाँ ले जाना चाहुँगी कि किस प्रकार से एक गृहणी आध्यात्म की शुरूआत करती है। जब हम अपनी शैया से उतरते हैं तो माँ धरा को छूते हैं। और माँ धरा को छूते समय हमारी हथेली हमारे सामने होती है और उसी के अन्दर सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा यानी शिवांगी पार्वती के तीनों रूप दिखाई देते हैं। जब माँ अपने बालक का मुँह पौंछती है। तो वहाँ उसे बुलाके संस्कारों के आँचल की ओर प्रेरित करती है। भारतीय संस्कृति, लोक संस्कृतियों लोक मानस में शक्ति पूजा की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। यहाँ मैं विनम्र रूप से कहना चाहुँगी, लोक शास्त्र के अन्दर दुर्गा के विभिन्न रूप जो कहे गये है वह लोक संस्कृति में गाये जाने वाले लोकगीतों में, लोक कहावतों में किस तरह से परिलक्षित होते हैं यदि हम इसकी ओर ध्यान देंगे तो आज के इस मातृशक्ति सम्मेलन के बहुत आसानी से इसके अर्थ को हम समझ सकेंगे। जैसा कि श्रीवेदव्यास ने कहा कि शक्ति में 'श' का अर्थ ऐश्वर्य है और ''क्ति'' का अर्थ है ''पराक्रम'' जिसका स्वरूप ऐश्वर्य पराक्रम का है जो ऐश्वर्य पराक्रम देने वाला हो वही स्वरूप, मातेश्वरी है, दुर्गा है, गृहिणी है। अब आप यह देखिये कि किस तरह से लोक अभिव्यक्ति इसकी है- ''जगत स्वरूपा भुवनेश्वरी म्हारे भवन पधारी आज कुल दीपक री लौ जगादी बड़ी विधाता मात'' जब वह जननी बनती है तो एक नई सृष्टि को अपने जीवन पर खेल करके, जन्म देती है। वैसे भी अभिप्राय यह है कि सृष्टि के रूप में माँ की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं माँ पालक है, रक्षक है वही सन्तान को संस्कार देती है। ब्रह्मा की सरस्वती, विष्णु की लक्ष्मी और शिव की पार्वती, शक्ति रूपा है। हमारी सृष्टि युगल सृष्टि है यही दर्शन निम्बार्क सम्प्रदाय की सबसे बड़ी देन है। युगल रूप राधा और कृष्ण का परा और पुरुष प्रभाव से आध्यात्मिक स्वरूप ही सृष्टि का बीज रूप है। भारतीय दर्शन शक्ति प्रधान कहा गया और इसी में जो महिमा महिला की है वही शब्द है। जो हम यज्ञ करते हैं और जो किसी के ''मैं'' को हिला दे, अहंकार को हिला दे, और उसकी जगह स्वाभिमान की ज्योति जगा दे, उसका नाम है ''महिला'' अर्थात् जिसमें ''मैं'' को हिलाने की क्षमता हो वह महिला मैं से जब हम की ओर बढ़ते हैं तो वह शक्ति स्वरूप है माँ सरस्वती। दुर्गा, सप्तशती में देवी के विविध रूपों को दिखाया गया है। इसमें आप भी ध्यान दीजिये कि जो दुर्गा सरस्वती का जो स्वरूप है जब उसने अपनी शक्ति का रूप लिया है। वह है संहार कारिणी, दूसरा अर्थ है कि जब अन्याय होगा तो ''आँचल में दूध आँखों में पानी'' वाली स्त्री नहीं है वह संहा कर्त्री है। आवाहन अपनी आत्माका कीजिये आप किसी की मोहताज नहीं है आप अपने आप को जगाइये फिर

देखिये आप, आप दुर्गा स्वरूप है आप किसी की मोहताज नहीं है। फिर दूसरा स्वरूप इसका आता है जब राम नवमी के दिन शक्ति की उपासना होती है। नौ रूपों में, वह है मातृशक्ति के आठ स्वरूपों की उपासना यहां हम यह कहते हैं कि तीनों रूप को लोक-संस्कृति किस प्रकार से देती है एक रूप में, ''तीन रूप जाया एकरूप में तीन रूप जाया, दो बेटा या इक गोरा पूजी काया इस सुधि नव राम कहाया, इस सुधि अठ किसन सुहाया'' यहाँ धर्म शास्त्रों से परे नौ जो लोक अनुभूति है जिससे हमारी लोक संस्कृति जिन्दा है उसने धर्म के किस गम्भीर स्वरूप को कितनी आसानी से आत्मसात किया। इक सुधि नव राम कहाया जो नवमी को पैदा हुये राम हैं। इस सुधि अठ किसन सुहाया। जो अष्टमी को पैदा हुये वह कृष्ण हैं। इस गहन कहावत को समझने के लिए यहाँ मैं तीन बातें और कहना चाहुँगी। तीन शब्द कि भजन हम सुनते हैं लेकिन भजन के अन्दर जो ईश्वर को आव्हान किया जाता है उसकी परिस्थिति व जिज्ञासा रूप में। महिला स्वयं एक रिसर्चर हैं अन्वेषणकर्ता हैं और उसनें भजनों को तीन रूपों में कहा गया है ''अर्जी'' जब भक्त स्वयं अपनी ''अर्जी'' अपनी समस्याएं पेश करता है और ''मर्जी'' जब उसकी इच्छा होगी ईश्वर को याद करेगा और ''गर्जी'' ईश्वर मैंने तुझे बनाया, भक्त से महान ईश्वर है ये भी सही है। लेकिन ईश्वर भी कहता है भक्ति तेरे बिना मेरा काम नहीं है तो वह कहता है ''गरज अगर समझ तो आ म्हारे द्वार में बैठी आग थारे तू क्यों नहिं आयो म्हार'', अब आप ये देखिये गीता के अन्दर बहुत अच्छी बात कृष्ण के लिय कहीं गई है। अब यहाँ लोक कहावत लोक भजन में मैं याद कराना चाहुंगी कि मेरे कॉलेज के प्राँगण में एक गाय बछड़े चराती है, उसका नाम है काली। उससे मैंने यह चीज ली है अगर मैं उसका नाम न लूँ, तो उसके प्रति अन्याय होगा, उस समय गुनगुना रही थी और मैंने नोट किया, तू पुकारे अरजल, अरजल शब्द लिया है उसने अर्जुन के लिऐ तू पुकारे अरजन न कई नाम सू मैं पुकारूं थारो इक नाम अर्थात् हे कृष्ण तू अर्जुन को कई नाम से पुकारता है वह विचारा इन नामों में भ्रमित हो करके कौनसे नाम को याद करेगा। लेकिन मैं तो तेरा एक नाम ही याद करती हूँ कन्हैया और तुझे मालुम ही नहीं है। तो यह एक स्वरूप है कि किस प्रकार से हमारी मातृशक्ति भजनों के माध्यम से उसके स्वरूप को आध्यात्म के माध्यम से स्वरूप जोड़ती है। अब इसी तरह से आप यह देखिये हम विनायक लिखते है गणेश जी को याद करते है- एक तरफ लिखते है ऋद्धि और सिद्धि, ऋद्धि और सिद्धि कौन है विश्वकर्मा जी की बेटियाँ है विश्वकर्मा जो विश्व को बनाता है। मैं यह पुरजोर से कहुँगी कि महिला किसी भी सम्प्रदाय की हो, धर्म की हो, जाति की हो उसमें एक ही लाल खून बहता है उसका आँचल एक ही है। हमारे स्वरूप बदल सकते हैं लेकिन माँ की आत्मा एक ही है और बच्चे समाज की धरोहर है अगर हम उसको अच्छी तरह से पालें।

डॉ. विमला भास्कर (रोहतक, हरियाणा)

आज इस सत्र के अन्दर जो मातृशक्ति सम्मेलन है उसमें मेरा विषय है वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मातृशक्ति का स्वरूप। कहने के लिये नारी केवल दो सवर्णों का मेल है पर स्वरूप में पूरे ब्रह्मण्ड का प्यार, प्यास, ममता, स्नेह, विश्वास को समेटे हुये है। उसमें स्वावलम्बन, परोपकार, मानव कल्याण का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है वह चाहे तो अपनी गोदी में पलने वाले मासूम बच्चे को भगवान बना दे, या फिर इन्सान व शैतान कुछ भी। नारी की पूजा इस देश में होती रही है **''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः''**भारत भूमि को भी माता शब्द से सम्बोधित किया जाता है और उसके साथ ही उसे अबला भी कह दिया जाता है भले ही हम यह

देखते हैं कि शिव में ''इ'' जो नारी स्वरूप है उस शब्द के बिना उस मात्रा के बिना शव मात्र रह जाते है। ऐसी ही वह नारी शक्ति जिस के बिना परुष संज्ञा शून्य है। पुरुष प्रधान अपने इस भारत देश में वर्तमान समय में नारी की स्थिति क्या है किसी से छिपा नहीं है। कहने के लिए महिला शक्ति मनाया जाता है, समानाधिकार की बात की जाती है लेकिन ये घोषणा ये केवल घोषणा मात्र हैं। दहेज विरोधी कानून बनाना नारी, शिक्षा की बात उठाना। कुछ कदम इन बातों को लेकर के जारी आगे भी बढ़ी है। पंचायती राज्यों में उनके लिए सीटें रखीं पर वस्तु स्थिति है कि दो हाथ लम्बा घूँघट निकालने वाली महिला समाज में आगे आना चाहते हुये भी, आ नहीं पा रही। बहू को तो घर के अन्दर ही रहना है चार दिवारी के अन्दर। बेटी पढ़ करके क्या करेगी पराया धन है दो अक्षर पढ़ लिए बहुत है इनके सारे काम पुरुष ही करते हैं। हम जिस सशक्तिकरण की बात करते हैं वह शहरों तक ही सीमित है। गाँवों पर इसकी छाप कुछ हद तक ही पड़ी है।

वह सारा कामकाज खेत का, चारा लाना, सानी आदि माता बहिनों को ही करना पड़ता है। शहरों की स्थिति में काफी तब्दीली आई है, बदलाव आया है। शिक्षा के साथ-साथ वह रोजगार का कार्य भी करती है। रोजगार की दिशा में कदम बढ़ाये परिवार की स्थिति को सुधारा इसमें कोई सन्देह नहीं है पर बच्चों के प्यार की बलि दी जा रही है- इसलिए आज मम्मी और डैड बन गये हैं। मम्मी शब्द का अर्थ आप प्रबुद्ध समाज जानते होंगे। ''ममी'' एक मृत शरीर होता है जिसको कि धरती के अन्दर कर दिया जाता है जीवित नारी को, जीवित माँ को जब ''ममी'' बना दिया और जीवित पिता को जब डैड कर दिया तो, क्या हम बच्चों से आशा कर सकते है या बच्चे के लिए क्या हम कुछ कर सकते हैं। देश का कोई भी ऐसा कार्य या कोना नहीं है जहाँ उसके बढ़ते कदमों ने अपनी छाप न छोड़ी हो। नारी कोई बच्चे पैदा करने वाली मशीन या भोगने की वस्तु नहीं है। उसके भी अपने जज्बात हैं, उसके पास भी देने व कहने के लिए बहुत कुछ है। असम्भव को सम्भव करना वह जानती है जो कि दुर्गा व चण्डी का दोनों रूप समयानुसार वह ठान लेती है। नारी वह गहरा सागर है जिसकी थाह पाने की शक्ति ब्रह्मा में भी संभवतः नहीं है। नारी के जीवन की बात करते है तो झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम पहले मुँह से निकलता है। कितना अदम्यसाहस था उसमें। फिल्मी दुनियाँ की अमिषा पटेल जो अभिनेत्री है ने अर्थशास्त्र विषय के अन्दर लन्दन के अन्दर टॉप किया, मदर टेरेसा जिन्होंने समाज सेविका के रूप में जीवन जीकर नोबल पुरुस्कार प्राप्त किया। फौलादी इन्दिरागांधी राजनीति के क्षेत्र में कैसा अपना वर्चस्व भारत में बनाये रही, कल्पना चावला ने विज्ञान के क्षेत्र में शोध कार्य करके अन्तरिक्ष में जो अपने कदम रखे, नारी जाति को उसने कैसे सम्मानित किया है। सुधा चन्द्रन ने कैसे पूरे विश्व में भरत नाट्यम् प्रस्तुत किया है, ऋतु बेरी फैशन डिजायनर बनी तो किरन बेदी पुलिस अधिकारी बन करके सारी दुनियाँ को बता दिया कि नारी के अन्दर भी एक शक्ति है। जयललिता, सुषमा स्वराज व मायावती के नाम से आज कौन नहीं परिचित है। नारी पुलिस में भरती है, डाक्टर है-इंन्जीनियर है आदि सभी क्षेत्रों में आगे कदम बढ़ा रही है। ये सब उसकी शिक्षा, जागरूकता व अदम्य साहस का परिणाम है, जिसका एक पहलू है। इस सभा में उपस्थित सभी महापुरुषों के सामने यह बात कहना चाहुँगी कि सत्य बड़ा कडुवा है, कर्ण कटु भी, उसे हम सुनना नहीं चाहते। समाज में नारी ने स्थान जरूर बनाया है पर ऐसी नारियों की संख्या कितनी है जरा सोचियेगा। महिला पुलिस अधिकारी व प्रेस रिपोर्टस क्या स्वतंत्रता पूर्वक कार्य कर सकती है। अस्पताल में भर्ती एक

महिला का जीवन आबरू तक भी तो सुरक्षित नहीं है, कारण कि लोगों की मानसिकता के अन्दर अभी तक कोई भी बदलाव नहीं आया है। चाहे वे रानी पद्मावती जिस पर अलाउद्दीन की नजर पड़ी और चाहे द्रौपदी जिस पर दुस्साशन की नजर पड़ी है, ये स्थिति अभी तक ज्यों की त्यों दिखाई देती है। समाचार पत्र ऐसी घटनाओं से भरे पड़े हैं। कहीं दिल्ली जैसे शहर में जहाँ कानून बनते हैं, मौलाना आजद मैडीकल कॉलेज की छात्रा के साथ कुछ दरिन्दों ने ऐतिहासिक खूनी दरवाजे के अन्दर जिसे हम देहली गेट कहते हैं कैसे बलात्कार किया जिससे दिल्ली पुलिस की कार्यशैली भी खुलकर के सामने आ गई। आज भी पति की गलतियों की सजा उसकी वृद्ध पत्नी को पूरे गांव में नंगा घुमा करके दी जाती रही, ये घटना जिस गाँव की है उस गाँव का नाम है, बनसी, इस तमाशे को देखता रहा वह गांव समाज। सुरक्षा गार्डों ने ही बलात्कार जैसी घिनोनी हरकतों को अंजाम दिया है। सेना के नौजवान भी इस मामले में किसी प्रकार से पीछे नहीं रहे, ऐसे गुनाहों की सजा भला हमारी सरकार या अदालत क्या देगी? इन गुनाहों की सजा उस अबला से पूछो जिसने चीख चीख कर अपनी अस्मत, इज्जत की भीख रोते बिलखते हुये मांगी है। मृत्युदण्ड या उम्रकैद से नारी की स्थिति पर कोई सुधार नहीं होगा। समाज को चाहिये, महापुरुषों को चाहिये कि वे ही अपनी आचार संहिता में ऐसे प्रावधान रखें कि कोई भी कामान्ध व्यक्ति, घिनौनी हरकतों पर उतरने से पहले कुछ विचार करे। इसके लिए हम सबको मिल करके विचार करना है। उसमें अपनी मातृशक्ति के अस्मत को बाजारों में नहीं बिकने देना है, इसका दायित्व पूरे समाज पर है चाहे वह नर है चाहे वह नारी है। हमें अपनी पूर्ववर्ती मर्यादा, संस्कृति को बनाये रखना है न कि रसातल में ढ़केलना है। आज नारी, नारी के ''नारे'' लगाकर कानून बनाकर उसे अलमारियों में बंद कर दिया जा रहा है चाहे वो ''मूमेन्स सैल'' हो या कि कुछ और हो। आज के युग में भी नारी इतनी मजबूर है आखिर क्यों? उस पर अत्याचार की काली छाया घर दफ्तर सब जगह मंडराती नजर आती है।

नारी तुम महान हो, आदर्श की पहचान हो, जुल्मों के थपेड़े सह कर भी उस पहिचान को बनाये रखना, नारी तुम महान हो.. नारी तुम महान हो..।

श्रीमती शारदा दाहाल (विराटनगर, नेपाल)

जय श्री राधे! मैं हिन्दी अभ्यास में नहीं हूँ, तब भी थोड़ी कोशिश करती हूँ, समाज में महिला सबन्धी अभी जो हमारा विषय वस्तु चल रहे हैं उसके लिए सिर्फ मैं एक शब्द बोलती हूँ। जैसे घर को मजबूत करने के लिए धुरी को मजबूत होना जरूरी है जो सम्पूर्ण घर को मजबूत करके रखती है वैसे ही एक परिवार को बनाने मजबूत करने के लिए माताओं का मजबूत होना जरूरी होता है। इसीलिए महिला को शिक्षा दें ज्ञान दें, हर प्रकार से उनको शिक्षा से ज्ञान से सम्पन्न बना के घर को मजबूत बनाना जरूरी है। जब माता शिक्षित होती है तब परिवार बनते हैं, बच्चे बनते हैं, तब घर परिवार बनते हैं तब गाँव समाज देश और राष्ट्र बनते हैं इसीलिए महिलाओं को शिक्षा की ज्ञान की जरूरत है और इसी लिए हम जब मातायें शिक्षित है और सब घर परिवार देश गाँव राष्ट्र ये सुखी और शान्ति होगा।

डॉ. प्रभाठाकुर (मुख्य अतिथि) सांसद, अजमेर

जिस विषय पर मेरी पूर्व वक्ता बहिने बोल रही थी। भारत की संस्कृति में मातृशक्ति का आदिकाल से महत्व रहा है। उसका सबसे अधिक सर्वोपरि सम्मानित एक दर्जा रहा है और जो आज भी है। समाज में क्यों कि मातृशक्ति अगर कहें तो शक्ति के रूप में दो ही को कहा गया है या तो मातृशक्ति को शक्ति कहा गया है या माता दुर्गा के भी जो नौ रूप हैं। शक्ति की जो महिमा है शक्ति

का जो स्वरूप है वह स्त्री के रूप में माना गया है। तभी माँ दुर्गा को हम नमन करते हैं। मातृशक्ति के बिना न तो परिवार चल सकता है न समाज चल सकता है और न कोई देश चल सकता है। उस मातृशक्ति को, महिला को आज हम यहाँ नमन कर रहे हैं। मातृशक्ति समाज की प्राण शक्ति है। कल परसों हमारे देश के उपराष्ट्रपति जी महामहिम शेखावत साहब जब यहां पधारे थे उन्होंने एक बहुत मार्के की बात कही, स्त्री शिक्षा की बात। आज स्त्रियाँ, नारियाँ हर क्षेत्र में अपनी योग्यता को प्रमाणित कर रही है। चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो अध्यापन का क्षेत्र हो, विज्ञान का क्षेत्र हो, तकनीकी क्षेत्र हो, व्यवसाय क्षेत्र हो कानून हो राजनीति हो, पत्रकारिता का क्षेत्र, दर्शन हो बल्कि धर्म के क्षेत्र में भी महिलायें हर जगह अपना नाम कर रही है। अपनी योग्यता को प्रमाणित कर रही है। तो फिर आज क्या कारण है कि कन्या भ्रूण हत्या होती है। इतनी शिक्षा का विकास हो रहा है, चेतना का विकास हो रहा है, हमारे धर्म, हमारी संस्कृति ने तो कभी यह नहीं सिखाया कि कन्या की भ्रूण हत्या कर देनी चाहिये। आदिकाल से कन्याओं ने अपने परिवार का नाम रौशन किया है और आज भी कर रही हैं। माँ सीता ने भी अपने पीहर के कुल का भी नाम रौशन किया है ''जनक नन्दनी'' के रूप में उन्हें जाना जाता है। इन्दिरा गाँधी भी एक बेटी ही थी उन्होंने भी अपने देश का, अपने कुल का अपने परिवार का, समाज का, नाम स्त्री जाति का नाम विश्व में रौशन किया। झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई भी महिला थी, उन्होंने भी इस देश का नाम रौशन किया। तो ऐसा नहीं है कि लड़कियाँ कोई कुल का नाम रौशन नहीं करती। आज कन्या भ्रूण हत्या के कारण समाज में असंतुलन आ गया है लड़कियों की संख्या दिनों दिन कम होती जा रही है। बहुत चिन्ता की बात है।

मातृशक्ति की विशेष जिम्मेदारी है। घर परिवार में आज भी काफी कुछ पुरुषों की सोच में बदलाव लाने की भूमिका तो मातृशक्ति ही निभाती है। अगर हम महिलायें यह सोचने लगेंगे कि लड़की का क्या है वह तो परायाधन है, दूसरे के घर चली जायेगी आज भी हम क्यों यह भेद समझते हैं। लड़का और लड़की में भेद नहीं है तो कन्या की भ्रूण हत्या नहीं होगी। आप उन्हें मौका दीजिये और लड़कियों का शिक्षा में जो स्तर हैं वह लड़कों से पीछे नहीं है जो उनकी योग्यता का सार है वह उनसे ज्यादा है। उनको अवसर तो दीजिये मैं भी एक महिला हूँ और भी जो विदुषी बहिने बैठी है- महिलायें है। कितने प्रदेशों में मुख्यमंत्री के रूप में आज महिलायें काम कर रही हैं हर क्षेत्र में महिलायें है। उन्हें आप शिक्षा का समान अवसर दीजिये लड़कियों व लड़कों को जितनी कुरीतियों, कुप्रथायें जो भी समाज में प्रचलित है अन्धविश्वास हैं इन सबसे अगर छुटकारा हमें चाहिये तो हमें अपनी बच्चियों को बच्चो के बराबर ही अवसर देना पड़ेगा। वो अपने कुल का भी नाम रौशन करेंगी। क्या लड़कियां अपने माता-पिता का नाम रौशन नहीं करती। क्यां आप की बच्चियाँ जब पढ़ लिखकर किसी जगह पहुँचती हैं कोई डाक्टर बनती है। यहाँ एक बहुत बड़े डाक्टर भी पधारे हुये है, कोई वकील बनती हैं, कोई नेता बनती हैं, कोई पत्रकार बनती हैं, कोई साहित्यकार बनती हैं, तो क्या माता-पिता का नाम रौशन नहीं होता, दोनों परिवारों का नाम रोशन करती हैं, ससुराल जाये तो वहां का भी और पितृ कुल का भी। पुत्र हो या बेटी हो कोई अन्तर हमें नहीं समझना चाहिये उन्हें बराबर अवसर देना चाहिये। लड़कियाँ पराई होकर के भी पराई नहीं होती। बेटियाँ को ससुराल में बैठे हुये भी माता पिता की चिन्ता कई बार पुत्र से अधिक होती है। मैं ठीक कह रही हूँ कि नहीं?

तीन महादेवियाँ सनातन धर्म में महादेवियों के रूप में है महाकाली, महासरस्वती, महालक्ष्मी। महाकाली जो शक्ति की दायिनी हैं, जगत् जननी, महालक्ष्मी धन और वैभव की दायिनी माता है और महा सरस्वती जो विद्या और बुद्धि की दात्री माता है। तो जो विद्या बुद्धि शक्ति और धन वैभव सबकी प्रतीक कही है उनके तीन शक्ति स्वरूप को हमारे समाज में स्त्री प्रतिबिम्बित करती है। समाज में पत्नी के रूप में वह लक्ष्मी है, उसको गृहलक्ष्मी का दर्जा वाकही मिलना चाहिये। जिस घर में गृह लक्ष्मी का अपमान होता है, शोषण होता है, और प्रताडना होती है तो वह परिवार वह समाज कभी विकसित नहीं हो सकता। उसी तरह पुत्री और बहिन के रूप में जो बालिका है वह सरस्वती रूपा है वह समाज को सही धर्म का रास्ता बताती है सही सद्मार्ग बताती है, सन्मार्ग दिखाती है ये सरस्वती के रूप में उसका उत्तरदायित्व है जो उसका निर्वहन वह करती है और करना चाहिये और माता के रूप में वह एक शक्ति स्वरूपा है वह महाकाली है वह महादुर्गा है ये माता के रूप में। क्योंकि जो जननी है उसे ही अधिकार है जरूरत पड़ने पर अपनी सन्तान को दण्ड देने का भी, तो आप अपने स्वरूप को पहिचानिये अपने शक्ति स्वरूप को पहिचानिये इसकी महिमा को पहिचानिय। कई कवियों ने कई तरह से लिखा है। जहां नारी की पूजा होती है यानी इसका मतलब है कि सम्मान होता है वहाँ देवता रमण करते हैं याने उस घर में खुशिहाली होती है उस घर में यश वैभव और सम्पदा रहती है जहाँ स्त्री का अभिनन्दन और सम्मान होता है उस परिवार में उस समाज में, उस घर में। लेकिन मैथिलीशरण गुप्त जैसे महाकवि को लिखना पड़ा कि ''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी आँचल में है दूध और आँखों में पानी'', ये नौबत क्यों आई, जबकि जयशंकर प्रसाद ने लिखा है कि 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' तो ये नौबत क्यों आई कि 'आँचल में है दूध और आँखों में पानी', ममतामयी माता जो अपने दूध से पालन करती है अपनी संतान का उसकी ये स्थिति समाज में क्यो बनी। जिस समाज में गार्गी, मैत्रयी जैसी विदुषी महिलायें हुई उस समाज में नारी शिक्षा सम्मान में क्यों अभाव पैदा हुआ, बाद में ये सोच क्यो पैदा हुई, कि बच्ची को पढ़ाने की क्या जरूरत इस बात पर हमें विचार करना होगा इसके लिए मैंने कविता की कुछ पंक्तियाँ लिखीं भी है वो आपको सुनाना चाहती हूँ-

'कहती हूँ बात आज जो कहनी ही चाहिये, कि नारी है ज्योति पुन्ज वो जननी है-पुरुष की, अबला नहीं है वो न दासी है किसी की, झाँसी की है रानी कभी दुर्गावती है वो, वो इन्द्रागाँधी है तो दुर्गा की शक्ति वो, अपने स्वरूप को हमें पहचानना होगा, अपनी बिरादरी का हक ये मांगना होगा, कि बेबा को रोजगार मिले और सुरक्षा, कानून और न्याय की है आज परीक्षा, संकट में खुद कमा सकें मोहताज न रहें, इतना पढ़ायें बेटियाँ इज्जत से जी सके, हम औरतों को आज सोचना ही चाहिये, कहती हूँ आजबात जो कहनी ही चाहिये।' यह बात आज मैं आपसे कहने आई हूँ वैसे आप सभी बुद्धिजीवी महिलायें है। यहाँ धर्मप्राण हमारे मार्ग दर्शक विराजे हुये हैं पूज्य आचार्य श्री विराजमान हैं सन्त महन्त विराजमान है। कोई भी समाज तब तक विकसित नहीं होगा, कोई भी देश तब तक पूरा विकसित नहीं होगा जब तक उस समाज में स्त्रियाँ विकसित न हो जायं शिक्षित न हो जायं। क्योंकि पुरुष और स्त्री ये एक गाड़ी के दो पहिये हैं ये जो विकास की गाड़ी है, ये जो प्रकृति की गाड़ी है इसके दो पहिये हैं पुरुष और स्त्री यदि किसी गाड़ी का एक पहिया बहुत मजबूत हो एक कमजोर एक ट्रक का पहिया लगा दो और दूसरों बैलगाड़ी का तो वह गाड़ी किस रफ्तार से चलेगी मुझे बताइये। आज तो दूसरे पहिये को भी ताकत देने की जरूरत है उसे

ताकतवर बनाने की जरूरत है उसमें भाइयों का सहयोग भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना महिलाओं का प्रकृति में दोनों हैं पुरुष और स्त्री दोनों का बल जब समान लगेगा तब इस प्रकृति में संतुलन आयेगा तब विकास की एक संतुलित गति बनेगी। तो हम धर्म कर्म के कार्य करें ये तो बहुत अच्छी बात है लेकिन सनातन धर्म का जो स्वरूप है कि धर्म के आचरण को धारण किया जाय धर्म के जो दस लक्षण (शील) बताये गये हैं, अहिंसा, काम, क्रोध, मोह, लोभ का त्याग, अहम् का त्याग, सत्य बोलना- सत्य आचरण करना कभी किसी के दूसरे के धन को हरण नहीं करना। ये जो धर्म का आचरण है ये मातृशक्ति को अपनी संतानों को शिक्षा में देने की जरूरत है। हमारे बच्चे स्कूल और कॉलेज में तो शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं लेकिन धर्म की शिक्षा उन्हें अपनी माँ से ही प्राप्त होगी। माँ बच्चे की पहली गुरु होती है। माँ जो वह बच्चें को संस्कार देती है उसी की तरह वह उसी संस्कार पर आधारित होकर के बड़ा होगा, उन्हीं संस्कारों को लेकर के जीवन चर्चा करेगा। इसीलिए संस्कार बहुत जरूरी हैं, इसलिये मातृशक्ति को ही बच्चे को संस्कार की शिक्षा देनी है। उसका आचरण जैसा होगा वह आगे जाकर, अपने कुल का अपने समाज का अपने देश का नाम रौशन कर सकेगा। आचरण में जब तक धर्म नहीं है केवल व्याख्या तक ही है, तो वह धर्म का पूर्ण स्वरूप नहीं होता है, जो सिखाना बहुत जरूरी है। महात्मा गाँधी ने कहा है- 'एक व्यक्ति शिक्षित होता है एक पुरुष शिक्षित होता है, लेकिन जब स्त्री एक कन्या शिक्षित होती है तो पूरा समाज शिक्षित होता है।' मैं कहना चाहुँगी कि हमारे समाज में ये जो दहेज प्रथा है, उन कुरीतियों को हमसे दूर करना है चाहे दहेज प्रथा हो, चाहे परदा प्रथा हो चाहे सती प्रथा हो, चाहे लड़कियों की भ्रूणहत्या हो, इन्हें दूर करना है। इसके लिए शिक्षा की ज्योति जगानी होगी। आज भी ऐसा क्यों होता है कभी दहेज के लिए स्त्रियों को जला दिया जाता है। इस देश में दहेज के लिए स्त्रियों का शोषण किया जाता है, इससे बड़ी शर्म की क्या बात हो सकती है। आज इस इक्कीसवीं सदी में जब हम बात करते हैं महिलाओं के अधिकारों की जब बात करते हैं हम महिलाओं को नौकरियों में और राजनीति में अधिक आरक्षण मिलना चाहिये अधिकार मिलना चाहिये। ऐसे शिक्षित समाज में महिलाओ ऐसी दशा क्यों है ? अच्छे-अच्छे पढ़े लिखे घरों में जब हम महिलाओं को दहेज के मामलों में जलाये जाने के दुखद प्रसंग सुनते है। यह केवल सरकार की जिम्मेदारी का सवाल नहीं है समाज को जागरूक होना पड़ेगा, ऐसे लोगों का सामाजिक बहिष्कार करना पड़ेगा, जिनके घरों में ऐसी घटनायें होती है। ऐसा बहिष्कार करिये ऐसी सजा दीजिये कि आगे से कहीं कोई हौसला नहीं कर सके, आप सोचिये हमारी बहिन बेटी को जलाया गया है यह न सोचिये कि और की बहिन बेटी को जलाया गया है। यह कुरीति दूर होगी इसके लिये बीड़ा उठाना होगा। आज मैं यह कहना चाहुँगी, आज भी महिला ऐसा क्यों सोचे की पति की मृत्यु हो गई तो सामाजिक जीवन हमारा अंधकारमय हो गया, इससे अच्छा तो जल के प्राण दे देना चाहिये। हमारे समाज में सती हुई हैं सीता, महासती अनुसुइया, महासती दमयन्ती, महासती सावित्री ये महासतियाँ कहलाई, लेकिन किसी ने जल के जीवित प्राण नहीं दिये। फिर भी महासती कहलायी और यही सती की परिभाषा है। जलना जरूरी नहीं है। अपने आचरण से महासती के रूप को प्रमाणित करना ही हमारे धर्म ग्रन्थों में कहा गया है। हमारे शास्त्रों में नहीं कहा गया है स्त्री को जल करके चिता में अपना जीवन हवन करना आवश्यक है कि तब ही वह सती कहलायेगी। मैं आज अन्तिम शब्दों में कहना चाहुँगी बहुत अफसोस होता है हम देखते हैं जो टी.वी. पर विभिन्न चैनल

आते रहते हैं उसमें नारी का अश्लील स्वरूप दिखाते हैं, आये दिन अश्लील वीडीओ एलबम बन रहे है। हम भी संसद में इस पर सवाल उठाते हैं महिला होने के नाते भी उठाते हैं कि ऐसे वीडीओ एलबम बिल्कुल बंद होने चाहिये।

ऐसे विज्ञापन बिल्कुल बंद होने चाहिये जिसमें भारतीय नारी का अश्लील और ऐसा स्वरूप दिखाया जाता है। जबकि भारतीय नारी का एक गरिमामय स्वरूप पूरे विश्व में विख्यात है। एक गौरवशाली स्वरूप है उस गौरवशाली स्वरूप को इन से चोट पहुंचती है, मातृशक्ति को एक चोट पहुँचती है भारतीय नारी और भारतीय संस्कृति को चोट पहुँचती है जब इस तरह से नारी का घटिया हल्का और अश्लील स्वरूप दिखाया जाता है। ये बन्द होनी चाहिये इसकी आवाज आप लोग भी उठायें, हम भी उठायेंगे जो जिस जगह बैठी हैं, महिलायें वे इसके विरोध में अपनी आवाज जरूर उठायें। और मैं अन्त में मेरी माताओं, बहिनों से जो यहाँ धर्म सम्मेलन में पधारी हैं वे संकल्प साथ लेकरके जायं कि मातृशक्ति के उत्थान के लिए, विकास के लिए हम जो विचार लेकर जायं उन पर अमल भी करें ताकि हम सब का यहाँ इकट्ठा होना सार्थक हो। यह सम्मेलन जो आयोजित किये हैं पूज्य श्री निम्बार्काचार्य ''श्रीजी'' महाराज वे महिलाओं के विकास के लिए कल्याण के लिये सोचते हैं संस्कार जागरण के लिए इस तरह सम्मेलन रखते है। पहले भी यह आयोजन दस वर्ष पूर्व रखा था तब भी मैं आई थी। आपका यह विचार है यह एक धर्म का कार्य है। महिलाओं के विषय को इस धर्म सम्मेलन में रखा गया है इस धर्म के विचार को आप साथ लेके जायं, उस पर अमल करें, बच्चियों को पढ़ायें, और बच्चियों और बच्चें में भेद न समझें उन्हें समान अवसर दें इस संकल्प को लेकर जायं यह एक धर्म कार्य ही होगा।

कु. नीना गोयल (अध्ययनरत उच्चशिक्षा)

गुरुदेव के चरणों में सादर प्रणाम। हालांकि मैं इस काबिल नहीं हूँ कि इसके ऊपर अपने विचार प्रकट कर सकूं। लेकिन गुरुदेव की मुझ पर कृपा हुई है मुझे यह मौका मिला है कि मैं भी इस सम्मेलन में अपने विचार प्रकट कर सकूं तो यह मेरे लिए एक बहुत ही गौरवमय अवसर होगा। मैं कहना चाहुँगी की माँ, ''माँ'' शब्द जो अपने आप में एक शक्ति है एक विख्यात और विराट स्वरूप है। कबीरदास जी ने कहा है कि समस्त आकाश को कागज कर दिया और समस्त पेड़ों को लेखनी कर दिया जाय फिर भी गरु के महिमा का वर्णन करना असम्भव है। मैं यही चीज अपनी माताओं के लिये कहना चाहुँगी कि ''यदि समस्त आकाश को कागज कर दिया जाय और समस्त पेड़ों को लेखनी कर दिया जाय तो भी माँ के स्वरूप का न तो कोई वर्णन कर सका है न कर सकेगा''। सब कहते हैं कि औरतों का शोषण हो रहा है औरतों को सताया जा रहा है उनको सम्मान नहीं दिया जा रहा है लेकिन मैं इसके लिये जिम्मेदार स्वयं नारियों को मानती हूँ। क्योंकि वह स्वयं अपना स्वरूप भूल गई है वह स्वयं अश्लील वस्त्रों को पहनने के लिए बाध्य हुई है उन्होंने उनको धारण किया वह धारण ही नहीं करेगी तो उनको कौन पहना सकता है। नारी स्वयं अपनी शक्ति को पहिचाने अपना स्वयं का सम्मान करें। भगवान् भी उसकी सहायता करता है जो स्वयं की सहायता करता है। तो हम तो नारी हैं इस जगत की जननी स्वरूप है। आज के भौतिकवादी समाज में जो पुरुष प्रधान होता जा रहा है नारियाँ उन पुरुष को इतना सम्मान दे रही है कि वह उनके पीछे चलती जा रही है वो उनके ऊपर इतनी आधारभूत होती जा रही है कि इनके सिवा हमारा कोई रक्षक ही नहीं है। जबकि हम यह भूल गये कि इस पुरुष को जन्म मैंने ही तो

दिया है तो यह मुझसे महान कैसे हो सकता है मैं स्वयं इसकी जननी हूँ और जो माँ जन्म देती है उससे वह बच्चा महान् कैसे हो सकता है। माँ प्रथम गुरु है। जीवन जीने के लिए त्याग, समर्पण, प्रेम और सद्भाव की जरूरत होती है। इन सबका स्वरूप तो एक माँ ही है माँ को जीवन जीने की कला गुरु कहना मेरे लिए कोई अतिशयोक्ति की बात नहीं है। मैं यही कहना चाहुँगी समस्त नारियों को कि यदि आपको कभी कोई किसी चीज के लिए बाध्य करे तो स्वयं को पहचाने, स्वयं की शक्ति का मनन, चिन्तन करें, एक क्षण के लिये, तब आपको दिव्य शक्ति प्रदान होगी आप यह पायेंगी कि मैं एक स्वयं शक्ति हूँ मैं स्वयं समर्थ हूं। मैं क्यों इनके सामने झुकूं, तब समस्तपुरुष समाज आपके नतमस्तक होगा। लेकिन यदि आप ये चीज नहीं करेंगी तो स्वयं को आपे कुंये में स्वयं ही धकेल रही हैं। इसीलिए मैं यही चाहुँगी समस्त नारियों से यही प्रार्थना करती हूँ कि अपनी स्वयं की शक्ति को पहिचानें। आज का समाज जब नारी का जन्म होता है जब बच्ची का जन्म होता है तो वह अपने आपको अभिशाप मानते है कि बच्ची का जन्म हुआ है मेरे घर में उसके लिए कोई उत्सव नहीं मनाया जाता क्यों? पुरुष तो बाद में बोलता है कि मेरे घर में बच्ची का जन्म हुआ है, लेकिन वह माँ जो बच्ची को जन्म दे रही है वह स्वयं बोलती है, कि मेरे तो बेटी का जन्म हुआ है बेटे का जन्म क्यों नहीं हुआ। स्वयं पहिचाने कि मैं स्वयं एक औरत हूँ, मैं एक बेटी हूँ, मैं एक नारी हूँ, मैं एक शक्ति हूँ, और मुझे शक्ति प्राप्त हुई है। जब एक बेटी का जन्म नहीं होगा तो ये संसार कैसे चल सकता है वंश बेटा ही नहीं बेटी भी है क्योंकि बेटी बहू बनती है कुल को जन्म देती है। एक नये कुल में जाकर उसका भी पालन पोषण करती है।

श्रीमती श्रीकान्ता गौड़ (मीठड़ी)

नेपोलियन ने कहा था 'तुम मुझे अच्छी मातायें दो मैं तुम्हें एक अच्छा राष्ट्र दूंगा।' भारत माता एक शक्ति है इसमें संदेह नहीं है। लेकिन वर्तमान में स्त्री को भोग की वस्तु मान लिया गया है उसके पीछे स्त्री ही जिम्मेदार है स्त्री अपनी जिम्मेदारी समझे, अपनी शक्ति को संचित रखे। गीता में कहा है स्त्री में विकृति से वर्ण संकरता आती है और वर्ण संकरता से सन्तान वर्ण संकर होती है और वर्ण संकर सन्तान देश की रक्षा नहीं कर सकती। आज अश्लीलता का मूल कारण स्त्री ही है इस अश्लीलता को दूर करने के लिए स्त्रियों को ही आगे आना चाहिये तभी हम अपनी इस संस्कृति तथा अपने इस राष्ट्र की सेवा कर सकेंगे। 'नारी नारी मत कहो नारी नर की खान, नारी से उत्पन्न हुये राम-कृष्ण भगवान।' इसी के साथ मैं अपने दों शब्द को विराम देती हूँ।

रामानन्दाचार्य जगद्गरु हर्याचार्य जी महाराज (काशीपीठाधीश्वर)

अभी आप बड़ी सुन्दर चर्चा नारी जगत् पर श्रवण कर रहे थे। वास्तव में जो आज वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी जिस रूप में आना चाहती है उसका यह स्वरूप नहीं। जो बच्चियाँ, महिलायें, बहिने नारी के आधुनिक विकास की बाते कह रही है वास्तव में यह बहुत हल्की बातें है। अनादिकाल से वैदिककाल से नारी को जो स्थान हमारे ऋषियों ने महर्षियों ने महापुरुषों ने दिया है वह आज धूल धूसरित किया जा रहा है। हमारे समझ में यह बात नहीं आती कि आज की नारी किसी चीज में आगे आना चाहती है और इससे पहले किसी चीज में वह पीछे थी। तुम्हें मैंने रूद्राणी बनाया तुम्हें ब्रह्माणी बनाया, तुम्हें कात्यायनी बनाया, तुम्हें शची बनाया, तुम्हे सावित्री बनाया। एक नारी का स्मरण करो तो अनन्त नारियों का सौभाग्य दीप्तिमान हो उठता है। सावित्री ने अपने मरे

हुये कुष्ठ पति को यमराज से अपने पतिव्रत धर्म के बल पर पुनः जीवित करा लिया था। आज ऐसी नारी की आवश्यकता है। हमारी बहिनों ने उसको क्यों भुला दिया। बुर्कीग नॉलेज पढ़ करके, तुम्हें तो समाज इलैक्शन में खड़ा कर रहा है, सलैक्शन में खड़ा कर रहा है, कलैक्शन में खड़ा कर रहा है, पब्लिकेशन में खड़ा कर रहा है, तुम्हे तो इस तरह न्यून कर रहा है, इसको तुम समझती हो कि हम बहुत आगे आ गई। तुम आगे नहीं हो। भारतीय संस्कृति में वह नारी है जिसको मैंने सिंह पर बैठाया था, तुम कहती हो पीछे हैं, पीछे अपने को मानने लगी 'तुम्हें मैंने सिंह पर बैठाया था, उसका तात्पर्य यही था कि भारतीय संस्कृति का संचालन कर्त्री तुम साक्षात् भगवती दुर्गा हो। जो भारतीय संस्कृति को आँख दिखायेगा यह सिंह उसकी आँख निकालकर बाहर फेंक देगा। इस रूप में तुम्हे प्रतिष्ठित किया था। आज तुम होटल में बैठना चाहती हो, रेस्टोरेन्ट में बैठना चाहती हो, बस इतना ही तुम्हारा स्वरूप है ? तुम्हे तो सोने के डिबिया में बिठाया था कि सदा तुम चमकती रहो, सदा तुम दमकती रहो, तुम्हारा दर्शन करके पुरुष अपने को धन्य माने, इस रूप में मैंने तुम्हें बना था। आज तुम इलैक्शन में खड़ी होकर पाँच साल के लिये अगर चमक गई- वह चमक किसी काम की नहीं, अपने स्वरूप को तुम सम्भालो। कितनी गायत्री आज समाज में आ रही है, कितनी सावित्री आज समाज में आ रही है, कितनी लोपामुद्रा आज समाज में आ रही है, हैं न आज इसकी आवश्यकता। जब तक इस स्वरूप को तुम नहीं संभालोगी। दहेज कहने से नहीं मिटता है। तुम अपने माता पिता से कहो, स्पष्ट रूप में कि हमको दहेज नहीं चाहिये, हमको मोटरकार नहीं चाहिये, हमको गोदरेज की अलमारी नहीं चाहिये, हमको टीवी नहीं चाहिये। जब कह दिया पार्वती जी की माँ ने बेटी मैं तुम्हें लेके कुँवा में कूद जाऊंगी, आग लगाके जल मरूंगी, लेकिन ऐसे पागल बौरहा से मैं शादी नहीं कर सकती तुम्हारी, जिसके जटाओं में, गले में कितने सर्प घूम रहे हैं, ऐसे औघड़, ऐसे पागल से मैं अपनी बेटी का विवाह नहीं करूँगी। पार्वती बोल रही है- रामायण में कि ''जनि लहु मातु कलंकु, करूना परिहरहुए अवसर नहीं, सुख दुःख जो लिखा लिलार हमारे, जाबजह पाउब तहीं' इससे दहेज बन्द होगा। आज की बेटी बोलती है, आज तो गोदरेज चाहिये, अलमारी चाहिये, टी.वी. चाहिये। ये सब लोहे का है और लोहे पर शनि देव का निवास होता है जिस दिन लादकर घर में पहुँचती है उसी दिन टेन्शन प्रारम्भ हो जाता है। इससे समाज को आज बचना चाहिय। आज की बेटी को ऐसा बोलना चाहिये। लेकिन हमें दुःख है कि आज की महिला किस तरह आगे आना चाहती है-वह केवल संसद मैं बैठ जाय, ''कौन्सिल आफ स्टेट एण्ड हाऊस ऑफ कामन'' में बैठ जाये जहां ''जुतऊतल'' हो रहा है, यही करना चाहती है। आज की महिला कहाँ आगे जायेगी ? वह आगे तब थी, जब वेदव्यास बोले थे कि ''या देवी सर्वभूतेषु क्षमा रूपेण संस्थिता। नमस्तयै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः॥ या देवि सर्वभूतेषु-तुष्टि रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः॥ या देवी सर्व भूतेषु पुष्टि रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमोनमः॥ या देवि सर्व भूतेषु श्रद्धा रूपेण संस्थिता। नमतस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै-नमो नमः॥ तीन बार नमस्कार किया था वेदव्यास ने, इस अर्थ में कि वास्तव में तुम तुष्टि हो, तुम पुष्टि हो, तुम क्षमा हो, तुम धरित्री हो तुम करित्री हो, तुम भरित्री हो, तुम संघारित्री हो, तुम्हें इस रूप में मैने प्रतिस्थापित किया था। जिसका पाणिग्रहण करके पुरुष अपना सौभाग्य मानता था आज वह नारी किस चीज में आगे आना चाहती है ? ये मेरे समझ से बाहर है। केवल इस अर्थ में अगर वह आगे आना चाहती है कि पुरुष से मैं प्रतिवाद करूं, तो ये समाज

कट जायगा, बट जायगा और छूट जायेगा, तब ये विमोह नहीं रहेगा, पुत्र का विमोह नहीं रहेगा, पुत्री का विमोह नहीं रहेगा। हमारे यहां तो पुत्री को कहा गया था कि पुत्र एक कुल को तारता है और पुत्री दोनों कुल को तारती है। वह तब धन्य मानी जाती है। एक कुल को तारने वाला पुत्र होता है इसलिये वह अल्प होता है लेकिन पुत्री दोनों कुल का सम्मान जीवन पर्यन्त करती रहती है-दो कुलों को तारती है इसलिए उसको तो मैंने वैसे ही महान बनाया है, उसको तो मैने वैसे ही पूज्या बनाया है। हमारे यहां स्त्री भोग्या नहीं है, हमारे सनातन धर्म में स्त्री सदा आराध्या रही है सदा उपास्या रही है, सदा पूज्या रही है, सदा वन्द्य रही है इसलिये हमारे यहाँ नवदुर्गा के रूप में नारी के स्वरूप को प्रतिष्ठित किया गया है। क्या उससे आगे तुम जा सकोगी? अगर जा सकती हो तो बाहर आकर के बताओ कि इससे कहाँ आगे तुम जाओगी? जिसका वर्णन वेदों में है जिसका वर्णन शास्त्रों में है, जिसका वर्णन पुराणों में है, देवी के जिस रूप को प्रस्तुत किया गया है।

बर्नाडशा, टालस्टॉय जब घूम करके यहाँ से निकले। वह शिकागो जा रहे थे। उस समय उन्होंने देखा कि एक नारी अपने पति के समाधी पर पंखा झल रही है। मोटर रूका कर, महात्मा उतर करके देखने लगे। मैं भारत घूम करके आ रहा हूँ जहाँ नारी को यज्ञ स्वरूपा कहा गया है। ये संकल्प जिस देश जिस सनातन धर्म में होता है, आज मुझे ये फारेन की धरती पर मलिन मालुम पड़ता है। आगे बढ़ करके पूछा 'व्हाट आर यू डूविंग, देवी' तुम क्या कर रही हो? ये ''बैजन'' डुला रही हो अपने पति के समाधि पर कहा ओ यू नो रात्रि को बारह बजे मेरा विवाह होने वाला था और इसके साथ मेरा ''प्रोमिस'' था कि जब तक मेरी कबर सूख नहीं जायगी तब तक तुम अन्य विवाह नहीं कर सकती हो। इसलिए मैं इसको हवा देकर सुखा रही हूँ कि जल्दी सूख जाय और दूसरा विवाह कर लूं। इस अर्थ में आगे आना चाहती हो? इस अर्थ में आगे आना चाहती हो तो नारी का अस्तित्व, व्यक्तित्व और कृतित्व तीनों मिट जायगा।

शक्ति और शक्तिमान कभी भेद रूप में नहीं, सदा अभेद रूप में रहे। यही कारण है कि भारत की धरती में उनका सदा पूजन होता रहा है। पहले सीता तब राम, उठाकर पढ़ों वाल्मीकी रामायण, गीता व शास्त्रों को भूलकर सौ वर्ष का इतिहास पढ़ करके जो तुमने आगे आने, आगे आने, आगे आने का रट सीखा है ये सब बेकार है ये सब कूड़ा करकट है इसमें कोई तथ्य नहीं जिस दिन तुम स्वछन्द हो जाओगी तुम्हारा अस्तित्व समाप्त हो जायगा। पुरुष से संयुक्त होकर ही तुम्हारा अस्तित्व और व्यक्तित्व समाज में निखरेगा। इसलिए इसको आज भी अक्षुण्ण रखना परम आवश्यक है। यदि इसको तुम नहीं रख सकोगी तो तुम्हारा स्वरूप गिर जायगा। शक्ति, शक्ति कहते हो शक्ति, बिना शक्तिमान के सुशोभित नहीं होती। जितने अवतार है ये सब पात्र हैं उनमें बिलसित होने वाली जो शक्ति है, वो तुष्टि है, वो शरणागति है, वो सब कुछ है यदि वह नहीं रहेगी तो शक्ति, शक्तिमान हो ही नहीं सकता। तुमको लेकर के ही पुरुष शक्तिमान है और तुम उससे अलग हो जाओगी तो पुरुष स्वरूप जगत मुर्दा हो जायगा तब तुम भी कहाँ राहेगी? बिना पुरुष के तुम्हारा स्वरूप नहीं चल सकता तुम नहीं चमक सकती। तुम्हारी जीवन शक्ति जो है वह पुरुष है उसको तुम काटने का प्रयास न करो। तुम्हें तो मैंने माता बनाया है तुम्हें तो मैंने बहिन बनाया है तुम्हें तो मैंने बेटी बनाया है, जब मैं यज्ञ करता हूँ तब तुम्हें मैं पत्नी रूप देखता हूँ। जब सृष्टि करता है पुरुष तब कान्ता रूप में देखता है जब जन्म ले कर रोता है तो माता के रूप में देखता है, विपत्ति के समय में वह बहिन के रूप में देखता है और दान के समय में वह बेटी के रूप में देखता है क्या इस संबंध को तुम समाप्त करना चाहती हो। यह संबंध अक्षुण रखना ही पड़ेगा तभी भारत का

भाल ऊँचा होगा। ''फारेन'' की नारी वास्तव में चीनी की प्याली है जो पच्चीस विवाह करने के बाद अपने को ''एडवान्स'' मानती है। लेकिन भारत की नारी उस मिट्टी की बनी है, जिसका एक बार वरण हो लिया एक पुरुष को स्वीकार कर लिया वह अपने अस्तित्व को मिटा देती है पतिका अंग-बन जाती है दूसरे के होठ से लगने का प्रयास नहीं करती है ये तुम्हारा स्वरूप है। और उस स्वरूप को तुम अक्षुण रखो, यदि तुम उस स्वरूप को अक्षुण नहीं रख सकीं तो तुम्हारा अस्तित्व समाप्त हो जायगा।

कौन कहता है कि तुम शिक्षा ग्रहण न करो, आज भी शिक्षा ग्रहण कर रही है लड़कियाँ लेकिन पहले जितनी शिक्षा ग्रहण की थी स्त्रियों ने उसके बराबर में आज नहीं ग्रहण कर रही है। मैत्रैयी से शास्त्रार्थ करने वाली मैत्राणी ने अपने पति से शास्त्रार्थ किया है। पहले विवाह होता था तब विवाह पूर्व कन्यायें शास्त्रार्थ करती थी आपने पढ़ा होगा। पहले शास्त्रार्थ करके वर विजय प्राप्त करता था तब उसको कन्या वरण करती थी। और आज तीन हिस्सा नंगी हो करके वह जाती है। विवाह मण्डप में फोन करती है, कि आ रही हूँ अभी ब्यूटी पार्लर में बैठी हूँ, हैं न, तब विवाह होगा, इसी अर्थ में ''एडवान्स'' होना चाहती हो, इसी अर्थ में आगे आना चाहती हो ? यह तुम्हारा आगे आना नहीं हुआ। इसलिए इस प्रकार की बातों को समाज में बढ़ा करके, स्त्री का जो स्वरूप है, देवि का जो स्वरूप है उसको विकृति न किया जाय' यह मेरा निवेदन है और अपना विचार है। इसलिए कि तुम्हारा स्वरूप जो हमने निर्धारित किया है, हमारे ऋषियों ने निर्धारित किया है वह बहुत ऊँचा स्वरूप है। तुम्हें तो मैंने हीरा का कनी बनाया है। तुम्हें हमने भोग्या नहीं माना है। यहां लक्ष्मी बनाकर हम यह कहा करते हैं कि 'इलेक्ट्रान, प्रोट्रान और न्यूट्रान' तीनों है, इलेक्ट्रान पार्वती शक्ति है, पोषकशक्ति है, और 'न्यूट्रान' जो है लक्ष्मी शक्ति है, और प्रोट्रान जो है वह पृथ्वी शक्ति है। पृथ्वी सीता के रूप में, लक्ष्मी जल के रूप में और पार्वती पर्वत के रूप में ठोस के रूप में तीनों हैं और आज का विज्ञान जड़ रूप में तीनों को कहता है। लेकिन हमारा रामायण विज्ञान तीनों को चेतन शक्ति के रूप में समाज में स्थापित करता है, कृपा रूप में स्थापित करता है। वह कृपा तुम छोड़ देना चाहती हो। वह कृपा न रहेगी तो तुम कहाँ बैठोगी ? तुम्हारा जगह कहाँ है ? यह हमको बता दे कोई! नारी कि जगह कहाँ है, कहां बैठकर तुम सुशोभित होवोगी ? कालिदास की नायिका चौराहे पर बैठी है, तुलसीदास जी की नायिका मर्यादा रूपी गृह में बैठी है- तभी उसकी शोभा है- 'सखिन मध्य सिय शोभित कैसे, छविगण मध्य महाछवि जैसे।' महाछवि का जो तुम्हारा स्वरूप है वो न्यून छवि में न लाओ, लावोगी तो तुम्हारा अस्तित्व समाप्त हो जायगा। इस रूप में नहीं, तुम वहाँ ठहरों, जहाँ तुम्हारा स्वरूप है जहाँ से तुम सुशोभित हो सको। 'वाम भाग शोभित अनुकूला, शक्ति छवि निधि जग की मूला।' तुम तो संसार की मूलाधिष्ठात्री हो, हल्की होना चाहती हो। तुमने ध्रुव दिया है प्रहलाद दिया है। ये जो दिखाई पड़ रहे हैं संसार में महापुरुष लोग, हम लोग कहाँ से आये है यह तुम्हारे साँचों की देन है यदि इसको विकृत कर दोगी, तुम्हारा स्वरूप समाप्त हो जायगा। इसलिए देवि के रूप में समाज में प्रतिष्ठित रहो। जिसकी मर्यादा नहीं है वह कैसी नारी। पन्द्रह विवाह यह आलोचना नहीं है, पन्द्रह विवाह करने के बाद ''फॉरेन'' की नारी अपने को कृतार्थ मानती है, लेकिन भारत की नारी कुशा और कलश लेकर के यज्ञ के रूप में पिता जब दान कर देता है उस दिन से पति उसका आराध्य होता है। यही स्वरूप सदा नारी का रहा है, और भारत का यही स्वरूप है, इसको अक्षुण करने के लिए हमारे ऋषियों, मुनियों, महात्माओं, महापुरुषों ने सतत प्रयत्न किया है। उसको

विकृत न करो। यह हाथ जोड़कर मेरा निवेदन है। आज इसकी आवश्यकता है यदि ये नहीं रहेगा तो हमारा अस्तित्व समाप्त हो जायगा इन्हीं शब्दों के साथ मैं अधिक न कह करके अपनी वाणी को विश्राम देता हूँ- हरि ऊँ तत्सत्-

श्रीमती कमलेश कुमारी (अध्यक्ष, मातृशक्ति सम्मेलन) - किशनगढ़

जिस प्रकार आज का यह भव्य सनातन धर्म सम्मेलन और निम्बार्क भगवान् की ५१०० सौ वीं जयंती का भव्य समारोह होने जा रहा है इसे देखकर मुझे प्रतीत हो रहा है कि संपूर्ण सलेमाबाद ही नहीं, अपितु किशनगढ़ क्षेत्र कृष्णमय, भगवानमय, राधेमय, हो रहा हैं। 'लाली मेरे लाल की जित देखूँ तित लाल, लाली देखन मैं गई मैं भी हो गई लाल।' संपूर्ण गाँव आज श्री राधाकृष्णमय प्रतीत हुआ लग रहा है। सभी भक्तजनों को मैं पुनः निवेदन करना चाहती हूँ और जिस प्रकार आज इस आपाधापी के युग में धर्म पर जो संकट आ रहे हैं, धर्माचार्यों पर जो संकट आ रहे हैं और जो हमारी संस्कृति पर कुठाराघात हो रहा है इसे देखकर हृदय में बहुत ही पीड़ा का अनुभव होता है। किन्तु साथ-साथ ही एक आशा की किरण भी प्रतीत होती है। जिस प्रकार से प्रसव के समय वेदना को सहते हुये माता एक उज्ज्वल शिशु की, एक चन्द्र मुख शिशु की, कल्पना में उस पीड़ा को सहज स्वीकार कर लेती है सहज सह जाती है उसी प्रकार से ये अभी हमारे धर्म के ऊपर चारों तरफ से पाश्चात्य सभ्यता के, पाश्चात्य संस्कृति द्वारा जो कुठाराघात हो रहा है और हमारे नौजवान और नौजवान बालिकायें इस भुलावे में बहती हुई चली जा रही है इसे देखकर मुझे आज काफी असंतोष तो होता है। गीता में कहा गया है-**'यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत अभ्यु त्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्'** जब जब भी धर्म की हानि होती है और अर्धम बढ़ने लगता है तब तब भगवान इस संसार में प्रकट होते हैं, दुष्टों का विनाश करने के लिए और धर्म को वापस प्रतिष्ठित करने के लिये। तो अब यह जो काल चल रहा है-पूरा ही संक्रमण काल चल रहा है आगे आने वाला हमारा सुनहरा भविष्य है। भारत वर्ष जगद्गुरु बनने जा रहा है हिन्दुस्तान सभी देशों में सर्वोपरि रहेगा, जगद्गुरु रहेगा और इसको मैं विश्वास के साथ कहना चाहुँगी, निवेदन करना चाहुँगी। हमारे यहाँ के जो सन्त महात्मा है, जो यहाँ के जगद्गुरु हैं गुरुजन हैं, उनका जो प्रयास हो रहा है और उनको जो आध्यात्म के प्रति अटूट विश्वास है और जगत् के प्रति सम्वेदना है इसे देखकर निश्चित रूप से यह लगता है कि आने वाला भविष्य हिन्दुस्तान के लिये बहुत ही सुनहरा होगा।

मुझे जो विषय दिया गया है नारी शक्ति। महिलायें यहाँ पर सब विराजमान हैं और अतीत काल से ही महिलाओं का बहुत ही गौरव पूर्ण इतिहास रहा है। गार्गी, मैत्रेयी ने वेद की ऋचायें लिखी हैं और लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती के रूप में तीन महाशक्तियों के रूप में नारी को प्रतिष्ठित किया गया है। इसके उपरान्त सीता, अनुसूया, सावित्री अनेक अनेक ही विदुषी इस भारत में जन्म लिये हैं। भक्ति के मार्ग में मीरां जो हमारे यहाँ राजस्थान की ही बेटी थी उनका अद्वितीय स्थान रहा है। महिलाओं का जो गौरपूर्वण इतिहास रहा है और उसके बाद आज ये जो महिलाओं का स्वरूप दिखाई दे रहा है, शिक्षा के क्षेत्र में महिलायें अभी काफी आगे हो गयी हैं और काफी वो सर्विस करना-अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करना चाहे खेल जगत हो, डाक्टर हो, इंजीनियर हो, कलाकार हो, पत्रकार हो, हर क्षेत्र में महिलायें पुरुषों के कंधे से कंधा मिला कर खड़ी हैं। किन्तु उनकी जो वास्तविकता उनका जो गौरव था, उनका जो एक तरह से श्रृंगार था छूटता जा रहा है। आज महिलायें कम से कम वस्त्रों में हमें दिखाई देती हैं ऐसा क्यों हो रहा हैं,

तुलसीदास जी महाराज ने कहा है किं, 'विधु वदनि सब भाँति संवारि, शोभत वसन बिना वर नारी,' वस्त्रों के अभाव में महिलायें कभी भी कदापि सुन्दर नहीं लगती अपने, सौंदर्य का प्रदर्शन अपने शरीर का प्रदर्शन इस प्रकार से होता दिखाई देता है कि बहुत ही शर्म से और लज्जा से हमारा सिर झुक जाता है। महिलाओं का ये स्वरूप इसके पीछे हमे देखना होगा कि क्या कारण है, ऐसी क्यों हमारे समाज में विकृति कहां से आ रही है सीता को गौरवपूर्ण स्थान मर्यादा पुरुषोत्तम राम के संग है, राधा जी भगवान् कृष्ण की पत्नी इनको सबसे पहले भगवान कृष्ण ने पूज्य दर्जा दिया था कि, ''राधे तू बड़भागिनि कौन तपस्या कीन तीन लोक चौदह भुवन पति सो तेरे आधीन'', राधेजी का जो दर्जा था कि भगवान् कृष्ण संसार के स्वामी अखण्ड ब्रह्मांड के स्वामी वो आज उनके आधीन हैं। ऐसी क्या शक्ति थी महिलाओं में जो कि पुरुष को अपने अन्दर बाँधे रखती थी और आज हम प्रताड़ना, हम तिरस्कार और उपेक्षा की पात्र बनती जा रही हैं, इसके पीछे हमें कारण को ढूंढ़ना होगा। ये जो समाज की विकृति है इसको हमें उखाड़ के फेंकना होगा। महिलाओं का पहले जो स्वयंवर हुआ करता था और उसमें जहाँ कहीं जो राजा शक्तिशाली थे वह अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते थे, जो विद्वान थे वो अपने शास्त्रार्थ के द्वारा अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करते थे और जब कोई महिला चाहती थी तो उसका स्वयंवर करती थी और आज अपनी लड़की को हम टोकरे में बिठाके जगह-जगह दिखाते फिरते हैं कि हमारी लड़की को आप पसंद कर लीजिये और आप पसंद कर लेंगे तो आपको मनचाहा हम दहेज भी देंगे और उसके उपरान्त जो भी उनकी मांग होती है उसे हम पूरा करते हैं। हम हमारी बेटियों का सम्मान नहीं करते और इसी के पीछे ये जो कारण है दहेज का दहेज का दहेज के कारण ही आज महिलाओं की इतनी दयनीय स्थिति हुई है अशिक्षितो है ही पर साथ ही साथ यदि दहेज का ये जो हमारे समाज का दोष है, दुर्गुण है यह हम हटा दें तो हमारी महिलाओं की काफी सम्मानजनक स्थिति हो जायगी और जो भ्रूण हत्यायें भी हो रही हैं, अभी मेरे से पूर्व वक्ता सुश्री डॉ. प्रभा जी ठाकुर ने कहा था भ्रूण हत्या पर उन्होंने विशेष ध्यान विशेष जोर दिया था, जो भ्रूण हत्यायें हो रहीं है उस पर भी नियंत्रण लगेगा। दहेज का हम यह तो नहीं कह सकते कि तुम दहेज मत दो या मत लो किन्तु हम इतना तो और आज आप यहाँ इस सम्मेलन में, इस धर्म सम्मेलन में आप सब पधारी हुई है अपना उद्धार करने के लिए अपने मन के कलुष और कलमष का परिष्कार करने के लिए आप यहाँ पधारी हुई हैं और आपने अपने जीवन को उज्ज्वल बनाने के लिए, सफल बनाने के लिए आप यहाँ पधारी हैं तो कम से कम मैं ये निवेदन करना चाहुँगी कि यह एक संकल्प तो आप लेकर ही जायं कि जो कोई दहेज देता है या लेता उसको महिमा मण्डित मत करिये उसका जो प्रदर्शनकर्ता है उसका गुणगान मत करिये, ये हमारी बहिनों में मैं खासतौर से कहना चाहती हूँ। उनकी कमजोरी मैं अनुभव करती हूँ क्योंकि मैं भी एक महिला हूँ और महिलाओं के बीच में ही मुझे ज्यादा जीवनयापन करने का अवसर मिलता है। शादी विवाहों में जाने का अवसर मिलता है जो कोई बहू ज्यादा दहेज लेकर आती है तो उसकी मौहल्ले में, अपने रिश्तेदारों में, बहुत ही प्रशंसा की जाती है कि वो फलाँ की बहू इतना लेके आई है इतना ससुरे के लिए लाई है इतना कैश दिया है और मोटर गाड़ी दी है और ये दिया है, वो दिया है, इतना सोना दिया है, इतनी चाँदी दी है इस तरह की हमें क्या आवश्यकता है, दिया होगा, तो उसके पास है दे दिया होगा, उसने अपनी बेटी को देदिया उसको अपना रिश्ता करना था दे दिया हमें बखान करने की या हमें उसको महिमा मण्डित करने

की क्या आवश्यकता पड़ गई। जो दहेज दिखाता है कोई दहेज टीका दस्तूर ले जाता है उसका भी प्रदर्शन करते हैं और उसको सारे थालों में सजाके और वो दिखाते हैं और दिखाने के बाद में सारों को इकट्ठा करते हैं कि हम इतना दे रहे हैं, आप अपने समधी को दे रहे हैं जंवाई को दे रहे हैं हमको इसमें क्या मतलब हैं क्या लेना देना है हम क्यों चर्चा करें इसकी महिमा करें। किन्तु ये हमारी एक कमजोरी है हम बहुत ज्यादा इस बात का महीनों तक हफ्तों तक जिकर करते रहते हैं। यह तो हम कम से कम छोड़ ही सकते हैं कि हम कोई जो देता है या लेता है उसके बारे में हम ज्यादा जिकर नहीं करें ज्यादा ठीक है कोई दिया, कोई नहीं दिया उसका वो जाने, उसका घर जाने हमें तो कोई दिया नहीं और हमें लेना भी नहीं हैं। तो इस प्रकार गिर जायेगी दहेज की प्रथा, ज्यादा से ज्यादा बढ़ती जा रही है, बढ़ती ही जा रही है कोई कम नहीं हो रही है। हालांकि ये समाज सेवी संगठन काफी दहेज के ऊपर कहते हैं कि दहेज बंद करो, बंद करो, ये करो, वो करो, किन्तु दहेज बंद होने की जगह उल्टा बढ़ता जा रहा है इसके पीछे यही कारण है कि हम लोग उस दहेज को बहुत ज्यादा बढ़ा चढ़ा के उसका गुणगान करते हैं बहुत ज्यादा महिमा मण्डित करते हैं तो इस तरह की प्रवृति को हमें छोड़ना चाहिये इसमें हमारा कोई लेना देना नहीं है दहेज आप चाहें बंद करें या न करें वह एक बहुत मुश्किल बात है कि किस तरह से अपने किसी कन्या का विवाह करना होता है तो उसमें मुश्किल है कि आप को दहेज देना ही पड़ेगा जो एक रिवाज है बहुत से ऐसे लोग हैं जो बिना दहेज के भी शादी करते हैं वो बहुत ही साधुवाद के पात्र हैं धन्यवाद के पात्र है। जो बिना दहेज के अपनी लड़की का लड़के का रिश्ताकरता है तो उन्हें महिमा मण्डित करना चाहिये हमें, हमें ये नहीं करना कि कोई बढ़ा चढ़ाके बात करें साथ ही, महिलाओं के और भी अनेक कई विकृतियाँ है महिला समाज में। उनकी उन त्रुटियों को हमें हटाने के लिए हमेशा प्रयास एवं प्रयत्नशील रहना है हमारी बच्चियों को लड़कों से किसी प्रकार कम नहीं समझना चाहिये। हमारे लड़की लड़के दोनो ही हमारी संताने हैं किन्तु समाज में जो विकृति आ रही है और जो महिलाओं के प्रति जो कुठाराघात हो रहा है उसको देख करके इस पीड़ा से हम पीड़ित भयभीत होके और फिर हम ये ऐसे कुकृत्य भ्रूण हत्या जैसे कुकृत्य करने लग जाते हैं नहीं तो हमें ऐसी कोई आवश्यकता नहीं होती समाज में। और ये जो सलेमाबाद में भव्य आयोजन हुआ है संत समागम हुआ है पूज्य ''श्रीजी'' महाराज की असीम अनुकम्पा से ये लाभ ये शुभ अवसर हमें मिला है इस अवसर का हम भरपूर आनन्द उठाये, लाभ उठायें। संत तो हमेशा ही अमृत रस की वर्षा करते रहते हैं। भगवान जिस प्रकार प्राणी पर, मनुष्य पर हमेशा से ही परम दयालु, परम कृपालु रहता है संतो के माध्यम से उसकी कृपा हमें निरन्तर मिलती रहती है निर्झर की तरह हमेशा मिलती रहती है उस अमृत का हमें, पूर्ण परिपूर्ण तरीके से पान करना है। इस सम्मेलन में आप लोग सभी पधारे और मुझे जो ये सम्मान और अवसर दिया इसके लिए मैं हृदय से आभार व्यक्त करते हुए पुनः महाराज श्री के चरणों में नमन करती हूँ।

युवराज श्री श्याम शरण देव जी, निम्बार्काचार्य पीठ

प्रातः स्मरणीय आचार्य चरण, परम पूज्य श्री रामानन्दाचार्य जी महाराज एवं समुपस्थित परम भावुक भक्त महानुभाव और आज जिनके लिये विशेष कार्यक्रम रखा गया है, मातायें। आज परम प्रसन्नता है कि आचार्य श्री ने आज के दिवस को मातृशक्ति सम्मेलन के रूप में समायोजन किया। हमारी सनातन धर्म संस्कृति में जो माता का स्वरूप है वह किसी वाणी का माध्यम नहीं है।

हमारी संस्कृति में ऐसी ऐसी मातायें हुई है कि जिनके चरित्र से हमें इतनी शिक्षा पाप्त होती है कि हम अपने जीवन को कृतार्थ कर सकते हैं। जैसे कि हमारे पूर्व वक्ता बता चुके है, माता सीता जिनका नाम आज पूरा संसार गुणगान करता है, माता अंजनी जिन्होंने भक्त प्रवर हनुमान जी को जन्म दिया। ''जननी जने भक्त जन, कै दाता कै सूर'' ऐसे ही हमारी अंजनी माता जी थी। और जहाँ तक मुझे याद है माता अनसूया जिन्होने ब्रह्मा, विष्णु, महेश को अपने घर में बालक के रूप में स्थापित किया क्या यह, किसी पुरुष ने करके दिखाया, अभी तक तो नहीं यह गौरव माता जी को ही प्राप्त है। माता, सावित्री जिन्होंने यमराज से अपने पति के प्राण वापस लेकर आईं, ये गौरव भी माता जी को ही प्राप्त है। कभी कोई पति अपनी पत्नी के लिये यमराज से युद्ध करने नहीं गया। आजकल तो क्या प्रक्रिया चल रही है अभी, मैंने कुछ दिवस पहले अखबार में पढ़ा-पति-पत्नी में थोड़ा सा झगड़ा हो गया तो पति बोला-हे भगवान् मुझे ऊपर उठाले तो पत्नी कहती है इन्हें क्यों उठाता है मुझे उठाले, तो वह पति बोला अच्छा तो भगवान् इसे ही उठाले। तो कहने का तात्पर्य माता की जो गरिमा है माता की जो प्रतिष्ठा है सबसे उच्ची है हमारी संस्कृति में परंतु जैसा कि हमारे आचार्य श्री ने कहा कि मातायें पुरुषों से आगे निकलने की जो बात कर रही है, उसमें इन्हें थोड़ा विचार करना चाहिये क्यों कि समन्वय भाव से ही हम लोग सुसंस्कृत समाज की प्रतिष्ठा कर सकते हैं ये मेरी भावना हैं इन्हीं भावों के साथ मैं आपनी वाणी को विराम देता हूँ।

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

समुपस्थित समस्त महानुभावो। हमारे समक्ष आज का ही प्रसंग नहीं है, कल प्रातः काल और अपरान्ह में दो विशिष्ट सम्मेलन सम्पादित हुये, कल हम अतिकाल होने के कारण से कहने में अग्रसर न हो सके। कल पूर्वान्ह में 'शिक्षा सम्मेलन' था और अपरान्ह में 'संस्कृत एवं संस्कृति' सम्मेलन था और आज ये मातृशक्ति सम्मेलन का ये पावन अवसर है। ये तीन प्रसंग हमारे सामने हैं। तीनों ही प्रसंग के संबंध में सूत्रात्मक अपने भाव अभिव्यक्त करेंगे।

कल शिक्षा सम्मेलन का समायोजन था बड़े विशिष्ट मूर्धन्य वरिष्ठ उत्कृष्ट विद्वज्जनों ने संत महात्माओं ने और हमारे जगद्गुरु वरेण्य श्री रामानन्दाचार्य जी महाराज ने अपने दिव्यभाव अभिव्यक्त किये। शिक्षा के संबंध में यों तो सबसे पहले जब यह प्राणी जन्म लेता है, जन्म धारण करता है, माता की उदर दरी से जब इस भूतल पर, तो सर्वप्रथम उस बालक को अपनी माता के परम पावन अंक में उसके पावन क्रोड़ में उसकी पावन गोद में बैठने का सौभाग्य मिलता है। और माता शनै-शनैः उस बालक का सम्पोषण करते हुये उसका सम्यक् मार्ग दर्शन करती है। उसको सुन्दर भगवत्परक, भक्ति परक,-प्रभु की मंगलमयी गाथाओं को श्रवण कराके उसके सुन्दर उज्ज्वल संस्कारों को उत्पन्न करती है। इसीलिए हमारे यहाँ कहा गया है कि सबसे पहला यदि प्रथम कोई गुरु है तो वह माता है। हमारे वेदादिशास्त्रों के यही वचन है-सबसे पहला वचन है 'मातृदेवो भव' माता का स्थान सबसे प्रथम, तब कहा गया 'पितृ देवोभव' और उसके बाद कहा गया 'अतिथि देवो भव' और फिर अन्त में कहा गया 'आचार्य देवो भव' गुरु का स्थान, सबसे पीछे। सबसे प्रथम स्थान सबसे प्रथम यदि कोई गुरु है, दिव्य ज्ञान जहाँ से प्रकट होता है वह माता है। माता उनके कष्टों को सहन करके अपने समस्त परिवार का सम्पोषण करती है, उसका मंगलमय स्वरूप है। तो सबसे प्रथम शिक्षा मिलती है माता के द्वारा उसके बाद पिता के द्वारा उसके अनन्तर फिर शिक्षा प्राप्त होती है गुरु के द्वारा। गुरु के भी दो रूप हैं एक शिक्षक एक

आध्यात्म गुरु होते हैं। जो शिक्षक हैं, विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कराते हैं वहाँ हमें शास्त्रों का ज्ञान होता है, किन्तु जीवन का हमारा कल्याण कैसे हो? जिस भूतल पर हम जन्मधारण किये हैं केवल जीवनयापन मात्र हमारा कर्त्तव्य नहीं कि हम धन का संग्रह कर लें संसार के नाना प्रकार के पदार्थों का संग्रह कर लें, इसका कोई महत्व नहीं है, आद्यशंकराचार्य जी महाराज ने बड़ा सुन्दर भाव व्यक्त किया है, इस संबंध में- **'शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं यश श्चारुचित्रं, धनं मेरु तुल्यं'**, शरीर बहुत सुन्दर है अत्यन्त सौन्दर्य सम्पन्न है इसी प्रकार कलत्रादिकों का भी ऐसा सुन्दर स्वरूप है और अपार सम्पदा है, मेरु पर्वत के समान विपुल सम्पदा है प्रतिष्ठा है, यश है कीर्ति है ये सब कुछ प्राप्त कर लेने पर भी यदि **'हरेरं घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं'** यदि भगवत् चरणारविन्दों में मन समासक्त नहीं हुआ, प्रवृर्त नहीं हुआ, भगवत् चरणारबिन्द मकरन्द पान करने के लिए ये मन मयूर अग्रसर नहीं हुआ, तो ''ततः किम् ततः किम् ततः किम्'' सारे वैभवों को सम्पदाओं को सब कुछ प्राप्त कर लेने पर भी उसका कोई महत्व नहीं। ये हमारे जगद्गुरु शंकराचार्य जी महाराज ने संकेत किया। तो सबसे पहले शिक्षा, हमें माता के द्वारा मिलती है उसके बाद पिता के द्वारा उसके अनन्तर फिर शिक्षक के द्वारा और तब अध्यात्म विद्या का उपदेश करने वाले हमें अध्यात्म गुरु मिलते हैं, उनके द्वारा मार्ग प्राप्त होता है जिससे हमारे जीवन का कल्याण होता है। और ये सबने किया है आरम्भ से सारे संपूर्ण शास्त्रों का सार समस्त धर्म ग्रन्थों का आप मनन करें, अष्टादश-पुराणों का मनन करें और हमारे जितने भी सूत्र तंत्र ग्रन्थ हैं उनका मनन करें, महाभारत का मनन करें, सर्वत्र, इस प्रकार के सारे प्रसंग हमारे सामने, स्पष्टतः परिलक्षित हैं।

शिक्षा का स्वरूप इतना सुन्दर होता है, जिसके संबंध में हमारे, जिनका आज ये पाँच हजार एक सौ वाँ जयन्ती समारोह यहाँ पर सम्पन्न हो रहा है, ये चल रहा है आयोजन, वे सुदर्शन चक्रावतार श्री भगवन्निर्म्काचार्य श्री इस भूतल पर प्रकट हुये और उन्होंने संपूर्ण विश्व को सबसे पहले क्या शिक्षा का दान दिया है उनका एक बड़ा लघुकलेवर ग्रन्थ है जिसका नाम है **वेदान्त-कामधेनु दश श्लोकी** केवल दस ही श्लोक हैं। उन दस श्लोकों में सबसे पहले उन्होंने शिक्षा प्रदान की है, कि ये जीव अपने स्वरूप का ज्ञान करे अपने दश श्लोंकी के अन्तिम श्लोक में संकेत किया है- **''उपास्य-रूपं तदुपासकस्य च कृपाफलं भक्तिरसस्ततः परम्। विरोधिनो रूपमथैतदाप्तेर्ज्ञेया इमेऽर्था अपि पञ्च साधुभिः॥''** इन पंचार्थ का ज्ञान हृदय में चिन्तन करके और अवधारण करना चाहिये। सबसे पहले हम उपासक के स्वरूप को समझें, उपासक जीव का क्या स्वरूप है- जीवात्माका क्या स्वरूप है। यह शिक्षा, सबसे पहले हम हमारे स्वरूप को समझें। उसके लिये आपने प्रथम श्लोक से जीव के स्वरूप का निरूपण किया-द्वितीय श्लोक से भी जीव का निरूपण किया। दो श्लोको से आपने आत्म तत्व का निरूपण किया, जीवात्मा का क्या स्वरूप है सबसे पहले यही शिक्षा आप प्रदान कर रहे हैं, **'ज्ञान स्वरूपञ्च हरेरधीनं, शरीर संयोग वियोग योग्यम्। अणुं हि जीवं प्रति देहभिन्नं, ज्ञातृत्ववन्तं यदनन्तमाहुः॥'** दूसरे श्लोक से आप संकेत करते हैं, **'अनादिमायापरियुक्तरूपं, त्वेनं विदुर्वै भगवत्प्रसादात्। मुक्तं च बद्धं किल बद्धमुक्तं प्रभेदबाहुल्यमथापि बोध्यम्॥'** इन दो श्लोको में आत्म तत्व का इतना सुन्दर, इतना समीचीन, इतना अनुपम, आपने सूत्र दिया है। जिस पर हमारे, आपकी ही परम्परा में चौथी पीड़ी में होने वाले आचार्य प्रवर श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने 'वेदान्त रत्न मंजूषा' नामक विस्तृत व्याख्या का प्रणयन किया, उसमें बड़ा विस्तृत विवेचन है इन दो श्लोको पर ही जीवात्मा ज्ञान स्वरूप है और ज्ञानाधिकरण

भी है और प्रत्येक देह में भिन्न है, ये अणु स्वरूप है, क्योंकि नैयायिक जीवात्मा को विभु मानते हैं आपने वहाँ पर 'अणु' शब्द का प्रयोग किया है।

जिस प्रकार पान में चूना प्रयोग किया जाता है कत्था का प्रयोग किया जाता है, सुपारी इत्यादि अन्य पदार्थ डालते हैं। कत्था का रंग भिन्न होता है। चूना का रंग भिन्न होता है और पत्र है उसका रंग हरित होता है हरा होता है, किन्तु व्यक्ति जब उसका सेवन करता है, चरवण करता है उसके बाद उसमें लालिमा, लाल रंग उत्पन्न हो जाता है। ऐसे ही सौत्रान्तिक वैभाषितक लोकामत ये जीवात्मा का स्वरूप ऐसा ही मान लेते हैं। इसी प्रकार से जीवात्मा प्रकट हो गया ऐसा मानते हैं इसका श्री निम्बार्क भगवान ने बड़े अच्छे रूप में उसका परिहार किया है- तो इसलिए आपने वहाँ पर 'अणु' का प्रयोग किया प्रत्येक में और फिर वो ये मानते हैं जैसे विभु मानने वाले नैयायिक जो तार्किक हैं, यदि चींटी के शरीर में जीवात्मा ने प्रवेश किया तो चेंटी जितना हो गया यदि हाथी के शरीर में जीवात्मा ने प्रवेश किया तो वह हाथी जितना बड़ा हो गया जिसका उपचय-अपचय होता है उसका विनाश होता है जो घटता और बढ़ता है उसका संहरण हो जाता है। इसीलिए आपने बतलाया कि प्रत्येक शरीर में भिन्न होता है, और फिर वो 'अणु' होता है, वो अणु है, सूक्ष्म है, और वो सूक्ष्म कैसा होता है कि जैसे ये शिक्षा दे रहे है श्री निम्बार्क भगवान, वो कैसा होता है जैसे त्रस रेणु होते हैं, त्रस रेणु उनको कहते हैं जैसे आपके घर में कोई छिद्र हो या कुछ गवाक्ष, गवाक्ष कहते हैं जैसे झरोका हो उसमें से कोई थोड़ा प्रकाश, घर में एक कमरा है, अंधेरा है, और उसमें बहुत सूक्ष्म रूप से प्रकाश ने प्रवेश किया, सूर्य के प्रकाश ने तो उस समय वह एक धारा की तरह दिखाई पड़ती है, और आप सब देखते हेंगे, बहुत बारीक बारीक कण होते है बहुत छोटे छोटे, बहुत ही, ये तो सब अनुभव करते हैं, निरन्तर वह उड़ते रहते हैं उनको कहते हैं त्रस रेणु, वो निरन्तर यहाँ पर भी हैं वहां पर भी यह सारे संसार में व्याप्त हैं जहाँ आप हम सब बैठे हैं यदि दुर्वेक्षण यंत्र से आप देखेंगे तो ऐसा लगेगा कि जैसे आंधी आई हुई हो। यहाँ पर सर्वत्र वो निरन्तर उड़ते रहते हैं उस त्रसरेणु को खण्डित करके उसका दो भाग करें, दूसरे भाग को फिर 'कल्पितस्य च' उसका फिर सौ भाग करें ऐसे करते करते सौवाँ अन्तिम हिस्सा हो उसका भी सौ भाग करें, फिर उसका सौवाँ भाग करें इतना सूक्ष्म अणु जीव का स्वरूप बतलाया गया है। इसका संकेत कर रहे है श्री निम्बार्क भगवान् और फिर आगे चलकर के दूसरे श्लोक में आप संक्षेप में संकेत कर रहे हैं।

कि ये जीवात्मा 'अनादिमायात्परियुक्त रूपं' यह प्रभु की 'अघटन घटना पटयसी' अविद्याकर्मात्मिका त्रिगुणात्मिका ये अचिंत्य, अनिर्वचनीय जो माया है उससे सदा परिवेष्टित है, उससे आछन्न है, उससे परिव्याप्त है, अत: अपने स्वरूप का परिज्ञान नहीं कर पाता है और इसी का संकेत श्रीमद्भागवत में भी '**विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत्। ये संपूर्ण चेतना चेतनात्मक**' जगत् प्रभु की अचिंत्य अनिर्वचनीय अघटघटनापटीयसी माया, उस माया से ही उस त्रिगुणा त्मक माया से ही जीव आच्छन्न है, परिव्याप्त है अपने स्वरूप का ज्ञान नहीं कर पाता है। 'अनादिमायापरियुक्त रूपं-तो बोले कैसे कर सकता है जिसके लिए स्वयं श्रीमद्भगवद् गीता में भगवान् श्याम सुन्दर ने संकेत किया है-दैवीह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया, मेरी माया बड़ी दुरत्यया है इसको पार पाना बहुत कठिन है इसका सम्यक् परिज्ञान संभव नहीं है और इस माया के संचंक्रमण में सारे संसार के प्राणी अपने आपके स्वरूप का परिज्ञान नहीं कर पा रहे हैं, तो फिर कैसे हो, श्री निम्बार्क भगवान् ये आदेश, कर रहे हैं और भगवान स्वयं श्री कृष्ण भी अर्जुन को उपेदश कर रहे हैं महाभारत के उस संग्राम के अवसर पर जहाँ अठारह अक्षौहिणी

सेना एकत्रित है महाभारत की वह समरभूमि जहाँ श्रीमद्भगवत् गीता का पावन उपदेश, दोनों ओर सेनायें खड़ी हैं मध्य में प्रभु हैं अर्जुन को गीता का उपदेश कर रहे हैं और उसमें आपने संकेत किया कि, **मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।** जब अर्जुन ने कहा भगवन् आपकी माया ऐसी है जब माया से प्राणी प्रताड़ित रहता है अपने स्वरूप का ज्ञान नहीं कर पाता है तो फिर कैसे करेगा? माया का जब इतना प्रबंल स्वरूप है तो फिर ज्ञान कैसे होगा जीव का कल्याण कैसे होगा? तो प्रभु ने संकेत किया कि **मामेव ये प्रपद्यन्ते माया मेतां तरन्ति ते,** जो मेरे अनुगत हो जाते हैं मेरे प्रपन्न हो जाते हैं, मेरे शरण हो जाते हैं, मेरा अवलम्ब ले लेते है, मेरा आश्रय ले लेते हैं, मेरे प्रति समर्पित हो जाते हैं, वे एक कदम आगे बढ़ाते हैं तो मैं सौ कदम आगे बढ़ता हूँ और उनको हृदय से लगाता हूं। ये प्रभु की प्रतिज्ञा है। तो ये **अनादिमाया परियुक्तरूपंत्वेनं विदुर्वै भगवत्प्रसादात्,** यहां श्री निम्बार्क भगवान ने भी संकेत किया है कि **त्वेनं विदुर्वै भगवत्प्रसादात्,** भगवत् कृपा, इसीलिये वेदों ने संकेत किया है-भगवती श्रुति-प्रतिपादन करती है- **नायमात्मा प्रवचनेनलभ्यो नमेधया न बहुनाश्रुतेन यमेवैष वृणुते तेन लभ्य स्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनुं स्वाम्**

कोई ये समझता हो कि मैं बहुत सुन्दर अपने दिव्य वाणी के द्वारा सबको प्रभावित कर सकता हूँ और सब प्रसन्न प्रमुदित हो जाते हैं, तो प्रभु प्रसन्न हो जायेंगे, तो ऐसा संभव नहीं है, नायमात्मा प्रवचनैनलभ्य, नमेघया, कोई समझें कि मेरी कुशाग्र बुद्धि है सूक्ष्म बुद्धि है, मेरी सदसद् विवेकनी बुद्धि है इसके प्रबल प्रताप से मैं उस परब्रह्म परमात्मतत्व का परिबोध कर लूंगा तो बोले ये भी संभव नहीं है तो फिर कैसे हो, तो जिन पर वो स्वयं अपना कृपा कटाक्ष कर दें अपनी कृपा कादम्बिनी का अभिवर्षण करके उसको आप्लावित कर दे, वह ही उनके स्वरूप को जान सकता है, समझ सकता है श्रीनिम्बार्क भगवान् ने इन दो श्लोकों में शिक्षा के संबंध में, शिक्षा परक ज्ञान, ज्ञान हमें कैसे अर्जन हो, हमारा स्वरूप हम कैसे समझे, उसके बाद उपास्य का स्वरूप भी, विरोधी तत्व क्या है और कैसे हमारे जीवन में आते हैं उसके लिए भी संकेत किया। प्रसंग बहुत लम्बा है कम से कम इन तीन विषय के लिए तीन घन्टे तो चाहिये तीन प्रसंग है उसके लिए सूक्ष्म रूप से भी वर्णन किया जाय तो कम से कम तीन घंटो की आवश्यकता है, पर ऐसा हम कर नहीं सकते इन प्रसंगों को न लेकर के शिक्षा के संबंध में कुछ चिन्तन करते हैं-

शिक्षा का इतना विचित्र स्वरूप है कि जिससे हमारे जीवन की दिशा स्वस्थ होती है, हम अपने लौकिक जगत् में भी अपना कार्य सम्पादित करते हैं शिक्षा के माध्यम से और हमारे परमार्थ का जीवन अध्यात्म का भी जीवन केवल इस संसार में रह करके संसार के ही कार्य करते रहे इसके लिए यह मनुष्य शरीर नहीं मिला है। यह ''ग्रामं गच्छन् तृंण स्पृशाति'' एक गाँव से दूसरे गाँव जा रहे हैं जाना अभीष्ट हमको यहाँ से किशनगढ़ जाना अभीष्ट हैं मार्ग में दूसरे गाँव आ गये उनसे स्पर्श हो गया या कोई तृण मिलन या किसी से स्पर्श हो गया या कोई परिवार मिल गया उससे वार्ता हो गयी-उसका यह लक्ष्य नहीं लक्ष्य है कि किशनगढ़ जाना। जीवन में मानव का उद्देश्य है भगवत्प्राप्ति। जो वस्तु जहाँ से आती है वहीं जाने पर उसको शाश्वत शान्ति मिलती है जो वस्तु जहाँ से आती है वहां पर जाने से उसको परम शान्ति मिलती है। जैसे उदाहरण के लिए जब सूर्य मण्डल की तीव्र किरणें व्याप्त होती हैं उस समय उनकी प्रखर किरणों के द्वारा जल का आकर्षण होता है-मेघ मालाओं का निर्माण होता है-मेघमाला अभिवर्षण करती है वर्षा करती है और जल भूतल पर विस्तृत होता है और वो गंगा, कृष्णा, कावेरी, सरयू, इन पुण्य सलिलाओं के माध्यम से प्रवाहित होता हुआ जल समुद्र में आता

है। समुद्र से जल का आकर्षण होता है मेघ के रूप में परिणत होता है और सूर्य के ताप के द्वारा फिर ऋतु अनुसार अभिवर्षण करते हैं वर्षा करते हैं, और वह जल समुद्र से आता है, वर्षा होने पर भूतल पर आता है और वह इन पुण्य सलिलाओं के माध्यम से नदियों के माध्यम से और फिर पहुँचता है अन्ततोगत्वा समुद्र में। जब तक समुद्र की उपलब्धि नहीं कर लेता तब तक सतत अनवरत उसको चलना पड़ता है कहीं उसको विश्राम नहीं, शान्ति नहीं। ऐसे ही हम अनन्त अनन्त जीव हैं, अनन्त अनन्त प्राणी है हमारा उद्‌गम स्थान वे सर्वनियन्ता सर्वान्तरात्मा सर्वाधिष्ठिान सर्वज्ञ भगवान जो जगत जन्मादि हेतु हैं जो अकारण करुणा वरुणालय हैं जो निखिल जगत् अभिन्न निमित्तो पादान कारण हैं जो क्षुरादऽक्षरातीत है उनकी जब तक हम उपलब्धि नहीं कर लें जहाँ से हम आये है-''ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।'' हम उनके अंश है और जब तक अंश अपने अंशी को प्राप्त नहीं कर लेता तब तक उसका कल्याण नहीं हो सकता। इसलिये अंशी के प्राप्त करना यह सबसे बड़ी शिक्षा की बात है, तो यह इस प्रकार विस्तृत प्रसंग है अधिक प्रस्तुत नहीं करना है। शिक्षा का प्रसंग चला जिससे हमारी जीवन की दिशा स्वस्थ बनती है ये लौकिक कार्य भी चलता है और पारमार्थिक भी हमारा कल्याण होता है।

दूसरा विषय चला अपरान्ह में 'संस्कृत और संस्कृति'। संस्कृत भाषा कितनी अनुपम है कितनी विलक्षण है जिसमें हमारा संपूर्ण ज्ञान विज्ञान निहित हैं। वेदों से लेकर हमारे जितने भी तंत्र ग्रन्थ है सूत्र ग्रन्थ हैं, स्मृति-ग्रन्थ हैं, पुराण ग्रन्थ हैं जितने भी हमारे धर्म शास्त्र हैं उन सबमें कितना गहन चिन्तन कितना अद्‌भुत विचार किया गया है। आप विष्णु पुराण देखें, नारद पुराण देखें, ऐसी ऐसी औषधियों का वर्णन है यदि किसी को सर्पदंश कर जाये तो अमुक औषधि के सेवन से तत्काल, उसके सेवन से उसी क्षण वह स्वस्थ हो सकता है। हमारे यहाँ वेदों में अमृत संजीवनी का वर्णन आता है मृत्यु के बाद वह प्राणी जीवित हो सकता है क्या? महाभारत में भी यह प्रसंग आता है, परन्तु विस्तृत है अभी यहाँ पर बोलेंगे तो लम्बा हो जायगा। महाराज युधिष्ठिर जी ने पितामह भीष्म से यह प्रश्न किया कि भगवन् जब प्राणी शरीर का त्याग कर देता है, प्राण विसर्जन हो जाते हैं मृत्यु उसकी हो जाती है तो मृत्यु के बाद में क्या फिर जीवित हो सकता है। यह जिज्ञासा की उसका भीष्म पितामह ने बड़ा सुन्दर उदाहरण दिया। परंतु अभी कहने में विलम्ब हो जायगा। इसलिये यह संपूर्ण ज्ञान विज्ञान सब कुछ हमारे संस्कृत में निहित है संस्कृत का ज्ञान होना नितान्त अपेक्षित है। हमारे समस्त धर्म ग्रन्थ संस्कृत में निबद्ध हैं, ये देववाणी है, देव भाषा है, परम वन्दनीया है, संस्कृत को कहते हैं कि संस्कृत भाषा संस्कृत है, संस्कृत है संस्कार किये हुये है। जैसे पारद है 'पारा' जिसको पारा कहते हैं यह हमारे महन्त जी महाराज यहाँ विराजमान हैं ये पारा का संशोधन करते हैं ये हृदय के विशेषज्ञ है और न जाने शरीर की कितनी ही व्याधियाँ सबका निराकरण करते हैं आप और पारद का शोधन करते हैं पारद के सोलह संस्कार होते है। जब अन्तिम सोलहवां संस्कार शास्त्रांगपूर्ण सम्पादित हो जायं तो शास्त्र बतलाते हैं आयुर्वेद में संकेत है कि उसकी बूटिया हाथ में लेने पर अकाश में उड्डयन शक्ति प्राप्त हो जाती है आकाश में व्यक्ति उड़ सकता है। गोली को लेकर के आकाश में उड़ सकता हैं कहीं भी जा सकता है अर्न्तध्यान हो सकता है। 'बद्धः, खेचरतां धते', पक्षियों को भी 'खेचर' बोलते हैं, 'खग' कहते हैं। खग जो आकाश में विचरण करें तो ये शक्ति उत्पन्न हो जाती है। अपने नारद पुराण और विष्णु पुराण दोनों में विज्ञान वृतान्त है। ये सारे संस्कृत में हैं हमारे सुश्रुत, चरक, भैषज्य रत्नावली, बागभट्ट, माधवनिदान, चक्रदन्त आदि न जाने कितने

ऐसे ऐसे आयुर्वेद के शास्त्र हैं। कभी कभी कोई लोग कह देते हें कि आपके ये ऋषि मुनियों ने अपने संस्कृत का गुणगान कर दिया है ये सब महिमा अभिव्यक्त कर दी है, परन्तु स्वस्थ चित्त से आप विचार करके देखें कहते हैं इन मंत्रों में क्या शक्ति होती है, मंत्रों में क्या विशेषता है, संस्कृत में जो वेदों में जो अनेक मंत्रों का वर्णन है उससे क्या होता है?, कुछ नहीं होता, आप अनुभव करने जब गुरुद्वारा प्रदत्त मंत्र जो वेद विहित है, परम्परा प्राप्त है, आचार्य परम्परा सम्यक् प्रकार से हमें प्राप्त हुआ है उस मंत्र का हम सम्यक् प्रकार से अनुष्ठान करें तो उस मंत्र का फल हमको निश्चित प्राप्त होता है। आप कहेंगे ये कैसे प्राप्त होता है हम तो कभी अनुभव नहीं करते। हमारे यहाँ शब्द को ब्रह्म भी माना है आकाश का धर्म शब्द है शब्द गुणकेआकाशं, आकाश का धर्म शब्द माना गया है यदि एक शब्द हम ऐसा उच्चारण करें, आपके सामने, कोई अपशब्द का उच्चरण करदें, अपवित्र शब्द का उच्चारण कर दें, असंगत शब्द का उच्चारण कर दें, अश्लील शब्द का उच्चारण कर दें तो आप जितने भी बैठे हैं, सबके हृदय में विपरीत धारणा हो जायगी। एक शब्द के उच्चारण करने पर आपकी भावना विपरीत हो जायगी और एक शब्द ऐसा उच्चरण करें, कहीं भक्ति की रसमयी धार बहे,प्रभु का चिन्तन कराये रस की धारा प्रकट करे जिसके स्वयं के अथवा हजारों लाखों श्रोता बैठे हुये हैं दर्शक बैठे हुये हैं उनके नेत्रों से भी अश्रुधारा बह जाती है एक शब्द ही तो उच्चारण करना है। एक शब्द का प्रभाव जहाँ वीरता का प्रसंग आता है शौर्य का प्रसंग आता है उसका जब उच्चारण करता है तो फिर उस समय सबके हृदय में आक्रोश आता है, वीरता का भाव उत्पन्न होता है शब्द का प्रभाव है तो, क्या मंत्रों का प्रभाव नहीं हो सकता है एक साधारण शब्द का ऐसा प्रभाव फिर क्या मंत्र में शक्ति नहीं है मंत्रों में अपार शक्ति है और ये सब मंत्र हमारे संस्कृत में है। संस्कृत ने सब कुछ प्रदान किया है और इस संस्कृत भाषा का यदि प्रचार नहीं हुआ तो हम यह बारबार कहते हैं कि आज ये जो वर्तमान समय में विद्वान् हैं आज के बीस या पचास वर्ष बाद आपको पूजा पाठ कराने वाला व्यक्ति मिलना दुर्लभ हो जायगा। आज भी समस्या कठिन है जब विवाह होते हैं अथवा दीपावली का पर्व आता हे तो पण्डित नहीं मिलते पूजन कराने वाले लोग खोजते रहते हैं कि कोई मिल जाय कहीं पर, ये समस्या है। तो हम तो कहते हैं कि परिवार वालों का कर्त्तव्य है कि दो बालक हैं तो एक बालक को तो कम से कम संस्कृत पढ़ाओं, जिससे कि आपकी भाषा का ज्ञान, आपकी भाषा का सम्यक् ज्ञान करें। एक यहाँ के जायसवाल गये विदेश में, ये लन्दन की बात है, गुजरात के थे और वे जब पहुँचे तो एक महानुभाव और थे साथ में, उनको संस्कृत का सामान्य ज्ञान भी था वहाँ के एक प्रोफेसर से सम्पर्क हुआ। उन्होंने कहा हमारा विद्यालय है आप चल करके देखिये वो गये महाविद्यालय देखा वहाँ पर देखा श्याम पट्ट जो लगे हुये है उनमें सब में अपने यहाँ के पाणिनी व्याकरण के सूत्र अंकित हैं। वे देख करके आश्चर्य में पड़ गये कि पाणिनी व्याकरण के सूत्र यहाँ पर अंकित, उन अंग्रेज छोटे-छोटे बालको ने, जिसमें एक हजार बालक अध्ययन कर रहे थे उन्होंने जिज्ञासा की, भारत से आये हैं और ये संस्कृत में कुछ बोलेंगे तो हम देववाणी सुनेंगे हमको आनन्द मिलेगा ऐसा सोच करके उन्होंने आग्रह किया आप थोड़ा संस्कृत में हमें थोड़ा बोल करके बताइये। जायवाल जी बोले मैं टूटी फूटी साधारण संस्कृत बोल सकता था किन्तु मेरे साथ वाला व्यक्ति नहीं बोल पाता, संस्कृत का ज्ञान नहीं था अब उन बालकों की इच्छा की पूर्ति हम नहीं कर सके तब अंग्रेज बालकों ने ये दुःख प्रकट किया कि आप भारत के है और संस्कृत नहीं बोल सकते है थोड़ा बहुत तो हम भी बोलते हैं आपस में संस्कृत, उन्होंने ये

कहा। एक ब्रह्मचारी जी थे हरदा में मध्यप्रदेश की घटना है, हम गये हुये थे आयुर्वेद के चिकित्सक, वयोवृद्ध वे उनकी अवस्था थी दो सौ वर्ष की, जो नब्बे-नब्बे वर्ष के सौ-सौ वर्ष के व्यक्ति थे वो कहते थे कि हम इनको ऐसे ही साठ वर्ष के से देखते आ रहे हैं, ऐसा जब हमने भी देखा तो लग रहा था कि साठ वर्ष के से हैं। आश्चर्य की बात है ये फाल्गुन का महीना था भगवान् की संध्या आरती हो चुकी थी, संकीर्तन कर चुके थे और अन्दर बैठे हुये थे वे पधारे और मिलना हुआ अकस्मात् अंधड़ आया, वर्षा होने लगी और तीव्र वायु का वेग तो ब्रह्मचारी जी तत्काल उठे और बाहर गये बाहर जाकर के तीन बार ताली बजाई, जो तीव्र वायु का वेग था उसका उसी समय अवरोध हो गया एक क्षण मात्र में हम सब चकित रह गये। ब्रह्मचारी जी ने एक घटना सुनाई कि मैं फ्रान्स गया था और फ्रान्स में मैने एक पुस्तकालय देखा और उस पुस्तकालय, में जो वहाँ के संचालक थे उन्होंन ला करके एक रजत मंजूषा, चाँदी की एक पेटी मेरे सामने रखी, मैंने उसको खोला, उसको खोल करके देखा तो उसमें एक स्वर्ण की पेटी, सोना की बनी हुईपेटी उसकों खोल करके देखा तो उसमें मखमल वस्त्र इतना सुन्दर दर्शनीय पीत रंग, का उसको खोल करके देखा, तो उसमें श्रीमद्भगवतगीता-श्रीमद्भगवतगीता देख करके ब्रह्मचारी जी बोले, मेरे नेत्रों से अश्रुधारा बह पड़ी कि यहाँ परराष्ट्रों में श्रीमद्गीता का इतना बड़ा समादर और हमारे यहाँ के एक विशिष्ट नेता जब गये तो वहाँ के मूर्धन्य अंग्रेजों ने एक प्रश्न किया कि आप रामचरित्रत मानस के सबंध, में भारत से आये हैं, कुछ बताइये ? तो उन्होंने कहा रामचरित्र मानस कौनसा ग्रन्थ है हमको मालुम नहीं यहाँ से जो गये शीर्षस्थ नेता, मूर्धन्य नेता उन्होंने कहा कि रामचरित्र मानस कौन सा ग्रन्थ है हमको मालूम नहीं, तो उन्होंने कहा आश्चर्य है। जिस रामचरित मानस का विश्व की संपूर्ण भाषाओं में अनुवाद हो चुका है, सारा विश्व जिस मानस से परिचत है भारत में आपने जन्म लिया और आप मानस से अपरिचित बड़ा गहन दु:ख प्रकट किया उन्होंने, तो कहने का तात्पर्य है हमारी संस्कृत भाषा, में अनन्त ज्ञान विज्ञान निहित है उसका परिज्ञान होना नितान्त अपेक्षित है।

एक छोटा उदाहरण दे माता की जो महिमा है वो हमने आरम्भ में भी कह दी संक्षेप में, और यहाँ पर अनेक विदुषी माताओं ने उनका सारभूत, तथ्यपूर्ण, शास्त्र मर्यादित संपूर्ण भाव बता दिया। हमारे जगद्गरु वरेन्य श्री रामानन्दाचार्य जी महाराज ने तो सब कुछ यहाँ उड़ेल दिया, इसके बाद कहने की कोई अपेक्षा ही नहीं होती फिर भी संक्षेप में कहे जिनकी अध्यक्षता में ये सम्मेलन संपन्न हुआ उनके ही परिवार में उनके पूर्वज यही किशनगढ़ के नरेश श्री नागरीदास जी महाराज, जिनका पूर्व नाम सावंत सिंह जी और उनकी माता बाँकावती जी, और बाँकावती जी का दूसरा नाम एक ब्रज कुँवरी और एक नाम उनका बृजदासी, जिन्होंने यहीं अपने आचार्यपीठ में पूर्वाचार्य प्रवर श्री वृन्दावन देवाचर्य जी महाराज से मंत्रोपदेश लिया। यहां से उत्तर दिशा में रूपनगढ़ है यहाँ से पास में ही, बहुत निकट रूपनगढ़ के किला में उस माता व्रजवासी ने बैठ करके श्रीमद्भागवत जिसमें अट्ठारह हजार श्लोक हैं, उसका उन्होंने ब्रज भाषा में, कुछ राजस्थानी भाषा से मिश्रित पद्यानुवाद किया, बीस हजार छन्दो में यह पद्यानुवाद तो माता क्या नहीं कर सकती है माता में तो अजेय शक्ति है। जिस समय जगद्गरु शंकराचार्य जी महाराज शास्त्रार्थ करते हुये अपने अद्वैतवाद का प्रचुर प्रचार प्रसार करते हुये जब मिथिला भूमि में पहुँचे तो वहाँ पर सबने कहा कि मण्डन मिश्र को जब तक आप पराजित नहीं कर दें तब तक आपकी विजय कैसे मानी जायेगी। मण्डन मिश्र के यहां जाने के पनघट पर पनहारियाँ जल भर रही थीं, मातायें जल भर रही थी। उन माताओं से जिज्ञासा की इसमें संस्कृत की भी बात आ जायगी और माता की भी

बात आ जायगी तो माताओं से पूछा कि मण्डन मिश्र का स्थान कहाँ पर है मातायें कहती है ''स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं कीरांगना यत्र गिरोगिर वे स्वतः, प्रमाण है परतः प्रमाण है'' और जहाँ पर जिस स्थान पर तोता, तोता ही नहीं तोतियाँ, तोता की मातायें, जहाँ पर वेद ये अध्यात्म की चर्चा कर रही हों दार्शनिक चर्चा कर रही हों पक्षीगणों में जहाँ कीर शब्द का प्रयोग नहीं किया है वहां वीरांगना कहा है, कीरागंना बैठ कर के जहाँ अध्यात्म चर्चा कर रही हो वह ही मण्डन मिश्र का धाम है ही मण्डन मिस्र का स्थान है, वो ही उनका आश्रम है ही घर है। वहाँ पहुंचे और वहां शास्त्रार्थ में जब शंकराचार्य जी ने मण्डन मिश्र को पराजित कर दिया। तब उनकी पत्नी ने कहा कि अभी ये पराजित नहीं हुये। मैं स्वयं बैठी हूँ ये मेरे साथ पूर्ण हैं मुझे पराजित करिये। जब उनसे शास्त्रार्थ का प्रसंग चला, भामिती जिनका नाम था, उन्होंने जिस समय शास्त्रार्थ किया और जब ऐसा कोई गहन रहस्यात्मक प्रश्न किया जिसका काम से संबंध रहता है, ऐसा एक प्रश्न किया वह बाल ब्रह्मचारी थे उसका उनके लिए समाधान करना कठिन हो गया, तो उस समय शंकराचार्य जी ने कहा कि मैं अभी इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता पीछे आकर के दूँगा। अपने शिष्यों से कहा, कि मैं शरीर का परित्याग करूंगा और अन्य में प्रवेश करके उस रहस्य कों समझ करके और जबतक मैं नहीं आजाऊं तब तक इसशरीर को सुरक्षित रखना तेल में रख करके ये सुरक्षित रहे इसकी हानि न हो जाय॥ ऐसा ही हुआ एक राजा का शरीर का त्याग हुआ। उसमें उन्होंने प्रवेश किया। शरीर पुनः जीवित हुआ और अब राज्य का संचालन होने लगा, आश्चर्य जनक हो गया कि वही राजा थे और मृत्यु के बाद में फिर जीवित हो गये, यह एक आश्चर्य जनक घटना हुई और वहां पर संपूर्ण उन गुप्त रहस्यों को समझ करके पुनः आकर के अपने उस शरीर में शंकराचार्य जी ने प्रवेश किया। उस राजा का निधन हो गया। जा करके मण्डन मिश्र के यहाँ पहुँचे और भामती को फिर उत्तर दिया मातायें क्या नहीं कर सकतीं। ऐसे जगद्गुरु वरेण्य उनको भी आश्चर्य में पटक दिया। माताओं में तो अपार शक्ति है वो क्या नहीं कर सकती हैं। हमारे यहाँ तो राधा कृष्ण कहते हैं, सीता राम कहते हैं, लक्ष्मी नारायण कहते हैं, और उमा महेश्वर कहते हैं। पहले माता का नाम आता है पीछे उन अखिल ब्रह्माण्ड कोटि भगवान सर्वेश्वर का नाम आता है। शक्ति के बिना शक्तिमान् का कोई महत्व नहीं। पृथ्वी में गंध धर्म है पृथ्वी में यदि गंध धर्म न हो तो पृथ्वी का कोई महत्व नहीं, शब्द धर्म आकाश का है शब्द धर्म यदि आकाश में न हो तो वह आकाश नहीं तो फिर उसका कोई महत्व नहीं, अग्नि में दाहकत्व धर्म है, जलाने की शक्ति है वो शक्ति न हो तो अग्नि का कोई महत्व नहीं वायु का स्पर्श धर्म है उसमें स्पर्श करने की शक्ति न हो तो उसका कोई महत्व नहीं है।

इस प्रकार शक्ति का सबसे श्रेष्ठ प्राधान्य हमारे समस्त धर्म ग्रन्थों में समाहित है और उस शक्ति की उपासना हमारे यहां तो, आप सब लोग कहते हैं न ''जय-जय श्री राधे'' ऊपर उर्ध्व-भाग होकर राधे बोलते हैं श्याम फिर नीचे लाते हैं 'श्याम' कहते है जब तो नीचे हाथ हो जाते हैं और 'राधे' कहते हैं जब ऊपर हाथ जाता है। ऐसा ही बोलते है न ? शक्ति के विषय में हमारे यहाँ कहते हैं कि 'चरण पलोटत मोहन, प्यारी जूके' भगवान श्री कृष्ण भी अपनी प्रियाजी की चरण वन्दना, चरण सेवा करते हैं। निम्बार्क भगवान् ने संकेत किया है प्रातः स्तवराज में **''प्रेमातुरेण हरिणा सुविशारदेन श्रीमद्व्रजेशतनयेन सदाऽभिवन्द्यम्''**। उन प्रिया जी के राधिका जी के चरण वन्दना भगवान् श्री कृष्ण स्वयं करते हैं तो इससे बढ़ करके माता का महत्व क्या होगा और क्या वर्णन करेंगे। जो जगन्नायक हैं वे भी उनकी वन्दना करते हैं, तो माता की जो महिमा है वो अनुपम है। इन्हीं वचनों के साथ हम विराम देते हैं।

❑❑❑

मानव धर्म सम्मेलन

जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

समुपस्थित समस्त आचार्यप्रवर, सन्त महात्मा, विद्वद्वृन्द, परम भावुक भक्त महानुभाव, भक्तिमती मातायें, आज का दिवस कितना अनुपम है, कितना मधुर है, कितना सरस है, कितना अनिर्वचनीय है उसको व्यक्त करने में हमारी वाणी स्तम्भित हो रही है हमारे सीमित शब्द कोश में कोई शब्द राशि नहीं है। जिन शब्दों को यहां आप लोगो के समक्ष प्रस्तुत करके अपने भावों को हम अभिव्यक्त कर सकें। हमारे अनादि वैदिक सनातन धर्म के महान् स्तम्भ स्वरूप, जिनके द्वारा समग्र विश्व में जैसा कि हमारे यहां का उद्घोष है ''सर्व भूत हिते रता:'' इस पावनविचारको ले करके सर्वत्र परिभ्रमण करके विश्व में जो अशान्ति का सम्राज्य होता जा रहा है उसके निवारण के लिए हम सब में ऐक्य भाव हो हम सब में सौहार्द भाव हो कहीं भी किसी प्रकार की विकृति न हो, इन सब प्रसंगो को ले करके, हमारे ये धर्माचार्य प्रवर सर्वत्र विचरण, करके अपनी दिव्य वाणी द्वारा अपनी दिव्य क्रियाओं के द्वारा सबको आप्लावित कर रहे हैं और उसी संदर्भ में सुदर्शन चक्रावतार श्री निम्बार्क भगवान् जिनकी परम्परा हंस भगवान् से प्रारम्भ होती है। सनकादि महर्षिगण, देवर्षि नारद और नारदजी के परम कृपापात्र श्री निम्बार्क भगवान जिन्होंने आज के पांच हजार एक सौ वर्ष पूर्व इस धराधाम को अलंकृत किया उनकी परम्परामें आगे चल करके आचार्य प्रवर श्री परशुराम देवाचार्य जी महाराज यहां राजस्थान में पधारे इस पुष्करारण्य के क्षेत्र में कोटि-कोटि तीर्थों के गुरु पद पर प्रतिष्ठित तीर्थगुरु श्री पुष्कर और उसके निकटवर्ती क्षेत्र में ये निम्बार्क तीर्थ जो पद्मपुराण में वर्णित है। जिसका निम्बार्क सम्प्रदाय से कोई तात्पर्य नहीं, नाम एक मिल जाने से भ्रान्ति हो जाती है किन्तु पद्मपुराण में इसका वर्णन है। निम्बार्क तीर्थ महात्म्य वर्णनम् एक अध्याय है पूरा। यहां साढ़े पांच सौ वर्ष पूर्व से आचार्यप्रवर श्री परशुराम देवाचार्यजी महाराज जो हमारे रसिक राज राजेश्वर श्रीहरिव्यास देवाचार्य जी महाराज के द्वादश शिष्यों में से थे और तदनन्तर आचार्य पीठ पर आसीन हुये यहां पर उनकी आज्ञानुसार पधारे। यहां पर उस समय तत्कालीन सम्राट् श्री शेरशाह सूरी जब हमायुं को खदेड़ते हुये राजस्थान में आये और ख्वाजा साहब के यहां आकर उन्होंने अपनी मनौती मांगी। उसी संदर्भ में हमारे जोधपुर के पास में खेजड़ला ठिकाना है, वहां के भाटी सरदार सियोजी थे और वे शेरशाह सूरी बादशाह के सेना में उच्च पद पर अधिष्ठित थे, उन्होंने संकेत किया कि आपके कोई संतति नहीं है और जिस भावना से आप इस क्षेत्र में आये है आप आचार्य प्रवर के एक बार दर्शन करें और आप चमत्कार देखें, उनकी कृपा प्राप्त होगी तो निश्चित आपके पुत्र होगा। वे यहां पधारे, आचार्य श्री के दर्शन किये, एक बहुमूल्य दुशाला, बहुत सुन्दर आपके अर्पण किया आचार्य श्री उस समय अपने अग्निहोत्र कर रहे थे। ज्योंही दुशाला अर्पण किया, आपने उसको चिमटा से ले करके उस अग्निकुण्ड में समर्पित कर दिया। हवन कुण्ड में समर्पित करते ही बादशाह के मन में कुछ

विचार हुआ। कैसे अवधूत, कैसे सन्त हैं? हमने बड़ी भावना से इनके अर्पण किया और उन्होंने इस अग्निकुण्ड में इसको प्रविष्ट कर दिया। आचार्य प्रवर ने कुछ ही क्षण बाद संकेत किया कि बादशाह आपके मन में हो सकता है अन्यथा भाव आया हो। हम तो साधु हैं जो भी कोई अर्पित करता है भगवान् के, उसे इसी में अर्पण कर देते हैं। यदि आपको किसी प्रकार का विचार है तो लो। उस समय चिमटा लिया और हवनकुण्ड में से पचासों दुशाले निकाल निकाल कर बाहर रख दिये और कहा आप इसमें पहचान लें आपका कौन सा है। इस चमत्कृति को देखकर बादशाह इतने प्रसन्न हुये और क्षमा याचना करने लगे। वस्तुतः हमारे हृदय में अन्यथा भाव आ गया था किन्तु आप सामान्य नहीं है आपका अद्भुत स्वरूप है। मेरी वाञ्छा है आपका आर्शीवाद मिले मेरे कोई पुत्र हो जाय। आपने कहा ये तो सब सर्वेश्वर प्रभु की कृपा है, हम क्या करेंगे उनकी कृपा होगी। उस समय हवन कुण्ड में से भभूति लेकर के उनको प्रदान की। कुछ ही समय बाद जब उनको पुत्र की उपलब्धि हुई तो उसका नाम रखा सलीम, सलीमशाह। फिर बाद में दुबारा वह आपके पास में आये छः हजार बीघा जमीन गोचर भूमि भेट कीभेट करते हुये बोले कि ''यहां पर एक नगर भी बसाया जाय और उस नगर का नाम आपकी कृपा से आपके आशीर्वाद से सलीम नाम मैंने रखा और आपकी हमारी स्मृति बनी रहे इसलिये इसका सलेमाबाद नाम रखा जाए। आज वही स्मृति वही सलेमाबाद यद्यपि इसके दो भाग हैं एक है निम्बार्क तीर्थ दूसरा नाम सलेमाबाद है।

आज के उन्तीस वर्ष पूर्व यहां विराट् सनातन धर्म सम्मेलन हुआ जिसमें धर्म सम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज भी थे, जगद्गरु पुरीपीठाधीश्वर श्री निरंजन देव तीर्थ जी महाराज, स्वरूपानन्दजी महाराज ज्योतिष पीठाधीश्वर और समस्त धर्माचार्य प्रवर, वैष्णवाचार्य और हमारे समस्त सम्प्रदायों के आचार्य प्रवर यहां विराजमान थे, उस समय हमने यह भावना प्रकट की थी, जगद्गुरु शंकराचार्यजी महाराज को संकेत किया कि इसका प्राचीन पौराणिक नाम ''**निम्बार्क तीर्थ**'' है वह भी इसके साथ संलग्न हो जो सरकारी रिकार्ड में नहीं है। ये उन्होंने घोषणा की दिल्ली संसद से भी यह परामर्श हुआ, केन्द्र से चर्चा हुई और जयपुर मुख्यमंत्री जी से, उस समय जोशी जी थे उनसे चर्चा हुई, बहुत प्रयत्न करने पर भी अभी तक यह कार्य सम्पादित नहीं हुआ। इसके मध्य में श्रीरामकथा का आयोजन हुआ युग सन्त श्री मुरारी बापू के द्वारा तब भी हमारे श्री रमजान खां ब्यावर, उनका पधारना हुआ। उनसे हमने चर्चा की बोले यह तो बहुत सुन्दर है मै प्रयास करूंगा और आप सलेमाबाद नाम नहीं हटा रहे हैं निम्बार्क तीर्थ और सलेमाबाद दोनों का सम्बन्ध है, दोनों का दो विभाग है और यह नाम रहना चाहिये इसके लिए मैं यथेष्ट प्रयास करूंगा और उन्होंने प्रयास किया भी पर अभी भी सफलता नहीं मिली।

आज का दिन यह इतना मंगलमय अवसर हमें मिला है। आज विशिष्ट महानुभाव यहां पर विराजित है ये अगणित जनता समस्त धर्मप्राण महानुभाव हैं और जहां उपराष्ट्रपति यहां पर पधारे मुख्यमंत्रीजी का भी यहां पधारना होगा और धर्माचार्य प्रवर यहां पधारेंगे। इस एक मंच पर हम समासीन हो करके धर्म पर चर्चा करेंगे। आज मानव धर्म सम्मेलन हमारे सामने है। मानवता का क्या स्वरूप है मानवता के स्वरूप को हम समझें। हमारी यहां की वाणी है कि ''**सर्वे कुशलिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद्दुःखभाग्भवेत्**'' ''**वसुधैव कुटुम्बकम्**'' की उदात्त भावना हमारे यहां की है। सर्वभूत हिते रताः की भावना हमारे यहां की है। संस्कृति है एक, प्रभात बेला मे उठ कर जब किसी वृक्ष की शाखा ग्रहण करते

है अपनी दन्त शुद्धि के लिये तो भी प्रार्थना करते हैं कि हम हमारे स्वार्थ के लिये, हमारे दन्त शुद्धि के लिये हम आपकी शाखा लेना चाहते हैं, प्रार्थना करके लेते हैं। किन्तु वर्तमान समय में यह स्थिति चल रही है परस्पर में हिंसा प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है, अश्लीलता बढ़ती जा रही है, उच्छृंखलता बढ़ती जा रही है, अनाचार बढ़ता जा रहा है। इन सबका निराकरण कैसे हो? हमारी मानवता का स्वरूप क्या है? हम समस्त एक मंच पर समासीन हो करके गहन चिन्तन करें और आज ये अवसर हमारे सामने उपस्थित है, आज का दिन कितना अनुपम है। सभी हम समवेत रूप से एक आसन पर यहां बैठ करके गहन चिन्तन करने के लिए तत्पर है।

सौभाग्य की बात है हमारे जगद्गुरु श्री शंकराचार्यप्रवर पुरीपीठाधीश्वर स्वामी श्री निश्चलानन्द जी महाराज ने भी अनुकम्पा करके कितनी दूर पुरी से स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहते हुये पधारे। जब कि आपका कार्यक्रम इस समय श्रृंगेरीपीठ में था। श्रृंगेरी शंकराचार्य जी महाराज से हमारा सम्पर्क हुआ दूरभाष से चर्चा हुई तो उन्होंने कहा कि आप स्वयं यहां आइये, यहां बहुत विशाल आयोजन है, हमने कहा कि हम आचार्य श्री को यहां बुलाना चाह रहे हैं आपका यहां पादार्पण हो। बोले हमारे यहां इस समय बहुत विशाल उत्सव है और उसमें आचार्य श्री के पधारने का है। आश्चर्य की बात है कि आपने उनको भी ये संकेत कर दिया कि हम वचन दे चुकें है, आचार्यपीठ सलेमाबाद के लिए, इसलिए हम श्रृंगेरी नहीं पहुंच सकते, यह कितनी बड़ी एक विलक्षण घटना है। आपका जो पीठ है श्रृंगेरीपीठ जगद्गुरु शंकराचार्य जी महाराज का वहां पर आप न जा करके, वहां के महामहोत्सव का आपने त्याग कर दिया और यहां के लिए आपने समय प्रदान किया, एक अनुपम दिव्य उदाहरण ऐसा मिलना कठिन है। इस अवसर पर हमारे रामानन्दाचार्य जी महाराज आज दो दिन से आप अपनी दिव्यवाणी के द्वारा जो उद्बोधन प्रदान कर रहे है वह कितना अनुपम है। हमारे साथ ही साथ इधर विराज रहे है शाहपुरा पीठाधीश्वर श्री रामदयालजी महाराज, इतने पावन दिव्य आपके यहां पर आयोजन हुआ, हम आमन्त्रित होकर गये और इतना अद्भुत आयोजन वह स्मरण हो रहा है। और भी हमारे सभी वैष्णवाचार्य यहां पर पधारेंगे और आचार्य प्रवर पधारेंगे, हमारे मुस्लिम समाज के, हमारे जैन समाज के, हमारे और सभी आज यहां एक मंच पर हम बैठ करके स्वस्थ चित्त से चिन्तन करेंगे। अब्दुल रहीम खानखाना अपने भाव व्यक्त कर रहे हैं वे कहते है कैसा सुन्दर भाव व्यक्त कर रहे है कि यदि हे सर्वेश्वर, अखिलान्तरात्मा सर्वेश्वर, भगवान् श्यामसुन्दर यदि नवनीत की चोरी करके भागना चाह रहे हैं कहीं छिपना चाह रहे है तो आपको हम बहुत सुन्दर स्थान बतलावें, बोले कहां, ''मनसे मम घनान्धतामसे हे श्याम सुन्दर हमारे जन्म जन्मान्तरों से जो हमारा हृदय वह अंधकार से अज्ञानान्धकार से समन्वित हो रहा है जो गहरा अन्धकार हैं। आप उस हमारे हृदय में आ करके प्रविष्ट हो जाओ यह अब्दुल रहीम खानखाना के वचन है ''मान सक मम घनान्धताम से नन्दनन्दन कथम नलीयसे'' वहां आकर आप क्यों नही छिप जाते, आपको कोई ब्रजगोपी खोज नही सकती कितने सुन्दर भाव कितनी सुन्दर अभिव्यक्ति। आज ऐसे ही सन्त प्रवर हमारे मुस्लिम समाज के विशिष्ट सन्त प्रवर उन का भी यहां शुभागमन हुआ है और हमारे जैन समाज, जहां अहिंसा परमो धर्म, करके कहा है। आज सर्वत्र इस प्रकार वृत्ति जो हिंसावृत्ति चल रहीं है उसके निरोध के लिये सदा परम्परा से जिन्होंने यह उद्घोष किया है आज वे भी यहां पर विराजित हैं। आज समस्त सन्त समाज, विद्वत् समाज बड़े-बड़े मेघावी महापुरुष और आप समस्त परम भावुक भक्तजन और भक्तिमती मातायें यहां समासीन हैं अब हम ऐसे अवसर पर सब

को किन शब्दों में कहें, आपका किस रूप में सम्मान करें, कोई शब्द राशि नहीं है, कोई वस्तु नहीं है। ये अरण्य प्रदेश है, जंगल है, कोई साधन सोपान नहीं है कुछ भी नहीं है, वचनों के द्वारा शब्द भी नहीं है इतने कि वह भी भाव कुछ प्रकट कर सकें। जिस विधा से भी, जिस रूप में भी, आप सबों ने यहां आकरके अनुकम्पा की है, कृपा दृष्टि की है उसके लिये हमारे शब्दकोष में कोई शब्द राशि नहीं जो हम भावों को प्रकट करें। यही है -''**जसहूँ तसहूँ कसहूँ**'' करके जैसे कि हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि ''**जसहूँन, तसहूँ, कसहूँ हरिनाम भजे सो तरे पार उतरे**'' उसी प्रकार से आप भी अपने अनुग्रह प्रसाद से सबकों आप्लावित करेंगे इन्ही वचनों के साथ हम अपने भावों को विराम दे रहे हैं।

श्री मुकुन्द शरणजी :-(नेपाल)

आज मानव धर्म की बात चल रही है। मानव आज विश्व में विभिन्न सम्प्रदाय, विभिन्न धर्म, विभिन्न संस्कृति, विभिन्नजाति, विभिन्न वेषभूषा, विभिन्न देश आदि में विभक्त है और सभी को जुड़ने के लिए सबसे पहले मुझे लगता है कि संसार के सबसे प्राचीन ग्रन्थ, सबसे प्राचीनपुस्तक जिसको मुस्लिम मत के लोग भी स्वीकार करते हैं क्रिश्चियन मत के लोग भी स्वीकार करते हैं विश्व के सभी धर्म के लोग स्वीकार करते है कि संसार का सबसे पुराना ग्रन्थ है वेद। वेद में किसी भी जाति, किसी भी संस्कृति, किसी भी समुदाय के प्रति कोई भेदभाव कोई घृणा कोई वैमनस्य की कोई गंध नहीं मिलती है। वेद सभी के अभ्युदय और सभी के कल्याण की कामना करके, वेद की हमारे ऋषियों ने सबसे पहले रचना की थी। यह वैदिक सनातन धर्म की व्याख्या करते हुए विभिन्न विचार, विभिन्न मनीषी, विभिन्न लोगों ने जो चिन्तन किया वो आगे बढ़ाने के लिए किया है विवाद करने के लिए नहीं किया इस धारणा से ही आगे बढ़ना चाहिये। सभी धार्मिक समुदाय विश्व के सभी धर्म के प्रति श्रद्धावान् जितने भी मनुष्य हैं संसार के, सभी को एक होने का युग है, सभी के समन्वय का युग है। भगवान् निम्बार्काचार्य की चर्चा जगद्गुरु श्री 'श्रीजी' महाराज ने अभी की। यहां स्वयं ही सलेमाबाद और निम्बार्कतीर्थ दोनों नाम से कितने बड़े समन्वय का सूत्रपात हुआ था। आज यह बहुत सुन्दर उदाहरण हमें सुनने को मिला। इस अवसर पर मैं निवेदन करता हूं कि हमें इस समय संसार के सभी धर्मग्रन्थों में हमें जोड़ने के कौन कौन से सूत्र है वो खोजना चाहिये। हमें तोड़ने के सूत्र भी मिल जाय तो उनके प्रति आंखे मूंद देना चाहिये, तोड़ने वाली बातों को छोड़ देना चाहिये और जोड़ने वाली बातों को संकलित करना चाहिये। सबको जुट करके विश्व को सुन्दर बनाना चाहिये। मनुष्य को, किस प्रकार मनुष्य सक्षम हो सकता है, किस प्रकार मनुष्य ज्ञानी हो सकता है, किस प्रकार मनुष्य सचेत हो सकता है, निष्णात हो सकता है। इस तरफ हमें ध्यान देना चाहिये हमें बहुत सुन्दर समन्वय आज देखने को मिला ऐसा ही समन्वय संसार के सभी जगह पर आगे बढ़ता चले। भगवान निम्बार्क सभी को यही सम्मति दें और हमारे जितने भी प्राचीन पूर्वाचार्य है, जिन्होनें इतने मत मतान्तरों का आरम्भ किया था सूत्रपात किया था, कि विश्व को जोड़ने के लिये विश्व को जाग्रत करने के लिये, विश्व की मानवता को उठाने के लिये, उसको और आगे बढाने का दिन, आज का दिन साबित हो यही प्रार्थना करते हुये, मैं विदा लेता हूं।

श्री अनिल जी लोढ़ाः- (भास्कर टी.वी.) जयपुर

मेरे सामने एक बहुत पुराना शेर था जो मैंने बीस-तीस साल पहले सुना था — 'इलाही कुछ दे न देना ही है अगर, इन्सान के पहलूं में इन्सान का दिल दे' आज पूरी दुनियां जिस बड़ी समस्या से जूझ रही है उस का कारण इन्सान के पहलू में इन्सान का दिल नही होना है। हम सब कुछ कर लेते हैं पर इन्सान होने में बहुत जोर आता है। क्यों न कोई मशक्कत ऐसी की जाए, कोई ऐसी बात की जाय, जिससे कि इन्सानियत जिन्दा रह सके इन्सानियत बची रह सके। जो तीन बड़े खतरे मैं देखता हूं मानव सभ्यता के सामने, एक परमाणु युद्ध का खतरा एक शेयर बाजार की लड़ाई का खतरा, और एक अपसंस्कृति का खतरा। जिससे हमारी पीढ़ियां कुचलतीं जा रही है नष्ट होती जा रही है। उनकी भावनायें उनकी परम्परायें उन सबको देखते हुये इन तीन बड़े खतरों से पूरी मानव सभ्यता, पूरा मानव समाज जूझ रहा है, चाहे हिन्दू हो चाहे मुसलमान हो सब इससे जूझ रहे हैं। पूरी दुनियां में नयी पीढ़ी के सामने ये तीन बड़ी समस्या है। क्या करवट लेती हुई दुनियां में जो जो नये आयाम स्थापित हो रहे है विज्ञान रोज नई प्रगति कर रहा है अर्थव्यवस्था करवट ले रही है, सामाजिक संस्कृति बदलाव की दिशा में बढ़ रही है। उसमें नई पीढ़ी के लिये कौन सा सोच विकसित किया जाय कौन से जीवन मूल्य तय किये जायें। और ऐसे जीवन मूल्य जो सब धर्मो के लोगों को, धर्माचार्यों को स्वीकार हों, ऐसे जैसे राजनैतिक दल मिलते हैं सरकार बनाने के लिये तब एक कॉमन मिनीमम प्रोग्राम तय करते हैं। ये बहुत छोटी बात है राजनीतिक दलों से तुलना करना, लेकिन उदाहरण के लिये मैं कह रहा हूँ। न्यूनतम साझा कार्यक्रम जैसे बनता है। इन बातों पर हम सब एक है। मैं ये अनुरोध करना चाहता हूं विनम्र शब्दों में प्रार्थना करना चाहता हूं, एक पीढी आप से ये गुजारिश कर रही है। पूरी की पूरी दुनियां झुलसने वाली है परमाणु युद्ध का खतरा सामने हैं, आर्थिक व्यवस्था की लड़ाई में लोग पिस रहे हैं, भाग रहे है दौड रहे है, गलाकाट प्रतियोगितायें हो रहीं हैं। मनुष्य की जो अगली पीढ़ी है वह निरन्तर अपनी सांस्कृतिक विरासत को भूलती और खोती जा रही है। ऐसे में हम मनुष्यता को कैसे जिन्दा रखें, अगर एक न्यूनतम मानवीय मूल्यवाला कोई कार्यक्रम हम आने वाली पीढी को दे सकें तो हम समझते हैं कि आने वाले पचास साल की दुनियां कैसी होगी, इसकी नींव हम रख सकेंगे। हम अपने आने वाली पीढी को सौप सके ताकि मानवता का मार्ग प्रकाशमान हो, मनुष्यता कभी अंधकार में नहीं भटके। आज बहुत अच्छी बात है कि खाईयां पाटने का दिन है। आइये हम सब एक नई शुरूआत करें, इस निम्बार्कतीर्थ की पुण्य भूमि से। मैं अनुरोध करना चाहुंगा कि यहां के वाद एक बड़ा सम्मेलन जयपुर में हो, एक बड़ा सम्मेलन दिल्ली के विज्ञान भवन में हो और सारे देश के धर्माचार्य मिल करके हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सब मिल करके, पूरी दुनियां के लोग मिल करके यह तय करें कि आने वाले पचास साल मे दुनियां के सामने जो बड़ी बड़ी समस्यायें आने वाली है, हमारी मानव सभ्यता हमारी आने वाली पीढीयां जिसे भुगतनें वाली है, जिसमें झुलस जाने वाली है, कुचल जाने वाली है उनसे बचने का क्या मार्ग निकाला जा सके। आप मार्ग दर्शन दें। प्रणाम

महन्त श्री वृन्दावन विहारी दास, काठिया आश्रम :- (कलकत्ता)

हमारे शास्त्र में लिखा है **''आहार निद्रा भय मैथुनञ्च सामान्यमेतत् पशुभि-र्नराणाम्। धर्मो हि तेषा मधि को विशेषो धर्मेण हीनाःपशुभिः समानाः।।''**,

धर्म से हीन जो होते है उन्हें पशु के समान माना जाता है आहार, निद्रा, भय, मैथुन, सबके लिये ही है एक मात्र मानव के लिये धर्म विशेष है। यह ही मानव धर्म हमारे इस जगत में व्यवहारी है। हमे जब अपने देह व्यवहार में रहेंगे तब हमें पशु कहा जाता है जब हम मन में रहते है तब हमें मनुष्य कहा जाता है, जब हम आत्मा में रहते है तब हमें देवता कहा जाता है। हम देह में रहते तो अपने को पशु जैसा मानेंगे, देह में रहना देह की आसक्ति में रहना वह पशु बराबर है। और मन में रहना मनुष्य के बराबर है, मन जिसके है हम उसे मानुष कहते हैं। और जिनको देवता कहे है वह तो आत्मा में विराजते है। हमारा यह जो मानव धर्म है इस मानव धर्म के दश दृष्टि हैं। लक्षण कहें हैं। इससे संक्षिप्त भी धर्म लक्षण है जिसे अहिंसा, सत्य, अस्तेय, और शौच, इन्द्रिय विग्रह ये पांच मुख्य है। सामाजिक मानसिक मनुष्य का जो धर्म है जो धर्म सभी कोई मानते हैं जैसे अहिंसा, सभी लोग हिंसा का विरोध करते है, जैसे हमारे जैन धर्म में अंहिसा को प्राधान्य दिया जाता है, ऐसे ही सनातन शास्त्र में भी **''अहिंसा परमो धर्मः''** यह कहा गया है। और **'सत्यमेव जयते'** सत्य की जयकार हमारे ही धर्म में केवल नही कहा गया यह सब लोग मानते है यह सत्य सनातन धर्म सदा सदा से है। श्रीमद्भागवत में भी कहा गया है सब कुछ सत्य से ही आया है सत्य में ही लीन होना है। आज के इस धर्म सम्मेलन में सभी कोई उपस्थित है जो सत्य को मानते हैं हिंसा का विरोध करते हैं चोरी न करना कहेंगे और सभी कोई विश्वास मानेंगे, इन्द्रियों का संयम करना है, संयम का जीवन यापन करना है। जिसे मातृशक्ति सम्मेलन में हमारे आचार्य श्री ने कहा था ''शुद्धता सभी धर्मो में मानते है''। आज के इस महाकुम्भपर्व में मानवता पर उदारता पूर्वक जो चिन्तन किया गया है। आज विश्व में सर्वत्र अंशान्ति फैली हुई है इस में विश्वशास्त्र की यह पूज्य श्री श्रीजी महाराज को सब धर्मो के प्रति समन्वय की भावना देने वाला हमारा सत्य सनातन धर्म है। जो कि अनादि अनन्त काल से सभी को समाहित कर चलता है, सहजता है। इस संदर्भ मे एक कहानी याद आती है जब हमारे देश में ईरान से पैरिस से लोग आये तो बम्बई में समुद्र के किनारे किसी व्यक्ति से पूछा हम आपके साथ कैसे रहेंगे। तब उन्होनें कहा -कि आप अगर मिश्री है तो मैं दूध बनूंगा अगर आप दूध है तो मैं मिश्री बनूंगा एक दूसरे का मिश्री और दूध का जो मिलन है इस मिलन के साथ हम इस देश में निवास करेंगे। इस धर्म के संदेश को देने वाला एक मात्रधर्म है, वह है सनातन धर्म। एक कहानी है काशी में एक किवदन्ती के द्वारा बता रहे है। एक वृक्ष था उस वृक्ष में चिड़िया शब्द कर रही थी, उस समय एक पहलवान जा रहे थे। पहलवान से किसी साधु ने पूछा चिड़िया क्या कह रही है और साधु ने कहा चिड़िया कह रही है ''राम-राम रट'' पहलवान ने कहा- नहीं चिड़िया कह रही है ''दण्ड-वैठक-कसरत कर, दण्ड-बैठक कसरत कर'' उसी समय एक खटीक आया, उस से पूछा, चिड़िया कह रही है ''लहसुनः प्याज अदरक, लहसुन प्याज अदरक'' यह तीनों झगड़ रहे थे तो चौथा आदमी आया। इन्होंने कहा हमारा झगड़ा आज मेटो यह चिड़िया क्या कह रही है। उसने कहा सब अपना अपना मतलब अपने मत स्वभाव से ले रहे है, और चिड़िया अपने स्वभावसे बोल रही है। झगड़ा खतम। यही सनातन धर्म का स्वरूप हैं इस स्वरूप को स्वीकार करते हुये मैं विराम देता हूँ।

प्रो. सुभाष चन्द्र धर :- (अगरतल्ला)

सबके पूजनीय श्रीजी महाराज के चरण में मेरा प्रणाम, साधुसंत, एवं भाई बहिनों के चरणों मे मेरा प्रणाम। मैं आता हूँ त्रिपुरा से ढाई हजार किलोमीटर दूरी से पश्चिम दिशा में आये तो सलेमाबाद निम्बार्क तीर्थ

मिले। मैं अंग्रेजी पढ़ाता था बत्तीस साल पढ़ाया कॉलेज में यूनीवर्सिटी में लेकिन हमारे यहां हिन्दी के बोलने का मौका तो नहीं हैं मेरा उमर पचास साल है लेकिन ये पहला मौका मिला मेरा हिन्दी में बोलने का तो मैं क्या बोलूंगा ये तो बात ठोस नहीं हैं, मेरी हिन्दी सुनकर आपको बहुत आनन्द मिलेगा।

कुत्ते का बच्चा को लगता नहीं वो कुत्ता हो जाता है शेर का बच्चा भी शेर हो जाता है लेकिन मनुष्य के बच्चे को मनुष्य बनाना पड़ता है। मैं जिस आंचल से आया हूं वहां प्रयास हो रहा है कि मनुष्य का बच्चा मनुष्य नही हो। तो तीस साल तक हमें नास्तिकता में रखा, वहां धर्म के नाम से उपहास हो जाता है संस्कृति जो विज्ञान को लिखना सके वो भी विज्ञान की बात करते हैं। एक अलग देश है मैं हिन्दुस्थान में हूं लेकिन अंधकार में हूं। आप सभी सज्जन यहां उपस्थित है सबके चरणों में मेरा प्रणाम मेरा निवेदन आप कोशिश तो कीजिए थोड़ी रोशनी हमें भी दीजिये हमे रोशनी की बहुत जरूरत है। ये पूज्यआचार्य चरण ईश्वर के आशीर्वाद रूप है ईश्वर के समान है, आप बोलेंगे, मै थोड़ा ही समय एक छोटा सी कविता बोलुँगा सिक्सटीन सेन्युरी में रिचर्ड लवलिस ने इग्लैण्ड मे यह कविता लिखी, चार ही लाइन है।

''स्टोन वॉल्स डू नॉटस प्रिजन मेक नॉट आइरन बारएकेंज माई डिनोजेन्डन फ्री मेक दैट ऐ हरमीटेज'', पत्थर की दीवार से तो कारागार नहीं बनेंगे, लोहे के सरीये लाये तो भी पिंजर नही बन जायेंगे आपका दिल खुला है तो इन से आपका आश्रम बन जायेगा। सबके चरणों में मेरी निवेदन है आप ऐसा करें कि आपके दिल को हमारे लिए खोले हमारा आश्रम बना दें हमारा आश्रय बना दे। सबके चरणों में मेरे प्रणाम।

श्री पाना चन्द जी जैन :- (सेवानिवृत न्यायाधीश, राजस्थान उच्चन्यायालय)

सर्वप्रथम मैं परम पूज्य भूमि को नमन करता हूं परम श्रद्धेय श्री 'श्रीजी' महाराज जगद्गुरु शंकराचार्य जी श्री हर्याचार्यजी श्री रामदयालजी आप सबको प्रणाम। नमन। मै नमन करता हूं जो विभिन्न धर्मो के जो वक्ता यहां पर मौजूद हैं उनको भी मैं नमन करता हूँ। बन्धुओं आज एक बहुत ही अच्छे विषय पर यह गोष्ठी रखी गई है। गोष्ठी है मानवता की, मानवता जो आज कराह रही है उसे किस प्रकार से संतोष दिया जाय, मानवता को क्या रास्ता दिया जाय, क्या वास्तव में जो इस विश्व में मानवता का विकास हो या हिंसा का विकास हो, ये दो हमारे सामने मार्ग है। हमें एक मार्ग को अपनाना होगा। मैं प्रारम्भ करूंगा कि एक शहर में एक व्यक्ति दिन के बारह बजे एक लालटेन लेकर घूम रहा था। कुछ लोग उसके पीछे दौड़े। पूछे, सूरज भगवान् चमक रहे हैं और तुम लालटेन के उजालें में किसे तलाश कर रहे हो। उस व्यक्ति ने कहा मुझे मानव दिखाई नहीं दे रहा है मैं मानव को तलाश कर रहा हूं मै आदमी को तलाश कर रहा हूं। इनमें कोई भी इन्सान नहीं है इन में कोई मानव नहीं है। अरे ये तो जो है कोई घूसखोर है कोई बदमाश है कोई चोर है कोई आंतककारी है ओर न जाने किस किस प्रकार के शब्दों से उनको सम्बोधन किया। बन्धुओं आज हमें यह देखना है कि उस व्यक्ति, उस दार्शनिक ने जो एक सपना सजोया था जिसे व्यक्ति को देखना चाहता था क्या वह मानव वह इन्सान हम अपने देश में या विश्व में पैदा कर सकते हैं। बन्धुओं सभी धर्मो के धर्मगुरु यहां मौजूद है धर्म का एक ही आवाहन है ''मानव का उद्धार''। इसके अलावा धर्म का कोई दूसरा स्वरूप नहीं है।

प्रत्येक धर्म को अगर हम एक्जामिन करें, प्रत्येक धर्म को हम देखे तो उस धर्म में एक ही बात दिखाई देती है। अगर हम मुस्लिम धर्म को देखें तो कितनी बढ़िया बात उन्होंने कही है कि मुस्लिम धर्म में जिस

दिन कोई व्यक्ति अपराध नहीं करता है वही उसका ईद का दिन है। खुदा के मार्ग पर चलो मार्ग आपका प्रशस्त होगा। आप पुराण में देखो तो पुराणों में अभिव्यक्ति दी है, आचार पर जोर दिया है। आचार सुधारो मनुष्य अपने आप सुधर जाओंगे। आत्मा का दर्शन यही है आत्मा का गुण भी यही है कि अपने आचार को ठीक और आचार को इतना निर्मल प्रबल बना दो, अपने कर्म के बन्धनों को इतना ढ़ीला, कर दो कि आप भगवान् में स्वयं समर्पित हो जाय।। यहूदी धर्म को देखें तो यहूदी धर्म में भी मानवता के सम्बन्ध में बहुत बड़ा संदेश दिया गया है। आप और दूसरे धर्मो में देखेंगे आप अपने सिख धर्म में आचार को सत्य से भी बड़ा रखा है। अभी पूर्ववक्ता ने कहा 'सत्य' ही भगवान् है यह हमारा सनातन धर्म है सत्य को हमने भगवान् का स्वरूप माना है आचार को हमने बहुत ऊंचा स्थान दिया है। मनुष्य मनुष्य में कोई भेद नहीं किया है। भगवान् महावीर हमारे जैन धर्म के एक तीर्थंकर हुये है यों तो जैन धर्म का प्रारम्भ भगवान् ऋषभ देव से हुआ है और ऋषभ देव का वर्णन समस्त पुराणों में मिलता है श्रीमद् भागवत् में मिलता है और सब जगह मिलता है। इसमें हमारे जो आचार्य है हमारे जो प्रथम तीर्थंकर है ऋषभ देव उन्होंने कहा साम्यभाव। हर व्यक्ति के प्रति साम्यभाव रखे। वह पहले व्यक्ति थे कि जिन्होनें इस बात पर जोर दिया कि समाज के लिए कोई भी न छोटा है न बड़ा है सब समान हे सब एक है तो बन्धुओ यह जो भावना आई है। भगवान् महावीर ने कहा आपको कोई भी काम करना है तो उस काम के आगे आप विवेक रख दो। विवेक से खाओ, विवेक से पीओ, विवेक से बैठो, विवेक से धर्म का आचरण करो, हर एक व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक कार्य करने की शैली के साथ वह विवेक शब्द का प्रयोग करे। आप देखियेगा कि यदि विवेक से करेंगे तो कोई बात नहीं है हमारे धर्म में और मुस्लिम धर्म में बहुत कुछ समानता है हमारे पर्युषण पर्व ईद का आपका, इसी प्रकार ईद के समय में भी कि लोग जो है व्रत रखते है, उपवास रखते हैं और प्रकार से त्यौहार को मनाते हैं। यह एक समानता है।

हिंसा की बात आती है तो कोई भी ऐसा धर्म नहीं है। स्वयं मुस्लिम धर्म में भी नहीं है। अभी मेरे भाई के पास बैठा हुआ था वे यह बतला रहे थे कि जब हज जाते है तो वहाँ पर जो हैं पांच दिन का उपक्रम होता है। उस पाँच दिन में जो हैं किसी को सताना मना है, कोई चमडी को खुरच भी नहीं सकता यह वहाँ पर अहिंसा की भावना है। कौनसा धर्म है जो कहता है कि हिसां के ऊपर आप आचरण करो, कोई भी धर्म ऐसा नहीं है जो हिंसा की और प्रवृत्ति को ले जाता हो। तो बन्धुओं आइये हम सब इन धर्मों की अच्छाइयों को तलाशें और अपनायें।

हमारे यहाँ धर्म के दो रूप बतलायें है, एक अनेकान्त है। अनेकान्त में यह कहा कि हर आदमी जो कहता है वह सच है, उसको सच मान लो, सच मानकर आप काम करो, उसमें जो भी है। हर चीज के कई पक्ष होते हें उस पक्ष को आप समझ लो। उस पक्ष को आपने समझ लिया तो दूसरे की बात को आप आदर देंगे। यही अनेकान्त की भावना है। हमें सारे धर्मों को समझना चाहिये। सब धर्म एक है सब धर्मों का स्वरूप एक है, सब धर्मों में एक बात है। अनेकान्त दृष्टि से अगर हम देखेंगे तो सब धर्मों को एक ही रूप में हम पायेंगे तो अनेकान्त की भावना हम लोगों में आनी चाहिये। सभी धर्मों में समता की बात कही है। यही बात सनातन धर्म में भी है, मुस्लिम धर्म में भी है, जैन धर्म में भी है और सिख धर्म में भी। हमारा धर्म यह कहता है कि कमायें, खूब आप लेकिन अपनी आवश्यकता के अनुसार ही संग्रह करें, आवश्यकता के अनुसार ही खर्च करें और

बाकी जो चीज है उसे आप जो है राष्ट्र को समर्पित कर दें अपने भाइयों को दे दें। अब सारे धर्मों की एक ही बात है **''परहित सरिस धर्म नहिं भाई''** कविरा वे नर पीर हैं जो जाने जन पीर और महाभारत में जो बात कही है ''न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्। कामये दु:ख तप्तानां प्राणिनामार्ति निग्रहम्'' तो गीता में वही बात कही है कि न मेरी ये कामना है कि मुझे जो है पुर्नजन्म मिले यदि मेरी कोई कामना है तो यह है कि इस मानवता के प्रति मैं कुछ कुर्वानी कर सकूँ, कुछ कुर्वानी दे सकूँ मेरा यही लगाव है कि मैं कुछ उपकार कर सकूँ। तो बन्धुओं आज हम यहां पर इकट्ठे हुये हैं। ये धर्म की जो मोटी-मोटी बातें हैं अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्त, विवेक, इन बातों को लेकर, और ये जो धर्म की आचार पद्धतियाँ हैं इन पद्धतियों को तो हम इसके मानने वालों के लिये हैं छोड़ दें, कि आप अपने धर्म में किस प्रकार से आचरण करना चाहते हैं ये आचरण अपने व्रत किस तरह से करना चहते हैं यह आपका काम है, लेकिन धर्म का जो कार्य, है धर्म का कार्य एक ही है ''जो मनुष्य के लिये लाभकारी हो वही धर्म है''। वस्तु का स्वाद ही धर्म है यह हमारा जो जैन धर्म है वह कहता है, वस्तु का स्वाद वह उसका धर्म है और मनुष्य का स्वाद क्या है आत्म-धर्म जैन धर्म आत्म का धर्म है जो यह कहता है कि व्यक्ति कर्म के द्वारा अगर कुछ कर सकता है तो व्यक्ति जो है स्वयं परमात्मा तक बन सकता है आत्मा के चरण को आप विधिवत देखते जाइये तो आपकी अन्तिम सीढ़ी जो है उस परमात्म तक पहुँच सकती है। यह धर्म का सन्देश है।

आज इस सनातन धर्म की सभा में सभी धर्मों के ज्ञाता, विद्वान बैठे हैं हम इन मोटी-मोटी बातों की और ध्यान दें कि हम समाज को अहिंसा से दूर रखेंगे हम विवेक से कार्य करेंगे हम सत्य बोलेंगे और हमारा आचरण इस प्रकार से होगा कि कोई ऊंगली नहीं उठा सके, हम सबके लिये समता का भाव रखेगें, हम सबके लिये समर्पण का भाव रखेंगे, अगर हम इन बातों पर विचार करें। हमारा जो कर्मकाण्ड है उसे आप अपने तक ही रहने दीजियेगा। अपने जो गुरु है उन तक सीमित रख दीजियेगा। हमारा धर्म तो यह है हमारा संविधान भी यही कहता है, प्रत्येक जीव मात्र के लिये दया का भाव रखना, यह हमारा जो विधान है उसमें फन्डामैन्टल ड्यूटी रखी है। धर्म के प्रति आस्था रखना, यह हमारा संविधान सिखाता है लेकिन दूसरे धर्म के प्रति भी निष्ठा रखें, दूसरे धर्म को भी आदर दें। बन्धुओं आइये हम संविधान की इन बातों को, हमारा संविधान सेक्यूलर है, इस कांस्ट्रिटूशन के इस परिप्रेक्ष्य में, इस धर्म की हम पुन: व्याख्या करें, आइये इस व्याख्या का कार्य आज हम सनातन धर्म के इस सभा से प्रारम्भ करें और शायद हम कुछ कर सकें तो नि:सन्देह हम मानवता को बहुत ऊंचा ले जा सकेंगे, उसके क्लेश को मिटा सकेंगे, उसको आगे बढ़ा सकेंगे, सबको सुखी बना सकेंगे सभी सुखी हों- इसी कामना के साथ।

माननीय अलीजनाब अह्लाद मौलाना जमील अहमद इलासी (नई दिल्ली)

(राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय इमाम संगठन)

काबिले ऐतराम शंकराचार्य जी सब्र काबिले ऐतराम जगद्गुरु श्रीजी महाराज व जगद्गुरु रामदयाल जी महाराज सदरे जलसा और भाईयों। मैं आपके सामने आज अपनी कोई बात न कह कर उस मालिक के उस खालिक के काइनात की तरफ से जो कुराने करीम में हमको बताया गया है इस मानव धर्म सम्मेलन के मुत्तलिक इस जल्से का आगाज पर तुम्हें मुबारकवाद पेश करता हूं। जिन लोगों ने सोचा कि हम सब एक

किस तरह से हो सकते हैं। कुराने करीम के क़ायिद में पेश करूंगा-उसका तर्जनुमा सुन लीजीये- ये लोगों ये निकाह है मुसलमानों कुराने पाक कहता है। ऐ लोगों मैने तुमको एक ही माँ और एक ही बाप के साथ पैदा किया है हमने तुमको एक ही माँ और एक बाप के साथ पैदा किया है और हमने तुमको कबीलों में तक्सीम कर दिया है पहचान के लिये, तुम्हारे कबीले बना दिये। ये कबीले ही है सनातन धर्म हो, आर्य समाज हो , जैन हो, या ईसाई हो ये कबीले है तुम्हारी पहचान कि लिये। तुमको हमने ये कबीलों में तक्सीम कर दिया और तुममें सबसे अच्छा कौन है वह जो मुझसे डरता हो, जो मेरी बात मानता हो, मेरी सुनता हो। तुममें सबसे अच्छा वो है। और दूसरी जगह कहा कि हमने इन्सान को और जिन्नात को सिर्फ अपनी पूजा के लिये पैदा किया है इन्सान को सिर्फ उसने अपनी भक्ति के लिये पैदा किया है कि वो इबादत करे मेरी पूजा करे मेरी, बाकी सारी जिम्मेदारी मालिक ने अपने जिम्मे ले रखी है। यहां हुकुम देते है अल्लाह कि ''ऐ इन्सानों मैं तुमको हुकुम देता हूँ कि तुम अपने माँ बापू के साथ ऐहसान करो रसुलउल्लाह अहसाने सलम से जब किसी साहिबा ने पूछा कि हमारे लिए कुछ नसीहत कीजिये तो आपने फरमाया अपनी माँ के साथ ऐहसान करो तीन दफा फरमाया अपनी माँ के साथ ऐहसान करो चौथी दफा फरमाया कि अपने बाप के साथ ऐहसान करो, अल्लाह ने अपने आपको अल्लाह न कह कर रब, कहा रब कहते है पालने वालें को, परवरिश करने वाले को, इसी तरह माँ बाप भी परवरिश करता है औलाद की। तो हक़ीकी रब तो हुआ मालिक खालिब जिसने हम सबको पैदा किया और मजाजी रब हुये हमारे माँ बाप। तो जब तक हम अपने माँ बाप को नमस्कार नही करेंगे, उनको नहीं मानेंगे, हम पड़ौसी को चर्चा नहीं कह सकते पहले हमको अपने गुरुओं की बात माननी होंगी अपने मज़हब पर चलकर दिखाना होगा मज़हब कोई बुराई नहीं सिखाता कोई भी मजहब किसी का भी मजहब बुराई को पसन्द नहीं करता। आज हम किसी एक दूसरे को अच्छी नजर से नहीं देखते, चूंकि नजर से इसलिए नहीं देखते, हम उसी तरह के लोग है, हम जैसे है उसी तरह हम दूसरों का भी ख्याल करते हैं कि ये भी ऐसा ही होगा, उसी तरह का नज़रिया हम कायम करते हैं। अपने भाईयों के लिये तो आज पयामें इन्सानियत को ये जलसा कितना बेहतरीन एक जलसा है। ये पूरा का पूरा कुनबा अल्लाह का है, ये सारी की सारी मखलुक जिसने पैदा की है, पुरा का पुरा एक ही परिवार एक ही कुनबा एक ही तरहां से उसके नाम के लिये किस तरह से हम उसकी पूजा करें और किस तरह से हम अपने अन्दर से भेदभाव को खत्म करें, आज ये सम्मेलन हो रहा है। इसी सरजमीन पर हजरत ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेर रहमते आज से आठ सौ साल पहले कितनी मुसीबतों के साथ इन पहाडों में इन रेगिस्तानी इलाकों में आकर उन्होंने पयामें इन्सानियत पेश किया और हमे एक दूसरे को एक दूसरे के साथ मोहब्बत और भाईचारे का पैगाम दिया। आज उनके हजारों हजारों नहीं लाखों और करोड़ो लोग आकर अपनी मन्नतें मानते है और वो पूरी होती है। इसी तरह इन गुरुओं के साथ हम आशा करते हैं इस बात को कि पयामे इन्सानियत का सबक लेकर उस मालिक के हकीकी की बात भी पैदा करे कि जिसने हमको सिर्फ अपनी इवादज के लिए हमको पैदा किया है। इस दुनियां में चन्द दिन रहना है माँ के पेट में एक बच्चा नौ महीने तक रहता है और हर वो नैमत जो हमको भी मयस्सर नहीं होती उस बच्चे को अल्लाताला पेट में देते है और किसी तरह उसको डाक्टर की जरूरत महसूस हो जाती है तो हमारे पालने वाला हमारा मालिक और खालिग जो हम सबका एक है उसकी सब कुछ कुदरत है। अगर हम उसकी इबादत के लिये

अपने मज़हब पर चलना सीख जांय तो हम नहीं समझते कि हमको कोई किसी भी तरह रोक सकता है।

हिन्दोस्तान एक अजीम मुल्क है इससे बेहतर मुल्क इससे अच्छी परम्परा इससे अच्छा मुल्क पूरी दुनियां में कहीं नहीं मिलेगा। आपको आज इन वोटों की सियासत ने हमारे अन्दर जो पैदा किया है भावनायें वो इस तरह तकलीफ देने वाली भावनायें है कि एक दूसरे से हमको अलग करके रख दिया सिर्फ अपने स्वार्थ के खातिर। आज अगर हम चाहें कि अल्लाह को भगवान की रहमान और रहीम को किस तरह से हमारे अपने मजहब की किताबों में देखकर अपने गुरुओं के साथ चलकर वो सब कुछ आपको मालुम हो सकता है लेकिन चलना जब होगा जब अपने मां बापों की इज्जत करोगे तब ये सब कुछ आसान हो जायेगा। ''बडी मुश्किल से हजारों साल नरगिश अपनी बेनूरी पे रोती है बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा, हमारे सलेमाबाद पीठ के आचार्यजी इतने महान आचार्य है यहां तशरीफ रखते हैं इन सबकी एक तारीफ है इनके मेहनते है यानी किन किन चीजों को त्याग कर किन किन आसानियों ओर आसाइशों और नैमतो को त्याग कर कहीं एक आचार्य बनता है इसी तरह नहीं बना जाता गुरु इतना आसान नहीं है गुरुकहलाना या इतना आसान नहीं आचार्य कहलाना बड़ी मुश्किल, बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा। बरहहाल मैं इन सब गुरुओं का और आप लोगों का जो इन गुरुओं का और खुदा बादउल्लाहशरीफ जिनके हम बन्दे हैं उसको समझ के यहां तशरीफ लाये आप काबिलेमुबारकबाद हैं। आप लोग आप सब काबीले मुबारकबाद है। मैं एक बात और रह गई यहां अभी शंकर आचार्य जी की जिक्र कर रहा था कि बड़ी मुश्किल से पैदा होता ये नाम और किसी पर भरोसा रखना ये बहुत मुश्किल काम है। हम लोग जितने भी मजहबी लोग है इन्सान हैं वशरीतकाजा हमारे साथ सबके साथ, लगा हुआ है गलतियां हम सबसे होती है। हमारे आचार्य कांचीपीठ के अचार्य जी का आज अखबारों में बहुत चर्चा है बहुत सम्मान बहुत सम्मान दिया है और एक न मालुम वह गलती सही है या नहीं, कितना बड़ा अपमान किया, बड़े दुःख के साथ मैं कहता हूँ कानून के मुहाफिजों से कि कानून का पालन किया जाय कानून हर फर्ज से बढ़कर है उसमें आलमेदीन हो या गुरु हो या मजहब के कोई और लोग हो, उन सबसे बालातर है कानून इसमें कोई शक नहीं। लेकिन कानून को कानून के दायरे में रहकर, और उन अजीम शक्सीयतों के साथ उन महान हस्तियों के साथ उसी अन्दाज का बर्ताव करके कानून का पालन करें।

श्री वंशी लाल राठी :-

प्रेम से बोलिये भाई, सर्वेश्वर भगवान की जय। हमारे जगद्गुरु श्रीजी महाराज के चरणों में नमन करते हुये, मैं सभी पधारे हुये जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी महाराज पुरी, श्री दयालजी महाराज, राम स्नेही सम्प्रदाय, महामण्डलेश्वर, मण्लेश्वर, संत समाज, श्री पानाचन्दजी जैन, मौलानासाहब राष्ट्रीय अध्यक्ष इमाम संगठन, हाजी अब्दुल भाई, बद्री प्रसाद जी पचौली और सभी उपस्थित मेरे भाइयों और बहिनों। आज हर्ष का दिन है सलेमाबाद में मानव जीवन की एक अनूठी जगद्गुरु श्रीजी महाराज के चरणों से निकली हुई आवाज में बोल रहा हूं। मानव यह समझ जाय, कि हम इसकी बात पूरी समझ लें और उसके बाद बोले तो वह मानव है बात समझने के पहले ही बोल देते है ईर्ष्या बढ़ जाती है और तृष्णा में खलबल मच जाती है। ये मानव सम्मेलन इसलिए रखा है कि संस्कारी बनो और एकता की ज्योति जलाओ। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, कोई गुरु गोविन्द जैन हम सब एक हैं इसी के साथ आप सबका स्वागत करते हुये सभी हमारे पीठाधीश विराजमान हैं उनको नमन करते हुये

प्रेम से बोलिये सर्वेश्वर भगवान की जय।

रामस्नेही सम्प्रदायाचार्य श्री रामदयाल जी महाराज :-

(शाहपुरा भीलवाड़ा)

हृदय आह्लादित है यह कहते हुये कि राजस्थान की धरा पर अपने आप का यह ऐतिहासिक स्वर्ण पृष्ठ रचा जा रहा है। हमारे पूज्यपाद श्री श्रीजी महाराज के द्वारा इतना विराट आयोजन गरिमामय है। ''जय जय श्री राधे, जय जय श्री राधे, श्याम मिलादे''। अन्तर तप की ज्ञान गरिमासे रचा जाता है इतिहास का स्वर्णीम पृष्ठ, आज का पावन विषय है मानव धर्म और मेरा राम कहना चाहता है कि ''मानव ही धर्म है और धर्म ही मानव है।''

आज के परिप्रेक्ष्य में अनेक वक्ताओं ने हृदय से तहेदिल से जिन विचारों को समाज के समक्ष रखा है, उन्हीं को आगे बढ़ाते हुये मेरा मत है ''न हिन्दु न मुसलमान का मेरा रिश्ता, इन्सांन से इन्सान का मेरा रिश्ता है'' इन्सान को वेद भगवान ने सबसे पहले आदेश दिया ''मनुर्भवः'' यह नही कहा, डाक्टरभव, मिनिष्टर भंव आदि वरन प्रतिपादित किया ''धर्मचर सत्यवद'' और त्रिलोक का विज्ञान इसमें निहित हो गया, चार पंक्तियां देना चाहते है-

पण्डित तूने कहा था भगवान नहीं मिलता।
मौलवी तू भी बोला था कि रहमान नहीं मिलता॥

बस इन्सानों की इस मण्डी में टार्च लेकरके ढूढते घुमो। तो इक सच्चा इन्सान नहीं मिलता इक सच्चा इन्सान नहीं मिलता॥

अभी न्यायाधीश महोदय दार्शनिक के हाथ में दिन के बारह बजे लालटेन देकर के पूरे बाजार में घुमा रहे थे एक मनुष्य की खोज में, इक इन्सान की तलाश में एक मानव के अन्वेषण और गवेषणा में। बहुत ही दूरदर्शिता से सम्पन्न आज का विषय रखा है मानव धर्म दो सौ पचास वर्ष पूर्व रामस्नेही सम्प्रदाय के जन्मदाता ने शायद आज के इतिहास के लिये एक शब्द फरमा दिया ''अधर्म कहे न धर्मी कर्मी कहें जो मौन अधर्म की अगम गति कहो लखावे कौन,कहो लखावों कौन मौन, जहां वायु नाहीं सृष्ट्रि भ्रष्ट हो जाय ज्ञान वैराग्य इलाही। वीतराग उपेदश बिन रागी तजे, न मौन अधर्म कहे, न धर्मी धर्मे कहे जो मौन।'' अधर्म परायण भ्रष्टाचार व्यक्ति कब कहेगा कि अधर्म अधर्म होता है चोरी करने वाला चोर को अधर्मी कहेगा। अत्याचार परायण पापाचार परायण क्या इन सबको अधर्म कहेगा और धर्मी कहे जो मौन, धर्मज्ञ अगर मौन धारण कर लेंगे तो अधर्म अगम गति कहो लखावे कौन। अधर्म के परिणाम ये है यह कौन बतायेगा। मौन जहां वायु नाही, सृष्टि भृष्ट हो जाय ज्ञान वैराग्य इलाही। आज बहुत जोरदार शब्दों के साथ कह सकते है- श्री निम्बार्काचार्य पीठ के तपवत् आत्मा हे आचार्य जगद्गुरु चरण श्रीजी महाराज, दो सौ पाचास वर्ष के बाद भी आपने एक इतिहास कायम कर दिया मानव धर्म की व्याख्या के लिये एक मंच पर सभी को आमन्त्रित करके। ''वीतराग उपदेश बिन रागी तजे न मौन'' महापुरुषों के सत्य सिद्धान्त के बिना सत्य का बोध नहीं हो सकता है।

सूर्य का साक्षात्कार सूर्य की पावन रश्मियों के द्वारा ही होगा दुनियां का कोई जादूगर कोई तांत्रिक, मांत्रिक टार्च से, दीपक से सर्च लाइट से सूर्य का साक्षात्कार नहीं करा सकते। ये अध्यात्म जादू ये पावन तप का प्रभाव महापुरुषों में होगा। हमारे भगवान् निम्बार्काचार्य में कौन जानता था कि संसार में एक अरुण ऋषि को बेटा जयन्ती देवी की कोख से पैदा होने वाला नियमानन्द इस धरती पर एक दिन निम्बार्काचार्य

भगवान् के रूप में जगत् वन्दनींय होंगे। किसे मालुम था कौन कह सकता था।

आज मानवता के ऊपर विचार करने की जरूरत क्यों पड़ी ये भारत जैसा पवित्र राष्ट्र अवतारों का राष्ट्र, पैगम्बरों का राष्ट्र, तीर्थंकरो का राष्ट्र, मेरा राम पूछना चाहता हूं कि अगर अवतारों ने भारत की धरती पर अवतार लिया तो तीर्थंकरों को अमेरिका, फ्रान्स, चीन और जापान में अवतरित होना चाहिये पैगम्बरों को विश्व के किसी और कोने में अवतरित होना चाहिये था इसमें क्यों उपेक्षा की। यह भारत अपने आप में स्वयं रोशनी का अपूर्व खजाना है, प्रकाश का राष्ट्र भारत राष्ट्र, धर्म संस्कृति का राष्ट्र भारत राष्ट्र, मानवता का राष्ट्र भारत राष्ट्र और मानव धर्म का दिन कौन सा है। आज एकादशी, कौन सी एकादशी, देव उठनी एकादशी अर्थात् सोया हुआ देव जो है वह आज जाग गया। बिना कुछ कहे संकेत पर्याप्त होगा कि सोये हुये देवता भी अब जाग उठे हैं दीवारों ताको को तो साफ कर लिये अब अपने दिलों को भी साफ कर लीजियेगा। मानव धर्म का सबसे बड़ा सिद्धान्त, सबसे बड़ा दृष्टिकोण तोड़ना नही जोड़ना है, किस प्रकार आप जोड़ सकते है।

एक दण्डी स्वामी का आगमन होता है भोजन का आग्रह किया जाता है और बनाने में इतना विलम्ब हो गया कि सूर्य नारायण भगवान अस्ताचल यात्रा चले जाते हैं, लेकिन नियमानंद जी के अन्तरमन में ये विचार आया कि एक महापुरुष अपने यहां से बिना अन्न जल लिये जायेंगे तो क्या होगा और सूर्यास्त के बाद अन्न जल नहीं लेते है। नियमानन्द जी ने ऐसा चमत्कार बताया कि नीम के वृक्ष पर सूर्य नारायण भगवान् का दर्शन कराया कि अभी सूर्यास्त नही हुआ है क्योंकि अतिथि हमारे यहां से भूखे चले जायेंगे अतः अपने तपोबल से सूर्यनारायण का साक्षात्कार कराया। और सूर्य दर्शन करके आपने प्रसाद पा लिया और प्रसाद पाने के तुरन्त बाद देखा तो तारे टिमटिमा रहे है। पता चला ये भगवान निम्बार्काचार्य का अद्भुत प्रभाव था कि आपने सूर्य के दर्शन कराये। जिस तरह से सूर्य का साक्षात्कार करवाया इसी प्रकार हमारे वर्तमान उद्भट विद्वान श्रीजी महाराज इस विराट् आयोजन के द्वारा भारत के ज्ञान सूर्य का साक्षात्कार आज सम्पूर्ण मानव समाज को मानव धर्म की व्याख्या के साथ करवा रहे हैं।

कक्षा में प्रवेश करते ही कागज के टुकडों को देख करके कक्षाध्यापक का हृदय खिन्न हो गया, टुकडों को उठाया आदर से सिर पर रखा और टेबिल पर रख करके तमाम विद्यार्थियों को आमन्त्रित किया एकत्रित किया और कहा किसने की ये धृष्टता, किसने विश्व के मानचित्र के टुकडे टुकडे कर दिये, कौन शैतान पैदा हुआ इस धरती पर, किस खुरापाती दिमाग की ये देन है। चलो दुष्ट अपनी दुष्टता करना नही छोड़ पायेगा, शैतान का काम शैतानी करना है, लेकिन सन्त महात्मा अपने देवत्व से कभी दूर नहीं होते हैं। याद दिला देना चाहते हैं आज निम्बार्कतीर्थ की इस विराट् सभा में कि भगवान् निम्बार्काचार्य को भी कष्ट कब नही आई थी। एक बार शैतान ने घेर लिया और बड़ा परेशान किया लेकिन आप कुछ नहीं बोले। गूलर के वृक्ष के नीचे भगवान् राधासर्वेश्वर का ध्यान कर रहे हैं और इसी बीच ऊपर से गूलर फल नीचे गिरा और चरणों का स्पर्श हुआ और उसमे एक नई आकृति पैदा हुई, यह देखकर सारे शैतान पीछे खसक गये। चमत्कार को नमस्कार सारा जगत करता है और लगता है कि सीधी अंगूली से घी नहीं निकला करता है, अंगूली को टेड़ी करना पडता है। महात्मा परमात्मा के चमत्कार को तराजू पर तोला नहीं जाता उनका तो स्वभाव है अच्छे के लिए अनहोनी को होनी करना। अभी आपने श्रीजी महाराज के श्रीमुख से अद्भुत चमत्कार का पावन प्रसाद पाया कि बादशाह के द्वारा दिया गया कम्बल स्वामी

परशुरामजी के द्वारा धूणे में डालने पर जल जाने के बाद उनके द्वारा निकाले जाने पर अनन्त हो गया। ये भगवान् महात्मा परमात्मा के चमत्कार सनातन काल से चले आ रहे है ना होता ये चमत्कार तो क्या समाज आज विराट् रूप में यहां उपस्थित होता? मेरे राम कह सकता हूं कि आज यहां पर सलेमाबाद नही, पूराराष्ट्र और अन्तर राष्ट्र भारत देश और अपर अन्तर राष्ट्र, यहां पर उपस्थित है एक महापुरुष की तपस्या के प्रताप से। इसलिये पूरे भारत की रेत पर विश्व की बाद जोड़ने का आग्रह करते हुये, अपील करते हुये, पुनः याद दिलाना चाहते है। कागज के टुकडों की अपनी खिन्नता विद्यार्थियों को प्रकट करते हुए अध्यापक ने कहा कि जो होना था हो गया लेकिन अब इसे जोड़ दो। जोड़ना ही मानव धर्म है इसे जोड़ दो। न जाने कितने विद्यार्थी आये सर खपाये चल दिये पर एक श्रीजी महाराज का लाडला कलेजे का टुकड परम भक्त हमारे नवोदय युवराज की तरह अध्यापक से कहा आदेश हो तो मुझे भी कुछ समय दिया जायं। उन्होंने कहा जाओं जल्दी समय दिया गया, एक शर्त पांच मिनट को आप को आंख बन्द करनी पड़ेगी, ज्योंही आंख बन्द करी उन्होंने पूरा विश्व का मानचित्र जैसा था वैसा का वैसा बता दिया। अध्यापक ने बहुत बहुत साधुवाद दिया और पूछा कि बताइये इतना बड़ा विश्व मानचित्र के टुकडे टुकडे हो गये फिर भी आपने इसको कैसे जोड़ दिया। उन्होनें कहा सर, अध्यापक महोदय क्षमा करना, मैंने किसी विश्व को नही जोड़ा है और तुरन्त उसको पीछे घुमाया और बताया कि मैंने एक इन्सान को जोड़ा हैं, एक मानव को जोड़ा है। जब मैं जोड़ रहा था हवा चलने से पृष्ट पलट गये तो मुझे इन्सान का एक फटा हुआ चित्र नजर आया और जब मैंने उसे ठीक से, आंख कहां, नाक कहां, हाथ कहां, पैर कहां, ये जोड़ना शुरुकिया और जोड करके पलटा तो भारत क्या, पूरा विश्व जुड़ा हुआ दिखाई दिया। इसिलए अगर आज मानव धर्म से जुडता है तो मानव मानव से जुडता है तो भारत क्या पूरा विश्व जुडा हुआ दिखाई देगा। भारत की क्या बात है ये भारत ही पूरे विश्व को जोड़ सकता है। अलगाव कब होते है जब अधर्म होता है, इसलिए स्वामी जी का संदेश वेद पुराण शास्त्रों का संदेश अधर्म कहे न धर्मी धर्मे कहे जो मौन 'तो' अधर्म की अगम गति कहो लखावे कौन, रिश्वत लेने वाला रिश्वत लेने को अन्याय नही कहता है। आज वह कहता है रिश्वत लेना अन्याय नहीं है रिश्वत लेना अन्य आय है, क्या आशा रखेंगे परिभाषायें बदल रही है। हम परमात्मा से जुड़ना चाहते हैं परमात्मा की दुनिया से नहीं जुडे तो क्या होगा। क्या माँ बाप की आँखो से खून के आंसू बहा देना, मानव धर्म है, भाई भाई के साथ अन्याय करे ये मानव धर्म? खनखनाते सिक्कों के खातिर बाप की छाती पर बेटा चढ़े ये मानव धर्म? कुरान में लिखा है सात बार हज करके आओं और पडौसी को अगर सता दिया तो तुम्हारी हज बेकार, पुराण वेद ओर उपनिषदों में लिखा है। अनन्त बार तीर्थ धाम की यात्रा करके आओं अगर तुमने किसी का हृदय दुखा दिया तुम्हारी तीर्थ यात्रा बेकार है। हमारी संस्कृति ने शुरु से जोड़ना सिखाया है। बालक पैदा होता है मां बाप उसे बाल अवस्था में ले जाते है कि बेटा परमात्मा के हाथ जोड़, गुरुदेव के चरणों में प्रणाम कर, महापुरुषों के हाथ जोड़, बडे बुर्जुगों के लिए हाथ जोडना सिखाते हैं, तोड़ना नहीं और जोड़ना ही धर्म है। सुई जोड़ती है दर्जी उसे माथे पर रखता है कैची काटती है उसे नीचे पटक दिया जाता है। संत हमेशा जोड़ते है तोड़ते नहीं। आज नितान्त आवश्यकता है बहुत गहरे विचार की आप सब आस्तिक हो, ईश्वर को मानते हो, खुदा को मानते हो रब को मानते हो, राम को मानते हो, कृष्ण को मानते हो।

भगवान् राधासर्वेश्वर को मानते हो, ये सच है शास्त्र को मानते हो, कुरान को मानते हो महात्मा मौलवी को मानते हो सच है, भगवान् शंकराचार्यजी को मानते हो,

ये सच है। पर उससे क्या यह भी सच यह है कि गीता का नहीं मानते, वेद पुराण की नहीं मानते कुरान की नहीं मानते, शंकराचार्य को मानते हो पर शंकराचार्य की नहीं मानते, उससे ज्यादा सच यह है। मां बाप को मानते हो मां-बाप की नहीं मानते हो, समाज की नहीं मानते, राष्ट्र व संविधान को मानते हो पर राष्ट्र व संविधान की नहीं मानते। तो पूर्ण बात चिन्तन की है क्यों मानते हो परमात्मा को, तुम्हारा परमात्मा किसी नाम से हो सकता है राम हो, रब हो, रहीम हो, कृष्ण हो, ओम हो, नेचर हो, प्रकृति हो, गौड हो, किसी न किसी भी रूप में स्वीकार क्यों करते हो? क्योकि मानते हो परमात्मा को मानते हो। मातापिता को क्यो मानते हो? चाहते हो, अपने अधिकार, अपना हिस्सा, अपनी सम्पत्ति, न जाने भारत के कितने न्यायालयों में कितने केस चल रहे हैं कि मैं अपने बाप की संतान हूं और बाप की सम्पत्ति पर मेरा अधिकार है लेकिन क्या भारत के किसी क्षेत्र में किसी भी न्यायालय में कोई ऐसा केस दायर है कि अपने बाप की संतान हूँ और मेरा धर्म कहता है कि बाप की सेवा करना मेरा धर्म है, बाप की सम्पत्ति पर नहीं है, किसी न्यायालय में कोई ऐसा केस है?

कहते हैं समय नहीं है समय नहीं है और मेरा राम कहता हूं कि समझ नही हैं समझ नहीं है समझ नहीं है समझ लो समय को समय समझ का संगम है तो मानव धर्म है और समय समझ का संगम नहीं है तो मानव के चोले में निरा पशुता का दानवता का नग्न ताण्डव नृत्य ही है। आज हर परिवार समाज इसी से उद्वेलित है।

मोहम्मद साहब ने कहा बेटी तू इस बात को भूल जाना कि मैं परवरदिगार खुदा के बन्दे की बेटी हूं इसलिए ईमान को अमल में नहीं लाना होगा, पर याद रखना इन्सान धर्म, मानव धर्म कहता है ईमान को अमल में ले करके नही आई तो दोजख की आग से भी तू कभी नहीं बच सकेगी, कभी नही बच सकेगी। जीवन में ईमान, मानव धर्म, सत्य धर्म, माँ बाप के आंसुओं को दीन दुखियों के आंसुओं को पोछना मानव धर्म, अपाहिजों की सेवा मानव धर्म, विकृतियों को हटाना मानव धर्म। आज चारों तरफ सत्ता, सिनेमा, सिगरेट, सुन्दरी, और सुरा का बोलबाला है। हमारे पानाचंद जी बोल के गये कि चारों तरफ समस्यायें है सारे धर्माचार्य समाधान बताये मेरा राम कहना चाहता हूं कि एक ऐसा ट्यूब हो जिसमें बहुत सारे छेद हो और किसी धर्माचार्य को कह दो कि ये लो पम्प और इसमें हवा भर दो, सात जनम तक भी हवा भरी जाय उसमें, हवा नहीं टिक सकती है क्योंकि अनन्त छिद्र है उस ट्यब में हवा कैसे टिकेगी जिसमे अनन्त प्रकार के छिद्र हैं उसमें हवा कैसे टिक पायेगी। सब जानते है कि समस्या तो है ही एक चित्रकार चित्र बनाकर के चौराहे पर रखता है और कहता है, चित्र में जहां गलती हो निशान लगा दें शाम तक सारा चित्र विचित्र हो गया लेकिन दूसरे दिन हूबहू वैसा ही चित्र बनाकर के चौराहे पर रख दिया, नीचे लिख दिया। कृपया इसमें जो गलती हो बता दे, सुधार दें। एक भी कलम नही चली, सुबह से शाम तक। इसी में सब समस्या ही समस्या की बात करते है समाधान कैसे हो नहीं बताते जब वेद की मानोगे, महापुरुषों की मानोंगे तो समस्या का समाधान होगा। और इस धरती पर संसार समस्या है और सन्त महापुरुष उसका समाधान हैं। कह सकते हैं आज संसार समस्या है और यह संत महापुरुष समाधान है।

अज्ञात प्रेमीजनों मैं अपने सम्मानीय मौलवी साहब से कहना चाहता हूँ, तमाम महापुरुषों के बीच में अगर कोई भी समस्या होगी तो इन महापुरुषों से ही होगा समस्या का समाधान, महापुरूषों से ही होगा मसला हल संत कोर्ट में हल हो सकता है कोर्ट में हल नहीं हो सकता इसका नाम कचहरी है कच याने केस दोनों का जहां हरण होता है केस याने भज कलदारम, भजकलदारम, और

केस याने माथे के बाल ये दोनों का जहां हरण होता हैउसका नाम कचहरी इसलिए कोर्ट से संत कोर्ट ऊंची होती है। धर्म निरपेक्ष का अर्थ धर्म की उपेक्षा नहीं है। मेरे भारत देश में सारी संस्कृति की सरितायें भारत रूपी माँ समुद्र में आकर विलीन हो गई हैं। और भारत की महानता है कि सबका सत्कार किया है सबका सम्मान कियाहै यही भारत का मानव धर्म है यहां सबका सम्मान किया जाता है। सबका आदर कियाजाता है ये मानव धर्म है। धक्का देना सब जानते पर उठाने वाला कोई कोई है आग लगाना सब जानते है पर बुझाने वाला कोई कोई है। मेरा देश जल रहा है कोई नही बचाने वाला श्री श्रीजी महाराज ने विचारने का मंच दिया है आओ संत समाज मिल बैठकर पदार्थ प्रकट करे। यही कह करके मैं अपनी वाणी को विश्राम देता हूँ। **जय जय श्री राधे।**

माननीय अहलाद सैयद अब्दुलंवरी चिश्ती

(गद्दी नसीन दरगाह अजमेर)

जनाब काबिले ऐतराम जगद्गुरुनिम्बार्काचार्य जी श्री श्रीजी महाराज जगद्गुरुहर्याचार्य जी महाराज, जगद्गुरू रामदयालजी महाराज, आज के इस कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं शंकराचार्य जी महाराज मुख्य अतिथि पुरी, से पधारे हुय इन सभी का मैं आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होने आज इस प्रोग्राम के अन्दर आमन्त्रित करके मुझे कुछ समय दिया। खास तौर से मैं जगद्गुरू श्री श्रीजी महाराज का अत्यधिक आभार व्यक्त करता हूँ क्योंकि उन्होंने ये जो पहल की है ये इस अजमेर जिलें मे सलेमाबाद में राजस्थान में ही नहीं भारतवर्ष में पहली ही पहल है कि एक स्टेज के ऊपर सभी धर्म गुरूओं को बुलाकर उनको अपना एक सूत्र के अन्दर बैठ के निर्णय लेने का अवसर प्रदान किया है। मैं ये चाहूंगा कि ये प्रोग्राम यहीं तक सीमित न रहे और आपके मेहनत से पहल से आपके प्रयासों से इसको राष्ट्रीय लेबिल तक ले जाया जाय। क्योंकि आज मानवता की अहम जरूरत है। मानवता के बिना कोई भी समाज सामाजिक समाज नहीं रह सकता।

मैं यह भी बताना चाहुंगा कि भारतवर्ष के अन्दर सूफी संतो की भरमार है, पूरे विश्व के अन्दर जितने सूफी संत भारत के अंदर है कहीं नहीं है और खासतौर से अजमेर के अन्दर हजरत ख्वाजा गरीबनवाज की दरगाह है जिसको हर मुस्लिम मुसलमान तो मानते ही है बल्कि देश का हर नागरिक मानता है। ठीक इसी तहर पुष्कर में हिन्दु तीर्थ अपने ब्रह्माजी का मंदिर है तो यह संगम ही इन्डीकेट करता है कि अजमेर के अन्दर हिन्दू समाज का और मुस्लिम समाज के दोनों एक तीर्थ ऐसे हैं जिसको दुनियां जानती है, दुनियां मानती है, दुनियां आती है। इन्हीं की वजह से अजमेर राष्ट्र के अन्दर, नक्शे में देखा पहचाना जाता है। उसी में एक सलेमाबाद है और सलेमाबाद की जो हिस्ट्री बताई महाराज ने सलीमाबाद से सलेमाबाद बना और अब निम्बार्कतीर्थ बनाना चाहते है मैं चाहुंगा कि इस पहल से ये काम भी इनका पूरा हो। हमारा महाराज के यहां प्रोग्राम में आने का तो आज पहला ही मौका मिला है, वैसे मैं कई बार आया हूं, मै भी यही के पुष्कर क्षेत्र का रहने वाला हूँ। जहां तक मुझे जानकारी मिली है महाराज बढ़ चढ़कर कौमी एकता के कामों में भाग लेते रहे है और ऐसे प्रोग्राम करवाते रहे हैं। आप लोगों से इतना जानना चाहुंगा कि आज की तारीख में हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई धर्म के मानने वाले अलग अलग धर्म के कई हो सकते है लेकिन किसी धर्म के आदमी का खून अगर लाल नहीं हो तो वो बतायें रक्त सभी मनुष्यों में एक ही है जैसे कि अभी मेरे पूर्व वक्ताओं ने बताया कि कबीले अनेक है ये मंजिल एक ही है रास्ते अलग-अलग हो

सकते है मंजिल पर पहुंचने के लिये, अलग अलग रास्ते, आपके मानने का तौर तरीका अलग हो सकता है। लेकिन मंजिल एक ही है। मैं तो यही दुआ करूंगा कि ख्वाजा साहब के करम से महाराज की ये जो सोच है ये राष्ट्रीय लेबिल तक जाय और एक ऐसे जो दूरियां पैदा होती जा रहीं है समाज में, उसको अब समय आ गया है कि मिटाकर और जो भी भेदभाव हैं उनको कम करके ऐसे प्रोग्रामों से ही मानवता कायम हो बिना मानवता के मानव मानव नही है मनुष्य शैतान हो जाता है। इसलिये आप सभी को मैं यह कहते हुये अपना स्थान ग्रहण करता हूँ कि ''मज़हब नही सिखाता आपस में बैर करना हिन्दू है हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा।''

श्री सुरेन्द्र पगारिया :- (पत्रकार, राजस्थान पत्रिका)

अपनी बात को मै महामहिम आचार्य प्रवर श्री रामदयालजी महाराज के कथनों से आगे बढ़ाते हुये कहना चाहता हूं कि जिस आदमी के खोने की चर्चा महाराज श्री कर रहे थे नि:संदेह किसी शायर ने भी ठीक कहा है कि 'गोया हजारों सालो से है आदमी का वजूद, फिरभी निगाहें तरसती आदमी के लिए।''आज हमारा राष्ट्रीय चिन्ह, राष्ट्रीय पक्षी मोर माना जा रहा है, हमारा राष्ट्रीय पशु सिंह माना जा रहा है, और हमारा राष्ट्रीय चिन्ह अशोक माना जा रहा है, हमारा राष्ट्रीय खेल हाँकी माना जा रहा है लेकिन मै पूछना चाहुंगा कि हमारा राष्ट्रीय मनुष्य कौन सा है। एक साइकिल के दो पहिये, हिन्दू और मुस्लिम के हो सकते है। लेकिन हिन्दु और मुस्लिम के इन दो पहियों से ही इस देश की सवारी नहीं चल सकती है जब तक कि सीट पर बैठ करके आदमी उस साइकिल को नही चलायें। उस सीट पर बैठने वाला मनुष्य ही राष्ट्रीय मनुष्य होगा ऐसी मेरी परिकल्पना है। नि:सन्देह हम उस आदमी की खोज करें आज सभी कहते हैं कि ''हिन्दू यहां कितने है मुसलमान यहां कितने, ईसाई यहां कितने सिक्ख है कितने मजहब के पेरोकारो, जरागिन कर बतलाना, इन्सान की बस्ती में इन्सान है कितने''। आज का ये मानव धर्म सम्मेलन उसी इन्सान की तलाश में सलेमाबाद की तीर्थ नगरी से हमारे महान पूज्य आचार्य श्री के शंखनाद से गुंजित होकर सम्पूर्ण भारतवर्ष में उस इन्सान की तलाश में आगे बढ़ेगा। अभी हमारे चिश्ती साहब कह रहे थे कि सम्प्रदाओं के बीच दूरियां हो गयी है लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि 'फासले सदियों के इक लमहें मे तय हो जाते। है अगर दिल मिला लेते अगर हाथ मिला लेते।' इन फांसले को दूरियों को तंग करने की दिशा में सलेमाबाद का ये तीर्थ सम्मेलन सलेमाबाद का ये निम्बार्काचार्य की जयन्ती महोत्सव मील का पत्थर साबित होगा। अपनी बात को विराम देने से पूर्व मैं बाल कवि वैरागी की चंद पंक्तियों को अपके बीच उद्धृत कर अपनी बात को विराम दूंगा- कि हैं करोडो सूर्य लेकिन सूर्य है बस नाम के और जो न दे हमको उजाला वे भला किस काम के 'जो रात भर जलता रहे उसी दीप को दीजे दुआ सूर्य से वह श्रेष्ठ है, तुच्छ है तो क्या हुआ, पर आज मैने सूर्य से बस जरा सा यूं कहा कि आपके साम्राज्य में प्रभु इतना अंधेरा क्यों रहा वो तमक कर यूँ दहाड़ा मैं अकेला क्या करूं और तुम निठल्लों के लिये मैं भला कब तक करूं आकाश की अराधना के चक्करों में मत पड़ो, कुछ मैं लडूँ कुछ तुम लड़ो, संघर्ष ये घनघोर है।' अज्ञान और अंधकार के खिलाफ सलेमाबाद की तीर्थ नगरी से जो लड़ाई का शंखनाद हमारे पूज्य श्री श्रीजी महाराज, महन्त और श्रीमहन्त कर रहे है। उस लड़ाई में आपका साथ चाहिये। जो लौं सलेमाबाद की तीर्थ नगर से प्रज्वलित हो रही है उस लौं में आपका भी साथ चाहिये।

❑❑❑

देव स्थान सुरक्षा सम्मेलन

महन्त श्री राधाकिशन दास जी- डूंगरपुर

आज के इस युग में जहां एक ओर लोगों में धर्म के प्रति आस्था बढ़ती जा रही है। वहीं दूसरी तरफ हमारे जो धर्म के रक्षक, धर्माचार्य है जिनकी सर्वोच्च गरिमा है, हमारे मठ मन्दिर उन के प्रति प्रान्त की व केन्द्र सरकार किस दृष्टि से देख रही है। हमारा यह हिन्दुस्तान है। इसी में भारत के मठ मन्दिरों एवं धर्माचार्यें के प्रति उपेक्षा हो रही - बड़े ही दु:ख की बात है बड़े ही शर्म की बात है।

जब जिन मंदिरो की आय बहुत कम थी जिन मंदिरों में कोई जाता नहीं था आज जनता ने उन मंदिरो को विश्व विख्यात कर दिया। सरकार की निगाहें पड़ रहीं है कि कब इसको अधिगृहीत कर लूँ। राजस्थान में हमारी जो परम्परा रही है, गरु-शिष्य परम्परा रही है साधुओं की गोस्वामियों की, पिता के बाद पुत्र का जो अधिकार था, देखते देखते सरकार ने छीन लिया। राजस्थान का नाथद्वारा मंदिर, गोस्वामी जी को अध्यक्ष बना दिया, केवल सांयन करने के लिए सरकार ने उसको अधिग्रहण कर लिया वहां एक राजकीय कर्मचारी रख दिया उसका संचालन कर रहा है। चित्तोडगढ़ का मण्डपिया मंदिर एक साधारण गांव में था। वहां लोगों ने, गांव के लोगों ने चन्दा करके मंदिर का विकास किया ज्योंही दृष्टि पड़ी सरकार की रातों रात पुलिस के द्वारा घेर लिया और अधिग्रहण कर लिया। उसके बाद जब विरोध उभरा आज भी मंदिर मण्डल में कार्य कर है। बहुत छोटे-छोटे स्थान है जिनकी आय अभी सरकार की नजर में आ रही है उनको सरकार कहती है ये तो सहायता प्राप्त मंदिर है यह मंदिर अनुदान काहै, सुपुर्दगी का है। अब बताइये कि सरकार उस समय कहां थी जब केवल मिर्च खा करके साधु ने उन स्थानों को बढ़ाया, बनाया, समृद्ध किया, आज जब समृद्ध हो गया स्थान तो सरकार कहती है कि ये तो आपके अधिकार का नहीं है। ये तो देवस्थान विभाग का है।

आज शंकराचार्य जी की गिरफ्तारी हुई दूसरे आचार्य देखते रहें, ऐसा सोचना हमारे लिए हमारी संस्कृति के लिए कुठाराघात होगा। साधु सन्तों के लिए यह सोचना कुठाराघात होगा। क्या हम अपने धर्म के प्रति अपने धर्म संस्कृति के प्रति, अपने धर्माचायों के प्रति कुछ नहीं कर सकते हैं ? कर सकते हैं, हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि देवता भगवान्, गुरु इनकी कोई निन्दा करे इनका अपमान करे तो हाथों में यदि बाहुबल है तो उनकी जिह्वा काट लें अथवा कान में ऊंगली देकर चले जायें-अत: आप लोग क्या चाहते हैं।

ऐसे धर्माचार्य के प्रति जो कृत्य हो रहा है उसके प्रति आप लोग क्या चाहते हैं, आप निर्णय करें। हमारा हिन्दुस्तान हिन्दू संस्कृति से ओत-प्रोत है और जो हमारे श्रद्धा के निष्ठा के धर्म के प्रति जिनका उनका दायित्व है उनके साथ यदि ऐसा व्यवहार होता है तो हम किसी भी हालत में किसी भी स्थिति में उसको सहन नहीं कर सकते हैं। बड़े आश्चर्य की बात है कि अभी तक हमने कुछ नहीं किया इसके बारे में हमें सोचना चाहिये। हम

ऐसा कोई उपाय करें कि भविष्य में कभी कोई सरकार इन धर्माचार्यो के प्रति आंख न उठावे। राजस्थान ही नहीं पूरो विश्व को जगद्गुरु शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती जी से हुए व्यवहार के लिए संकल्प लेना चाहिये कि हम एकजुट हो करके इसका पूर्ण विरोध करें, जगह जगह धरना दें सरकार से कड़ा मुकाबला करें।

देवस्थान की ओर सरकार की जो दृष्टि जा रही है महाराष्ट्र की सरकार वहां के जो राज्यपाल थे उन्होंने एक प्रस्ताव पारित करके महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के मठ मंदिरों को सरकार के अधीन ले लिया। महाराष्ट्र में एक उदाहरण दे रहा हूँ, शनि सिंगापुर गांव है जहां उदासीनों के स्थान है, और जहां शनि महाराज की सेवा पूजा होती है। सरकार ने वहां के महन्त को पुजारी बना करके रख दिया पूजा सेवा के लिए, देवस्थान विभाग महाराष्ट्र लिख दिया, इसी प्रकार मध्यप्रदेश में देवस्थान विभाग मध्यप्रदेश लिख दिया। तो इस प्रकार से यदि यही स्थिति चलती रही तो राजस्थान सरकार या चाहे कोई सरकार हो चाहे भाजपा की सरकार हो, चाहे कॉग्रेस की सरकार हो, चाहे कम्यूनिष्ट सरकार हो, इन साधु संतो के ऊपर गिद्ध दृष्टि लगाये हुये है। कब कानून पास करदे, देवस्थान के सचिव कई बार जा चुके हैं, अध्ययन कर रहे हैं। यदि उनका रिपोर्ट पुहंच गया सरकार के पास तो राजस्थान सरकार भी पीछे नहीं रहेगी। कानून बना करके इन मठ-मंदिरो के ऊपर अपने सरकारी कर्मचारी नियुक्त कर देगा। महन्त और पुजारी बने रहे मंदिर में भगवान् के भोग लगता है खाइये।

इस प्रकार की जो नीति चलने वाली है वह राजस्थान में भी कभी न कभी आ जाये। मैं यहां के संत, महन्त, मण्डलेश्वर, महामण्डेश्वर से यह आग्रह करूंगा कि वह अभी से सतर्क हो जाये और राजस्थान सरकार की जो नीति है उसको न लागू होने दें। मैं आज जो देवस्थान विभाग की या राजस्थान सरकार के मठ-मंदिरो की जो दशा है मैंने उस पर कुछ प्रकाश डाला। हमें इस ओर नहीं कहना चाहिये और बिना कहे आप लोगों को कुछ पता भी नहीं चलेगा। हमारे राजस्थान सरकार के देवालय जो देवस्थान विभाग के हैं एक और साधुसंतों के मठ-मंदिरों को देखिये और एक ओर राजस्थान सरकार के मंदिरो को देखिये इसमें साधु सन्तो ने जो परिश्रम करके मठ-मंदिरों को बनाया है आज उनके प्रति जनता की क्या भावना है और देवस्थान के मंदिरो के क्या हाल है।

महन्त श्री हरिबल्लभ दास जी महाराज (रेनवाल)

देवस्थान का सम्बन्ध मंदिर के नाम से हिन्दुओ का होता है, मस्जिद के नाम से दूसरे लोगों का होता है गिरजाघर के नाम से किन्हीं तीसरे व्यक्तियों का अनुमोदन होता है। मंदिर हमारे प्रचीन काल के अन्दर द्वापर के अन्दर बनने बनाने शुरू हुये थे। उस समय राजा, महाराजाओं का इस पृथ्वी के ऊपर राज्य था। मण्डल के राजा था कोई जोधपुर, कोई बीकानेर, कोई कहीं कोई कहीं। सारे भारतवर्ष के अन्दर यही प्रणाली रही है राज्य शासन राजाओं का क्षत्रियों का रहा है। भाई ये तो वेद भगवान् का प्रसंग चल रहा था। इस वेद के माध्यम से हमारी यह सारी हिन्दू संस्कृति है। इस हिन्दू संस्कृति का उपासक वेद को प्रधानता देता है और वेद मय ही अपना जीवन यापन करता है।

भक्ति व भगवद् प्राप्ति के उद्देश्य से हमारे मंदिरो का निर्माण हुआ। हमारे राजाओं-महाराजाओं ने बड़ बड़े विशाल-विशाल मंदिर बनाये। हमारे राजा-महाराजाओं ने दक्षिण के अन्दर जो मंदिर बनाये वह तो गांव के गांव बना दिये। उत्तर भारत के अन्दर भी बड़े विशाल मंदिर हैं आज हम उन मंदिरो को देखते है तो प्राचीन संस्कृति का अध्ययन होता हैं। ये क्या मंदिर थे

और किस तरह से यह जगमगाते थे और आज वे मंदिर क्या स्थिति में पहुंच रहे हैं। सरकारीकरण मंदिरों के लिए अनुचित है। सरकारीकरण मंदिरों के लिए बहुत ही असद् होगा सद् नहीं होगा। आज अभी देख सकते है कि राजा, महाराजा, महारानी आदि के द्वारा बने हुये जो मंदिर हैं जिनके अन्दर सरकारी करण हो गया है और उनकी पुजारी, टहलवा, रसोईयां, सोहनियां, जलभरिया, आदि की तनख्वाह तो ठीक है किन्तु ठाकुरजी का कोई ठिकाना नहीं है। मंदिरो को बनने के लिए मंदिर के अन्दर ठाकुर विग्रह की प्रतिष्ठा करने के लिए उनकी पूजा करने के लिए भगवान ने उद्धव को सम्बोधन किया हैं। भागवत के एकादश स्कन्ध के अन्दर **''प्रतिष्ठया सार्वभौमं सद्मना भुवनत्रयम्। पूजा दिना, ब्रह्मलोकं त्रिभिर्मत्साम्यतामियात्॥''** मंदिर बनाना कोई छोटी-मोटी चीज नहीं है भगवान इसके ऊपर बहुत ध्यान दे रहे हैं। अपने श्रीमुख से कहते हैं कि मंदिर बनाता है उसमें प्रतिष्ठा करवाता हैं उसकी पूजा करता है, उस व्यक्ति को मैं बड़े अच्छे अच्छे लोक देता हूँ। हमारी कोई अर्थ राशि हमारे साथ जाने वाली नहीं है। हम कोई तप साधन ऐसा नहीं कर पाये जिनसे हम उन लोगों के अन्दर जा सकते हैं। भाई ऐसा जो भगवान् का मंदिर बनाते हैं उनको चक्रवर्ती बनाने की आज्ञा देते हैं।

राजा-महाराजाओं ने सोचा कि हम मंदिर बनायेंगे अभी तो मण्डल के राजा हैं और आगे जाकरके चक्रवर्ती होंगे। ध्यान रखिये यह ज्ञान भी कहां से मिला। भागवत् का ग्रन्थ है, गीता का ग्रन्थ है हमारे अन्य पुराणों के ग्रन्थ हैं उनमें ज्ञान भरा हुआ है। पहले-ज्ञान का कलश लेकर के कौन आया है और कौन इन पिपासुओं की प्यास को बुझाने का प्रयास कर रहा है। ये हमारे क्षत्रियों को ब्राह्मणों से, सन्तो से बड़ा प्रेम था भाई क्षत्रिय रक्षा करने वाला जन था ब्रह्मण जो है वह शासन करने वाला जन था। क्षत्रियों का और ब्राह्मणों का बल बहुत बड़ा रहा है हमारे शास्त्रों में तो कहा है कि **ब्रह्म बलं बलं**। ब्राह्मण का जो बल है सन्त का जो बल है वही बल है। हमारे यहां जो विरक्त सन्त होते थे हमारे यहां जो विरक्तसन्यासी होते थे सब कुछ परित्यागन करके और दण्डधारण करके और आश्रमों में बैठते थे आचार्य से ले करके और सेवक तक के मंदिरो में संतजन सेवक होते थे ये दुनियां ऐसी नहीं है ये सब तो हम उस प्रकृति की सन्तान हैं जो सतोगुणी-रजोगुणी और तमोगुणी है इसमें सब प्रकार के व्यक्ति हैं। परन्तु सतोगुण बाहुल्य उस समय तो ब्राह्मण ही होते थे, और वे ब्राह्मण ही इन शिष्यों को इन क्षत्रियों को उपदेश देते थे कि आपके सन्तान नहीं है आपके इतने गांव हैं आपकी प्रजा आपके लिए प्रतीक्षा कर रही है कि कोई ऐसा संस्थान बनाये जिससे हम सबका कल्याण हो। यह अर्थ युग तो अब आया है पहले अर्थ युग नहीं था पहले था तपोयुग। तपयुग था तपयुग में ब्राह्मण तपस्या करता था क्षत्रिय तपस्या करते थे वैश्य और शूद्र भी सेवा और व्यपार करके सेवा करते थे सेवा भी तप है। ऐसा वो जमाना था जिस जमाने के अन्दर सुख की लहरियां बहती थी। ठीक है आज का समय ऐसा नहीं है आज समय तो बहुत विपरीत हैं। उन देवस्थानों के बारे में बड़े दुखित हो रहे हैं। उनका सुप्रबन्ध भी करना चाहते हैं। बन्धुओं ऐसे इस युग के अन्दर देवस्थानों की इस समय जो परिस्थिति हो रही है वह बहुत ही अनुचित है। ठाकुर जी के भोग राग की व्यवस्था सरकार ने परोक्ष से बन्द कर दी हैं। इन्होंने जो लगान आपको सरकार में बांधा है उसका दस प्रतिशत कह करके और उसकी वह सौ, दो सौ, पाँच सौ, हजार, दस हजार, जो भी मिलने वाले हैं वो मिलने का प्रावधान हैं। परन्तु सरकार यह नहीं सोच रही है कि इस वृत्ति को पुजारी उठायेगा तो भाई कहां कहां होगा। देहात में मंदिर कहां है और उसका सुनने वाला जज कहां है, कलेक्टर कहां हैं। कलेक्टर सुनते नहीं है बाबू सुनते नहीं हैं दुःख भरी आहें पुजारी जो निकाल रहे हैं।

श्री ज्योति शंकर त्रिपाठी (काशी विश्वनाथ मंदिर प्रमुख, वाराणसी)

आज मैं इस मंच पर आप लोगों के समक्ष अपनी व्यथा-कथा प्रस्तुत करने के लिए उपस्थित हुआ। मैं अपनी व्यथा-कथा के रूप में भगवान् श्री काशी विश्वनाथ की मर्यादा, उनकी मंदिर, के सरकारीकरण और उस सरकारीकरण से भगवान् विश्वेर की मर्यादा भंग, भगवान विश्वेश्वर के मंदिर की आय पर आश्रित तीन सौ सदस्यों के परिवार वाला महन्त परिवार कहां जाय, क्या करे अपनी जीविका के लिए किससे भिक्षा मांगे, धर्मान्तरण करले क्या? या आतंकवादी हो जाय, लादेन हो जाय,सद्दाम हो जाय, भिण्डरावाला हो जाय, शासन कब चेते, कब समझे, कब सुने, क्या हम भारतीय गणराज्य के नागरिक नहीं हैं क्या? हमें हमारे संविधान ने जीने का अधिकार नहीं दिया है क्या?अधिग्रहण तो भारतीय शासन सत्ता ने सत्तामद में चूर हो कश्मीर से कन्या कुमारी, पंजाब से असाम, चतुर्दिक अनेक हिन्दू मंदिरों का सनातन धर्मो देवालयों का कर लिया। डंका बजाते हुये कि वह धर्मनिरपेक्ष है। लानत है ऐसी धर्म निरपेक्षता पर वह तथा कथित धर्मनिरपेक्षता मात्र सनातनी देवालयों पर ही अपने बल पराक्रम दिखाती हैं। अन्य धर्मावलम्बियों के धर्म स्थलों की ओर क्यों उदासीन हो जाती है, जब कि हमारे सनातन धर्मी देवालय न राष्ट्र द्रोह के केन्द्र हैं, न सत्तारूढ़ शासन के लिए कांटे हैं।

फिर क्यों हमारे धर्मस्थल इस प्रकार अधिगृहीत किये गये? इन पर ही आक्रमण क्यों किया गया क्योंकि हम सनातनी सहिष्णु हैं, हम चुप हैं, हम बर्दाश्त करते हैं, कब तक? कब तक चुप बैठे- रहेंगे हाथ पर हाथ रखें रहेंगे। मण्डल-कमण्डल के लिए आत्मदाह किया गया मंदिर अधिग्रहण के लिए आत्मदाह नहीं किया जा सका।धर्माचार्य गिरफ्तार हों - इसका विरोध नहीं किया गया। हाँ सत्तारूढ़ चाहे जो भी राजनैतिक पार्टी हो हमें प्रलोभन तो बहुत देते हैं किन्तु अधिग्रहण के उपरान्त उस मंदिर की जीविका से जीवित रहने वाले प्राणियों को कितना दोष दे पातें है? क्यूँ मारना चाहते हैं हमने क्या बिगाड़ा उनका। अरे जनता से मिलने वाली जो धर्मस्व की आय थी वही हम पाते थे।

आज जो सरकारीकरण के बाद ये सरकारी नौकरशाह मंदिरों पर कब्जा बनाये हुए हैं। क्या इनके वर्तमान स्वरूप को आप महन्त, पण्डा, पुजारी कह सकते हो। इनसे आप उसी प्रकार प्रसाद, चरणामृत, चन्दन, तिलक आदि प्राप्त कर सकते हो, इन्हें देने का अधिकार है क्या? जिन मंदिरों का सरकार ने अधिग्रहण किया उन मंदिरों को शास्त्रअनुमोदित आगमोक्त अपनी सम्प्रदायगत एक मर्यादित विधान है क्या? ये नौकरशाह जो मंदिर अधिग्रहण के उपरान्त अपना कार्यालय खोलकर काबिज हैं ये उन विधानों से उन आगमशास्त्रों से उन दीक्षित मंत्रो से विभूषित हैं क्या? क, ख, ग, भी नहीं जानते। मंदिर के नित्य की आराध्य की सेवा-पूजा, भोग-विलास, नित्य-पाक्षिक, साप्ताहिक, दैनिक, मासिक, षा०मासिक, वार्षिक, उत्सवादि की परम्परा, व्यवस्था, शुद्धता, पवित्रता स्वावलम्बिता ये पालन करते हैं क्या? इसे देखना होगा हम तो सतह से च्युत कर दिये गये, मंदिर प्रशासन से हटा दिये गये। अब उन मंदिरों के सार्वजनिक स्वरूप को देखने के लिए जनता ही आगे आवें तो देखे काल का विक्षेप करना नहीं चाहता किन्तु मैं महाकाल का पुजारी जिन पर काल की सत्ता कोई भी प्रभाव नहीं, बांधा जाऊं तो मैं कैसें कह सकता हूँ, इन्हीं शब्दों के साथ कहना तो बहुत कुछ चाहता था किन्तु द्वापर में पोरबन्दर से जैसे सुदामा-द्वारिका आये भगवान् कृष्ण के पास ऐसे ही मैं काशी से यह अकिंचन सुदामा इस निम्बार्कतीर्थ- 'श्रीजी' महाराज के दरबार में अपनी फटी झोली लटकाये चला आया, कुछ याचना

करने, कुछ मांगने किन्तु मुझे सुनाना ही अपेक्षित नहीं समय ने हमे बांध दिया क्षमा करें मेरी त्रुटियों को - **धन्यवाद!**

श्री डा. वृन्दावन विहारी दास

(काठियाबाबा, कोलकत्ता)

देवस्थान सुरक्षा विषय पर बोलने से पहले एक कहानी सुनाता हूं। जापान में हमारे देश से कोई सन्त पधारे हुये थे। जापान में रास्तें में जाते समय कहा मैं इतना भूखा हूं यहां पर मुझे फल तक नहीं मिल रहा है। तब तक एक छात्र उसी जापान का वहां से गुजर रहे थे, गुजरते हुये बोले महाराज आपने क्या बोला- बोला हमको तो यहां फल भी नहीं दिख रहा है और रहने की तो यहां दूर की बात हैं। मैं थोड़ा जलपान करूंगा थोड़ा कुछ लूंगा वह भी व्यवस्था नहीं हैं। तब वह छात्र क्या कहता है- महाराज आप मेरे झोले की देखभाल करते रहिये, मैं तब तक आता हूं। इतने में ही वह जाकर के फल खरीद लाया महाराज को दे करके बोलता हैं। महाराज भूल से भी कभी कहियेगा नहीं हमारे देश में फल नहीं मिलता है। आप देखिये हमारे देश में, हमारे देश की निन्दा पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हमारे संस्था के जो आचार्य हैं, हमारे जो दिव्य सन्त, महन्त है इनकी कैसे निन्दा होती है। हम लोग चुप बैठे हैं आज तक हम लोग अपने मुख से एक भी बात कहने के लिए समर्थ नहीं है। पर जापान के उस बालक को देखिये अपने देश में थोड़ा सा फल नहीं मिलता है दूसरे देश में यह न बोले फल नहीं मिलता है। हमारे देश के साधु-सन्त विश्व के संरक्षक हमारे मठ-मंदिर के ही संरक्षक नहीं, हमारी भारतीय संस्कृति के भी संरक्षक है।

काशी विश्वनाथ मंदिर और श्रीकृष्ण जन्मभूमि और हमारे अयोध्या के राम मंदिर ही नहीं भारतवर्ष के ऐसे हजारों मंदिर है जो अभी असुरक्षित रूप से हैं। जिनकी सम्पत्ति हड़पने के लिए सरकार किसी न किसी प्रकार से कोई योजना बना करके योजना बद्ध रूप से उसे सरकारीकरण के लिये एवं उन्हें अधिग्रहण करने के लिए कुछ न कुछ योजना बनाती रहती है। और जगन्नाथ मंदिर जो पुरी में है जगननाथ मंदिर के चारों ओर निम्बार्क सम्प्रदाय के ही ऐसे चार मठ हैं- जो कि राधाबल्लभ मठ, रामजी मठ, चिल्किया मठ, दु:खी श्याम मठ हैं जिसमें असामाजिक लोगों का अड्डा बना हुआ है। राधा वल्लभ मठ के महन्त जी अवश्य ही उपस्थित होंगे उनकी सेवा आदि चलने पर भी ऐसे दु:खी श्याममठ और चिल्किया मठ इत्यादि अन्य मठों में आज भी हमारे सम्प्रदाय के ही केवल नहीं और कोई दूसरे सम्प्रदाय के लोग भी नहीं असामाजिक लोग भी नही सामाजिक लोग ग्रहण किए हुये हैं। ऐसे पश्चिम बंगाल में भी बहुत सारे स्थल हैं। जो बाकुरा मण्डल में है हजारों बीघा जमीन है और ऐसे ही बंगलादेश में भी हजारों मठ हैं। जिनको तोड़ा गया है राम-मंदिर टूटने के साथ-साथ किसी को पता ही नहीं है। ऐसे ही बनारस में भी बहुत सारे मठ हैं जिन मठों का आज सरकारीकरण ही केवल नहीं और भी ऐसे असामजिक लोग दखल किए हुये हैं।

आज हमारे भारतवर्ष में भी कोई कहता है यह तो निम्बार्क सम्प्रदाय है, यह शैव सम्प्रदाय है, यह शंकर का है, यह विष्णु का है ऐसे करके फूट पैदा करके सम्प्रदाय-सम्प्रदाय को लड़ा देते हैं। इस सम्मेलन का आयोजन कर सम्प्रदाय से ऊपर उठकर हमारे आचार्य श्री इस प्रकार की उदारता का परिचय दे करके चार मठों के शंकराचार्यो को केवल निमन्त्रित ही नहीं किया उनका सम्मान भी किया आज भी सम्मान करते है आगे भी सम्मान करेंगे यही तो जो अपने जीवन में आचरण करते हुये दूसरे का सम्मान करते हैं तभी तो आचार्य हैं आज 'श्रीजी' महाराज पर हम सब को नहीं, भारतवर्ष

को व विश्व को गर्व है, जो कि आज देवस्थान की सुरक्षा के लिए मर मिट रहें है और सबका आह्वान किया है। मंदिर एक देह है मंदिर का जो शिखर होता हैं वह मस्तक होता है, हृदय में जो मंदिर होता है, वह प्राण होता है मंदिर के अन्दर जो मूर्ति होती है वह प्राण है और उसका नाक मंदिर उसका द्वार का ऊपरी भाग है, कटिदेश से होते हुये द्वार उनका पद स्थल है इसलिए हम लोग प्रणाम करते हुये मंदिर में जाते है। शिखर का दर्शन करते हैं ऐस मंदिर के श्री विग्रह को आज बंद किया जा रहा है। पुजारियों की जहां व्यवस्था है पूजा-पाठ के लिए हमारे अलग व्यवस्था जैसे बंगाल में दुर्गा पूजा की शिक्षण पद्धति चालू की है कैसे चण्डी पाठ किया जाए, इसके लिए देश-विदेशसे दुर्गा पूजा की पद्धति के लिए मांग आती है और लोगों को भेजा जाता है। तो आज ही देवस्थान की पूजा पद्धति के लिए मांग आती है और लोगो को भेजा जाता है। आज भी देवस्थान की पूजा पद्धति के व्यवस्था के लिए जो ये हमारे परिकल्पना ली गई वह बहुत ही सुन्दर परिकल्पना है इसलिए मठ किसे कहा जाता हैं- पंचशाला आश्रम में देवस्थान दैवत, अतिथि के निवास का स्थल हो, पाठशाला हो, एवं गोशाला हो, और साथ में यज्ञशाला हो।

आज क्या मठ-मंदिरों में ये पांच चीज सब जगह विराजमान है, नहीं है इसलिए तो बाहरी दुनियां के कानवेन्ट आ करके हमारे देश में लौरेटा, सेनवीयर्स, सन्ट जोन्स आदि विद्यालयों का स्थान बन गया हैं। करोड़ो करोड़ो रूपया संस्थाओं के माध्यम से विदेश में चला जाता है जो हमारे देश के विद्यालयों में मठों में काम में नहीं आता हैं। हमारे देश के मठ-मन्दिर को तोड़ करके कुतुबुद्दीन ऐबक का बनाया हुआ कुतुबमीनार जैसे ताजमहल जिसमें हमारे ही देश के मंदिरो को तोड़ करके और शिल्पियों ने मिल करके आठ आर्श्चय में एक आश्चर्य बना करके कितने लोगों का स्वागत किया जाता है। क्या आपको ध्यान है ? आपके ही मंदिर-मठों को आज श्रृंगार करके जैसे बनारस में धार्यहा मस्जिद है जिसे बिन्दु-माधव का मंदिर कहा जाता है रोज हम लोग प्रणाम करते हैं- **विश्वेशं माधवं दुण्डिं दण्डपाणिम् च भैरवम् वन्दे काशी महं गंगाम् भवानी मणि कर्णिकाम्**। क्या वह बिन्दु-माधव मंदिर आपके पास है क्या ? ऐसे हजारों की संख्या में आपके पास दृष्टान्त है, जो दु:खभरी कथा आपके बीच में सुनाने वाले मुरलीमनोहर जी हमारे भारत साधु समाज के समस्त संत-वृन्द हैं सब लोग जानते हैं।

ऐसे ही अगर धारा चलती रही तोआपके भारत की क्या स्थिति होगी जिस मंदिर में आ करके आप श्रद्धा निवेदन करते हैं जहां से निम्बार्क सम्प्रदाय के पांच चीजों को जान सकते है, अभिगमन उपादान, यज्ञ स्वाध्याय , ईश्वरपरिज्ञान। अभिगमन-अच्छे अच्छे पवित्र स्थानों में जाना और उनमें जा करके, उपादान-कुछ संग्रह करके ले जा करके उसकी व्यवस्था करना फिर उपादान के बाद हम लोग क्या करते हैं यज्ञ करते हैं वहां पर दान ध्यान होता है। मठ-मंदिरों में मूर्तियों को भोग लगाया व भक्तों को प्रसाद पवाया जाता है, पढ़ाई लिखाई की व्यवस्था होती है- वहाँ मनीषी मनन करते है वहां जप करते हैं। इसके बाद जो कुछ किया सब कुछ देवता को समर्पण करते हुय वह हुण्डी भखो आते हैं। तो क्या जैसे विश्वनाथ मंदिर से विद्यालय चलता था आज क्या वह विद्यालय चलाते है ? क्या आज उस ढंग से व्यवस्था चल रही है ? हम जानते हैं जैसे तिरूपति मंदिर से अधिगृहीत संग्रह वह धन से जैसे तिरूपति विश्वविद्यालय चलते हैं ऐसे ही मठ-मंदिरों को साधु-समाज खुद मिल करके मस्जिदों की आयस्रोत वृद्धि करते हुये ही नहीं उनकी पूजा पद्धति की व्यवस्था करते हुये मंदिरों के पुन: संस्कार करते हुये उसकी व्यवस्था करें।

मैंने श्रीलंका में जा करके वैष्णव मंदिरों को देखा, वहां शैव मंदिरों को देखा सब लोग वहां पर हिन्दू बन कर नहीं जानते हैं। सब लोग शैव बोलकर जानते हैं, हिन्दू शब्द को शैव बोलकर जानते हैं। भारत साधु समाज के सन्त बैठे हैं सब जानते हैं वहां के मंदिरों की क्या स्थिति है आप सब जानते है। बुलबुदुर के मंदिर जो कि विष्णु मंदिर है। हम जानते हैं इलाहबाद से जा करके भारत से पुरातत्वविभाग से जा करके उसकी तैयारी कर रहे हैं, क्या वहां पूजा की व्यवस्था है? न केवल संग्राहलय बन करके पड़ा हुआ है। इस प्रकार मारीशस में मंदिर है, आस्ट्रेलिया में सोलह मंदिर है, ऐसे ही और देशों में मंदिर है, कई घर में रख के मंदिर रखते है, और कहीं पूजा-पद्धति देवताओं को रविवार और शनिवार में पूजा होती है। इस प्रकार से हर ढंग से पूजा पद्धति की व्यवस्था है। चर्तुविंशति प्रकार से पूजा है, षोडशप्रकार से पूजा है, दश प्रकार से पूजा है, पंच प्रकार की पूजा है, कम से कम पंच प्रचार की पूजा धूप-दीप, नैवेद्य इत्यादि तो कम से कम मिले, वहां पर थूँकते है वहां मंदिरो में गोबर रखते हैं। आज क्या कहूं इस अवस्था में मंदिरों की पूर्ण सुरक्षा हो, वह नेपाल हो, बंगलादेश हो, भारत हो, कहीं भी मंदिरों की सुरक्षा होनी चाहिये। पूज्य 'श्रीजी' महाराज के चरण कमलों में प्रार्थना करके सन्त के प्रति प्रार्थना करते हुये विदाई लेता हूँ।

श्री त्रिलोकी नाथ (अर्चक) (श्री चार भुजा जी, मीराबाई मंदिर मेड़ता)

अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन में उपस्थित सभी भागवत भावुक महानुभावों, मैं स्पष्टतः आपको याद दिलाना चाहता हूं कि शुरू में मंदिरों की क्या व्यवस्था थी और आज वोटों के लालच में राजनेता मंदिरों की सारी सम्पत्ति किस तरह हड़प रहे हैं, मंदिरों को किस तरह लावारिस बना रहे है। जब जागीरे रिज्यूम हुई थी, मंदिरों के नाम, पहले मंदिरों की निजी खातेदारी कृषि भूमि थी। वह उनकी खातेदारी में थी। उनकी कृषि भूमि जो थी उसकी व्यवस्था वहां के मठ-मंदिरों के जो पुजारी थे, उस आधार पर चलती थी। यहां इन मठों और मंदिरों के बारे में थोड़ा सा खुलासा कर देना जरूरी है। ये तीन प्रकार के थी। हाक़मी मठ राजाओं और जागीरदारों के बनाये हुय थे, जिनकी व्यवस्था राजाओं और जागीरदारों के हाथ में थी जो आज भी देवस्थान के कब्जे में है। और इनका नमूना मैं आपको बताऊं कि राज्य सरकार के बंद दफ्तर बने हुये है।

जोधपुर में नैनीबाई का मंदिर है। यहां दर्शन के लिए एक प्रतिशत व्यक्ति भी नहीं पहुंच पाते है अक्सर मंदिर बन्द रहता है, वहां केवल सरकारी कर्मचारी के दफ्तर हैं और वो मुफ्त में हैं। ऐसे ही इसी तरह बीकानेर में भी यही हालत है। दूसरे पंचायती मठ जो थे उनकी व्यवस्था जनता के पंचायत के हाथ में थी वहां पर पंचों की तरफ से जनता की तरफ से व्यवस्था जनता के पंचायत के हाथ में थी वहां पर पंचो की तरफ से जनता की तरफ से पुजारी चुना जाता था और कभी भी हटाया जा सकता था। तीसरी जो प्रणाली है वह मौरूसी मठ इनका आधिपत्य आचार्यो का रहा है। चाहे वह शैव सम्प्रदाय के हों चाहें वे और किसी सम्प्रदाय के। चारों सम्प्रदाय के भी हो सकते हैं, और हैं। इनकी व्यवस्था वंशानुगत पुजारियों के हाथ में रही है। सरकार की नींयत खास तौर से इन मौरूसी मठों और मंदिरो की तमाम सम्पत्ति हड़प कर नष्ट करने की रही है।

इन देवालयों की खर्च व्यवस्था कयाम रखने के लिए जो कृषि भूमि मिली थी, वह इन देवस्थानों के मठाधीशों व व्यवस्थापकों की तपस्या के बल पर प्राप्त हुई थी भीख में नहीं। जिसके तहत हम लोग वंशानुगत

रूप से इसकी व्यवस्था करते चले आ रहे हैं। लेकिन सरकार की गिद्ध-दृष्टि वहां की तमाम सम्पत्ति हड़प ने की हैं। मैं यहां आपको टेनेन्सी एक्ट का कुछ हवाला देता हूँ। टेनेन्सी एक्ट तेरह में लिखा है कि ज़ागीर रिजक्सन के वक्त जो मन्दिरों की खातेदारी भूमि थी, उसको टेनेन्सी एक्ट सैक्सन पांच और सैक्शन पच्चीस के मुताबिक उनकी निजी कास्त मानते हुये- मंदिर के नाम करना चाहिये लेकिन सरकार ने मंदिरों की जमीने तमाम हड़प लीं, अधिग्रहण के नाम पर और उसके बाद वो अपनी अर्निग के लिए बांट दी लोगों में वर्षो तक इनके मुकदमे चलते रहे। मैं खुद उसका एक गवाह हूं। तीस साल तक मैंने मीराबाई का मंदिर जिसका कि पुराना नाम श्री चारभुजा का मंदिर है क्योंकि मीराबाई की आस्था चारभुजा में थी। जागीर चार भुजा मन्दिर के नाम थी मैंने तीन साल तक मुकदमा लड़ा और रिफ्रैन्स में आज तक मुकदमें पड़े है अदब तामील के। लेकिन सरकार ने इसी बीच, हमारे महन्तों की कृपा बनी कि सरकार पा दबाव डाला, और एक आदेश सरकार ने निकाल दिया- छै -तीन-तीन- कि मंदिरों की जमीन पूर्ववत मंदिरों के नाम कर दो। इसी बीच (13/12/1991)को एक आदेश सरकार ने निकाला वह यह था कि मंदिरों की जो जमीन है उसमें डोरी बनाम अमुक मन्दिर व ''एतमास मेन्स'' अन्दर ही मैनेजमैन्ट व एतमाम,पुजारी ''सो एण्ड सो'' जो दर्ज है केवल मंदिर का नाम लिख दो, खातेदारी में व हक़ पुजारी, अण्डर दी मैनेजमंट ऑफ पुजारी जो चीज़ है उसको हटा दो। पुजारियों का जब मैनेजमेन्ट ही खत्म हो गया तो मंदिर लावारिस बन गये।

मूर्ति की जमीन पर पुजारी यदि मांगने के लिए भी जायेगा छै-तीन-तीन के तहत कि कब्जा दो उसें अधिकार नहीं रहा। तो हमारे संगठन ने जोधपुर हाइकोर्ट के अन्दर 'रिट' एस.पी.सी. डब्लू रिट नम्बर दो सौ चौसंठ ओबलिक छियानवे दर्ज और उसके अन्दर 'स्टे पिटीशन दो सौ तेईस ओबलिक छियानवें' भी हुई। जिसमें हाईकोर्ट जोधपुर ने ये आदेश पारित किया। जिसकी तारीख थी ''चौबीस एक छियानवें'' और उसको कनफर्म किया ''दस आठ अट्ठानवें'' को, कि मंदिरों की भूमि जिस तरह पूर्ववत दर्ज की जा रही है उसमें पुजारियों के नाम जो पहले थे ''जागीर रिजक्सन'' के वक्त उनको नहीं मिटाया जांय लेकिन कुछ नहीं हो रहा है और सरकार कब्जा नहीं दे रही है। थोड़ा सा समय एक मिनट और चाह रहा हूं मैं।

हमारा राम मंदिर ये हिन्दूओं की आस्था का मंदिर है यहां मोहम्मद साहब नहीं जन्में यह हमारा अधिकार है कि हम उसे बनायें इसके लिए हमें लड़ना चाहिये, अधिकार मांगने से नहीं मिलते लड़ने से मिलते हैं। गौवध सरकार इसलिए बंद नहीं करती क्योंकि उसका अर्निंग है। यहां पर सरकार ने विधवा बनाओं ओर विधव आश्रम खोल दों ये नीति बनाई है जो बिल्कुल गलत है। पहले तो मंदिरों की जमीनें हड़प कर लीं और अब उसको कहते हैं हम एनयूटी दे रहे है ये क्या है? पूरी जमीन के बदले में चार आना बीघा प्रतिवर्ष। ये तो मैं समझता हूं हमारे धर्म पर कुठाराघात है एक प्रकार से मंदिर जो धर्म की आस्था के प्रतीक हैं। मंदिरों को नष्ट करने का मतलब ये हुआ कि तमाम हिन्दुओं को नष्ट करने की ये एक चाल है आप लोगों को सावधानन होना चाहिये।

महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीहरिनारायणानन्दजी महाराज

(राष्ट्रीय महामंत्री, भारत साधु समाज)

भगवान श्री कृष्ण के चरणों में वन्दना करते हुये हम आप सबों का ध्यान देश की वर्तमान स्थिति की ओर आकृष्ट करना चाहते हैं जिसमें साधु समाज व

हिन्दू-समाज का क्या दायित्व है। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि श्रद्धा के बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं होगी, और ज्ञान प्राप्ति के बिना भगवान् का दर्शन, सामीप्य, सालोक्य, सायुज्य की प्राप्ति असम्भव हैं **'श्रद्धावान् लभते ज्ञानं'** तो जब धर्म के प्रति, गुरु के प्रति, माता-पिता के प्रति और श्रेष्ठ जनों के प्रति श्रद्धा का अभाव हो जायेगा तो मानव जीवन की सफलता असम्भव हैं। पुरूषार्थ की सिद्धि के लिए परमार्थवृत्ति को जगाना होगा और उसके लिए श्रद्धा की आवश्यकता है तो इसलिए कहा है **''ज्ञानं लब्ध्वा परांशान्तिम्,''** तो ज्ञान की प्राप्ति के बाद तो कोई वस्तु अलभ्य नहीं है।

इस लौकिक संसार में आज से पांच हजार एक सौ वर्ष पहले एक ऐसे महादिव्य, महापुरुष का प्राकट्य हुआ जिन्होंने जनता के सभी प्रबुद्ध वर्गो में एक ऐसी चेतना द्वैता-द्वैत दर्शन को प्रतिपदित किया। जिसमें भगवान कृष्ण परम को ईश्वर व परा शक्ति राधा को सृष्टि और प्रकृति के साथ जोड़ा, इसमें ही भक्तिमार्ग को प्रशस्त किया। कर्म के साथ यदि ज्ञान नहीं होगा और ज्ञान के साथ भक्ति का समन्वय नहीं होगा तो मनुष्य का जीवन सफल नहीं हो सकता है। क्योंकि जो मनुष्य का जीवन है, वह क्या जीवन है अरे जीवन तो नाशवान् है, कीडा-मकोड़ा है, भालू-बन्दर है, गधा है, बिल्ली है, मछली है, वह भी तो प्राणी है उसी तरह से मनुष्य है , यक्ष हैं किन्नर हैं, गन्धर्व हैं, इस भूतल में तरह तरह के प्राणी हैं लेकिन जब ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की तो, आप ध्यान दो इस रचना में केवल मनुष्य नहीं है, भालू-बन्दर, कुत्ता-बिल्ली, छुछुन्दर सब के सब ब्रह्माजी के सृष्टि में हैं इसी में देवता हैं, यक्ष हैं, गन्धर्व हैं किन्नर हैं, तरह तरह के जीव हैं, तरह-तरह के प्राणी हैं। लेकिन जब मनुष्य को बनाया तो उनके मन में एक अद्‌भुत बात लगी कि हमने सभी प्राणियों को बनाया और प्राणियों में अन्तःकरण तो है। देखते है हमारे और तुम्हारे शरीर में अन्तःकरण है हम साधु-महात्मा है सन्त है, धर्माचार्य है, आचार्य हैं, विद्वान है गरीब है अमीर हैं।

इस अन्तःकरण में, मनुष्य के अन्तःकरण में इसके चार भाग हो जाते हैं। एक तो मन है, दूसरा बुद्धि, तीसरा चित्त, चौथा अहंकार हैं। तो मन कुत्ता, बन्दर, भालू में भी है बुद्धि भी है, और लड़ने के लिए तैयार हो जाता है तो अंहकार भी है। अन्य जीवों से मनुष्यों में पशुओं में क्या अन्तर है? तो कहा कि मनुष्य के अन्तःकरण में विवेक है। पशु-पक्षी में विवेक नहीं है। विवेक व्याख्या करते हुये ऋषि ने कहा **''नित्यानित्यवस्तुज्ञानं विवेकः''**। नित्य और अनित्य वस्तु की पहचान करने वाली जो शक्ति है उसका नाम विवेक है। भले-बुरे की पहिचान करने वाली जो शक्ति है उसका नाम विवेक हैं। तो बिना विवेक का जीवन मानव जीवन तो असुर-राक्षस का जीवन है। आप देखिये रावण कोई कम विद्वान् था, रावण कोई कम धनवान् था, रावण कोई कम बलवान् था, लेकिन उसी रावण की विवेकहीनता के कारण, विवेक शून्यता के कारण, सोने की लंका को हनुमानजी ने ध्वस्त कर दिया,धू-धूकर जला दिया और रावण के सारे नाती-पूता सहित संहार हो गया।

आज की राजनीति जिनके हाथों में सत्ता में जाती हैं वह कृत्य रावण का करते हैं। यदि विवेक शून्य राजनीति होगी, धर्महीन राजनीति होगी और साधु-सन्तों के आश्रमों पर साधु-सन्तो की व्यवस्था में, जनता की धार्मिक आस्था में लगातार आक्रमण होते रहेंगे तो उनकी गति वही होने वाली है जो रावण की गति हुई।

आज के राजनीतिक नेता चाहे किसी भी दल के नेता हो, अगर विवेक शून्यता से काम करके मठ-मंदिरों की सम्पत्ति को हड़पने का काम करेंगे तो साधुओं की और आप जो भक्तजन हैं सारे भारत के, हिन्दू समाज के और दूसरे धर्मों के भी लोग जब हूँकार करेंगे

तो इनका नाश हो जायेगा। इसलिये मैं कहना चाहता हूँ कि तुम साधुओं की भक्तों की हूँकार से अपने को यदि मुक्त रखना चाहते हो तो न्याय-मार्ग पर चलो जो हमारे डेमोक्रेसी का प्रजातन्त्र का बेसिक थीम है जो मूल आधार है उस पर चलो। भारत की प्रत्येक जनता को किसी भी धर्म का मानने वाला हो हमारे संविधान में बराबर अधिकार दिया गया है। इसलिए उन अधिकार की दृष्टि को इस ध्यान में रखकर यदि हमारी व्यवस्था चलेगी तभी हमारी जीवन रक्षा हो सकती है अन्यथा रक्षा होना सम्भव नहीं है।

भारत में कितने हमारे मठ-मंदिर और आश्रम हैं। ये धर्म और उपासना के केन्द्र हैं। यहां से हजारो हजारों -लाखों लोगों को जीवन की प्रेरणा मिलती है। थोड़े समय के लिए मन को शान्ति होती है। आज सब मठ तो नहीं ऋषियों के आश्रम रहे। मठों के वर्तमान स्वरूप का निर्धारण आद्य शंकराचार्य ने किया। उसके बाद निम्बार्काचार्य जी ने मध्वाचार्य जी ने और कुछ बल्लभाचार्य जी ने और फिर बाद में जो दूसरे संत हुये कबीर साहब ने, दादू पन्थ ने गरीब साहब ने नाथ जोगी ने चरनदासी ने ये सारे जो हमारे मत पन्थ के सम्प्रदायाचार्य है इन सब के सब ने केन्द्र बनाये। जों जनता को अपने सामान्य कार्यों के बाद, थोड़े समय जाकर आध्यात्मिक सत्ता के साथ आध्यात्मिक चेतना के साथ इक्ट्ठे होने का अवसर प्रदान करते है। आप ने देखा - हमारे जगद्गरू निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज का जो स्थान है धर्म-पीठ का, इसकी स्थापना भगवान् श्री निम्बार्काचार्य जी ने जिनको हम भगवान् इसलिए कहते कि ये सभी सामान्य लोगों के कल्याण के लिए काम करते है ऐसे भगवान् श्रद्धा से कहते हैं। भगवान् की व्याख्या तो वेद में की गई है कि परमात्मा वह है जो सर्वव्यापी है, सारी व्याधियों से मुक्त है, स्वयं उत्पन्न होता है, दूसरों को उत्पन्न करता है, उसको फोड़ा-फुन्सी, घाव, जुकाम, सर्दी, बुखार नहीं होता है। लेकिन भगवान् की जो शक्ति है, आविर्भाव जो हुआ शक्ति-विशेष-महामान, महापुरूष महात्माओं में 'श्रीजी'महाराज उसी श्रेणी में आते हैं। इतनी तपस्या, इतनी तितिक्षा, और इतना श्रम, इसलिए भी श्रद्धा। इस तरह से हमारे दूसरे आचार्य भी है जो धर्म के अभ्युदय में लगे हुये हैं।

लेकिन मैं आपको कहूं कि कुछ ऐसे भी साधु मठाधीश मठ पर हो गये, जिन्होनें अपने धर्म और सम्प्रदाय की मर्यादा का उलंघन किया। कई एक लोगों ने विवाह कर लिया भारत साधु-समाज ऐसे लोगों का कोई समर्थन करने वाला नहीं है।

किसी धर्माचार्य की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल कोई कानूनी व्यवस्था करने का नैतिक अधिकार किसी शासन को नहीं होता है। लोकतन्त्र का आज मजाक उडाया जा रहा है। लोकतन्त्र का मजाक आज उन लोगों के हाथों उड़ाया जा रहा है जो चोरी से डकैती से तरह तरह के अपराधों के द्वारा अगाध सत्ता पा करके और फिर सत्ता में, कहीं पार्लियामेंट में बनते है मैम्बर, कहीं असेम्बली में बनते है और फिर भी अपराधों से जुड़े हुये है लेकिन उन पर जितनी त्वरित कार्यवाही होनी चाहिये वैसा नहीं करके एक सीधे साधे धर्माचार्य कांची के श्रद्धेय जयेन्द्र सरस्वतीजी महाराज जो बहुत ही एक सौम्य महात्मा है उनको जेल में डाल दिया। अरे भाई तुम्हारे पास सत्ता है इस सत्ता का तुम इस तरह से दुरुपयोग करोंगे ?

भारत की जो सामान्य लोकतन्त्रात्मक पद्धति है उस पद्धति में सभी धर्म और वर्ग के लोगों को जीने का, रहने का पूरा अधिकार है। लेकिन आज का जो राजनीति का वातावरण है वह ऐसा विवेक शून्य होता जा रहा है अभी आपको मैंने रावण की कथा बताई कि रावण की विवेक शून्यता के कारण सम्पूर्ण रावण का परिवार ध्वस्त हो गया और सोने की लंका धू-धू कर जल गई।

तो आज के राजनेता आज के सत्ता में रहने वाले लोग इस प्रकार अपने सत्ता का दुरूपयोग राजनीतिक लाभ के लिए करेंगे तो उनका भी अस्तित्व नहीं रहेगा। कांची शंकराचार्यजी के बारे में आपको बतला रहा हूँ कि आज से चालीस वर्ष पहले जब मैं भारत सरकार का ''इण्डौपमैण्ट कमिश्नर'' था तो कांची के दूर उनके जो गुरू स्वामी चन्द्र शेखर सरस्वती जी थे उनका बयान लेने गया था कि उनका क्या अभिमत है हमारे साथ सर सीबी रामास्वामी अय्यर थे। तो देखा कि शंकराचार्य जी के पीछे एक छोटा लंगोटा वस्त्र पहने चटाई पर ये बैठे हुये थे। उस समय मैंने देखा इसकी अपनी परम्परा के प्रति कितनी श्रद्धा है। और उन्होंने अनेकों सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में काम किया और एक ऐसे मामले में उनको घसीटा गया जिसमें एफ. आई. आर. सीधे उनके सम्बन्ध में नहीं है।

इसलिए मैंने तमिलनाडू सरकार को फैक्स किया चीफ सेक्रेट्री को कि भारत साधु समाज आपकी सरकार की इस कार्यवाही की निंदा करता है। और जिस तरह से पुलिस ने और शासन ने व्यवहार किया वैसा व्यवहार किसी भी धर्म के धर्माचार्य के साथ नहीं किया गया यह हिन्दू भावना का अपमान है। लेकिन मैं आपको यह कहना चाहता हूँ कि आखिर यह स्थिति क्यों आ रही है इसलिए हमारे शास्त्र में कहा है कि **''अपूज्यायत्र पूज्यन्ते पूज्यापूज्य व्यतिक्रमः यत्र-तत्र जायन्ते दुर्भिक्षम् मरणं भयम्''**। भारत की जनता इस बात के लिए तैयार रहे क्यों ''अपूज्यो यत्र पूज्यन्ते'', जहां योग्य हैं जहां महात्मा है धर्माचार्य हैं उनकी तो पूजा नहीं होती, उनके प्रति तो सम्मानजनक व्यवहार नहीं दिखाया जाता, लेकिन जो लोग अपराधी है माल कमाते हैं और अयोग्य है उनको प्रोत्साहन मिलता है तो फिर इसका आधार क्या है, इसका आधार तो आप और हम हैं। स्वामी जयेन्द्र सरस्वती जी की गिरफ्तारी अब कोर्ट का मामला है कोर्ट से आशा की जाती है कि इसमें वो निष्पक्ष भाव रखेंगे लेकिन भारत साधु समाज ने मांग की है उनको तुरंत रिहा किया जाए और रिहा करने के बाद सम्मानजनक व्यवस्था हो और हमने यहां तक कह दिया है कि तमिलनाडू सरकार को तुरंत बर्खास्त किया जाय और राष्ट्रपति शासन लगाया जाय। अखबार मे दे दिया। भारतीय संस्कृति माने हिन्दू धर्म या मुस्लिम धर्म किसी धर्म के हो भारत भूमि से उत्पन्न व्यक्ति हो तो भारत भूमि से उत्पन्न व्यक्ति का मतलब जिसको भारतीय संस्कृति और धर्म में आस्था हो। मनुष्य का जीवन कैसे कहलायेगा। तुम पशु जानवर राक्षस तो नहीं हो। तुम मनुष्य हो। अभी कुरूक्षेत्र में मंदिरो के अधिग्रहण के लिए एक कानून बनाया वहां की सरकार ने और वह राज्यपाल को भेजा हस्ताक्षर के लिए। मैनें राज्यपाल जी को किदवई जी हैं हमारे मित्र हैं, हमारा सम्बन्ध है बिहार में रहे हैं बहुत वर्षों तक, उनको मैंने फैक्स दिया, एक मेमोरण्डम दिया। उसमें कहा कि मुख्यमंत्री प्रैसीडेन्ट होगा, यानी मुख्यमंत्री महन्त के ऊपर वह श्रीमहन्त बनाया जायेगा ये क्या मजाक हो रहा है। यह हिन्दु धर्म के प्रति इतने कठोर और भी दूसरे धर्म है ठीक है कि नक्फ बोर्ड बना हुआ है, क्रिश्चियन का है, बुद्ध का है,उसके बारे में कोई सोचता नहीं आपके मंदिर को अधिग्रहण किया क्यों किया। उसको क्यो कलक्टर को दे दिया, कहीं एस.डी.ओ. को बिठा दिया। अब कचहरी की हालत आप जानते हो। कोई भी ऐसा कलक्टर का एस.डी. एम. का ऑफिस नहीं है जहां घूस रिश्वत लिये बिना कोई काम होता हो। आज देखो दो तरह के आक्रमण है जो बहुत गम्भीर है। एक तो ये कानून के द्वारा मठाधीशी के पोजीशन को नीचे करके उनके उपर कन्ट्रोल करना चाहते हैं। मैं नहीं चाहता किसी मठ का मठाधीश अगर दुराचारी हो या गलत रास्ते पर जाता हो, उसका नियन्त्रण नहीं हो, लेकिन उसका नियन्त्रण कलक्टर नहीं करेगा।

उसका नियन्त्रण साधु-समाज के बोर्ड को करना चाहिये। निम्बार्क सम्प्रदाय का आद्य निम्बार्काचार्य जी का निर्णय सर्वोपरि होना चाहिए। रामानंद सम्प्रदायाय है, दशनामी सन्यासी का है, अलग-अलग दादू पन्थी सम्प्रदाय का है जिस किसी का गरीब दास की सम्प्रदाय का है, हरेक सम्प्रदाय के प्रतिनिधि को निकालकर एक बोर्ड बनाया जाय और नियम कर दिया जाय कि सम्पत्ति का दुरुपयोग नहीं करेगा।

आप देखो मैंने हाल में ही एक लेख लिखा, जवहार लालजी की जयन्ती पर। जवाहर लाल से हमारा बहुत परिचय था सब लोग सारे दुनियां के लोग जानते हैं। मोरारजी देसाई, जवाहरलालजी, गुलजारी लाल नंदा, इन्दिरा गांधी बाद से राजीव गांधी से भी हमारा बहुत परिचय हुआ और जब राजीव गांधी तो मैंने ऐसा कहा तो देखो उनने तुरंत बुलाया कहा कि भाई स्वामी जी कह रहे हैं साधु-समाज की बात माननी चाहिये। मठ-मंदिर इस पर सरकार के नियन्त्रण का क्या मतलब। लेकिन तो भी कोई कार्यवाही नहीं हो सकी। लेकिन आज कोई सुनने को तैयार नहीं तुम्हारे शासन में क्या अनर्थ हो रहा है।

हमारे विधान के ''आर्टीकल ट्वैन्टी फाइव'', ''ट्वैन्टी सिक्स'' पच्चीस और छब्बीस में लिखा है कि भारत के प्रत्येक धर्म स्थान को अपनी रीति-नीति के अनुसारव्यवस्था करने का और सम्पत्ति रखने का और सम्पत्ति को अर्जन करने का पूरा अधिकार है जो मौलिक अधिकर है। ये क्या कर रहे है बदमाशी, बदमाशी मै इसलिए कहता हूँ कि जानबूझ कर इनके पीछे पौलिटीकल थीम्स है माइन्ड में, क्या कर रहे है- छोटे छोटे मन्दिरों की जीमन, पहले तो भूमि हदबंदी कानून बनाया, सारे भारत की जमीन का लेकिन हम लोग इन्दिरा गांधी से मिले जैसा कि मुरलीमनोहर शरण जी ने कहा हम उसको आज भी स्मरण करते हैं उसने कह दिया कि नहीं मठ-मंदिरो की जमीन पर जो सार्वजनिक है यह कानून नहीं होगा। इसलिए राजस्थान का भी छूट गया पंजाब का भी छूट गया लेकिन हमारे बिहार में बहुत सारा सौ एकड मतलब दो हजार बीघा हमारी जमीन लैण्ड सीलिंग में चली गयी। वहां वजू कम्युनिष्टों ये था वो बड़ा भारी खतरा है कम्यूनिष्ट सी.पी.एम. ये देश की कोई आर्थिक व्यवस्था को सम्मिलित रूप से चलने नहीं देना चाहते। यह गरीबों का नाम लेते है और गरीबों के लिए करते कुछ नहीं है। ये ई.सी.पी.आई. सी. पी. एम. कहां थे जब पिछली सरकार ने मंत्रियों का वेतन बढ़ा लिया। केन्द्र के मंत्री जवाहर लाल, नंदा जी जिन्दगीभर साढ़े सत्रह सौ रूपये महीना अपना वेतन लेते रहे। लेकिन पिछलें तीन वर्षों में इन्होने क्या किया कि एम.पी. लोगों का चालीस हजार रुपया महीना बढ़ा लिया। तुम्हारे हाथ में कानून बनाना है कि कानून बनाकर सबसे पहले देश का सारा रूपया अपने लिए ले लो, अपने कुटुम्ब के लिए ले लो, एक लाख टेलीफोन और फ्री कर दिया और हर एक मंत्री का चालीस हजार रूपया महीना। जो सरकारी अधिकारी बीस हजार, पन्द्रह हजार पाता था दिल्ली में उन सबको चालीस हजार -पचास हजार रुपया महीना तो जितनी आय आमदनी हो गई तो उस आमदनी का आज जो स्वरूप है? भारत की सकल आमदनी का इक्कतीस प्रतिशत हिस्सा विदेशों से कर्ज लिया जाता है। उसकी सूद में जा रहा है और ये नारा पीट रहे है कि मैं विकास कर रहा हूँ किस बात का तुम विकास कर रहे हो, चोरी का, डकैती का, अपहरण का, हत्या का, जब तक प्रशासन में, जब तक सार्वजनिक जीवन में नैतिक मूल्यों का जागरण नहीं होगा, आध्यात्मिक मूल्यों का जागरण नहीं होगा तब तक समाज की दशा सुधरेगी नहीं । इसलिए भारत साधु समाज और संत महात्मा देश में आध्यात्मिक और सामाजिक जागरण का बिगुल फूंक रहे हैं उसी बिगुल में इस जयन्ती का आयोजन हुआ है

महाराज, जिन्होंने द्वैता-द्वैत दर्शन द्वारा भगवान कृष्ण और राधाजी के प्रकृति और पुरुष के सम्बन्ध को लेकर जो सत्य का दर्शन जो परमात्मा का दर्शन कराया है उनके संदेश के द्वारा हिन्दू जनता को मुस्लिम को भी, सबको मार्ग मिला, भगवान् तो एक ही है देखो मुस्लिम का, क्रिश्चियन का, हिन्दू का भगवान तो अलग अलग नहीं है जैसे वेद में कहा है 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' परमात्मा एक ही है। धर्म अनेक है पन्थ अनेक है इसलिए अपनी अपनी सम्प्रदाय की पद्धति के अनुसार सब भगवान् को मानते हैं।

आज मुस्लिम लोगों को भी राजनैतिक दल उखाड़ रहे हैं उनको क्या है- स्वार्थ दिला रहे हैं कि आपको हम आरक्षण दे देंगे। अरे आरक्षण कहां से दोगे, तुम किसी धर्म के नाम पर आरक्षण दे दोगे। नौकरी कहां है देश में, क्यों लड़ाना चाहते हो? गरीबों मे, हरिजन में, मुसलमानों में क्यों लड़ाना चाहते हो, खाली वोट के लिए दस प्रतिशत वोट मिलेगा, हम सत्ता में आ जायेंगे। सत्ता में आकर पहले जो चालीस हजार रूपया महीना तुम वेतन पाते हो, ढाई हजार रूपया महीना इन्दिरा गांधी जितना लेती थी उतना ही तुम लो। फिर तुम बात करो कि हम गरीबों का कल्याण करना चाहते हैं। आज स्थिति भंयकर है इस देश में साधु समाज सोया हुआ है बैठा हुआ है। एक आवश्यकता इस बात की है सारा साधुसमाज मान गुमान की बात नहीं करें। क्या ये नीचे साधु बैठे हैं छोटे है? नीचे ऊपर बैठने के नाम पर अहंकार की अवश्यकता अब इस देश में नहीं है। मैं तो अभी नीचे बैठा था। मैं भी एक पीठ का आचार्य हूं एक लाख हमारे दीक्षित है। बिहार में नौ जिलों में बड़ी मठ, गुरु धाम है लेकिन मै कभी इस बात पर ध्यान नहीं देता हूं।

जीवन है इस जीवन को पुरुषार्थी बनाओ। पुरुषार्थ नहीं बनेगा तब तो अपनी जागृति नहीं होंगी स्वाभिमान नहीं हो तो तुम्हारा जीवन भी दुःखी हो जायेगा। इस लिए भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कहा था 'अपने धर्म में अपने विकास में अपनी आस्था में मर जाना अच्छा है, लेकिन दूसरे धर्म में नहीं जाना' यह स्थिति, पैदा करनी होगी। आज क्या है लूटपाट की स्थिति बनी हुई है, स्वार्थ की स्थिति बनी हुई है। स्वार्थ होना अनुचित नहीं कहा जायेगा व्यवहार की दृष्टि से, आपकी सम्पत्ति आय उपार्जन करते हो करो बाल-बच्चों का पोषण करो -लेकिन धर्म मयार्दा का निर्वाह हो। केवल तुम खाओ, मलाई, दुनिया का छीना पैसा तुम्हारा धन धमार्थ, साधु-संतो की सेवा में दुःखियों की सेवा में नहीं लगे तो क्या होगा? प्राण तो निकलेगा जो कंजूस है प्राण तो उसका भी निकलेगा, जो धर्मात्मा है उसका भी प्राण निकलेगा, जो साधु-संत है उनका भी प्राण निकलेगा। यह प्राण कहां जायेगा? देखों प्राण निकलेगा कहां जायेगा? लन्दन में मुझ से यह बात पूछी गई थी, तो प्राण निकलेगा शरीर छोड़ कर तो जो तत्वज्ञानी है, जो संसार में रहकर भी संसार के पदार्थों में लिप्यायमान नहीं है जैसे 'श्रीजी' महाराज, इनको कोई संसार से तृष्णा नहीं है। आप लोग और आम लोग जो साधु-संत है जो समाज की सेवा में लगे हैं, आप जो गृहस्थ हैं परमार्थी हैं, थोड़ा अपने आमदनी का अपने बुद्धि का अपने समय का थोड़ा हिस्सा परमार्थ में, साधु सन्तों मे मंदिरों में दुःखियों की सेवा में लगा रहे है। और चौथा वह है जो डाका देता है, रास्ते चलते लोगों को जान से मारता है, सका भी प्राण तो निकलेगा चोरों का शरीर छूटेगा तो जो तत्ववेत्ता श्रीजी महाराज आदि जैसे दूसरे ऐसे महात्मा हैं उनका प्राण जो निकलेगा तो आत्मा-परमात्मा में विलीन हो जायेगी। साधु संतों का जीवन परमार्थ में लगा है वह भी परमात्मा के पास पहुंचेगा, अपने अपने विश्वास के अनुसार। लेकिन वहां सूक्ष्म शरीर में जायेगा सूक्ष्म शरीर से निकलते निकलते पहुंचेगा, लेकिन जो थोड़ा दान दिया साधु-महात्मा की सेवा किया, दुखियों की सेवा किया

उसका प्राण निकलेगा जायगा कहा, स्वर्ग लोक में जायेगा, अच्छे लोक मे जायेगा और यहां जब आयेगा तो सुखी होगा सम्पन्न होगा। और जो चोर है, डाकू है, रास्ता चलते मार देता है, मठ-मंदिरों की जमीन को हड़प लेता है ये जो सारे काम करते हैं इनका प्राण कहां जायेगा। द्रुत गति से उस गर्त में जायेगा जहां जन्म जन्मान्तर उसको प्राण नहीं मिलने वाला। तो देखो भक्तजनों जीवन का यही मूलाधार है और हमारा आज दायित्व और कर्त्तव्य है कि अपने धर्म की रक्षा के लिए सभी जुट हो जांय यह किसी भी दल के लोगों के द्वारा अगर होता है तो उनको प्रेरित करें कि तुम नीति और न्याय के साथ चलों। हिन्दू समाज के साथ हिन्दू मंदिरों के अधिग्रहण के लिए हिन्दू मंदिरों पर सरकारी शासन चलाने के लिए कोशिश नहीं करों। सारे कानून का सुधार किया जांय यहां के कानून को सुधार किया जायेगा, बिहार का भी किया जायेगा उड़ीसा का भी किया जायेगा, जहां जैसे जैसे कानून है, भारत साधु समाज खुद एक कमीशन बनाने पर सोच रहा है मैं महाराज जी से विचार करूंगा जो कि भारत साधु समाज के संरक्षक हैं किस तरह से क्या हो और साधु समाज कमीशन बनाकर देखेगा कि इसके लिए क्या नियम बनायें और फिर सरकार से कहेंगे कि ऐसा कानून का परिर्वतन करो ऐसा अगर नहीं करेगा तो राष्ट्रव्यापी आन्दोलन पर हम लोग विचार करेंगे अब मैं पूज्य श्रीजी महाराज के श्री चरणों में अपनी श्रद्धा अर्पित करते हुये क्षमा चाहता हूं ॐ शांति शांति शांति।

श्री अवधेश कुमार दास,

युवराज गलता आश्रम, जयपुर

इस समय यह सभा भारत में देवालयों की स्थिति के विषय में चर्चा कर रही है। मैं समझता हूं मैं सिर्फ उसी विषय पर चर्चा करूं। इस बात के लिए उपस्थित भक्त समुदाय के हृदय में यह पीड़ा होनी चाहिये। मैं कुछ बातों का आपके सम्मुख चित्र प्रस्तुत करना चाहता हूँ, निवेदन करना चाहता हूं। जब भारत स्वतन्त्र हुआ उसके पूर्व राजाओं का शासन था उस समय में सम्प्रदाय का प्रभाव शासन पर था, उसकी व्यवस्थओं के अनुरूप राजा भी पूर्णत: उन्हीं सम्प्रदाय के प्रमुखों पर अपना भाव रखते हुये गुरुतर निर्णय उन्हीं पर छोड़ के रखते थे। पहले भूमि का कोई मोलतोल नहीं होता था आज सब जगह भूमि का मोल होने लगा है। जब भगवान् के सम्मुख खड़े होते हैं तब तो यह कहते हैं। 'त्वदीयंवस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये' अरे जब समस्त सम्पदा भगवान् की है तो ये मूल्य और मूल्याकंन काहे का। यदि वह भगवान का स्थान है तो फिर उसमें कोई मूल्यांकन नहीं होना चाहिये, और मूल्यांकन यदि करते हैं तो फिर धर्म नहीं है। सम्पदा का कोई मूल्य नहीं है कम से कम उस सम्पदा का जो भगवान् की हैं। जहां भाव होता है तब समर्पण होता है। जिसकी जैसी श्रद्धा होती है तन या मन से तब समर्पित करते हैं और इस प्रकार मंदिरों में वह सम्पदायें इकट्ठी होती हैं। यहां स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद, सर्वत्र जितने भी ऐसे प्रमुख स्थल, जिनकी मान्यता जनता जनार्दन के बीच में विशेष हुई और जिनका सरकार की दृष्टि में यह चिन्तन हुआ कि वहां आर्थिक रूपसे बहुत कुछ इकट्ठा होता चला जा रहा है। वह सीधा सरकार ने अपने नियन्त्रण में लेने की चेष्टा की।

प्रांसगिक है अखबारों में रोज आ रहा हैं, पांच हजार करोड़ रूपये की सम्पदा कांची काम कोटि मठ में जो वहां के आचार्यों के प्रयास से इकट्ठी हुई अब उसको सरकार अपने नियन्त्रण में रखने के लिए यह सब व्यवस्थायें स्थापित करना चाहती है। मैं एक बात और भी निवेदन करना चाहता हूं देखिये जो सन्त है उनकी निंदा नहीं करनी चाहिये, लेकिन जो सन्तों के वेष में असन्त है उनकी निन्दा करने में कोई परहेज भी नहीं होना चाहिये। हमारे यहां कहा है कि ''शत्रोरपि

गुणा वाच्या दोषावाच्या गुरोरपि''। गुरू में भी दोष हो तो कहना जरूर चाहिये, पर गुरू को ही कहना चाहिये, सर्वत्र नहीं कहना चाहिये, बाहर कहना निन्दा कहलाता है। लेकिन जो एक सन्त समुदाय में इस प्रकार का वर्ग हो गया जो दूसरी सम्पत्तियों पर अपना कब्जा करने के लिए एक प्रक्रिया अपनाता है उसकी भी निन्दा करनी चाहिये। ऐसे में सरकार का समर्थन करते हुये उनसे समर्थन लेते हुये उन मठों की सम्पत्तियों पर कब्जा करने के लिए उत्सुक रहते हैं लालायित रहते हैं और फिर वह सरकार ऐसे अवसर का लाभ उठाते हुये ऐसे स्थलों में सैंध लगाती है। मेरा एक तो विषय यह है कि देवालयों का संरक्षण सुरक्षा उसमें सब से ज्यादा आवश्यक बात यह है कि जो जनता जनार्दन है उसको भी यह ज्ञात होना चाहिए। अभी एक प्रसंग यह भी था कि तिरुपति मंदिर में सर्वाधिक चढ़ावा बताया। यह चढ़ावा भेंट मंदिरों के लिए होती है। आन्ध्रप्रदेश के निगम के जितने कार्य हैं जैसे सीवर लाइन बिछाना आदि आदि इस प्रकार के कार्यों पर वह धन व्यय होगा। मैं तो नहीं समझता कि आप जैसे भक्तलोग वहां जा करके जो कुछ भी समर्पित करते हैं भगवान् के श्री चरणों में वह इस भावना से करते है कि इस पैसे से एक गटर लाइन बिछाई जांय। जैसा अभी पूर्व में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था कि जो नदियों बहुत ज्यादा बाढ़ से ओत-प्रोत होती है उन नदियों को उन सूखी नदियां से जोड़ दिया जांये जिनमें कभी पानी नहीं आ पा रहा है ताकि ये समान रूप से जल का विवरण हो सकें। तो इस भारतवर्ष में प्राचीन ऐसे इतने सारे मंदिर हैं जिनका अब कोई दीयाबत्ती करने वाला नहीं उनमें सेवा पूजा भी समय से नहीं हो पा रही है। तो क्यों नहीं ऐसे स्थलों को के चढ़ावे को ऐसे स्थलों समर्पित किया जाता है जहां उनकी उससे व्यवस्था, सुरक्षा, पूजा, नित्य अर्चना हो सके। तो ऐसा चिन्तन क्यों नहीं स्थापित होता है। हम लोगा जब भी कोई चर्चा करते है तो मात्र मठों पर स्थानों पर नियन्त्रण की बात करते हैं यह बहुत आवश्यक है जो उपेक्षित स्थान हैं उनके बारे में सरकार क्यों नही सोचती है? जितने उपेक्षित स्थल हैं उनको सरकार अधिगृहीत करना नहीं चाहती। सरकार केवल उन्हीं स्थलों को अधिग्रहीत करना चाहती है जहां आय है।

ऐसे स्थलों पर कुदृष्टि होना भारत के धर्म की ग्लानि हैं और मूल-रूप से जैसा अभी हरिनारायणानन्द जी ने बतलाया कि चर्च और मस्जिद उन पर कोई कुदृष्टि इस सरकार की नहीं होती, जब भी दृष्टि पड़ती है इन मठों -मंदिरों पर ही पड़ती है। तो यह जो भारत का बहुसंख्यक समाज है वह इस बात से पीड़ित है। और मैं ऐसा मानता हूं कि भारतवर्ष सदैव जगद्गुरु देश रहा है। दूसरे सभी देश के जो दूसरे विभिन्न मत और धर्म के अनुयायी लोग हैं उन्होंने इसको सर्वोपरि माना। यहां आ करके गुरुओं से ज्ञान-प्राप्त किया और उसके द्वारा ही फिर अपने उस ज्ञान के उस प्रकाश से दूसरे लोगों को प्रभावित किया। यह मैं इतिहास की यथार्थ बात आपसे बतला रहा हूं और आज यहां पर अगर ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है तो ये बड़ी विलक्षण बात है और बड़ी दुःख की बात है क्योंकि यहां आप देखेंगे कि जैसा, चर्च, मस्जिद इनके बारे में कभी कोई चर्चा करने से भी सरकारें डरती हैं। और यहां इतने बहुसंख्यक समाज के साथ में ये तो जो दोहरा मापदण्ड अपनाती हैं उसके कारण सम्भवतः हमारे मन में उन दूसरे धर्म, और मतावलम्बियों के लिए, मन में घोर शत्रुता का भाव यह सरकारें ही उत्पन्न करतीं हैं। मेरा आप लोगों से ये विनम्र निवेदन है कि जो आप भक्तवृन्द हैं वह इस बारे में कोई चिन्तन किया करें, सन्त समुदाय तो अपना काम करते ही है, सन्तों ने तो सदैव अपना जीवन ऐसे कार्यों में ही लगाने के लिए ही अपना जीवन उस मार्ग पथ पर मोड़ा है परन्तु आप लोगों का समर्थन बहुत जरूरी है। भारत के धर्म को इस सनातन धर्म को बचाने के लिए आप लोगों के हृदय में भी वही चिन्तन होना चाहिये।

विकास के समस्त कार्यो को प्रमुखता दी जाती है प्रत्येक शासन के द्वारा, किन्तु धर्म की रक्षा फिर कौन करेगा? राजा लोग थे वह किया करते थे वह चिन्तन भी रखते थे अब आज के राजा लोगों को सोचने पर कौन विवश करेगा? राजा ही यदि उद्दण्डी हो जांय तो उसको सोचने के लिए विवश कौन करें? इसलिए आप लोगों का ये चिन्तन बहुत आवश्यक है और मैं फिर हृदय से 'श्रीजी' महाराजको यहां धन्यवाद अर्पित करता हूं कि धर्म सम्मेलन आपने रखा है। निसंदेह कोई न कोई प्रेरणा आप लोगों के हृदय में भी रहेगीं।

धर्म की इतनी बड़ी पदवी शंकराचार्य जैसा पद हमारे यहां आचार्य पीठें जितनी भी है वह सब पूजनींय हैं। शंकराचार्यों का इतना सनातन धर्म में महत्व को जानते हुये यदि उनकी गरिमा को गिराया जाता है तो मैं समझता हूं यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए बड़े शर्म की बात है। हम सब सनातन धर्मी हैं वहां यदि आचार्यो के साथ ऐसा होता है कहीं भी होता है वहीं नहीं कहीं भी होता है तो ये दु:ख की बात है, खेद की बात है यह चिन्तन अवश्य होना चाहिये। यह भारतीय सहिष्णु धर्म है जिसने सभी को आत्मसात् किया किन्तु उद्दण्डता को सहने से आज इसकी ये दुर्दशा हो रही है तो यह सबसे ज्यादा खेदजनक आपके लिए है।

देवालय, मठ आचार्य, आश्रम यह हमारी संस्कृति के प्रतीक हैं इनकी रक्षा तभी हो सकेगी जब आप लोग सार्थक रूप में इसका चिन्तन करेंगे।

नेपाल के प्रतिनिधि मण्डल 'नैपाल वैष्णवपरिषद द्वारा' पूज्य 'श्रीजी' महाराज का अभिनन्दन

श्री हरिमोहन जी

स०मंत्री, देवालय संगठन समिति, राजस्थान

बड़े-बड़े विद्वान् और सन्तों ने अपने हिसाब से बात कहीं मैं दो तीन बात कहता हूं कि आज 'पोलिटिक्स इज गेम्स ऑफ स्काउन्ड्रल' जो धूर्त लोग हैं जो नीच लोग हैं जो पतित लोग हैं वह राजनीति में छा गये। चुनाव लड़ने से पहले वह पता नहीं किस किस तरह से आपकों और हमकों बरगलाते हैं और चुनाव जीतने के बाद उनका दृष्टि कोंण उनका कार्यक्षेत्र उनकी विचारधारा बिल्कुल बदल जाती है और वे केवल अगले पांच वर्ष बाद फिर कुछ दिनों तक इनको बरगला कर के वोट ले लेंगे इस रूप में काम करते हैं। जैसा अन्य लोगों को भी मालुम है। समय समय पर विभिन्न प्रान्तीय सरकारें हिन्दू धर्म के केवल मात्र हिन्दू धर्म के मंदिरों पर मठों पर और उनकी सम्पत्ति पर कब्जा करने के लिए तरह तरह के कानून बनाते हैं। सिक्ख गुरूद्वारों को इस नियन्त्रण से मुक्त किया हुआ है। जैन मंदिरों को इस प्रकार के नियन्त्रण से उन्होंने मुक्त किया हुआ है ये तो केवल जो सनातन धर्म के मंदिर हैं जो वैष्णवों के मंदिर हैं जो शैवों के मंदिर है जो शाक्तों के मंदिर है केवल वहीं पर उनका दृष्टिकोंण है।

मैं आपको पिछले पांच सात दिनों में जो हुई घटनायें हैं उसे पहिले निवेदन करना चाहुंगा। आप सब लोगों को याद होगा लगभग चौबीस वर्ष पहले जब ये जगद्गुरू चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती ने इनको अपना उत्तराधिकारी घोषित किया तो इन्होंने सम्पूर्ण भारत की पद यात्रा की थी। उस समय यह किशनगढ, अजमेर, ब्यावर, वगैरह भी आये थे इनके साथ गज का बच्चा था हाथी का बच्चा था, जिसकी रोजाना पूजा करते थे। इनके साथ इनकी गायें थीं और पद यात्रा करते हुये पूरे भारतवर्ष में इन्होंने सम्पूर्ण हिन्दू तीर्थों का भ्रमण किया था और उस समय से इन्होंने पचासों जगह वेद विद्यालय शुरू किये। इस मंदिर की ही लोग बता रहे है अखबारों में आ रहा है।

टी.बी. और रेड़ियों पर आ रहा है कि इस मंदिर की सम्पत्ति इस मठ की सम्पत्ति, कांची काम कोटि पीठ की सम्पत्ति, लगभग तीन हजार करोड़ रूपये है और इससे ज्यादा सम्पत्ति केवल श्रृंगेरी मठ की है यानी इन्हें केवल सम्पत्ति दिखाई दे रही है।

इन्हें ये मालुम नहीं कि उस मठ के द्वारा दो हजार विद्यालय चल रहें उस मठ के द्वारा अस्सी कॉलेजें चल रही है उस मठ के द्वारा बहुत सारे अस्पताल चल रहे है। अभी गोहाटी में जो ''शंकर नेत्रालय है वहां हमारे प्रधानमंत्री गये मनमोहन सिंह जी लोगों ने उनसे पूछा आप यहां क्यों जा रहे हो ये तो शंकराचार्य जी द्वारा संचालित है तो उन्होंने कहा कि वह बात एक अलग है और इन्होंने नेत्र चिकित्सा के कार्य में आसाम की जनता के लिए और ये जो पूर्वाञ्चल है इसकी जनता के लिए बहुत अच्छा काम किया है इसलिए वहां जाना मेरा कर्त्तव्य है। लेकिन जब उनसे यह कहा गया कि आप और आपका गृहमंत्री तमिलनाडू की सरकार को और वहां के मुख्यमंत्री को कहते, तो उन्होंने कहा ये अब तो भाई न्यायिक प्रकरण हो गया हैं। मैं आपसे ये जानना चाहत हूं कि जब आपका सीबू सोरेन था उसके विरूद्ध न्यायिक प्रकरण थे बीस बरस बाद या इक्कीस वर्ष बाद उसको गिरफ्तार किया गया उस समय आपने उसको जान बूझकर डेड़ महीने तक भागने की अनुमति दे दी छिपे रहने की अनुमति दे दी और जब ये सारी व्यवस्था हो गई कि इसके जाते ही जमानत हो जायेगी प्रस्तुत हुआ। आपने पप्पू यादव को जो जेल से निकल करके हाईकोर्ट के आदेश के बावजूद जेल में जा करके अपनी खुशियां मना रहा है और वहां रॅगरेलियॉ कर रहा है आपने उसको भी एलाऊ कर दिया। आपने शाहबुद्दीन को जो विदेशी आतंकवादियों को हथियार समर्पित करता है भेजता है आपने कभी उसको गिरफ्तार ही नहीं किया।

पिछ़ले पच्चीस तीस वर्षों से अनेक अदालतों ने उसके खिलाफ वारन्ट इशू किए कभी किसी ने उस को गिरफ्तार करने की कोई बात नहीं कही। इसी तरह के मामले ईसाई पादरियों के खिलाफ गुजरात में हुये हैं बिहार में हुये है उनको किसी ने नहीं सुना, किसी ने नहीं सोचा केवल मात्र ये ही है जो हिन्दूजन जो केवल जनकल्याण की बात करते हैं केवल विश्व के भले की बात करते हैं केवल विश्व में सद्भावना की बात कराते हैं। जिन्होंने हिन्दुओं को मुस्लिमों को एक करने के लिए पिछले कई वर्षों से लगातार अयोध्या में वार्ता कराने की चेष्टा की थी और इनको नजदीक लाये वार्ता की मेज पर वह इनकी आंखो में चुभने लगे हैं। क्योंकि अगर हिन्दू और मुसलमानों का सद्भाव हो जायेगा तो इस देश में इन राजनेताओं की और इनकी कुछ चलेगी नहीं। तो वह चाहते है इनका कोई सद्भाव न हो इसलिए उनको गिरफ्तार कर लिया गया। और उनको गिफ्तार किया तो आपको मालुम हैं कि अयोध्या के वो लोग जो मुसलमान हैं उन्होंने भी इस तरह के प्रस्ताव पारित किये और यह कहा कि इनकी गिरफ्तारी से हमको बहुत बड़ा आघात पहुंचा है। तीन बात और कहुंगा केवल मात्र लालू यादव कहते हैं इसे तो गिरफ्तार होना चाहिये था।

इसकी क्या जरूरत है और इसके मामले में कुछ नहीं बोलना चाहिये। उधर लालू यादव यह भी कहते हैं कि राबड़ी देवी तो देवी हैं उस देवी के खिलाफ जो कोई सोचेगा वह नष्ट हो जायेगा और नरक में जायेगा। यानी बड़े धर्माचार्य तो लालू यादव बन गया है उनकी पत्नी के खिलाफ, अगर कोई उसको गद्दी से हटाने की बात करें चुनाव में प्रचार उसके खिलाफ करे तो वो नष्ट हो जायेगा वह देवी हो गई। इसके अलावा मैं आपको बताऊं जो लोकदल वाला है पासवान- पासवान ने इनकी खूब निन्दा की और ये कहा कि ठीक है इनको गिरफ्तार किये जाना चाहिये था शंकराचार्य को वे बड़े अपराधी है। दूसरे या

तीसरे दिन ही उसकी पार्टी का एक एम.एल.ए. हत्या और अपहरण के उस मामले में गिरफ्तार किया गया ''अशोक'' नाम है उसका, आगे पूरा ध्यान नहीं है तो उसने परसों के दिन कह दिया कि इसकी जांच तो सी.बी.आई. से होनी चाहिये और यह, हमारे विरूद्ध कोई भी सबूत मिलने के बाद पुलिस कार्यवाही हो या न्यायिक कार्यवाही हो। तो वो तो इनका भला चाहते हैं,और शंकराचार्य के सबन्ध में सरकार के उनके विरुद्ध कार्यवाही के मामले को ले करके ये भाजपा और हिन्दू समाज क्यों आन्दोलन कर रहा हैं यह कहते हैं।

शंकराचार्य एक धर्म संस्था के प्रधान हैं वह धर्माचार्य है। तो मैं आपसे निवेदन करता हूं कि 'श्रीजी' महाराज ने आप सबको और हम सबको यहां उपस्थित होने का अवसर प्रदान किया है हम सब आज प्रण लेकर उठें और इस मंच से प्रस्ताव पास करे कि सम्पूर्ण भारतवर्ष का हिन्दू समाज इस मामले में उठेगा, आन्दोलन करेगा जगह-जगह सभायें करेगा, और सब से भी मैं अपील करता हूं कि आप कोई दिन तय करिये और उस दिन से आप शुरू कर दीजिये मैं साथ ही यह घोषणा करता हूं देवालय संगठन समिति राजस्थान का संगठन मंत्री होने के नाते दिनांक सत्ताईस को जयपुर में हम देवालयों के मंदिरों के महन्त परिषद, पुजारी और ये सब एक दिन का अनशन करेंगे उसके बाद निर्णय करेंगे कि आगे क्या किया जाय। मैं 'श्रीजी' महाराज के चरणों में पुनः दण्डवत् करता हूं।

प्रो० श्री खेमराज केशव शरण जी

(नेपाल)

जगद्गुरु 'श्रीजी' महाराज की पावन प्रेरणा हम उन्नीस साल की उम्र से ग्रहण करते रहे हैं। हमने वाराणसी में अध्ययन किया, ज्यों ही छुटटी होती थी फिर हम वृन्दावन आते थे और महाराज के श्री चरणों में हाजिर हुआ करते थे। तब से महाराज श्री का आशीर्वाद इस अंकिचन पर आज तक बरष रहा है। ये कहते हुये गौरव का बोध होता है। हमने महाराज श्री की दिव्य प्रेरणा से भगवान श्री सर्वेश्वर प्रभु श्री राधा माधव प्रभु की कृपा से 'निम्बार्क वैष्णव परषिद' की स्थापना नेपाल में ही की है और आज से आठ साल पहले इसकी स्थापना हुई थी। इसका स्थापनाकाल क्रम ऐसा रहा। चतराधाम में उस समय बाल सन्त मोहनशरणजी उदीयमान थे। उन्होंने अपने ढंग से श्रीमद्भागवत को अपने मुख से प्रस्तुत करने के लिए आवाहन किया। हमारे व्यासत्व में चतराधाम में भागवत कथा हुई। यह दो हजार पचपन साल विक्रम और उन्नीस सौ चौरानवे, ईसवीं सन् का समय था।

उस भागवत की पूर्णाहुति के शुभदिन हमारे विराट्नगर घराने, इनरवा, आस-पास वाले अन्य शहरों के और जिलों के हिसाब से ग्यारह जिलों के भक्तलोगों की उपस्थिति में हम सबने निश्चय किया कि हम 'निम्बार्क वैष्णव परिषद' की स्थापना यहां करें और इस अंकिचन को इस केशव शरण नाम के व्यक्ति को ही संयोजक बनाने का सभी का आग्रह रहा। हमारी संयोजकता में संयोजक समिति बनीं और बाद में संस्थापनकाल का अध्यक्ष बनकर इसकी सेवा करने का सौभाग्य भी इसी अंकिचन पर आया और हम सात साल तक के लिए अध्यक्ष की हैसियत से, संस्थापक अध्यक्ष की हैसियत से सेवा कर रहे थे। इस परिषद को वहां की नेपाल सरकार के द्वारा रजिस्टर्ड कराया गया है। एक पंजीकृत संस्था के रूप में यह कार्य कर रही है। पत्रिकाओं का प्रकाशन, जगह जगह प्रचार-प्रसार का कार्य कलाप, विभिन्न यज्ञादिकों का, अनुष्ठानों का आयोजन, और निम्बार्क जयन्ती राधाष्टमी श्री कृष्ण जन्माष्टमी श्रीरामनवमी, श्रीशिवरात्रि , इन सब पावन हमारे धार्मिक पर्वों को विशिष्ट अनुष्ठानों के साथ सम्पन्न करना और जन जन में

भगवद् भक्ति का संचार करना, जीवन में पावनता के लिए आवाहन समस्त जनता के पास पहुंचना और विभिन्न दुर्व्यसनों से विभिन्न प्रकार के कुव्यसनों से मुक्त, मद्यपान आदि विकारों से मुक्त पवित्र जीवन जीने की भावना जन जन में पहुंचना इस परिषद का परम पावन लक्ष्य रहा है और इस लक्ष्य से परिचालित हो रही है। परिषद में इस समय जो पदाधिकारी है उन सबके परिचय के साथ परिषद के सचिव श्री कृष्णप्रसाद यहां प्रस्तुत होंगे।

श्रीकृष्ण प्रसाद गुरागॉई

(सचिव, श्रीनिम्बार्क वैष्णव परिषद, नेपाल)

प्रातः स्मरणीय परम पूज्य जगद्गुरु श्री 'श्रीजी' महाराज, मंचस्थ सर्व माननीय गुरु जन एवं भक्तिमती माताओं, बहिनों एवं बन्धु। नेपाल निम्बार्क परिषद् की जो स्थापना के विषय में अयार्य श्री द्वारा अभी हम जानकारी ले रहे थे। नेपाल निम्बार्क परषिद् के पदाधिकारियों का नाम मैं यहां से उच्चारण करूंगा और वह उठ करके अपना परिचय अपने को दिखायें और पूज्य श्री श्रीजी महाराज को दण्डवत करते हुये अपने आसन पर विराज जायेंगे। श्री नेपाल निम्बार्क परिषद् के जो संस्थापक हैं परम पूज्य अध्यक्ष आचार्य श्री खेमराज केशव शरण जी महाराज और इसके प्रमुख संरक्षक है हमारे प्राध्यापक आचार्य श्री हरि शरणजी महाराज और इसके संरक्षक प्राध्यापक श्री मुकुन्दशरणी जी महाराज और संरक्षक महन्त श्री रूकमणी शरण जी महाराज प्राचार्य श्री वासुदेवशरण जी महाराज जो यहां सलेमाबाद में पदासीन हैं और मैं। उसके साथ ही वैष्णव परिषद का नामावली आपके सामने मैं वाचन करने की अनुमति चाहता हूं।

श्री भरतराज रेगमी, अध्यक्ष, श्री टीकादत्त दहल, उपाध्यक्ष-पूर्वत्रचल नेपाल, श्रीदुर्गाप्रसाद दहल, उपाध्यक्ष-मध्याञ्चल, श्री फणि नारायण सिन्देल, उपाध्यक्ष-पश्चिमाञ्चल, श्री हरि कृष्णअधिकारी, उपाध्यक्ष, मध्यपश्चिमाञ्चल श्री हरिलाल भट्टराई, सुदूर-पश्चिमाञ्चल, उपाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र सिग्देल, महासचिव और मैं इस संस्था का कृष्ण प्रसाद गुरागॉई, मैं सचिव के पद पर काम कर रहा हूँ सेवा कर रहा हूं। ऐसे श्री माधवराज कोइराला कोषाध्यक्ष, श्री शंकररेग्मी, सदस्य, श्री जगन्नाथ गरतौला, सदस्य, श्रीमती राधादेवी लमसाल, श्री नवराज शर्मा ये सदस्य हैं। श्रीमती पुष्पा आचार्य श्री यदुनन्दन अरियाल, श्री भवानी प्रसाद, ढकाल, पं. श्री भवनाथ खारीड़ा श्री शिवदत्त भट्टराई, पं श्री भवानीशंकर निरोला, श्री पूर्ण प्रसाद दहल, श्रीमती पद्मा पोरवरिल, श्रीमती कुबिजा भण्डवई श्री नारायण शर्मा गौत्तम, श्री गिरराज खतिवडा इस प्रकार ये कार्य समिति अभी नैपाल में वैष्णवों की एकता के लिए सनातन धर्म के संरक्षण के लिए अपने दिलों जान से कार्य कर रही है, और इसी को हम महाराज श्री के चरणों में निवेदन करते हुये क्षमा चाहते हैं कि कोई अनुचित हो तो हमें क्षमा करें।

स्वामी श्री गोपालदास जी महाराज

:- (आचार्य श्री दादू पन्थ नरैना)

अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्क तीर्थ की पावन तपः स्थली श्री परशुरामपुरी, सलेमाबाद की सन्त रज को ललाट पर धारण करके हम अत्यन्त हर्षित व गौरवान्वित हैं। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य के इक्यावन सौ वे जयन्ती समारोह के उपलक्ष मेंअखिल भारतीय निम्बर्कपीठ के विराजमान अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु पीठाधीश्वर श्री राधासर्वेश्वर शरण देवाचार्य जी महाराज द्वारा समायोजित विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के अन्तर्गत विविध धार्मिक, पारमार्थिक तथा भारतीय संस्कृति के अनुरूप अनेकानेक विचार प्रकल्पों के द्वारा समस्त भारत की अस्मिता के निर्देशन के साथ इस महनीय एवं

महान् मंच से देश के महान संतो के द्वारा जन जन का सर्वाङ्.ग पूर्ण पथ प्रदर्शन तथा देश देश एवं प्रदेश के सर्वोच्च राजकीय पदासीन विभूतियों के सानिध्य में संकल्पित कर्त्तव्यों के परिप्रेक्ष्य में यह महान् व अपूर्व धर्म-महाकुम्भ हमारा मार्ग दर्शन करे, यह हमारा सुनिश्चित विश्वास है।

निम्बार्कपीठ व दादूपीठ के सुमधुर सम्बन्ध विगत पांच सौ वर्षों से दोनों सन्त समाज व पीठों का सनातन सम्बन्ध सत्गुरु श्रीमद् दादूदयालजी महाराज व उनके सुशिष्य योगेश्वर श्री जग्गाजी की निम्बार्कपीठाधीश्वर श्री परशुरामचार्य महाराज से प्रथम भेंट व सन्त चर्चा के समय से है, जो इतिहास प्रसिद्ध है। जैसा कि परशुराम देवाचार्य जी महाराज ने कहा कि 'परशुराम खोदत खोदकर और खोदिये घास, हरि हीना की कोठरी जन दादू के पास' दादू जी महाराज के अर्न्तध्यान के बाद श्री परशुराम देवाचार्य जी महाराज ने कहा - कि 'परशुराम दादू ऊग्यों क्यूँ कर गयो छिपाय, परशुराम दादू बिना कमल गया कुम्भलाय'। सन्तों में परस्पर दोनों पीठों के सम्बन्ध जो पांच सौ वर्षों से चले आ रहे हैं उनमें दादू सम्प्रदाय के उन्नीसवें सम्प्रदायाचार्य स्वामी हरिराम जी महाराज ने व वर्तमान निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज ने जो विगत वर्षों में अक्षुण बनाये रखा और अब भी बना रहेगा। दादू द्वारा नरायणा में ऐसा कोई सन्त सम्मेलन नहीं होता जिसमें निम्बार्काचार्यश्री अनुपस्थित हों और इस परशुराम द्वारा में ऐसा कोई सन्त सम्मेलन नहीं होता सन्तों का जिसमें पूर्वाचार्य उपस्थित नहीं हुए हों ये दोनों पीठों का अनवरत सम्बन्ध सदा आ रहा है चलता रहेगा। सम्पूर्ण धार्मिक सन्त सम्प्रदायों के मत के सार तत्व की जिज्ञासा के प्रश्न पर ब्रह्म ऋषि सन्त दादूदयालजी महाराज ने कहा- कि ''आपा मेटे हरि भजे, तन मन तजे विकार निर्वैरी सब जीव सौं, दादू ये मत सार'' अर्थात समस्त प्रकार के अहंकार को मिटाकर निरन्तर हरि का भजन करना शरीर तथा मन के विकारों को त्यागना सर्व प्राणियों से निर्विकार रहना यही सम्पूर्ण धार्मिक सन्त सम्प्रदायों का सार तत्व है और यही हमारा मत है। इस सर्वग्राही व्यापक सिद्धान्त का नाम ही सन्त मत हैं। 'हरि सुमरिन ज्यौ लाइये का जाडौं काकीन, सर्गुण निर्गुण ह्वैरया जैसा है तैसा लीन।' सगुण-निर्गुण के विवाद से दूर जैसी जिनकी मान्यता है तदनुरूप उसके अन्दर सर्वदा लीनरहो अथवा मत एवं मान्यता की भिन्नता को कोई प्रश्नही नहीं उठता। इस अस्मिताओं के सभी सन्त एक है तथा अभिन्न है।

देवस्थान सुरक्षा सम्मेलन ''राज्यं न च राजा दण्डो न च दाण्डिकः धर्मर्णेव प्रजा सर्वा रक्षयन्ती परस्परं''। देव स्थान देवालय अर्थात धर्म स्थलों का वेदोक्त शाश्वत साम्राज्य के अनुसार सुसंस्कृत प्रजा द्वारा संरक्षित व सुरक्षित होना चाहिये शासन पर धर्म का नियन्त्रण ही उसे सही दिशा बतला सकता है अतः देवालयों पर सरकारी नियंत्रण चिन्तनीय व असैद्धान्तिक भी है। आराध्य अथवा पूजनीय देव की सत्ता को नियन्त्रित या सीमित करने के समान है इष्ट के विमुख होना उपास्य के विपरीत आचरण या कर्म, अधर्म कहा गया है इसीलिए ईश्वरीय विधानानुसार - **'यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्। परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे'**॥ हे भारत जब भी अधर्म की अभिवृद्धि होती और धर्म का ह्रास होता है तब मैं दुष्टों के विनाश के लिये तथा साधुओं के परित्राण के लिए अवतरित होता हूं। यही अमोघ ईश्वरीय वरदान भारतीय संस्कृति को अक्षुण बनाये रखे हुये हैं। अतः रामजन्मभूमि, श्रीकृष्णजन्मभूमि, श्रीविश्वनाथ मंदिर ये सब भारत की आत्मा है जिसके असंख्य आराधक, सन्त, भक्त हैं जिन्हें इस धर्म कुम्भ में मुक्त करने की सर्वथा समर्पण पूर्वक प्रतिज्ञा करनी

है।

यह विराट् धर्म सभा धर्म स्थानों को शाश्वत साम्राज्य के साथ ही श्री राम जन्मभूमि तथा श्रीविश्वनाथ मंदिर की मुक्ति की ईश्वर की साक्षी से सम्पूर्ण सामर्थ्य के साथ विभक्ति की निन्दा मुक्ति की सप्रतिज्ञ घोषणा करती है। परमपूज्य शंकराचार्य कामकोटि पीठ के श्री जयेन्द्र सरस्वती जी की गिरफ्तारी की निन्दा, सर्वोच्च धार्मिक सनातन जगद्गुरु श्री शंकराचार्यजी की पावन परम्परा अन्तर्गत कांचि काम कोटि के सम्माननीय शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती महाभाग को दूषित राजनीतिक पूर्वक षडयंत्र की गई अप्रत्याशित गिरफ्तारी व अवमानना की समस्त देश व सन्त समाज घोर निन्दा करता है और इस दुष्कृत्य को सम्पूर्ण भारतीय अस्मिता व संस्कृति तथा परम्परा पर गर्हित उदण्ड प्रहार माना जाता है। तमिलनाडू राज्य सरकार के इस कहर व केन्द्र की इस प्रकरण में चुप्पी को सारा देश देखकर उद्वैलित है। यह सारी घटना आतन्क व फासिस्टवादी दुष्प्रवृतियों द्वारा इन भारतीय मान बिन्दुओं को योजनापूर्वक विनष्ट करने की है। ऐसा विनष्टकारी तो तेबुरलंक भी नहीं कर सका अहमदशाह अब्दाली भी नहीं कर सका मोहम्मद गजनवी भी नहीं कर सका जैसे वर्तमान साधु समाज की आत्मा को ठेस पहुंचाई जा रहीं है। अतः महामहिम राष्ट्रपति महोदय से अविलम्ब हस्तक्षेप करने के आग्रह के साथ समस्त भारतीय सन्त समाज तथा प्रत्येक देशवासी ईश्वर की साक्षी में इस विराट् सनातन धर्म सम्मेलन द्वारा संकल्प कराता है कि, श्रद्धास्पद सर्वोच्च धार्मिक व पावन पीठ कांचि काम कोटि के पूज्य शंकराचार्य जी जयेन्द्र सरस्वती महाराज के माध्यम से समस्त भारतीय धर्म अस्मिता को विनष्ट करने के लिए आसुरी प्रवृत्तियों को तत्काल रोका जाये तथा श्री शंकराचार्य कोस सम्मान रिहा किया जाये। अन्त में हम इस पावन प्रसंग पर समुपस्थित समस्त सन्त समाज को इस पावन धरा को साष्टांग नमन करते हैं। विराट् सन्त समारोह में लिए समस्त संकल्पों की पूर्णता की कामना करते हुये इस धर्म सभा को सर्वविधि सम्पन्नता के निमित्त कटि बद्ध श्रद्धालु भक्तों व सहयोगियों के कल्याण के लिए, प्रभु से प्रार्थना करते है। **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया सर्वे भद्राणि पश्चयन्तु माश्चित दुःख भागृभवेत।** तनमननिर्मल आत्मा सब काहू की होय, दादूविषय विकार की बातन बूझे कोय॥ ॐशांति शांति शांति॥

जगद्गुरू श्री निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

समुपस्थित हमारे दादू सम्प्रदाय के आचार्य प्रवर तथा मन्च पर समासीन सन्त महात्मा, विद्वत-वृन्द, महान्तवर्य महामण्डलेश्वर महानुभाव तथा भगवत चरणानुरागी समस्त भक्तजन- परम स्नेहमयी समस्त मातृ शक्ति। आज का दिवस कितना शांन्त कितना अनुपम, कितना सरस और मधुर है। ये पांच दिवस देवोत्थापिनी एकादशी से लेकर और पूर्णिमा पर्यन्त इस राजस्थान के पावन पवित्र क्षेंत्र में पद्मपुराण में परिवर्णित यह निम्बार्क तीर्थ जिसकी पावन भूमि पर आप हम सब अवस्थित है। यहां पर आज के सम्मेलन के प्रसंग में महामंत्री श्री हरिनारायणनन्द जी ने और हमारे अनेक शीर्षस्थ मूर्धन्य महानुभावों ने जयपुर से पधारे हुये श्री गलतापीठ के युवराज श्री अवधेश कुमार जी ने भी तथा नरैना पीठाधीश्वर दादू पीठाधीश्वर जो आपके सामने सुशोभित है उनके द्वारा भी देवस्थानों के सन्दर्भ में अनेक प्रसंग जो नितान्त अपेक्षित है श्रवण किए। देवस्थान हमारे उपासनाओं के पावन स्थल हैं यद्यपि घर में भी भगवद् विग्रह को विराजमान कर उपासना की जाती है तथापि घर में विभिन्न व्यावहारिक कितने ही प्रसंग उपस्थित होते है उपासना में बाधा हो जाती है। इसलिए

स्वतंत्ररूप से देवालयों की व्यवस्था जब से ये भूतल प्रकट है तभी से ये हमारी अक्षुण परम्परा निर्वाद्यरूप से चली आ रही है। उपासना स्थलों में देवमन्दिरों में हम जाकर प्रभु के मधुर मनोहर मंजुल दर्शन प्राप्त करके अपने जीवन को कृतार्थ करते हैं। उनके दिव्य स्वरूप के दर्शन करके उनके दिव्य छवि के दर्शन करके आनन्द की अनुभूमि करते है। मंदिर में बैठ करके उनके दर्शन करके उसके गुणानुवाद गाते हुये उनका नाम कीर्तन करते हुये और दिव्य मंत्रो का जप अनुष्ठान पठन आदि करते हैं जिससे हमारे जीवन के साथ दिशा स्वस्थ होती है, हृदय में आनन्द की अजस्र धारा प्रवाहित होने लगती है।

आपका यह राजस्थान का प्रदेश जहां पर अनेक देवालय है, सम्पूर्ण भारत में देवालय है, इस राजस्थान के देवालय में एक ऐसी परमभक्तमती माता आविर्भूत हुई जिन्होंने प्रभु की उपासना को सारे विश्व में प्रसार किया। वह माता विश्व विदित परम भक्ति मती मीरांबाई। जब मीराबाई वृन्दावन में पहुंची राजस्थान से वृन्दावन पहुंच करके प्रभु के मंगलमय दर्शन किये। उन्हें विदित हुआ कि माध्वगौडेश्वर सम्प्रदाय के एक विशिष्ट महानुभाव मूर्धन्य मनीषी यहां वृन्दावन में विराजित हैं उनके भी मंगल दर्शन करना चाहिये। उनके निकट पहुंची सन्तों से निवेदन किया कि हम जीव गोस्वामी जी से मिलना चाहते हैं उनके मंगलमय दर्शन करने की उकण्ठा हैं। सन्तों ने गोस्वामी जी के निकट जाकरके ये भावना प्रस्तुत की। राजस्थान से परमभक्तमती मीरांबाई आई है और आपके दर्शनों के लिए उत्सुक है। उत्तर में उन्होंने कहा कि - हमारा ऐसा नियम है किसी माता से हम मिलतें नहीं, हम एकान्त में बैठ करके प्रभु का आराधन करते हैं, स्मरण करते हैं, चिन्तन करते हैं ध्यान करते हैं, अतएव उनसे जा करके कह दो कि हम किसी माता से मिलते नहीं। सन्तों ने जाकरके मीराबाई से कहा जब मीराबाई को यह सम्वाद श्रवणगत हुआ तो उत्तर में कहा, मीराबाई बोलती है कि मैं तो ये समझती थी कि इस वृन्दावन धाम में एक मात्र पुरुष अनन्त कोटि ब्रह्मण्डाधिपति अखिल रसामृतसार सिन्धु रसधनविग्रह मनोहर कोटि कन्दर्प दर्पदलन अकारण करूणालय, आनन्द कन्द, नन्द नन्दन भगवान सर्वेश्वर श्याम सुन्दर गिरधर गोपाल है। गिरधर गोपाल के अतिरिक्त यहां पर और कोई पुरुष नहीं है यहां पर समस्त ब्रज गोपीजन सहचरीगण विराजित है वृन्दावन का ऐसा वर्णन है। परन्तु आज मुझे विदित हुआ कि एक पुरुष और कोई रहता है कि जो किसी माता से मिलना नहीं चाहता ये मीराबाई के वचन थे। ऐसा एक पुरुष यहा पर निवास करता है दूसरा एक पुरुष कोई और प्रकट हुआ है कि जो मीराबाई से मिलने की भी चाहना नहीं करता। ये सम्वाद सन्तों ने जाकर के गोस्वामी जी से निवेदन के रूप में प्रस्तुत किये।

जीवगोस्वामी जी वह तो महा मनीषी थे तत्काल दौड पड़े मीराबाई के निकट आये और क्षमा पूर्वक कहने लगे कि मैने आपके स्वरूप को समझा नहीं, यथार्थ में आप प्रभु की उन दिव्य लीलाओं से, उनके दिव्य स्वरूप से कितने परिचित है और कितने उनके समीप है मैंने आपके स्वरूप को समझा है। वह राजस्थान से गई हुई मीराबाई जो निरन्तर अपने देवमंदिरों में स्थिर हो करके अन्तिम क्षणों में भी द्वारकाधाम में प्रभु के मंदिर में स्थित रह करके आराधना करती हुई प्रभु के ही युगल चरणारबिन्दों में लीन हो गई। उपासना ग्रह आराधना के जो पावन स्थल हैं वहां पर मन स्वस्थ रहता है यदि आपके हाथ में, यदि आपको किसी ऐसे स्थान पर उपस्थित कर दें जैसे किसी के हाथ में श्रीमद्भगवद् गीता है या रामचरित मानस है या हनुमान चालीसा है अथवा और कोई सद्ग्रन्थ है। श्रीमद्भागवद् है तो इन सद्ग्रन्थों के मनन से उसके पठन से उसके स्वाध्याय से उसके अनुशीलनन से हमको दिशा प्राप्त होती है पावन

प्रेरणा मिलती है। जीवन में सात्विकता उत्पन्न होती है स्वस्थता आती है और यदि कहीं जो अपवित्र ग्रन्थ हैं जिनके कारण से हमारे में विपरीत भावना आ जाये। आपके बहुत निकट में एक व्यक्ति जिसकी अट्ठारह वर्ष की आयु अच्छे परिवार का किशनगढ़ का निवासी और अजमेर की घटना, उपन्यास पढ़ता था विकृत उपन्यास ओर उसके प्रभाव से उसने आत्महत्या का निश्चय किया और अपने घर पत्र लिखा कि अमुक तिथि को अमुक गाड़ी से सामने हो करके और अपने प्राणों का उत्सर्ग करूंगा, आत्महत्या करूंगा। मातापिता को पत्र मिला और तब मिलाकि जब ये घटना हो चुकी थी। तो विकृत उपन्यासों से ये स्थिति होती है ऐसे विकृति स्थानों पर बैठने पर हृदय में विकार आते है। स्थान पवित्र हो देवालय हमारे परम पावन स्थल हैं और वहा बैठ करके हम अराधना करते हैं, ध्यान करते हैं, प्रभु का स्मरण करते हैं, चिन्तन करते हैं, तो हमारे जीवन में दिव्य रस की उत्पत्ति होती है मधुरता आती है सरसता आती है आनन्द की धारा बहने लगती है। देवस्थानों की गरिमा है, देवस्थानों का महत्व है और उन देवस्थानों का महत्व है और उन देवालयों का संरक्षण करना हम सभी का परमधर्म व कर्त्तव्य है सरकार का भी कर्त्तव्य है शासन का भी कर्त्तव्य है किन्तु सर्वाधिक कर्त्तव्य होता है तदर्थ सम्प्रदाय के धर्माचार्य प्रवर का दायित्व होता है। उसमें सरकारी हस्तक्षेंप सर्वथा नियम के विरुद्ध है। महाराज बेन का चरित्र आता है श्रीमद्भागवत में और पुराणों में है। जब महाराज बेन ऋषि मुनी प्रवरों को अपनी पालकी में लगाते थे, ढ़ोने के लिए स्वयं बैठे जाते और बार बार उन पर आक्रोश करते थे कि ढ़ग से नहीं चलते हो चलने का होश नही है ज्ञान नही है। ऋषि मुनि बहुत सहते गये किन्तु जब अन्याय की चरम सीमा हो जाती है। ऋषियों ने तत्काल हुंकार शब्द से ही और उनको विनष्ट कर दिया। आप यह न समझें कि साधु सन्त महात्माओं में वह शक्तिहीन हो गये है ऐसा नहीं हैं। वे भी समय की प्रतीक्षा देख रहे हैं यदि साधु सन्त, महात्माओं पर अनर्थकारी कृत्य होने लगेंगे हमारे काञ्चि काम कोटि पीठाधीश्वर जगद्गुरू शंकराचार्य महाराज के सामने जो समस्या आई इसकी एक घटना सुनावें आपको-

हमारे इसीपीठ के आचार्य प्रवर पूर्वाचार्यप्रवर लगभग तीन चार पीड़ी पूर्व की घटनाहै। यही राजस्थान में मारवाड़ प्रदेश में पधारना हुआ था, और एक किसी व्यक्ति ने उनका अपमान किया असंगत व्यवहार किया और यहां तक क्रूर कर्म करने के लिए तत्पर हो गया ऐसी अवस्था में जो उनके आचार्य प्रवर के पार्षद थे उन्होंने उसको पकड़ करके उसको रस्सियों से बांध करके हाथी चल रहा था शोभायात्रा में उसके पैर के उस रस्सी को बांध दिया जिससे वह घसीटते हुये चल रहा था। दैव योग से हाथी ने अपने सूंड से उसको पीछे मुड़ पकड़ करके और अपने पैर के नीचे दबा लिया उसकी मृत्यु हो गयी। यद्यपि ऐसा लक्ष्य नहीं था केवल उसे भय दिखाने के लिए यह कार्य किया गया किन्तु घटना हाथी ने की। तत्काल उसी समय आचार्य प्रवर स्वंय आपके परिकर एवं उस नगर की समग्र जनता सबने लिख करके जोधपुर नरेश के यहां भेजा और कहा कि इस प्रकार की घटना हुई है अब इसका निर्णय आप स्वयं करें। तत्कालीन जोधपुर नरेश ने उत्तर में कहा एक पत्र भेजा पत्रवाहक को भेजा सवांद भेजा कि इसका निर्णय नरेश नहीं कर लें नरेश के गुरुकरेंगे आप स्वयं गुरु हैं आप ही इसका निर्णय करें यदि उसने अपराध किया है उस अपराध का दण्ड उसे हाथी के द्वारा प्राप्त हुआ है तो कोई अनुचित कार्य नहीं है ऐसा जोधपुर नरेन्द्र ने अपने भाव अभिव्यक्त किए। मान लिया जाय प्रथम तो ऐसे जो आचार्य प्रवर हैं जिनके द्वारा सैकड़ो विद्यालय चल रहे हैं, वेद विद्यालय चल रहें है- स्वस्थ

दिशा जिनकी है सारे संसार को उपदेश करते हैं वह ऐसी घटना करा दें किसी की हत्या करादें सम्भव नहीं है। पर कदाचित् ऐसा ही मान लें। एक यदि कोई घातक तत्व है और उन पर प्रहार करने की इच्छा करता है स्थान को नष्ट करने की इच्छा करता है देवालय को सर्वविधा से हानि पहुंचाने की चेष्टा करता है तो उनके जो पार्षद में है अभी हमारे समीप पार्षद खडे है कोई आघात करने के लिए पहुंचे तो पार्षद का क्या कर्तव्य होता है आप स्वंय निर्णय कर लें।

और एक बात और है कि जैसे गाय है भारत को स्वतन्त्र करने से पूर्व महात्मा गांधी जी ने लोकमान्य तिलक ने महामना मदन मोहन मालवीय ने सभी ने बैठ करके स्वस्थ चित्त से ये चिन्तन किया कि अंग्रेजी शासनकाल गोहत्या का निरोध होना जरूरी है जब तक देश स्वतन्त्र नहीं होगा राष्ट्र स्वतन्त्र नहीं होगा, तब तक हम इस कार्य को कर नहीं सकते। इसलिए हमारे देवालयों को हम रक्षा करें हमारे धर्मग्रन्थों की रक्षा करे, हमारी गोमाता की रक्षा करें, इन सबके लिए सबसे पहले हमे राष्ट्र को स्वतन्त्र करना होगा और स्वतन्त्र होते ही सबसे पहला यह कोई कार्य होगा, कलम की नोंक से, सबसे पहला कार्य होगा गोहत्या निरोध। और उसके बाद देवस्थानों की सुरक्षा यह उन्होंने दो भाव व्यक्त किए। भारत स्वतन्त्र हुआ और स्वतन्त्र हाने के बाद ये सबको आशा लगी हुई थी कि देश अब स्वतन्त्र हो गया है अब गोहत्या का ये जो भीषण भारत के भाल पर कंलक है प्रक्षालित होगा किन्तु आश्चर्य है यवन काल व अंग्रेजी शासन काल में भी इतनी गोहत्या नहीं होती थी जितनी आज स्वतन्त्रता के बाद में हो रही है। चालीस हजार से भी अधिक दैनिक गौ हत्या हो रही है आपके भारत के इस प्रांगण में। गौमाता की कोई हत्या करे उसे क्या दण्ड मिलना चाहिये आप निर्धारण करों। गौमाता की हत्या कर दे उसको क्या दण्ड मिलना चाहिये एक गौमाता की कोई हत्या कर दे जो सबकी माता है। गावो विश्वस्य मातर: सबकी माता है उस माता की कोई हत्या कर दे एक गौमाता की और जो चालीस हजार पचास हजार दैनिक गौमाता की हत्या करते हो, उसको क्या दण्ड मिले? इसके लिए आप स्वयं विचार करिये। जो सरकार शासन कर्ता सरकार आप बनाते है और वह स्वयं इस कार्य को कर रही है उनको क्या दण्ड दिया जाय! जयेन्द्र सरस्वती शंकराचार्य जी महाराज को दण्ड देने के लिए तो उनको गिरफ्तार कर लिया गया अब इनके लिए आप क्या करोंगे क्या विधान बनाओंगे? जो नित्य गौमाता की हत्या कर रहे हों। एक प्राणी की भी हत्या जहां राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया गया मोर को और उसकी हत्या होने के बाद तो कुछ विचार किया जाता है। किन्तु गौमाता जो राष्ट्र की सर्वस्व है निधि है, हमारी सम्पूर्ण संस्कृति की आधार है। जिसके लिए हजारों लाखों भक्तों ने प्राणों का उत्सर्ग किया है और उस गौमाता की रक्षा को कोई प्रसंग नहीं गौ हत्या हो रही है ऐसे उस शासन को क्या दण्ड दिया जाय? इसके लिए भी जनता स्वयं विचार करे। गम्भीरता से चिन्तन करे।

देवस्थान, आज कोई भी एक साधारण सामान्य व्यक्ति है कोई पान की दुकान करता है, कोई चाय की दुकान करता है, कोई कुल्फी बेचता है, और वह निर्वाचन क्षेत्र में आ गया खड़ा हो गया और विधायक बन गया और उसकी फिर बड़े बड़े भवन और अट्टालिकायें बन गयी सरकार का वहां तो ध्यान नहीं जाता। इन देव मंदिरों के लिए जो हमारे उपासना गृह हैं उपासना के स्थल है, देवमंदिर है उनके लिए उनका ध्यान जाता है। वहां की सम्पत्ति का हरण करने के लिए सरकार व्याकुल है, चेष्टा कर रही है। ये कितना संताप, घोर संताप, अनर्थ, अन्याय, अनाचार और दुराचार उनके जीवन में प्रवेश कर गया। ये शासन का धर्म-कर्त्तव्य नहीं है। शासन कैसा व्यवस्थित होना चाहिये जो शास्ता है प्रशासक

है वो कितना व्यवस्थित होना चाहिए कितना स्वस्थ होना चाहिये, ये किसी ने विचार किया ? शास्ता जीवन का जो प्रशासन करने वाला है उसका जीवन पवित्र हो वह 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की उदात्त भावना उसके हृदय में विराजित हो अवस्थित हो वो शास्ता-प्रशासक हो सकता हैं। आज जो मन में आया उसी को आपने निर्वाचित कर दिया और वह सब प्रशासक बन गये और आपकी यह अवस्था बन गई न देवस्थानों का पता न धर्मग्रन्थों का पता, न हमारे वेदों का पता, यहां के शीर्षस्थ नेता बाहर जाते हैं और वहां पर जा करके यहां की महिमा का यहां के स्वरूप का वर्णन करने में समर्थ नहीं हो पाते॥ जो भारत राष्ट्र यहां के अध्यात्म विद्या को, यहा की भारतीयता, को यहां के तीर्थो के दर्शन करने की उत्सुकता को, परराष्ट्र के लोग आते हैं लाखों लाखों की संख्या में यहां पर आते है और यहां से दिव्य शान्ति और आनन्द की उपलब्धि करके जाते है। और यहां के निवासी अपने ही धर्म ग्रन्थों की आलोचना अपने ही शास्त्रो की आलोचना अपने ही देवमंदिरों पर कुठाराघात करने की चेष्टा करें ये कथमपि स्वीकार नहीं है।

अतएव आज के इस देव स्थान सुरक्षा सम्मेलन के सन्दर्भ में हमारे समस्त धर्माचार्यों को एक मंच पर आसीन होकर जो सन्त, महात्मा है, हमारे धर्म प्राण समस्त भगवतजन् यहां पर बैठे है सभी का ये परम पावन कर्त्तव्य है कि वह स्वस्थता से इस कार्य का सम्पादन करें और देवस्थानों की सुरक्षा के लिए एक ऐसा दायित्व एक ऐसा मण्डल, व्यवस्थित रूप धर्माचार्यों का संत और सन्त महात्माओं का कर्त्तव्य है कि स्वयं अपना उनके संरक्षण के लिए ऐसा परिषद का गठन करें तदथ सम्प्रदाय के परिषद का निर्माण करके और उसके माध्यम से इन समस्त देवस्थानों की सुरक्षा हो सरकार उसमें केवल दृष्टि पात रखे उसमें हस्तक्षेप नहीं करे। उनका भी कर्त्तव्य है वह भी दृष्टि रखें परन्तु हस्तक्षेप न करें। यदि कोई ऐसी असंग बात है तो आ करके उस परिषद से अथवा धर्माचार्यों से निवेदन करे।

ये सब होना राजा महाराजाओं के समय में था औरआज उसी पद्धति का अनुसरण हमें करना है पुरातनकाल से हमारी परम्परा रही है ऋषि मुनियों ने राजाओं पर अनुशासन किया है। और राजाओं ने ऋषि मुनियों पर अनुशासन नहीं किया यदि कोई बात हुई तो जाकरके चरणारविन्द में प्रणतिभाव से निवेदन किया। इसलिए इन सम्पूर्ण विधाओं पर गहन चिन्तन किया जाना चाहिये और इस सन्दर्भ में हम पुनः पुनः यह भावना व्यक्त करते हैं कि हमारे जीवन में शांति प्राप्त करनी है आनन्द की अजस्र धारा अपने हृदय में प्रकट करनी है तो आप देवमंदिरों की सुरक्षा, देवस्थानों का सर्वविधरूप से सेवन और वहां बैठ करके उपासना करें आपके जीवन में सर्वदा मंगल की अजस्रधारा बहेगी। इन्ही वचनों के साथ हम अपने भावों को विराम देते हैं।

❑❑❑

गोरक्षा सम्मेलन

श्री कुन्दन जी सोनी, ब्यावर

गोरक्षा हमारी संस्कृति की एक महत्वपूर्ण बिन्दु है और उसके प्रति शासन और समाज की अनासक्ति के करण से आज गोवंश का ह्रास हो रहा है और गोवध निषेध कानून बनने के बावजूद भी छद्म रूपों से गायों को यहां से ट्रकों के द्वारा रेलवे के द्वारा, अनेकानेक बार कटने के लिए बाहर भेजने के कई सारे प्रयत्न होते रहते हैं और हमने कई बार अपने प्रयत्नों से काफी गायों को पकड़ करके, उनकों छुड़वाने का कार्य किया है। लेकिन उसके बावजूद कानून के अन्दर भी होने के कारण से ऐसे लोग इस प्रकार का दुराचार करके भी उससे बच जाते है। इसलिए जैसा कि आज के इस सत्र के अन्दर जो विषय बिन्दु है जो गोवध निषेध कानून है उसको शासन को शक्ति से लागू करना चाहिए।

एक गोचर भूमि रक्षण का विन्दु भी आज के सत्र में शामिल है। मैं आपसे निवेदन करना चाहुंगा कि राजस्थान के अन्दर जो गोशालायें बनी हुई हैं उन गोशालाओं के पास में राजकीय शासन के द्वारा दी हुई गोचर भूमि पूर्व समय के अनुसार राजे महाराजे, ठाकुरों के द्वारा दी हुई गोचर भूमि गोशाला की अपनी सम्पत्ति के द्वारा खरीदी हुई भूमि का काफी भूमियां उनके कब्जे में है। लेकिन आज उस भूमि को व्यावसायिक दृष्टि से कीमतें अधिक हो जाने के कारण से गोशालाओं के प्रबन्धक भ्रष्ट हो गये हैं। इन गोमाताओं के लिए चराई की उन भूमियों को भी व्यावसायिक दृष्टिकोंण अपना करके उनको बेचने में लगे हुये है। मैं आपका ध्यान इस और दिलाना चाहता हूँ। ब्यावर की गोशाला है जिसमें अरबों रूपये की सम्पत्ति है। जिसके पीछे कम से कम जंगल बास में ग्यारहसौ बारहसौ बीघा जमीन है। ब्यावर के अन्दर भी डेड़ सौ बीघा गोचर भूमि जमीन हे। अचल सम्पत्तियां-दुकानात है लेकिन उसके जो पूर्व के जो श्रद्धालु ट्रस्टी थे उनके दिवगंत हो जाने के बाद आज जो प्रबन्ध वर्ग उसमें बैठा हुआ है उसकी दृष्टिकोंण गोमाता की सेवा न होकर व्यावसायिक हो गया और उन्होंनो अभी यहां पर छियासी बीघा उस गोचर की भूमि को जो गायों के चरने की भूमि थी- उसको आनन-फानन के अन्दर एक करोड़ रूपये में बेच दिया। इस कारण से हुआ कि आज गोचर भूमि के बेचान पर शासन की कोई रोक नहीं है। मैं अपनी ओर से केवल एक निवेदन करना चाहता हूँ कि जिस तरह से शासन की चरागाह भूमि के ऊपर किसी प्रकार आवंटन नहीं हो सकता, अतिक्रमण नहीं हो सकता, बेचान नहीं हो सकता। मेरा ये निवेदन है कि गोशाला के पास में जितनी भी गोचर की भूमियां है उनका किसी प्रकार से बेचान एवं हस्तान्तरण नहीं हो ऐसा, कानून के अन्दर बनना चाहिये ताकि कोई भी भ्रष्ट प्रबन्धक गोमाता की भूमियों को नहीं बेच सकें।

श्री अवधेश कुमार दास जी महाराज

युवाराज गलतापीठ-जयपुर

यहां उपस्थित भक्त वृन्द, देवियों, सज्जनों आज जो इस सत्र में गोरक्षा विषयक चर्चा हो रही है और यह कोई नई चर्चा नहीं है भारत की स्वतन्त्रता के उपरान्त

लगातार ऐसी अनेक चर्चायें विभिन्न मंचों से होती रहीं है। एक समय था जब महाराज छत्रपति शिवाजी ने गो को प्रताड़ित करने पर दण्ड दिया। मैं आज भी यह प्रासंगिक समझता हूँ। अत्याचार को सहने वाला सबसे बड़ा पापी होता है। शासन प्रशासन हमारी भावननाओं का ध्यान न रखे तो ये भी उचित नहीं है। निरन्तर जिसको हम विश्व की माता कह करके 'गावो विश्वस्य मातर:' ये कह करके बात करते हैं और उसके लिए कोई मानदण्ड निर्धारित नहीं होता। चालीस हजार गायें रोज कट रहीं है और इस की रोक का कोई मानदण्ड बना है क्या? चिन्तन स्थापित हो पा रहा है उसका कोई। स्वरूप स्थापित हो पा रहा है। किसी राज्य विशेष ने ऐसा निर्णय लिया हो ऐसा अभी तक दिखाई नहीं दे रहा। घोषणायें बहुत हैं लेकिन क्रियान्विति उसकी नहीं हो पा रही है।

श्री रासासिंह जी रावत (सांसद)

हमारे यहां पर कहा गया है कि 'अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यानांच व्यति क्रम: यत्र तत्र वर्तन्ते दुर्भिक्षम् मरणं भयं' यह महाराज मनुस्मृति का वचन है इसमें कहा गया है कि जिस समाज ओर जिस राष्ट्र के अन्दर जो पूजा के योग्य है, जो सम्मान के योग्य है, उनका तो तिरस्कार किया जाता है और जो वास्तव में तिरस्कार के योग्य हैं, उपहास के योग्य हैं, उनका आदर किया जाता है ऐसे समाज में ऐसे राष्ट्र में ऐसे विश्व के अन्दर तीन चीजें हमेशा विद्यमान रहती हैं। 'दुर्भिक्षम्, मरणम् भयं' यातो घोर अकाल की स्थिति ये जो चारों ओर सुनाई पड़ती है या मरण मौत की खबरें हमेशा आती रहती है या भयं भय का वातावरण चारों ओर रहता है। आज हम हमारे समाज में चारों और दृष्टिपात करें तो हमें यही प्रतीत होता है कि चारों ओर इस प्रकार का वातावरण दिखाई दे रहा है और मैं तो अपनी बुद्धि के अनुसार ही समझ पाया हूँ कि इसका एक मात्र कारण समाज के अन्दर और राष्ट्र के अन्दर जो सन्तों का सम्मान होना चाहिये, गोमाता की जो रक्षा होनी चाहिये , गोमाता का जो पालन होना चाहिये, गोमाता की जो रक्षा होनी चाहिये, गोमाता की रक्षा भली प्रकार से नहीं हो पा रही है परिणामस्वरूप हमारे जो सम्मान भारतीय संस्कृति के जो प्रतीक हैं, भारतीय स्वाभिमान के जो प्रतीक हैं, भारतीय परम्पराओं का जो प्रतीक हमारी गाय माता है। आज वह गाय माता जो है एक प्रकार से अपने नेत्रों से आँसूओं की धारा प्रवाहित कर अपने भक्तों की ओर देख रही है। जो गोपाल नाम का आप भजन करने वाले, गोपाल का नाम स्मरण करने वाले अपने आपको गोपाल के नाम से सुशोभित करने वाले, गोपाल की कथाओं का श्रवण करने वाले, भक्तों मेरी यह कारुणी दशा क्यों है? जहां सरकार अपना कर्त्तव्य निभायेगी वहां पर हम लोगों का भी कर्त्तव्य है कि जब हम योगेश्वर श्रीकृष्ण को, नन्दलाल के नाम से, यशोदा नन्दन के नाम से, गोपल-कृष्ण के नाम से, गोपाल के नाम से, पुकारते हैं और उनकी गोचारण लीलाओं को देख करके हमें आश्चर्य होता है कि योगेश्वर श्री कृष्ण स्वयं कहते है- 'मेरे आगे गऊयें हो, मेरे पीछे गऊयें हो' मैं गऊओं के बीच में रहूं, मेरे आगे पीछे चारों तरफ गऊयें-गऊयें रहें। जिनकों भगवान् मानकर उपासना करते हैं उन भगवान् के बताये हुये रास्ते पर चलते हुये क्या हम गऊ माता का सम्मान करते है? सन्तों के चरणों में अभिनंदन करते हुये, वन्दन करते हुये, नमन करते हुये मैं आप लोगों के सामने झोली फैलाके एक प्रार्थना करना चाहता हूँ कि आपके घरों में गऊओं का पालन होता है, गांव का जो किसान है उसकी बात छोड़िये किसान तो गऊ का पालनकर्ता है क्योंकि हमारा देश कृषि प्रधान देश हे, और कृषिप्रधान देश में बैलों से खेती होती थी अब तो ट्रैक्टर आ गये। गऊमाता ''गावों विश्वस्य मातर:'' गाय विश्व की माता है।

हम एक दूसरे से ऐसा प्यार करें जैसे गाय अपने नवजात शिशु को प्यार करती है। जो नवजात गाय को कहा गया उसके लिए कहा गया -''अघ्न्या:'' कि गऊ को मारा नहीं जा सकता ये वेद का संदेश है, ये वेद की वाणी है, और वेद ईश्वर की वाणी है, जब उसमें गाय को कहा गया-अघ्न्या: गाय को मारा नहीं जा सकता तो फिर आज हमारे देश के अन्दर इतने जो कत्लखाने हैं और कत्लखानों के अन्दर जो गोवध हो रहा है वह सचमुच हमारे राष्ट्र के मस्तक पर एक कलंक है। मैं समझता हूँ कि सरकार तो कानून बना करके ओर गऊ की रक्षा करने के लिए प्रयत्नशील है गोशालाओं को जो है उनको अनुदान दे करके, गोशालाओं की वृद्धि करके और गोचारण भूमि की रक्षा करके, अपना सहयोग प्रदान कर रही है लेकिन हम लोग संकल्प ले कर जाये सन्तों के चरणों के अन्दर इस सलेमाबाद की पावन भूमि के ऊपर से संकल्प करके जाये कि हम ''बिल्ली पाल'' और ''कुत्ता पाल'' नहीं बनेंगे अपितु ''गो पाल'' बनेंगे सच्चे अर्थों में गाय का पालन करेंगे हम गऊ माता की जय बोलते हैं तो गऊमाता हमारे घरों के अन्दर होनी चाहिये। गऊ का पालन करें , गऊमाता की रक्षा करें और गऊमाता के दूध का सेवन करें और गऊ को पंचामृत और पंच गव्य जिनका आज बहुत चर्चा है और आयुर्वेद की दृष्टि से बहुत महत्व हैं। अरे जन्म देने वाली मां तो हमें बचपन में ही दूध पिलाती है लेकिन ये गोमाता जीवन भर हमकों दूध पिलाने वाली है। गोमाता के गले ऊपर छुरी फिरे ये सारा समाज जो है उसको देख नहीं सकता इसलिए समाज का भी दायित्व है, सरकार का भी दायित्व है, हम सबका दायित्व है, हम सब मिल करके ऐसा प्रयास करें कि हमारे देश के अन्दर जैसे प्राचीनकाल में गो पालन को बहुत अधिक महत्व दे करके और गाय को माता कह करके और गाय को पूजा जाता था। महाराजा दिलीप नन्दिनी की रक्षा करने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को वह तत्पर होगये थे। महाराज रघु का उदाहरण हमारे सामने है इनके लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गोकरुणानिधि नामक पुस्तक लिख करके गाय का एक एक अंग गाय के शरीर का एक एक अवयव वह कितना काम में आता है। हम तो इन्सान है मनुष्य अपने बारे में कहता है कि मनुष्य सर्वश्रेष्ठ योनि है। लेकिन इसका तो मरने के बाद में ''भस्मांत शरीरं'', लेकिन गऊ माता का हर चीज जो है जीते जी और जीने के बाद भी वह काम में आती है, इसलिए ऐसी गो माता को सच्चे अर्थों में हम माता का सम्मान दे करके गऊ के पालन करने का संकल्प लेकर यहां से जांय, तभी हमारा यह कहना सार्थक होगा कि गऊ माता की जय हो।

श्री भागीरथजी चौधरी (विधायक)

आज बड़े हर्ष की बात है कि आज इस आधुनिक युग में इस भौतिकवादी युग में जो गाय हमारी सबकी माता है। मैं ये कहूं, मेरी माँ मेरी माँ हो सकती है मेरे भाई और बहिन की माँ हो सकती है परन्तु यह गाय हम सबकी माँ हैं। आज वह दु:खी है, आज वह आँसू बहा रही है इस हिन्दुस्तान में। मैं आज इस सनातन धर्म सम्मेलन के अवसर पर मैं विशेषतौर से मेरे इन किसान भाइयों को मैं कहना चाहता हूँ कि गायों की रक्षा यदि आगे किसी ने की है तो सब से बड़ी जिम्मेदारी इन किसान भाइयों की थी इन ग्वालों की थी। आज यह ग्वाले उस बात को ये समझें ये मेरे किसान भाई इस बात का प्रण करें कि गाय हमारी माता है। गाया की रक्षा करना हमारा धर्म हैं। तो आज गाय की जो दुर्दशा है वह दुर्दशा जो है वह स्वत: ही समाप्त हो जाय। उसका दूध, उसका गोबर, उसका मूत्र उसका जो एक एक अंग है वह हमारे अन्तरंग के लिए इतना जीवन उपयोगी है किन्तु फिर भी हम आज गाय को उपेक्षित भाव से देख

रहे हैं। मैं तो कहूँ कि यदि आज गाय की सही ढंग से सेवा करे। आज उस रूप को अपन देखकर चलें तो गाय की जो आज उपेक्षा है वह उपेक्षा हमेशा के लिए खत्म हो जाय। चूंकि गाय का दूध अमृत के समान है, उसका गोमूत्र असाध्य बीमारियों को दूर करता है। आज उसका अनुसंधान करने की जरूरत है। आज गाय की दुर्दशा होती है। गायें कत्लेआम होती है बहुत बड़े दुःख की बात है। गाय जो हमारी माता है और जब से इस गाय की उपेक्षा हुई है हिन्दुस्तान का बेड़ा गरक हो गया। आज हर कोई देख रहा है हम आगे बढ़ रहे है, इस भौतिकतावादी युग में परन्तु जब से गाय की अवहेलना हुई, ये हिन्दुतान निरन्तर गिरता जा रहा है सारे मूल्य गिर गये है नैतिकता गिर गई है। आदमी का जीवन चरित्र खत्म हो गया है और उसका कारण है कि गाय की अवहेलना हुई। गाय का दूध पीकर जो श्रेष्ठता मिलती थी वो श्रेष्ठता खत्म हो गई है।

इसलिए मैं मेरे किसान भाइयों से विशेष तौर से निवेदन करना चाहूंगा कि आज इस बात का प्रण करें कि चाहे कुछ भी हो जाए हम घर के अन्दर एक गाय का जरूर पालन करेंगे। और यदि आपने यह प्रण कर लिया तो इस गाय की समस्या हल हो जायेगी। आज मुझे हर्ष होता है कि सिरोही जिले के अन्दर एक महात्मा है उन्होंने दो लाख अस्सी हजार अकाल के अन्दर गायों की रक्षा की। वह एक बहुत ही बड़े एक भगवान् के रूप में, मैं तो ये कहूँ वे कृष्ण के अवतार के रूप में आये हैं। जब एक संत, एक महात्मा, दो लाख अस्सी हजार गायों की सेवा कर सकता है, तो मेरे किसान भाई क्यों नहीं सेवा कर सकते है ? मैं ज्यादा नहीं कह करके, मैं किसान भाइयों से निवेदन करना चाहूंगा कि आप हाथ खड़े करके प्रण करिये कि ऐसा कोई किसान का घर नहीं हो जिसमें गाय नहीं हो और गाय का पालन नहीं करें।

वैसे राजस्थान में गाय के ऊपर, गायकी हत्या करना, बिल्कुल निषेध है। फिर भी चोरी छिपे कई जगह जो अभी पूर्व वक्ताओं ने बताया कि अब भी राजस्थान में कहीं न कहीं इस तरह का कई गायों का कत्लेआम हो रहा है। इसलिए मैं मंत्री महोदय से यह कहना चाहूंगा कि ऐसा पुख्ता इन्तजाम करें कि हमारे राजस्थान में कहीं कोई गाय की हत्या नहीं करे, और गाय की हत्या करने वाले को फांसी की सजा हो।

श्री वृन्दावन बिहारी शरणजी काठिया बाबा (कलकत्ता)

इस आयोजन में गो रक्षा भी एक सत्र है, भारतमाता, ऐसे ही गोमाता। गोमाता की जय भारतमाता की जय। हमारे वैदिक युग से ले करके आज के युग तक सब लोग भारत माता को ऋषि और कृषि के देश के रूप में जानते है। कृषि के लिए जिस कप्राकर गोमाता की आवश्यकता है और उसी प्रकार हमारे देश में ऋषि की भी आवश्यकता है। ऋषि और कृषि का यह देश ''भारतवर्ष'' है।

हमारे कालीदास महाकवि ने भी कहा- **'एकात पत्रं जगतःप्रभुत्वं नवं वयःकान्तमिदं वपुश्च। अल्पस्य हेंतो र्बहु हानुमच्छिान् विचार मूढः प्रति भासि में त्वम्।।'** इस प्रकार सिंह ने राजा दिलीप से बार बार कहा है आपने एक गोमाता के लिए सब कुछ त्याग करके हम जैसे से आप मरना चाहते है और गोमाता की रक्षा के लिए, आप तन मन से तैयार है क्यों ऐसा क्यों कर रहे है ? आप तो समर्थ हैं आप गोमाता छोडिये आप जो चाहिये सो ले लीजिये। बोले नहीं हमारे गुरु ने जैसा आदेश दिया वैसा ही हम पालन करगें। तो आज बंगाल में जो पश्चिम बंग कहा जाता है उसमें राजा बाजार में जाने पर आपको टका हुये गोमाता का मांस दिखाई पड़ेगा। जो कि खण्ड खण्ड करके बिक रहा है आज

भी रास्ते पर सब लोग जाते हैं, साधु सन्त सब कोई गौ मांस को अपनी माता का वो जो मांस है आप लोग देखते है देखकर भी सहन करते है। ये क्या दुर्भाग्य है या सौभाग्य है ? एक वह शासक था एक आज इस देश का शासन तन्त्र इनके अपने हाथ में रहते हुय भी गोमाता की इस प्रकार हत्या हो रही है जो कि हमारे देश के शासक लोग कभी नहीं चाहते थे। हमारे पूज्य आचार्य श्री ने कितना सुन्दर गोशतकम् ग्रन्थ लिखा है। इस ग्रन्थ में उन्होंने कितना सुन्दर सुन्दर श्लोक लिखा है

भगवान श्रीकृष्ण गोमाता के साथ विचरण करते थे जिन्हे ''गोपाल'' कहते हैं। जो गाय का पालन करते है उसको ''गोपाल'' कहते है आज उसको सबसे मूर्ख माना जाता है। जिस का पालन कर के भगवान् श्रीकृष्ण रस का आस्वादन कर शहरों में आज अगर गोमूत्र और गोबर बाहर निकलता है तो उसको निषेध करके उन को शहर के बाहर निकाल दिया जाता है। बंगाल में कहीं भी गोमाता की सेवा होती है उनको शहर से बाहर निकाल दिया गया है क्योंकि शहर गंदा हो जाता है क्या गन्दगी प्लास्टिक से नहीं होती। जिस गोबर से पंचामृत बनाया जाता है जिस गोबर से औषधि बनाया जाती है, जिसमें लक्ष्मी का निवास है ऐसा हमारे आचार्य वर्य ने कहा। स्कंधपुराण में भी गोमाता में समस्त देवी देवताओं का निवास बताया गया है। आज दु:ख की बात है बंगाल में गोमाता की सुरक्षा नहीं हो रही है ।

जहां तक मेरी चिन्तन है, मेरा विचार है कि गोमाता केवल देशी गाय होनी चाहिये। पर आज वर्णसंकर के दोष का दु:ख जो कि गीता में कहा गया है जैसे वर्णसंकर का दोष बताया गया है वही वर्णसंकर का दोष आज हमारी गाय में भी विदेशियों ने डाल दिया कि हमारी गोमातायें भी शुद्ध नहीं रह पाईं। जो हमारे शुद्ध देशी गाये हैं जिस माता के पूजन की बात शास्त्र में कही गई जिसका दुग्ध, दही, घी, गोबर व मूत्र हमारे लिए उपादेय है। ऐसी गो माता को हम लोग बचाने की कोशिश करेगें। गोमाता जब दूध नहीं देती है हमारे घर से गाय को लेकर हम कसाई खाना में देते है। ऐसे कसाई खाना हमारे बंगाल में भरपूर है जैसे बम्बई में है। इसलिए मैं चाहता हूँ हमारे यहां का जो प्रस्ताव पास होवे। गोमाता की रक्षा के प्रस्ताव हमारे मुख्यमंत्री श्री भट्टाचार्य को भेजा जाय और गोमाता की सुरक्षा के लिए कहा जाय। गोमाता के पालन के साथ साथ गोमाता के लिए वैटनरी डॉक्टर हो। आज गोमाता के लिए अच्छा चिकित्सक भी नहीं है। इसलिए मैं चाहता हूं केवल गोचारण भूमि न हो साथ साथ उनके चिकित्सा की भी व्यवस्था हों। क्योंकि गोमाता कभी भी कागज और गोबर के अलावा गन्दे चीजों को नहीं खाती थी। आज जो गोमाता गंदगी भी जाकर खाने लगी क्योंकि हमने गो चारण भूमि को नहीं छोड़ा। नव निर्माण से सारी दुनियां को पाट दिया है इसीलिए गोचारण भूमि के लिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूं। बंगाल में भी गोचारण भूमि हो। घर घर गोमाता की रक्षा हो।

श्री खेमराज केशवशरणजी

(नेपाल)

गोमाता की रक्षा का जो संकल्प है, गो सेवा का जो महाव्रत है सम्पूर्ण हिन्दूजाति को सम्पूर्ण हिन्दू संस्कृति को समेट करके समस्त ॐकार परिवार को एकता के सूत्र में पिरौने वाली ये गो सेवा यह अवधारणा और मान्यता रहा है। हम वैदिक सनातन धर्म के अनुयायी चाहे शैव हो, वैष्णव हो, शाक्त हो, अपने मंत्रों में ॐकार लगाते है ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ॐनम: शिवाय, इत्यादि इसी प्रकार बुद्ध भगवान् के महामानव गौतम बुद्ध के अनुयायी भी महायान परम्परा के अनुयायी अपने मंत्रों के आगे ॐ लगाते ॐमणिपदमे है। इस प्रकार जैन धर्मावलम्बी लोग कहते है ''ॐ णमो'' ''अरिहन्ताणम्

नमो सिद्धाणं, नमो आर्यणम'' इत्यादि तो जैन परम्परा भी ॐकार परिवार से जुड़ी है और सिक्ख भाई बहिनो का तो क्या कहना? उनका तो मंत्र ही ॐ है। एक ''ॐकार सतनाम करतार'' तो ये सम्पूर्ण समष्टि परिवार सम्पूर्ण हमारे ॐकार परिवार के हैं। सम्पूर्ण वैदिक सभ्यतायें गोमाता की रक्षा पर बल देती है, ''अग्नि: अगावह: अमृतस्य नाभि:'' इत्यादि विशेषणों से गोमाता को सम्बोधित किया गया है, वैदिक वांग्मय में। परन्तु आज कल कुछ विकृतियां हमारे अनादि काल से आप अगर गोमाता की सेवा करोगे तो धर्म के स्थान पर धर्म, अनन्त पुण्य के साथ पर अमृत प्राप्त होगा आपको गोमाता की सेवा से और आप हमारे धर्म के संस्कारों को उन प्रेरणाओं को थोड़ा ध्यान में रख करके सोचे जब गोमाता का बछड़ा बड़ा होकर के सांड होता है उसको कौन वाहन बनाते हैं। परन्तु जब भैंस का बेटा भैंस का बच्चा बड़ा हो करके जब पूरा भैंसे के रूप में उभर आता है आप सबकों पता है उसको कौन वाहन बनाते है। ये क्या संकेत है आप सब सोचें जब कभी शुभ कर्म करना होता है, पुण्य कर्म, धर्म कर्म उस वक्त हमारे यहां पंच महीष बने ऐसा विधान नहीं है। पंच गव्य बने और उससे हम पावन होते हैं ऐसी प्रेरणा दी गई है। इसका क्या संकेत है? और जब हमें वैतरणी पार करने की जरूरत होती हे उस वक्त गोमाता की पूछ पकड़ने की प्रेरणा हमारे शास्त्र में दी है। हमने ऐसा देखा है कि भैस की पूछ पकड़कर कोई वैतरणी पार करके चला गया है। इन सब संकेतो का बड़ा भारी मर्म है और वृषभ और भैंसे के पीछे जो वाहन की परिकल्पना की गई है उससे भी जो संकेत मिलता है आप सबको पता है। परन्तु पता नही क्यों हमारे समाज में भैंस के पीछे आजकल बड़ा खिचांव बढ़ता जा रहा है। लोग गायों को छोड़ने भी लगे है कई गांव में हमने ऐसा देखा है। हाँ एक बात जरूर है कि भैंसे के पालने में एक बड़ा लाभ है भैंस का दूध थोड़ा गाढ़ा होता है चाहे पानी भी मिलाना चाहो तो थोड़ा गुजाइंश उसकी रह जाती है। एक फायदा कहें आप। थोड़ा पतला होता है गोमाता का दूध उसमें इतनी गुजाइंश नहीं होती पानी मिलाने की। प्रभु श्रीराम के अवतार के प्रयोजन के रूप में कहा गया- ''विप्रधेनु सुर सन्त हित लीन मनुज अवतार''। गोमाता धेनु का संरक्षण भी भगवान श्री राम ने अपने अवतार का प्रयोजन माना था। और भगवान् श्री कृष्ण का तो कहना ही क्या भगवान् श्रीकृष्ण कहते है व्रजमाहिं कारी पीरी श्यामा और गौरी धौर, धूंमरि किशोरी मेरी गैयन कौ ना। जपूँ इन्हीं की माला चाहे गोविन्द गोपाला धन्य धन्य ब्रजबाला धन्य मेरौ ब्रजधाम। जहां होत नित गौ की सेवा तहाही बसे गिरधारी। यदि दे आज्ञा तुरंत दही खबाहुँ। यह गुरू गोविन्द सिंह जी थी दिव्य प्रेरणा थी। हमारा सारा आर्यावर्तीय धर्म परिवार इस पावन ब्रह्मावर्त क्षेत्र में पैदा हो करके, विकसित बने हुये सारे धर्मो का परिवार हमें एक स्वर से कह रहा है गोमाता को माता मानो इसका सम्मान करों, इसका पूजन करो। पद्मपुराण में बड़ा सुन्दर श्लोक आता है 'गवाम् सु पूजनम् कार्यम् गो ग्रासंयो प्रदक्षिणं गोषु नित्यं प्रसन्नासु गोविन्दोऽपि प्रसीदती' आपको गोविन्द प्रभु को प्रसन्न करने का मन है यदि आप चाहते हों कि भगवान् गोविन्द हमारी आराधना से प्रसन्न हों तो भगवान् की ही दिव्य प्रेरणा है 'गो षु नित्यं प्रसन्नासु गोविन्दोऽपि प्रसीदती' यदि आप गोमाता की सेवा करके उनको रिझावें उनको प्रसन्न रखे तो भगवान् गोविन्द की प्रसन्नता आपके लिए स्वत: सुलभ है, सम्भव है।

श्री घनश्याम जी तिवाड़ी

(शिक्षा मंत्री) (राज.)

मैं ''श्रीजी'' महाराज की पूर्ण कृपा ही मानता हूं कि सलेमाबाद में आप सब इतने बड़े बड़े साधु सन्तों के दर्शन हो गये। हमारे यहां पर साधु सन्तों का दर्शन होना बहुत बड़ी बात है। पिताजी मुझे कह रहे थे- कि बेटा भगवान् तो अपना कर्म करता है उसका फल वैसे

ही देता है वो अपने कानून में कभी संशोधन करता नहीं। उसने लिख दिया कि इसका ये फल है, इसका ये फल है वो ही मिलता है। लेकिन साधु सन्तों की जब कृपा होती है तो विधि का लिखा भी बदल जाता है।

हमारे यहां सलेमाबाद में इतने बड़े सब साधुओं का सन्तों का समागम है तो सारा काम आपकी कृपा से बदलेगा, सुधरेगा आप लोग यहां पधारे है। वैसे भी कहा है 'सन्त हृदय नवनीत समाना' साधुओं का हृदय जो मक्खन निकालते है उसके समान होता है थोड़ी सी आंच लगी कि पिघल जाता है।

स्वतन्त्र भारत में गाय कटती हैं। दूसरी, राज्य की सरकारों से कुछ मांग की गई है, मैं इन दोनों बातों से सहमत हूँ लेकिन श्री चरणों में एक निवेदन करना चाहता हूं। भारतीय राजनीतिक रूप से तो स्वतन्त्र है लेकिन क्या सांस्कृतिक रूप से हम पूर्ण स्वतन्त्र हैं? एक विचारणीय विषय है। आजादी के समय महात्मा गाँधी ने कहा था कि गोरक्षा का प्रश्न मेरे लिए स्वराज्य से बड़ा प्रश्न है। महात्मा गाँधी के सामने कहा गया, आप गोहत्या बंद करना चाहेगे या आजादी की लड़ाई लड़ना चाहेंगे? उन्होंने कहा - मेरे सामने गोरक्षा का प्रश्न आजादी से बड़ा प्रश्न है। अट्ठावन साल बाद में आज यहां पर यह मांग उठती हैं, क्यों उठती है? हम साफ देखते हैं बंगाल हैं केरल में है, उत्तर पूर्वी राज्यों में है, जहां पर कटी हुई गाय के टुकड़े आप को दिखाई देते हैं।

मैं आपको एक निवेदन करना चाहुंगा, सन्तों के चरणों में कि राजस्थान तो पहला राज्य है जिसने गोहत्या पर प्रतिबंध लगाया। श्री भैरूसिंह जी शेखावत की सरकार थी उस समय मैंने ही मांग की थी विधान सभा में खड़े होकर कि सम्पूर्ण गोवंश की रक्षा पर प्रतिबंध लगाया जाय। लेकिन उस समय नियम था कि बूढ़ी गाय हो गई, दूध देने वाली नहीं है। यह कट सकती है, बछड़ा है दूध पीने वाला नहीं है कट सकता है। इस बहाने से हाईकोर्ट के नियमों की अवमानना करके लोग गाय और बछड़ों को बाहर ले जाते हैं। लेकिन शेखावत साहब की सरकार ने जिस में मैं भी उस समय मंत्री था, हमने निश्चय किया कि सम्पूर्ण गोवंश की रक्षा पर प्रतिबंध लगेगा। और हिन्दुस्तान का राजस्थान पहला राज्य है जिसने सम्पूर्ण गोवंश की रक्षा की गोहत्या पर प्रतिबंध लगाया और गो सेवा आयोग की स्थापना करके इस प्रकार का एक पहला कदम उठाया। वर्तमान सरकार उसी की अनुगामी है इसलिए हम तो गोरक्षा के लिए वचनबद्ध हैं और कटिबद्ध हैं, सरकार जो भी कर सकेगी, करेगी। इसमें मीन मेख नहीं है। लेकिन एक दूसरा प्रश्न भी उपस्थित है जब मैं गांव में घूमता हूँ तो मैं देखता हूँ कि लाठी लिये हुये रात को किसान सैकड़ो गायों को इधर-उधर भगाते रहते हैं। उनके खेतों में घुसकर गाये उनकी फसल को समाप्त करती है। गाय को कोई पालना नहीं चाहता, छोड़ देते है। यह स्थिति वहां बनी हुई हैं। इसलिए हमको मूल बात पर भी चिन्तन करना पड़ेगा, चिन्तन जरूर करना पड़ेगा।

छोटे मुंह बड़ी बात है, आजाद भारत में अब क्या बाकी बच गया। जब हमारे परमपूज्य शंकराचार्य जी को पकड़ कर जेल में डाल दिया, क्या बचा हमारे पास? सांस्कृतिक आजादी कहां बची। मैं तो कहना चाहता हूँ कि आजाद भारत में दो कलंक लगे हैं गोहत्या का कलंक तो है ही उसके बाद इस देश पर कोई सबसे बड़ा कलंक लगा है तो परमपूज्य शंकराचार्य को गिरफ्तार करके जेल में डालने पर कलंक लगा है। अगर यह सांस्कृतिक आजादी की बात होती तो ये कवायद कहां से होती, किसकी हिम्मत हो जाय कि हमारे धर्मगुरु के ऊपर हाथ डाले, किसकी हिम्मत हो जायें कि राजनेता, जो भ्रष्टाचार के आरोप में पकड़े जाये, उनको तो बंगलों में रखें, उनकी अलग से व्यवस्था की जाय और किसी पवित्र सन्त को अनावश्यक रूप से पकड़कर ले जाय, पूजा की अनुमति भी नहीं दें, उनको अलग से अपने नित्यकर्म करने की अनुमति भी नहीं दें। ये फिर कैसी सांस्कृतिक आजादी हैं? सांस्कृतिक आजादी होती तो राम जन्म भूमि पर मंदिर बनता, सांस्कृतिक आजादी होती तो कृष्ण की जन्म भूमि इस प्रकार से नहीं रहती। तो आजादी नहीं प्रतिबंध है।

मुझे जिस जगह बोलने के लिए खड़ा किया गया है गोरक्षा के बारे में मैं उसके लिए पात्र हूँ । मेरी धर्मपत्नी मेरे साथ आई है। एम.एल. ए. क्वाटर्स में सी सेविन में रहते हुये पन्द्रह साल तक मैंने वहां पर भी गाय रखी, गाय की सेवा नौकर नहीं मेरी पत्नी खुद करती थी। गाय का दूध निकालती, बिलौना करती, घी निकालती, और गोबर भी फेंकती। मेरे जयपुर के घर में भी और सीकर के घर में भी दोनों जगह मेरे पास पन्द्रह गाय हैं मैं उनका लालन पालन करता हूँ और उनकी सेवा भी करता हूँ।

पहले तो अपने यहां बिलौना होता था झेरण होता था नेता और नागला होता था जिससें बिलौना होताा था। तो नेता तो स्टेज पर आ गये? झरेणा, नागला गायब, अब तो मशीन आ गई जिससे बिलौते हैं तो बिजली आयें और गांव में बिजली आती है बारह बजे। गोरक्षा सम्मेलन में बोलने का तो पात्र हूँ, महाराज क्यों कि आप तो घर पधारया, आपको सब पता ही है कि कोई साधु-सन्त अगर घर पर आ जाय तो मैं गाय के दूध से उनकी सेवा करना पसन्द करूंगा। लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि गोचर भूमि या गोशालाओं के लिए इजरित भूमि इस को कोई बेचेगा नहीं। बेच नहीं पायेगा, बेचने पर प्रतिबंध रहेगा, नामांकरण भी नहीं होगा, सरकार को उसके लिए अगर कानून बनाने की आवश्यकता पड़ी तो राजस्थान की सरकार ने जैसे गोरक्षा का कानून बनाया है, उस तरह गोचर भूमि को बचाने का कानून बनाने में भी आगे रहेगी इसमें मीन मेख नहीं है। आप प्रस्ताव पास करें हमारी मुख्यमंत्री छब्बीस तारीख को यहां आयेगी निश्चित रूप से वह इस बात के लिए तैयार हैं कटिबद्ध हैं। दूसरा काम हमें कहा गया कि गोशालाओं को अनुदान दिया जाय, सरकार तो देगी जितना देगी, लेकिन हमारी स्थिति आज क्या हुई है। उन्नीस सौ इक्यासी की जनगणना में राजस्थान में तीन करोड़ सैंतालीस लाख की जनसंख्या थीं, तीन करोड़ सैंतालीस लाख हैक्टयेर जमीन हमारे पास थीं, और तीन करोड़ सैंतालीस लाख गायें ही हमारे पास थीं, गोवंश यह हमारा रिकार्ड आज दो हजार की जनगणना के बाद में हमारा क्षेत्रफल तो तीन करोड़ सैंतालीस लाख हैक्टेयर है, जनसंख्या पाँच करोड़ साठ लाख हो गई लेकिन गायों की संख्या घटकर दो करोड़ और दस लाख है। कितनी बड़ी कमी हो गई है राजस्थान में कौन से गोवंश के संरक्षण की हम बात करेंगे? इसलिए मैं कहना चाहता हूँ यह केवल सरकार के वश की बात नहीं सामाजिक जागृति करने की बात भी है। आप गोरक्षक कानून तो बना देंगे लेकिन गाय जब वहां घूमेगी लोगों की फसल खाते हुये तो किसान जो सबसे बड़ा गोरक्षक है अपने खेत को बचाने के लिए उस गाय को वहां घुसने भी नहीं देगा, जब तक उसकी व्यवस्था न बने, उसकी व्यवस्था के बिना काम संभव नहीं है। इसलिए मैं आप से कहना चाहता हूं दो बातें प्रमुख रूप से पहली बात मैं निवेदन करना चाहता हूँ-

इसके लिए सामाजिक चेतना की आवश्यकता है और वो हमारे कहने से नहीं हो सकता। मेरे कहने से इस छोटे से गाँव में कितनी बड़ी ताकत लगालो आदमी इकट्ठे नहीं हो सकते आप लोगों के दर्शन करने के लिए और आप को सुनने के लिए इक्ट्ठे हो सकते हैं। आपके तप से, आपके प्रेम से, लोग आपके दर्शन करने के लिए आते हैं। आप करें मार्ग-दर्शन, सन्त-समाज हम अनुयायी बनेंगे। कौन बंगाल में आन्दोलन करने जा रहा है आज। हमारे तो दो ही काम हैं भाई, साफ-साफ हम नेता लोगों की यह हालत हो गई है जैसे किसी पागल आदमी को ठीक करने के लिए उसके बिजली का झटका लगाना पड़ता है, हमको ठीक करने के लिए केवल वोट का झटका ही काम करता है बाकी कुछ भी काम नहीं करता। अभी केरल बंगाल की सरकारों को वो झटका लगा नहीं है, अगर लग जाता तो अकल ठिकाने आ जाती। तो वो झटका जो लगा सके भारत की संसद में। जब

यह कानून बनाने की बात आई तो लोग विरोध करने के लिए खड़े हो गये। आज तीन राज्यों को छोड़कर सब राज्यों में कानून लागू है लेकिन भारत की संसद में पास नहीं है। इसलिए निवेदन करना चाहुंगा कि इसको एक टुकड़ों में न लिया जाय सनातन धर्मसभा में इतने बड़े आचार्यगण विराजमान हैं, एक सामूहिक निर्णय लिया जाना चाहिये। और एक आवाहन करना चाहिये। आज आजादी के सत्तावन साल बाद अब समय आ गया है।

हमको संक्रमणकाल से तो निकलना ही पड़ेगा आचार्यगण के निर्देश और आदेश की यह समाज आज पालना करने के लिए तैयार है। आपने छोटा सा आवाहन किया भारत बंद का दो दिन में कितना बड़ा भारत बन्द का आवाहन हुआ आपने छोटा सा आवाहन किया कितने लोगों ने उपवास रखा था, आप लोगों ने छोटा सा आवाहन किया आज आप अगर आवाहन करेंगे, आपने आवाहन किया था, रामजन्म भूमि का, कितने लाखों लोगों चले गये अब एक बार आप आवाहन करें। आप लोग मार्ग प्रशस्त करें, सांस्कृतिक आजादी के लिए जिसमें गोरक्षा भी शामिल हो, जिसमें धर्माचार्यों की मान और प्रतिष्ठा भी शामिल हो। किसी की हिम्मत नहीं होनी चाहिये कि हमारे धर्माचार्य की तरफ अंगुली या आँख उठाये, उनके बारे में अपशब्द भी बोले इस प्रकार की हिम्मत होनी नहीं चाहिये, किसी की, यह बात हमको निश्चित रूप से यहां पारित करनी चाहिये। इसलिए उसका समय है और मैं भगवान् से प्रार्थना करूंगा कि जगद्गुरु निम्बार्काचार्य जी महाराज के इक्यावन सौ वीं जयन्ती के अवसर पर सलेमाबाद में श्री 'श्रीजी' महाराज के चरणों में अन्य आचार्यों की चरण रज यहां पर पड़ी है निश्चित रूप से कोई इस प्रकार का एक आवाहन सम्पूर्ण सनातन धर्म के लोगों का होगा कि उठो जागो और आदेश की पालना करो, हम निश्चित रूप से आदेश की पालना करेगें।

श्री स्वामी हरिनारायणानन्द जी महाराज (महामंत्री, भारत साधु समाज)

प्रथम सत्र में मैंने भारतीय धर्म और संस्कृति के पृष्ठाधार में अपने विचारों को व्यक्त किया था जिसमें धर्म स्थानों के व्यवस्था में सरकारी नियन्त्रण का विरोध किया था। धर्म का सम्बन्ध मनुष्य जीवन के उस उत्कर्ष से जुड़ा है जिससे पुरूषार्थ की सिद्धि होती है। लेकिन उसी धर्म को हमारे शास्त्रों ने ऋषियों ने गो दूध के साथ जोड़ दिया। सृष्टि के प्रारम्भकाल से गोमाता की प्रतिष्ठा अपनी माता जैसी है। वशिष्ठ जैसे ऋषियों में श्रेष्ठ ऋषि का सम्पूर्ण भरण पोषण नन्दिनी के द्वारा ही सम्भव हुआ करता था। जब विश्वामित्र का संघर्ष वशिष्ठ जी के साथ हुआ बहुत बड़ी तपस्या विश्वामित्र जी ने की और उस विश्वामित्र ने ब्रह्मर्षि पद की प्राप्ति के लिए सभी देवताओं को अपनी ओर आकर्षित कर लिया और सभी ऋषियों ने मुनियों ने उन्हें ब्रह्मर्षि पद से विभूषित करने की बात मान ली और अन्तिम निर्णय वशिष्ठ के पास छोड़ दिया। विश्वामित्र अनेकबार वशिष्ठ जी के पास जाकर ब्रह्मऋषि मनोनयय की प्रार्थना की लेकिन वशिष्ठ ऋषि की स्वीकृति नहीं मिली।

एक दिन ऐसा हुआ कि वशिष्ठ ऋषि के पुत्रों को विश्वामित्र ने अनेक झंझटों में डालकर सौ पुत्रों की हत्या करदी, अन्त में सोचा कि वशिष्ठ जी को ही समाप्त किया जाय। क्योंकि एक बार महर्षि वशिष्ठ की परीक्षा की दृष्टि से अपने हजारों अनुचर के साथ वशिष्ठ ऋषि के आश्रम में गये और कहा कि हम लोगों को भोजन कराओ। इस आशा में कि वशिष्ठ ऋषि तो अकिंचन हैं ये हजारों ऋषियों को भोजन कैसे करायेंगे। नन्दिनी को आदेश दिया। गो माता का रूप उनका भरण पोषण व सम्पूर्ण समृद्धि का एक मात्र साधन था। वशिष्ठ ने जब नन्दिनी का कहा कि उसने दस मिनट के अन्दर सारे हजारों लोगो के भोजन की उत्तम व्यवस्था कर दी। उत्तम भोजन कराने के बाद विश्वामित्र के मन में इच्छा हुई कि इस नन्दिनी को क्यों न ले चलें और नन्दिनी को जबरन हाँकने लगा। वह कातर दृष्टि से वशिष्ठ ऋषि की ओर देखने लगी महर्षि विशष्ठजी

ने कहा, मैं तुम्हारी रक्षा कैसे करू? तुम स्वंय अपनी रक्षा करों। नन्दिनी ने अपना सिर झाडा तो सारे की सारे विश्वामित्र की सेना भाग खड़ी हुई और वहां भगदड़ मच गई कोई मरा कोई गिरा कोई भाग गया।

बात तो ये है कि जिस महात्मा गाँधी ने भारत के स्वतन्त्रता का नेतृत्व किया उनकी इच्छा के बाद भी भारत के संविधान मे इस बात का उल्लेख किया गया प्राथमिकता दी गयी कि गोवंश की रक्षा को प्राथमिकता दी जाय। आचार्य बिनोबा के उपवास के बाद श्रीमती इन्दिरा गांधी ने मैंने जब उन से भेंट की और विनोबा जी की बातों का उल्लेख किया तब मेहता को कहा जाकर पार्लियामेंट में घोषणा करो कि गोरक्षा पर प्रतिबंध लगाने का कानून भारत सरकार बनायेगी। कुछ राज्यों में कानून बना लेकिन अनेक राज्यों में, जैसे उन्होंने बंगाल की बात की, केरल की बात की, नागालैण्ड की बात की और इन स्थानों पर और अनेक राज्यों में गोवध नियन्त्रण का कानून नहीं बना। कहा यह जाता है कि यह राज्य का विषय है लेकिन भारत के संविधान में राजनैतिक तत्वों ने राजनीतिक लाभ उठाने की दृष्टि से अनेक संशोधनों को किया लेकिन इस संशोधन पर सारे राजनीतिक दल बिल्कुल चुप बैठे हैं। यह नहीं कि गाय का दूध मुसलमान और क्रिश्चियन नहीं पीता है। इसे धर्म से जोड़ने का कोई अर्थ नहीं है। जिसके दुग्ध से सारी शक्ति संचारित होती है, शरीर, मन, बुद्धि, सबको पुष्टि मिलती है उसके साथ यह व्यवहार हो रहा है। आपने जो इस विषय को रखा कि हमारी मांग होनी चाहिये कि केन्द्रीय सरकार भारत के संविधान में संशोधन कर केवल गाय नहीं सम्पूर्ण गोवध के हत्या पर प्रतिबंध लगावे। ठीक है कि इसके सम्बन्ध में कानून बनाने के पहले राज्यों से सहमति ली जाती है। जब ''टू थर्ड'' लोगों की बहुमत की बात आ जायेगी तब भी कुछ राज्यों को छोड़कर अधिकांश राज्य इस बात से सहमत है। अधिंकाश राज्यों में यह कानून बनाये गये हैं। गुजरात में बना हुआ है दूसरे प्रदेशों में भी बने हुये है, राजस्थान में बना हुआ है, उत्तरप्रदेश में भी बना है। मध्यप्रदेश में बनाया गया है फिर भी ये प्रश्न हमारे सामने रोज आता-जाता रहता है। सबसे बड़ी भयंकर स्थिति क्या है कि पिछली सरकार के समय में बड़े बड़े बूचड़खाने एक एक, बूचड़खानों पर पचास पचास कोटि की योजनाएं बनी। भारत साधु समाज ने इसका बड़ा व्यापक विरोध किया पार्लियामेन्ट के सदस्यों को कहा और सारे राजनीतिक दलों को लिखा लेकिन आज तक जो बूचड़खाने वे नहीं हुये। और अब तो और नये नये बूचड़खाने हो रहे है, इन्हें बन्द करो शहर के पास जहां जहां भी बूचड़खाने है। ये बन्द करो।

पेट की समस्या, भूख की समस्या इस सृष्टि में क्या केवल मनुष्य की है। कितने जीव-जन्तु हैं उनके भूख की कोई समस्या नहीं है क्योंकि वह मूक हैं उनकी समस्या कोई नहीं उठाता। मनुष्य की भूख तो आज तक मिटी नहीं वह केवल अनाज नहीं खाता हैं वह गधा से ले के सांप से लेके, गाय, बैल, भैंस, से लेके कितने प्राणियों को खाकर जीवित है। मनुष्य को इस तरह जीने का क्या अधिकार है। स्थिति को आज समझने की आवश्यकता है। इस तरह के प्रस्ताव का मैं पूर्ण समर्थन करता हूँ। इसका सम्बन्ध भारत की प्राचीन संस्कृति की श्रृंखला से जुड़ा है। जो हमारे जीवन को प्राणबन्ध बनाये रखना चाहता है। इन्हीं दो शब्दों केसाथ मैं यह चाहता हूँ कि इस प्रस्ताव के द्वारा सारे भारत में और जितने भी हमारे धर्माचार्य हैं, पुरी शंकराचार्य पूज्य निश्चलानन्द सरस्वती जी महाराज, इस सम्बन्ध में हमारे पूज्य श्रीजी महाराज जो बराबर इन बातों का इस धर्म संस्कृति को जीवित रखने के लिए जीवन में प्रेरणा की भावना को जगाते रहते है। लेकिन सबसे दुःखद प्रश्न क्या है। कि आज जो राजनीति है, आज के जो राजनैतिक दल हैं वो अल्पसंख्यक तुष्टीकरण के नाम पर संस्कृति के ऐसे महत्वपूर्ण ऋषियों की लगातार उपेक्षा कर रहे हैं। थोड़े से स्वार्थ के लिये, अरे सभी लोग आजकल, क्या वो मुसलमान लोग व्रत में रखते क्या कहते है - इख्तियार पार्टी, अरे भाई सारे के सारे ठीक है, कोई मना नहीं करता वाजपेयी जी ने दिया दूसरे ने दिया, राष्ट्रपति ने दिया, अरे राष्ट्रपति तो एक देता था अब मंत्री भी दे रहा है सभी लोग अरे क्या तमाशा तुमने बना दिया पर्व

और त्यौहार को इतने बड़े बड़े हिन्दुओं के पर्व हैं उसमें तुम्हें देने की कोई बात नहीं सूझती लेकिन सत्ता के लालच में। कितने वोट हमकों मिलेंगे कि हिन्दू जाति के दूसरे वर्ग को छोड़कर और मिलाकर हम सत्ता प्राप्त करेंगे और सत्ता प्राप्त करने के बाद क्या करेंगे? वो जितना धन देश का है उसका कुछ हिस्सा अपना लेंगे, अपने सम्बन्धियो को देंगे अपने दूसरे लोगों को देंगे और अपने पार्टी को देंगे। यह जो मूल्यहीनता राजनीति की है सर्वाजनिक जीवन में विवेकशून्यता, प्रशासन तन्त्र में विवेक शून्यता के कारण राष्ट्रीय जीवन को इस प्रकार संकट में डाला जा रहा है कि हमारे भविष्य का प्रश्न आ गया है। भारत की जो प्राचीन संस्कृति सनातन धर्म की परम्परा है वह रक्षित हो पायेगी या नहीं हो पायेगी। ऐसी स्थिति में भारत के सारे साधु-समाज को एक सूत्र में इकट्ठे होकर इन सारे कार्यक्रमों पर एक बद्धता दिखाकर, ये जो आवश्यकतायें जो इन्होंने कहा कि सांस्कृतिक अभियान उस सांस्कृतिक अभियान का आधार आध्यात्मिक और सामाजिक जागरण होगा। हमारे देश में यह सारी व्याधियाँ, सारी बुराइयाँ और सारे यह जो संस्कार बिगड़ रहे हैं। धर्म स्थानों पर वक्र दृष्टि उस पर हम नियन्त्रण पा सकेंगे। मैं "श्रीजी महाराज" के प्रति बहुत ही आभार और कृतज्ञता प्रकट करता हूँ कि उन्होंने सभी प्रमुख महात्माओं को धर्माचार्यों को आमन्त्रित कर एक ऐसे विषय पर गहन चिन्तन के लिए आमंत्रित किया जिसका सम्बन्ध भारत की भाषा की आत्मा से है। भारत की संस्कृति जिसका आधार दधीचि, रन्तिदेव जैसे रहे है। आज भोग विलास का स्वरूप पाश्चात्य संस्कृति के पोषक तत्व द्वारा भारत की प्राचीन त्यागमय संस्कृति पर लगातार आक्रमण हो रहे है, हमें क्या करना चाहिये। आज ही से हमको संकल्प लेना चाहिये कि हम अपने संस्कृति और धर्म के मूलाधार जो हैं उसके रक्षण के लिए और सम्बर्द्धन के लिए एक सूत्र से राष्ट्रीय अभियान चलायेंगे जिसमें सभी भक्तों का जनता का सहयोग लेकर भारत को प्राचीन गौरव से गौरवान्वित करेंगे जो एक दिन सारे विश्व का वह नेता था वह पुनः बन सके।

गोवर्धन पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य

स्वामी श्री निश्चलानन्द जी महाराज

(पुरीधाम, उड़ीसा)

समुपस्थित समादरणीय भगवत् स्वरूप आचार्य वृन्द, विद्वद्वृन्द, भक्त वृन्द एवं भक्तिमती माताओं, भगवन् नाम की अद्भुत महिमा है। श्रीधर स्वामी महाभाग ने श्रीमद्भागवत की टीका में मनोभाव अभिव्यक्त करते हुयें कहा- वस्तु शक्ति ज्ञान की अपेक्षा नही रखती। अग्नि को कोई अग्नि समझकर छूले तो जले बिना नहीं रहे, आग को कोई आग न समझ कर छूले तो जले बिना न रहे, अमृत को कोई अमृत समझकर पीले तो अमर हुये बिना रहे, अमृत को कोई अमृत न समझकर पीले तो अमर हुय बिना न रहे, गंगाजल को कोई गंगाजल समझकर पीले तो तरे बिना न रहे, वस्तु शक्ति ज्ञान की अपेक्षा नहीं रखती है। वार्तिककारों ने एक भाव अभिव्यक्त किया कोई व्यक्ति सोया हुआ है मान लीजिये उसका नाम लालू है, राजस्थान का लालू, बिहार का लालू नहीं, वह खर्राटे लेकर सोया हुआ है। उसकी माता धीरे धीरे पुकारती है, लालू-लालू, लालू जग जाता है तो हमारे मनीषियों ने प्रश्न किया जब कोई व्यक्ति खर्राटे लेकर सोया हुआ होता है उसका नाम लेकर उसे पुकारा जाता है तो क्या वह अपना नाम सुनने के बाद जगता है या जगने के बाद अपना नाम सुनता है । कदाचित् आप कहें कि नाम श्रवण के बाद जगता है तो सोया सिद्ध नहीं होगा और जगने के बाद नाम सुनता है तो नाम जगाने वाला सिद्ध नहीं होगा इससे तो क्यो तत्व सिद्ध होता है? नाम में सन्निहित अचिन्त्य शक्ति के अमोघ प्रभाव से सोया हुआ व्यक्ति जग जाता है। सज्जनों! जब प्राकृतिक, लौकिक लालू-कालू आदि नाम में भी अचिन्त्य शक्ति है जिसके अमोघ प्रभाव से सोया हुआ व्यक्ति जग जाता है, ऋग्वेदादि सिद्ध भगवन्नाम में अचिन्त्य अनन्त शक्तियों का सन्निवेश हो, यह तो न्याय से सिद्ध है। चलते फिरते, उठते बैठते, जहां तक सम्भव हो श्रीराम, कृष्ण, वामन, माधव, अच्युत, केशव, शिव आदि भगवान नामों को

स्मरण करते रहिये। नाम में कोटि कोटि अणु बमों की शक्ति को मात देने की क्षमता है भगवन्नाम में सन्निहित, अचिन्त्य, अपार, अनन्त, शक्तियों से लाभान्वित होने का प्रयास कीजिये।

भक्त प्रवर प्रह्लाद ने न तो गाली का प्रयोग किया न गोली का। चतुर्दश भुवनात्मक ब्रह्माण्ड में हिरण कश्यप का शासन था, भगवन्नाम के बल पर शासन को पलट डाला। सज्जनों, अचिन्त्य, अपार, अनन्त शक्ति है भगवन्नाम में। उस नाम की शक्ति का उपयोग करके दिशाहीन शासन तन्त्र को विश्व मंच से दूर कर रसातल में पहुंचाने की आज आवश्यकता है। आध्यात्मिक धरातल पर मैं कुछ बात कहना उचित समझता हूँ। आप देखिये विविध पुष्पों का यह समवेत स्वरूप है इसको यदि मैं ऊपर फेंकना चाहूँ या फेंक ही दूँ तो क्या होगा? पुष्प से बनी हुई माला को फूलों से बनी हुई माला को वेग पूर्वक ऊपर उठाने पर भी वह माला पृथ्वी की ओर आकृष्ट होती है। आप कह सकते है कि यह तो न्यूटन का सिद्धान्त है, यह न्यूटन का सिद्धान्त नही, भारतीय मनीषियों का सिद्धान्त है किसी भी पार्थिव वस्तु को वेग पूर्वक ऊपर फेंकने पर भी वह पार्थिव पदार्थ पृथ्वी की ओर क्यूं आकृष्ट होता है? इसका उत्तर क्या है? वह पार्थिव पदार्थ पृथ्वी का अंश होता है, इस दर्शनिक नियम के अधीन पुष्पों से बनीं, फूलों से बनी हुई माला को ऊपर फेंकने पर पृथ्वी की ओर आकृष्ट होती है। एक सौ दसवीं मंजिल पर यान्त्रिक विद्या का आलम्बन लेकर आज कल विश्व में पानी पहुंचाया जा चुका है, लेकिन टोंटी को खोलने पर जल की धारा नीचे की ओर आप्लावित क्यों होती है? क्यों कि वह अंश है, अंशी कौन है? उस का उद्गम स्थान समुद्र। दीप की ज्वाला अग्नि की शिखा ऊपर की ओर क्यों उठती है? क्योंकि वह अंश है, अंशी कौन है? नभ मण्डल में विद्यमान सूर्य। प्रत्येक अंश स्वभावतः अपने अंशी की ओर स्वाभाविक रीति से आकृष्ट होता है। भगवान् श्री कृष्ण चन्द्र का उद्घोष है सज्जनों! ''ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः'' भगवत्पादशिवावतार शंकराचार्य महाभाग ने अपने भाष्य में लिखा- परमात्मा अंशी नहीं, अंशी सरीखे हैं जीव अंश नहीं है अंश सरीखा है। कारण क्या है? जैसे मिश्री की डली को लेकर हम पत्थर पर पटक दें उसके रवें विकीर्ण हो जायेंगे, वह रवे अंश सिद्ध होंगे। इसी प्रकार कहीं परमात्मा से च्युत अंश के रूपों में हम जीवों को स्वीकार करेंगे तो परमात्मा सावयव सिद्ध हो जायेंगे।

अतः भगवतपादशिवावतार शंकराचार्य महाभाग ने डंके की चोट से कहा- परमात्मा अंशी सरीखे हैं, जीव अंश सरीखा है। इसके लिए उन्होंने दृष्टांन्त दिया- सावधान! जैसे नभोमण्डल में विद्यमान चन्द्रमा का नाम नभचन्द्र होता है, दार्शनिक दृष्टि से, साहित्यिक दृष्टि से, और उसका प्रतिविम्ब जो जल में पड़ता है उसका नाम जलचन्द्र होता है। जिस प्रकार नभचन्द्र अंशी सरीखा है जलचन्द्र अंश सरीखा है उसी प्रकार परमात्मा अंशी सरीखे हैं जीवात्मा अंश सरीखा है प्रत्येक अंश अपने अंशी की ओर आकृष्ट का केन्द्र जगत् हो ही नहीं सकता। जीवन धन जगदीश्वर की ओर ही जीव प्रतिक्षण आकृष्ट होता है। जैसे महाकाश अंशी सरीखा है। हमारे आकर्षण का केन्द्र भगवत् तत्व होना चाहिये। हम विश्व की जितनी भी समस्यायें हैं, केवल चार पाँच मिनटों में दार्शनिक धरातल पर सुलझा देना उचित समझते है, फिर गोरक्षा के सम्बन्ध में भी कुछ व्यथा और मनोभावों को अभिव्यक्त कर देना उचित समझते है। सावधान! विश्व मंच पर एक ही प्रश्न है। अगर आज विश्व के मनीषियों का वैज्ञानिकों का सम्मेलन हो तो, हम डंके की चोट से सिद्ध कर सकते हैं, हमारे वेद वेदान्तों में पूर्ण समस्याओं का पूर्ण समाधान है। विश्व में एक ही प्रश्न है उस प्रश्न को यदि सुलझा दिया जाय तो विश्व की कोई समस्या शेष नहीं रहेगी। तो प्रश्न क्या है सज्जनों- प्राणियों की प्रवृत्ति और निवृत्ति का नियामक कौन है बस एक प्रश्न है। जो राष्ट्र इस प्रश्न को सुलझा लेगा उस राष्ट्र में कोई समस्या नहीं रहेगी। विश्व स्तर पर अगर उस प्रश्न का उत्तर प्राप्त हो जाय तो विश्व की कोई समस्या नहीं रहेंगी। प्रश्न पर ध्यान दीजिये- प्राणियों की प्रवृत्ति और निवृत्ति का नियामक कौन है।

अब एक प्रश्न को सुलझाने की आवश्यकता है प्रश्न का मैं तीन विभाग कर देता हूँ। पहला प्रश्न है प्राणियों की प्रवृत्ति और निवृत्ति का प्रथम नियामक कौन है? अत्यन्त भूखा व्यक्ति भोजन करने में प्रवृत्ति क्यूं होता है? मृत्यु का भय अमृतत्व की भावना भोजन में प्रवृत्ति का नियामक है सार्वभौम सिद्धान्त हैं, तो मुसलमान कह सकते है क्या कि हम इस बात को नहीं मानेंगे क्रिश्चियन कह सकते है कि इस बात को नहीं मानेंगे, नास्तिक कह सकते है कि इस बात को नहीं मानेंगे। अत्यन्त भूखा व्यक्ति भोजन में प्रवृत्ति का नियामक है और भोजन कर लेने पर या भोजन करते समय कहीं यह परिज्ञान हो जाय कि इसमें विष मिला हुआ है तो व्यक्ति भोजन करते करते उठ जायेगा। भोजन कर लेने पर या भोजन करते समय हीं यह परिज्ञान हो जाय कि इसमें विष मिला हुआ है तो व्यक्ति भोजन करते करते या करें लेने पर निवृत्ति क्यों होता है भोजन से निवृत्ति का नियामक कौन है?

मृत्यु का भय अमृतत्व की भावना, कहीं भोजन करते करते मर न जाऊं, यही न, मृत्यु का भय अमृतत्व की भावना प्राणियों की प्रवृत्ति और निवृत्ति का प्रथम नियामक है सज्जनों। अब प्रश्न उठता है मृत्यु का भय क्यों प्राप्त है। मृत्युग्रस्त शरीर में संसार में अहंता ममता के कारण जीव को मृत्यु का भय प्राप्त है। अमृतत्व की भावना क्यों प्राप्त है क्यों कि तत्त्वत: जीव अमृत स्वरूप हैं। तत्वत: जीव मृत्युञ्जय है इसलिए हमने कहा न कि वस्तुशक्ति ज्ञान की अपेक्षा नहीं रखती, प्रत्येक प्राणी के हृदय में अमृतत्व की भावना है, जीव मृत्युञ्जय स्वरूप है। बृहदारण्य उपनिषद् का एक दृष्टांत है। काष्ठ के माध्यम से जब अग्नि प्रज्ज्वलित करते हैं दो प्रकार की वंश परम्परा चलती है एक धूम की और दूसरी परम्परा चलती है ज्वाला की, ईधन में काष्ठ में जो आर्द्रता है नमीं है उसके कारण धूएं की प्राप्ति होती है और अग्नि की परम्परा से चिन्गारी की उत्पत्ति होती है।

इसी प्रकार मृत्युग्रस्त शरीर में अहंता, ममता के कारण मृत्यु का भय प्राणी को प्राप्त होता है और आत्मपरम्परा से अमृतत्व की भावना विसर्ग सिद्ध प्रत्येक प्राणी के हृदय में प्रतिष्ठित होती है। **अब मैं दूसरा प्रश्न उठाता हूँ** प्रणियों की प्रवृत्ति और निवृत्ति का दूसरा नियामक कौन है। मूर्खता का भय और वैदुष्य की भावना विज्ञान की भावना। आखिर टेलीविजन क्यों देखते है? पत्र-पत्रिकायें क्यों पढ़ते हैं डिग्री-डिप्लोमा क्यों अर्जित करते हैं? मूर्खता का भय हृदय में प्रतिष्ठित है, विज्ञान की भावना हृदय में प्रतिष्ठित है टेलीविजन देखते देखते आँखें क्यों मीच लेते है? प्रवचन सुनते सुनते सोने की भावना क्यों व्यक्त करते हैं? कहीं विक्षिप्त न हो जाँऊ विद्वान् होने के नाम पर कहीं पागल न हो जाँऊ तो मूर्खता का भय और विज्ञान की भावना, प्राणियों की प्रवृत्ति और निवृत्ति का दूसरा नियामक है। आखिर मूर्खता का भय हमारे हृदय में क्यों हैं? क्योंकि आत्मा विज्ञान स्वरूप है, स्व प्रकाश है। विज्ञान की भावना स्वरूप की परम्परा से प्राप्त है और मूर्खता का भय जड़ वस्तु में अहंता, ममता के कारण प्राप्त है। **अब तीसरा प्रश्न है**- सज्जनों! प्राणियों की प्रवृत्ति और निवृत्ति का तीसरा नियामक कौन हे? दु:ख का भय और आनन्द की भावना, है या नहीं? दु:ख का भय आनन्द की भावना। प्रत्येक प्राणी के हृदय में दु:ख का भय क्यों प्राप्त है? दु:ख प्रद शरीर में अहंता-ममता के कारण। आनन्द की भावना क्यों प्राप्त हैं? ''सुखमयंस्यात् मनोरूपं'' क्योंकि यह ''आत्मन्येव'' आनन्द की भावना क्यों प्राप्त है? ''सुखमयंस्यात् आत्मनस्तुकामाय सर्वप्रियं भवित''- आपने आप में पराकाष्ठा की प्रीति, डंके की चोट से इस तथ्य को सिद्ध करती हैं कि आत्मतत्व परमानन्द स्वरूप है। अब संकेत क्या हुआ सज्जनों। मृत्यु, मूर्खता, और दु:ख यही तो समस्या है विश्व मंचपर। मृत्युग्रस्त प्राणी है, मूर्खता के चपेट में जीव आ गया है, और अन्त में विविध तापों का ग्रास जीव बन रहा है। कोई जीवन में ऐसी विद्या है, कोई अवस्था है जहां मृत्यु के भय की पहुंच न हो?

मूखर्ता की पहुंच न हो, दैहिक, दैविक, भौतिक, त्रिविध तापों में किसी ताप की पहुंच न हो। उसी का

नाम सज्जनों गाढ़ी नींद है सार्वभौम सिद्धान्त है। हम तो पश्चिम बंगाल में कम्युनिष्टों के बीच में प्रवचन करते है और कम्युनिष्ट बड़े ही आनन्द पूर्वक प्रवचन सुनते हैं। सावधान! गाढ़ी नींद में किसी को मृत्यु का भय होता हैं क्या? क्यों नहीं होता, मृत्युग्रस्त शरीर और संसार को, क्योकि अहंता ममता का उदय गाढ़ी नींद में नहीं होता। अहंता ममता का आश्रय अन्तःकरण या अहं या अहमर्थ सो जाता है:-''अहमेतत् प्रसुप्ते '' श्रीमद्भागवत एकादश स्कन्ध में नौ योगीश्वर संवाद अहंता ममता का आश्रय अहंकार, गाढ़ी नींद में सो जाता है नश्वर शरीर को लेकेर अहंता ममता का उदय नहीं होता।

लगे हाथ हम एक बात और सिद्ध कर दें कम्युनिज्म, पर सज्जनों। नास्तिकवाद पर। गाढ़ी नींद का वेग ही पानी फेर देता है। चार्वाकों का क्या सिद्धान्त है चेतना विशिष्ट शरीर ही आत्मा है। अगर सचमुच में चेतना विशिष्ट शरीर ही आत्मा हो तो कम से कम कम्युनिज्म की धारा में बहने वाला, नास्तिकता की धारा में बहने वाला कोई भौतिकता का पक्षधर व्यक्ति शरीर को भुलाकर गाढ़ी नींद न चाहे, नास्तिक से नास्तिक शिरोमणि भी शरीर को भुलाकर गाढ़ी नींद न आवे तो पागल हुये बिना नहीं रह सकता है, गाढ़ी नींद का वेग डंके की चोट से इस तथ्य को सिद्ध करता है कि शरीर आत्मा नहीं है। और नास्तिकों का मत है विषयजन्य आनन्द ही आनन्द है और कोई ईश्वर नहीं, परमात्मा नहीं धर्म नही। लेकिन प्रिय के स्थान पर प्रिय, मोद के स्थान पर मोद, प्रमोद के स्थान पर प्रमोद, विषयजन्य भरपूर आनन्द जिसको प्राप्त है वह आनन्द को भुलाकर गाढ़ी नींद क्यों चाहता है? हमारे पंचदशीकार विद्यारण्य स्वामी महाभाग ने कम्युनिज्म पर पानी फेरते हुये पहले ही कह दिया। आखिर किसी के शरीर में वेदना हो, छाती में पीड़ा हो, दर्द हो पेट में, वह दुःख को भुलाने के लिए सोना चाहता है? इच्छित वस्तु की प्राप्ति की आशा से ऐच्छिक वस्तु की प्राप्ति से जो जीवन में आनन्द का उद्वेग होता है उसका नाम दर्शनशास्त्र में प्रिय है।

इच्छित वस्तु का सेवन करने पर जो आनन्द मिलता है उसका नाम मोद है इच्छित वस्तु का यथेष्ट सेवन कर लेने पर जो रोम रोम से आनन्द बरसने लगता है उसका नाम है प्रमोद। प्रिय की अपेक्षा मोद, मोद की अपेक्षा प्रमोद उत्कृष्ट आनन्द है। जिसे प्रिय के स्थान पर प्रिय मोद के स्थान पर मोद, प्रमोद के स्थान पर प्रमोद, सुलभ है वह भी प्रिय, मोद प्रमोद होते हुये क्यों सोना चाहता है। सज्जनो? इससे सिद्ध होता है कि विषयजन्य आनन्द आनन्द नहीं है। गाढ़ी नींद में मुर्खता के भय की पहुंच नहीं है, क्यों नही है? इसलिए नही है कि जड़ शरीर को लेकर अहंता-ममता का उदय नहीं है, गाढ़ी नीदं में दैहिक, दैविक भौतिक त्रिविध तापों की पहुंच नहीं है क्यों पहुंच नहीं है? क्यों कि दुःखप्रद शरीर को लेकर अहंता-ममता का उदय नहीं है।

अब हम एक संकेत करना चाहते हैं। हमारे पंचदशीकार में कम्युनिज्म पर पानी फेरने के लिए पहले से ही कहा जहां विषयजन्य आनन्द होता है वहां सृष्टि होती है, जैसे इस गुलाब के पुष्प से मुझे दर्शन का आनन्द मिल रहा है। गुलाब का पुष्प क्या है भोग्य, मैं क्या हो गया भोक्ता ,आनन्दानुभूति क्या हो गई भोग जहां विषयजन्य आनन्द होता है वहां तृप्ति होती है जहां तृप्ति होती है, वहां द्वैत होता है, वहां श्रम होता है जहां श्रम होता है वहां खालि निर्भय आनन्द नहीं होता विषयजन्य आनन्द को तिलांजलि देकर व्यक्ति गाढ़ी नींद प्राप्त करने को विवश है आध्यात्मिक प्रवचन का दो मिनट में उपसंहार करके अब गोरक्षा के बारे में मैं कहना चाहता हूँ।

गाढ़ी नींद में, सज्जनों! गाढ़ी नींद में मृत्यु, मूर्खता और दुःख इन तीनों से अछूता, जीव रहता है तीनों से अतीत जीव रहता है। इकत्तीस नील दस खरब चालीस अरब वर्षों तक महाप्रलयकी दशा में जीव के पास मृत्यु का भय नहीं पहुंचता, मूर्खता का भय नहीं पहुंचता त्रिविध तापों में कोई भी ताप नहीं पहुंचता। लेकिन ताप का बीज मूर्खता का बीज मृत्यु का बीज अज्ञान शेष रहा है। अतः श्वेताऽश्वतर उपनिषद् डंके की चोट से कहती है, चुनौती देती हुई। ''नान्यपन्था विद्यते अनाय'' ओंर

भौतिकवादियों सुन लो जब तक आत्मा का सत नहीं समझोगे तब तक मृत्यु के भय का निवारण कोई कर नहीं सकता एक ब्रह्मा की आयु भी कोई प्रदान कर दे, मृत्यु के भय से मुक्ति तभी मिलेगी जब आत्मा अमृत स्वरूप है, मृत्युञ्जय है, उस रहस्य का उद्‌गम होगा और कोई मार्ग नहीं है। पटना में बिहार की राजधानी पटना में, एशिया स्तर के सर्जनों ने हमारे पास प्रश्न रखा ''चिकित्सा और अध्यात्म'' हमने हंसाने के लिए दृष्टांत दिया, सज्जनों! हमने कहा आधुनिक औषधि के पैकिट पर औषधि की मृत्यु तिथि अंकित होती है। होती है या नहीं? इतने समय तक वह दवा दवा है उसके बाद विष है तो जिस औषधि की मृत्यु तिथि पहले से ही सुनिश्चित है उसी औषधि का सेवन करके कोई व्यक्ति मृत्यु से मुक्त होना चाहे यह सम्भव है क्या? सज्जनो? शत प्रति शत सम्भव नहीं है, हमने संकेत किया जब तक आत्मा की सच्चिदानंदरूपता का उद्‌गम नहीं होता, परमात्मा में चाहे सगुण हों, चाहे निर्पुण हों उनमें मानोवृत्तिमती नहीं, लगती तब तक जीवों के क्लेश का अन्त नहीं होता।

अभी तक गोरक्षा के सम्बन्ध में चर्चा हुई एक से एक बढ़िया बात आई। यहां के मंत्रीमहोदय ने भी बहुत ही दिव्य भावों को व्यक्त किया। परन्तु मैं कहना क्या चाहता हूँ? समस्या सुगम नहीं है समझ गये। भारत की धरती से भारतवर्ष से गोहत्या के काले कलंक को मिटाने के लिए आप तत्पर हैं- क्या? इस पर अब मैं अपना भाव थोडे ही समय में व्यक्त करता हूँ, सावधान! पहले मैं कह देना चाहता हूँ कि बिनोवाभावे जी, नाम तो लिया गया धर्म सम्राट स्वामीजी श्री करपात्री जी महाराज, जिनका मैं शिष्य हूँ, जिनसे विद्या-अध्ययन किया है, जिन्होंनं सब कुछ दिया है। उन्हें तिहाड़ जेल में रखा था। उन्नीस सौ छियासठ की बात। खूनी कैदियों को एक रात पहले छोड़ दिया इन्द्रिरा गांधी का शासन था केन्द्र में उन खूनी कैदियों ने भाले, बरछी, डण्डे लेकर जेल में महापुरुषों पर आक्रमण किया हमारे पूज्य गुरूदेव धर्म सम्राट् स्वामी करपात्री महाराज की आँख में सुई चुभोई गइ। अंग्रेजो का शासन नहीं था इन्दिरा गांधी का शासन था, कॉग्रेस का शासन था, और मैं कह देना चाहता हूँ उन्नीस सौ बियासी में उसी वेदना को सहते हुये हमारे पूज्य गुरूदेव धर्मसम्राट् स्वामी करपात्री जी महाराज ने पूजन करने के बाद बैठे-बैठे शरीर त्यागा। धर्म सम्राट् स्वामी करपात्री महाराज का उद्‌घोष था हमारे रामभद्र निरावरण चरणों से नंगे पाँव दण्डक वन में विचरण करते है क्यों? भूभार हरण करने के लिए। हम उनके उपासक कदाचित् हमारी आँखों में मानबिन्दुओं की रक्षा के लिए सुई भी चुभो दी जाय तो भी हम आह न करें उन्होंने आह नहीं करके दिखा दिया। लेकिन भारतीय शासकों ने अंग्रेजों ने नहीं मुसलमानों ने नहीं, भारतीय शासकों ने कॉंग्रेस शासन काल में उनकी आँख में सुई चुभोया था। सज्जनों! मैं उनका शिष्य हूँ हमारे पूर्वाचार्य जिनसे हमने पाँच वर्षों तक विद्या अध्ययन किया है। सुनाम धन्य श्री निरंजनदेव तीर्थ जी महाराज ने अनशन का व्रत लिया।

यह भारत वर्ष है आज तो हमारे श्री जयेन्द्र सरस्वती जी महाराज को हत्या के आरोप में अरेस्ट किया गया है। पूजन के समय और उनको उस क्षेत्र में ले जाया गया जहां उनके ऊपर मुर्गे के अंडे डाले गये अंडे यह भारतवर्ष में स्वतन्त्र भारतवर्ष में। बहत्तर दिनों तक महापुरूष ने अनशन किया था अनशन सज्जनों। इन्दिरा गांधी के शासन में उनको धोखा दिया गया। अनशन जगजीवन राम आदि के आग्रह पर तोड़ने के बाद गोरक्षा का मार्ग अवरुद्ध हो गया। विनोवा जी कराहते हुये चल बसे। इन्दिरा गांधी जी ने क्या संदेश दिया था। मुझे मालुम हैं। यो तो आप मुझे भतीजी सरीखी मानते रहे हैं। और हम आपको चाचा सरीखे मानते रहे है सावधान! जेल के शिकंजे में सड़के मरना हो तो गोरक्षा की बात कीजिये, इस देश में गोरक्षा नहीं हो सकती है। विनोवाभावे के साथ जो षड्यन्त्र रचा गया हम जानते हैं। लेकिन यह भारत वर्ष है। **सात नवम्बर उन्नीस सौ छियासठ** को पार्लियामेंट के सामने भारत की दो विभूतियां मंच पर नहीं थी बुरा मत मानिये मैं किसी पार्टी का अवधूत या पक्षधर नही हूँ इसलिए गरज कर बोलता हूँ मेरी वाणी

पर कोटि कोटि रुपयों का और एटमबम का कोई प्रभाव नहीं है इसलिए खुलकर बोलता हूँ। श्री विनोवा जी और श्री गोलवलकर जी महाराज अगर सात नवम्बर उन्नीस सौ छियासठ को उस मंच पर होते तो आठ सौ गोभक्तों को गोली के द्वारा भूनने का दुस्साहस इन्दिरा गांधी को नहीं होता। कामराज जो कि कांग्रेस के प्रेसीडेन्ट थे दिल्ली की पुलिस ने सन्तों पर गोभक्तों पर लाठी गोली चलाने के लिए मना किया था। दक्षिण से फौज मंगा करके पूरे भारत में, मुझे गुप्त घटना मालुम है या मैंने इनको बताया और किसी को आज तक नहीं मालुम है, समय आने पर मैं प्रकाशित करूंगा।

मुझे मालुम है क्योंकि बावन दिनों तक तिहाड़ जेल में उसमें मैं बंद रहा हूँ यही नहीं ये तो गुप्त मंत्रणा हुई वह किसी को नहीं मालुम है अब तक नहीं मालुम है अब तक मैंने किसी को नहीं बताया समय आने पर मैं उद्घाटित करूँगा। सज्जनो! एक संकेत करना चाहता हूँ निहत्थे गोभक्तों को पार्लियामेन्ट के सामने आठ सौ की संख्या में भून डाला गया केवल समाज के पास आठ शव प्राप्त हुये। हम ये संकेत करना चाहते हैं उस समय गोलवलकरजी और बिनोवा जी अगर मंच पर होते तो सम्भवत: सरकार ये दुस्साहस करने का प्रयास नहीं करती हिन्दुओं का स्वभाव क्या है अभी तो निम्बार्काचार्य जी पर आक्रमण है हम चुप रहें, ये जब समर्थ हो जायेंगे तब हम वाणी खोलेंगे। उस समय अगर गोलवलकरजी भी और बिनोवा जी भी सन्तों का साथ देते आचार्य सुशील कुमार जैन वहां पर थे प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी भी वहां पर थे, हमारे पूर्वाचार्य स्वनामधन्य निरंजन देव तीर्थ जी महाराज वहां पर थे हमारे गुरूदेव स्वामी करपात्री जी महाराज वहां पर थे और भयंकर आततायियों जैसा आक्रमण किया गया यह भारतवर्ष है, यह स्वतन्त्रता के बाद का इतिहास है।

अब हम संकेत करना चाहते हैं। मैं चालीस साल पहले भारत को छोड़ रहा था। ये एकान्त की बात है, नेपाल में चला जाउँगा, सच्ची बात है। नमक मिर्च मिलाकर मैं बोलना नहीं जानता, क्यों कि जिस देश में गोहत्या का काला कलंक है उस देश में मैं रहना नही चाहता लेकिन आवाज आई कि तुम भारत मत छोड़ो कल अगर नेपाल में भी गोहत्या होने लगेगी तो कहां भागोंगे? भारत में रहो और नेपाल में गोहत्या होती है मुझसे कोई बात छुपी नहीं है, मैं नेपाल भी जाता हूँ। रेगजी जी ये सब विश्व हिन्दू महासंघ के प्रेसीडेन्ट है सब मेरे बहुत परिचित हैं। हमें संकेत किया सज्जनो! आवाज आई कि भारत में रहो और गोहत्या के काले कलंक को मिटाने में व्यूह रचना करो। नेपाल जाने से मैं अपने को रोक सका आज हम संकेत करना चाहते है आप बुरा मत मानना। अभी एक मंत्री महोदय ने कहा भावुकता में कहा वस्तु स्थिति का सम्भवत: उनको ज्ञान नहीं था। गोहत्या करने वाले को फांसी की सजा मिल जाय तो गोहत्या करते कौन है? करवाते कौन है? इस पर ध्यान देना चाहिये। हम पन्द्रह वर्ष पहले से लगभग तेरह वर्षो से इस पद पर हूँ पन्द्रह वर्ष पहले जानकारी प्राप्त की।

पूरे भारत में गोहत्या के तेरह ऐजेन्ट थे। सुनिये गुप्त बातें उसमें बारह कौन थे। अहिंसा के पक्षधर जैन व्यापारी और गोमाता की जय बोलने वाले, ''गोविन्द जय जय'' कीर्तन करने वाले हिन्दू व्यापारी बारह तो हो गये कौन? सनतानी हिन्दू जैन मिलकर बा रह हो गये और बारहों ने मिलकर एक मुसलमान को खड़ा किया था। इसका मतलब गोहत्या में पन्द्रह वर्ष पहले भी पूरा का पूरा हाथ हिन्दुओं का और जैनों का था आप किसको फांसी की सजा देंगे? आपको पता नहीं है बहुत भावुक आप लोग है। आखों पर पट्टी डालकर आपके सामने बात रखी जाती है। किसको आप सजा देंगे फांसी की पार्लियामेन्ट में। मैं फिर कह देता हूँ, पुरी का शंकराचार्य बोल रहा हूँ, विधान का मर्मज्ञ बोल रहा हूँ मुझसे आँख मिलाने का साहस कोई दल न करना। पार्लियामेन्ट में आधे से अधिक सदस्य गोहत्यारे व्यापारियों के द्वारा भेजे गये हैं और वो हिन्दू व्यापारियों के द्वारा, जैन व्यापारियों के द्वारा ताकि भारत की भूमि पर गोरक्षा न हो सके आप क्या करियेगा कानून बनाइयेगा कानून बनाने वाले तो

पार्लियामेन्ट में बैठे हैं वो गोहत्यारों के एजेन्ट हैं आपको नहीं मालुम हैं, आप भावुक हैं। गोशाला में दो हजार अनुदान देने वाले दान देकर दानवीर कह लाने वाले दो लाख रूपये गाय को कटवाकर प्राप्त करते हैं। आप हिटलिस्ट बना सकते हैं ? गोहत्यारों का सजा की योजना बना सकते हैं। आपने गुमानमल लोढ़ा का नाम सुना होगा और सुनो भाजपाइयों, कांग्रेसियों सचमुच में आप गोरक्षक हैं आँखे खोल दूता हूँ पाँच सात मिनटों में भावुकता से काम नहीं चलता गोहत्या एक सामान्य नहीं है। गुमानमल जी लोढ़ा दो वर्ष पहले गाजियाबद दिल्ली के पास उत्तराप्रदेश में मेरे पास आये। उन्होने कहा कि मैं गुमानमल लोढ़ा हूँ मैंने कहा हाँ सतियों का उद्धार करने आप आये हो।

आप वही महानुभाव हैं न? जिन्होंने सतियों की महिमा की जाने पर दण्ड का निर्णय दिया था। अरे अंग्रेजों ने सतियों की महिमा गाकर अपनी कलम को पवित्र किया था आप वही न्यायाधीश हैं न? जिन्होंने सती की महिमा जो गायेगा वह दण्ड का पात्र होगा यह निर्णय दिया, सतियों की रक्षा अब आप करें चुके अब गोरक्षा के लिए आये हैं मेरे पास। हाँ बोलिये बात करने लग गये गुमानमल लोढ़ा जी मैने कहा मुझसे कोई बात छिपी नहीं है। शास्त्र हमारी दृष्टि है पूरे ब्रह्माडं में हमारी दृष्टि फैली हुई है। हमने गुमानमल लोढ़ा से कहा बंद कमरे में बैठे हो मेरे प्रश्न का उत्तर दो। आपके अनुनय विनय से आपकी पार्टी ने गोरक्षा के लिए जब प्रस्ताव लाया तब आपके सदस्य क्यों उपस्थित नहीं हुये? मेरे सामने झूठ नहीं बोल सकते उन्होंने कहा इसलिए नहीं हुये कि कहीं गोरक्षा का श्रेय कांग्रेस को न प्राप्त हो जाय। समझ गये, भाजपाई सांसद नहीं उपस्थित हुये, इसलिए प्रस्ताव डाउन हो गया। गोहत्या में किसका हाथ नहीं हैं।

इन्दिरागांधी का जब शासन था हमारे पूज्य जगद्गुरू जी की रक्षा के लिए मन्त्रणा होने लगी। हिन्दुओं के पक्षधर एक वर्ग ने कहा कांग्रेस को अगर गोरक्षा का श्रेय मिल जाता तो हमारी पार्टी का मुद्दा ही समाप्त हो जाता। यह है गोहत्या, दो ढंग से बंद हो सकती है या तो गाय की हत्या न हो या गाय न रहे, अरे गाय नहीं रहेगी तो कोई कहेगा गोहत्या बंद हो? अरे गाय है तब तो कहते हैं गोहत्या बंद हो। जिस योजना के ढंग से, जिस योजना पूर्वक भाजपा के शासनकाल में मैं कह रहा हूँ मुझे रोकर कहना पड़ता है किसी दल को मैं छोड़ता नहीं और किसी दल में सटता नहीं। आपको सच्चाई चाहिये गोरक्षा का मार्ग प्रशस्त करना चाहिये तो सत्य का ज्ञान आपको हो। यमुना जी में गाय का रक्त बहें, इसके लिए बूचड़खाने की स्वीकृति किसने दी थी? भाजपा ने। चाय में गोमांस का अंश किसने मिलवाया था, भाजपा ने। हम ये संकेत कर देना चाहते है गिनेचुने व्यक्ति ''ओब्जेक्शन'' अपवाद की बात छोड़ दीजिये आज गाय प्यारी नहीं है गाय के नाम पर शासन कौन करेगा?

आज रामप्यारे नहीं है राम के नाम पर शासन कौन करेगा, आज गरीबी उन्मूलन प्यारा नहीं है, गरीबी पालके रखोगे तो गरीबी उन्मूलन के नाम पर राज्य कर सकेंगे। अभी कहा गया बिजली करेन्ट हमारे लिए यह है, क्या है? बिजली करेन्ट। हमको शासन से गिरा दो। गिरा दिया कांग्रेस को भाजपा को ला दिया गया। अमुक पार्टी को ला दिया गया, फिर भाजपा ने क्या किया हिन्दुओं के लिए, कुछ किया क्या? समाज तो गिरा देता है बिजली का करेन्ट लगाकर पार्टी को उतार देता है सत्ता से, लेकिन जैसे नागनाथ वैसे सांपनाथ।

अब गोरक्षा की बात सीधी कीजिये आप गोशाला बनाइये आप गोहत्या करने के लिए बाध्य हैं खुलकर सुनियें सामान्य समस्या नहीं हैं। ये भावुकता की बात नहीं है। आपको कहते है स्वप्न में भी जो गोहत्या का समर्थन नहीं कर सकते उनको कहते हैं आप गोशाला बनाइये आप गोहत्या करने के लिए बाध्य होंगे आप कहेंगे ये क्या बात है हम सिद्ध कर देते हैं वृन्दावन में जाइये गोशाला है। एक गोशाला में कल्पना कीजिये एक हजार गायें है, तो कम से कम एक हजार गाय साल में कम से कम चालीस तो बछड़े देंगी, हर वर्ष चालीस सांड गोशाला को नहीं चाहिये, वो जो चालीस बछडे को जन्म देगी गाये, उन बछडों का क्या होगा? टैक्टर से

भारतवर्ष में खेती होना प्रारम्भ हो गया है। बैलगाड़ियों में उन बछड़ों का उपयोग नहीं होगा, बैल बनाके, हल जोतने में उनका उपयोग नहीं होगा। गोशाला के सामने समस्या होगी इतने सांड लेके क्या करेंगे। आँख मीच करके गोशाला गोहत्या के एजेन्टों से सम्पर्क स्थापित करके उनको कट्टीखाने में भेजेगा। आप गोरक्षा के लिए गोशाला बनाइये ये बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, उड़ीसा की बात नहीं है जितने विकसित प्रान्त हैं सब जगह टैक्टर के द्वारा खेती होती है टेक्टर से खेती करेंगे और गोवंश की रक्षा करेंगे।

एक उदाहरण देते हैं चाहे हम ही भारत के प्रधानमंत्री क्यो न हो जायं, आप ही क्यों न हो जांय, गोरक्षा का मार्ग अवरुद्ध है। जब तक डीजल, पैट्रोल की दासता भारत पाले हुए है, तब तक गोवंश की हत्या होती रहेगी कारण क्या है ? चीन का नाम आपने सुना होगा पड़ोसी राष्ट्र है पेचिंग उसकी राजधानी। पेचिं ग में व्यक्ति साइकिल से चलते हें और भारतवर्ष में कार रखना, डीजल वाला यन्त्र रखना व्यक्तित्व का प्रश्न है। कार, मोटर साइकिल, के बिना जिनका काम चल सकता है वे भी इसके बिना काम नहीं चला सकते। डीजल अैर पेट्रोल वाले वाहनों को व्यक्तित्व के साथ जोड़ देंगे और गोरक्षा भी चाहेंगे सम्भव नहीं है। हम चामुण्डा में दो अधिवेशन कर चुके है अब तीन चार मिनट में ही संकेत करते हैं। करना क्या है ? चामुण्डा में गांव के व्यक्ति इतने चतुर हो गये है पच्चीस नहीं तीन सौ गायों को लाकर चामुण्डा हिमाचल में छोड़ दिया। वह गायें उनके लिए उपयोगी नहीं है वह सब गायें लाठी खातीं है, और कट्टीखाने में जातीं हैं। बैलों को हल जोतने के बाद किसानों ने छोड़ दिया हम कहना चाहते हैं कल परसों एक बात कही गयी, हमको तो अन्दर अन्दर बहुत हंसी आती है, कानून सबसे बड़ा है, अरे कानून हो तो सबसे बड़ा है।

भारतीय संवधिान में सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के अनुसार, कई हाईकोर्ट के निर्णय के अनुसार, अमुक वर्ग की जीविका होने के कारण, अमुक आयु के बैल कट सकते हैं। अब ये भी तो कानून है, कानून सबसे ऊपर है लेकिन कानून हो तब तो, आज गोरक्षा के लिए आवाज लगाना भी अपराध है। ये कानून सबसे ऊपर है सुप्रीम कोर्ट के आधार पर भी वर्ग विशेष की जीविका है वो इसलिए बैलों को कटना अनिवार्य है यहां न्याय संगत गोहत्या है भारत वर्ष में जिस देश में हम जीवित रह रहे हैं। सज्जनो ! हम क्या कृषि-विज्ञान पर, पूरे खेती के विज्ञान को हम बदल पायेंगे ? ट्रेक्टर को तांक पर रखकर खेती कर पायेंगे ? गाय की उपयोगिता ऊंट ने, गाय की उपयोगिता किसने ? बकरी ने, गाय की उपयोगिता किसने ? जरसी गाय ने, गाय की उपयोगिता भैंस ने अपहरण कर ली। क्या इन सबको हटवा देंगे ? पूरे भारत के कृषि विज्ञान पर, पूरे विश्व के अर्थशास्त्र पर प्रभाव पडेगा गोरक्षा का। गोशाला के माध्यम से गोवंश के बीज की रक्षा तो अभी हम कर सकते हैं। लेकिन व्यावहारिक धरातल पर गोवंश की हत्या करने योग्य वातावरण भारत में नहीं है। कम्युनिस्ट चाहते हैं क्या कि गोरक्षा हो ? मुसलमान और क्रिश्चियनों के पक्षधर कोई भी दल क्यों न हो गुप्त मंत्रणा कर वह चाहता है क्या गोरक्षा हो ? अन्दर से। अरे एशियाई खेल में मुख्यमंत्री हमारे परिचित थे, एशियाई खेल में गोमांस कटवाकर के खुराना जी मिलते तो। यहां के राज्यपाल थे हमारे बहुत परिचित हैं हम कहते कि आपने खिलवाया था आप क्या गोवंश की रक्षा करेंगे ? गुप्त और प्रकट ढंग से हम कहना चाहें कि राजनेता का हाथ गोहत्या में नहीं है गिने चुने व्यक्ति हैं वह भावुक हैं वो समझते नहीं कि गोहत्या के भीषण स्रोत कहां तक हैं। पूरा मुस्लिम राष्ट्र चाहता है, कम्युनिस्ट राष्ट्र क्रिश्चियन राष्ट्र चाहता है, अभी एक उदाहरण देते है और प्रवचन को बंद करते हैं- सुनिये- हर माघ मेले में हम जाते हैं प्रयागराज। कानपुर की बात कहते हैं- अटलबिहारी वाजपेयी जी का शासन था केन्द्र में उसकी बात कहते हैं। उत्तर प्रदेश में भी भाजपा का ही शासन था दो साल पहले द्वारका के शंकराचार्य, ज्योतिष्मठके शंकराचार्य जी ने भावुकता में आकर घोषणा कर दी कि हम लोग चौबीस घण्टे अनशन करेंगे और हजारों शिविरों में कोई भी भोजन नहीं करें गे।

हमने कहा महाराज आपके व्यक्तित्व को देखते हुये मैं हाथ उठाता हूँ, आपने भावुकता में यह प्रतिज्ञा की है उन्होंने कहा क्यों? हमने कहा एक चुल्लू पानी नहीं छोड़ा जायेगा गंगाजल बात क्या है सुनिये- कानपुर में गायों को कटवाकर के रक्त जमा होता है एक कुण्ड में और हर माघ मेले के अवसर पर पर्व के अवसर पर उसे गंगाजी में डाला जाता है। और नहर का जल गंगाजी में डाला नहीं जाता प्रयाग तक पहुंचते पहुंचते गंगाजी में इतना ही पानी रहता है और रक्त की नदी दिखाई पड़ती है, वो क्यों है रक्त की नदी। इसलिए कि उसको हिन्दू पियेंगे, उसमें स्नान करेंगे, शंकराचार्य उसमें स्नान करेंगे जो भी यात्री आते हैं हर माघ मेले में अनशन हम लोगो ने चौबीस घण्टे तो किया पूजन पाठ मिलाकर लगभग उन्तीस घन्टे का अनशन हो गया। हमारे यहां चूल्हे नहीं जले लेकिन चुल्लूभर गंगाजल नहीं छोड़ा गया नहर से समझ सकते हैं। तो मतलब गाय का रक्त पिलाया जाता है आपको नहीं मालुम महाराज ही बतायेंगे कैप्सूल जो बनते हैं। हमारे उड़ीसा के प्रोफेसर ने रायपुर में छत्तीगढ़ की राजधानी में एक ऐसे कैप्सूल का आविष्कार किया है जिसमें गाय की चर्बी का अंश नही है भारतीय सरकार उसको स्वीकार नहीं करना चाहती है, उड़ीसा में।

यह अमुक की जीविका का प्रश्न है। कैप्सूल के ऊपर अगरबत्ती में सब जगह गोमांस का अंश है और सावधान अन्त में - जयदयाल डालमियां जी ने एक मुस्लिम वक्ता का वक्तव्य निकाल करके कृष्ण जन्म भूमि मथुरा में बंटवाया था, उस वक्तव्य का सारांश मैं दो तीन वाक्यों में कहता हूँ- हम मुसलमानों पर यकीन कीजिये कि सूअर में अधिक से अधिक चर्बी होने पर भी नापाक समझने के कारण हम किसी व्यापार में सूअर की चर्बी का उपयोग नहीं कर सकते लेकिन एक मुसलमान ने हिन्दुओं को चुनौती दी थी आप अपने दिशाहीन व्यपारियों पर विश्वास बिल्कुल मत कीजिये अमुक-अमुक, अमुक जगह चर्बी का उपयोग हुये बिना नहीं रहेगा गांधी आश्रम का जो साबुन बनता है मरे हुये पशुओं की चर्बी से बनता है।

इसका मतलब क्या है? खान-पान में गोमांस को पिरो दिया गया है। अब गोहत्या समस्या नहीं है चार छः समस्याओं का नाम लेकर समाधान केवल दो वाक्य में कह कर, मैं प्रवचन की विराम देता हूँ। इसके लिए तो बहुत गम्भीर गोष्ठी होनी चाहिये। कैसे व्यूह रचना करें, विदेशियों के अस्त्र-शस्त्र को, षडयन्त्र को कैसे फेल करें, विफल करें? सार्वजनिक सभा में माइक पर चिल्लाने से क्या होता है। सी आई डी विभाग, सरकारी - तन्त्र, देशी, विदेशी सब सावधान हो जाते है। हम लोगों के पास कोई व्यूह रचना है नहीं कि काम कर सकें हमारा काम और खराब हो जाता है यह सार्वजनिक सभा का अब विषय नहीं है। सार्वजनिक सभा में सामान्य बात की जानी चाहिये गोष्ठी की जानी चाहिये और हमने आपने मिलकर आप ही के स्थान पर कई गोष्ठी की हरिद्वार कुम्भ पर, क्या निकला फल कुछ निकला? कोई व्यूह रचना करने के लिए तैयार है। अब चार पाँच समस्या का नाम लेता हूँ। चाहे विदेशी कम्पनियों की दासता हो एक ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने नमक बनाने का अधिकार और बारूद तीन को पेटेन्ट करके भारत को गुलाम बना दिया।

अब छः सौ से अधिक विदेशी कम्पनियां भारत में किसके द्वारा लायीं गई? नरसिंहराव के शासनकाल से लेकर वाजपेयी जी के शासनकाल तक, और मनमोहन सिंह के शासनकाल तक विदेशी कम्पनियों से भारत को भर दिया गया है। चाहे विदेशी कम्पनियों के वर्चस्व की समस्या हो एक, चाहे निर्धनता की समस्या हो, चाहे सीमा की असुरक्षा रूप समस्या हो, चाहे गोवंश हत्या की समस्या हो, चाहे हिन्दुओं का छल बल डन्के की चोट से धर्मान्तरण की समस्या हो, समस्यायें हजार हैं। हल क्या हैं? समाधान क्या है? ओजस्वी हिन्दू युवक और युवतियां एक समाधान एक एक सविषय को लेंगे, मरते रहेंगे हमारे धर्म संघ ने हमारे धर्म गुरूओं ने कई अभियान किया व्यक्ति मरते गये, साथ छूटता गया एक साथ इन सब विषयों का समाधान क्या है? ओजस्वी हथेली पर प्राण लेने वाले स्वस्थ दिशायुक्त किसी भी

राजनीतिक दल एक कठपुतली न बनने वाले ओजस्वी हिन्दू युवक और युवतियों की आवश्यकता है। अभी हमने पंजाब में जाकर कहा- अकालतख्त की शोभा बढ़ाने वाले सिक्खो तुम्हारे गुरुओं ने दसों गुरुओं में नौ गुरुहिन्दू थे और दसवें गुरुगुरुगोविन्द सिंह ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए खालसापन्थ को बनाया तुम गोरक्षा के मार्ग में आगे क्यों नहीं आते? सिक्खों के नेता बोलने लग गये थे, उग्रवाद के समय में गोहत्या तो बकरी की हत्या के बराबर है। ये स्थिति पंजाब से आई थी गुरुओं की भूमि से आई थी। सज्जनों! हमने अभी ललकारा जाके पंजाब में एक सम्प्रदाय ये जो नामधारी सम्प्रदाय के आचार्य ने कहा कहलवाया हम गोरक्षा के लिए शंकराचार्य का साथ देने के लिए तैयार हैं। सिक्ख गोरक्षा के पक्षधर है अलग हो गये, जैन अलग हो गये, बौद्ध अलग हो गये, इन तीनों की दास्तां है, तीनों की लाचारी है। ये मुसलमान, क्रिश्चियन और कम्युनिस्टों की आज्ञा मानकर अन्दर ही अन्दर गोहत्या के पक्षधर बनें।

बुरा मत मानना हजारों सिक्ख मेरे प्रति आस्था रखते हैं। हिन्दू धर्म को छोड़कर अल्पसंख्यक बनकर शिक्षा लेने के लिए गये, तो मुसलमान बन जायेंगे, कम्युनिष्ट बन जायेंगे क्रिश्चियन, गुरुओं का मार्ग विकट है इतनी समस्याओं का समाधान एक बताया- स्वस्थ मार्ग। एक उदाहरण हम देते हैं केवल- अच्छा प्रमाण-पत्र देने वाले डाक्टर हिन्दू गाय-बैल बेचने वाले किसान हिन्दू और ये सरकार क्या करती है? लाइसेन्स केवल देती है व्यापार कौन करते है? हिन्दू-जैन व्यापारी। गोहत्या में सरकार का सीधे हाथ नहीं होता। पार्लियामेन्ट हिन्दुओं की, सुप्रीम कोर्ट- हाईकोर्ट है हिन्दुओं की, गोहत्या जो भारत में हो रही है शत प्रतिशत हाथ हिन्दू व्यापारियों की है, जैन व्यापारियों का है, आप किसको-किसको -किसको आप फांसी देंगे जी। हमने संकेत किया युवक और युवतियां आगे आयें। आर एस एस के पास सेना थी लेकिन दिशा न मिलने के कारण राम मन्दिर नहीं बन पाया। भाजपा से गठबन्धन होने के कारण आर एस एस की छवि खत्म हो गयी हम आलेचना नहीं करते सुदर्शन जी एक बच्चे के समान मेरे पास हाथ जोड़े बैठे रहते हैं कहते मेरी कोई सुनता नहीं है। आज फिर कह रहे हैं शकराचार्य जी, सुदर्शन जी ने। आश्विनशुक्ला द्वितिया के दिन पिछले वर्ष चंडीगढ़ में बंद कमरे में कहा शंकराचार्य जी आपकी हर बात से मैं सहमत हूँ, मेरी कोई सुनता नहीं सत्ता की भूख ने सबको दिशाहीन कर दिया है। आर एस एस की चेतना शक्ति लुप्त हो रही है ये सर संघ संचालक की बात है। हमने कहा हर हिन्दू परिवार एक रुपया निकाले, हर हिन्दू परिवार एक घंटा निकालें। उस रूपयें का समय का उपयोग वहां की सुरक्षा, सम्पन्नता, और सुसंस्कृति के लिए, उस क्षेत्र को सुरक्षित सुसंस्कृति समृद्ध बनाने के लिए हो कोई योजना है? एक योजना हमने हिन्दू समाज को दी, हर हिन्दू परिवार से एक रूपया निकले, बनवासी इत्यादि नहीं निकाल सकते है तो एक घंटे के बदले डेड़ घंटे सेवा करें। हर हिन्दू परिवार से एक रूपया रोज निकालने की स्थिति नहीं है तो डेड़ घंटे निकालिये अपनी समस्याओं के समाधान के लिए कटिबद्धता का परिचय दीजिये। पाठ्य पुस्तक में गाय की महिमा है नहीं हो सकती नहीं, और व्यापार में हिन्दू व्यापारियों को किसानों को भी दिशाहीन कर दिया तो ऐसी स्थिति में गोमूत्र आदि की महिमा गा करके गिने चुने गाय की रक्षा हो सकती है बीज की रक्षा हो सकती है भारत में गोहत्या के कलंक को मिटाना है एक करोड़ नहीं तो कम से कम एक लाख युवक युवतियां प्राणों को हथेली पर लेकर राष्ट्र की रक्षा के लिए आहुति देने के लिए तैयार हों मरने नहीं देंगे, मरने नहीं देंगे।

अन्तिम वाक्य इस सत्र का फिर दानापानी होगा तो आयेंगे। हमने भारत सरकार को कई बार कहा लेकिन मालुम है इन लोगों की नीति, अरे कारगिल युद्ध से पहले हमने सीमा की यात्रा की। भुवनेश्वर और पटना में हमने पत्रकारों के माध्यम से सरकार को कहा- अमुक जगह से अमुक ढंग से आक्रमण होने वाला है हमको पता चल गया। गोष्ठियों के द्वारा सरकार को पता नहीं चला और कारगिल युद्ध ठीक उसके आठवें महीने में

प्रारम्भ हो गया। अभी हम फिर जा रहे है सीमा की ओर यहीं नहीं बैठे रहते हैं। सीमा की ओर जाते हैं सब जगह जाते हैं हम संकेत करना चाहते हैं। पूरे भारत के चार पाँच विभाजन करने के लिए फाइल तैयार हो रही है। मुगलिस्तान, दलितिस्तान। ये सब फाइलें तैयार हो गयीं हैं। विदेशी षड्यन्त्रकारी भारत के चार पाँच विभाग और करने के लिए अन्दर ही अन्दर सब तत्पर हैं। भारत खोखला है इसलिए गोवंश की रक्षा हो सबको आपत्ति है। पूरी शिक्षा पद्धति, पूरा चुनाव तंत्र, पूरा भारतीय संविधान बदलना होगा इसके लिए कुछ करने के लिए तैयार हैं क्या? युद्धस्तर पर जागरण करने के लिए तैयार हैं क्या? प्रवचन सुनके शंकराचार्य पुरी बढ़िया बोले, निम्बार्काचार्य जी का क्या कहना, बहुत बढ़िया बोले, फिर कुछ करने के लिए तैयार हैं क्या? अरे हिन्दुओं मुझ से कोई बात छुपी नहीं, एक लाख में एक हिन्दु नहीं समाज के लिए समय निकाल रहा है। धन, मान, प्राण से चिपका हुआ है।

अन्त में कोई योजना होती है कांग्रेसी भाजपाई, कांग्रेसी भाजपाई, आस्तिक व्यक्ति दो खेमों में बंट जाते हैं यह पार्टियों भी हिन्दुओं को खा रही है। एक कांग्रेसी, भाजपाई, सभी समस्या का समाधान लीजिये न। अरे, पार्लियामेन्ट में कांग्रेस अभी शासन में है। प्रस्ताव लावे और भाजपा, शिवसेना, हिन्दू महासभा, आदि समर्थन कर दे राम जन्म भूमि देदे हिन्दुओं को मंदिर बनाने के लिए, गोहत्या पर प्रतिबंध लगाने के लिए कांग्रेस तैयार है क्या? कांग्रेस लावेगी तो भाजपा मुकर जावेगी, भाजपा लावेगी तो कांग्रेस मुकर जावेगी। मुझे अच्छी प्रकार मालुम है जब सीमा की सुरक्षा पर जब ये दो पार्टी एक नहीं हो पाती है तो गोहत्या को क्रिश्चियन, मुसलमान, कम्युनिस्ट को खुश करने का ये बहुत बड़ा सौदा है। और नेताओं के घर को भेदने के लिए बहुत बड़ा षड्यन्त्र है। हमने संकेत किया ऐसे काम नहीं चलेगा उस वर्ग की रक्षा नहीं होती जो संगठित नहीं होता जिसका कोई एक मार्ग दर्शक नहीं होता गोमाता की जय हो मैं भी कहता हूँ। वृंदावन में मेरे गुरुभाई हैं उन्होंने बुलाना मुझे बंद कर दिया सब जरसी गाय। मैंने कहा कम से कम 'गोविन्द जय जय' कहने वाले, बुलाना छोड़ दिया।

कांची मै गया बुरामत मानिये, श्रृंगेरी मै गया जरसी गाय हैं, जरसी गाय, आचार्यों के यहां भी जब देशी गाय का स्थान नहीं मिलेगा तो बोलिये गाय की रक्षा कैसे होगी? और वैसे बुरा मत मानना हमारे मठ में, उड़ीसा नस्ल की देशी गायें है पाँच सौ रूपये लीटर दूध हमको पड़ता है। गोमूत्र और गोबर का उपयोग तो उस ढंग से हम नहीं कर पाते, माने यंत्र आदि के द्वारा। पाँच सौ लीटर देशी गाय का दूध पड़ता है मतलब क्या है चालीस गायें है और इतना एक लीटर दूध मिलता है। एक हजार लीटर भी कह सकते हो कौन गाय को पालेगा परिस्थिति यहां तक हो गई है। इसलिए सज्जनों, गोरक्षा चाहिये अन्त में क्या कहें सात नवम्बर उन्नीस सौ छियासठ को पार्लियामेन्ट पर लाने वाले व्यक्ति आज भूल गये होंगे वो समझते है पुरी के शंकराचार्य है वो भूल गये होंगे, कि मेरे पास उन्होंने विदेशी के प्रंसग पर तीन घंटे परामर्श किया था उस समय मैं ब्रह्मचारी था, जो महात्मा इस मंच पर वह नहीं हैं। जो महात्मा क्रान्ति लाकर सात नवम्बर उन्नीस सौ छियासठ को दस लाख हिन्दुओं को दिल्ली में पहुंचने के लिए प्रेरित कर चुके इन्दिरा गांधी ने सबसे पहले उनको खरीदा था।

आज तक उनके तीन नाम बदल चुके है और गोरक्षा के नाम पर वे करोड़पति हो चुके हैं। गोरक्षा का जो नेतृत्व करेगा या तो मार डाला जायगा या सरकार के द्वारा फोड़ लिया जायेगा। एक व्यवसाय हो गया है गोरक्षा की बात भी एक व्यवसाय हो गई है वो जिस व्यक्ति ने तीन नाम अब तक अपना बदला है आज तक जेल नहीं गया। हमारे गुरुदेव को धोखा दिया। इस प्रकार से हम लोग सत्तावन दिनों तक तिहाड़ जेल में कष्ट पाते रहे वह बन्दा आज तक जेल नहीं गया है आज भी वह जब गोरक्षा पर प्रवचन करेगा तो आप मुग्ध हो जायेंगे उतनी बातें हमको याद नहीं हैं । ये विधान ये धारा लेकिन अन्त में सरकार का एजेन्ट है। ये जो हिन्दू है बिक जाते

हैं, राम जन्म भूमि के नाम पर बिक जाते है, परिस्थिति ये है बिकने का स्वभाव बंद कीजिये।

अब हिन्दुओं के लिए तीन मार्ग हैं। पहला मार्ग क्या है, धर्मान्तरण-कम्युनिस्ट, मुसलमान, क्रिश्चियन बन जाइये, कुछ दिन तक जीवित रहियेगा। दूसरा मार्ग क्या हैं मार्ग कहने में भी कष्ट है दूसरा मार्ग हिन्दुओं के लिए क्या है सज्जनो आत्महत्या कर लीजिये, तीसरा मार्ग क्या है- उन लोगों की गोली से सब हिन्दू हिटलिस्ट में हैं जो हिन्दू धर्म नहीं परिवर्तन करेगा वह सब हिटलिस्ट में है वह आक्रमणकारी मानव बम इत्यादि के द्वारा नाश को प्राप्त हो जाइये। ये भगना, मरना, एक मार्ग है अड़ना। अब अपने अस्तित्व और आदर्श की रक्षा के लिए कटिबद्ध हो जाइये। झांसी की रानी ब्राह्मण घर की थी। तेईस वर्ष की अवस्था में उसने वह जौहर दिखाया, माताओं को भी तैयार होना चाहिये। गोरक्षा का अभिमान करना है पाठ्य पुस्तक बनाइये गांव गांव में दीजिये, किसानों को समझाइये और गोशाला के द्वारा गाय, गोवंश के बीज की रक्षा कीजिये। पूरे गोवंश की रक्षा करनी है तो धन, मान, और प्राण का मोह छोड़कर हम लोग आगे बढ़े, गोरक्षा हो जायेगी। धन, मान, और प्राण का मोह छोडना पड़ेगा, धन मान और प्राण का मोह नही छोड़ेगे, शासन तन्त्र पलटेगे? जैसे नागनाथ वैसे सांपनाथ। पूरे भारत के शासन तंत्र को रसा तल में पहुंचाना पड़ेगा। स्वच्छ शासन तंत्र को जन्म देने के लिए सामान्य बलिदान की आवश्यकता नहीं है, सामान्य सूझ बूझ की आवश्यकता नहीं है। अन्त में कह दें - हम सात महीने में अमरीका को भारत के आगे घुटने टिकवा सकते हैं। हमने कहा था लो न नीति की शिक्षा सात महीने में अमरीका भारत के आगे घुटनें टेक सकता है लेकिन ये मंत्री लोग हम लोगों से राय ले सकते हैं?

शंकराचार्य को शंकराचार्य के रूप में, रामानुजाचार्य जी को रामानुजाचार्य के रूप में, बल्लभाचार्य जी को बल्लभाचार्य जी के रूप में, निम्बार्काचार्य जी को निम्बार्काचार्य जी के रूप में देखना कौन चाहता है जी। मालुम है आज जयेन्द्र सरस्वती की दुर्गती किसने की जो बार बार जाकर चरण पूजती थी। नेताओं पर विश्वास करिएगा अच्छे नेता भी हैं। तीन रूपये का नकली नोट क्यो नहीं है क्योंकि असली नोट नहीं है अच्छे नेता बोल रहे थे उनको धन्यवाद, साधुवाद, आशीर्वाद, लेकिन वह भी भक्त बनके जाती थी। इन्दिरा गांधी से बढ़कर बिनोवाभावे जी की भक्त कौन होगी? उस इन्दिरा गांधी ने कहा बाबा जेल के शिकंजे में मरवा डालूंगी क्या गोरक्षा की बात करता है। ये स्थिति है भारत की, सज्जनो ये सबकी पोलपट्टी सब दलों की हमें मालुम है। गोहत्या आज कांग्रेस और भाजपा के मान बिन्दु हैं। इसके नाम पर शासन कौन करे। राम जन्म भूमि कांग्रेस और भाजपा के मान बिन्दु पर हैं उस ठाकरे से मैं पूछना चाहता हूँ कि किस मुंह से आपने कहा कि राम जन्म भूमि पर स्मारक बन जाय और राममन्दिर न बने, ये हिन्दुओं के नेता हो सकते हैं। इसलिए सज्जनों गोरक्षा के लिए मुसलमानों के आगे , क्रिश्चियनों के आगे, कम्युनिस्टों के आगे न बिके और पूरे भारत में जो भक्ति के संस्कार डाले जाये, सामान्य काम नहीं हैं। आप डीजल का प्रयोग करेंगे अधिकतर मैं तो शंकराचार्य हूँ मेरे पास कोई कार नहीं है। आप डीजल और पेट्रोल वाले साधनों को अपनावेगे और गोरक्षा चाहेंगे इसलिए गोवंश के बीज की रक्षा का प्रयास तो चल सकता है गोरक्षा सम्पूर्ण करने के लिये क्या भारत का पूरा शासन तंत्र पलटने की शक्ति रखते हैं? अगर हां तो आइये अच्छी बात है हम आगे रहेंगे- आपके सीने पर गोली नहीं लगने देगें। लेकिन पूरे भारत का वैज्ञानिक, आर्थिक दृष्टिकोंण रक्षा प्रणाली भारत की कृषि विज्ञान सबको बदलना पड़ेगा, तब गोरक्षा का पूर्ण मार्ग प्रशस्त होगा। गोविन्द हमारे साथ हैं हमने आपका बहुत समय लिया अपना समय भी उदारता पूर्वक दिया ॐ।

हर हर महादेव, हर हर महादेव, हर हर महादेव।

श्री रामदयालजी महाराज :-

(राम स्नेही सम्प्रदाय) शाहपुरा- भीलवाड़ा

देश की सच्चाई के मंत्री पुण्य तोया जगन्नाथपुरी के पीठाधीश्वर पूज्य श्री शंकराचार्य जी महाराज को सुनने के बाद किसी की आवश्यकता नहीं रही। अरे कभी इस देश में नोट की बात होती है, कभी वोट की बात होती है, लेकिन समय की विचित्र स्थिति है कि आज पूरे देश में हमारे सन्त हृदय राष्ट्र धर्म पर चोट हो रही है ये बात दर्द का विषय है और यह कहते हुये- दिल के फफोले जल उठे, दिल ही के दर्द से। और घरको आग लग गई घर के चिराग से। क्या दिवाली मनायें क्या दीप जलायें। बहुत कुछ आपने श्रवणकर लिया और सूर्य के आगे किसी दीपक की आवश्यकता नहीं। लेकिन हमारे मंच संचालक महोदय संस्कृत के प्रखर वक्ता हैं संस्कृति के पुजारी हैं निम्बार्क भगवान के कृपा पात्र हैं। आज इस विराट् आयोजन के जन्मदाता राजस्थान की धरती के कण कण में धर्म का सम्बंन्ध परिपक्व कर देने को कृत संकल्प पूज्यपाद निम्बार्क पीठाधीश्वर 'श्रीजी' महाराज की सचमुच महानता है किन शब्दों में आपको साधुवाद किन शब्दों में आपके प्रति अपने भाव अभिव्यक्त किया जाय। आज जो कुछ भी हो रहा है। राष्ट्र का सत्य चित्रण आपके सामने आ रहा है इसका पूरा श्रेय श्री 'श्रीजी' महाराज को जाता है जिन्होंनें ऐसे धर्माचार्यो को आमन्त्रित करके और यहां की धरती को बताया कि शंकराचार्य जी का उद्घोष क्या हैं?

पूज्य के सत् संकल्प से हमारे राष्ट्र की काया बदलेगी और जो कुछ हमारे पुरी शंकराचार्य भगवान् ने संदेश दिया है आज तो वह प्रवचन नहीं हमारे हृदय का दर्द है। जो समाज को अन्न जल और रोटियां देते हैं उसके समक्ष सच्चीबात कह देना महापुरुषों का अपनां कर्तव्य ही नही धर्म संकल्प है। और उसका निर्वहन आचार्य श्री ने किया। जर्मन में आवश्यकता पड़ी शरीर रक्षण की हजारों युवा लोग सामने आ गये जी हमारी वॉडी को ले लो और उसका परीक्षण करके जर्मन का नाम होता है, तो हजारों हजारों युवा दिल खोलके सामने आ गये।

आज राष्ट्र रक्षा, आज मानवता, आज गोरक्षा के लिए कितने युवा सामने आये? मैं तो मानता इतना मर्म भरा और इतना शक्ति से ओत-प्रोत दर्द से भरे प्रवचन के बाद अगर कुछ लोग सामने आ जाते तो हम सोचते शायद आज यह सिद्ध हो जाता कि सत्ता से राष्ट्र नहीं, सत्य से राष्ट्र की उन्नति होगी और शैतान से नहीं संत से राष्ट्र को सच्चा सुख प्राप्त हो सकता है। 'साधु ते होइ न कारज हानि' हम वेद को मानते है वेद की नहीं। वेद ने तो आदर्श बहुत पहले से दिया, अकारण हमारे देश में यदि गोवध होता है तो उसे गोली मार दो। फाँसी की बात तो आज हुई है। वेद तो सनातन है हमारे महर्षि महापुरुषों ने बहुत पहले उद्घोष कर दिया पर दुर्भाग्य है हमारा। हम गंगा को मानते हैं किस उपलक्ष में मानते हैं? गोमाता को मानते है किस उपलक्ष में मानते हैं? गो हमारी माता है बैल हमारा बाप है धर्म की रक्षा करना हमारा पाप है ये बात हमने स्वीकार कर ली है आज। तैंतीस करोड़ देवता आज गोमाता में है। गो घी देना बंद करदे इसलिए कत्लखाने में पहुंचा देते हो? मनन करो, चिन्तन करो बहुत अच्छा लगता हैं आक्रोश की बात सुन लेना। लेकिन हम तो शिखण्डी है कोई असर कहां होपाता है। यह बहुत दर्द की बात है और हम शंकराचार्यजी भगवान् के दर्द के साथ अपने दर्द को सम्मिलित करते हैं और ये बहुत अच्छे, इसमें कोई सन्दहे की बात नहीं, कृषि ऋषि और संस्कृति जिस दिन बदल जायेगें पूरा राष्ट्र बदल जायेगा। आवश्यकता है इस पर गहरे मनन की और चिन्तन की।

चर्चा है भागवत के प्रसंग में अन्जान में गोवध हो गया। भुवन भषकर भगवान् की प्रथम चिन्हों के आलोक में रात के अन्धकार में किए गये अन्जान में जो पाप देखा, पीपल के पत्ते की तरह कॉप उठा। राजा भी गुरुदेव के सामने जा कर सत्य सत्य बयान कर दिया, लेकिन इस भारत की धरती के तय:पूतात्मा पुण्यश्लोक ऋषि अयोध्या के राजगुरुतपोंपुरुष वशिष्ठ जी ने कहा तुम राजा रहने के अधिकारी नहीं हो। जाओ - चाण्डाल बन जाओं राक्षस बन जाओं। तुम ने पाप जाने किया या अनजाने में किया है गोवध हुआ है मेरे देश के ऋषि को अनजाने में भी गोवध स्वीकार नहीं और आज उस गोपाल के राष्ट्र के लिए दर्द है पर समाधान आपके सामने है लेकिन इसे स्वीकार करना इतना सरल नहीं है फांसी के तख्तें पर अपने आपको लटकाना है। आज हम ऐसे महापुरुष के सानिध्य में निम्बार्क के पाँच हजार एक सौ वीं पावन जन्म जयन्ती महोत्सव पर ये जागरण हो रहा है यह कहते हुये गौरव की बात है कि मात्र पूरे विश्व में अगर कोई माता का देश है तो भारत राष्ट्र है। चाहे कोई देश के महापुरुष हो या कोई नेता हो या कोई बाहर से आने वाले हो जब भी हमारे यहां विशाल सभा होती है क्या जय बोलता है ? भारत माता की जय। अमरीका माता की जय तो नहीं बोलते ? चीन मां की जय तो नहीं बोलता ? मलेशिया माता की जय तो नहीं बोलता, क्यों कि माँ का राष्ट्रएक मात्र भारत राष्ट्र है और एक मात्र गो मां का बछड़ा ऐसा है जो पैदा होते ही कहता है मां। जन्म देनेवाली मां, ज्ञान देने वाले महात्मा और कृपा करने वाले परमात्मा, उसके बाद माँ के भक्त तैयार नहीं होते। क्या हो गया खून को ? जैसे सर्दी में थर्मामीटर जाम हो जाते हैं लहू गरम हो जाना चाहिये था लेकिन भावुकता की बात बहुत हुई अब गहराई से स्पर्श की है।

हम कई बार भावुकता से कहते है भावुकता से सुन लेते है, ये भावुकतावाद गम्भीरतावाद में बदलना बहुत जरूरी है। आज पूछतें हैं तुम मां के भक्तों गिन लेना जन्म देने वाली मां के भक्त कम मल-मूत्र सहन करने वाली धरती मां के भक्त कम, दूध देने वाली माता के भक्त कम, पावनता, निर्मलता प्रदान करने वाली गंगामाता के भक्त कितने ? क्या गंगा का उपयोग है ? श्रीजी महाराज ने मानों किसी से पूछ लिया, कहां रहते हो। बोले बनारस के किनारे गंगा पे, गाय कितनी हैं बोले चार बोले दूध कितना देती हैं बोले आठ किलो, बोले बाजार में कितना जाता है बोले बारह किलो बोले वो कैसे ? बोले वो सब गंगा मैया की कृपा है। क्या प्रयोग है गंगा का हमारे लिए कितनी कलुषित हो रही है कितना उसको दूषित किया जा रहा है कृषि की चिन्ता है गंगा की पावनता का कोई ख्याल नहीं। ये दर्द है। मेरा भारत महापुरुषों का होता, तो मल-मूत्र सहन करने वाली धरती मां के भक्त कितने हैं गिनलो, व्यक्ति कहता है हम मां के भक्त हैं - हमें कहना पड़ता है- जन्म देने वाली मां के नहीं, गो मां के नहीं, भारत मां के नही, वेद मां के नहीं, गंगा मां के नही, शारदा मां के नहीं, किसके हो ?

जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज :-

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च,
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।
श्रीमते सर्व विद्यानां प्रभवाय सु ब्रह्मणे,
आचार्याय मुनीन्द्राय निम्बार्काय नमो नमः॥

समुपस्थित धर्मप्राण महानुभाव अभी आप समस्त भगवज्जन आचार्य प्रवर गोवर्धन पीठाधीश्वर पुरी श्री शंकराचार्य जी महाराज स्वामी श्री निश्चलानंद जी सरस्वती महाराज जिनका पावन गोरक्षा के सन्दर्भ में उपदेश श्रवण कर रहे थे। जिन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी से जो अपने

दिव्य भाव यहां पर अभिव्यक्त किए आप समस्त भगवज्जनों ने बड़े ही समाहित चित्त से सावधान मनस्क होकर आपके उपदेशामृत का पान किया। इसी प्राकर हमारे राजस्थान के क्षेत्र में ही शाहपुरा जो मेवाड़ की भूमि है जिस मेवाड़ की भूमि पर हमारी संस्कृति की रक्षा के लिए, हमारी परम्परा की रक्षा के लिए, हमारी मर्यादा की रक्षा के लिए, अनादि वैदिक सनातन धर्म की रक्षा के लिए, गोमाता की रक्षा के लिए, महाराणा प्रताप ने अपने जीवन का उत्सर्ग किया। केवल एक महाराणा प्रताप नहीं यहां पर सोलह हजार वीरांगनाओं ने अपने मार्यादाओं की रक्षा के लिए, जिस प्रकार अपने जीवन को अग्नि के प्रति समर्पित किया ऐसा उदाहरण विश्व में नहीं मिल सकता।

उस पावन भूमि में उस मेवाड़ की पावन स्थली पर शाहपुरा नगरी में सुशोभित रामस्नेही सम्प्रदाय के पीठाधीश्वर स्वामी श्री रामदयाल जी महाराज यहां पर विराजित हैं जिन्होंने अपने दिव्य उद्बोधन से सभी को आप्लावित किया। आप सबों से पूर्व भारत साधु समाज के महामंत्री श्री हरिनारायणानन्द जी महाराज ने भी अपने पावन उद्बोधन से दिशा प्रदान की और हमारे राजस्थान के शिक्षा मंत्री ने अपने दिव्य भावों से जो वचन यहां पर अभिव्यक्त किए निश्चय ही वह हृदय में अवधारणींय हैं। हमारे मध्य-मध्य में मेवाड़ महामण्डलेश्वर श्रीमहन्तवर्य श्री मुरलीमनोहर शरण जी महाराज उदयपुर, उन्होंने मध्य-मध्य में अनेक ऐसे भाव अभिव्यक्त किए हैं जिनसें हमे पावन मार्गदर्शन मिला है। कितना सुन्दर यह पावन अवसर है जहां पर हमारे जीवन का क्या कर्त्तव्य है, क्या लक्ष्य है, हमारा धर्म का क्या स्वरूप है, गोमाता की महिमा, गोमाता का महत्व, गोमाता का रक्षण किस विधा से हो सकता है। ये जो कितनी मात्रा में गोहत्या हो रही है शास्त्र बतलाते हैं कि गोमाता का एक रक्त बिन्दु जिस भूमि पर निपतित होता है वहां पर अनन्त उत्पात और अनर्थ होते हैं। जहां पर गोमाताओं के रक्त की धारा प्रवाहित हो रही हो उस राष्ट्र की क्या अवस्था होगी आप चिन्तन करें।

उन्नीस सौ छियासठ में सात नवम्बर को जो घटना हुई उसी मंच पर समासीन हम भी थे। धर्म सम्राट् स्वामी करपात्री जी महाराज, ज्योतिष पीठाधीश्वर शंकराचार्य श्रीकृष्ण बोधाश्रम जी महाराज और गोर्वधन पीठधीश्वर स्वामी श्री निरंजन देवतीर्थ जी महाराज शंकराचार्य वे भी विरामान थे। श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी और विश्व के सबसे विख्यात मासिक पत्र 'कल्याण' के प्रधान सम्पादक भाई श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार भी वहीं विराजमान थे। और उस सभा का संचालन जैन मुनि सुशील कुमार जी और प्रेमचन्द्र गुप्ता कर रहे थे। वहां का सम्पूर्ण प्रसंग हम आँखों देखा दृश्य अभी वर्णन कर सकते हैं, सहज वैसा का वैसा ही पर समय नहीं है। हमारे साथ लगभग पाँच सौ सन्त, महात्मा और भगवद् भक्त उस समय जहां पन्द्रह लाख का विराट प्रदर्शन था संसद् भवन के सामने। हमारे अधिकारी वयोवृद्ध श्री वियोगीविश्वेश्वर जी ने जगद्गुरु शंकराचार्य श्री निरंजन देव तीर्थ जी महाराज से संकेत किया कि हम इनको आपको सौंप रहे हैं इनका ध्यान आपको रखना है। जहां से प्रारम्भ हुआ शोभायात्रा का क्रम उन्होंने हमारा हाथ पकड़ लिया और पूरे मार्ग में जब तक संसद भवन के सामने जहां विशाल मंच बना हुआ था वहां तक हमारे हाथ को उन्होंने छोड़ा नहीं। जब सीढियों पर चढ़ने लगे हैं जब अस्तव्यस्थता हुई तब हाथ छूटा। उसके पूर्व दिन रात्रि में गहन चिन्तन मनन हुआ और यह निर्णय हुआ कि इस मंच पर कितने, कौन कौन बैठेगें सत्तर या पिछेहत्तर व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था की गई थी किन्तु वहां पर इतनी व्यवस्था हो नहीं पाई

और मंच पर जहां पन्द्रह लाख जनता है और अभी हॉल वहां कार्यक्रम चल रहा है शोभायात्रा अभी आ ही रही है और सर्वप्रथम धर्म सम्राट्स्वामी करपात्री जी महाराज ने खड़े होकर जो उद्बोदन दिया।

श्री शंकराचार्य जी महाराज पुरी पीठाधीश्वर उन्होंने उद्बोधन किया। उसके बाद क्रमशः प्रसंग आ रहा था जगद्गुरुज्योतिषपीठाधीश्वर श्री शंकराचार्य जी महाराज कृष्णबोधाश्रमजी का और उसके अनन्तर हमें बोलने का अवसर मिल रहा था। मध्य में घटना विचित्र घटित हो गई। संसद् भवन से आ गये आर्य समाज के महानुभाव रामेश्वरानंद और ये आकरके मंच पर बोले कि हम संसद से आये है पहले हम कुछ बोलना चाहते हैं। प्रेमचन्द गुप्ता जी ने सुशील कुमार जी से संकेत किया कि इनकी भावना है बोलना चाहते हैं इनको पहले अवसर दिया जाय। वो बोलने लगे और उसी समय उन्होंने कहा कि संसद् में मैंने इस प्रसंग को प्रकट किया किन्तु मुझे संसद् भवन से झटका दे करके घसीट करके बाहर फेंका गया, इसलिए यहां प्रवचनों से काम नहीं चलेगा उठो चलो संसद् को घेरो। उत्तेजनात्मक भाव अभिव्यक्ति किये। इससे कुछ गोभक्त संसद भवन की ओर बढ़े और संग के संग वह केवल गये उस ओर, और उसी क्षण उन्होंने लाठीचार्ज और अश्रुगैस का प्रयोग और संग के संग गोलीकाण्ड आरम्भ कर दिया। मंच बहुत ऊंचा था लगभग दस फीट ऊंचा था उस मंच से हम जहां बैठे थे हमारे ठीक पीछे दो फीट की दूरी पर एक सन्यासी महात्मा थे, उन पर लाठियों की वर्षा हो रही थी। हमारे समीप पं. मुरलीधर जी शास्त्री ने हमारे हाथ पकड़ लिए दोनों हम लटक गये लटक करके फिर कूदे और संग महन्तवर्यपुरूषोत्तम दास जी ने ऐसा ही किया। हम दोनों वहां से चले जिनके साथ पाँच सौ व्यक्ति थे उनका किसी का कुछ पता नहीं लगा, एक संत बलरामदास जी थे हम तीनों वहां से चले तो निकट में ही निम्ब के वृक्ष थे और कुछ वहां पर भवन बन रहे थे उनके सामने खड़े हुये थे सामने गोलियां आ करके पड़ी। मंच पर जब अश्रुगैस का गोला आया सर्वप्रथम तो भाई जी हनुमान प्रसाद जी पोद्दार की पीठ को स्पर्श करता हुआ गिरा। और यद्यपि उस समय प्रकाशवीर शास्त्री ने अपने भाव प्रकट किए थे और कुछ क्षण के लिए कुछ स्वस्थता आई परन्तु वहां फिर इतनी अग्नि भड़क उठी कि जिसका वर्णन करना कठिन है। मंच पर आग भी लग गई। स्वामी करपात्री जी महाराज सामने से जब हम वहां से चले, जब गोलियां सामने आने लगीं हम लोग आगे बढ़े तो सामने से करपात्री जी महाराज पधार रहे थे। हम लोगों को चिन्ता थी स्वामी जी महाराज उनके दर्शन हुये, मार्ग में उन्होंने कहा कि जगद्गुरुशंकराचार्य श्रीकृष्ण बोधाश्रम जी महाराज कहां विराजमान थे उस अवस्था में । कुछ हम आगे बढें हमारे डीडवाना के एक राजस्थान के ही सुखदेव जी व्यास वो अकस्मात् मिले मार्ग में उन्होंने नमन किया और कहा बोले महाराज डीडवाना में पधरावनी करना चाहते हैं। हमने कहा प्रसंग क्या चल रहा है और आप पधरावनी की चर्चा कर रहे हैं। प्रसंग बहुत लम्बा है विस्तृत विवेचन नहीं करना है। वहां पर हमारे पण्डित मुरलीधरजी शास्त्री का उनका हमारा बिछुड़ना हो गया हमको अन्वेषण करने लगे और यहां तक जहां पर सैकड़ों गोभक्त बलिदान हो गये वहां उन शवों में जा करके हमारा उन्होंने अन्वेषण किया।

हम अन्सारी रोड़ गली नं तीन पर वहां इन्जीनियर विद्युत विभाग के जिन्होंने प्रथम सम्मेलन में यहां पर सम्पूर्ण विद्युत व्यवस्था की थी। श्री कुन्दन लाल जी भाटिया उनके घर पर खड़े हुये थे। जिस किसी प्रकार हम लोग दो तीन किलोमीटर पैदल चलके और एक

कोई वाहन प्राप्त हुआ उसके माध्यम से फिर हम पहुंचे। उस समय ये सोचा जा रहा था कि आज संसद् भवन के सामने इतना विशाल प्रदर्शन हो रहा है। भारत के इतिहास में इतना विराट् प्रदर्शन कभी हुआ नहीं विश्व के इतिहास में कह सकते हैं। कोई न कोई सुन्दर फलदायी परिणाम होगा। भंयकर जो भारत के भाल का ये गोहत्या का कलंक है ये प्रक्षालित होगा यही सभी लालसा लिए हुये थे। परन्तु जिनको हम लोकनायक कहते हैं हमारे शीर्षस्थ नेता कहते हैं जिनके प्रति कितने लोग आस्था रखते हैं उन महानुभावों ने कहीं भी ध्यान नहीं दिया। और भक्तों पर जिस प्रकार से अकल्पनीय भीषण अत्याचार किया वह वाणी द्वारा व्यक्त नहीं कर सकते। ये सम्पूर्ण सारे जितने प्रसंग हैं इन से हम सर्व प्रकारेण सुपरिचित हैं। और अपने कुछ भाव ये ''गो शतकम्'' जो ग्रन्थ अभी प्रस्तुत किया आप लोगों के सामने उसमें हमने अंकित किए हैं श्लोक में है संस्कृत में है। आरम्भ में अपने भाव भी हिन्दी में दिये हुये है। समस्या यह है इसका समाधान तभी सम्भव है जब एक मात्र भारत को आप हिन्दू अधिराज्य घोषित करें। नेपाल राष्ट्र एकमात्र हिन्दू राष्ट्र है और नेपाल में गोहत्या निरोध सर्वथा है वहां पर कोई भी किसी प्रकार का गोमाता पर ऐसा कोई हनन नहीं कर सकता है, करता है, तो वो दण्डित होता है। गुप्त रूप से भलें ही कोई कुछ करले परन्तु फिर भी वहां पर नियन्त्रण है। आज पूर्वान्ह में देखा नेपाल के यहां वरिष्ठ महानुभावों सभी आये सैकड़ो की संख्या में आये हुये हैं वहां के विद्वज्जन यहां आये हुये है मूर्घन्य, शीर्षस्थ, तो जैसा नेपाल में है इस प्रकार का दृढ़ कानून नहीं बनेगा तब तक यह प्रवचन प्रवचन तक रहेंगे, इन कार्यो का सम्पादन होना बहुत दुरूह है और फिर हम एक बात कह रहें है कि एकमात्र ये जो धर्मनिरपेक्ष की बात ले करके रहते हैं, यह घोषणा की गई कि हमारा राष्ट्र धर्म निरपेक्ष है।

धर्म निरपेक्ष का व्याकरण से क्या अर्थ होता है यह तो जो मनीषी जन है स्वयं ही विचार करें। अन्न निरपेक्ष वस्त्र निरपेक्ष, जिसकी आवश्यकता नहीं है हमें जिसकी अपेक्षा नहीं हैं, जिस धर्म की आवश्यकता नहीं है वहां सर्व, धर्म, समभाव ये जो व्याख्या की जाती है, यह व्याख्या सम्भव ही नहीं है। जहां धर्म की आवश्यकता नहीं उस राष्ट्र में धर्म के महान् प्रतीक गोमाता इसका रक्षण कैसे हो ? और ये तभी सम्भव है कि समस्त हमारे जितने धर्माचार्य प्रवर, सन्त महात्मा, वरिष्ठ विद्वज्जन और धर्म प्राण जनता एकमत हो करके और अपना एक ऐसा व्यवस्थित संगठन करके और राष्ट्र को एकमात्र हिन्दू राष्ट्र घोषित करने का प्रयास करें तो ये समस्या बहुत सरलता से इसका समाधान हो जायेगा सबसे बड़ा एक मात्र मार्ग हमें यही दिखाई पड़ता है, इसके अतिरिक्त हमें और कोई ऐसी, दृष्टि नहीं दिख रही है जिससे कि इसका समाधान सम्भव हो सके।

हम उन सर्वान्तरात्मा भगवान सर्वेश्वर श्याम सुन्दर श्री कृष्ण के चरणारविन्द में, उन राघवेन्द्र भगवान के चारणारविन्द में, उन श्रीमन्नारायण के चरणारविन्द में पुनः पुनः अभ्यर्थना करते हैं कि वे जिस अत्याचार को देखकर के पत्थर भी पिघलने लगता है, रोने लगता है, ऐसा भीषण जहां अत्याचार हो आप कृपा क्यों नही करते। फिर भी प्रभु पता नहीं हम सबकी परीक्षा ले रहे हैं वह अकारण करुणावरुणालय हैं, वह भक्तवत्सल है, दीन वत्सल है। जब हम व्रज का अनुसंधान करते हैं कोटि-कोटि धेनु वृन्द के पृष्ठभाग में संचरण, विहरण करते हुये मुरली का मधुर अपने अधरोष्ठों पर विराजित करके निनाद करते हुये जब आप पधारते हैं गोमाता की जो दिव्य पावनतम् धूलि

कण से जिनका कपोल, जिनका मुख चन्द्र कोटि कोटि चन्द्रमाओं के जैसे, ऐसा लगता है कि मानों कोटि कोटि चन्द्रमा जिनके मुखारविन्द पर आलोकित है ऐसा जिनका दामिनीद्युति विनिन्दित दिव्य पीताम्बर- जहां रज का स्पर्श कर रहा हैं बड़े बड़े योगीन्द्र मुनीद्र अमलात्मा महात्मा व पुरन्दर किन्नरादि वृन्दारक वृन्द निरन्तर जिनका ध्यान करते हैं वे अकारण करुणावरुणालय नवाम्बुदानीक मनोहर भगवान् सर्वेश्वर गोमाता की रक्षा के लिए बन बन निरावरण चरणारविन्द का विन्यास करते हुये ब्रज की धरा पर विहरण कर रहे हैं। प्रभु इसीलिए प्रकट होते है- 'नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मण हिताय च: जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नम:' ऐसे वे प्रभु कृपालु है और हमने इस ग्रन्थ में बार बार प्रार्थना प्रभु से की है कि हे भगवान् आप इस गोमाता पर दया क्यों नहीं करते? वर्षा का अभाव हो जाता है बिना तृण के गोमाता इतस्तत: बन प्रदेश में भटकती रहती है। गोभक्त जो गोपालकभी हैं वह भी गायों को छोड़ देते हैं।

हजारों लाखों की संख्या में वन वन में भटकती रहतीं है और उनका जीवन वैसे ही चला जाता है। इधर तो क्रूर कर्म प्रशासन के द्वारा हो रहा है और दूसरी ओर प्रभु भी ऐसी -अघट- घटना किस रूप में सम्पादित कर देते हैं। कौन सी परीक्षा का अवसर है क्यों नहीं प्रभु वो कृपा करते। जो निहतु क कृपाकादम्बिनी का अभिवर्षण करने वाले है क्यों नहीं कृपा करते हैं? हम समझते है। हमारे आचार्यप्रवरों से हम ये भावना रखते है कि हमारे यहां, जहां अनेक तंत्र ग्रन्थ हैं उन तंत्र ग्रन्थों में अनेक प्रभावोत्पादक ऐसे दिव्य प्रयोग हैं कि जिनके प्रयोग से, ऐसे प्रयोग किया है हमने स्वामी करपात्री जी महाराज से एकान्त में बैठ करके चर्चा की हमने उनसे कहा कि ऐसे कोई प्रयोग जिनसे इनके जितने भी बूचड़खाने हैं वह यंत्र संचालित ही नहीं हो सके।

वे चलें नहीं ऐसे मंत्रों का प्रयोग किया जाय, स्तब्ध हो जांय, उनके हाथ स्तब्ध हो जांय वे जड़वत की स्थिति में बन जांय ऐसा प्रयोग क्यों नहीं किया जाता? जब तक इस आध्यात्मिक शक्ति का प्रयोग नहीं होगा इन दुष्टों का निवारण होना बहुत कठिन है। इसलिए हमारे यहां सब प्रकार के साधन हैं। क्रम-दीपिका ग्रन्थ हमारे पूर्वाचार्य प्रवर जगद्गुरू श्री केशवकश्मीरी भट्टाचार्य जी द्वारा प्रणीत है। उसमें अनेक प्रयोग गोपाल मंत्र राज के द्वारा है वे सब कार्य में सम्पादित हो सकते हैं।

जिस समय मथुरापुरी में विश्राम घाट के पास में एक यवन काजी के द्वारा यंत्र टांग दिया गया था जिसके नीचे होकर जो भी हिन्दू जाता वो यवन के रूप में परिणत हो जाता । समस्तब्रजवासियों ने जा करके आचार्य प्रवर से निवेदन किया, अपने ही पूर्वाचार्य प्रवर श्री केशवकाश्मीरी भटटाचार्य जी महाराज से जो अचार्य प्रवर यहां आचार्य पीठ आ करके स्थापना की उनसे पूर्व श्री हरिव्यास देवाचार्य जी महाराज, और उनसे पूर्व श्री श्री भट्टदेवाचार्य जी महाराज और भी उनके गुरूवर्य श्रीजगद्विजयी श्री केशवकाश्मीरी भट्टाचार्य जी महाराज उनसे निवेदन किया उन्होंने कहां कोई चिन्ता मतकरो और एक ऐसा यंत्र प्रदान किया और कहां वहीं जाकर स्थापित किया। पहले जो यंत्र स्थापित किया हुआ था जिन काजी के द्वारा वह हतप्रह हो गया, वह शक्तिहीन हो गया था। इसका यह प्रभाव बना कि जो भी यवन जाति थे उन्हें हिन्दुत्व धारण करके आना पड़ता था। उनकी शिखा प्रकट हो

जाती थी हम तो कहते ऐसे हमारे शास्त्रों में धर्म गन्थों में उनके शिखा प्रकट तंत्र ग्रन्थों में बहुत सुन्दर यह मार्ग है, और जब तक इन मार्गो का हम अविलम्ब नहीं लेंगे- शठे शाठ्यंसमाचरेत् शठ के प्रतिशठ ही बनना पड़ता है इस नीति का जब तक अवलम्ब नहीं लेंगे तब तक समाधान बहुत कठिन है। हमारे जगद्गुरू शंकराचार्य जी महाराज ने जो पावन विचार प्रकट किए, श्री रामस्नेही सम्प्रदायाचार्य प्रवर ने जो अपने भाव प्रकट किए इन भावों को आप हृदय में धारण करके और अपने हृदय में प्रतिज्ञाबद्ध हो जाये कि किसी भी विधा से, हमारी संस्कृति की रक्षा के लिए, अनादि वैदिक सनातन धर्म की रक्षा के लिए हमारे देवस्थानों की रक्षा के लिए हमारी गो माता वेदादि शास्त्र रक्षा के लिए हमारे धर्म ग्रन्थों की रक्षा के लिए, हम समग्र विधा आज यहां पर बैठ करके अपने हृदय में यह एक संकल्प लें कि किसी भी विधासे हम धर्म सुधार मानव मात्र की रक्षा करेंगे केवल घर जाकरके अपने कार्यो में ही व्यस्त न हो जांय, इस भाव को भूलें नहीं और हृदय में समाधान धारण करके हम और आप प्रवृत्त हो। यह कोई कठिन कार्य नहीं है जो इसका न हो सके। इन्हीं वचनों के साथ हम अपने भावों को विराम देते हैं।

❒❒❒

षड्दर्शन सम्मेलन

महामण्डलेश्वर श्री अवधेशानंद जी महाराज जुनापीठाधीश्वर, अम्बाला (पंजाब)

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्नू आ सुव॥

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ओउम्॥

प्रभु कृपा से वीर प्रसूता यह राजस्थान की भूमि जो अन्नत सत्पुरुषों, रण बांकुरो और आचार्यों की भूमि है। ऐसी इस पावन राजस्थान की भूमि में इस आध्यात्मिक नगर सलेमाबाद में परम वन्दनीय और एक ऐसे पुरुष जो आदर्श पुरूष हैं ऐसे वन्दनीय आचार्य श्री निम्बार्काचार्य श्री श्रीजीमहाराज के सानिध्य में इस ऐतिहासिक अवसर पर मैं बहुत ही आनन्दित हूँ, यह मेरा सद्भाग्य है। मैं यहां दर्शन कर रहा हूँ परम पूज्य गुरुतुल्य हमारे अत्यन्त आदरणीयकार्ष्णि पीठाधीश्वर पूज्य स्वामी गुरुशरणानंद जी महाराज का मैं दर्शन कर रहा हूँ हम सब के हित में निरन्तर जिनका चिन्तन हैं पौरस्त्य-पश्चात्य दोनों परम्पराओं का जिनके पास बोध है। विचार जिनके दर्शन प्रायः दुर्लभ हैं और इस मंच के कुशल संचालक आदरणीय महन्त मुरली महनोहर शरण जी महाराज, आचार्य वृंद ये सन्त मण्डली और मेरे ठीक सामने बैठे आप सभी प्रभु प्रेमी और यहां के कार्यकर्ता बन्धु भाइयों।

कुछ जीवन में पल ऐसे होते हैं जब व्यक्ति, धन्यता अनुभव करता है और अपने आपको सहज अनुभव करता है। जीवन कृतकृत्य हुआ,सार्थक हुआ, फलीभूत करता है और अपने आपको सहज अनुभव करता है जीवन मेंकुछ ऐसे पलें आते हैं जब ऐसा लगता है कि अब उसके पास कोई अभाव नहीं है बिना किसी सम्पन्नता और समृद्धि के वह अपने को परिपूर्ण अनुभव करता है, सहज अनुभव करता है, जब हम किसी संत सत्पुरुष के सानिध्य में बैठे जिनके दर्शन से पुण्य, शांति, समाधान और आनन्द बोध हो हम ऐसे संतों के सानिध्य में बैठे हैं जो सम्पूर्ण सिद्धियों के प्रदाता हैं , जिनके सान्निध्य से जिनके नैकट्स से सब प्रकार की सिद्धियां मिल जांय, उनके दर्शन से सब प्रकार कृपणता का नाश हो जाय, जीवन में भ्रम भय न रहे और किसी प्रकार का अभाव न रहे कुछ ऐसे पल हैं। आज जब आप भारत की दो दिव्य विभूतियों के सानिध्य में है। और कोई मुझसे पूछे कि सब से बड़ी विभूति क्या हो सकती है क्या स्मरण हो सकता है, क्या चमत्कार हो सकता है तो मुझे लगता है कि संत के सानिध्य में, उनके संसर्ग में रहना ही एक बड़ी विभूति है इससे बड़ी विभूति क्या होगी ?।

भगवान् शंकराचार्य कहते हैं! यह बहुत दुर्लभ है कि ऐसे सत्पुरुष का संग मिल जाय जो पूर्ण हैं समर्थ है। इसलिए बड़ा दुर्लभ है। शन्तिकारक, आनन्दकारक, प्रेमकारक, जो क्षण है वो संत के सन्निध्य से मिलता है इसे अमोघ बताया है, दुर्लभ है। अभी अभी मंच पर हमारे भारत साधु समाज के अध्यक्ष और हमारे अत्यंत आदरणीय और गुरु तुल्य हमारे पूज्य स्वामी मंगलानंद जी महाराज का पदार्पण हुआ जो सहज मना हैं, सरल मना हैं। बहुत वर्षों पहले मैंने कहीं पढ़ा था कि नूतन

बालवत् स्वभाव रखो, जिनके पास ऐसा स्वभाव है नूतन बालवत्, जो सहज हैं आनन्दमय है, जैसा मैं अभी बता रहा था कि यह पल बड़े आनन्द का है, ऐतिहासिक है। भगवान् शंकराचार्य कहते हैं मनुष्य होना, मुमुक्षु होना, बड़ा दुर्लभ है, और उससे भी कहीं दुर्लभ है महात्माओं की संगति, ''सगुण दर्शनं लोके सर्व सिद्धि करं परम'' श्रीमद्भागवत कहती है कि इनके दर्शन मात्र से सिद्धि और समाधान के द्वार खुल जाये और आप उन सारी युक्तियों को प्राप्त करलें, सहज में वह सारी प्रणालियां, वह सब पद्धतियां, वह सारी प्रक्रियायें, आपके अनुगत हो जायेंगी जिनसे आपको समाधान मिल सकता है और जिस व्यक्ति के पास समाधान नहीं है, वह व्यक्ति स्वयं में समस्या है, जिसके पास दुविधायें है, भ्रम है, भय है, जिसके पास कोई समाधान नहीं है इसका अर्थ है वह समस्या है। तो अगर हम अपनी समस्याओं का समाधान नहीं कर पायें और निरन्तर समस्या ग्रसित हैं, समस्याओं के आसपास है दुविधाओं के आसपास हैं, हम भ्रमित है, शंकित हैं और हमारे पास भय है तो इसका अर्थ यह है कि अभी यहां एक अधूरापन हैं और संत हमारे अधूरेपन को छीन लेते हैं। संत हमारे अभाव को छीन लेते हैं, तो जो हमें निश्चिन्तता दे दें, निर्भयता, निर्द्वन्द्रता दे दें, निंधारता दे दें, वो संत का दर्शन है और एक साथ अनेकों संतों के दर्शन, उनका सान्निध्य उनका नैकट्य, उनका संसर्ग, उनका वाणी लाभ, उनका चिन्तन लाभ, यह आपको मिल रहे है बहुत ही अच्छा दिन है।

दर्शन पर आज चर्चा हो रही है। दर्शन पर चर्चा और विषद चर्चा, मुझे तो एक बात याद आती है कि भारत के हर व्यक्ति की यही कामना है कि ''यमुना का तट हो, वंशी वट हो, सांवरा निकट हो, जब प्राण तन से निकलें इससे बड़ा दर्शन और क्या हो सकता है। भारत के व्यक्ति की कामना है कि हमें भगवद् दर्शन हो, भगवतृप्राप्ति। और जितने भी दर्शन हैं वह यही बात कहते हैं कि हमें वह मिल जाय कि अधुरापन न रहे। जीवन में वह दर्शन ''अथातो ब्रह्म जिज्ञासा'' से आरम्भ होता हो या वह अंत काल में भगवान् के दर्शन की अपेक्षा रखने वाला दर्शन हो, लेकिन सच यही है कि यहां व्यक्ति अपने अभावा से मुक्त होना चाहता है और यह भारत के पास विद्या है।

भारत यह कहता है भारत की विद्या एक ऐसी है कि अगर उसे देखना है, सुनना है, चखना है, तो वह कल्याणकारी हो आपका सुनना, देखना, चखना, छूना, सूंघना, सब मांगलिक हो। आपके आस पास एक भद्रता हो आप भद्रता का संचय करें, ज्ञान का संचय करें, शिष्टता के संग्रही बनें और जो अभद्र हैं या जो ठीक नहीं जो अमांगलिक हो। आपके आस पास एक ऐसी ग्रहिता हो कि जो श्रेष्ठ है उसको ग्रहण करो। मुझे कबीर की बात याद आती है कि सूप जैसा चिन्तन हो, 'साधु ऐसा चाहिये जैसा सूप सुभाय' सूप में जो त्याज्य है, यह है निन्दनीय है, अग्राह्य है, अमान्य है अशुचि हैं, उसे त्यागने की सामर्थ्य हो। सूप में जो कंकड, पत्थर हैं वह बाहर आ जाते है सूप चलनी में एक बात तो हैं, चलनी हेय है उसे रख लेती है व्यर्थ है, जो त्याज्य है, जो त्यागने के योग्य है, उसे तो रख लेती है, और सार-सार को निकाल देती है क्योंकि उसमें बहुत से छेद है। चिन्तन में यदि ऐसा है, छिद्रान्वेषण हमें करना आता है तुलसी बाबा की एक चौपाई इस अर्थ मुझे बहुत अच्छी लगती है ''मोहि कपट छल छिद्र न भावा'' उन्हें वह प्रिय है जिसमे कपट और छल नहीं लेकिन छिद्र क्या है ? छिद्रान्वेषण करना, छिद्रान्वेषण कि वो सही नहीं है, निरन्तर निन्दनीय चिन्तन रखना, निरन्तर दोष निकालते रहना कि यह ठीक नहीं है, ऐसा ठीक नहीं है, तो ये छिद्रान्वेषण है निरन्तर आपमें छिद्र है, एक बार मुझे एक व्यक्ति मिल गये और वह बहुत बड़े साहित्यकार थे,

बहुत बड़े आलोचक इस देश के। आलोचना एक विद्या है साहित्य की आलोचना एक विधा। तो मुझे बहुत अच्छा लगा मैंने पूछा उनसे कि आप तो देश के एक प्रसिद्ध आलोचक है, तो बोले महाराज अब आलोचना कहां रह गई है, अब स्वस्थ आलोचना तो रह नहीं गई तो आलोचना के नाम पर अब आलू उलीचना रह गया है छिलके छिलके पास रख लेता हैं आदमी आलू फेंक दें, आलू-आलू रख लें और आज नाम पर आलोचना के छिलका तो पास रह गया है और आलू फेंक दिया जाता है छिद्रान्वेषण जो अच्छा है उसे रख सकें। जो हेय है, निन्दनीय है, त्याज्य है, उसे अमान्य कर सकें, जो अग्राह्यी है, उसे न ग्रहण कर सकें ऐसी शक्ति, ऐसी सामर्थ्य, संतो से प्राप्त होती है। बहुत ही आनन्द दायक क्षण हैं।

अभी पिछलें दिनों मैं परदेश में था और वहां कोई बहुत ही पढ़े लिखे व्यक्ति मुझसे कहने लगे कि पाप और पुण्य की परिभाषा दीजिये। मैंने उनसे कहा कि, जिसके प्रकाशन से भय और गोपनीयता से ग्लानि हो उसको मैं पाप मानता हूँ। ''परोपकार पुण्याय पापाय परपीडनम्'' मैं उसकी और कोई व्याख्या नहीं देना चाह रहा था, पाप पुण्य की हमारे शास्त्र में बड़ी व्याख्या है। परोपकार पुण्याय शास्त्र कहते है कि परोपकार ही पुण्य है, पापाय पर पीड़नम् ''पर हित धर्म सरिस नहीं भाई, परपीड़ा सम नही अधमाई'' मैने उससे कहा जिसकी गोपनीयता से ग्लानि हो और प्रकाशन से भय लगे यही पाप है। इससे बड़ा और दर्शन क्या हो सकता है। तो शास्त्र यह कहता है कुछ भी ऐसा न करों कि जिससे कोई पीड़ित आहत हो, दु:खित हो, व्यथित हो, अशांत हो, मर्मान्त हो, उसे विवेक मिले, खिन्नता मिटे शुद्धता मिले इससे बड़ा दर्शन क्या हो सकता है। लेकिन वह बड़े दार्शनिक थे ऐसा मान रहे थे, वैसे ढ़ाई तीन सौ पुस्तकें लिखीं है उन्होंने न्यूयार्क में अभी कुछ दिन पहले मुझे एक व्यक्ति मिला कि कुछ पाप की व्याख्या करके बताइये मैंने कहा भारत में पाप की व्याख्या यही है कि दूसरों को पीड़ित न करें, भयभीत न करें, आतंकित न करें, व्यथित न करें, उनकी वैयक्तिक और स्वतन्त्रता बाधित न करें, उनके सम्मान और स्वाभिमान को न छीनें, व्यक्ति परदेश का था-यूरोपियन मूल का कहीं दक्ष था वह हॉलेण्ड का रहने वाला, अमेरिका में जाकर ढ़ाई तीन सौ पुस्तकें उन्होंने दर्शन पर लिखीं, मुझसे कहने लगे महाराज मैं तो पाप की व्याख्या आपसे पूछना चाहता हूँ पाप क्या है? मैंने कहा इससे बड़ा कोई पाप नहीं हो सकता कि आप किसी की स्वायत्तता और स्वतन्त्रता भंग करे, किसी की स्वायत्तता छीने किसी की स्वतन्त्रता छीनें किसी के स्वाभिमान को बाधित कर दें किसी के आनन्द को छींने, किसी के वैयक्तिकता को लूट लें इससे और बड़ा पाप क्या हो सकता है और जिसके प्रकाशन से भय लगे। मेरा शास्त्र यह कहता है मेरे भारत के ऋषि यह कहते हैं कि जिसके प्रकाशन से भय और गोपनीयता से ग्लानि कुछ भी ऐसा न करों कि ऐसा प्रकाशित हो जाने के बाद, ये उद्घाटित हो गया यह उजागर हो जाने के बाद, हम लांछित होंगे, कलंकित होंगे क्योंकि धूल धूसारे हो जायगी, तो जिसके प्रकाशन से आपको भय लग रहा है।

इस तरह कहीं आपने पाप किया जिसके प्रकाशन से आपको भय लगे कि ऐसा उजागर हो जाने के बाद, यह प्रकट हो जाने के बाद हमारी कीर्ति चली जायेगी तो भारत के ऋषियों का चिन्तन विराट् है उन्होंने अलग अलग प्रकार से जीवन जीने की विद्या दी है और किसी भी विधा से हम उसे प्राप्त कर सकते हैं यही तो स्वातन्त्र्य हमारे पास है, यही तो स्वायत्तता हमारे पास है। यहां उपासन के ढंग अलग अलग है और किसी भी ढंग से उसे प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए वैचारिक स्वायत्तता, वैचारिक स्वतन्त्रता अगर कहीं है वह यहां है

अलग अलग भाव है, अलग अलग प्रकार की पद्धतियां है, अलग अलग ढंग है पूजा के और उनको उस ढंग से पाया जा सकता है। इसलिए पूजा की स्वायत्तता यदि कहीं है तो यहां है। इतनी मान्यतायें है लेकिन अपने अपने ढंग से कैसे उसे प्राप्त करें। प्रिय बन्धु, भगिनी आज का दिन तो बहुत ही आनन्दकारी हैं। मैं अपनी बात यहां से आरम्भ कर रहा था कि ये पल, उच्चता से भरे पल हैं, भिन्नता से भरे पल है, जीवन में कोई ऐसी बात याद आये आपको कि जिसके स्मरण से आप लज्जित हों, भयभीत हों तो इसका अर्थ है कि पाप आपने किया होगा, अेर जीवन में कुछ ऐसा याद आये कि जिसके स्मरण से आप आनन्दित हों, आह्लादित हों, सहज हो जांय, शांत हो जांय,विखरा और बंटा हुआ चित्त आपका एकीकृत हो जाये तो इसका अर्थ कि कुछ पुण्य किया होगा आपने। ओर मुझे लगता है कि संत दर्शन से बड़ा पुण्य और कोई हो नहीं सकता, मुझे लगता है कि इससे बड़ा और पुण्य क्या होगा,इससे बड़ा लाभ क्या हेगा, इससे बड़ा यज्ञ, जप-तप क्या होगा, इससे बड़ी अर्चना आराधना, साधना क्या होगी, इससे बड़ी कोई और उपासना क्या होगी कि आपको निर्मल संतों के दर्शन मिल जांय, ऐसे संतों के जिनके अन्त:करण में कहीं राग द्वेषनहीं है, ऐसे संतों के जिन्होंने अपने समूचे क्लेश भंजन कर लिए हैं, जो अज्ञान और अविद्या से मुक्त हैं, जो नित्य जाग्रत हैं, सचेत हैं, ऐसे संत जिन्हें उपलब्ध हैं, आपको उपलब्ध हैं ऐस संत जो जाग्रत हैं, ऐसे संत जों भगवदीय सत्ता से ओत-प्रोत हैं, ऐसे ऐसे महापुरुषों के हम पास बैठें है बहुत ही आनन्द का विषय है और बहुत ही आनन्दकारी क्षण है।

पूज्य महाराज श्री से दूरभाष पर बात हुई थी और मैं निम्बार्क स्थली के, इस तप: स्थली के दर्शन का लोभ संवण नहीं कर पाया और मुझे लगा कि चलना चाहिये, बहुत ही कम समय था, भोर की फ्लाइट से आया हूँ फिर से लौट कर दिल्ली जाना है और आचार्य श्री को प्रणाम करना चाहुंगा मंच पर अनेकों ऐसे संत बैठे हैं जो मेरे अत्यन्त आदरणीय हैं हमारे गुरु तुल्य है, गुरू मूर्ति हैं मैं तो चकित रह गया पूज्य गुरुशरणानंद जी महाराज के दर्शन करके पूज्य मंगलानंदजी महाराज के दर्शन करके पूज्य हरिनारायणानंद जी महाराज के दर्शन करके, ये सब मेरी दृष्टि में उस पंक्ति के संत है जिनके लिए मेरे अन्त:करण में निरन्तर वन्दना हैं, प्रणाम है और जो हमारे आदर्श भी हैं।

मैं पुन: इन सब संतो के चरणों में प्रणाम करते हुये अपने शब्दों को विराम देता हूँ यह कह कर कि सबसे बड़ा सुख संतो के दर्शन में है, और जो उनकी संगति में उनके सानिध्य में उनके संसर्ग में आ जाता है उसे सब कुछ प्राप्त हो जाता है इन्हीं शब्दों के साथ आपके हृदय मे बैठे भगवान नारायण को प्रणाम! ओउम् शान्ति: शान्ति: शान्ति: !

श्री विश्वनाथ जी शास्त्री

(न्याय दर्शन) बीकानेर

मुझे विषय दिया गया न्याय दर्शन पर बोलने के लिए। दर्शन शास्त्र की उत्पत्ति व्युत्पत्ति या आवश्यकता इसलिए हुई कि यह संसार दु:ख से ओत-प्रोत है, आप्लावित हैं। आध्यात्मिक, आदि भौतिक, आदि दैविक इन तीन दु:खों से सारा मानव अक्रान्त है। दु:खों से मुक्ति कैसे हो और सुख की उपलब्धि कैसे हो ये हमारे चिनतन का विषय रहा है? अनादिकाल से रहा है। हमारे भारतीय चिन्तक मनीषियों ने तत्ववेत्ताओं ने चिन्तन किया। दु:ख की आत्यान्तिक निवृत्ति, दु:ख हमेशा के लिए मिट जाय, और सुख की नितान्त उपलब्धि सुख आत्यतिक् चला आवे, यही हमारे विचार के बिन्दु है रहे है चिन्तन के बिन्दु रहे हैं। और इस विषय के लिए दर्शनों में जो छै: दर्शन है उन्हें कहते है आस्तिक दर्शन।

न्याय, वैशषिक, सांख्ययोग, वेदान्त और मीमांसा ये आस्तिक दर्शन हैं। सबका उद्देश्य यही है कि दुःख की निवृत्ति कैसे हो और सुख की उपलब्धि कैसे हो? सुख मिलना चाहिये, सुख की कामना है, कैसे मिले ये चिन्तन किया गया। न्याय सूत्र है दुःख होता क्यों है? दुःख होता है जन्म से, अगर हमारा जनम नही हुआ होता तो दुःख नहीं होता दुःख का कारण क्या है जन्म है। दुःख है जन्म और जन्म क्यों होता है?

जन्म होता है प्रवृत्ति से, दुःख जन्म प्रकृति प्रवृत्ति से मतलब क्रिया हम क्रिया से करते हैं, कर्म करते हैं तो जन्म होता है कर्म से जन्म जन्म से कर्म यह परम्परा अनादिकाल से चली आ रही है। हम कर्म करेंगे? तो जन्म होगा और जन्म होगा तो हम कर्म करेंगे अतः मूल हो गया दुःख, उसका कारण हो गया जन्म, जन्म का कारण हो गई प्रवृत्ति, और प्रवृत्ति-मिथ्या ज्ञान से, प्रवृत्ति क्यों होती हैं? हमें आसक्ति के कारण मिथ्या ज्ञान से और मिथ्या ज्ञान क्या चीज है, असत्य को सत्य समझना ही मिथ्या है। भगवान् शंकराचार्य कहते हैं कि अज्ञानी व्यक्ति जो है, मूढ़ व्यक्ति जो है जिसे पता नहीं कि हम क्या हैं, हमारा कर्त्तव्य क्या है, हमारा उद्देश्य क्या है, ऐसा न समझने वाले व्यक्ति को ही स्तम्भ होता है, अज्ञान होता है और इसलिए वह प्रवृत्ति करता है और प्रवृत्ति के द्वारा वह कष्ट पाता है। तो सबसे मूल बात है मनुष्य की प्रवृत्ति का होना। प्रवृत्ति से जन्म होगा जन्म से दुःख होगा। यह दुःख और जन्म की परम्परा अनादिकाल से चली आ रही है इसको दूर करने के लिए हमारे यहां दर्शन शास्त्र बनाये गये। दर्शन शास्त्रों का उद्देश्य यही है कि दुःख का आन्त्यन्तिक नाश कैसे हो और परम सुख की उपलब्धि कैसे हो। तो हमें यह देखना है कि संसार में दो ही तत्व सारे चिन्तन का मौलिक आधार है। जितना बड़ा चिन्तन किया गया देखा गया, निष्कर्ष यह निकाला गया कि संसार में दो ही तत्व मूल हैं। चाहे वह न्याय दर्शन हो, चाहे वो वेदान्त दर्शन हो, चाहे वह सांख्य दर्शन हो, चाहे कोई हो।

सबों का निष्कर्ष इसी में निकलता है आ करके कि संसार में दो ही मूलतत्व हैं। क्या हैं? एक तो है जड़ और एक है चेतन। जड़ चेतन का एक रहना, अस्तित्व है, जगत् का मूल तत्व यही है। आप अपने शरीर में देख लीजिये। आपके शरीर में दो तत्व हैं एक तो जड़ और एक चेतन। शरीर तो जड़ है और चेतन इसके अन्दर है जो स्थिर है। जो दृष्यमान शरीर है यह परिर्वतनशील है, बदलता रहता है और जो चेतन है आत्मा कहते हैं उसे, आत्मा है चेतना है, परमात्मा का अंश कहिये चाहे परमात्मा कहिये। इसमें भी बड़ा विवाद है, मतलब कहने का यह है कि जड़ और चेतन। ये दो तत्व मूल तत्व है। जड़ तो निरन्तर बदलता ही जा रहा है। जब बच्चा पैदा होता है तो एक किलों दो किलों का होता है और वह बढ़ना शुरू करता है बढ़ते बढ़ते वह बढ़ता जाता है, युवा होता है, युवा के बाद वृद्ध होता हैं। वृद्ध होने पर भी कहता है कि मैंने बचपन में यह चीज खाई थी, हय चीज पढ़ी थी, यह चीज देखी थी इत्यादि बातें बोलता है वह, इसका मतलब क्या हुआ जो द्रष्टा है अनुभवता है वह तो ज्यों का त्यों रहता है चाहे बाल्यावस्था हो चाहे युवावस्था हो, चाहे वृद्धावस्था हो ज्यों का त्यों रहता है और अपना जो ''मैं'' है वह तो शरीर तो बदलता गया क्योंकि द्रष्टा, साक्षी आत्मा है चेतन है जिसे ''मैं'' कहते हैं वह ''मैं'' तो स्थिर है उसका बदलाव बिल्कुल नहीं होता है यथावत् रहता है वह। वह ''मैं'' जो हमारा स्वरूप है उस पर बड़ा गहरा चिन्तन किया गया है, किन्तु हमको इतना विचार में नहीं जाना है। हमें तो मूल रूप से कहना है कि हम जो चेतन हैं इसे आत्मा कहते है।

आत्मा के दो भेद किये नैयायिकों ने, आत्मा ज्ञानाधिकरणं आत्मा जीवात्मा, परमात्मा च न्याय दर्शन में आत्मा को ज्ञानाधिकरण माना गया है ब्रह्म सत् चित

आनन्द स्वरूप हैं किन्तु न्याय दर्शन कहता है ज्ञानाक्षिकरण आत्मा। ज्ञान भिन्न है आत्मा भिन्न है आत्मा ज्ञान का अधिकरण है। ऐसा न्याय दर्शन मानता है। न्याय दर्शन माने चाहे कुछ नहीं माने आत्मा ज्ञानस्वरूप है यह तो मानना पड़ता है। आत्मा ज्ञान स्वरूप है क्योंकि जो जैसा होता है, उसकी कामना होती है हरेक व्यक्ति की इच्छा होती है कि मैं सबसे अधिक ज्ञानवान् बन जाऊं, सत्ता सम्पन्न बन जाऊं, ज्ञानवान्, सत्तावान्, और आनन्दवान् यह तीन बनूं मैं। संसार का कोई ऐसा प्राणी नहीं है चीटीं हो चाहें मनुष्य हो सबकी यही कामना रहती है कि मैं ज्ञानवान् हूँ, अस्तित्ववान् हूँ और आनन्दवान् बनूँ। क्यों ऐसा कल्पाना क्यों करता है, आदमी वो सोचता है ऐसा इसलिए कि हमारा जो मूल स्त्रोत है, मूल स्थान है, जहां से हम आयें उस का स्त्रोत यही है जो जहां से आता है वहां जाने की कामना होती है हम आनन्द करते है।

संसार में आने के बाद दु:ख तो होता है और दु:ख क्यों होता है ? दु:ख तो अपने कर्मो के अनुसार होता है। इस सम्बन्ध में एक बात कह दूं आपके सामने कि ये जो संसार दिखाइ पड़ता है हमें, विचित्र संसार है, कहीं मरूभूमि है कहीं सस्यश्यामलामयी है,कहीं कुछ है, कहीं नदियां बह रही है, समुद्रों के उत्ताल तरंग आ रही है, क्या हम संसार में देखते है यह विचित्र संसार है। हमने सोचा कभी इसके ऊपर कि संसार बना तो कैसे बना, किसने बनाया इसे, क्यों बनाया इसे, एक प्रश्न सामने आता है। रेल की दो पटरियों की भांति शुरू से ही, अनादिकाल से ही, विवाद का विषय रहा है, कि किसने बनाया जगत् को और क्यों बनाया जगत् को क्या आवश्यकता थी बनाने की जगत को चिन्तनीय विषय रहा है तो एक बात कहता है, एक आदमी कहता है, एक सिद्धान्त कहता है, अस्ति: ईश्वर: नियन्तानिर्माता, ईश्वर है जो जगत् का निर्माता है और एक कहता है नास्ति: ईश्वर, ईश्वर है नहीं उसकी कोई आवश्यकता नहीं है जगत् तो अनादिप्रवाह है, अनादि प्रवाह से चलता आ रहा है, ऐसा है तो जगत् बना कैसे ? अवयव थे परमाणु घूमते थे आकाश में उड़ते थे उड़ते उड़ते मिल गये जगत् बन गया। इस पर एक मैं छोटा सा दृष्टांन्त आपको बताऊं एक थे गिरधारी लाल और एक उनका लड़का था बनवारीलाल। गिरधारी लाल एडवोकेट वकील थे वे तार्किक थे बुद्धि के बड़े भारी प्रवर थे सब कुछ सर्वगुण सम्पन्न थे वकालत, कचहरी, से आये घर पर तो लड़के को बुलाया और बनवारी लाल आओ, इधर लड़का दस मिनट के बाद आया, पूछा क्यों देरी किया दस मिनट क्या कर रहे थे, लड़के ने कहा भगवान् की पूजा कर रहा था कौन होता है भगवान्, किसकी पूजा कर रहा था। भगवान् तो वहीं है अखिल ब्रह्माण्ड को बनाया है जो अनेक विचित्रताओं का आगार है ऐसा जो विचित्र संसार है उसे बनाने वाला भगवान् है ये क्या बकवास करता है समझ में नहीं आता है तुम्हारे भगवान् की आवश्यकता क्या है ईश्वर की आवश्यकता क्या है जगत् तो बन गया अपने आप बन गया कैसे बन जाता है अपने आप कहे परमाणु घूमते रहते है परमाणु से संसार भरा हुआ है, जब परमाणु से संसार भरा हुआ है तो परमाणु जब मिल गये आपस में तो जगत् बन गया तो इसलिए ईश्वर की कोई आवश्कयता नहीं है। जगत् बनाने के लिए और काम फल लेने के लिए और कर्म करवाने के लिए प्राणियों को नियन्त्रित करने के लिए ईश्वर की कोइ आवश्यकता नहीं है। ऐसा जब उन्होंने कहा लड़का सुनता रहा अगले दिन वह जब कचहरी में चले गये तो उसने बढ़िया चित्र बनाया फोटो बनाया, किसी देवता का बनाया, कृष्ण का बनाया और बना करके उसे मेज पर रख दिया और चारों तरफ उसके हरी नीली लाल पैन्सिल रख दिया, सांयकाल आये जब वह तो उन्होंने कहा इतना अच्छा चित्र किसने बनाया, बहुत अच्छा चित्र बना हुआ है यह कैसे बना चित्र, यह

उन्होंने पूछा वकील साहब ने लड़के से कहा पिताजी क्षमा कीजियेगा बनाया किसी ने नहीं, इसकों मैंने तो यह जो फोटो बनी है फोटो है इसी के यहां पन्ना रखदिया था चारों तरफ से हरी, नीली, लाल, पेन्सिलें रख दीं थी परमाणु उडे उसमें से और चित्र बन गया। तब उन्होंने कहा हमें वेवकूफ न बनाओं कहीं परमाणु उड़ने से चित्र बन सकता है क्या और इतना बढिया तब कहा पिजाती क्षमा कीजिये जब यह छोटा सा चित्र परमाणुओं के अपने आप संमिश्रण नहीं से बन सकता है तो इतना विराट् विश्व विचित्रताओं का आगार जहां सूर्य है, चन्द्र है नक्षत्र है अनेक तरह के उपग्रह हैं हरेक की कक्षायें है हरे क ग्रह अपनी कक्षाओं में घूमता है कहीं संघर्षण नहीं होता है कहीं पर टकराहट नहीं होती है संसार चक्र नियमित चल रहा है ऐसा अपने आप कैसे बन गया साहब कैसे बन गया? अपने आप उनकी आँख खुली, माना उन्होंने हाँ, भाई कि गलती थी हमारी जड़ परमाणुओं के सम्मिश्रण से जगत् बन जाता है यह संभव नहीं है।

इसलिए इसको बनाने वाला जो है वह कोई ईश्वर है, परमात्मा है, ईश्वर है। कह सकते है प्रमेय और प्रमाण दो तत्व होते हैं। पार्थिव है प्रमेय हैं वस्तु है सभी सिद्धि प्रमाण से होती है क्या प्रमाण है कि ईश्वर है। हमारे यहां चार प्रमाण माने गये है न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष अनुमान, उपमान, और शब्द। प्रत्यक्ष इन्द्रियां हैं इनसे हम ईश्वर को देखते तो हैं नहीं, ईश्वर दिखाई नहीं पड़ता है तो उसे नहीं मानेंगे क्योंकि अनुमान से ईश्वर को सिद्ध करें अनुमान ही प्रमाण है अनुमान प्रमाण होता है। हम चले जा रहे है रेलगाड़ी से यात्रा कर रहें है पहाड़ पर धुँआ दिखाई पड़ा तो धुँआ से अनुमान कर लेते हैं कि अग्नि है, क्योंकि धुँआ अग्नि का व्याप्य है अग्नि साध्य है धुँआ अग्नि का व्याप्य है। इसलिए व्याप्य से व्यापक का अनुमान किया जाता है, धुँआ को देखकर अग्नि का अनुमान कर लेते है हम। तो धुँआ अग्नि का अविनाभावी हेतु है। अविनाभाव उस हेतू को कहते हैं व्याप्य कहते है धूम में ऐसी बात है। इसलिए धूम अग्नि का व्याप्य है। उसी प्रकार से हम ईश्वर को सिद्ध करना चाहते हैं अनुमान से अगर तो सिद्ध करना चाहें तो ईश्वर को सिद्ध करने में कोई अनुमान है नहीं जो अविनाभाव हेतु कर सके इसलिए हम अनुमान से नहीं सिद्ध कर सकते हैं ईश्वर को। तब कहा गया कि भाई उपमान से सिद्ध करो तो उपमान प्रमाण वहां कामयाब होता है जहां कि वस्तु समान होती है, जैसे गाय के समान गवय होता है हमने देख लिया है कि यह गवय है गाय के समान इसलिए गवय है। ईश्वर के समान दूसरा कौन व्यक्ति दुनियां में है कि हम कह दें कि उसके समान ईश्वर होता है इसलिए कोई इसके समान भी नहीं है। प्रत्यक्ष हो गया, अनुमान हो गया, उपमान हो गया। अब आया शब्द प्रमाण, आगम प्रमाण क्योंकि आगम में लिखा हुआ है। ईश्वर को मानना चाहिये क्योंकि इसमें जो है आगम से सिद्ध है। कोई पूछ सकता है ईश्वर विरोधी आदमी है, नास्तिक है, वह कह सकता है कि आगम क्यों माने यह प्रमाण आगम किसने बनाया है आपका अगर आगम ईश्वर ने बनाया तो जब ईश्वर ही सिद्ध नहीं है तो इसका आगम कैसे मान्य होगा इसलिए ईश्वर जब सिद्ध हो तो आगम को माना जाय और आगम से ईश्वर की सिद्धि करना चाहते हो तो अन्योनाश्रय दोष आ जायगा इसलिए अनेक दोषग्रस्त होने के कारण हम आगम को प्रमाण नही मान सकते हैं।

ईश्वर है जगत् को बनाता है, जगत् में अनेक प्राणी होते है जो कर्म का फल भोगते है कर्म का फलदाता ईश्वर ही है यह बातें सब निरस्त हो जाती हैं। तब ''मैं'' की तरफ से कहा गया नहीं अनुमान प्रमाण है ईश्वर को सिद्ध करने के लिए अनुमान प्रमाण कैसे है, इदम् जगत् संकृतमत् देखिये ये सुई भी अपने आप नहीं बनती है इतना बडा पण्ड़ाल बना हुआ है इस पर सज्जा की गई है यह सब अपने आप थोड़े बन गया है कोई बनाने वाला

है जब सुई भी अपने आप नहीं बनती है जब एक खम्मा भी अपने आप नहीं बनता है कुछ भी नहीं बनता अपने आप, तो विचित्रताओं का संसार अपने आप बन गया कैसे माना जा सकता। क्यों कि यह कार्य है कार्य होने से इसका कोई कर्ता होना चाहिये वह जो कर्ता होगा अल्पज्ञ नहीं हो सकता है घसीटू राम फसीटू राम संसार नहीं बना सकते है। जो सर्वज्ञ होगा वो अनन्त प्राणियों को जानता है। अनन्त प्राणियों के कर्मों को जानता है, उनके कर्मो के फल को जानता है। फल पाने की अवधि क्या है, समय की गति सब जानता है, वह सर्वज्ञ है, वह अघटित घटनापटीयान् है, वह कर्तुम् अकर्तुम् समर्थ है, वह कुछ भी कर सकता है वो ईश्वर जगत् का निर्माता है। यह अनुमान जब नैयायिकों की तरफ से पेश किया गया तो विरोधी पक्ष ने क्या कहा, विरोधी पक्ष ने कहा, आपजो हेतु दे रहे हो, ''इदम् जगत् सत्कृतिम कार्यत्वात् ''- आपका हेतु हेत्वाभास से ग्रस्त है। हेत्वाभास किसे कहते हैं। हेत्वाभास कहते है-जो स्वयं से ग्रस्त हो जाते हैं। इसके पाँच भेद है- अनैकान्तिक, विरुद्ध, असिद्ध, सत्प्रतिपक्ष और बाधित ये पाँच भेद हेत्वाभास के होते है तो हेत्वाभास में जो ईश्वर का विरोधी पक्ष है वह कहेगा कि यहां पर हेत्वाभास है हेतु आपका असिद्ध है यह जगत् कार्य है इसको हम नहीं मानते हैं। किसने देखा है हिमालय पहाड़ को बनाते हुये, हिमालय पहाड़ कौन बना रहा था समुद्र कौन खनन कर रहा था कौन देखने के लिए गया था बड़ी बड़ी नदियां किसने बनाईं यह सब स्वत: सिद्ध हैं यह अपने आप हो रहा है कोई बनाने वाला नहीं है। इसलिए हम आपका जो हेतु है आपका कार्यत्वात् यह हेतु असिद्ध है इसलिए जब हेतु असिद्ध हो गया तो आपका अनुमान कैसे बनेगा। तब नैयायिकों ने क्या किया ? वह जो हेतु था इनका कार्यत्वात उसको सिद्ध करने की कोशिश की, इदम् जगत् कार्य म् सावयवत्वात्-यह जगत् जो है कार्य हैं क्यों कि यह सावयव है। इसके अवयव हैं ध्यान रखियेगा जो चीज सावयव होती है, वह अनित्य होती है वह बनाई गई होती है। आकाश सावयव नहीं है, आकाश कार्य नहीं है, आकश अनित्य नहीं है, न्याय दर्शन की बात बता रहा हूँ न्याय दर्शन के अनुसार आकाश नित्य है वह कार्ज नहीं है वह सावयव नहीं है इसलिए वह नित्य है। और जितनी चीजें सावयव हैं घट है, मठ पट है, समूह है, किनारा है, नदी है, पर्वत है, पहाड़ है, ये सारे सावयव वस्तुएं है अवयववाली हैं। जो वस्तु सावयव होती है, वह कार्ज होती है।

इस प्रकार नैयायिकों ने सावयवक हेतु के द्वारा सिद्ध किया कि यह जगत् कार्ज है जब जगत् कार्ज हो गया तो उसको बनाने वाला कोई होना चाहिये वह कौन बनाने वाला है वही अघटित घटनापटीयान् अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म, परमात्मा कहो, ईश्वर कहो, वही सब कुछ है जगत् को बनाया उसने। फिर पूछा उसने जगत् को क्यों बनाया क्या आवश्यकता थी बनाने के लिए। देखो कोई आदमी कोई काम करता है तो वह करता है दो तरह से या तो स्वार्थ बुध्या करता है, या परार्थ बुध्या करता है। ईश्वर को जगत् बनाने में क्या स्वार्थ रहा क्यों बनाया जगत् को उन्होंने, क्या आवश्यकता थी बनाने की, स्वार्थ बुध्या बनाया कि परार्थ बुध्या बनाया। स्वार्थ में दो बातें हैं। क्या उसको इष्ट की प्राप्ति करनी थी क्या कोई चीज़ नहीं थी उसके पास, जिसके लिए जगत् को बनाया उन्होने, क्या कोई अनिष्ट आ गया था उसके ऊपर, अनिष्ट की निवृत्ति के लिए बनाया क्या जगत् को, उसने क्यों बनाया जगत् को उनका स्वार्थ तो नहीं कह सकते हो वह तो आप्त काम है, आप्तकाम, पूर्णकाम, परम निष्काम, आत्माराम है। उसको स्वार्थ से क्या मतलब स्वार्थ की प्रवृत्ति नहीं है और कोई अनिष्ट भी नहीं आया जो सकल अनिष्ट का नियन्ता है, सारे अनिष्टों का वह नाशक है, विभंजक है, उसको अनिष्ट

था ही नहीं क्यों बनाया स्वार्थ हुआ नहीं परार्थ कहो तो परार्थ भी नहीं बन सकता है वह, क्यों नहीं बन सकता है कि पर के लिए क्यों कोई परेशान होने जायेगा। तब कहा उन्होंने कि उसकी जो प्रवृत्ति होती है करुँणा से होती है। उसे करुँणा आ गई संसार में क्रन्दन करते हुये दु:खदावानल में दग्ध प्राणियों को देख करके उसे करूँणा आई उसने बना दिया जगत् को तब फिर शंका होती है- कि जब करुँणा से बनाया उसने तो कोई कुवड़ा बन गया, कोई लूला बन गया, कोई लंगड़ा बन गया, कोई टेड़ा बन गया, कोई अंधा बन गया, कोई कैसा बन गया ऐसी विचित्र स्थिति क्यों बनाई विषमता क्यों है सृष्टि में। तब नैयायिकों ने उत्तर दिया कि प्राणियों के कर्म से वशीभूत होने से ऐसी सृष्टि बन गई सृष्टि में वैषम्य आ गया तो सृष्टि में जो विषमता है कर्म से तो कर्म के अनुसार ईश्वर फल देता है तो उस समय आप कहते हो कि सर्व शक्तिमान् है सब कुछ करने वाला है वह कर्म के अधीन होकर काम करता है तो ईश्वर में सर्वशक्तिमत्ता कहां से आ गई। तो कहा कि यही तो उसकी सर्वशक्तिमत्ता है जो सारे प्राणियों के कर्मों को जानता है, देखता है, और फल देने के लिए तैयार हो जाता है वह कर्म जो है स्वयं फल नहीं दे सकते हैं कर्म तो जड़ होते है, कर्म को पता नही कि मैं क्या हूँ?

मेरी अवधि क्या है, मेरा समय क्या है, मेरा फल क्या है, यह कर्म को पता नहीं है। इसलिए जड़ कर्म को जानना, अनन्त प्राणियों के जड़ कर्मो को अनन्त जन्मों के कर्मों को जानना और कर्म के अनुसार उसको फल देना और फल के अनुसार कर्म करते हुऐ फल को भोगना ये सारा नियन्त्रण, सारा कार्यक्रम, ईश्वर के द्वारा होता है इसलिए ईश्वर परमात्मा है। न्याय दर्शन के अनुसार जगत् का निर्माता ईश्वर है वह जगत् का अभिन्नन्निमितोपादान कारण है नैयायिक कहते हैं जगत् का निमित्त कारण ईश्वर है यह चर्चा बड़ी है और समय का अभाव है मैं यही विराम देता हूँ।

श्री रामनिवास जी लखोटिया :-

(योग दर्शन)

(वरिष्ठ आयकर सलाहकार- दिल्ली)

मुझे आपको देखकर यह आभास हो गया कि मैं अगर आपकी भाषा में बोलूँ तो शायद आपको ज्यादा समझ में आयेगा और कठिन विषय को सरल भाषा में आप सम्मुख रखूं इसलिए अब मैं हिन्दी में नहीं कहकर मारवाड़ी में ही मुझे कहना है।

तो आओ अब आपां योग की बात जो इतनों कठिन है विषय जी के अन्दर म्हां का बड़ा बड़ा विद्वान और योग की परिभाषा, योग की मीमांसा अैर योग को वर्णन करके थांक्या कोइनी। मैं आपके सामनें योग की इसी बात रखूँ जीन आप जीवन में उतार सकों। अगर जीव के माइने धर्म, अध्यात्म, योग, भक्ति यै कोई भी अगर आ नहीं सके आंपा जीवन में यान उतार नहीं सकां, तो आंपा को आवों व्यर्थ हो गिया। आपा इतना बड़ा धर्म सम्मेलन में आया और अठे कीं वास्ते आया केवल एक दूसरां सूं मिलवा न नहिं। आंपा कुछ सीख के जांव जीवन में इसी चीजां लेवां आपा ग्रहण करा जो आपा के कमा आवै। मैं म्हांरा, अपनी जीवन का इतना बरस का अनुभव आपके सामान रखूं कि, क्यान थे सबका सब योगी बन सको क्यान थाकों जीवन योगमय हा सका अठै छै: दर्शन की बांता हो रही है। छै दर्शन में एक दर्शन है- योग दर्शन। भारत म एक पंतजलि महर्षि हो गया। बहुत बड़ा महर्षि हो गया वै एक दर्शन शास्त्र लिख्यों वै योग सूत्र लिख्या वीम अष्टांग योग लिख्यौ वी म यम है, नियम है, आसन है, प्राणायाम है, प्रत्याहार है, धारण है ध्यान है, समाधि है। अगर मैं इपर बोल क लागूं तो थै भी ऊब लाग जावो। पैलौअंग है वाकों यम और यम का है पाँच अंग और बीकौ एक अंग है अहिंसा।

अहिंसा न आपा जीवन म क्यान उतार सकां व्यावहारिक जीवन में वान भोजन में, पानी में, खानपीन में, व्यवहार में आपां क्यान उतारां बस ओई म्हारो विषय है आज, और वो संक्षेप में पाँच सात मिनट में मैं आपके सम्मुख विश्व का बड़ा बड़ा वैज्ञानिक, बड़ा बड़ा दार्शनिक, बड़ा बड़ा धर्मात्मा, क्यान ई योग ने अपनी जीवन में उतारियो वै का दृष्ट ंन्त रख कर आपके सामने अपनी बात कहरयूं। आज थे और मैं सब जांणा कि धर्म के प्रचार तो खूब होरियो है चारों तरफ धरम सम्मेलन, लाखं व्यक्ति आवा धर्म सम्मेलन म लेकिन बीके साथ साथ ये भी आप जाणां सब आपां कि भ्रष्टाचार, पापाचार और खानपीन बिगड़ रहियौ है, थे और मैं सब जांणा कि जितना अजमेर के मायने अण्डा की दुकाना पैइली हि जद मैं अठे विद्यार्थी हो साठ साल पैइली जद बी टेमम दो चार दुकान मुश्किल से दीखती। आज सैकड़ा, हज्जारा दुकांना पर लाखों अण्डा बिकरिया है औ एक पतन नहीं है तो कांई है। आपा नने योग में उतारणो है तो अपनों खानपीन सुधारनों पड़ी। ये सब तौ मैंनं लागरियों है कि अठे आया हो कष्ट पाकर तो थे तो सब खानपीन ठीक रखताहि होई लेकिन आंपा का परिवारा म कांई होरियो है। जरा झांककर देखो क्योंकि मैंने दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता और हिन्दुस्तान और विदेश में जावां फिरवा कौ बहुत मौकों मिलै, मै बिनै देखूं आपां के समाज के लोगां ने, बांवण, बांणियां, राजपूत, जाट, सब उठे में कहूँ कि राजस्थान का हो, कि हाँ सा, तो आओ आंपा में देखूं कि ऐ इ लाईन मं खड़या तो आंपा भी ऐई म हो जांवा शायद खानपीन ठीक होई शाकाहार होई, जद वै वाका प्लेट के मइने मुर्गी देखूं अण्डा की चीज देखूँ तो आँख्यां में आँसू आ जावे। ओ के होरियो है इन क्यान रोंक सकाँ आज थे औरमें सब रोक संका।

अहिंसा को केवल अर्थ ओ नी नीह कि हि सा नहीं कराँ अपां के जीवन में इशोआहार लेवां कि बीम हिसां न तो हुव और न करवाई जावै। न तो खुद आपां करां और न हि हिंसा करियोड़ी चीज आपां खावां। महाभारत में भी देखो तो अहिंसा परमोधर्म। महाभारत के अन्दर लिख्यों हो। और आंपा कं योग दर्शन म बाराबर पैलों इ वास्ते दियौ। सब आठो अंग में पइलौ अहिंसा आंपां भूल जावं क्यूं दियौ महर्षि पतन्जलि कोई पागल तो कोइना वै। इे वास्ते दियौ कि जीवन कौ धरम कौ धरम अगर कोई आधार है तो वह अहिंसा है। और अहिंसा कौ आधार है शाकाहार अगर अहिंसा कौ माननों है जीवन में उतारणूँ है। कोई व्यक्ति मैं चैलन्ज दे रहो हूँ थाने चुनौती है म्हारी, कोई भी व्यक्ति ये कैवे कि मैं धर्मात्मा हूँ मैं योगी हूं, मै बहुत योग करूं और अगर वो अण्ड़ा, मांस, मछली खावै आपां मान ल्यौ न तो वो धर्मात्मा है न पूर्ण रूप से योगी है, योगी हो नहीं सकै बिना खानपीन शुद्ध राख्या मांस मछली दारू पी। ईशान का वठयो लिख्यां हो वैसे ही कोई जरूरी हो गियौ कि आपां मांस मछली अण्डा खावां या शराब पीवां या पिलांवा होनौ ओ चाहिये कि तो खुद पीवै न पिलावै और अपना मित्रां अपने घर में ब्याह शादी आदि में कोई चीज नहीं करै और अब परिवार न क्यान सुधारां। वै पूछी क्यूं नहीं खाणौ थे दो तीन कारण बाताज्यो। मै थांके सामने दो तीन कारण रख रयो। पैलो धार्मिक, या बिनै बोलो आध्यात्मिक या बिनैबोलो नैतिक आ कारण है कांई कारणकि आंपा चांवां कि म्हां के साथ दूसरो आदमी या प्राणी ईशो व्यवहार करे जिशौ मैं दूसरां के साथ चांवां या दूसरां से मै अपेक्षि रखां तो विशो ही व्यवहार करां। यानी आपस में आपां चांवां कि म्हाने कोई दु:ख नहीं देवै फिर म्हांने दु:ख नहीं देवै तो आपां ने कांई अधिकार कि आपां जीव जन्तु बैने मार देवां या मरवा देवां को कांई अधिकार बणै।

श्री अभिरामदास जी महाराज :- (गुजरात)

वेदान्त दर्शन

षड्दर्शन पर प्रवचन करने का हमें यत् किंचित् अपनी वाणी पवित्र करने का सौभाग्य मिला। सचमुच श्रीजी महाराज के इस विराट् आयोजन में साक्षात् एक दैवीय शक्ति भगवत् कृपा ही काम कर रही है।

आदि शंकराचार्य जी महाराज जिन्होंने बौद्धों के शून्यवाद सौत्रान्तिक वैभाषिक को समुद्र पार भारत से खदेड़ा चीन की तरफ सारा संसार आज उनका ऋणी है आस्तिकवाद की स्थापना की और फिर उसमें से द्वैतवाद, अद्वैतवाद, विशिष्टा, द्वैतवाद, द्वैता, द्वैर्तवाद और कितने दर्शन-शास्त्र प्रकट हुए। और वेदों का **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद** चार वेद है जिनके चार महावाक्य है। प्रज्ञानं बह्म् आनन्दं ब्रह्म, अहं ब्रह्मास्मि, तत्वमसि, अयं आत्मा ब्रह्म इन चार महावाक्यों पर इतना भाष्य लिखा आचार्यो ने जो ऊंटो पर लद कर चलै। लेकिन इन सबके लिए हमें संस्कृत भाषा का अन्वेषण पढ़ना बहुत आवश्यक है, क्योंकि **सर्वाणिं शास्त्राणि षड् दर्शन शास्त्राणि संस्कृत भाषाया मेव मुद्रितानि अंकितानि निवद्धानि वर्तन्ते परंचयामिमे ते अत्रत्या सर्वे श्रोतारः संस्कृत भाषायां वक्तुं अनायासेन ज्ञातुम्किश्चित् काठ्न्यमनु भविष्यन्ति।** इट इज रूरल कन्ट्री विजेल ऐरिया देअर फोर आई सेल ड्रीवर माई समथिंग स्पीच इन हिन्दी लैंग्वेज इट इज वैटर ऑलसो। देखिये चार वेदों में एक लाख मंत्र हैं। आर्य समाज में मतभेद हो हम उसको नहीं मानते। चार हजार ऋचायें ज्ञान काण्ड की, सोलह हजार ऋचायें भक्ति काण्ड की और अस्सी हजार ऋचायें कर्मकाण्ड की। कर्म उपासना और ज्ञान इन तीनों पर ये टिका हुआ है चाहे- बाइबिल देखिये,कुरान सरीफ देखिये, वेदों को आदि से अंत तक सुनिये चार वेदों का सार कर्म, उपासना और ज्ञान। अब प्रश्न ये है कि आदि गुरु शंकराचार्य जी भगवान् कहते हैं ''ऋते जानान्न मुक्ति ज्ञान विहीने सर्वमतेन मुक्ति न भवति जन्म शतेन च'' शुकदेव महाराज कहते है कि ''कलौभक्तिः, कलौभक्तिः, केवलम्'' और उधर भगवद् गीता डन्के की चोट से कहती है, ''कर्मण्ये वाधिकारस्ते माफलेषु कदाचन''। कर्मणो ह्यपिबोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः अकर्मणश्च बोद्धर्व्यं गहना कर्मणो गतिः।

अब इस तिराहे पर खड़ा एक साधक सोच रहा है, ''केन मार्गेन अस्मर्भि गन्तव्यं, ''इन ह्वीच वेज वी शुड गो'', आइये हमारे समन्वयवाद अणुवाद ''अणोरणीयान् महतो महीयान्'' निम्बार्काचार्य महापीठ पर और सुनिये गोस्वामी जी के शब्दों में बोले कर्म उपासन ज्ञान वेद मत अकाम टप्पूबात नहीं ''कर्म उपासन ज्ञान वेद मत सो सब भांति खरो''। संत वही है जो किसी का खण्ड़न न करे, आलोचना न करे, कोई आलोचना करता है, तो एक ऊंगली आगे उठती है पर तीन ऊंगली उसकी ओर इशारा करती है। बुरा जो देखन मैं चला, मुझसे बुरा न कोय। चुनरी चाची ने कहा सुई माता तुझमें छेद है तो मुस्कुराके सुई ने कहा अरे चाची आप अपने छेद तो गिनों तो आज सब से बड़ी आवश्यकता है समन्वयवाद की जो श्रीजी महाराज ने एक स्टेज पर महाकुम्भ लगाकर सब आचार्यो को और पूरे भारत को यहां एक जगह झुका दिया। बड़ी आवश्यकता है समन्वयवाद की जो श्रीजी महाराज ने एक स्टेज पर महाकुम्भ लगाकर सब आचार्यो को और पूरे भारत को यहां एक जगह झुका दिया। बड़ी मुश्किल से तीन दिन का समय निकाल करके आये थे, मंच संचालक कुशल, वयोवृद्ध, श्रीमुरलीमनोहरजी के सौजन्य से हमें यदि किंचित् वाणी पवित्र करने का अवसर मिला और एक दो मिनट ज्यादा हो जाय तो कल हमें टाइम मत देना, देखिये जितना ज्ञान है उससे चौगुनी भक्ति कीजिये और भक्ति वही ''भज सेवायां धातु सेवा

धर्मः'' परम गहन लेकिन भक्ति से भी बढ़ कर कर्म है, ''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः'' हम सौ वर्ष तक कर्म करते हुये जीवें हराम का न खायें। ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'' बाइबिल भी कहती है, ''एक्शन इज टू ड्यूटी रिवाईनन डोर्ड आई कर्सन'' अब काम कैसे चले एक छोटा सा दृष्टान्त, दृष्टान्त से समझ में आ जाता हैं।

मान लीजिये आपके घर में बरात लौट करके आई, और संयोग से जाम हो गया सभी वाहन बंद, मेहमान सौ पचास ठहर गये अब क्या करे ससुर साहब ने नीची गर्दन करके पढ़ी लिखी बहू की ओर देखा और इतना ही कहा कि मेहमानो को अगर होटल में ले जांय तो फिर, चतुर बहू ने कहा-कि नहीं नहीं अभी हम बनातीं है। देखिये भक्ति के द्वारा कर्म सरल मधुर प्यारा बन जाता है और ज्ञान के द्वारा कर्म कम्पलीट परिपूर्ण आदर्श बनता है। तो भक्तिमती उस चतुर बहू ने कहा कि अहोभाग्य, आते आते हमें सेवा का गोल्ड़न चांस मिला और हमारे हाथ की सब मेहमान जीम के जायेंगे और घर में बड़ी ऊंची गर्दन करके मूंछ पकड़ के कहेंगे, हम नई बहू का हाथ का जीम के आये है और उसने तुन्त परिश्रम जैसा यहा का स्टाफ कर रहा है हम पन्द्रह बीस दिन पहले आये थे दो सौ आदमी यहां रात दिन सजावट का, लेखन का और काम में जुटे थे बिल्कुल भक्ति से तो भक्ति के द्वारा कर्म सरल मधुर प्यारा और अगर भक्ति न हो तो वह हिमालय के समान, पहाड़ के समान काम बन जाता है। वह नई बहू का यदि हाथ अभी तो मेंहदी के दाग नहीं छूटे नई साड़ी नहीं उतारी, आते आते चूल्हे में मूड़ ठूसेंगे ये सोचे तो काम हिमालय पहाड़ के समान वह बन जायगा।

हमने देखा दस बीस वर्ष के लड़के गुरुकुल से पढ़के जाते हैं माता की गोदी में बैठते है माता को भारी नहीं लगता बोझ नहीं लगता, प्रेम से बिठाती है वात्सल्य भक्ति है। कारगिल की पहाड़ियां पर छैः छैः महीने में पाकिस्तान ने कब्जा किया था एक एक रात में चालीस किलो वजन लादके और गये सेनापति और वहां तिरंगा झंडा फहराया राष्ट्र भक्ति, वात्सल्यभक्ति, तो इस प्रकार से भक्ति के द्वारा कर्म कम्पलीट परिपूर्ण बनता हैं जैसे एक नई ग्रेजुएट बहू आई और माता ने कहा कि आज बाजरा का टिक्कर बनाइये तो उसने एक किलो आटा डाला दो दो किलों पानी डालके घोलने लगी तो बताइये रोटी टिक्कर बनेगें कि लाप्सी तो आप समझगये होंगे कर्म उपासन ज्ञान वेद मत सभी दर्शन शास्त्रों का है ये तीनों आवश्यक है-पावभर आटा हो पाव भर घी हो, पाव भर शक्कर, कम्पलीट हलुवा बनता है टैस्टफुल एण्ड हैल्थफूल यू केन ईट विदाउट टी और पावभर यदि घी डालों और पावभर भक्ति रूपी शक्कर डाल दें और कर्म रूपी आटा न डालों तो घी और शक्कर शहद की तरह चाटो कहां हलुवा बना और पावभर आटा डालों और पावभर शंक्कर डाल दो अगर घी न डालो तो कहां से हलुवा बना बच्चों को बाँटो बच्चा कैसे खाया और फूफा फाफाऊ सब चला जाय और अगर भक्ति रूपी शक्कर न डालों घी और आटा डाल दे तो जिसको दे कहे कि यह तो विदाउट टेस्ट न खटटा न मीठा तो आप दृष्टांन्त के द्वारा समझ गये होगे कि आज वे सभी दर्शन शास्त्र समन्वयवाद को लेते हुये कर्म उपासन ज्ञान वेद मत इसी झण्डे के नीचे सभी वेद, बाइबिल कुरान शरीफ सभी आते हैं इनका सभी को आदर करना है और हम तो आपके बालक है विद्यार्थी थे विद्यार्थी हैं, विद्यार्थी रहेंगे, आई डोन्ट वान्ट प्रमोशन और इसी सिलसिला में महाराज के दर्शन करने आये थे। इनकी बड़ी उदारता जो हमें थोड़ी देर तक वाणी पवित्र करने का सौभाग्य दिया।

श्री अभिरामदास जी महाराज :- (गुजरात)

वेदान्त दर्शन

षड्दर्शन पर प्रवचन करने का हमें यत् किंचित् अपनी वाणी पवित्र करने का सौभाग्य मिला। सचमुच श्रीजी महाराज के इस विराट् आयोजन में साक्षात् एक दैवीय शक्ति भगवत् कृपा ही काम कर रही है।

आदि शंकराचार्य जी महाराज जिन्होंने बौद्धों के शून्यवाद सौत्रान्तिक वैभाषिक को समुद्र पार भारत से खदेड़ा चीन की तरफ सारा संसार आज उनका ऋणी है आस्तिकवाद की स्थापना की और फिर उसमें से द्वैतवाद, अद्वैतवाद, विशिष्टा, द्वैतवाद, द्वैता, द्वेर्तवाद और कितने दर्शन-शास्त्र प्रकट हुए। और वेदों का **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद** चार वेद है जिनके चार महावाक्य है। प्रज्ञानं बह्म् आनन्दं ब्रह्म, अहं ब्रह्मास्मि, तत्वमसि, अयं आत्मा ब्रह्म इन चार महावाक्यों पर इतना भाष्य लिखा आचार्यो ने जो ऊंटो पर लद कर चलै। लेकिन इन सबके लिए हमें संस्कृत भाषा का अन्वेषण पढ़ना बहुत आवश्यक है, क्योंकि **सर्वाणिं शास्त्राणि षड् दर्शन शास्त्राणि संस्कृत भाषाया मेव मुद्रितानि अंकितानि निवद्धानि वर्तन्ते परंचयामिमे ते अत्रत्या सर्वे श्रोतारः संस्कृत भाषायां वक्तुं अनायासेन ज्ञातुम्किश्चित् काठिन्यमनु भविष्यन्ति।** इट इज रूरल कन्ट्री विजेल ऐरिया देअर फोर आई सेल ड्रीवर माई समथिंग स्पीच इन हिन्दी लैंग्वेज इट इज वैटर ऑलसो। देखिये चार वेदों में एक लाख मंत्र हैं। आर्य समाज में मतभेद हो हम उसको नहीं मानते। चार हजार ऋचायें ज्ञान काण्ड की, सोलह हजार ऋचायें भक्ति काण्ड की और अस्सी हजार ऋचायें कर्मकाण्ड की। कर्म उपासना और ज्ञान इन तीनों पर ये टिका हुआ है चाहे- बाइबिल देखिये,कुरान सरीफ देखिये, वेदों को आदि से अंत तक सुनिये चार वेदों का सार कर्म, उपासना और ज्ञान। अब प्रश्न ये है कि आदि गुरु शंकराचार्य जी भगवान् कहते हैं ''ऋते जानान्न मुक्ति ज्ञान विहीने सर्वमतेन मुक्ति न भवति जन्म शतेन च'' शुकदेव महाराज कहते है कि ''कलौभक्तिः, कलौभक्तिः, केवलम्'' और उधर भगवद् गीता डन्के की चोट से कहती है, ''कर्मण्ये वाधिकारस्ते माफलेषु कदाचन''। कर्मणो ह्यपिबोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः अकर्मणश्च बोद्धर्व्यं गहना कर्मणो गतिः।

अब इस तिराहे पर खड़ा एक साधक सोच रहा है, ''केन मार्गेन अस्मर्भि गन्तव्यं, ''इन ह्वीच वेज वी शुड गो'', आइये हमारे समन्वयवाद अणुवाद ''अणोरणीयान् महतो महीयान्'' निम्बार्काचार्य महापीठ पर और सुनिये गोस्वामी जी के शब्दों में बोले कर्म उपासन ज्ञान वेद मत अकाम टप्पूबात नहीं ''कर्म उपासन ज्ञान वेद मत सो सब भांति खरो''। संत वही है जो किसी का खण्ड़न न करे, आलोचना न करे, कोई आलोचना करता है, तो एक ऊंगली आगे उठती है पर तीन ऊंगली उसकी ओर इशारा करती है। बुरा जो देखन मैं चला, मुझसे बुरा न कोय। चुनरी चाची ने कहा सुई माता तुझमें छेद है तो मुस्कुराके सुई ने कहा अरे चाची आप अपने छेद तो गिनों तो आज सब से बड़ी आवश्यकता है समन्वयवाद की जो श्रीजी महाराज ने एक स्टेज पर महाकुम्भ लगाकर सब आचार्यो को और पूरे भारत को यहां एक जगह झुका दिया। बड़ी आवश्यकता है समन्वयवाद की जो श्रीजी महाराज ने एक स्टेज पर महाकुम्भ लगाकर सब आचार्यो को और पूरे भारत को यहां एक जगह झुका दिया। बड़ी मुश्किल से तीन दिन का समय निकाल करके आये थे, मंच संचालक कुशल, वयोवृद्ध, श्रीमुरलीमनोहरजी के सौजन्य से हमें यदि किंचित् वाणी पवित्र करने का अवसर मिला और एक दो मिनट ज्यादा हो जाय तो कल हमें टाइम मत देना, देखिये जितना ज्ञान है उससे चौगुनी भक्ति कीजिये और भक्ति वही ''भज सेवायां धातु सेवा

धर्मः'' परम गहन लेकिन भक्ति से भी बढ़ कर कर्म है, ''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः'' हम सौ वर्ष तक कर्म करते हुये जीवें हराम का न खायें। ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'' बाइबिल भी कहती है, ''एक्शन इज टू ड्यूटी रिवाईनन डोर्ड आई कर्सन'' अब काम कैसे चले एक छोटा सा दृष्टान्त, दृष्टान्त से समझ में आ जाता हैं।

मान लीजिये आपके घर में बरात लौट करके आई, और संयोग से जाम हो गया सभी वाहन बंद, मेहमान सौ पचास ठहर गये अब क्या करे ससुर साहब ने नीची गर्दन करके पढ़ी लिखी बहू की ओर देखा और इतना ही कहा कि मेहमानो को अगर होटल में ले जांय तो फिर, चतुर बहू ने कहा-कि नहीं नहीं अभी हम बनातीं है। देखिये भक्ति के द्वारा कर्म सरल मधुर प्यारा बन जाता है और ज्ञान के द्वारा कर्म कम्पलीट परिपूर्ण आदर्श बनता है। तो भक्तिमती उस चतुर बहू ने कहा कि अहोभाग्य, आते आते हमें सेवा का गोल्ड़न चांस मिला और हमारे हाथ की सब मेहमान जीम के जायेंगे और घर में बड़ी ऊंची गर्दन करके मूंछ पकड़ के कहेंगे, हम नई बहू का हाथ का जीम के आये है और उसने तुन्त परिश्रम जैसा यहा का स्टाफ कर रहा है हम पन्द्रह बीस दिन पहले आये थे दो सौ आदमी यहां रात दिन सजावट का, लेखन का और काम में जुटे थे बिल्कुल भक्ति से तो भक्ति के द्वारा कर्म सरल मधुर प्यारा और अगर भक्ति न हो तो वह हिमालय के समान, पहाड़ के समान काम बन जाता है। वह नई बहू का यदि हाथ अभी तो मेंहदी के दाग नहीं छूटे नई साड़ी नहीं उतारी, आते आते चूल्हे में मूड़ ठूसेंगे ये सोचे तो काम हिमालय पहाड़ के समान वह बन जायगा।

हमने देखा दस बीस वर्ष के लड़के गुरुकुल से पढ़के जाते हैं माता की गोदी में बैठते है माता को भारी नहीं लगता बोझ नहीं लगता, प्रेम से बिठाती है वात्सल्य भक्ति है। कारगिल की पहाड़ियां पर छैः छैः महीने में पाकिस्तान ने कब्जा किया था एक एक रात में चालीस किलो वजन लादके और गये सेनापति और वहां तिरंगा झंडा फहराया राष्ट्र भक्ति, वात्सल्यभक्ति, तो इस प्रकार से भक्ति के द्वारा कर्म कम्पलीट परिपूर्ण बनता हैं जैसे एक नई ग्रेजुएट बहू आई और माता ने कहा कि आज बाजरा का टिक्कर बनाइये तो उसने एक किलो आटा डाला दो दो किलों पानी डालके घोलने लगी तो बताइये रोटी टिक्कर बनेगें कि लाप्सी तो आप समझगये होंगे कर्म उपासन ज्ञान वेद मत सभी दर्शन शास्त्रों का है ये तीनों आवश्यक है-पावभर आटा हो पाव भर घी हो, पाव भर शक्कर, कम्पलीट हलुवा बनता है टैस्टफुल एण्ड हैल्थफूल यू केन ईट विदाउट टी और पावभर यदि घी डालों और पावभर भक्ति रूपी शक्कर डाल दें और कर्म रूपी आटा न डालों तो घी और शक्कर शहद की तरह चाटो कहां हलुवा बना और पावभर आटा डालों और पावभर शंक्कर डाल दो अगर घी न डालो तो कहां से हलुवा बना बच्चों को बाँटो बच्चा कैसे खाया और फूफा फाफाऊ सब चला जाय और अगर भक्ति रूपी शक्कर न डालों घी और आटा डाल दे तो जिसको दे कहे कि यह तो विदाउट टेस्ट न खटटा न मीठा तो आप दृष्टांन्त के द्वारा समझ गये होगे कि आज वे सभी दर्शन शास्त्र समन्वयवाद को लेते हुये कर्म उपासन ज्ञान वेद मत इसी झण्डे के नीचे सभी वेद, बाइबिल कुरान शरीफ सभी आते हैं इनका सभी को आदर करना है और हम तो आपके बालक है विद्यार्थी थे विद्यार्थी हैं, विद्यार्थी रहेंगे, आई डोन्ट वान्ट प्रमोशन और इसी सिलसिला में महाराज के दर्शन करने आये थे। इनकी बड़ी उदारता जो हमें थोड़ी देर तक वाणी पवित्र करने का सौभाग्य दिया।

श्री देर्विष कलानाथ जी शास्त्रीः-

(भक्ति दर्शन) जयपुर

मुझे अधिक निवेदन नहीं करना एक ही बात कहनी है। बहुत बड़ी बात जो इस देश के जीवन में इस देश के आचरण में हजारों वर्षों से रही है जिसको देखकर विदेशी दाँतो तले अंगुली दबाते है, वह सबसे बड़ी बात यह है कि हमारी जो इनती लम्बी परम्परा जिसके स्वयं मूर्तिमान श्रीजी महाराज यहां विराजे हुये है, उस परम्परा में हमारा जो ज्ञान है, हमारा चिन्तन है उसमें यह सब बातें आतीं है जिनमें सबसे पहले वेद है, उसके बाद वेदान्त है, वेद , के चिन्तन के बाद जो उसके परे का चिन्तन है वह वेदान्त है षड़ दर्शन है विभिन्न प्रकार के दर्शन,दर्शनों के बाद भक्ति, भक्ति के बाद साहित्य का इतना विशाल वांग्मय उन सब पर चिन्तन करने केलिए एक सूत्र में उनको बांधकर जो आपने काम किया है वह अद्‌भुत काम है जैसा अभी आपने सुना शास्त्री जी महाराज ने कहा हम सबका परिवार संस्कृत सेवी परिवार रहा है और राजस्थान की बड़ी विशेषता यह रही जिस प्रकार सारे देश की जनता की विशेषता यह है कि इस सारे चिन्तन को एक सूत्र में जोड़ कर आप सब लोग जो संत हैं उसका मूर्तिमान प्रतीक बने बैठे हैं। वेदों पर आज अपरान्ह में सुनेंगे दर्शन पर अभी चर्चा हो रही है मेरे जैसा अल्पज्ञ दर्शनों के बारे में कोई विवेचन करे ये सम्भव नहीं है। आपने सुना न्याय दर्शन के बारे में कोई विवेचन सम्भव नहीं है। आपने अन्य दर्शनों का समन्वय भक्तिमय सुना। यह सब एक लम्बी परम्परा की देन है और उस लम्बी परम्परा को हम सब जी रहे है बहुत बड़ी बात, बहुत बडी बधाई की बात, प्रणाम सहित कृतज्ञता की बात श्रीजी महाराज के चरणों में मैं ये निवेदन करता हूँ कि इस देश के संतों ने इस सारी परम्परा को जीवित रखा है। यह सब हमारा सौभाग्य है संस्कृत वालों का सौभाग्य है जो पांच हजार वर्षों का इतिहास जी रहे है, स्वयं आज सब जी रहे है। आपके घर में कर्मकाण्ड है वह वेद के मंत्रो से होता है। पुरोहित आप बुलाते है, ब्रह्मण, विवाह आपके होता है वेद के मंत्र से होता है और उस वेद में जो ज्ञान का तन्तु है उस तन्तु से लेकर सारे दर्शन बने। इन दर्शनों को हम जी रहे है हमें मालुम नहीं है बहुत बड़े बड़े विद्वान् बताते है मेरे जैसा मूर्ख तो उनको समझ भी नहीं पाता उन सबके लिए दर्शनों को जैसा अभी आप थोड़ा सा कुछ योग का नमूना मिला ये सब हमारे जीवन में इस सबको हमारे सामने रखने वाली है भक्ति, उस भक्ति में यह सब समाहित है।

जब से भक्ति चली और उसका मूल हमारे सारे दर्शनों में भक्ति दर्शन के स्वयं मूर्तिमान श्रीजी महाराज विराजमान है जो कवि भी हैं चिन्तक भी है। निम्बार्काचार्य जी ने जो द्वैता द्वैत दर्शन दिया वह बहुत बड़े चिन्तन की परिणति है, बहुत बड़ा सोच है, बहुत गहरा ज्ञान है, इतना ज्ञान हम नहीं समझ सकते। कर्म, वेद का ज्ञान, दर्शन का इन सबको मिला करके हम क्या कर दिनभर वह भक्ति है जो आप सब कर रहे हैं किन्तु उसमें दर्शन भरा पड़ा है। मैं तो एक ही बात कहना चाहता हूँ कि आपके सबके चिन्तन में आप जो सुनते हैं, उसमें किस प्रकार वेद, दर्शन, ये सब भक्ति में मिलाकर आपके सामने आपकी कथाओं में आ गये है। भक्ति मार्ग जब से शुरू हुआ उसने जो चमत्कार किया वह देखने लायक है। आज यहां विराजे हुये हैं आर्य समाज के बड़े बड़े विद्वान् वेद का मन्थन करके आपको बतायेंगे, वेद में जो विधान है उसको आपको सामने लाकर बतलायेंगे। किन्तु भक्ति ने इन सबको कैसे जोड़के दिया है उस सबका समन्वय हम सब अपने जीवन में अपनी कथाओं में श्रीमद्‌भगवत में, रामचरित मानस में करते हैं।

हमको अब दर्शन का पता नहीं कि वह क्या है। वेद में जो कर्मकाण्ड है वो केलव मंत्रों में रह गया है वो

भी जिस बुरी तरह से रह गया है हम लोग जो संस्कृत वाले हैं इस बात से दु:खी हैं। आप लोग सब मातायें बराबर देखती है सौभाग्य की बात हे कि दूरदर्शन देखती होंगी पता नहीं आपके यहां कितना आ रहा है हमारे यहां जो केबिल आता है उसमें बहुत बहुत रातभर हमारी बहिनें मातायें देखती रहती है वह जो सीरियल है कहानी घर घर की क्यों कि ''सास भी कभी बहू थी'' ये सब उन सब में दो तीन बातें आ रही है। ये सब प्राचीन हमारी संस्कृति को पुनर्जीवित करने का प्रयास है क्यों है वह जो दिखा रहे हैं जिनका यह सीरियल है वह तो एक अंग्रेज हैं उनका नाम है सपर्डमर्डोप उनका तो स्टार प्लस उनका केबिल है और जो कर रही है वह कपूर है। उनको बहुत ज्यादा धर्म और दर्शन से लेना देना नहीं है किन्तु उन्हें मालुम है कि आपके जीवन में जब तक गायत्री मंत्र नहीं बोला जायेगा जब तक तुलसी की पूजा नहीं बताई जायेगी जब तक बड़े लोगों के चरण स्पर्श करते बच्चों को नहीं बताया जायगा तब तक हमारी भारतीय संस्कृति का ज्ञान भारतीय संस्कृति की चासनी के बिना कोई खाना आपको अच्छा नहीं लगेगा। इसलिए वह सब उसमें दिखाया जा रहा है। उसमें हो रहा है वह बात अलग है कि वेद मंत्र बोले जा रहे है घोर अशुद्ध बोले जा रहे हैं, अखबारों में आता है।

अतिथि देवो भव ये तो हम सबने जीवनभर पढ़ाया है लेकिन कोई कहने वाला नहीं है क्यों कि संस्कृत को पूछने वाले नहीं है लोगबाग तो कोई यह नहीं कहता कि भैया इसको शुद्ध करवा लो किन्तु उसमे जो आचरण है जो चिन्तन है उस सब में हमारा वेद से लेकर वेदान्त दर्शन सब कुछ छिपा हुआ है ये भक्ति मार्ग का चमत्कार देखिये आप जैसा अभी आपने सुना सारे विश्व के धर्मों में एक बात कही गई है कि हम सबको बनाने वाला, अभी आपको बड़े तर्क से बताया गया है कि हम सबको बनाने वाला कोई है, और ईसाई धर्म में यही है कि ये जो सारा ''क्रियेट'' है जो भी सारी जो सृष्टि है उसको बनाने वाला है वह ऊपर बैठा है। हमने देखा नहीं उसका स्वरूप क्या है, किसी ने देखा? दो हाथ हैं या चार हाथ हैं हम भी कहते हैं कि चार हाथ वाले विष्णु हैं एक हाथ में शंख चक्र गदा पद्म है, तो वह चार हाथ वाले विष्णु हैं तो हनुमानजी जो दो हाथ वाले है तो वह नहीं है क्या देवता? वे भगवान् नही है वे उनके अवतार नही है वे भी है। अंग्रेज ऐसा कुछ नहीं कहता वह कहता है कि ऊपर बैठे हैं अंत में सबको वहां जाना है। मुसलमान कहता है कि जिस दिन हम सब समाप्त हो जायेंगे उस दिन वह न्याय करेगा, न्यायकारी ईश्वर है आपने गलत काम किया तो उसका वहां दण्ड दिया जायगा। यही बात ईसाई कहते हैं कि यदि आपने गलत काम किया तो यहां उसके सामने प्रार्थन करो और उससे क्षमा मांगो, प्रायश्चित करो क्योंकि वह न्यायकारी है। सबका न्यायकारी ईश्वर, सबका रचयिता ईश्वर, सबसे बड़ा जो दिखता नहीं है ऊपर कहीं बैठा है ये बराबर हमको बताया, वह भी हम जानते है उसको हमने छोड़ा नहीं है।

वेदों में कर्म और ज्ञान ये सब ईश्वर की देन है उसका जो आचरण हम करते है कर्मकाण्ड। उसके बिना विवाह नहीं होता, उसके बिना बच्चे का नामकरण नहीं होता, उसके बिना अन्त्येष्टि कर्म नहीं होता। आपके यहां निधन हो गया शव पड़ा है बिना पुरोहित के दाह नहीं होगा। बारह दिन तक बराबर ब्राह्मणों को जिमा कर थक जाते हैं आप ये सब है किन्तु भक्ति ने जो चमत्कार किया वह अद्भुत है वहा सारा समन्वय है। भक्ति का समन्वय यह है कि यदि वह न्यायकारी ईश्वर जिससे बराबर हम थर थर कांपते रहे अन्य धर्मों के कांपते रहे अन्य धर्मो में कांपते हैं, डराते हैं उस ईश्वर से यदि आपने लौ लगा ली, प्रेम कर लिया, जो न्यायाधीश है उससे डरते रहे लेकिन अगर उससे हमारा प्रेम हो जाय

तो क्या आनन्द आ जाय, भक्ति ने यह सिखाया कि भैया जो ऊपर वाला वो तुम्हारे प्रेम के कारण तुम्हारे घर में आ जाय तो क्या चमत्कार है। जो सब दर्शनों का अधिष्ठाता है सारे दर्शन में आप बतायें कि श्रीजी महाराज द्वैत और अद्वैत द्वैताद्वैत का स्वाभाविक भेद भी है और अभेद भी है। यह बात इनती कठिन है कि हमारे समझ में नहीं आती। उन्होने ये चमत्कार कर दिया उन्होंने कहा कि यह जो सारा तत्व का सिद्धान्त है ये जो वेदान्त का सिद्धान्त है वो तुम्हारे घर में आकर नांचने लग जाय तो क्या मजा आ जाय तो उन्होंने यही कहा। आपके श्रीमद्भागवत में यह बतलाया कि श्री भगवान कृष्ण उसी ब्रह्म के स्वरूप हैं पहले ब्रह्म का स्वरूप समझो वह समझ में आ जाये तो बहुत बढ़िया, नहीं समझ आये तो कृष्ण भगवान के दर्शन कर लो, श्रीजी महाराज की वाणी सुन लो, वह आ गया।

श्रृणु सखि कौतुकमेकं नन्दनिकेताङ्गणे मया दृष्टं।
गो धूलि धूसरितो नृत्यति वेदान्त सिद्धान्तः।।

सब वेदान्त पढ़ लिया समझ लिया तो सखि से कहा तुझको वेदान्त आता है कि भैया मुझे वेदान्त तो नहीं पर मैंने वेदान्त को नांचते देखा है। कहां नाचते देखा है? कि नन्द के आंगन में छाछ को पीने के लालच से निरन्तर जो नांच रहा है वे वेदान्त का सिद्धान्त है वो उसको चमत्कार करके बता दिया और आपके श्रीमद्भागवत में बताते ही हैं बहुत अच्छा श्लोक है मुझे हर बार भुलाये नहीं भूलता।

जो बहुत बड़ा ज्ञानी है तत्वदर्शी है जो परमतत्व की चरम सत्य की गवेषणा करता है उसको पूछो कि तुमको परमतत्व मिल गया, चरम सत्य मिल गया, कि नहीं मिला, मोक्ष के बारे में मेरा यही कहना है। मैं मूर्ख और अज्ञ जड हूँ मैं हमेशा यह देखता रहा हूँ कि जितने दर्शन हैं सब एक ही बात बताये हैं कि संसार से कैसे मुक्ति हो इतनी रद्दी जगह मतलब ये कि हमारे भवबन्धन से मुक्ति हो जाय और यह संसार इतना दुःख का सागर है इससे मरके चले जांय कभी भी यहां न आयें तो ये इतनी रद्दी जगह है क्या? इतनी रद्दी जगह है तो हम यहां क्यों है हम को मर जाना चाहिये। ये बात न जाने कहां से आ गई ये संसार बड़ा खराब है इसलिए सब कुछ छोड़कर हमको मोक्ष यहां से प्राण छूट जांय। प्राण छुटने के बाद खराब है इसलिए सब कुछ क्या करना है हमको मोक्ष यहां से प्राण छूटने के बाद आपको स्वर्ग मिल जायगा, आपने देखा है क्या? यहां तो कम से कम आप अच्छे महल में रह रहे हैं श्रीजी महाराज के दर्शन कर रहे हैं, इनकी वाणी सुन रहे हैं, बढ़िया खाना खा रहे है, बाद में क्या होगा आपने देखा है। लेकिन हर आदमी भागना चाहता है ये भागने की बीमारी जिसने पैदा की उसके पहले वेदों में ऐसा बिल्कुल नहीं है। वहां त्रिवर्ग है। ये सब दर्शनों का चमत्कार है जिसके बारे में हम आज बात कर रहे हैं, भक्ति भी यह नहीं कहती है।

भक्ति कहती है कि हम ईश्वर की अद्भुत लीलाओं का आनन्दपान करें कभी इस संसार में नहीं आये ऐसा भक्ति वालों ने नहीं कहा। इसलिए वह यही कहते हैं कि ये सब आनन्द लेना हो तो भक्ति में वेद भी है, दर्शन भी है व आनन्द भी है वो जो द्वैत है द्वैत मैंने आपका बताया ईश्वर जो सबका नियन्ता है वह किसका नियन्ता है जड़ और जंगम का। जीव प्रकृति जड़ पदार्थ और चेतन पदार्थ और वो नियन्ता ईश्वर ही है द्वैत हैं हम द्वैतवादी नहीं हम तो त्रैतवादी है। ईश्वर जीव और प्रकृति इन सब का जो दर्शन है वह हमारी भक्ति में समाहित है क्यों कि हम यह कहते है कि उसका सगुण स्वरूप हमने जो बताया है तो वह यह कहते हैं कि आपकों वेदान्त में और दर्शन में आप निरन्तर ढूंढ़ते रहे आपको मिल गया क्या? नहीं मिला, तो नहीं मिला तो मैं बताऊं

आपको कहां ढूढे तो उन्होंने कहा कि-गोपियों के घर में माखनचोरी के लालच में जाकर जो ऊखल से बंध गया है वहां ढूढ़ो वहां मिलेगा तुमको संसार का चरम सत्य।

भक्ति में ये तो दर्शन है और वेद है सो तो आपको मालुम ही है। आपको महाराज श्री बतायेंगे और बताते नहीं है मैं हमेशा बताता हूं कि ये बात बताने का प्रयास करना चाहिये कि जो भक्तिवाले भी हैं जितने भी हमारे रामचरित मानस के प्रवक्ता है, श्रीमद्भागवत के प्रवक्ता हैं वह उस वेद को नहीं भूले हैं क्यों नहीं भूले है? वेद का जो तत्व है उसके बिना हम जी नहीं सकते इसलिए उन्होंने एक बात करवाइ, श्रीमद्भागवन में बहुत अद्भ़त बात कही है कि, भगवान् कृष्ण की स्तुति सारे वे द करते हैं जिन वेद के वह प्रतिपाद्य हैं वह कृष्ण भक्ति के प्रातिपाद्य भी हैं। किन्तु वेद स्तुति और वेद स्तुति दशम स्कन्द में है बहुत अद्भुत वो अद्भुत स्तुति हैं मैं ये कहता हूँ कि संस्कृत वाले भी उसको समझते कुछ नहीं है लेकिन अद्भुत चीज है। वेद, भगवान् को जब सोते हैं उनको जगाना चाहते हैं और जगाने में जो बात कहते हैं उसमें वेद की एक भी बात नहीं है। यहां वेद के विद्वान बैठें है एक भी बात वेद स्तुति में नहीं है सारा दर्शन है। ये विश्व कैसे पैदा हुआ किसमें विलीन होगा इस सब की बात वेद कहते है कि हम सब ये कह रहे है आप जागो। वेद, दर्शन की बात कहकर भक्ति को जगाता है, अद्भुत बात है और उसमें मैं अधिक विस्तार नहीं करूंगा यहीं समाप्त करना चाहुंगा कि यह भक्ति, तीनों का जो संगम है वही संगम आपने यहां पैदा किया है। एक श्लोंक में जिसका समझना टेड़ी खीर है माई का लाल कोई समझ नहीं सकता, उसमें सारादर्शन आ गया वह वेद के मुंह से दर्शन कहला कर, भक्ति की स्तुति करवाई है ऐसा अद्भुत काम किया है।

श्रीमद्भागवत में और ये भी अद्भुत काम आपने रामचिरत मानस में सुना होगा वहां भी क्या होता है। भगवान राम का राज्याभिषेक हो गया। राज्याभिषेक के बाद जो स्तुति पाठ करते हैं वे कौन करते हैं? वे वेद करते हैं। सारे वेद रामचन्द्र जी के अभिषेक के बाद स्तुति पाठ करने आते हैं वे भी सारी बात दर्शन की कहते हैं। वेद दर्शन और भक्ति का अद्भ़त समन्वय हमारे साहित्य में है। इसलिए बहुत बड़ा काम आपने ये किया है वेदवालों को एक मंच पर बुलाकर बिठाया वहीं दर्शन वालों को बिठाया, और साहित्य और वांग्मय के तो आप स्वयं पुरोधा हैं तो हम लोग विभोर हो जाते हैं सबेरे से शाम तक वह हम सुनते है यह अदॅभुत काम किया इसके लिए बहुत बहुत बधाई। धन्यवाद।

श्री अलबेली शरण जी महाराजः-
(सरसनिकुँज- जयपुर)

श्रीवृन्दावन बिहारी लाल की जय, जगद्गुरु श्री श्रीजी महाराज की जय।

सभी आचार्य चरण पधारे जिनके चरणों में साक्षात् दण्डवत् प्रणाम। आचार्य जयन्ती महोत्सव में क्या मिला और क्या मिलता है। श्री सद्गुरुदेव की कृपा से सरस निकुंज में श्री बड़े गुरुदेव ने जब प्रारम्भ किया आचार्य जयन्ती, आचार्य जयन्ती में हम ये कृपा पाते हैं जब भी भारत में पर्व आते हैं। राजा महाराजाओं की जब साल गिरह आती थी। जन्म जन्मान्तर यानी उनके जो कैदी होते थे उनकी सजायें माफ होती थीं और आज हम को क्या मिलता है। हमें भी यही कृपा मिलती है आचार्य चरणों के अंदर इस जयन्ती महोत्सव में जन्म जन्मान्तर के बंधनो से मुक्त कर देते हैं ऐसी कृपा होती है। भैया कि हम जन्म जन्मान्तर के बंधन से मुक्ति पाने के लिए अगर चरणों में हाजिरी दे दी तो हमारा बंधन मुक्त हो जाता है उसी पे बहुत सुन्दर एक गजल है, गुरूदेव की कृपा से मैं आपकी सेवा में भेंट कर रहा हूँ।

हम दिल तम्बूर के तार मिला, रहमत के तराने गातें है।
हम दिल के उजरे में कैद हुये, कहीं और न आते जाते हैं॥

हमने ऐसे रहीम का दर पकड़ा जहाँ पाप न देखे जाते हैं।
जो कर कर प्यारे पाप अरे दिलवर तक चट पहुँचाते हैं॥

हम इस मन की विभूति का क्या मैं कहूँ संभव सब दिखलाता है।
पर इसका लक्ष्य परम है क्या यह सद्गुरु ही बतलाते हैं॥

मेरे दिलवर के दर पर हर दम अनहद के बाजे बजते हैं।
जब भी सुरताल को जोड़े उधर अद्भुत आनन्द पाते हैं॥

हमें राज नहीं महाराज मिले मेहलात बनाना सिखाया है।
हम बिन सामान यहाँ का लिए नित नये मेहलात बनाते है॥

यह महल अनूपम जादू का दिलवर को खैंच बुलाता है।
उनके संग हम आनन्द से फिर नित नये रंग रेली मनाते है॥

ये देन सरस सत्गुरु की है डन्के की चोट सुनाते हैं।
हम इस आनन्द जुगल रस में श्री सरस कृपा से आते हैं॥

भैया आचार्य जयन्ती में सबसे बड़ी कृपा यही है कि हमें जन्म जन्मान्तर से मुक्त करते हैं और जो आचार्य जयन्ती में आ गया उनपे असीम कृपा हो गई।

श्री राधेबाबा :- (तुलसी साहित्य के दर्शन पर)

इस जगह जहां आज महाराज श्री की कृपा से खड़ा होने का अवसर मिला। हम उपयुक्त तो नहीं हैं लेकिन हमारी संस्कृति में एक परम्परा चली आती है कि पत्थर के भी यदि सिंदूर लगा करके जंगल में चबुतरे पर खड़ा कर दिया जाय तो लोग हनुमान जी मान करके उसकी पूजा किया करते हैं और वह फल देना प्रारम्भ कर देते है तो मेरे तो सिंदूर लगा दिया गया है। बहुत प्रसन्नता की बात है अनेकों दर्शन की बातें यहां शुरू हुई और सुबह मुझे पता चला माइक के आवाज लगी तब बोले सर्व धर्म समभाव का विचार यहां मंच के ऊपर रखा जायगा।

सर्व प्रथम न्याय का मामला चला और न्याय का मामला जब चला तो न्याय का एक विशिष्ट स्वरूप होतो है कि अनेक विवादों में से तत्व की बात को निकाल करके अपनी आत्मा में उतार लें ये न्याय अपनी आत्माका करना है और न्याय के बाद हमारे दिल्ली वाले वक्ता जो आये उन्होंने कहा योग, तो सज्जनों मेंरा निवेदन है कि इतना ही है कि न्याय क्या हैं यह पहचान करके योग की लम्बी परिभाषा में जाने की जरूरत नहीं है। योग का मतलब होता है जोड़ना। प्लस कर देना अर्थात् ये न्याय कर लो कि हम क्यों आये हैं महाराज श्री ने कहा न आप अपने आप से पूछो कि क्या जरूरत थी तो आप अपने आप से पूछें कि हम क्यों और। ये बात जब तुम्हारे सामने समझ में आ जांये तो प्लस कर दीजिये परमात्मा के साथ में अटैचमैन्ट कर दीजिये, फिर आपका कभी डिटैचमैन्ट नहीं होने वाला और जब तक हम प्लस नहीं करेंगे तो अभी हमारे शास्त्री जी ने कहा न कि भक्ति वाला आनन्द किसी से नहीं आ सकता है किसी भी सूरत में नहीं आ सकता है।

आपसे मैं निवेदन करूं लेकिन सर्वधर्म वाली बात जहां आती है हम आपको सर्वधर्म वाली ही बात आपको लेकर के चलता हूं पहले कुरान की यात्रा के ऊपर, कुरान में आयतें होती हैं और आयतों में तीन सौ बहत्तर नम्बर की आयत है- ''सातकुलीमयैयममुख्तवैलीफसवी'' अल्लाह, और उस आयत का मतलब होता है कि हे परवरदिगार तूने हमको यहां पैदा किया है हम ऐसा कोई काम न करें जिससे हमें कभी कुफ्र का भागीदार होना पड़े। उसके बाद आता है जैन धर्म। जैन धर्म में होते है चौबीस तीर्थकर। और चौबीस तीर्थकर का वर्णन करने का अवसर नही हैं। इसके बाद में इस्लाम धर्म, जैन धर्म, और अपना हिन्दू धर्म तो है ही है कई लोग हिन्दू धर्म की बात भी करते है हमारे संस्कृत के महान विद्वान् लोग बैठे हैं हम

तो जानबूझ करके गलत बोलेंगे क्योंकि हमको व्याकरण नहीं आती है लेकिन जहां हमने टूटी फूटी व्याकरण कहीं से पढ़ी है उसके माध्यम से मैं आपको निवेदन करता हूँ हिन्दू धर्म भारत के किसी भी वेद में या किसी भी शास्त्र में, उपनिषदों में हिन्दू धर्म, हिन्दू शब्द नहीं है। हिन्दू शब्द का स्वरूप क्या है-हिनन्स्ति नन्दयति जनस्य अदीनंगावो तस्मात् हिन्दू केथ्यतां, जिसके दरवाजे पर जिस किसी भी व्यक्ति के दरवाजे पर गाय माता हिनहिनाती है आनन्द कर देती है उसके आनन्द में उसके आँगन में बहुत आनन्द के साथ जो है वह गौ माता प्रसन्न रहती है जिस गाय का ऐसा स्वरूप है ऐसे जिसके दरवाजे पर है, वह कुछ भी हो उसके आंगन में बहुत आनन्द के साथ जो है वह गौ माता प्रसन्न रहती है जिस गाय का ऐसा स्वरूप है ऐसे जिसके दरवाजे पर है वह कुछ भी हो उसको हिन्दू कहे बिना नहीं रहा जा सकता है।

मुसलमानों तो उनके लिए इतना सा कह करके आगे बढ़ जाऊंगा चूंकि लम्बा उसमें अपने को, नहीं चलना, लेकिन सर्व धर्म समभाव है न इसलिए उस धर्म को भी तो खींचके लाना है क्यों कि मेरे इस भारतीय संस्कृति के धर्म में अभी भी इतनी दम है कि सारे धर्म का प्रेणेता हिन्दू धर्म है और ये हमारा सनातन धर्म है। एक बार हमारा कार्यक्रम चल रहा था मध्य प्रदेश धामनौद के पास में ओझर हैं वहां कार्यक्रम चल रहा था मुसलमान लोग बहुत थे सुनने आये बोले हमारी चीज इसमें क्या है, मैने कहा तुम्हारे पास समय अगर है जो सुन लीजिये तुम्हारी चीज इसमें क्या है। हमारा रामचरित मानस में प्रसंग चल रहा था कि राम नाम के अन्दर सब चीज समाहित है राम से दुनियां में कोई अलग नहीं हे बोले हमारा यह अल्लाह इस राम में है क्या? हमने कहा है चश्मा उतारो, बोले ये चश्मा उतारो बोले हां मैंने कहा अज्ञान का चश्मा उतारिये आप। अज्ञान का चश्मा उतारने के बात कह करके हमने कहा, आप यह बताइये कि मोहम्मद साहब को क्या कहते है उन्होंने कहा रसूल, पैगम्बर तो मैंने कहा आपके शुरू से लेकर के अब तक कितने पैगम्बर हो गये, वह गिनाने लगे, मुसाले सलम, फलाले सलम, हमने कहा कि अंतिम कौन है बोले मोहम्मद साहब मैंने कहा उसके बाद कोई हुये बोले कोई नहीं, मैंने कहा यह हमारे राम नाम का प्रभाव था हमारे राम जब तक चाहते थे तुम्हारे रसूलों को पैगम्बरों को पैदा करते रहे और जब हमारे मनीषियों ने मना कर दिया कि अब इनकी जरूरत नहीं, सब काम हम संभाल लेंगे बंद कर दिया पैगम्बरों को पैदा करना, बोले कैसे कर दिया। मैंने कहा हमारे राम में एक अक्षर है, 'र' का मतलब होता है रसूल और उसके दूसरा अक्षर है 'म' म का मतलब होता है मोहम्मद साहब, अर्थात रसूल और मोहम्मद इसी राम में है अब तुम्हें किसी मोहम्मद साहब, अर्थात रसूल और मोहम्मद इसी राम मे है अब तुम्हें किसी मोहम्मद साहब की जरूरत नहीं है। जैन लोग कहने लगे बोले महाराज इनको तो आनन्द है लेकिन हम लोग भी तो सुनने के लिए आते हैं हम तो बड़े अहिंसा के पुजारी हैं और इतने अहिंसा के पुजारी है ये तो आपने कल फोटो देख ली। हिन्दू लोग गाय की हत्या का वध का इनका सारा साजिश रचते हैं।

ये कल शंकराचार्यजी ने अपनी वाणी से बिल्कुल कांच की तरह आपको समझा दिया हमने कहा कि अच्छा आप लोग आये हो हमारे धर्म से अलग करने की बात करते हो, हमारे धर्म से तुम्हारा धर्म अलग नहीं है इस राम में से तुम्हारा जैन धर्म निकला हुआ है। बोले ऐसा कैसे हो सकता है। हमने कहा कि देखिये हमारे राम में पहला अक्षर है 'र' और आप अपने प्रथम तीर्थन्कर का नाम बोलिये, एक जैन साहब खड़े हुये कहने लगे हमारे प्रथम तीर्थङ्कर ऋषभ देवजी, मैंने कहा कहो हमारे राम से तुम्हारो जन्म शुरू हुआ कि

नहीं, उन्होंने कहा बोले हुआ तो सही, तो बोले फिर तुम्हारे अन्तिम तीर्थङ्कर कौन है बोले भगवान् महावीर तो मैंने कहा मेरे राम जी का 'म' और प्रथम अक्षर 'र' र से ऋृषभ देव जी और 'म' से महावीर स्वामी इसके बीच में बाईस तीथङ्कर आ जाते है अब किसी और तीर्थङ्कर की जरूरत नहीं, क्यों कि राम शब्द एक बार उच्चारण कर लीजिये चौबीस तीर्थन्करों का स्वरूप उसमें आ जाता है। लेकिन मेरे भक्त प्रेमी सज्जनों लोगबाग फिर आगे आता है एक धर्म, और इसके बाद एक छोटा सा खटखट आ गई आपके सामने वो दृष्टांत देते हैं महाभारत में एक कथा आती है-एक चाण्डानलीनी मांस पका रही थी ओर उसमें लकड़ी जला रही थी मुर्दे की हड्डियां बर्तन था, मुर्दे की खोपड़ी ओर उसमें पका रही थी मांस और वह मांस किसका था, गधा का सारी चीज बिल्कुल अपवित्र और वह मांस पका करके उसने एकान्त में रख दिया और एक सूखे हुये चमड़े से उस मांस को ढक दिया एक राहगीर संत ने पूछा बोले इनता अपवित्र सामान भी तू इस प्रकार ढक करके रख रही है इसका कारण क्या है? उसने कहा कि महात्मा जी आप तो संत है आपकी छाया से इसपे फर्क नहीं पड़ेगा लेकिन इस मार्ग से अगर कोई देशद्रोही निकलेगा और अगर उसकी छाया मेरे मांस पे पड़ जायेगी तो मेरा मांस अपवित्र हो जायेगा। सज्जनों तो देशद्रोह से बड़ा और संसार में कोई द्रोह नहीं है और वह देशद्रोह हो रहा है हमारे जगद्गुरु शंकराचार्य जी महाराज की गिरफ्तारी हो करके तो ऐसे देशद्रोही तो इस संसार में उनका समापन होना चाहिये, इसी के साथ अपनी वाणी को विराम देते हैं॥

कार्ष्णि पीठाधीश्वर श्री गुरुशरणानन्द जी महाराज :- (रमणरेती-गोकुल, मथुरा)

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणत क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः।।

काशी निवास का मैं एक अनुभव आप लोगों के सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। हमें प्रारम्भ में आदेश हुआ था यह दर्शन सभा है और दर्शन आपका विवेच्य होगा। हमारे आदरणीय मंच मंत्री महोदय का निर्देश हुआ कृष्णविषय चर्चा होनी चाहिये। हम दोनों आज्ञाओं का निर्देशें का पालन करने का प्रयास करेंगे। पूज्य आचार्य चरण का निर्देश हुआ था इतने बड़े बड़े विद्वान् यहां विराजमान हैं उनके सामने चर्चा करने का या दर्शन विषयक गम्भीर सागर में चञ्चु प्रवेश करने का दुस्साहस करना है, लेकिन ''सबै नचावत राम गुसाँई'' और इस दृष्टि से हम कुछ अनुभव आपके सामने प्रस्तुत करेंगे और देखेंगे ये दर्शन के समैक्यता का हम लक्ष्य लेके यहां प्रस्तुत हुये हैं, तो उसमें भेद के हेतु क्या हैं। तो पहले दर्शन की आवश्यकता क्या है क्योंकि हम सब जानते हैं दर्शन का मूल जिज्ञासा से है तो चलो पहले वह काशी का अनुभव आपको बतायें क्यों कि बड़ी देर से गुरुगम्भीर चर्चायें चल रही है और थोड़ा हम लोग हंस खेल लें। हम लोग ब्रजवासी लोग है न, हमारा लाला बहुत छोटा है और उसको हम खिलापिला के हंस हुंसू करके जरा ठीक रखते हैं, तो पहले हम लोग थोड़ा हंसले और इसके बाद फिर दर्शन के गम्भीर विषय के ऊपर भी चञ्चु प्रवेश किया जायगा और वह समझने की बात है केवल हंसने की बात नहीं है क्यों कि केवल हास्य का ये मंच नहीं है दर्शन का मंच है और हमकों दर्शन करना है। तो जब हम काशी में अध्ययन करते थे तो हमारा एक अभ्यास था।

प्रातःकाल गंगा स्नान करके शिव दर्शन करना और फिर अपने आसन पे आकर भगवान् शालिग्राम जी का भी पूजन करना और सन्ध्या समय हम नावों से उस पार जाया करते थे भ्रमण के लिए कि एकान्त में कुछ राम राम करेंगे। तो हम एक दिन की घटना आप लोगों को बता रहे हैं और हम कोशिश करेंगे उन्हीं की

भाषा में सुनाने की। तो हम गंगा स्नान करके और उस समय केदार घाट पे हम जाया करते स्नान करने के लिए तो हाथ में कमण्डलु में गंगाजल था ऊपर केदारेश्वर का अभिषेक करना था और काशी की एक परम्परा रही है पहले कि कुछ विद्वानों और संतों के घाट होते थे तो उसमें इतर लोग या तो आयेंगे नहीं स्नान करने और यदि आयेंगे तो वहां साबुन इत्यादि का प्रयोग नहीं करते तो ध्यान रखते थे। किसी साधु, ब्राह्मण और विद्वान् का किसी प्रकार से अपमान न होने पाये। वहां धोबीघाट बगल में है जहां धोबी लोग कपड़ा धोते हैं। हम स्नान कर गंगाजल का कमण्डलु लेके ऊपर चढ़ रहे थे। हम विज्ञान के विद्यार्थी भी रहे इस वेष में आने के पहले तो एक जिज्ञासा का स्वभाव तो हमने देखा एक धोबी गधे के कान को ऐसे पकड़े हुये खड़ा है, हमने सोचा बात क्या है ये गधे का कान पकड़के खड़ा है और कपड़े की मोटरी पोटली माने बनारस की भाषा में जो बड़ी गठरी होती है उसको मोटरी कहते है वो बगल में पड़ी है। हमको जिज्ञासा हुई कपड़ा धो क्यों नहीं रहा हैं। तब तक उधर से एक दण्डी स्वामी जी आ रहे थे। अच्छा काशी में मठ ओर लोगों के आवास लगभग जुड़े हैं तो एक बड़ा पारिवारिक सौहार्द है बाबाजी का आदर भी करते है उनसे बड़ा घरेलू जैसा प्रेम भी करते हैं और बाबा जी लगभग उसी तरह बात कर रहे हैं तो हम उन्हीं की भाषा में वह बात बताने जा रहे हैं कि वे दण्डी स्वामी जी पूछते है-अरे का हो धोबिया, हम उसका अनुवाद भी कर देंगे।

लेकिन हम उनकी भाषा पहले वोभी बड़ी मनोरंजक है। अरे का हो धोबिया अरे आज कपड़ा-अपड़ा न धुवाई का इ गदहवा काने पकड़ै ढ़ाड हुवैका-दस का मतलब धोबी आज कपडे नहीं धोवोगे क्या यह गधे का कान ही पकड़े खड़े रहोगे, कपड़े नही धुलेंगे। तो धोबी का उत्तर अरे सरकार, सरकार माने आदर का शब्द है अरे सरकार का कुहिं अरे गदहवा का सैदनवाँ हम भुला गइली हा माने हम गधे का सैदना सैंदना माने इतना बड़ा रस्सी टुकड़ा होता है जिससे वह गधे के और पैर को बांध देते हैं तो गधा वहीं खड़ा रहता है दिन भर वो कपड़ा धोते हैं सुखाते है और सुखा करके शाम को बांध के टिक टिक टिक टिक करके ले जाते हैं और अगर जो लोग काशी गये हों तो रात को सड़क पर वे गधे आपको स्वतन्त्र घूमते मिलेंगे या उनकी विरादरी वाले मिलेंगे दूसरे लोग काशी की सड़क पे नहीं मिलने वाले। आप समझ गये होगें मेरा क्या मतलब है तो गधे वहां काशी में खूब रात को घूमते मिलते हैं। कभी कभी हम लेट ट्रेन से जाते थे तो उनके दर्शन या उनके बिरादरी वालों के दर्शन होते रहे। तो ''गदहवा के सैंदनवा भुलाय गईलियै सरकार औ इ गदहवा भाग जाई तौ इ मोटरिया कईसे जाई'' मतलब अगर ये गधा भाग जायेगा तो हम शाम को गठरी कैसे ले जायेगे। तो दण्डी स्वामी जी ने बड़ी बढ़िया युक्ति बताई। 'अरे ओ सुना धोबिया ई जहाँ गदहवा के रोज बाँधाला न वाँ लइजा और झुट्टै ऐसे घुमाइ करके और उकरे टाँग के ऐसे कइला', मतलब जहां रोज गधे को बांधते हो वहां ले जाओं और ऐसे ही झूंठ झूंठ ऐसे हाथ घुमां देना और थोड़ा टाँग को ऐसे कर देना। तो सरकार गदहवा कहूं न जाई, अरे तू करैके देख न उनने पूछा जिज्ञासा की गधा कहीं जायेगा तो नहीं अरे तुम करके देखो हमारे संत लोग जितनी बातें बताते हैं वो प्रेक्टीकल बताते है अनुभवजन्य बताते हैं कि तुम बाँध के देखो।

तो धोबी पकड़के ले गया और उसने ऐसे ऐसे करके और ऐस टाँग कर दी, अच्छा हम खड़े खड़े यह तमाशा देख रहे हैं। जिज्ञासु की तरह तो देखा थोडी देर धोबी वहां गया और गधे ने तीन टाँग तो हिलांई लेकिन वह चौथी टाँग जिसको ऐसे किया वह वहीं की वहीं कोनन्सैटेन्स की तरह खड़ी है फिजिक्स वाले जैसे करते

है धोबी बड़ा प्रसन्न हुआ। अरे हमारा बाबा तो बड़ा सिद्ध बा, बिना डोरियै के गदहवा बांददहिले और उनके सालभर तक कपडा फ्री धुलाई फ्री माने बिना पैसे के बड़ी श्रद्धा हो गई धोबी को तो खैर उनने दिनभर कपड़े धोये होंगे, सुखाये होंगे जो किया होगा, सन्ध्या समय हम नाव पे घूमने के लिए निकले माई डियर। तो अब देख रहे हैं वही धोबी कपड़े के मोटरी ओटरी गधे पे बाँधे हैं और क्रोध की वजह से धोबी और दण्डी स्वामी जी को गाली सुना रहा है ये तो भाई काज पर कुछ और है, देखा अपना तो बाबा होइ गइलै बनै औ हमहुँ के बाबा बनइयै, बारह सौ रूपैया क हमार गदहवा नाँस कईदइला औरबड़ा सुनाय और हम तमाशा देख रहे थे और उस समय तो बोल रहे थे और तब तक वह स्वामी जी उधर से ही निकले तो कहा ओ बाबाजी ओ बाबाजी अरे का भइल धोबिया, अरे हमार गदहवा नाँस कर दियला माने हमारे गधे का नाश कर दिया अरे का नाश कर दिया अरे चलतय नहीं, सबसे तेज हमार गदहवा और कबहुँ कोई कोड़ा मारय जरूरत नाहिं पड़ी, हम मार कोड़ा कोड़ा हार गइली गदहवा चलतयै नहिं तो नांस कर इदला हम का कख, माने तुमने हमारे गधे को कभी मारना नहीं पड़ता था भगता था अपने आप चलता था तुमने ऐसा नांस कर दिया वो चल ही नहीं रहा, कोड़ा मार मार के हम थक गये। तो स्वामी जी पूछें ओके खोलला हो कि नाहीं माने तुने उसका खोला है कि नहीं ।

अरे बाबा तू तो जैसे बाबा बैला हमहुं के बेवकूफ बनाइवा अरे ओके हम बंधली कब हैं जो ओके खोली, माने बाबा ने कहा तुमने उसको खोला है कि नहीं तो उनने कहा अरे बाबा तुम्हारा दिमाग खराब है, अच्छा वहां ये सब भाषा चलती है आपस में अरे हमने उसको बांधा कहां था जो खोले वैसे ही उसकों झूठ झूठ खोल दो। तो माई डियर, धोबी ने और झूठ-मूठ और ऐसे करके उसका पैर सीधा किया और मेरी आँखों के सामने गधा सरपट खट खट करके भाग गया। ताली बजाने में बडा अच्छा लग रहा है माई डियर लेकिन थोड़ा समझ करके देखो यही दुर्दशा कहीं हमारी भी तो नहीं है। प्रारम्भ में हमारे नैयायिक जी ने संकेत किया था। जड़ जीव ग्रन्थि पड़ गयी यद्यपि मशा छूटति कठिनई जड़ औरचेतन का ऐक्य कभी संभव नहीं, भगवान शकराचार्य के शब्दों में तमः प्रकाशवत् अत्यन्त विरूद्ध स्वभावयोः उनका अत्यन्त विरूद्ध स्वभाव है लेकिन फिर भी जड़ चेतन ग्रन्थि पड़ गई और यद्यपि मशा तीनों काल में वह है नहीं, लेकिन फिर भी 'छूटति कठिनई' किस तरह से हम लोग कितने प्रकार के कोड़े रोज रोज खा रहे है लेकिन सौ सौ जूता खाय तमाशा गोल में ही है। दर्शन हमारी इसी दृष्टि को या मन्द दृष्टि को या अदृष्टि का निमत्त करता है जिसके द्वारा देखा जाय। जिसके द्वारा जड़ और चेतन को अलग अलग कर दिया जाय यही तो दर्शन है माई डियर। एक पाश्चात्य दर्शनिक ने बड़े अच्छे ढंग से ये बात थोड़ा कही।

दर्शन की चर्चा है इसलिए थोड़ा सा हम उसका चिन्तन कर रहे हैं। पहली चीज हम लोग ध्यान कर लें दर्शन का मूल जिज्ञासा है। मैं कौन हूँ ये संसार क्या है, इस संसार का मेरे साथ सम्बन्ध क्या है। यही समस्या है। आखिर मैं हूँ कौन। कई लोग कहेंगे हमारे गुरु महाराज हैं। कई कहेंगे नहीं हमारे गुरुभाई हैं। कोई कहेंगे नही हमारे बिरादरी के है न जाने कोई क्या कहेगा। ये सवारी हैं। अगर मैं गाड़ी में जाता हूँ ये सवारी हमारी है खबरदार तुम मत ले जाना। अब मैं क्या हूँ? मैं सवारी हूँ कि अमुक पीठाधीश्वर हूँ कि मैं गुरुभाई कि गुरु जी महाराज हूं, किसी का बेटा हूं कई कई हमको भाई बनाते हैं। कई कई माताये हमकौं बेटे की तरह मानती हैं तो मैं हूँ क्या? ये जिज्ञासा तो एक हम हैं क्या यह बड़ा प्रश्न है तब एक विदेशी विद्वान् है उनका नाम तो हमारे सब दर्शन के विभागाध्यक्ष और सब बैठे हैं

आपकों बतायेंगे। उसने कहा कि आखिर मैं क्या हूँ क्यों कि संसार में तो उसने कहा, यह संसार क्या है जैसे अभी हमारे नैयायिक जी ने कहा कि ये संसार कार्य है तो कार्य है ठीक है, घंटा दिवस है ठीक है, और लेकिन ये कार्य अवास्तविक है इसका प्रमाण क्या है किसी ने कहा भाई प्रमाण क्या है जो दिखाई पड़ता हैं, जो सत्य है जो दिखाई न पड़े वो असत्य है।

अगर हमको महाराज श्री के दर्शन हो रहे हैं तो सत्य है और अगर नहीं हो रहे तो महाराज श्री अपने महल में विराजमान हैं। तो उसने कहा जो दिखाई पड़े वह सत्य है जो न दिखाई पड़े वह असत्य हैं। तो फिर पूछा गया कि शंख में पीलापन दिखाई पड़ता है या स्वप्न में हमको घट के दर्शन होते हैं। तो पहले तो उसमें नैयायिकों की भाषा में जहां से प्रारम्भ, वहीं करें कि उसमें अर्थ क्रिया कार्य तो है कि नहीं, अगर घट दिखाई पड़ रहा है उसका कार्य है जल लेकर आना अगर वो जल लेकरके आता है तो घट सत्य है और अगर वो जल लेकर के नहीं आता है तो घट असत्य है। इसमें अर्थ क्रिया कारिता ये थोड़े शब्द मैं टेड़े मेड़े इसलिए बोल रहा हूँ कि थोड़ी इस बिरादरी की बात करें और थोड़ी ज्यादा अपनी बिरादरी की बात करेंगे थोड़ा थोड़ा हर जगह हमको देखना पड़ता है तो थोड़ा इस बिरादरी की भी चर्चा करलें फिर अपने बिरादरी की बात करेंगे। तो अर्थ क्रिया जिसमें है वह सत्य है जिसमें अर्थ क्रिया कार्य नहीं वह असत्य है प्रातिभासिक है जैसे कि रेगिस्तान मे हमको पानी दिखाई पड़ता है तो दिखाई तो पड़ रहा है लेकिन अगर हम पानी पीने जायेगे तो हमरी तृषा की निवृत्ति नहीं कर पायेगा तो इसलिए तृषा की निवृत्ति के जल का कार्य है अगर वह जल का कार्य नही हो पा रहा है हमारी तृषा की निवृत्ति नही हो रही है। उसमें अर्थ क्रिया कार्यत्व के अभाव के कारण जल असत्य है मिथ्या है ये निर्णय हो गया । तब दूसरा जिज्ञासु कहता है कि स्वप्न में अगर हमको घट का दर्शन हो रहा है तो वह है कि नहीं क्यों कि उसमें अर्थ क्रिया कार्यत्व तो है अगर प्यास लगेगी तो स्वप्न का ही जल हमारी प्यास की निवृत्ति करेगा, जाग्रत का गंगाजल हमारी प्यास की निवृत्ति नहीं कर पायेगा तो अर्थ क्रिया कार्यत्व तो वहां भी है। इस तरह हम और इसको न आगे बढ़ाते हुये हम कहें हर जगह संदेह होता है। अरे मैं कौन हूँ। इसी में संदेह हो जाता है कोई कहते है कि ''पंचतत्व पर अगम शरीरा'' कोई कहता है कि ''जीव अनन्त'' हैं कोई कहता है कि ''एक हैं,'' ये अनेक प्रकार जिज्ञासायें। तो मैं हूँ कौन? तो उसने कहा, देखो संसार ''में ये जो संसार दिखाई पड़ रहा है, कई लोग कहते है संसार स्वप्न है तो ठीक है, देर तक चलने वाला स्वप्न है,कई लोग कहते है नहीं संसार सत्य है। अच्छा देखों इसकी विवेचना अभी हम दो मिनट बाद करने जा रहे है क्योंकि ये सर्वधर्म समन्वय और सर्वदर्शन समन्वय का मंच है इसलिए हमको वही दृष्टि रख करके और अपने प्रवचन की गति आगे बढ़ाना है।

अगर जब हम स्वप्न में सो रहे होते हैं, स्वप्न में अगर गुरु के दर्शन मिल जांय तो साक्षामत् में गरु के दर्शन का सुख मिलता है। बल्कि जाग्रत में तो दूर से दर्शन मिले, नजदीक से कितना प्रेम से मिले वहां ज्यादा छुट्टी है तो उसने कहा कि हर चीज के विषय में तुम संदेह कर सकते हो, लेकिन संदेह करने वाले के विषय में तो संदेह नहीं, अगर कोई संदेह करने वाला है तभी तो संदेह होगा तो पहली एक सीढ़ी मिल गई, हमको, संसार में और कुछ है कि नहीं है लेकिन एक चीज नितान्त सत्य है। जो संदेह करने वाला उसकेऊपर संदेह कोई नहीं कर सकता तो इसलिए संदेह कर्ता के विषय में संदेह के अभाव होने से ये एक सीढ़ी बन गई इसको हम आधार बना लें। अच्छा संदेह करने वाला माने क्या? संदेह कर रहा है माने वो विचार कर रहा है तो

अगर विचारक रहा है तो कम से कम विचार करने वाला और विचार अपने आप में सत्य हो ही गया इसका मतलब ज्ञान तो सत्य हो ही गया है बिना ज्ञान के किसी भी प्रकार की जिज्ञासा कर नहीं सकता। वह ज्ञान क्या है वह एक इतर विषय है।

अगर ज्ञान की बात आई तो ज्ञान को हमारे यहां जानते हैं सब लोग अत्यन्त सूक्ष्म माना जाता है। आप लोग यहां परम्परा है कि नहीं हम लोग द्वितीया के चन्द्रमा के दर्शन करना बड़ा मंगलमय मानते हैं। भगवान भूतनाथ के द्वितीया के चन्द्रमा का दर्शन करना बड़ा मंगलमय होता है। देखों, अब एक हमारे और आपके समझने की बात है, और विद्वानों के लिए भी एक संकेत है। द्वितीया के चन्द्रमा का दर्शन करना परम मंगलमय है और जो एक बार दर्शन कर लेता है। तुम आज द्वितीया के दर्शन किए, बोले कहां है वो देखो तो दिखाई नहीं पड़ रहा है तो ये जो परमतत्व है। अभी हम जो यशोदा सुत लालित है, उसकी अभी हम चर्चा नहीं कर रहे है पहले दर्शन की खट खट कर लें और फिर पीछे ब्रजवासी रबड़ी हम लोग खायेगें, लेकिन पहले दांत खटखट करलें पहले दर्शन वाली बात और फिर जो हमको मंच महोदय मंच मंत्री महोदय ने निर्देश किया उसको भी दर्शन के परिप्रेक्ष्य में श्री कृष्ण के दर्शन हम करेंगे। द्वितीया का चन्द्रमा का दर्शन हमको करना है ''परमात्मा तत्त्व के लिए कहा जाता है वेद का ही वचन हैं वह अत्यन्त सूक्ष्म है चुंकि उसमें ना तो किसी प्रकार की क्रिया है इसलिए पाँच तत्त्व इत्यादि नहीं कर सकते हैं कोई गुण नहीं है **''अणोरणीयान् महतो महीयान्''** परस्पर अत्यन्त विरूद्ध स्वभाव का वह आश्रय है इसलिए कोई जागतिकगुण इत्यादि के अभाव में उसका कोई लक्षण नहीं बन सकता है तो ऐसे अलक्ष्य अत्यन्त सूक्ष्म तत्त्व के दर्शन कैसे करे? यमराज ने कहा है नचिकेता से कि इसका बताने वाला भी दुर्लभ है और इसका समझने वाला भी अत्यन्त दुर्लभ है। तो ऐसे सूक्ष्म तत्त्व का हमको विवेचन कैसे करना है, तो ये कहा है, ''अतद् व्यावृत्य यं चकितमभिधन्ते-श्रुतिरपि'' श्रुति भी उसका साक्षात वर्णन नहीं करती नेति नेति करके वर्णन करती है कि ये नहीं ये नही इत्यादि। ये अतत् की व्याप्ति नतत इति नतत् तस्य व्यावृत्ति अतत् व्यावृत्ति करके फिर मैं जो परिशेषाद बचता है वही तत्व है ऐसा करके बतलाया जाता है। तो ये तत्त्व थोड़े दांत खट खट हमने इसलिए आपके सेवा में किए कि वो अत्यन्त सूक्ष्म है और अवाङ्मनस गोचर होने के कारण न वो वाणी का विषय है न चिन्तन का, तो भाई कैसे जाने? और बिना उसके जाने गति नहीं है तो उसके लिए कहा गया है कि ये महापुरुष अथवा वेद अथवा शास्त्र यही श्रत्यैकगम्य हैं और श्रुति माने केवल वेद ही नहीं ये महापुरुषों की वाणी, बल्कि अगर प्रमाण की बात कही जाये तो कई लोग कहते हैं तत्ववेदा अवेदा भवन्ति लेकिन गरु का वचन वहां अवेद कभी नहीं होता है। खैर अत्यन्त सूक्ष्म, उस तत्व का दर्शन कैसे कराया जाता है और ये दर्शनों के भेद क्यों हुये इसको हम और आप दो मिनट में समझ लें और फिर हम अपने दर्शन पे आते हैं।

हमको समझ लो, द्वितीया के चन्द्रमा के दर्शन हो गये हमसे हमारे पूज्य चरण पूंछते हैं, गुरुभाई, क्या बात आप दण्डवत् कररहे थे, हमने कहा द्वितीया के चन्द्रमा के दर्शन हो रहे है या चलो ये विद्वान इनको रहने दो किसी और एक ग्राम्य व्यक्ति को पूंछ लें-महाराज क्यो दण्डवत् की, आज द्वितीया के चन्द्रमा का दर्शन हो रहा है कहां हो रहा है? तो कहा कि वो हो रहा है। अब इतना सूक्ष्म है कि अनन्त आकाश में द्वितीया के चन्द्रमा का दर्शन नहीं होता तो हम उसको कहेंगे अच्छा ऐसा करो न, वो देखा वो पीपल का पेड़ की दाहिनी शाखा के ऊपर, वो देखा वो जो ऊपर प्रशाखा है और उसमें

लाल रंग का पत्ता है वो देखो उसकी नोंक के ऊपर द्वितीया का चन्द्रमा दिखाई पड़ रहा है। मैं उसको ऊंगली से द्वितीया का चन्द्र दिखा रहा हूँ और वह मेरे मुंह की ओर देख रहा है, मैंने कहा तुम मेरे मुंह की ओर क्यों देख रहे हो, उधर देखो, वह मेरे से पूछे कि महाराज पेड़ किसे कहते हैं। पीपल किसे कहते हैं। डाल किसे कहते है। शाखा किसे कहते है। प्रशाखा किसे कहते है। पत्ता किसे कहते है। लाल रंग किसे कहते हैं। नोंक किसे कहते है? अब जो व्यक्ति नहीं जानता है उसको पहले हम पेड़ के विषय में बतायेगे तो जो जो लक्षण बताये जाते है वो इतर व्यावर्तन के लिए होते हैं तो पेड़ का लक्षण बता दिया। संसार के अन्य सब वस्तुयें हट गई केवल पेड़ बचा। अब पेड़ के बाद फिर हमने पीपल का वर्णन किया। पीपल का वर्णन करने के बाद फिर हमने डाल किसको कहते है इसका वर्णन किया। फिर डाल के ऊपर शाखा किसे कहते हैं उसका वर्णन किया। फिर पत्ता किसे कहते है उसका वर्णन किया। फिर लाल रंग किसे कहते हैं उसका वर्णन किया। और फिर नोंक किसको कहते हैं उसका वर्णन किया। अब जब इतना वर्णन हमने उसको सुना दिया, उसको पता चल गया अयम्वृक्षः अयम्अऽवत्थः अयम्शाखा अयम्प्रशाखा इत्यादि तो फिर उस को कहा अब देखों पीपल के पेड़ की दाहिनी शाखा के ऊपर द्वितीया चन्द्रमा का दर्शन, हाँ हाँ महाराजी दर्शन हो गये। वाह वाह महाराज जी आपको दण्डवत्।

द्वितीया का चन्द्रमा देख लेने के बाद पेड़ का वर्णन, पीपल का वर्णन, डाल का वर्णन, शाखा का वर्णन सब का सब व्यर्थ हो गया क्योंकि द्वितीया का चन्द्रमा दर्शन उसने कर लिया। लेकिन कल्पना करो एक व्यक्ति पीछे खड़ा है उसने द्वितीया का चन्द्रमा का दर्शन तो नही किया लेकिन सब सुन लिया। द्वितीया के चन्द्रमा का मतलब पीपल का पेड़ के दाहिनी शाखा की उर्ध्व प्रशाखा का लाल रंग के पत्ते का नोंक इसके माने द्वितीया का चन्द्रमा। और उसने दृढ़ता से रट मारा, दितीया के चन्द्रमा की परिभाषा कहीं हुई तो बिल्कुल रमणरेती वाले महाराज श्री के शब्दों में, मैं आपको सुनाता हूँ, द्वितीया का चन्द्रमा का तात्पर्य है अश्वत्थ वृक्ष की दाहिनी प्रशाखा की उर्ध्वप्रशाखा की लाल रंग के पत्ते का कोना और उसके ऊपर शास्त्रार्थ और शास्त्रार्थ दोनों कर रहे है कटिबद्ध। थोड़ी दूर हम और आगे बढे, किसी और ने पूछा मैने कहा तुमने द्वितीया के चन्द्रमा के दर्शन किए? वह कहता है हमने नहीं किए, अरे वह क्या है वह देखों जो बिजली का खम्भा है न बड़ा बाला उसके देखो ऊपर, तीसरे नम्बर पर नाम कंडक्टर लगा है न उसके बीच वाले तीसरे नम्बर वो देखो द्वितीया का चन्द्रमा। अब फिर वह मेरे से जिज्ञासा करेगा। महाराज बिजली किसे कहते हैं, खम्भा किसे कहते है, कन्डक्टर किसे कहते है, नाँन कन्डक्टर किसे कहते हैं तीसरा नम्बर किसे कहते है, तो अब बताना तो है हमको द्वितीया का चन्द्रमा लेकिन हम वर्णन कर रहे है खम्भा, बिजली, कन्डक्टर, नाँन कन्डक्टर और तब उसने भी अगर द्वितीया का चन्द्रमा देख लिया तो उसके लिए बिजली के खम्भे का वर्णन व्यर्थ हो गया लेकिन जिसने नहीं देखा है वह लड़ मरेगा निश्चय कर लिया। द्वितीया के चन्द्रमा का मतलब है बिजली के तार का खम्भा का तीसरा नम्बर का नाँन कन्डक्टर ये द्वितीया का चन्द्रमा हो गया उसने भी रट मारा। हम तीसरी जगह गये सलेमाबाद आ रहे थे वहां कहो कैसे भाई बड़ी कृपा हुई आज, आज देखो एक बात बताऊं, माई डियर, ये प्रसंग बीच में आ गया इसलिये कर रहा हूं- ये बहुत बड़ा तीर्थस्थल है बहुत बड़ा क्यों सब लोग कह रहे हैं क्यों है?

इतने हजार वर्ष की परम्परा चली आ रही है, अनविछिन्न इसका महत्व और आज तक इस गद्दी में

ऐसी कोई घटना नहीं घटी है जिसके कारण साधु समाज को आँख झुकानी पड़ी हो ये बहुत बड़ी बात है। अब तक जितने जितने महापुरुष हुये कितनी परम्परायें कैसे कैसे हो रहीं है और कैसे कैसे मर्यादाओं का ह्रास हो रहे है इनका वर्णन हम नहीं करना चाहते, लेकिन इस परम्परा में, और महाराज श्री के विषय में तो और विद्वान् कह ही चुके हैं हम क्या बतायें इनके बारे, में कि कितनी गंगा गहरी है कि यमुना गहरी, हमारे लिए तो दोनों डूब मरने के लिए बहुत है तो इतने विद्वान् जितने महापुरूष हुये, महाराज श्री ने हमको बताया था कि सर्वेश्वर भगवान् की सेवा वही कर सकता है जो स्वयं पाकी हो, तो हम घबड़ा गये, हमने कहा हे परमात्मा इतना सब सेवा कार्य करते हुये सर्वेश्वर भगवान की सेवा करते हुये स्वयं पाक करना, माने अद्भुत है ये स्थल, अनन्त काल से जहां महापुरुष तपस्या कर रहे हों और अनविछिन्न निष्कलंक परम्परा चल रही हो ऐसी परम्परायें अत्यन्त दुर्लभ हैं और ऐसी जगह तुम अपने पुण्य से आये हो, अपने प्रयास से आये हो, यह धोखे में मत रहना, जिसके ऊपर गरु की कृपा हुई है वही यहां आ सके, बहुतों के टिकट कटी कटाई धरी थी नहीं आ पाये और जिनका कोई प्रोग्राम नहीं था वो आ गये जैसे मेरा कोई प्रोग्राम नहीं था ओर मुझे पकड़ के बुला लिया, निश्चय यह गुरु कृपा से आये हो।

हमसे पूछा द्वितीया का चन्द्रमा अरे हमने कहा अरे वो देखो सर्वेश्वर भगवान के मंदिर के कलश के ऊपर और जो तीसरे नम्बर का वहां पे चन्द्रमा का दर्शन करो वह हमसे पूछेगा कि महाराज, ये सर्वेश्वर भगवान कौन हैं मंदिर किसे कहते है, शिखर किसे कहते है कलश किसे कहते है, वह हम सब वर्णन करेंगे आप ये निश्चित समझो, जैसे पीपल का वर्णन करना व्यर्थ था, जैसे बिजली के खम्भे का वर्णन करना व्यर्थ था वैसे ही इस अंश में मंदिर इत्यादि का वर्णन करना भी व्यर्थ है, लेकिन जब द्वितीया का चन्द्रमा का दर्शन हो गये तो उसके लिये मंदिर का वर्णन करना व्यर्थ हो गया लेकिन इतर लोग जिन्होंने चन्द्रमा का दर्शन नहीं किया वे पकड़ करके बैठ जायेंगे। द्वितीया का चन्द्रमा का मतलब सलेमाबाद वाला सर्वेश्वर भगवान् के मंदिर के शिखर के ऊपर जो कलश का तीसरा नम्बर हैा गोला है वह द्वितीया का चन्द्रमा है। अब ये तीन जने तो पहुंच गये। अब एक जगह ये तीनों बिरादरी वाले इकट्ठे हो गये और वहां शास्त्रार्थ हो रहा है, द्वितीया का चन्द्रमा का मतलब क्या है ? एक कहेगा द्वितीया के चन्द्रमा अऽवत्थ वृक्ष की दाहिनी शाखा के ऊपर उर्ध्वप्रशाखा के लाल रंग के पत्ते का कोना ये द्वितीया का चन्द्रमा। दूसरा कहेगा क्या बातें कर रहे हो, क्या प्रमाण है ? रमणरेती वाले महाराज के वचन से मैंने सुना है, अरे मैंने भी सुना है मेरे गुरू जी वहीं खड़े हुये थे अपने गुरुजी के श्रीमुख से सुना है द्वितीया के चन्द्रमा का मतलब है बिजली के तार के खम्भे का तीसरे नम्बर का नाँन कन्डक्टर वो द्वितीया के चन्द्रमा है। तीसरा कहेगा तुम दोनों के दोनों एकदम अनर्गल प्रलाप कर रहे हो हम प्रमाणिक रुप से कह रहे हैं हम छोटे थे तो भी वहां खड़े हो के देख रहे थे, वहां मंदिर के कलश शिखर के तीसरे नम्बर के कलश के ऊपर वो द्वितीया का चन्द्रमा। देखा नहीं और केवल शब्दों को पकड़ लिया है और वह शब्दों में आता ही नहीं, अवाङ मनस गोचर को अगर केवल शब्द पकड़ करके तुम बैठ गये तो वही होगा जो आज दा र्शनिको जिन्होंने उस तत्त्व को देखा नहीं उनके जैसे, कैसे बढ़िया बढ़िया शास्त्रार्थ होते है हमसे पूछो हम आपको बतायें दर्शन, माई डियर। केवल मैल्टल जगलरी या बरबल जगलरी नहीं है दर्शन माने तुम्हारा व्यवहार, तुम्हारा दर्शन, तुम द्वितीया के चन्द्रमा के दर्शन करों ये

शब्द तो तत्रवेदा:अवेदाभवन्ति, जैसे कांटा निकालने, जंगल में गैया हम चराने जाते थे कांटा लग जाता था तो कांटा लगा कांटा निकालने के लिए हम दूसरा कांटा लिया, कांटे को निकाल करके और फिर दोनों कांटा फेंक देते है- उसी प्रकार से संसार के, जगत्वालों को निवृत्ति करने के लिये, संसारिक साधन न आवश्यक होंगे लेकिन फिर हमको इससे ऊपर उठना होगा। तो फिर दर्शन की समस्या क्या है ?

हम लोगों ने अभी दर्शन की समस्या के बारे मे विद्वान् जनों से सुना है कि दु:ख ही संसार की समस्या है। हम चाहते हैं सब के सब पशु से ले करके और इन्द्र तक चाहते है। मुझे सुख की प्राप्ति हो और दु:ख मेरे को न हो, हर आदमी यही चाहता है। कोई ऐसा मन्द भी नहीं चाहता है, हमारी किसी की यह चेष्टा नहीं होती है कि मुझे दु:ख हो, प्रयास हम यही करते हैं होता उल्टा है, हम करते है सुख की, लेकिन वह दूर तर प्रयाति और जिसको कभी नहीं चाहा वो सीधे सिर पे आके चढ़ता है तो इस दु:ख का कारण क्या है। हमारे भागवत् का मंगलाचरण है तापत्रय विनाशाय श्रीकृष्णायवय: नुम्:, अब थोड़ा अपना ब्रजवाला भी कृष्ण वाला भी नाटक शुरू करदें और उसी दर्शन के रूप में दर्शन के परिप्रेक्ष्य में क्यों कि यह जो मंच का निर्दिष्ट विषय उससे बहुत अलग जाना, ये शिष्टाचार नहीं माना जाता है। तो दु:ख हमारे दर्शन का मुख्य विषय है 'दु:खं मे माभूत् सुखं में भूयात्' तो दु:ख होता क्यों है ये ताप होता क्यों है ? तो ताप होता है पाप से। पाप ताप का हेतु है। तो फिर दूसरा प्रश्न होता है उसी तरह से तर्किनुसार कि पाप क्या है तो पाप की परिभाषा अभी हम लोगों ने सुनीं थी ''परोपकारा पुण्याय पापाय परपीड़नम्'' ये बहुत सहज परिभाषा लगती है लेकिन अभी हम आपसे अगर पूछें कि परपीड़न किसे कहते हैं ? और परोपकार किसे कहते है ? तो घबड़ाहट हो जायेगी, यह इतना सहज नहीं है जैसे सामान्य सी बात है प्यासे को पानी पिलाना पुण्य है। भूखे को भोजन कराना पुण्य है। यह सहज है लेकिन अगर किसी का अपेनिडस्साइट्स का ओप्रेशन हुआ हो और भूख के मारे वह परेशान हो अथवा किसी का टौन्सिलाइट का ऑप्रेशन हुआ हो, भगवान् न करे आप लोगों को, मेरा हो चुका है इसलिए मुझे मालुम है यहां का। इतनी जोर से प्यास लगती है ऑप्रेशन के बाद कि पूछो मत और डाक्टर पानी नहीं पिलाता सबको मना कर देता है। कहते हैं पानी लाओं हो, अभी लाते है और कहके इधर से उधर मुंह बना के चला जाता है बड़ा क्रोध आता है, लेकिन कोई एक बूंद पानी नहीं पिलाता है। क्योंकि उस समय पानी अगर पिला दिया जाय तो जीवन शंका में हो जायेगा तो उस समय पानी के प्यासे को, तड़पते हुये व्यक्ति को और हम जाके कहें, लो मैं बहुत सुन्दर मिनिरल वाटर, ठण्डा ठण्डा लाया हूँ। तुम प्यासे हो और तुमको हम पानी पिला रहें है बताओं, उसको पानी पिलाना प्यासे को ये पुण्य होगा, माई डियर। कि पाप होगा। इसलिये ये परोपकार पुण्याय की बात नहीं ये महापुरुष ही सोच सकते हैं।

कभी कभी वे हमारे नैयायिक लोग बैठें हैं न्याय से शुरू हुआ था तो कभी कभी ये जो बड़ाभारी यहां राजस्थान पहले रेगिस्तान में यही चरस चलता था जिसको ऊंट से खींचा जाता था पानी भरके तो वह बहुत भारी होता है। उसको अगर अपनी ओर खींचना हो तो बड़ी मुश्किल से आता है तो हमारे यहां उसको अपने खींचने के पहले जोर से लात मारते है तो लात मारने से वो दूसरी तरफ जाता है तो पता चलेगा हम चरस को दूर भगा रहे हैं लेकिन सबको मालुम 'एक्सलरेशन ड्यू टू क्रेविटी' के कारण जितनी दूर चरस उधर जायेगा उतनी ही दूर अपनी तरफ आयेगा। तो ये जो चरस को ताड़न किया

जाता है इसको भगाने के लिये नहीं अपनी ओर आकर्षित करने के लिए और जब अपनी ओर आ जाता है तो उसका पानी निकाल लेते हैं तो गुरुजन कभी कभी ताडन करते हुये भी परोपकारी होते हैं और कभी कभी कोई मनोहर वचन बोलकर हानिकारक हो जाता है। तो परोपकार करना यह सहज निर्णय की बात नहीं है। कब किसको भोजन देना है और कब किसके सामने से भोजन छीन लेना है ये निर्णय कौन करेगा? इसके लिए ''माई डियर'' 'विवेक ' आवश्यक है। तो पाप आदमी करता क्यों हैं? इसकी हम लोग विचार करें। कृष्ण से अर्जुन ने प्रश्न किया, कि आपने कहा ताप जितने है ये सबके सब हमारे पाप के कारण है। तो पाप आदमी करता क्यों है प्रश्न किया अथकेन प्रयुक्तोयं पापं चरति, ये पुरूष केन पुयुक्त: मैंने जेल में भी जाके देखा वैसे नहीं गया हूँ जेलियों को मिलने के लिए गया हूँ उनको सान्त्वना देने के लिए, वैसे तो कोई चान्स नहीं आया, तो जेल में जाकरके मैंने देखा ज्यादातर वहां लोग ऐसे कोई नहीं थे जिनको मौलिक रूप से पापी कहा जाय, किसी न किसी परिस्थिति के वशीभूत हो करके वे जेल गये तो पाप कोई मन से नहीं करता है जबर्दस्ती पाप व्यक्ति को करना पड़ता है। इसलिए अर्जुन ने बड़ा जान बूझ के शब्द प्रयोग किया **''केन प्रयुक्त: प्रकर्षेण युक्त:''** माने कौन जोतता है पाप करने के लिए कौन जबर्दस्ती लगाता है कौन है जो मनुष्य को पाप करने में लगाता है। इसी से मिलता जुलता एक और प्रश्न हम से एक अध्यापक ने किया था और बड़ा अच्छा प्रश्न है। इसने प्रश्न किया कि महाराज आप कहते हो जो कुछ संसार में हो रहा है वह ईश्वर करवाता है- रामायण का प्रमाण दे दिया

'बोले बिहंसि महेश तब, ज्ञानी मूढ़ न कोय।'
जब जेहिं रघुपति चँहहिं जस, सो तस तेइक्षण होय॥

अब तो वही सब तत्क्षण में हो जाता है सब जैसा भगवान् चाहते हैं। तो अगर भगवान् ही चाहते हैं तो हमने पाप कैसे किया? **'उमादारु ज्योषित की नाई, सबहिं नचावत राम गुँसाई॥'** लकड़ी की कठपुतली को जैसे नट नंचाता है वैसे नांचती है तो पाप पुण्य दोष नट को हो तो हो कठपुतली को कहां से होगा। हमारे ऊपर पाप पुण्य का दावा कैसे किया जाता है कहें कि तुम पापी हो इसलिए तुमको ये दण्ड़ मिलेगा पुण्यात्मा हो इसलिए तुमको यह पुरस्कार प्राप्त होगा। यह पाप कौन करवाता है अर्जुन का प्रश्न बिल्कुल ठीक है केन प्रयुक्त: पापं चरति जब भगवान् ही सब कुछ करवा रहा हैं उनकी इच्छा के बिन तिनका तक नहीं हिलता है तो पाप हम कैसे करते है जिसने पाप कराया वही भोगे। ये बड़ी सरल बात लगती है कि भगवान् ने पाप कराया हम तो कुछ करते ही नहीं है इसलिए भगवान् के ऊपर पाप होना चाहिये लेकिन ये बात उतनी सहज नहीं। मैं अपना अनुभव आपकों बताता हूँ और आप निर्णय करो पाप कौन करता है। महाराज श्री के पास दुनियां भर के फल आये हैं और ये जो जितने लोग हैं भक्त लोग हैं और इनको ये एक एक फल प्रसाद में दे दो। और ऐसी कल्पना करो लेकिन जैसा फिजिक्स में मान लेते हैं कि एक यूनिट ट्रस्ट है उसी तरह से कि सब लोग लाइन में प्रसाद ले रहे हैं और वह व्यक्ति सबको एक एक सेव जिसको जैसा आ रहा है वैसा वह सबको देता चला जा रहा है। कोई छोटा सेव है कोई बड़ा सेव जिसको जैसा आ रहा है वैसा वह सबको दे रहा है। सब लोग प्रणाम करके ले जा रहे हैं कि महाराज श्री का प्रसाद है। उस लाइन में सातवें नम्बर पर उसने देख लिया हमारी पत्नी की छोटी बहिन लाइन में लगी है। अब थोड़ा पेटी को देख करके और इधर उधर करके जो सबसे बड़ा सेव था वह निकाल करके अलग रख दिया। छ: जनों को

छोटा छोटा फल जो है दे दिया और सातवें नम्बर पर जब साली आई उसको बड़ा वाला सेव उसके हाथ में धर दिया, और बड़े प्रसन्न, वाह वाह। उसको बेचारी को मालुम नहीं इनको प्रसन्नता हो गई हमने उसको बड़ा वाला सेव दे दिया। उसी क्रम में देखा कि वे सज्जन इतनी दूर खड़े हैं बोले अच्छा मैं महाराज श्री के दर्शन करने जा रहा था तुमने मुझे धक्का देके भगा दिया था, आओ बच्चू आज हमारा नम्बर आया है और फिर डलिया देखी और उसमें जो सबसे सड़ा हुआ फल था वह निकाल करके धर लिया, और जैसे ही वह सज्जन आये और उनके हाथ में सड़ा हुआ फल आया जो व्यक्ति उसने सडा हुआ फल दे दिया और बड़ा प्रसन्न आज बदला हमने ले लिया। अच्छा अब विचार करो।

महाराज श्री की आज्ञा से महाराज श्री के भक्तों में महाराज श्री का दिया प्रसाद बांट रहे है तो उसमें साली को बड़ा सेव और उसको सड़ा हुआ सेव दे, महाराज जी ने दिलवाया क्या? महाराज जी पाप के भागी होगे? जिसने साली के प्रति मोह किया जिसने उसके प्रति द्वेष किया इसने पाप किया तो इसलिए भगवान् ने उत्तर दिया ''काम एषः क्रोधएषः रजोगुण समुद् भवः'' आदमी पाप जब भी करेगा यातो काम के वशीभूत होके करेगा अथवा क्रोध के वशीभूत होके करेगा तीसरा कोई हेतु नहीं, आप देख लेना जहां भी पाप होंगे अति व्याख्या का समय नहीं है हो सकता है थोड़ी देर में खट खट शुरू हो जाय तो हमको एकदम लपेटना पड़े तो पहले ही अपनी इज्जत बचा के रखना चाहिये। तो ''काम एषः क्रोधएषः रजोगुण समुद्भव''। ये काम और क्रोध का मल का क्या है माई डियर उसपे विचार करो- जो मेरा होगा वहां काम होगा जिसको तुम परायापन करोगे वहां पर द्वेष होगा। तो ''मैं तै मोर तोर तै माया'' हो गई तो इसका मतलब अहंकार मूल हो गया, समस्त पापों का। दर्शनशास्त्र तुम्हारे इस अंहकार के ऊपर आघात करता है तुमको अपने अभिमान की निवृत्ति करनी है माई डियर, संसार तुमको बांधता नहीं है संसार तुमको मुक्त भी नहीं करता है जितने भी दर्शन है ये दर्शन केवल तुम्हारे अभिमान की निवृत्ति के लिए हैं अब इस अभिमान की निवृत्ति के लिए या तो संसार को मिथ्या कह दिया, संसार को शून्य कह दिया तो मिथ्या और शून्य कहने का मतलब अस्तित्व नहीं, बहुत काल तक नहीं रहता है इसलिये उसको मिथ्या कह दिया त्रिकालावाधित नहीं है इसलिए मिथ्या कहा शून्य इसलिए कहा कि वास्तव में ढूढ़ने जाओं तो उसका कोई तत्व नहीं निकलता है। इसलिये शृन्य कहा तो शून्यता का प्रतिपादन किस लिए है, कि तुम्हारी आसक्ति संसार से छूट जाये। तो एक मार्ग है संसार को मिथ्यामान कर आसक्ति छुड़वाना और मिथ्या का तात्पर्य आप लोग समझ गये होंगे। दूसरा है यह संसार भगवान् का है भगवान् का निर्मित है अगर भगवान् ने बनाया है तो भगवान् की सृष्टि में दुःख कहां से भगवान् की सृष्टि में बंधन कहां से? तो यह संसार वास्तव में बंधन है ही न हीं, भगवान् की कृति है जैसे भगवान् मंगलमय है वैंसे ही संसार मंगलमय हैं। अच्छा देखो माई डियर, आज ये संसार न होता, आज हम संसार में नहीं होते तो इतने संतो महापुरुषों के हम दर्शन कर पाते। आज यह संसार नहीं होता तो आज हम पाँच हजार एक सौ वीं जयन्ती मना पाते , आज अपने इन चर्म-चक्षुओं से और ऐसे देव दुलभ आचार्य के दर्शन करने का शुभ प्राप्त कर पाते इसलिये संसार बंधन ही नहीं है।

संसार बहुत आनन्द की चीज है क्योंकि भगवान् की कृति है लेकिन हम कई लोग इसलिए कहते है कि संसार सत्य है हम स्वीकार करते हैं कोई बाधा नहीं है लेकिन संसार को सत्य मानते हुये और वहीं हमने

गड़बड़ कर दिया सड़ा हुआ सेव ओर बड़ा वाला सेव यह पाप का हेतु है, पाप के हेतु लोभ और इस अभिमान की निवृत्ति करना यही सब दर्शनों का एक मात्र लक्ष्य है। ये जिसको समझ में आ गया वह ये समझ जायेगा सर्व दर्शन अपने आप समन्वित हो गये। और जिसको यह समझ में नहीं आया वे लाठी चलाते रहेंगे, पेड़ का मतलब पेड़ हो गया, द्वितीया का चन्द्रमा, मंदिर हो गया , बिजली का खम्भा इत्यादि इत्यादि तो तुम्हारे अभिमान की निवृत्ति हो। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा यह संसार मेंरा स्वरूप है तुमको ''सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर'' मेरा स्मरण करो कई लोग कह देंगे ये क्यों कि ''युगपत्नानोज्ञाने त्पत्ति मन सो लिंगम्'' मन तो एक है भावे जहां लगाये अगर हम भोजन इत्यादि नहीं करेंगे सर्वेषु स्मरण कैसे होगा ये चीज हम लोग सुन लें और इसी के बाद हम अपनी वाणी को विराम देंगे।

सब काल में भगवान् की याद कैसे की जाय, सब काल का मतलब केवल जाग्रत नहीं, अरे पाँच मिनट के लिए ध्यान लगाना तो मुसीबत हो जाती है और सब काल मे स्मरण कैसे हो। भगवान् असंख्यअनुष्ठान का आदेश दे रहे हैं, हम को समझना पड़ेगा यह दर्शन है। 'फिलासफी' में दर्शन में यही अन्तर है। 'फिलोसफी' तो केवल मेन्टल जगलरी है। दर्शन माने ऐसा चिन्तन 'हतम् ज्ञानम् क्रियाहीनं और ''हताम अ ज्ञानिनां क्रिया' अगर बिन जाने कर रहे हो तो व्यर्थ है और जानते हो लेकिन क्रिया अगर बिना जाने क्रिया कर रहे हो तो व्यर्थ है और जानते हो लेकिन क्रिया नहीं करोगे तो वह ज्ञान व्यर्थ हैं। हमारा ज्ञान व्यवहार में 'इज शुड वी ट्रान्सलेटर इन टू एक्षन' तो ये हमारा 'ट्रान्सलेटिड इन टू एक्षन' कैसे हो भगवान् कहते हैं 'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज' क्या तात्पर्य है। सर्वसम्मित काले मामनुस्मर तस्मात् सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर सब काल में मेरा अनुस्मरण करो माई डियर। भगवान् का दो मिनट तो ध्यान होता नहीं 'जन्म जन्म मुनियतन कराहीं। अन्तराम कहिं आवत नाहीं॥' तो हम सब, हमको गैया चरानी है, हमको भैंस चरानी है, हमको दूध निकालना है, हमको सास की सेवा करनी है, हमको बहू को गाली देनी, ये सब काम कैसे करें और भगवान् कहते हैं 'सर्वेषु कालेषु मा मनुस्मर' इस चीज को दो मिनट में हम लोग समझ लें इसके बाद फिर हम अपनी वाणी को विराम देंगे। अच्छा केवल जाग्रत में ही नहीं सर्वसमित काले का मतलब स्वप्न स्वप्नावस्थायावपि स्वप्न में भी और तो और सुषुप्ति में भी अगर सुषुप्ति में भी भगवत् स्मरण नहीं हुआ तो भगवान् के आदेश का पालन नहीं हुआ। तो जाग्रत, स्वप्न सषुप्ति इन तीनों कालों में भगवत् स्मृति कैसे हो, आओ आज हम इस रहस्य को समझ लें। तो अभी हम लोग पाप और पुण्य की चर्चा कर रहे थे। ''परोपकार पुण्याय पापाय परपीडनम्'' ये व्याख्या थोड़ा समझनी पड़ेगी असत्य नहीं है। व्यास का कथन हैं लेकिन इसको समझ ना पड़ेगा क्यों कि पाप पुण्य किसे कहोगे? बकरे के गले काट करकेचमड़े को छीलकरके और टुकडे टुकडे करके मांस बेचने वाले को भगवान् मिलते हैं कि नहीं मिलते हैं, मिले कि नहीं मिले सदन कसाई को मिले कि नहीं मिले, कोई परोपकारी वाला काम है। जूते के माने चमड़े को निकाल करके जूता बनाने वाले को भगवान् मिले कि नहीं, मिले, तुम लोग बताओं तुम्हारे देश की बात है मिले कि नही मिले? महन्त और पुजारियों के लिए नरक की योनि रिजर्व होती है अगर सावधान न रहे, यह भी सुना, देखने में लगता है मंदिर की सेवा करना बड़ा पुण्य है लेकिन अगर प्रमाद हो गया तो नरक रिजर्व और बकरे के गले को काट करके टुकड़े टुकड़े करके मांस बेचने वाले को भगवान् मिले, चिड़िया को जला देने वाले को और

एक साधारण गृहणी पतिपरायण शिक्षा दे, तुलाधार दुकान चलाने वाला उपदेश दे, इसका मतलब क्या है ? इसका मतलब हम जिसको केवल धर्म समझते हैं वह धर्म नहीं है तो क्या धर्म कहते हैं उसको समझना पड़ेगा कि किसी तरह से हमारे अहंकार की निवृत्ति हो। ये अहंकार की निवृत्ति कैसे हो ? हमारे रामकृष्ण परमहंस देवजी ने इसका तीन मार्ग बताया। एक बताया अगर तुमको ''मैं'' बहुत प्रिय है तो अपने ''मैं'' को इतना बढ़ा दो कि वो सब का सब ''मैं'' आ जाय ''सर्व काले इदम् ब्रह्मं और अहं ब्रह्मास्मि'' जो कुछ भी जड़ चेतन संसार में दिखाई पड़ रहा है वह मैं हूं, एक मार्ग ये हो गया।

दूसरा मार्ग तू का मार्ग है जिधर देखता हूं उधर तू ही तू है, सर्वत्र में निज प्रभु में देखहिं जगत् का संग करहिं विरोध ये तू का मार्ग ये हो गया। नही महाराज, न तू का होता है न मैं का हो पाता है, दोनों चाहिये दोनों का टेस्ट लेंगे तो ठीक है, ''तू दयालु दीन हों तू दानी हो भिखारी। हूँ प्रसिद्ध पातकी तू पाप पुँजहारी'' तो चाहे मैं का मार्ग ले लो चाहे तू का मार्ग ले लो और चाहे मैं और तू का मार्ग लेलो कोई भी एक मार्ग ले लो माई डियर। यहां पर विरोध दिखाई पड़ेगा जैसे जैसे ऊपर आते जाओगे यहां आ करके चरम में सारे के सारे भेद विनष्ट हो जाते है यहां ऐक्य हो जाता है। तो हम लोग चर्चा कर रहे थे यही बात कहने के लिए माने अभिमान की निवृत्ति हमको करनी है। अहं करोमीति वृथाभिमाना मत करो ये है उल्लूपने की बात बिल्कुल मूर्खता है लेकिन तो भी हम सबके सब वही उल्लूपना कर रहे हैं। हम सोचते हैं हमने ये किया हम सोचते है हमने ये किया। ये अहंकार की निवृत्ति कैसे हो यही भगवान् सिखाते है सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर तो सर्वेषुकालेषु मा मनुस्मर कैसे हों तो इसको हम लोग दो मिनट में समझ लें कि जैसे महाराज श्री ने हमको बुलवाया रमणरेती से कि भाई उस बाबा को पकड़ लाओं हमारा है और इस आयोजन में और वह न आये तो ऐसे संतों के दर्शन और फ्री में इतने भक्तों के दर्शन करने से वंचित न रह जाय। तो एक संत को हमारे पास भेजा, दो जनों को अब वो एक तो महाराज श्री की सेवा में चंवर डूला रहे हैं, एक लेकर के डण्डा खड़े हुये है ये महाराज की सेवा में खड़े दिखाई पड़ रहे है, लेकिन एक व्यक्ति गाड़ी पर बैठ करके रास्ते के सब कष्ट भोगते हुये और जाके रमणरेती वाले भिखारी के पास और महाराज का आदेश सुना रहा है। महाराज से उल्टी दिशा में चल रहा है आप बताओं वह महाराज की सेवा कर रहा है कि नहीं कर रहा है। देखने से हो रहा है महाराज का गमन महाराज के लिए हुआ उसका जिस बाबा के पास भेजा उसका दर्शन महाराज की सेवा उनको आग्रह करके लाना, यह महाराज की आज्ञा हो गई। हम घर मे झाड़ू लगा रहे है अगर घर भगवान् का है तो भगवान् की सेवा कर रहे है अगर हम घर में भोजन बना रहे है ठाकुर जी को नैवेद्य लगाने के लिए भगवान् की सेवा हो रही है। और अगर हम भोजन कर रहे है उसको हम थोड़ा सुधार लें- होटल में खाना मिलता है घर में भोजन बनता है और ठाकुरजी को जो नैवेद्य लग जाता है वो प्रसाद हो जाता है। देखो हम साइन्स के विद्यार्थी भी हैं साइन्स इस भेद को नहीं देख पाई। गंगाजल में गटर के पानी में और कूप के जल में और तालाब के जल में कोई भी फिजिनिस्ट या फिर कोई भी कैमिस्ट बता पायेगा वह यही बतायेगा ''टू मालीक्यूल ऑफ हाइड्रोजन एण्डं मालीक्यूल ऑफ ऑक्सीजन'' नहीं उससे कुछ अलग चीज है। वही बात है होटल के भोजन को डिसेक्शन करो घर में बनाये भोजन का भी करो, और ठाकुर के नैवेद्य को भी करो शायद कैमीकल डिफरेन्टस कुछ नहीं पता चले। लेकिन आप लोग तो भगवान के भक्त

हो आपने ठाकुर के नैवेद्य किये हुये प्रसाद को ग्रहण किया है उसका जैसा स्वाद कहीं और जगह आता है आप लोग अपने आप बताओं। ठाकुर के नैवेद्य का फल अलग है''**प्रसादे सर्वदुःखानं हानिरस्योपजायते**''। तो हमारी दृष्टि परिवर्तित हो जाती है अगर हम अपने लिए भोजन कर रहे हैं तो स्वाद हो गया और हमरा भोजन करना ठाकुर के सेवा हो गया। हमारा विश्राम कर ना ठाकुर की सेवा के लिए अगर हो रहा है वो ठाकुर की सेवा हो गया तो जो भी हम यद्यद् कर्म करोमि तत्तदाखिलं कृष्णः समाराधनं हम जो भी चेष्टा करें अगर कृष्ण के लिए करें तो सब हमारी चेष्टायें सब हमारा चिन्तन कृष्ण अर्पण होने के कारण सर्वेषुकालेषु मामनुस्मर हो गया और फिर हम जो क्रिया करेंगे भगवान् की सेवा होगी। इस प्रकार से अगर हम अपने अभिमान की निवृत्ति कर पाये, तुच्छ अभिमान से निवृत्ति हो करके अगर हम भगवद् अर्पण वुद्धि से या आत्मबुद्धि से कर्म करेंगे तो सर्व जितने भी कार्य हैं ''तस्मिन् दृष्टे परावरे'' समाप्त हो जाते है और यही पर दर्शन की परि समाप्ति हो जाती है। अपने अहंकार की निवृत्ति करो चाहे कर्म मार्ग से करो चाहे ज्ञान मार्ग से करो चाहे, भक्ति मार्ग से करो, किसी भी तरह से ''येन केन उपायेनमतिम् कृष्णे निवेशयत् यही दर्शनका परम प्रयोजन है। हम अपनेअभिमान की निवृत्ति करके परमानंद की प्राप्ति करें दुःख आत्यन्तित निवृत्ति करें यही पुरुषार्थ है चारों पुरुषार्थों का मुख्य लक्ष्य यही है। इन्हीं शब्दों के साथ पूज्य चरणों में और इस सम्पूर्ण आचार्य परम्परा को इस वाक्य पुष्पाजलि के द्वारा अर्चित कर और अपने को धन्य मानता हुआ आप सबको वन्दन करता हुआ अपनी वाणी को विराम देने की अनुमति चाहता हूँ आपने इतने धैर्यपूर्वक सुना इसके लिए आपको साधुवाद जय श्री कृष्ण।

श्री सत्यदेव जी मिश्रा :- सभाध्यक्ष **(कुलपति, राजस्थान -संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर)**

वेदान्त मेरा प्रिय विषय रहा है इसलिए वेदान्त दर्शन से सम्बन्धित कुछ विचार प्रस्तुत करूं। जहां तक मैं समझता हूँ भारतीय दर्शन की विकास यात्रा वेदों से प्रारम्भ होती हैं क्योंकि यदि वैदिक मंत्रों को ऋषियों का दर्शन मानें तो वहीं से प्रारम्भ होता है ये विकास दर्शनों का दर्शनों का अभ्युदय वहीं से प्रारम्भ होता है। यदि विचार करें बहुत से दार्शनिक रूप हैं वेदों में बहुत से दार्शनिक सूत्र है जैसे नासदीय सूत्र हैं उसकों हम जिज्ञासा सूत्र कह सकते है। इसके बाद पुरुष सूत्र है उसको हम उत्तर सूत्र कह सकते है और इसके बाद जो बाघाम्बरी सूत्र है उसका हम अनुभव सूत्र वेदान्त का मुख्य विषय है किसी विषय में जिज्ञासा करना बह्म सूत्र में पहला ही ब्रह्म की जिज्ञासा है, ब्रह्म क्या है। इसके बाद उससे जो अनुभव मिलता है उसको बता दिया गया बाघाम्बरी सूत्र के द्वारा। बाघम्बरी ऋषि के द्वारा लिखे गये या दृश्य किए गये बाध सूत्र की द्वारा इस प्रकार जब बहुत सारी बातें कही गई, योग दर्शन के विषय में कहा गया न्याय दर्शन के विषय में यहां आया और इस त्रिवेणी धाम में ज्ञान कर्म और भक्ति की गंगा भी बही। अब यह समझ में आता है कि वेदान्त दर्शन जैसा कि हमने कहा दर्शन की यात्रा वहीं से प्रारम्भ होती है।

लेकिन भारतीय दर्शन की प्रमुख विशेषता क्या है? इसकी प्रमुख विशेषता आध्यात्मिकता, ईश्वर को जानने की इच्छा, ईश्वर क्या है? इसी से भारतीय दर्शन प्रारम्भ होते हैं। और सारे दर्शनों का लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना। दो प्रकार से मोक्ष के परिभाषित भारतीय दार्शनिकों

ने भारतीय चिन्तकों ने की है। दो तहर से एक तो कहा कि दु:खाभाव मोक्ष है। दूसरा सुख की प्राप्ति भी मोक्ष है। तो भावात्मक रूप में ये सुख की प्राप्ति हैं और अभावात्मक रूप में ये दु:ख का अभाव है। अब मेरा जो मन्तव्य हैकि सारे दर्शनों की आध्यात्मिकता क्या है ईश्वर में आस्था है, जैसा कि श्वेताश्वतरो पनिषद् में कहा गया है किं यदि ईश्वर को जाने बिना कोई मुक्ति पाना चाहे कोई मोक्ष पाना चाहे, तो वैसे ही असम्भव है जैसे आकाश को चमड़े के समान अपने देह में लपेट लेना।

जैसे ये असम्भव है वैसे ही बिना अपने को जाने व बिना ईश्वर को जाने सुख मिलना असम्भव है। अब जैसे मैंने कहा कि वेदान्त से ही प्रारम्भ होती है वेदान्त, की यात्रा और वेदान्त में ही पर्यवसित होती हैं वेद का अन्तिम भाग वेदान्त, वेदान्त को कहते हैं उपनिषद्। अब वेदान्त की व्याख्या करते हुये भगवान् शंकराचार्य ने गीता भाष्य में एक स्थान पद् 'सांख्य' सांख्य का अर्थ करते हुये उन्होंने कहा कि ''यस्मिन् शास्त्रे सांख्यायते ज्यातव्या'' पदार्थें पदार्थं तत् सांख्य स: वेदान्त, जिसमें यह बताया जाय कि कौन कौन से ज्ञेय पदार्थ है कौन कौन से ज्ञातव्य पदार्थ है उस शास्त्र को सांख्य कहते हैं और वही शास्त्र वेदान्त हैं इसको स्पष्ट करते हुये, ये गीता भाष्य का अशं है भगवान शंकराचार्य का उसको स्पष्ट करते हुये आनन्दगिरी ने कहा कि ज्ञातव्य पदार्थ क्या है जैसे अभी चार महावाक्यों की चर्चा आई ''अयं आत्मा ब्रह्मा, प्रज्ञानं ब्रह्म्, अहं ब्रह्मास्मि तात्वमसि'', ये चार महावाक्य चारों वेदों से लिये गये है तो इसमें ये अब उसको तात्वम् की व्याख्या करते हैं आनन्दगिरी जिन्होंने शंकराचार्य ग्रन्थों पर भाष्य लिखा है सुरेश्वराचार्य के ग्रन्थों पर जिन्होंने भाष्य लिखा है वे कहते है कि तत्त्व, त्वं पदार्थ जो है जीव है तत् पदार्थ परमात्मा है, और त्वम् पदार्थ जीव है उनके ऐक्यों के जो ज्ञान कराये उसके जो उपाय इसको हमको बताने वाला वह सांख्य है। श्रवण, मनन, निदिध्यासन आदि उपाय उनको सांख्य कहते है।

इस प्रकार से वेदान्त शुरू होता है अब उपनिषदों से ही वेदान्त शुरू हुआ, यदि माना जाय तो उपनिषद् वेदान्त को स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं। जैसा कि हम दर्शन शास्त्र पढ़ते हैं तो उसमें पूर्व पक्ष पाते हैं फिर सिद्धान्त पक्ष पाते हैं। फिर इन मतों की जो ये बात है कि ईश्वर में विश्वास करना है, ईश्वर क्या है? ईश्वर को समझाने के लिए ईश्वर को प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार के मत बतायें है। ईश्वर का स्वरूप क्या है? दूसरे सूत्र से ही ब्रह्म सूत्र कहता है। ''जन्माद्यस्य यत:'' जिससे जन्म हो जो जन्म आदि को देने वाला हो। ''यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते यत्प्रयन्त्यमिसंविशन्ति। तद्विजिज्ञासस्व। तद् ब्रह्मेति''। तब ईश्वर को बता दिया कि ईश्वर ही जन्म का करने वाला है जब भगवान् शंकराचार्य इसका भाष्य करते हैं जगत् के स्वरूप को बताते है तो कहते है ''प्रतिनियतदेशकाल निमत्त क्रियाविलासा'' और कहते हैं। जिस को मन से नहीं सोच सकते तो इसमें जब हम देखते हैं तो संसार में ऐसी वस्तुयें है, जिनके बारे में हम सोच नहीं सकते। हर वस्तु में करोड़ो प्रकार के रूप हैं तो इनको जो बनाने वाला है वो ईश्वर है औं इस ईश्वर को बिना जाने कोई दु:ख का अंत नही हो सकता है।

इसी के लिए सारे, जो न्याय दर्शन है, लोक दर्शन है, वैशेषिक दर्शन है, सांख्य दर्शन है, पूर्व मीमांसा दर्शन है, उत्तर मीमांसा दर्शन है,अपने अपने दृष्टिकोंणो से

उन्होंने स्थापित करने का प्रयत्न किया। जिसे वेदान्त दर्शन को पूर्व पक्ष कहा है क्योंकि आप जब भी कोई शास्त्र ग्रन्थ पढ़ते है कोई भी शास्त्र कोई भी चाहे न्याय दर्शन की पुस्तकें पढ़े, चाहे वेदान्त दर्शन की पुस्तके पढ़े तो ये सभी पूर्व पक्ष के रूप में आते हैं। उसके बाद उन्होंने स्थापित किया जो वेदान्त उपनिषदों से जो प्रारम्भ हुआ वेदान्त वह उनके सम्प्रदाओं के रूप में पर्यवसित होता हैं। जैसे अद्वैत सम्प्रदाय, स्वाभाविक द्वैताद्वैत सम्प्रदाय। हर सम्प्रदाय, द्वैत सम्प्रदाय विशिष्टद्वैत सम्प्रदाय, स्वाभाविक द्वैताद्वैत सम्प्रदाय। हर सम्प्रदाय कोई भी हो वह यह बताना चाहता है कि वेदान्त ही विश्व का ऐसा दर्शन है जो सभी दर्शनों से विश्व में प्रतिष्ठा है। विश्व के कौने में यदि हम जाने जाते हैं यदि भारतीय दर्शन जाना जाता है तो वेदान्त दर्शन के कारण जाना जाता है और वेदान्त दर्शन से ही उसकी गरिमा है। और वेदान्त दर्शन का इन्हीं चार पाँच जो दर्शन है, हम जानते हैं उन्हीं में नहीं है बल्कि वेदान्त दर्शन का प्रभाव शैवो के दर्शन के ऊपर पड़ा है जैसे शैवों के दर्शन तीन स्कूल तीन सम्प्रदाय है। एक है शिवाद्वैतवाद जो कश्मीर का है एक है शैवों सिद्धान्त जो दक्षिण भारत का है अब जो शिवाद्वैतवाद है वह भगवान् शंकराचार्य के अद्वैतवाद से प्रभावित है तो हमारा कहने का मतलब है कि वेदों से दर्शन की यात्रा प्रारम्भ होती है। संक्षेप में बता देता हूँ ज्यादा कुछ नहीं कहुँगा। भारतीय दर्शन की यात्रा का प्रारम्भ वेदों से होता है और उनके जो सूत्र है जैसे जिज्ञासा सूत्र इत्यादि कह सकते है जो दार्शनिक सूत्र है।

इसके बाद वेदान्त से वेदान्त उपनिषद्, जिसे वेदान्त कहा जाता है उस वेदान्त की स्थापना के लिए ही न्याय वैशैषिक दर्शनों का उदय हुआ। इसके बाद अद्वैताचार्य शंकराचार्य इसको पहले भी बहुत से अचार्य थे, और लोभ, आसवृत्त, घट, भुंज उन्होंने वेदान्त की अपने अपने मतानुरूप व्याख्या की थी लेकिन वह सब दर्शन या तो कहिये कि शंकराचार्य के अतिशायी व्यक्तित्व के कारण या फिर ये कहिये कि बौद्धों के प्रहार के कारण उनकी पुस्तकें भी कहीं नहीं उपलब्ध है और न कही दर्शन उपलब्ध हैं लेकिन शंकराचार्य के बाद जो वेदान्त का इतिहास चला उससे इतने वेदान्त के सम्प्रदाय हुये जो विश्व में व्याप्त हो गये और उनके कारण भारत की प्रतिष्ठा है इन शब्दों के साथ मैं अपना उद्बोधन समाप्त करता हूँ।

जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज :- समुपस्थित समस्त संत महन्त महामण्डलेश्वर विद्वद् वृन्द तथा परम भावुक भक्त महानुभाव। आज के इस परम पावन पुनीत अवसर पर षड़ दर्शन सम्मेलन के संदर्भ में अनेक विद्धज्जनों ने वरिष्ठ संत महात्माओं ने अपने दिव्य भाव यहां पर अभिव्यक्त किये। कठोपनिषद् में जब महर्षि वाजश्रवा के पुत्र बालक नचिकेता को यमराज उपदेश करते है तो अपने उपदेश के क्रम में ऐसा भाव व्यक्त कर रहे हैं कि **''श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः''** सम्मुख दो प्रकार के मार्ग हैं। एक श्रेय मार्ग है और एक प्रेय मार्ग है। जो श्रेय मार्ग का अनुसरण करता है साधुभावित वह श्रेष्ठ हैं। जो प्रेय मार्ग का अनुगमन करता है वह केवल योग क्षेम मात्र का निर्वाह करता है उसको इतना उत्कृष्ट नहीं मानते।

श्रेयमार्गानुगामी पूर्व दिशा की ओर जाता है प्रेय मार्गानुगामी पश्चिम दिशा की ओर जाता है। इस श्रेय मार्ग और प्रेय मार्ग को समझने के लिए श्रेय

मार्ग है और जो जिस मार्ग में अभिगमन करने वाला जो प्राणी है उस प्राणी का स्वरूप क्या है यह हम कैसे समझें। केनोपनिषद् का पहला मंत्र है **ॐ केनेषितं पतति प्रेषितं मनः केन प्राणः प्रथमं प्रैति युक्तः। केनेषितां वाचमिमां वदन्ति चक्षुः श्रोत्रं क उदेवों युनक्ति॥** इस मंत्र का बहुत सरल अर्थ है, हमारे शरीर में जो पंच ज्ञानेन्द्रिय ओर पंच कर्मेन्द्रिय और एकादेशन्द्रिय मन। ये जो मन है जिसके लिए शास्त्र बतलाते है, ''मन एवं मनुष्याणां कारणं बंध मोक्षयो:'' बंधन होना, संसार से पराङ्मख हो करके भगवत् भावापति रूप मोक्ष को प्राप्त करना इसका कारण मन ही है। ऐसी कौन सी अनिर्वचनींय विलक्षण शक्ति है जिस शक्ति के द्वारा ये मन चिन्तन करता है अभी मन चिन्तन करे, हमने हाथ ऊपर उठाया, मन ने चिन्तन किया हाथ ऊपर हो गया हमने इच्छा की कि हमको चलना है तो उठकर चल देंगे आपके पास आ जायेगें। मन की गति के अनुसार। ये मन की गति जो इस प्रकार होती है इसको प्रेरित करने वाला कौन तत्त्व है ? मन जो अपनी क्रियाओं में अग्रसर होता है, क्रियाशील होता है, सचेट होता है, इसको अपने क्रिया में प्रवृत्त करने वाला ऐसा कौन तत्त्व है। यह जो धारणा शक्ति हमारी जीवनीय शक्ति है हम जीवन धारण किये हुये हैं हमारा जीवन चल रहा है श्वांस चल रहे है हम संसार के सारे कार्य कर रहे हैं इसको कराने वाला कौन है ?

हम वाणी बोलते हैं आपसे हम जो ये इस समय प्रसंग अपने भाव जो व्यक्त कर रहे है इस यान्त्रिक साधन के द्वारा और नेत्रों से आप सबो का दर्शन कर रहें है इस शक्ति को प्रदान करने वाला कौन तत्त्व है। जिह्वा से रस का ग्रहण करते है श्रवणेन्द्रिय से हम सुनते हैं कानों से हम सुनते है रसना से जिह्वा से हम आस्वाद ग्रहण करते हैं ये जो सम्पूर्ण क्रियायें हैं अर्थात् पंचज्ञानेन्द्रिय पंचकर्मेन्द्रिय एकादशेन्द्रिय मन ये ग्यारह इन्द्रियां हमारे शरीर में है ये अपने अपने कार्यों में रत रहती है प्रवृत्त रहती है क्रिया सम्पादन करती है इनको कराने वाला कौन तत्त्व है, वह तत्त्व कौन है। इसे हमको समझना है और इसको समझने के लिए हमारे पास आधार क्या ? अवलम्ब क्या ? कौनसी सरणी है कौन सा प्रशस्त पथ है कि जिसका हम अनुगमन करके, जिसका समाश्रय ग्रहण करके और उस तत्त्व को समझें। यूं तो हमारे न्याय दर्शन में, वेदान्त दर्शन में सब प्रकार के गहन चिन्तन किये हैं आधार बतायें है जैसे न्याय दर्शन में आधार है। और वह आधार जिसको हम प्रमाण रूप में कहते है। यूँ तो अनके हैं पर तीन प्रमुख हैं अनेक प्रमाण है अनेक आधार है पर तीन को मुख्य माना है। आप बड़ी सरलता से समझेंगे वेदान्त दर्शन का प्रसंग। पहला प्रत्यक्ष प्रमाण, प्रत्यक्ष आधार प्रत्यक्ष को कहते है। ये बालक आपके पास पहुंचा, यह प्रत्यक्ष देखा, ये संत महात्माओं के, विद्वज्जनों के, धीरपुरुषों के दर्शन हो रहे हैं, आचार्य प्रवरों के दर्शन हो रहे है, ये समस्त विशाल पण्डाल का दर्शन नेत्रों से कर रहे है, आँखों से कर रहे है उसको कहते है प्रत्यक्ष प्रमाण। दूसरा हुआ अनुमान प्रमाण। अनुमान प्रमाण किसको कहते है अपने यहां की भाषा में कहते है डूंगर। और पहाड़ है और पहाड़ के ऊपर धूंआ उठ रहा है तो अनुमान किया, अंदाज लगाया यत्र यत्र धूमस्य तत्र तत्र अग्नि ये व्याप्ति की गई कि जहां जहां धूम दृष्टिगत हो, जहां धूंआ दिखाई दे वहां पर अग्नि अवश्य है। तो जहां धूंआ

दिखाई दें अभी अकस्मात् यहां धूंआ उठने लगे तो सब घबड़ा जायेंगे कि अग्नि प्रकट हो गई। इसको अनुमान प्रमाण कहते हैं। और तीसरा प्रमाण है शब्द प्रमाण। शब्द प्रमाण कहते हैं जिसको हमारे यहां तो शास्त्र प्रमाण, वेद प्रमाण, इसको शब्द प्रमाण। अर्थात हम जो बोलते हैं ये बोलना सामान्य है वेद अपौरुषेय है वो वेद। वेदवादी उसको कहते हैं शब्द प्रमाण। ये तीन प्रमाण हमारे सामने हैं। अब इनमें प्रत्यक्ष प्रमाण और अनुमान प्रमाण ये दो प्रमाण जो पहले बताये इनको हमारे वेदान्त दर्शन में संकेत किया है ''न अनुमानं न इन्द्रियाणि'' वह जो परम तत्व है जिसको हमें समझना है इन प्रमाणों से न तो प्रत्यक्ष गम्य है न अनुमान गम्य है। न तो अनुमान से हम जान सकते है न प्रत्यक्ष के द्वारा भी प्रत्यक्षीकरण कर सकते हैं इन दो प्रमाणों को स्वीकार किया है परन्तु इनको गौण रूप में माना है, प्रबल प्रमाण नहीं है जैसे प्रत्यक्ष प्रमाण में भ्रान्ति हो जाती है।

शंकराचार्य जी महाराज तो जो अद्वैतवादी हैं वह तो संकेत करते ही हैं किन्तु जैसे किसी को कामला की व्याधि हो जाय आयुर्वेद में कामला व्याधि है, इसको सामान्य भाषा में कहते हैं जिसके पीलिया की बीमारी हो जाय। और जब ये बीमारी ये व्याधि चरम सीमा पर हो जाती है उग्रावस्था को प्राप्त हो जाती है उस अवस्था में उसके नख भी पीले हो जाते है नेत्र भी पीला हो जाता है, शरीर भी पीला हो जाता है। ओर उस उग्रावस्था में उसको श्वेतिमा में पीतिमा दिखाई पढ़ती है, जैसे सफेद कपड़ा है तो वह पीला दिखाई पड़ेगा प्रत्यक्ष तो वहां भी हो रहा है पर भ्रान्ति है जिसके नेत्र सही है वह बता रहा है कि प्रत्यक्ष में ये श्वेत वस्तु है सफेद है। परन्तु जिसके बीमारी हे वह कहेगा कि पीला है तो वह बात नहीं मानी जाती यहां भ्रान्ति होती है इसलिए प्रत्यक्ष प्रमाण गम्य नही है, अनुमान प्रमाण है इनको प्रबल प्रमाण नहीं माना गौण प्रमाण है। प्रबल प्रमाण है शब्द प्रमाण। जैसे शब्द प्रमाण को मान लें कि कोई बालक है और बालक के माता कौन है बालक का पिता कौन है? इसका जो ज्ञान वह शब्द प्रमाण के द्वारा होता है। अनुमान भी लगाया जाता है कि आकृत्ति आदि से वैसा भी किया जाता है, परन्तु शब्द प्रमाण ही मुख्य है। माता यह कहती है, पिता कहता है कि ये तुम्हारी माता है और माता कहती है कि तुम्हारे ये पिता है बन्धुजन कहते हैं कि यह तुम्हारे माता पिता है ये जो वचन सुनते हैं ऐसे ही वेद उस परम तत्त्व का निरूपण करते हैं। वेद काण्ड त्रयात्मक है वेद के ज्ञानकाण्ड, उपासनाकाण्ड, कर्मकाण्ड और इसका फिर निरूपण। फिर अपरान्ह में हम आपके सामने प्रस्तुत करेंगे।

❒❒❒

वैदिक सम्मेलन

वैदिक मंगलाचरण :- सस्वर पाठः-

ऋग्वेद पाठ श्री श्रीराम जी चतुर्वेदी, (राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर)

यजुर्वेद पाठ (1)पं. श्रीउमेश दास जी, (राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर)

(2)पं. श्रीशम्भूनाथजी , (राजस्थान संस्कृत कॉलेज, जयपुर)

सामवेद श्री कपिल भारद्वाज, (जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर)

अथर्ववेद पाठ श्री घनश्यामजी शर्मा

डा. धर्मवीर जी, (अजमेर):-

अभी आपने वेद की चर्चा सुनीं ये मंच का बड़ा गौरव है कि यहां पर वेद मंत्रों से और वेद मंत्रों के भावों से आपका साक्षात्कार कराया जा रहा है। आप सोचते होंगे कि वेद तो पता नहीं कितनी ऊंची चीज है शायद आपकी समझ से आपके काम से, परे की हो और आपको उसकी क्या जरूरत है किन्तु याद रखियेगा आपके जीने का जो सार है आपके जीने की दिशा का जो निर्धारण है वह केवल वेद से ही सम्भव है वेद के अतिरिक्त यदि हम जीते हैं तो वेद के अनुसार आदर्श जीवन नहीं जी सकते हैं मानवीय आदर्श जीवन नहीं जी सकते हैं, न आदर्श जीवन को समझ सकते हैं। मैं आपको याद दिला दूँ मध्यकाल में जब हमने वेद का पढ़ना पढ़ाना छोड़ दिया था उसका परिणाम आप लोग जानते हैं क्या हुआ। भगवान् बुद्ध ने बौद्धधर्म चलाया जरूर था लेकिन उन्होंने वेद पढ़कर वेद का विरोध नहीं किया था। उनको वेद पढ़ने का मौका ही नहीं मिला था और जब वेद के नाम पर यज्ञों में पशु हिंसा की बात की गयी, वेद के नाम पर बलि की बात की गयी तो उनको वेद को इन्कार कर ना पड़ा और उन्होंने वेद के नाम बलि भक्षण कर्त्ता परमेश्वर की बात कही तो उन्होंने ऐसे परमेश्वर को इन्कार कर दिया। यही हाल भगवान महावीर का हुआ और यही हाल बाद में आने वाले दूसरे समाज सुधारकों का हुआ। उनको हम वेद विरोधी भले ही कहें लेकिन ये हमारा दुर्भाग्य है कि हमने कभी उन्हें वेद से परिचय ही नहीं होने दिया। वेद के पठन पाठन को अवरुद्ध कर दिया और वेद के पठन पाठन न करने का परिणाम इतने मत मतान्तर, सम्प्रदाय हमारे बीच में पैदा हो गये।

महानुभाव आज आपने इस वेद विषय की चर्चा यहां प्रारम्भ की है आपको एक बात याद होनी चाहिये। वेद का जीवन अपौरुषेय जीवन इसलिए है कि परमेश्वर जब किसी चीज को बनाता है तो वह न एकांगी बनाता है न किसी एक व्यक्ति के लिए बनाता है। परमेश्वर ने जब सूर्य का प्रकाश दिया है, परमेश्वर ने जल और वायु को दिया है। परमेश्वर ने इस पृथ्वी पर अन्न और फूल फल कन्दों को दिया है- परमेश्वर ने इनका सदुपयोग करने के लिए वेद का ज्ञान भी दिया है। यदि आपके पास सूर्य का प्रकाश है और सूर्य के प्रकाश का उपयोग करने के लिए आपके पास बुद्धि नहीं है तो इसके लिए

आप परमेश्वर को दोषी नहीं ठहरा सकते।

बुद्धि परमेश्वर ने दी है सूर्य का प्रकाश भी दिया है उस बुद्धि से आप सूर्य के प्रकाश का उपयोग करें यह आपके लिए लाभकर हो सकता है। वैसे ही परमेश्वर ने समस्त संसार के साथ उस वेद रूपी ज्ञान को आपके सामने प्रस्तुत किया है। यदि उसके बिना आप जीना चाहते हैं तो आपका जीवन अधूरा होगा आपका जीवन दुःख से भरा होगा। क्योंकि मनु महाराज ने सीधी बात कही है कि जो धर्म को जानना चाहता है, ''**धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः**'' आप धार्मिक भी होना चाहते हैं और वेद भी नहीं पढ़ना चाहते ये दोनों बात सम्भव नहीं है यदि आप वेद पढ़ेंगे तभी आप धार्मिक हो सकते हैं यदि आप धार्मिक हैं तो आप वेद के अनुसार आचरण करने वाले अवश्य होगें क्यों कि ''**वेदोऽखिलो धर्ममूलं,**'' समस्त धर्मों का मूल वेद है। आप कहेंगे कि यह बात कैसे सिद्ध होती है हम कैसे मानें कि वेद ही समस्त धर्मों का मूल है इसके लिए मैं यजुर्वेद की एक पंक्ति आपके सामने प्रस्तुत करना चाहुँगा।

मान्य महानुभाव आजकल संस्कृति की, सभ्यता की चर्चा करने वाले बहुत मिलते हैं कोई ईसाई संस्कृति की बात करता है, तो कोई इस्लामिक संस्कृति की बात करता है, कोई बौद्ध संस्कृति की भी बात करता है, कोई जैन संस्कृति की बात करता है, कोई भारतीय संस्कृति की बात करता है, किन्तु वे लोग ये भूल जाते हैं कि इस देश में जो कुछ हो रहा है वह सब अच्छा नहीं हो रहा है, और जो सब अच्छा नहीं हो रहा है वह संस्कृति की परिभाषा में समाया नहीं जा सकता है। महानुभाव एक बात याद रखने की हैं, संस्कृति जो शब्द बना हुआ है वह सम्पूर्वक 'कृ' धातु से बना हुआ है सम का अर्थ होता है अच्छा और 'कृ' का भाव होता है ''करना'' जो हमने जीवन में अच्छा किया है। जो हमने अपने सामाजिक जीवन में अच्छा किया है, जो हमने अपने राष्ट्रीय जीवन में अच्छा किया है वही हमारी संस्कृति का बोधक हो सकता है वही हमारे आदर्शों का परिचायक हो सकता है जो कुछ हमने उल्टा किया है, सीधा किया है, चोरी की है, डकैती की है, करना हमारी आदत रही है करना हमारा स्वभाव रहा है कोई इस परम्परा को यदि संस्कृति समझता है तो वह गलत समझता है वह संस्कृति नहीं हो सकती वह तो विकृति हो सकती है वो दुष्कृति हो सकती है वह अच्छी और बुरी कुछ भी नहीं है तो केवल कृति हो सकती है वो उसका स्वभाव प्रकृति हो सकती है किन्तु संस्कृति बिल्कुल नहीं हो सकती। संस्कृति वह होती है जो जीवन का श्रेष्ठ और आदर्श आचरण हुआ करता है। श्रेष्ठ और आदर्श आचरण कौन सा होना चाहिये। इसके लिए वेद ने एक सुन्दर दो विशेषणों का मंत्र में उल्लेखित किया है। संस्कृति वह होती है जो ''विश्ववारा'' होती है और ''प्रथमा'' होती है अर्थात् हमारा वह कार्य जिसको सबसे पहले हमारे लिए परमेश्वर ने निर्दिष्ट किया हो वह हमारी संस्कृति होगी और वह कार्य दुनियां में किसी को किसी अवस्था व स्थान पर किसी भी समय में नुकसान देय नहीं लाभप्रद होना चाहिये आदर्शदायक होना चाहिये, प्रेरणादायक होना चाहिये जीवन के लक्ष्य को पूरा करने वाला होना चाहिये। तो आप बता सकते हो कोई इस्लामिक संस्कृति संस्कृतिकहला सकती है, कोई बौद्ध संस्कृति संस्कृति कहला सकती है, कोई जैन संस्कृति संस्कृति कहला सकती है, और तो और जिसको आप भारतीय संस्कृति कहते हो यह भी संस्कृति नहीं कहला सकती।

संस्कृति तो केवल वैदिक संस्कृति होती है जिसका वेद ने उल्लेख किया है क्यों कि वेद ''प्रथमा'' भी है और वेद ''विश्ववारा'' भी है आप कल्पना कर सकते हैं कि इसको हम संस्कृति क्यों कहते हैं और यह संस्कृति कैसे सिद्ध हो सकती है मैं यजुर्वेद के एक मंत्र से इस बात को प्रस्तुत करने की चेष्टा करूँगा। यजुर्वेद का और

ईशोपनिषद् का पहला मन्त्र है-

ईशावास्यमिदँ सर्वं यत्किञ्च जगत्यांजगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥

महानुभाव, यदि इस मन्त्र पर आपने कभी भी ध्यान किया तो आपके जीने की दशा बदल जायेगी, आपके जीवन की दिशा बदल जायगी आपके जीने का उद्देश्य बदल जायेगा। आपके जीने का अंदाजा बदल जायगा क्यों कि जिस दिन आप इस मंत्र को समझेंगे जिस दिन इसके अर्थ पर विचार करेंगें तो जो प्रातःकाल की चर्चा आप सुन रहे थे दर्शन की, लेकिन एक बात याद रखियेगा धर्म अलग चीज नहीं है और दर्शन अलग चीज नहीं है। क्यों कि आप महानुभाव इस बात को भली प्रकार समझें, दर्शन उसे कहते हैं हमारे चिन्तन को हम दर्शन कहते हैं और जिस धर्म का जितना गहरा दर्शन होगा जितनी स्पष्ट विचारधारा होगी उतना ही धर्म अच्छा होगा उतना ही श्रेष्ठ होगा, उतना ही ग्राह्य होगा, उतना ही अनुकरणीय होगा, और उतना ही चिरजीवी भी होगा। आप इस मंत्र के छोटे से अंश से कल्पना कर सकते हैं, वह कह रहा है, जो कुछ तुम्हें दिखाई दे रहा है चाहे वह जड़ है, चाहे वह चेतन है, चाहे वह चलायमान है, चाहे वह अचलायमान है, चाहें वह सूक्ष्म है, चाहे वह स्थूल है, वह सब ईश्वर से व्याप्त है। ईश्वर उसके अंदर भी ओतप्रोत है और ईश्वर उसके बाहर भी है, बड़ा विचित्र लगता है ऐसा कैसे हो सकता है इसके लिए तो आकाश उदाहरण है जो अन्दर भी व्याप्त है हमारे बाहर भी व्याप्त है क्यों कि इसमें हमारे गति करने से कोई बाधा नहीं आती। ऐसे ही ईश्वर इस संसार के अंदर भी व्याप्त है और इस संसार के बाहर भी व्याप्त है जो कुछ है सब में व्याप्त है। एक बात याद रखियेगा कोई चीज किसी की क्यों हुआ करती है।

जो कोई इस गांव में आ करके पहले बसा होगा और दूसरी बार बसने के लिए आने वाले व्यक्ति को जब उसने पूछा होगा कि मैं इस गांव में बसना चाहता हूँ तो उसने कहा होगा कि नहीं यह तो मेरा है वह मेरा क्यों है? मेरा इसलिए है कि वह सबसे पहले आ करके बसा है तो आप बता सकते हो कि यह संसार किसका है क्यों कि संसार जिसका है वह तो पहले से इसमें आकर बसा हुआ है, पहले से विद्यमान है इसलिए वेद का मंत्र कहता है- ''ईशावास्यमिदं सर्वं'', यह सब ईश्वर से व्याप्त है, आच्छादित है, परिपूर्ण है, तो आप बता सकते हो कि संसार उसका हुआ, फिर मैं इसे अपना कैसे कह सकता हूँ, मैं इसे मेरा कैसे कह सकता हूँ, मैं इस पर अहंकार कैसे कर सकता हूँ, मैं इसमें मोह कैसे कर सकता हूँ, फिर मेरा इससे सम्बन्ध क्या है, इसके लिए वेद की अगली पंक्ति बहुत अच्छा उपेदश देती है, कि ऐसा मत समझना कि यह संसार तेरे लिए नहीं है। यह परमेश्वर, परमेश्वर इसलिए है कि तुझे बनाया है यदि तुझे नहीं बनाया होता तो परमेश्वर का होना ही व्यर्थ हो जाता यदि मनुष्य नहीं होता, यदि प्राणी नहीं होता इस धरती पर तो ईश्वर के ईश्वर होने का फायदा ही क्या था? यदि संतान नहीं है तो उसे पिता ही कौन कहेगा वह जगत् प्रसूत करने वाला है।

तो इसलिए उसका उत्तरदायित्व है कि जिसने जिसको पैदा किया है उसका ध्यान रखे इसके लिए उसने मंत्र में उपदेश किया है, वह परमेश्वर जो कुछ तेरे अधिकार के अनुसार तेरे कर्त्तव्य के अनुसार देता है उसे तुझे पाने का अधिकार है, उसे तुझे अपना कहने का अधिकार है, उसका उपयोग करने का अधिकार है, लेकिन एक बात जरूर याद रखना जो तेरे कर्मफल से मिला हुआ है, जो तेरे पुरुषार्थ से मिला हुआ है, जो तेरे अधिकार से मिला हुआ है वह निश्चित रूप से तेरा है किन्तु जो तेरे अधिकार से बाहर है, जो तेरे पुण्यों से बाहर है, जो तेरे कर्मफल से बाहर है, यदि उसकी तू इच्छा करता है तो उसदिन पाप प्रारम्भ हो जायगा और

उसी के लिए वह कहता है, तू किसी के धन की लालसा मतकर, किसी के धन में लालच मत कर। ऐसा जीवन जीने के लिए वह संस्कृति के कौन से मूल्य हैं, वह कौन से मानदण्ड हैं, वह कौन से तरीके हैं जब मैंने इस पर विचार किया तो मैं आपको बताने में बड़ा सुख का अनुभव करता हूँ, मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है वह बहुत छोटे-छोटे शब्दों में हमारी सारी वैदिक संस्कृति निहित है उसे चाहे अमेरिका अपनाये, वह निश्चित रूप से अपने जीवन को सफल करेगा और अपने जीवन को सुफल करेगा। वह कौन सी चीजें है याद रखिये उसे यह मालुम होना चाहिये कि यह धरती ईश्वर की है और ये धरती मनुष्यों के लिए बनीं हुई है।

मनुष्य को अपने कर्म और अधिकार के अनुसार जो वस्तुऐं मिली हुई हैं उनका उसे उपभोग करना है, उपयोग करना है इसके लिए हमारे यहां त्रैतवाद दर्शन है कि ईश्वर है, जीव है, और प्रकृति है इसका हमें ज्ञान होना चाहिये इसका सही ज्ञान हुये बिना हम सही कर्म नहीं कर सकते हैं। हमारे जीवन का पारिवारिक हिस्सा, हमारे जीवन का व्यक्तिगत हिस्सा, हमारे जीवन का सामाजिक हिस्सा, हमरे जीवन का राष्ट्रीय हिस्सा और हमारे जीवन का वैश्विक हिस्सा भी हमारी इस वैदिक संस्कृति से अच्छा हो सकता है।

और सब जितनी पद्धतियां हैं, मत है, सम्प्रदाय हैं, उनकी एक विशेषता है वे जीवन के एकांगी पक्ष को, एकांगी दृष्टि को देख सकते हैं कोई किसी पक्ष को रखता है, कोई आध्यात्मिक पक्ष को रखता है, तो कोई आधि भौतिक पक्ष को रखता है लेकिन वैदिक संस्कृति की एक बड़ी भारी विशेषता है जो जीवन को भी आपके सामने रखता है, वह आपके पारिवारिक जीवन की भी चिन्ता करता है और वह अपने सामाजिक सन्दर्भो को भी कभी सामने से ओझल नहीं होने देता है। आप मुझसे कह सकते हैं कि ऐसे वह कौन से तथ्य हैं जिनके द्वारा हम इस प्रकार का अपने पारिवारिक जीवन को सम्भाल सकते हैं। सोलह संस्कारों के द्वारा हम अपने व्यक्तिगत जीवन को सम्भाल सकते हैं।

अष्टांग योग द्वारा हम अपने आध्यात्मिक जीवन को सम्भाल सकते हैं, हम अपने वर्ण और आश्रम धर्मो के द्वारा अपने समाज और व्यक्तिगत जीवन को निखार सकते हैं। यदि हमने आपने उस आश्रम जीवन का पालन किया हैं, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ और संन्यास का नियमित जीवन में पालन किया है तो हमारा सम्पूर्ण जीवन चार भागों में व्यतीत होकर हमारे व्यक्तिगत निर्माण, हमारे पारिवारिक निर्माण, हमारे सामाजिक निर्माण, और हमारे आत्मिक निर्माण का कारण बनता है। यदि हमने वर्ण धर्मों का पालन किया होता है तो हम समाज के प्रत्येक वर्ग के साथ न्याय कर सकते हैं और उसके अनुसार कार्य दे सकते हैं। यदि हमने अपने जीवन में सोलह संस्कारों को समझा है और प्रत्येक संस्कार को विधि पूर्वक किया हैं तो आप चिन्ता करते हो अपनी खेती की आप चिन्ता करते हो अपने पेड़ों की, आप चिन्ता करते हो अपने कपड़ों की आप चिन्ता करते हो अपनी सड़कों की लेकिन इनको बनाने के लिए आपने नई तकनीक ढूढी है नये नये उपाय किए हैं मित्रों क्या यह बता सकते हो कि मनुष्यता की खेती करने के लिए आपने कौन सी विद्या ढूढी है, आपने कोई विद्या नहीं खोजी है यदि आप मनुष्य की खेती करना नहीं जानते तो आप इसके मनुष्य जीवन के लक्ष्यों को भी प्राप्त नहीं कर सकते।

इसलिए सोलह संस्कारों का विधान हमारे ऋषि, महर्षियों ने किया है। हम अपने पारिवारिक जीवन को सम्भाल सकते हैं हम अपने पारिवारिक जीवन को सुखी और समृद्ध बना सकते हैं। आज हम जो जीवन में

विडम्बनायें देख रहे हैं, हमारे बच्चे हमारी नहीं मानते हैं। हमारे बच्चे हमारी संस्कृति और विचारधारा का आदर नहीं करते हैं, ऐसा क्यों होता है आप भली प्रकार समझिये कि शिक्षा के बिना, संस्कार के बिना आपके परिवारों का सुधार नहीं हो सकता। आप अपने जीवन में याद रखियेगा प्रतिदिन कुछ समय अपने बच्चों को सुधारने के लिए जरूर दीजियेगा। यदि आप अपने बच्चों को टी.वी. दिखाते हैं आप अपने बच्चों को नाँच गाने दिखाते है आप अपने बच्चों को उल्टी सीधी कथायें पढ़ने के लिए देते हैं। उनके संस्कार उन पर जरूर पड़ेगे क्योंकि इस दुनियां में ऐसा कभी नहीं होता। एक बार हमारे हरियाणे में एक ऐसे पण्डित थे जिनको हम दादा बस्तीराम कहा करते थे। दादा बस्तीराम एक दिन खाट पे बैठे हुये संध्या कर रहे थे सामने से एक चौधरी आया और वह कहने लगा दादा तुम्हारी संध्या भगवान् को नहीं लगेगी क्यों कि तुम खाट पर बैठे हुये संध्या कर रहे हो। हमारे दादा बस्तीराम इतने प्रबुद्ध और इतने तत्काल मति थे जैसे ही उन्होंने संध्या समाप्त की उन्होंने चौधरी को दस बीस गालियां दे डाली। चौधरी ने गुस्से में होकर कहा दादा तुम्हें शर्म नहीं आती तू मुझे गाली दे रहा है तब उन्होंने कहा भाई लगेंगी नहीं क्यों कि मैं खाट पर बैठ कर दे रहा हूँ। आप कल्पना कर सकते हैं आपके अंदर आपके कानों में शब्द पड़ कर असर डाल सकते हैं, कोई बुरा कर सकता है तब आप उनके लिए तो परवाह नहीं करते उनको बचाने की चेष्टा नहीं करते लेकिन अच्छे संस्कार डालने का प्रयत्न ही आप नहीं करते। याद रखिये आपके जीवन की एक भी घटना ऐसा नहीं है जो आपके हृदय में न उतरी हो, आप का एक भी शब्द ऐसा नहीं होगा जो आपके अन्दर संस्कार न डालता हो। इसलिए मेरे बन्धुओं आप यहां आये हो एक धार्मिक स्थान से संकल्प लेकर जाओं, आप वेद का स्वाध्याय करोगे आप वेद के अनुसार आचरण करोंगे, वैदिक संस्कृति का पालन करोंगे अपने जीवन में पंच-महायज्ञ सोलह संस्कारों का कार्य प्रारम्भ करोंगे।

ऐसा करोंगे तो न केवल व्यक्तिगत सुधार होगा अपितु आपके पारिवारिक और सामाजिक जीवन में भी सुधार होगा। आपने जो मुझे थोड़ा सा समय वेद की चर्चा करने के लिए दिया इसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ और पूज्य श्रीजी महाराज के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और मैं आपसे आशा करता हूँ वेद की धारा, यह ज्ञान की गंगा बहती रहे और हम अवगाहित होकर अपने को पवित्र और आत्मा को भी पवित्र करते रहें।

प्रो. दयानन्द जी भार्गव, जयपुर

वेद पर कुछ कहने से पहले दो वाक्य और बोलना चाहता हूँ - पहला तो ये कि मैं एक रेल्वे यात्रा कर रहा था और मैंने ये शिकायत की कि वेद का शुद्ध उच्चारण सुनने को बहुत कम मिलता हैं जो आस पास यात्री बैठे थे उन्होंने कहा आप कभी सलेमाबाद गये। मैंने कहा, मैं सलेमाबाद तो नहीं गया उन्होंने कहा आप सलेमाबाद जायेंगे तो वेद का शुद्ध उच्चारण सुनने को आपको मिलेगा। मैंने उसी दिन रेल में बैठे बैठे सलेमाबाद को प्रणाम किया था जहां वेद का शुद्ध उच्चारण सुनने को मिल रहा हैं और उस प्रणाम करने के पुण्य का यह फल है कि आज मुझे यहां खड़े होने का अवसर मिल गया। दूसरी बात जो मैं भारतवर्ष में हूँ नहीं तो सभाओं में लगता ही नहीं कि हम भारतवर्ष में बैठे हैं। यहां जो श्रोता जिस आस्था और श्रद्धा से वेद का भाषण सुन रहे हैं जिस प्रकार के श्रोता और ये मंच पर विराजमान विभूतियां हैं उसको देखकर यह लगता है कि भारतवर्ष अभी जिन्दा हैं, मरा नहीं है। नहीं तो कहीं तो महानगरों में जिस वेशभूषा में जिस मंच से जिस तरह के भाषण होते हैं लगता हैं कि भारतवर्ष में कहीं अमेरिका तो नहीं आ गया, भारतवर्ष कहीं है या नहीं है यहां आ करके लगने लगा कि भारतवर्ष अभी है।

बन्धुओं इन दो बातों के बाद मैं अपने विषय वेद पर आना चाहता हूँ और आपसे यह निवेदन करना चाहता हूँ कि मैं आपको यहां अपने विनम्र प्रयास से वेद का दर्शन करवाना चाहता हूँ। आपके सामने वेद आँखों के सामने आ जाये यह प्रयत्न मेरा होगा। उस प्रयत्न का आधार क्या है शास्त्र आधार है। शास्त्र बोल रहा है कि ऋग्वेद जो पहला वेद है वह अग्नि से उत्पन्न हुआ। जो यजुर्वेद है यह वायु से उत्पन्न हुआ। जो सामवेद है वह सूर्य से उत्पन्न हुआ। अर्थवेद सोमसे उत्पन्न हुआ, ये चार वेदों की उत्पत्ति का मूल बताया। फिर पूछा कि इन चार वेदों का काम क्या है? जितने मूर्ति पदार्थ आँखों से दिखाई देते हैं वे सब ऋग् से उत्पन्न हुये हैं ये जो आपको मूर्त पदार्थ दिख रहे है सब ये ऋग की कृपा है कि ये मूर्त पदार्थ पैदा हुये और जितनी गति ये जो भाई पीछे चल रहें हैं इनमें जो गति हो रही है **''सर्वा गति र्याजुषा''** है, यह सारी गति यजु से उत्पन्न हुई है। और ये जो प्रकाश आ रहा है जिस प्रकाश के बल पर मैं आपको और आप मुझे दखे रहे हैं ये सारा प्रकाश **''सर्वं तेजः साम्यरूपं''** ये शाश्वत ये सारा प्रकाश सामवेद से उत्पन्न हो रहा है। विचार करने की बात यह है कि शास्त्र तो बोल दिया क्या कहना चाहता है कि अग्नि से ऋग्वेद पैदा हुआ और ऋग्वेद से सारे मूर्त यानी ठोस पदार्थ पैदा हुये। वायु से यजुर्वेद पैदा हुआ यजुर्वेद से सारी गति पैदा हो गई। सूर्य से आदित्य से सामवेद पैदा हुआ और सामवेद से सारे तेज पैदा हो गई। सोम से अथर्वेद पैदा हुआ और ये अग्नि, वायु, आदित्य ये जितनी गतिविधि चल रही है वह सोम की उसमें आहुति पड़ रही है अथर्व वेद की आहुति पड़ रही हैं इसलिए चल रही है। वाक्य तो बोल दिये शास्त्र ने इसको जरा अपन प्रदर्शित करें कि यह कैसे होता है।

अपन सबसे पहले ऋग्वेद को लें। फिर ध्यान दिला दूँ कि ऋग्वेद अग्नि से उत्पन्न हुआ, पहली बात और ऋग्वेद से सारे मूर्त पदार्थ हुये। और अब हमारे एक ऋग्वेद के पण्डित ऋग्वेद का यहां पाठ करेंगे आपके सामने एक मंत्र का और आप देखेंगे कि उस मंत्र में किस तरह जो शब्द है वह एक दूसरे से ऐसे जुड़े हैं जिस तरह से उनके पाठ में, पाठ करेंगे आपके सामने एक मंत्र इस तरह आपस में पद जुड़े हैं, जैसे ठोस पदार्थ आपस में ठोस पदार्थ के परमाणु आपस में, जिस तरह से जुड़े रहते हैं। आप थोड़ा सा ध्यान से सुनेंगे तो देखेंगे कि जो वेदपाठ हो रहा है वह वेद पाठ किस तरह वैज्ञानिक है ध्वनिविज्ञान से ऋग्वेद के पाठ मात्र से अग्नि तत्व फलीभूत होकर ठोस पदार्थों का निर्माण करता हैं यह ऋग्वेद के पाठ में देखेंगे और फिर तुलना करेंगे कि जब यजुर्वेद का आयेगा तो कैसे वह ऋग्वेद से भिन्न होकर और वायु तत्व बनकर गति पैदा करेगा देखिये आप ऋग्वेद का एक मंत्र सुनिये-

''हरि ॐ अग्नि'' पण्डितों द्वारा ऋग्वेद की श्रुति का गान हुआ।

आप देखें यह ऋग्वेद का पाठ हुआ। यजुर्वेद का पाठ इससे भिन्न प्रकार से होगा अभी आप देखेंगे। इस पाठ की विशेषता यह है कि एक मंत्र को बोलने में जितना समय ऋग्वेद वाला लगाता है, उससे थोड़ा समय यजुर्वेद वाला लगायेगा, गति आ जायेगी ठोस पदार्थ गति में बदल जायेगा स्पीड में बदल जायेगा। यजुर्वेद का पाठ आप देखें किस तरह हो रहा है और उसकी ऋग्वेद के पाठ से तुलना करें कैसे घन तरल हो गया हैं कैसे ठोस पदार्थ गति में आ गया है शब्द को सुनने मात्र से यह प्रकट होगा।

''हरि ॐ युंजानं'' पण्डितों द्वारा यजुर्वेद की श्रुति का गान हुआ।

ठोस पदार्थ मूर्त पदार्थ जो अपनी जगह ऋग्वेद में स्थिर था वह यजुर्वेद के पाठ में आप देख रहे हैं किस

तरह चलने लग गया, गति आ गई, उसमें ये वायुतत्व है जो अग्नि वायु में परिणत हो गया यानि जो घनतत्व था वह विरल बन गया। अब आप सामवेद को देखेंगे पण्डितजी सामवेद का पाठ करेंगे और आप दखेंगे जितना समय ऋग्वेद में लगा उससे ड्योडा समय यजुर्वेद में लगा और ढाई गुना समय सामवेदी लगायेगा वह आदित्य विरल बन जायेगा, सूर्य का प्रकाश बन जायेगा आप देखें क्या चमत्कार इस पाठ में, आप देखों क्या होता है।

''श्रीःनातौभकाह'' आदि पण्डितों द्वारा सामवेद की श्रुति का गान हुआ।

श्री नातौर्भुह ऐथोत्ताभिर्युक्तः हऊं हऊं हऊंताभिरूत्वरानद्ररायितौमा हऊ हऊ हऊ। श्री ऽ ना ऽऽऽ तौभुका ऽऽ हा ऽऽ ऐ ऽ था ऽऽ क्ताः भिर्य ऽक्त ऽऽऽऽ हऊहऊ हऽऽऊ ताभिरू ऽऽऽऽऽत्वरान्द्र ऽऽऽऽ यि ऽऽऽऽतौभाऽऽ हऊ हऊ ह ऽऽ

संसार में उच्चारण के आधार पर ध्वनि के आधर पर ऐसा वैज्ञानिक विश्लेषण कहीं पर नहीं हुआ जो एक साथ एक पाठ तो करें तो अग्नि का बोध दे, दूसरा करे तो गति आ जाये और तीसरा करे तो प्रकाश बन जायें। जो अग्नि है वह पृथ्वी का देवता है, जो वायु है वह अन्तरिक्ष का देवाता है, और जो आदित्य है वह स्वर्ग लोक में पहुँच रहीं है उस पाठ का जो प्रकार है वह प्रकाश सिद्ध करता है। और बन्धुओं हमारे इन वेदपाठी ब्राह्मणों ने रूखी सूखी रोटी खाकर समाज का अपमान सहकर दो चार पाँच हजार वर्ष से नहीं जाने कितने लाख वर्षों से इस परम्परा को सुरक्षित रखा है इनके जहां पाँव पड़ जाते हैं वहां की रजः कण पवित्र हो जाते हैं। आप लोगों का सौभाग्य और श्रीजी महाराज की अनुकम्पा कि यह अवसर हमें दिया। मैं जानता हूँ सभा है समय की सीमा है उस विषय पर बोल रहा हूँ एक एक मंत्र कहा था आप बोल दें। आप ऋग्वेद के दो घण्टे पाठ सुनिये आपके दक्षिणादि में जो वैश्वानर अग्नि है वह प्रकट हो जायेगी। ये अग्नि जो बाहर दिखाई देती है अधिभूत में ये अग्नि मेरे अध्यात्म के अंदर वैश्वानर अग्नि बनी हैं, जिस वैश्वानर अग्नि के आधार पर अन्न पक कर रस माँस, मज्जा बनाता है सारा का सारा। जो देवता बाहर बैठा है वह देवता अन्दर भी बैठा है वैश्वानर अग्नि एक मंत्र से होगा नहीं दो घण्टा तीन घण्टा वेदपाठी को बुलाइये, उचित सम्मान दीजिये और एक बात ध्यान में दें दे कि वेद का कब प्रभाव होगा जो प्रभाव मैं बतला रहा हूँ प्रत्यक्ष प्रभाव जिसके मन्दाग्नि रहती है भूख नहीं लगती है ऋग्वेद का पाठ सुनें लेकिन टेपरिकार्डर से नहीं सुनना है यह देवता का स्तवन है वेदपाठी ब्राह्मण से सुनना है और सुनते समय तीन चार शर्तें -

''यमेव विद्या श्रुतिः ऐ प्रमत्तं मेधाविनं ब्रह्मचर्योऽपि परिणं तस्मै मा गुरूयानिध पाय ब्रह्मन् गोपाय मा शैवधिष्टी''

हे ब्रह्मन् मैं तेरी निधि हूँ। हरेक को नहीं सुनाना वेद उसी को सुनाना जो श्रुति पवित्र हो मनसा वाचा कर्मणा जो पवित्र है उसको वेद पाठ का फल मिलेगा, भ्रष्टाचारी को नहीं मिलेगा, वेद का दोष मत देना पात्र का दोष हैं। ''यमेव विद्या श्रुतिं **ऐ प्रमत्तं**'' जागरूक हो रीढ़ की हड्डी सीधी करके बैठो, जागरूकता **ऐ प्रमत्तं मेधाविनं,** बुद्धिहीन के लिए वेद नहीं बना है मेधावी चाहिये और एक और शर्त रख दी **''ब्रह्मचर्योऽपिपरिणम्''**, ब्रह्मनिष्ठ होना चाहिये फिर आप फल देखिये वेद का। अरे पात्र कुपात्र का तो विचार करोंगे न ऐसे कैसे है कि हरेक को वेद का फल मिलेगा। यह शर्तें आप पूरी करिये फल देखिये अग्नि आपकी प्रज्ज्वलित हो जायेगी ऋग्वेद का पाठ सुनिये भूख ड्योडी हो जायेगी जितनी भूख लगती है। किसी का वायु रोग निश्चित रूप से ठीक होगा वायु देवता की उपसना से। ये परिक्षित बातें मैं आपके सामने बोल रहा

हूँ, शास्त्र को करने योग्य बातें कह रहा हूँ, जीवन में कैसे वेद लाभ दें उसकी बात कर रहा हूँ। अगर किसी की बुद्धि मंद है बातें समझ में नहीं आती है कहता है साहब कुछ पल्ले नहीं पड़ता, पता नहीं क्या हो गया है मेरे तो यह सूक्ष्म बातें पल्ले नहीं पड़ती सामवेद का पाठ सुने बुद्धि ठीक हो जायेगी। ये हजारों लाखों साल से इस देश में परीक्षण हुये तब ये वेद सुरक्षित रहा है। वेद कहने से वेद सुरक्षित नहीं हुआ उसका लाभ हुआ है तब सुरक्षित रहा है। मेरे मित्र कह रहें कि अथर्वद आप भूल गये भूल नहीं गया मुझे याद हैं। अग्नि, वायु, आदित्य ये तीनों अग्नि के रूप हैं। जो वायु और आदित्य है वह भी अग्नि का ही रूप है तो अग्नि वायु आदित्य ये घन तरल विरल है जैसे एक बरफ है, पिघला दो वह पानी है, गर्म कर दो बह भाप है ये महाराज भेदाभेद है यह एकदम प्राकृतिक भेदाभेद। बरफ, वाष्प, भाप और पानी ये तीनों भिन्न है कि अभिन्न हैं क्या जवाब देंगे भिन्न भी है अभिन्न भी है यही जवाब होगा दूसरा कोई जवाब हो नहीं सकता पानी ही तो बरफ बना है बरफ ही तो पिघलकर पानी बनती है और पानी हो तो उबल कर भाप बनता है। अग्नि ही वायु बनती है तरल होकर और वायु ही विरल होकर आदित्य बनती है ये भेदाभेद हैं। अग्नि, वायु, आदित्य की बात मैंने करी लेकिन सोम को इसलिए छोड़ा कि ये अग्नि के तीन भेद हैं अथर्वद सोमवेद का है अग्नि को प्रज्ज्वलित रखना है सोम की आहूति डालना जरूरी है। दिये के अंदर घी न डालें तेल न डालें, तो दिया बुझ जायेगा। अथर्वद के पण्डितजी महाराज कृपा करें और अथर्वद के एक मंत्र का आप उच्चारण देखें कैसे वह सोम का काम अग्नि के तीनों मंत्र का जो उच्चारण हो रहा था तो ददीप्यमान ज्वाला प्रज्ज्वलित हो रही थी और ये उसको शांत करने के लिए आप देखें अथर्वद-सामवेद तीनों वेद ऋग यजु साम से जो अग्नि प्रज्ज्वलित हो रही है उसमें यह आहूति बनकर सोमवेद उस अग्नि को प्रज्ज्वलित रखने के लिए सोम की आहूति, उसमें डाल रहा है। इन चार वेदों के कारण, बन्धुओं। ये सृष्टि बनीं, सृष्टि टिकी है। वेद की रक्षा हम नहीं करते हैं वेद हमारी रक्षा कर रहा है ऐसा मानें। हमारा ये जो मूर्तरूप है ये ऋग्वेद की अग्नि देवता की कृपा है। हमारे अंदर जो गति आई हुई है ये यजुर्वेद वायु देवता की कृपा है हम में जो बुद्धि आदित्य की, सामवेद की कृपा हैं और ये जो तीनों को स्थिर रखने वाला अथर्वद है वह सामवेद उस साम की कृपा से ककण कण आदि बना व संसार स्थिर हो रहा है। बंधुवों, मेरे पास समय नहीं कि इस सारे काण्ड को आज के विज्ञान के आधार पर आपके सामने रखूँ। इतना ही कहना चाहुँगा कि जिन अग्नि, वायु, आदित्य और साम का मैंने चारों वेद के साथ नाम लिया है ये चारों प्राणशक्ति हैं **देवा वै प्राणः**। जो अग्नि है यह प्रार्थिव प्राण है जो वायु है, यह अन्तरिक्ष प्राण है और जो आदित्य है वह दिव्य प्राण है तीन **भूः भुवः स्वः**, तीन प्रकार की प्राण शक्तियों मेरे अंदर स्थित होकर ब्रह्माण्ड मेरे पिण्ड में प्रतिबिम्बित हो रहा है वेद के माध्यम से इसलिए मैंने आपसे निवेदन किया था कि वेद का प्रत्यक्ष दर्शन कर करके देखने योग्य है एक एक मंत्र मैंने प्रयोग के लिए बुलवाया। समय हो वेद सम्मेलन हो कभी तो, दो दो घण्टे एक वेद कापाठ करें और जो अधिकारी है बैठे, अनधिकारी के बैठने का प्रश्न नहीं है और उसका प्रत्यक्ष प्रमाण आप देख सकते हैं, विज्ञान की तरह प्रयोग करके दिखाया जा सकता है जैसे एक साइन्टिस्ट प्रयोग करके दिखलाता है यह कोई ऐसी श्रद्धा का विषय नहीं है विश्वास शब्द में श्वास छिपा पड़ा है जो श्वास में प्रकट हो वही विश्वास है मेरा श्वास आ जा रहा है मैं रहा हूँ अगर मैं चाहूँ तो श्वांस रोककर दिखाऊं और अगर मैं ले रहा हूँ तो मुर्दा लेके दिखला दे कौन ले रहा है।

मैं तो नहीं ले रहा जाने कहां से आ रहा है वेद ले रहा हैं और ये अग्नि वायु आदित्य तत्व क्योंकि पुरुष ने नहीं बनाये इसलिए वेद पुरुष के नहीं हो सकते वह है अपौरुषेय ही है दूसरा कोई उपाय नहीं है मानने का, इस प्रकार का गम्भीर चिन्तन जिस वेदशास्त्र में है और वो वेदशास्त्र तो मानव मात्र का है लेकिन ये भारत भूमि और इस भारत भूमि में रहने वाले ये संत, महन्त और ये पण्डित वेदी उन्होंने इस अमूल्य धरोहर को सुरक्षित रखा है। आपसे एक बात कहकर मैं समाप्त कर दूँ, अपनी बात, अगर भारत विदेशी को कुछ दे सकता है तो हवाई जहाज नहीं देगा। ये वेद का ज्ञान है हमारे पास जो हम विदेश में दे सकते हैं विदेश को जरूरत है वहां मांग हो रही है और जहां मांग होती है, आवश्यकता आविष्कार की जननी है, यह वेद की वाणी शीघ्र ही सारे भूमण्डल में फैलने वाली है ऐसा मेरा मत नहीं है अरविन्द घोष की भविष्यवाणी है।

महामण्डलेश्वर स्वामी हरिनारायणानंद जी महाराजः-

इस आध्यात्मिक और सामाजिक उत्सर्ग से सम्बन्धित महत्वपूर्ण आयोजन के संरक्षक परम पूज्य जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीजी महाराज द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में पिछले कई दिनों से आप इस आध्यात्मिक संगम में विशेष महापुरुषों के साथ साथ वेद और शास्त्रों के प्रकाण्ड पण्डितों के भाषण से लाभ उठा रहे हैं। आज की चर्चा वैदिक धर्म से लेकर वेद और शास्त्रों के साथ धर्मश्लोकी व्याख्या के रूप में प्रथम सत्र में आपने बातें सुनीं। मैं मण्डलेश्वर मुरलीमनोहर शरणजी के प्रति साधुवाद देता हूँ कि उन्होंने ऐसे आध्यात्मिक और धार्मिक समारोह में भारतीय धर्म और संस्कृति के जो मूल आधार हैं भारतीय दर्शन और वेद इसके सम्बन्ध में भी परिचर्चा का आयोजन किया। वेद के सम्बन्ध में कोई विशेष व्याख्या की आवश्यकता नहीं है क्यों कि वेद ज्ञान विज्ञान का आधार है। सारी सृष्टि की जब रचना हुई तो परमात्मा तो एक ही है, वेद ने कहा न परमात्मा एक है धर्म और पन्थ अनेक हैं जीव अनेक हैं भारत देश में जो भारत भूमि है विश्व के सभी देशों में सबसे प्राचीन है। लेकिन यह जो सृष्टि की रचना हुई उस रचना में वेदों में जो वर्णन हुआ और वेद का जो ज्ञान काण्ड उपनिषद् है उसमें विविधविषयों की जो व्याख्या की गई है, जगत् और ईश्वर, परमेश्वर उसी व्याख्या के सन्दर्भ में भारत भूमि में अनेक दार्शनिक सिद्धान्तों का आविर्भाव हुआ। उन दार्शनिक सिद्धान्तों का आविर्भाव हुआ। उन दार्शनिक सिद्धान्तों के क्रम में जहां द्वैताद्वैत दर्शन के प्रतिपादक निम्बार्काचार्यजी महाराज का प्रादुर्भाव हुआ। वहा अद्वैत के प्रवर्तक जगद्गुरु शंकराचार्यजी का प्रादुर्भाव हुआ।

शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय के बल्लभाचार्य जी का प्रादुर्भाव हुआ, द्वैत सम्प्रदाय के माध्वाचार्य जी का प्रादुभार्व हुआ और माध्वगौड़ सम्प्रदाय वे ज्ञानेश्वर टीकाओं की बातो को लेकर धीरे धीरे रामानुजाचार्य जी ने विशिष्टाद्वैत दर्शन का प्रतिपादन किया। रामानंदाचार्यजी महाराज ने बोधायन स्मृति के आधार को लेकर विशिष्टाद्वैत धर्म को विशिष्टा द्वैत दर्शन का प्रतिपादन किया। इन सभी दर्शनों से सम्बन्धित जो साधु सम्प्रदाय हैं। उनके दर्शनिक प्रचार के लिए जो साधु संतों ने अपने जीवन को अर्पित किया, लोगों में उन सम्प्रदाय की परम्परा के अनुसार दीक्षा की प्रणाली बनाई गई। हमारे यहां दस नाम संन्यास हैं जिसके आद्य प्रतिपादक जगद्गुरू शंकराचार्यजी महाराज ने देश के विभिन्न भागों में चार पीठों की स्थापना की उत्तर में, दक्षिण में, पूरब में और पश्चिम में उसी तरह हमारे आचार्य जो इस सम्प्रदाय के आद्य आचार्य निम्बार्काचार्य जी महाराज की परम्परा श्री परशुराम देवाचार्यजी ने निम्बार्क तीर्थ सलेमाबाद में स्थापित किया।

तो आज भारत में निम्बार्क सम्प्रदाय का एक ही आचार्य पीठ है जिसका नाम है निम्बार्क तीर्थ, सलेमाबाद और हमें खुशी होती है प्रसन्नता होती है जब मैं पीठ के वर्तमान पीठाधीश्वर के ज्ञान, योग्यता और क्षमता और श्रद्धा भक्ति की भावना को देखता हूँ ये जो तपस्या की मूर्ति है इसमें जो जीवन के मूल आधार सदाचार हैं जीवन में श्रद्धा और भक्ति की भावना को कर्म के साथ जोड़कर सामाजिक जीवन में आध्यात्मिक नैतिक जागरण की जो दृष्टि है। उस दृष्टि के ऐसे व्यक्ति इस पद पर प्रतिष्ठित है कि जिसकी बात को देखकर हमें प्रसन्नता होती है।

आप देखिये भारत में अनेक आश्रम हैं नये नये बहुत आश्रम बन रहे हैं बड़े बड़े तीर्थो में तो बड़े बड़े आलीशान भवन बन रहे हैं। लेकिन भारत साधु समाज इन बातों से कभी कभी चिन्तित होता है कि आज का जो भौतिकवादी युवा है और भोगवाद का जो विकृत स्वरूप आज समाज के सामने लाया जा रहा है-उसकी ओर भी झुकाव बढ़ता जा रहा हैं। उसके झुकाव को रोकने के लिए श्री श्रीजी महाराज जैसे हमारे समाज में भी मंगलानंद जी महाराज जैसे, ये देखो तपस्वी महात्मा जैसे अन्य महात्माओं को देखिये सादा जीवन उच्च विचार चिन्तन के द्वारा जनता को सहिष्णुता जनता को जो सदाचार और जनता ये जो एक ऐसी सादगी की भावना को बढवा दे रहे हैं। आज तड़क भड़क से सारा सामाजिक जीवन उथल पुथल में पड़ गया है। ऐसे सामाजिक जीवन में जहां भोगवाद का नंगा नांच होता रहा हो वहां आप कल्पना करेंगे इस देश में भ्रष्टाचार नहीं होगा, रिश्वत नहीं होगी, बेईमानी नहीं होगी और लोगों को झूठे मुकदमे में फंसाने का काम नहीं होगा, धनलुटने का काम नहीं होगा। यह आपके लिए अनुचित है उचित नहीं है। क्यों कि यह कलियुग के काल में जहां यह स्थिति बन जाय,

अपूज्या यत्र पूजन्ते पूज्या पूज्य व्यतिक्रमः।
तत्र त्रिणि प्रजायन्ते दुभिक्षं मरणं भयम्।।

आज यह स्थिति समाज में बन गई है। मैं बहुत वर्ष पहले इस स्थान पर आया था महाराज जी छोटे बालक को अपनी दीक्षा दी थी बड़ा दुर्बल, तो मैंने स्वामी जी को कहा कि बहुत दुर्बल हैं इनको दूध और केला जरूर दिया जाय लेकिन कल मैंने जब उनको देखा तो शरीर उनका एक आचार्य के रूप में विकसित हो रहा है उसके साथ ज्ञान भी विकसित हो रहा है। तो बस बड़ी बात यह है कि देखो जब मनुष्य के जीवन में ज्ञान नहीं होगा तो उसकी अभीष्ट इच्छा जो ईश्वर प्राप्ति की है सम्भव नहीं है लेकिन ज्ञान तभी सम्भव है जब श्रद्धा की भावना होगी और श्रद्धा के साथ भक्ति का समन्वय होगा तो कल भी मैंने कहा था कि कर्म ज्ञान और भक्ति का जब समन्वय होगा, इस त्रिवेणी का समन्वय आज यहां हो रहा है महाराज जी के नेतृत्व में हो रहा है।

अनेक पन्थों के लोग देखो हमारे दसनामी संन्यासी सम्प्रदाय के प्रकाण्ड विद्वान और गीता मंदिरों के परमाराधा इन्होंने पिछले पन्द्रह वर्षों में देश के प्रमुख भागों में विशाल गीता मंदिरों का निर्माण कराया भक्तों के द्वारा। श्रीजी महाराज ने अभी आप देखो जो जिसने बीस वर्ष पहले इस स्थान को देखा होगा, मैं तो पाँच वर्ष पहले की बात करता हूँ और आज भी कितना परिर्वतन है तो परिवर्तन नहीं है कि केवल भवन का निर्माण परिर्वतन क्या है हजारों व्यक्ति श्रद्धा की भावना को देखते हैं समझते हैं। मैं कुछ वर्ष पहले बीस वर्ष पहले लन्दन गया था प्रमुख स्वामी जी हमारे बड़े अभिन्न हैं घनिष्ट मित्र हैं स्वामी नारायण सम्प्रदाय के प्रमुख संत उन्होंने वहां लण्दन में अपने एक समारोह का आयोजन किया था और मुझे मुख्य अतिथि बनाकर वहां कार्यक्रम रखा

था तो वहां भी देखा कितने श्रद्धालु लोग है, श्रद्धा केवल, लेकिन उन्होंने भारत की प्राचीन संस्कृति के आदर्शों को नहीं छोड़ा। लेकिन हमारे यहां आज ये जो धर्म हैं धर्म का जो रूप आज समाज में राजनीति में आ रहा है वो स्वार्थ का आ रहा है। स्वार्थ की शिक्षा धर्म नहीं देता लेकिन धर्म कोई पोगापन्थी भी विचार नहीं है इसलिए शास्त्र में कहा कि जिस आचरण से लोक परलोक दोनों में मनुष्य को सुख शांति का मार्ग प्रशस्त होता हो उसका नाम धर्म है।

अभी आप योग शिक्षा में योग सम्मेलन में आपने बातें सुनीं और दूसरे धार्मिक सिद्धातों का भी विश्लेषण हुआ। इसमें जो हमारे छे: शास्त्र हैं उनके बारे में भी संक्षेप में पण्डितों ने ज्ञानियों ने चर्चा की इसके मूल में क्या है। मूल में एक बात है कि परमात्मा को कैसे पायें और परमात्मा को क्यों पाये। अभी आपने कहा कि मनुष्य सुख चाहता है, दु:ख से निवृत्ति चाहता है लेकिन सुख दु:ख कहां है, सुख दु:ख तो अन्त: करण के मन में है, सुख दु:ख का सम्बन्ध बुद्धि से नहीं है, सुख दु:ख का सम्बन्ध चित्त से नहीं है, चित्त में तो जो संस्कार आते हैं जमते रहते हैं तो मन को शुद्ध बनाने के लिए एक धर्मशास्त्र की रचना हुई आप जो मनुष्य हैं दूसरे क्षेत्र के लोग हैं। मनुष्य! भगवान ने केवल मनुष्य को नहीं बनाया, भालू बन्दर, कुत्ता, बिल्ली, छुछून्दर, गधा, घोड़ा सबको बनाया लेकिन आपको विशेष रखा न कि मनुष्य श्रेष्ठ है। सभी प्राणियों में मनुष्य को श्रेष्ठ बनाया।

मनुष्यों में ज्ञानियों को ब्राह्मणों को साधुओं को श्रेष्ठ बनाया और ज्ञानियों में कृतबुद्धया जो ज्ञान पूर्वक घर में अपने कर्मों का सम्पादन करता है ये जो दृष्टि लेकिन इसकी एक श्रृंखला समाज में माता है पिता है परिवार है अगर हमरे मठ मंदिर आश्रम और आचर्यपीठ इसी श्रृंखला को तोड़कर मनमानी आचरण करते हैं कोई कहे कि मैं निम्बार्काचार्य हूँ मेरा निम्बार्क पीठ है कोई कहे कि मैं रामानन्दाचार्य हूँ कोई कहे कि आजकल जाली शंकराचार्य कितने अखबारों में आ गये इसको रोकना पड़ेगा, बताना पड़ेगा हमारे जो पीठ हैं वो नये स्थापित, आश्रम हो सकते हैं, उप पीठ हो सकते हैं मठ हो सकते हैं हम लोग जो मठाधीश हैं अपने मठ का जहां हमारे हजारों शिष्य हैं हमारें जो और भी हैं जिनकों हम दीक्षा देते हैं महन्तों को इस लिए वह पीठ हो गया बड़ी मठ पीठ। मठों के सम्बन्ध में स्पष्ट कह दिया कि मठ किसको कहते हैं तो कहा कि मठ कहते हैं-जहां ब्रह्म की चर्चा होती हो, जहां ब्रह्म की चर्चा करने वाले वेदशास्त्र पढ़ने वाले लोग रहते हों और जहां देवताओं की पूजा होती हो और दु:खियों को खिलाया जाता हो, दान किया जाता हो, उसका नाम पीठ ये जो निम्बार्क पीठ है शिक्षा का क्षेत्र पूजापाठ का क्षेत्र, देवताओं की पूजा, विद्यार्थियों की शिक्षा और आये गये दु:खियों को भोजन, भोजन ही तो सबसे बड़ी वस्तु हैं अगर भोजन नहीं हो तो प्राण हमारा नहीं रहेगा

कितना भी आप कुछ करते रहो बिना अन्न का बिना भोजन का प्राण न साधु का टिकने वाला है और न राजा का टिकने वाला है और न गरीब और दरिद्र का टिकने वाला है इसलिए उस रोज भी मैंने कहा था कि जब प्राण बनाया ब्रह्मा जी ने जब शरीर में प्राण डाला तो पहले भोजन का प्रबन्ध किया और ये सारे भोजन, की रचना पण्डित जी बता रहे थे न कैसे कैसे क्या कि हमारे उपनिषद् में आया **''आकाशाद वायु: वायोअग्नि: अग्ने:आय: अद्भ्य पृथ्वी प्थीभ्याम् औषधय:''** आकाश की उत्पत्ति हुई वायु अग्नि जल और पृथ्वी और उसके बाद औषधियां बनीं जो हमारे जीवन की रक्षा करती हैं। लेकिन तुम्हारा, जीवन तो बनें लेकिन जीवन मैं तुम कितना खाना चाहते हो, रोज मलाई, रोज पूआ, रोज रबड़ी और रोज घी खाकर जीवित रह सकते हो। कोई सोना चाँदी का गुठली बना कर भोजन कर सकता

है क्या ? तो भोजन के लिए तो अनाज चाहिये तो आजकल लूटपाट क्यों हो रहा है इसलिए हमारे ऋषि ने कहा **''सन्तोषः धन मुत्तम् सुख लाभः''** संतोष करो लेकिन कर्म करो और कर्म से जो उपार्जन हो उसके ऊपर संतोष करो, आपाधापी नहीं करो, लूट मत मचाओं, दूसरे के हक को मत लो और अगले जीवन को अच्छा बनाना चाहते हो तब त्यागभाव से संसार का उपभोग करो **'तेन त्येक्तेन भुञ्जीथां,'** त्याग भाव से यदि तुम संसार का उपभोग करते हो राजा जनक की तरह तो तुम्हारा जो पुरूषार्थ है वह सिद्ध होकर परमार्थ के रूप में अपनी वांछित इच्छा जो तुम्हारी स्वर्ग की है या मोक्ष की हैं उधर हम जा सकते हैं। आज ये एक ऐसा संगम बन गया कि हमारे विभिन्न साधु सम्प्रदाओं के दर्शन हैं उससे सम्बन्धित सभी महात्मा यहां आ गये।

आप उधर देखों बल्लाभचार्य जी का, उधर देखो हमारे जो रामस्नेही सम्प्रदाय के जो आचार्यपीठ के है शाहपुरा के हैं रैण के हैं, ये शाहपुरा वाले पीठ के तो हमारे भारत साधु समाज के यहां के अध्यक्ष थे, और मुरलीमनोहर शरण जी महाराज ये भी तपस्वी हैं ऋषि हैं हम और ये हमारा ख्याल है मुझ से उमर अधिक होगी पिचहत्तर अस्सी के बीच हम हैं तो ऐसे सारे लोग भारत साधु समाज से सम्बन्धित हैं। समाज के क्षेत्र का काम दूसरे काम करते रहे। लेकिन सारे के सारे दादू पन्थ वाले भी आचार्य यहां है हमारे देखो सिरमौर दसनामी साधु सम्प्रदाय के एक दूसरे और अवधेशानंद जी हमारे महामण्डलेश्वर देश विदेश में संस्कृति का प्रचार करने वाले और भी महात्मा रैवासापीठ के स्वामीजी ये देखो एक बूढ़े तपस्वी वयोवृद्ध महात्मा इस तरह से अनेक क्षेत्रों से आये हुये महात्मा सभी सम्प्रदाय के यहां इकट्ठे हैं।

यह भारत का चित्र यहां उपस्थित हो गया भारत का आध्यात्मिक चित्र आज ये निम्बार्क नगर में जो सलेमाबाद के बगल में स्थापित है इसलिए इसका नाम जो निम्बार्क तीर्थ है उसको निम्बार्क तीर्थ आज घोषित किया जाय कि इसका नाम निम्बार्क तीर्थ बना रहेगा और यहां के गिजेटियर में और यहां के इतिहास में यहां सरकारी कागजों में इन सब में आना चाहिये क्यों कि यह तीर्थ हो गया। आध्यात्मिक प्रेरणा के साथ साथ भौतिक जीवन भी हमारा अच्छा बनेगा इसलिए केवल ये हमाराशास्त्र नहीं कहता कि चुपचाप रामजी रामजी भगवान् जी भगवान् जी शंकर जी करते रहो और काम कुछ नहीं करो- **''नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो'' ''नमेधया न बहुना श्रुतेन''** सूत जी ने कहा कि कमजोर और बुजदिल व्यक्तियों को आत्मा की प्राप्ति नहीं होती, बहुत पढ़ने से बहुत लिखने से नहीं होता लेकिन जो अपनी परम्परा को तोड़ता है मनमानी आचरण करता है। कोई साधु कहे कि हम शंकराचार्य हैं कोई विचार करें कि हम निम्बार्क पीठ बना रहे हैं, कोई कहे हम कबीर पीठ बना रहे हैं तो भगवान कृष्ण ने कह दिया है कि देखो ऐसे व्यक्ति को सिद्धि, गति व मुक्ति नहीं मिलती है। जो व्यक्ति मनमानी आचरण अपने स्वार्थ के लिए करना चाहता हैं उसका सिद्धि गति मुक्ति नहीं मिलती है तब उन्होने कहा **''तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ''** तब अर्जुन तैयार हो गया कि अपने कर्म में लगें। लेकिन कर्म में लगों तो कर्म को ज्ञान के साथ जोड़ो उन्होंने बताया न **''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः''** सौ वर्ष तक हम जीयें और इन बातों को ध्यान में रखकर चले कि हमारा जीवन अच्छा बनेगा, इसी संदेश के लिए तो भारत साधु समाज सारे देश के सभी सम्प्रदायों का जो प्राचीन संगठन है उसके महाराज श्री संरक्षक हैं।

जगद्गुरु शंकराचार्य जी जो हमारे स्वामी स्वरूपानंद जी महाराज हरेक सम्प्रदाय से जो कि रामानन्द सम्प्रदाय के रामानन्दाचार्य जी लेकिन मैं देखता हूँ कि स्वामी जी महाराज निम्बार्काचार्य जी के मन में जो आस्था है, बीमारी

की अवस्थ में भी भगवान् का नाम राधे कृष्ण का नाम चिन्तन करना ऐसा चिन्तन सब कोई करेगा क्या?

''यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति।
तस्य तस्या चलां श्रद्धां तामेवविदधाम्यहम्॥''

तुम्हारी श्रद्धा जहां भी हो श्रद्धा पूर्वक करो किसी देवी-देवता का उपहास न करों सब तो मेरा ही रूप है, **''सर्वं खल्विदं ब्रह्म''** ये सारा ब्रह्म है उसका नाम जो भी कृष्ण भगवान जी हैं, राम जी है, शिवीजी भी हैं, सारे दुर्गा देवी भी हैं, सूर्य भी हैं ये सारे के सारे भगवान की ही शक्ति से हैं सब एक ही शक्ति के रूप **''केनेषितं पतति प्रेषितं मनः प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः। केनेषितां वाचमिमां वदन्ति''** उपनिषद् में कहा भाई किसकी शक्ति है जिस शक्ति को लेकर कहा कि यह शक्ति तो भगवान् की है परमात्मा की। यह परम शक्ति है जिस शक्ति को लेकर कहा कि यह शक्ति गुरु में भी होती है जो शिष्य को एक आधार देता है। महाराज श्री का तो जीवन देश के आध्यात्मिक उत्कर्ष और सामाजिक समृद्धि के लिए भी है इसलिए सामाजिक जीवन को भी अच्छा बनाने के लिए आध्यात्मिक वृत्ति को अपनाना आवश्यक है इसके लिए धर्म पीठों की सुरक्षा का, धर्मपीठों की मार्यदाओं का, रक्षण की विशेष आवश्यकता हैं। और उसके लिए हिन्दू समाज को जागृत करने की आवश्यकता है। थोड़ा स्वार्थ तो रखो स्वार्थ से अलग आप नहीं हो सकते लेकिन लालच नहीं रखो। लालच के द्वारा तो तुम्हारा पूरा होगा भी नहीं कमाना बाल बच्चा उत्पन्न करना, भरण-पोषण करना लेकिन उसके अपने साधन का अपने पैसे का, अपने धन का, अपने बुद्धि का, इतना बड़ा यज्ञ हुआ हजारों लोग आये किसी ने पैसा भी दिया होगा। लेकिन यज्ञ में जो पैसा नहीं जिसके पास है अगर, तुम झाड़ूझाड़ लेते हो, खाने वाले साधुओं का पत्तल उठा देते हो तो तुमको वही लाभ मिलेगा जो एक लाख रूपया का दान करने वाला है। भगवान कृष्ण ने क्या किया था? जब इतना बड़ा यज्ञ युधिष्ठिर ने किया तो सबका काम बाँटा गया तो भगवान कृष्ण ने कहा कि जो यज्ञ में भोजन करेगा उसका झूठा पत्तल भगवान कृष्ण उठायेंगे। आप ये देखो तो सबसे बड़ी बात यह है कि श्रद्धा से, इसलिए शास्त्र में कहा- **''सत्यश्रमाभ्यां सकलार्थ सिद्धिः''** सत्य और श्रम का आश्रय लेकर यदि मनुष्य अपने कर्त्तव्यों का पालन करेगा तो लोक परलोक दोनों में उसका जीवन सुख शांति का मार्ग प्रशस्त होगा। आप सब बहुत ही सौभाग्यशाली हैं।

इस क्षेत्र के जनता के लोग आप सभी लोग कि महाराज श्री के सानिध्य में ऐसे आध्यात्मिक और सामाजिक कल्याण से सम्बन्धित समारोह में भाग लिया जिसमें मंगला नंद जी महाराज ऐसे महाराज जो दूसरे दो तीन दिन से आये सब लोग भाग ले रहे हैं और सभी महात्माओं के साक्षात् दर्शन से लाभ उठा रहे हैं। महात्माओं का दर्शन और प्रवचन अगर केवल ध्यानपूर्वक सुना जाय तो उससे जीवन को गति सिद्धि और मुक्ति तीनों मिल सकती है इसलिए मैं इस आयोजन के लिए स्वामी जी के प्रति श्रद्धा हमारे पुराने मित्र मुरली मनोहर शरण जी ने जिस ढंग से इसका आयोजन किया और विषयों का समायोजन किया इन सभी विषयों का सम्बन्ध मानव जाति के कल्याण से जुड़ा है। लेकिन एक बात कहकर एक मिनट में अपनी बात को समाप्त करूँगा।

जिस वैदिक शिक्षा के द्वारा सारे संसार को हम संदेश देते रहे हैं सरकार उस शिक्षा को हटा रही है इसलिए सारे भारत में भारत साधु समाज ने नैतिक शिक्षा कार्यक्रम को विद्यालयों में चलाने के लिए सामूहिक प्रार्थना का आयोजन करने का निश्चय किया है सारे जगह प्रारम्भ कर रहे हैं उसमें हम शिक्षकों को दो दिन

का केवल उच्चारण के लिए, वैदिक मंत्रों के उच्चारण के लिए ट्रेनिंग देंगे। हरेक विद्यालयों में कम से कम दो चार वेद मंत्रों का सामुहिक रूप से हो सकें।

''ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।''

इतना जो करते हैं, बाईब्रेशन एक आत्मशक्ति का विकास होता है, इसलिए मन की शक्ति को विश्वस्त बनाने के लिए इसकी आवश्यकता है और मन कहां रहता है मन तो शरीर में रहता है ह्यैक देश में रहता है। वेद में कहा कि हृदय के लिए तो उपासना की आवश्यकता है। ओउम् शांतिः शान्तिः शान्ति।

श्री दिवाकरजी :-पुरी (उडीसा)

यहां जो यह कार्यक्रम चल रहा है इसमें जो वैदिक सत्र है, इस सत्र में वेद के मूर्धन्य विद्वान् लोग पधारे हुये हैं। प्रातः काल का जो सत्र रहा षड्दर्शन का सत्र वेदों के बारे उसमें भी विचार किया गया था इस समय भी विद्वानों ने आपके सामने विचार प्रस्तुत किये हैं। मेरा कुछ अधिक कहना नहीं इसमें सब कुछ श्रवण हो जायगा जो महान् विभूतियां यहां उपस्थित हैं उनको तो कुछ कहना ही नहीं, क्योंकि उन के सामने मैं दीपक जैसा हूँ। यहां पर जो उपस्थित भक्तजन समुदाय है बस उन्हीं को ही दो पद मैं हिन्दी में ही कहुँगा, उड़ीसा की मेरी हिन्दी हैं शायद आप लोगों के समझ में न आयें। बन्धुओंशास्त्र में कहा गया है **''वेदोऽखिलो धर्म मूलं''** विद्वानों ने भी यह आपके सामने उपस्थित किए हैं समय की सीमा में मुझे कहना है। अखिल धर्म का मूल वेद है ये तो आप लोग सभी जानते हैं इस तरह और भी कहा गया हैं। भागवत में भी एक बात आया है **''वेदः सर्व हितार्थायः''** ज्योतिष शास्त्र भी देखें उसमें भी यह कहा गया है **''वेदादियज्ञार्थमिह प्रवर्तते''** उसी तरह भगतपाद शंकराचार्य ने भी अपने वचन में कहे हैं **''वेदोदितं धीमतां उदितं धर्मस्य''** मेरा यह कहने का मतलब है कि सारे जितने भी शास्त्र हैं सब एक ही बात सिद्ध करते है। ऋग, यजु, साम ये यज्ञ को ही सिद्ध करते हैं यज्ञ के लिए ही इनका अविर्भाव है। यज्ञ को ही धर्म कहा गया है। धर्म शब्द का अर्थ यदि आप विचार करें **''धारणात् धर्ममित्याहुः''** जो धारण करता है पोषण करता है वही धर्म हैं अगर हम वेद को धर्म कहेंगे यज्ञ को धर्म कहेंगे तो इनमें धारण और पोषण की शक्ति उसमें होनी चाहिये। यह देखिये यज्ञ कैसे हमको धारण और पोषण करता है तत्त्व की बात तो बाद में करेंगे तत्त्व तो जो है मरने के बाद ही तत्त्व मिलता है। स्वर्ग की प्राप्ति तो मरने के बाद ही होता है लेकिन पहले हम स्वस्थ रहें शरीर हमारा दृढ़ रहे, अभी अभी महात्मा ने बताये सामर्थ्यवान हम बनें तो कैसे बनेंगे, यज्ञ से ही बनेंगे। आप विचार करें जो धर्म का मूल है वेद, वह वेद ही यज्ञ का विषय है, क्यों? यज्ञ ही हमको धारण पोषण करता है आप लोग देखिये जिस तरह से यज्ञ होते हैं कि ये सब यज्ञ का ही विमर्श आप करेंगे तो उसमें आप जो है आपके स्वास्थ्य की, चिकित्सा की और आपके परिवेश की ये सबकी सुरक्षा उसमें मिलती है। जितने भी यज्ञ होते हैं संधिकाल में होते हैं। सांयकाल और प्रातःकाल के जो संधि के समय है उसी समय यज्ञ किया जाता है। चातुर्मास यज्ञ, ऋतुमुखे यजेतः प्रत्येक ऋतु के प्रारम्भ में यज्ञ किया जाता है। इसका कारण यह है कि संधि के समय ही रोग उत्पन्न होता है यह आयुर्वेद का सिद्धान्त है। आप लोग अभी भी अनुभव करते होंगे, नया सीजन आया और रोग शुरू हुआ। लेकिन यज्ञ हम करते रहेंगे तो उसका परिणाम यह होगा कि जितने मात्रा में ये रोग फैलेगी उतनी मात्रा में न फैल के वह शान्त हो जायेगी। एक यज्ञ के बारे में कहा गया है श्रौत्रामणी यज्ञ इन्द्र के लिए किया गया था अधिक सोमपान जो पीते थे सोमरस का बड़ा ही वे आग्रही सोमरस को वे बहुत ही चाहते है।

यज्ञ की विधि के लिए आपको तीन प्रकार की शुद्धता चाहिये। एक तो मन्त्रशुद्ध होना चाहिये, द्रव्य शुद्ध होना चाहिये, और भाव शुद्ध होना चाहिये। कल गोरक्षा का प्रसंग चला था उसमें गौ माता की कितनी उपयोगिता है इसके बारे में विचार किया गया था। यज्ञ भैंस के दूध से नहीं होगा भैस के घी से यज्ञ कीजिये उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा जब हम द्रव्य का आधान करते हैं ''गव्यं आज्यं गो धृतं''। मंत्र की भी शुद्धता चाहिये आज आपके सामने चारों वेद का पारायण किया गया और मूर्धन्य वैदिक विद्वान इसके जो हैं वैज्ञानिक तत्व क्या हैं उसको आपके सामने उपस्थित किये। एक ही वेद को अध्ययन करते के लिए बारह साल चाहिये आप लोग सोचिये एक वेद को कंठस्थ के लिए बारह साल की क्या जरूरत है क्यों कि उस समय तो हमसे भी प्रखर श्रुति शक्ति वाले लोग थे उस समय भी उनको बारह साल लगता था, कहा गया है। बीस साल उम्र तक वह पढ़ेगा, आठ साल का लडका तो आप सोचिये एक वेद को अध्ययन के लिए बारह साल लगेगा। चार वेद का अगर अध्ययन करेगा, चारों वेद का अध्ययन के लिए उसको अड़तालीस साल लग जायगा। फिर वह ब्रह्मचर्य आश्रम से अब गृहस्थ आश्रम न जाकर संन्यास आश्रम में, वानप्रस्थ आश्रम में जायेगा। लेकिन बारह साल का समय कुछ कम नहीं होता है।

बारह साल में एक वेद को कंठस्थ करना अध्ययन करना, जो लोग जानते नहीं वह कहेंगे बहुत मामूली बात है इसको करने की क्या जरूरत है बारह साल की लेकिन यह नहीं, जैसे उच्चारण आप लोगों ने देखा ऋग्वेद का उच्चारण हुआ यजुर्वेद का उच्चारण हुआ सब उच्चारण भेद हुआ सामवेद का उच्चारण हुआ वह भी भेद हुआ अर्थवेद का उच्चारण ठीक ढंग से हो ठीक ठीक उसका प्रयोग किया जाय तभी जाके उसका गुण हमको मिल सकता है उसका विज्ञान मूलक तथ्य हम पा सकते है। इसके लिए आहार, विहार, आपका चलना उठना बैठना हमारा सब शास्त्र नियन्त्रित होना चाहिये शास्त्र के आधार पर उसको नियन्त्रित करके अगर आप वेद का स्वाध्याय बारह साल तक गुरूकुल में रहकर करेंगे तभी जाकर यह मंत्र आपके सही ढंग से उच्चरित हो पायेंगे और उस मंत्र को आप प्रयोग करेंगे तभी जाकर यज्ञ की जो विज्ञान वो आपको मिलेगा नहीं तो मिल नहीं सकता। और आप आजकल बस दो चार मंत्र हमारे कुछ कर्म काण्डियों ने सीख लिये उसको प्रयोग कर दिये है और उसी से अपना काम चलाते हैं तो कर्मकाण्ड का जो महत्व वह हमारे समाज के सामने आता नहीं। वहां आद्योदात्त अन्त्योदात्त का उच्चारण में गलती हो गई बस! इन्द्र का शत्रु जो वृत्रासुर वह मारा गया इसलिये सावधान पूर्वक गुरुकुल में रह कर बारह साल तक तपस्या के सहित वेद का उच्चारण यदि सही ढंग से किया जायेगा, वही वेद आपको इस काल में परकाल में साथ देगा और वहीं हमारे धर्म का मूल हैं और उसी धर्म के मूल को हम सींचै और उसमें जल दें, उसको बढ़ाये तभी जाकर हमारा यह समाज फिर, सुख शान्ति से रह सकता है।

प्रोफेसर श्री कृष्णपाल सिंह :- (अजमेर)

वेद अपौरुषेय हैं। इस विषय में मैं सबसे पहले आपके सामने एक जिज्ञासा व प्रश्न रखना चाहुँगा क्या वेद के ज्ञान की आवश्यकता नहीं है? यदि है तो उस पर विचार किया जा सकता है यदि वेद की आवश्यकता नहीं है तो फिर उस पर विचार नहीं किया जा सकता है। मैं आपसे जानना चाहता हूँ कि वेद के ज्ञान के बिना हमारा काम नहीं चल सकता है। जैसे अन्य संसार के पशु पक्षी कीट पतंग अपने दैनैन्दनींय जीवन के व्यवहारों को कर लेते हैं वैसे मनुष्य अपने दैनैन्दनींय जीवन को भी वेद के बिना कर सकता है इसलिए वेद के ज्ञान की आवश्यकता नहीं है। ऐसा नहीं है क्यों कि मनुष्य

विवेकशील प्राप्ति है, उसे विवेक को विकसित करने के लिए वेदज्ञान की आवश्यकता है। इसलिए मुझे पढ़ाने वाले मेरे आचार्यगण रहे हैं और उन्हें पढ़ाने वाले उनके आचार्यगण रहे हैं ऐसी परम्परा पर चलते चले जाइये और जब संसार का सृजन हुआ उसमें प्रथम मनुष्य पैदा हुआ तब पठन-पाठन की कोई परम्परा नहीं थी क्यों कि ज्ञान की वृद्धि, बिना आचार्य के सम्भव नहीं है। जब ये पहला व्यक्ति आया था पृथ्वी के ऊपर तब उसको पढ़ाने वाला कौन था? प्रश्न होता है क्यों कि ज्ञान की वृद्धि बिना पढ़ाये नहीं होती। यदि बिना पढ़ाये ज्ञान की वृद्धि, होती होती यदि स्वंय ज्ञान आता होता तो मैं समझता हूँ कॉलेज, विश्वविद्यालय, यूनीवर्सिटी और तमामपीठ और धर्म संस्थान बनाने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसलिए यह आवश्यक है कि उस प्रथम मनुष्य को पढ़ाने वाला भी कोई न कोई होना चाहिये, जैसा कि हमारे योग के आचार्य पतञ्जलि ने कहा है- **पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्**, ये पूर्व ऋषि, महर्षि हमारे हुये हैं उन गुरुओं का भी आदि गुरु परमेश्वर है, उसी ने आदि सृष्टि में जब प्रथम मानव पैदा हुआ था उसको वेद ज्ञान दिया, उसके अन्तःकरण में ज्ञान स्फुरित किया गया था। जैसा कि हमारे डाक्टर भार्गव साहब ने बताया था आपके सामने निवेदन किया था, अग्नि से ऋग्वेद की उत्पत्ति और वायु से यजुर्वेद की उत्पत्ति और सूर्य से साम वेद की उत्पत्ति ऐसा बता करके उन्होंने इस बात को प्रमाणित कर दिया की उस काल में भी और आज के काल में भी बिना वेद के हमारा ज्ञान नहीं हो सकता है उसकी वृद्धि नहीं हो सकती है। मैं आपके सामने इतिहास का एक प्रमाण रखना चाहुँगा यूनान के राजा जो सैमेटिकल फ्रैडिट द्वितीय स्काट्लैण्ड का राजा जैम्स पाले और भारत का जो अकबर बादशाह था इन तीन शासकों ने अपने अपने समय में अपने अपने काल में यह प्रमाणित करने का विचार रखा कि क्या स्वाभाविक ज्ञान से विशेष ज्ञान की उत्पत्ति हो जाती है। इस प्रयोग में बच्चों को रखा गया और गूँगी और बहरी दाइयों के द्वारा उनका पालन पोषण जंगल के मध्य में किया। गया परन्तु बड़े होने पर भी उन बच्चों में किसी प्रकार से भाषा की अभिवृद्धि नहीं हुई और यह इस बात का प्रमाण है कि उनको यदि मीड़िया मिला होता, यदि उनको पढ़ाने वाला कोई मिला होता तो निश्चित रूप से उनमें ज्ञान की उत्पत्ति हो जाती। परन्तु उन तीनों बालकों में किसी प्रकार के ज्ञान की उत्पत्ति नहीं हुई, न किसी भाषा को वह बोल सकें, न उच्चारण कर सकें, उनके बोलने के उनके कानों में उस जंगल में प्राणी जो पशुपक्षी थे उनकी जो आवाजें पड़ी उसी आवाज को वह उच्चारण वाले हुये।

आपने अखबार में पढ़ा होगा बहुत वर्ष पहले एक घटना घटी थी रामू नाम का बालक जंगल में भेडियों के साथ रह गया फिर वह लखनऊ के अस्पताल में रखा गया वहां पर उसकी परिचर्या हुई और उसका खूब इन्तजाम किया गया लेकिन न वह बोल सकता था न वह चल सकता था भेड़िया के समान वह चीखता था और उसी के समान चलता था। इस बात से यह प्रमाणित हो जाता है कि आदि सृष्टि में यदि मनुष्य को ज्ञान नहीं दिया जाता, यदि परमात्मा उस वेद ज्ञान को आविर्भूत न करता तो निश्चित रूप से मनुष्य को आज भी ज्ञान नहीं हो सकता है। हमें परम्परा से जो ज्ञान प्राप्त है उस को उत्तरोत्तर वृद्धि कर सकते है तभी कर सकते हैं जब उसका मीड़िया हमको मिलेगा यदि मीड़िया हमको नहीं मिलता है तो हम निश्चित रूप से ज्ञान की वृद्धि नहीं कर सकते। इसलिए बहुत से वैज्ञानिकों ने भी इस विषय में प्रश्न किया हुआ है और तमाम प्रैक्टीकल विश्व के तमाम साइन्टिस्ट कर रहे हैं उनका भी एक निर्णय आने वाला है अभी आया नहीं है वह इस निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाये कि ज्ञान, सामान्य ज्ञान से यदि

स्वाभाविक ज्ञान जो व्यक्तियों के पास है उस ज्ञानसे विशेष ज्ञान की उत्पत्ति हो जाती है। देखिये पशु-पक्षी अपने साधारण ज्ञान से अपने दैनन्दनींय व्यहवहार को कर लेते हैं अर्थात् वह खाना, पीना, उठना, बैठना, सोना, जागना, वह सभी कुछ कर लेते हैं, परन्तु मनुष्य का बच्चा इस प्रकार का काम नहीं कर सकता है यदि उसको न सिखाया जाय। गाय के बच्चे को सद्योजात बच्चा है उसको तालाब में यदि छोड़ दिया जाय तो वह अपने प्राणों की बचत कर लेगा तैरना उसको आता ही हैं उसका स्वाभाविक ज्ञान है। अपने स्वाभाविक ज्ञान से वह तैर करके अपने प्राणों की रक्षा कर सकता है। परन्तु मनुष्य के बच्चे को यदि तैरना न सिखाया जाय, बल्कि वृद्धावस्था पर्यन्त तक उसको तैरना न सिखाया जाय तो वह तैरने की कला को नहीं सीख सकता है और यदि वह तालाब में या समुद्र में या कहीं चला भी जाय तो वह अपने प्राणों की रक्षा नहीं कर सकता है इससे भी सिद्ध होता है कि यदि मनुष्य को न पढ़ाया जाय तो ज्ञान की उत्पत्ति नहीं हो सकती है। इसलिए सामान्य ज्ञान के द्वारा किसी भी विशेष ज्ञान की उत्पत्ति नहीं हो सकती हैं। इसलिए वेद की जो उत्पत्ति हुई वह अपौरुषेय परमात्मा के द्वारा, उसके द्वारा उत्पन्न हुआ है उसको आदि सृष्टि में ज्ञान दिया हुआ है। इसके लिए हमें प्रमाणों की आवश्यकता है। मैं एक दो प्रमाण आपके सामने उपस्थित करता हूँ। साक्षात् वेद के जो शब्द हैं उसमें लिखा हुआ है-ये ऋचायें प्रतिपादित करती हैं, यह चारों वेद में ऋचायें आई हुई हैं यह स्वयं प्रतिपादित कर रहीं है, यह वेद की अन्तः साक्षी हैं और वह कह रही है। उस वेद की ज्ञान की उत्पत्ति किसी मनुष्य के द्वारा नहीं किसी पुरुष विशेष के द्वारा नहीं, वह तो परमात्मा के द्वारा ही उसकी उत्पत्ति हुई है, वह सबके कल्याण के लिए है। इसलिए अभी डा. धर्मवीर जी ने एक मंत्र पढ़ा था **''यथेमाम् वाचं कल्याणीं मा वदामि जनेभ्यः ब्रह्मराजन्याभ्याम् शूद्राय चार्याय च''** यह मंत्र है स्वयं परमात्मा इस बात का गवाह है और कहता है, आदेश देता है अपनी संसार की समस्त प्रजा को- ऐ संसारी लोगों यह मेरी जो कल्याणी वाणी है सुनो, इसको पढ़ो, अपने जीवन में उतारों, उसके आदेशों को पढ़ने और वेद की आज्ञा का जो उल्लंघन करता हैं वही पाप होता है। वेद की आज्ञा को जो अनुवर्तन करता है उसके द्वारा अपने जीवन का निर्माण करता है वही पुण्य होता है।

इसलिये आइये, हम पुण्य के भागी बनें, वेद को अपने जीवन में अपनायें, उसके आदर्शों को अपने जीवन में उतारें और हम भी इस संसार में रहते हुये भी आनन्द की अनुभूति करें। जैसे कि हमारे पहले ऋषि महर्षि आनन्द की अनुभूति करते रहे हैं महाराज जनक सिदेह होते हुये, इस संसार में रहते हुये भी विदेह की अवस्था को प्राप्त किया वैसे, आनन्द की अवस्था को प्राप्त करें। मैं दो एक मंत्र आपके सामने कुछ व्यवहारिक वेद का जो पक्ष है वेद में लिखा है। भाई भाई से झगड़ा न करे केवल एक सूत्र है बहुत छोटा सूत्र है परन्तु हम संसार में देख रहे हैं- भाई भाई से युद्ध कर रहा है। यदि एक वाक्य ही वेद का, एक वाक्य सारे संसार में यदि प्रचारित कर दिया जाय तो मैं समझता हूँ और सारे विश्व का कल्याण एक वाक्य से ही हो सकता है। **''मनुर्भव, जनया दैव्यम् जनम''** ऐ संसार के लोगों तुम मनुष्य बन जाओं। मनुष्य कहते है। मनन करके, जो विचार कर के कर्म करता है उसी को इसलिए आइये हम वेद के ज्ञान के द्वारा, वेद को पढ़कर के, वेद को अपने जीवन में उतार करके, वेद का अध्ययन करके, हम मनुष्य बन जाये। मनुष्य एक दूसरे के द्वेषी नहीं होता है। हम एक दूसरे के अनुगामी रहें, हम एक साथ मिलकर चलें, एक साथ बोलें, एक भाषा बोलें, एक आचरण करें, इस प्रकार से हम अपनी संस्कृति, सभ्यता और धर्म, दर्शन जो वेद का दिया हुआ है हमारे पास है जो अमूल्य धरोहर है उसको हम अपना सकते है।

पण्डित कृष्णानंद जी उपाध्याय :-
(किशनगंज-बिहार)

अनादि अपौरुषेय अनन्त शब्द राशि मंत्र ब्राह्माणात्मक वेद को वेद माना गया है। अब वेद का कर्ता कौन? महाभारत के व्यास जी लेखक हैं अमुक अमुक वस्तु के पुस्तक के अमुक अमुक व्यक्ति महापुरुष लेखक है। न्याय दर्शन के श्री गौतमजी इसी प्रकार अन्यान्य दर्शनों के आचार्यगण लेखक है। इतिहास गवाह है अमुक वस्तु अमुक आविष्कार अमुक आविष्कारक ने किया इत्यादि किन्तु वेद का कर्ता कौन? कालिदास किसके कर्ता रघुवंश महाकाव्य के इत्यादि आपको इतिहास में मिलता है। वेद कब से चला आ रहा है कुछ कहेंगे पाँच हजार सदी से, सहस्त्राब्दी से ईसा, पूर्व ईसा पश्चात नहीं यह भ्रामक तथ्य है। यह अनादि अपौरुषेय अविछिन्न परम्परा है। **यथापूर्वमकल्पयत्!** जब ये सृष्टि प्रारम्भ होती है परमात्मा **एकोहं बहुस्याम्:** ऐसा करके जब सृष्टि का विस्तार करते हैं उसी समय वेद , भगवान के नि:श्वास से उत्पन्न होता है **यस्यनिश्वासः वेदः**। वेद ''जिनकी सहज स्वांसश्रुति चारि'' गोस्वामीजी महाराज ने लिखा है रामचरित मानस में, जिनके नि:श्वांस से वेद उत्पन्न होता है, वेद किसी मनुष्य की कृति नहीं है। उसमें संशोधन की भी गुञ्जाइश नहीं है और वेद अक्षरश: पालनीय है। वेद की वाणी में प्रश्न चिन्ह नहीं उठ सकता। दुनियां के किसी भी फिलोस्फर की दर्शनिक की बनाई गई कृति, काव्य, किताब, पुस्तक उसमें बार बार संशोधन और सुधार हुये हैं परन्तु वेद के मंत्र में सुधार की आवश्यकता नहीं, पालन की आवश्यकता है। क्यों कि वेद ही सर्वसमता, सर्वधर्म समभाव, जिसको आज लोग कहते हैं। अन्य धर्म ग्रन्थ कोई है ही नहीं, धर्म मात्र एक सनातन धर्म है। बाकी सभी व्यक्तियों के विचार हैं। उनकी खोपड़ियों की उपज हैं उसको कहते हैं मत। मत के मतान्तर अनुमतान्तर पर्यन्तर बहुत हो जाते हैं लेकिन धर्म की कसौटी पर वेद, वेद की कसौटी पर एक मात्र सनातन धर्म खरा उतरता है। क्यों कि वह वेद प्रमाणित है, वेदानुकूल है, उसके अर्थ में वेद मूल है। अत: पहले तो यह समझना होगा कि वेद क्या है। भगवान के नि:श्वासों से उत्पन्न अनन्त शब्दराशि मंत्र ब्रह्मणात्मक अनादि अपौरुषेय वेद भगवान् हैं। जैसे जल और जल की तरंग पृथक नहीं हो सकती, बरफ में, जल में, वाष्प में तात्विक भेद नहीं होता। अभी पूर्वाचार्य कह गये है न, जल ही बरफ बनता है, बरफ ही जल बनता है फिर वाष्पित हो करके मेघ बनके बरस जाता है तो उसके मूल में जल रहता ही है उसी प्रकार परमात्मा और वेद भिन्न नहीं हो सकते। वेदकार कोई अन्य नहीं, शैक्सपीयर, कालिदास, इत्यादि इत्यादि की तरह कोई पुस्तक रचनाकार, कोई व्यक्ति विशेष नहीं, वह परमात्मा ही वेद स्वरूप हैं, वेद हैं तो परमात्मा हैं, परमात्मा हैं तो वेद है। परमात्मा सत्य सनातन और अनादि अविछिन्न हैं इसलिए इसमें सुधार संशोधन की आवश्यकता नहीं। वेद भगवान् ने जो कहा है उसको मानने की और जानने की आवश्यकता है। अब ये जाना माना कैसे जाय? ये कोई पंसारी की दुकान पर मिलने वाला आटा धनियां हल्दी मिर्ची तो हैं नहीं कि गये और अठन्नी के ले आये, हींग दे दो दाल बनानी है। जैसा पूर्वाचार्य कह गये, वेद को पढ़ने से पहले यज्ञोपवीतधारी होना आवश्यक है और यज्ञोपवीत भी किसका हो, अठन्नी में मिलती है चवन्नी में मिलती है, लाओं डाल लो, ऐसा भी नहीं है, उसके लिए वेद ने जो पात्रता बता रखी है शर्त रखी है वह पालन करे। त्रि वर्ग ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तीनों वेद के अधिकारी, कब? पाँच वर्ष में ब्राह्मण बालक का, आठ वर्ष से क्षत्रिय का, द्वादश: वर्ष वैश्य का, सोलह वर्ष के बाद तो ब्रात्य हो जाता है, वेद का अधिकार नही रह जाता। ऐसी अवस्था में आजकल जो वेद चल रहे हैं बाजार में या वेद पठन पाठन की जो

प्रक्रिया चल रही है ये तो स्वयं वेद विरुद्ध है। वह क्या तो वेद का महत्व समझेंगे, वेद क्या है? क्या बतायेंगे, वो तो उसी तरह कह देंगे या उसकी गलती है। ईसापूर्व, ईसा, पश्चात् ऋग्वेदिक काल हम कहते है वैदिक काल है क्या? जब वेद अनादि ईश्वर की कृति है उनके निःश्वास भूत वेद उत्पन्न हैं। तब वह ईसा पूर्व, ईसा पश्चात् काल, सीमा में वेद को बाँधना ही हमारे धर्म के प्रति, हमारी सनातन जो परम्परा है उसको ओछा करने की, ये अंग्रेजों की और वर्तमान लोगों की चाल है। आप हम सबको एकजुट होकर पहले यह प्रतिपादन करना होगा कि हमारी संस्कृति को ईसा पूर्व किसी काल खण्ड में नहीं बांधा जा सकता। तभी हम वेद को और हमारी वैदिक सभ्यता संस्कृति को सुरक्षित रख सकते हैं। ज्यादा अब समय नहीं है और वेद जिसके कारण से आज हम सब जीवित हैं सारा संसार जीवित है वैदिक सभ्यता संस्कृति ही एक ऐसी संस्कृति, एक ऐसा उद्घोष जीवित है, **''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया''** देखें, हम अच्छा अच्छा सुनें, सौ सौ वर्ष जीवें,युग युग जीवें, अन्यान्य कहीं ऐसी उदात्त भावना नहीं मिलती, एकतामें वैदिक धर्म में, वैदिक धर्मावलम्बी के यहां, सनातन धर्मावलम्बी के यहां वेद भगवान् में ही ऐसा कहा गया है और वेद रहेगा। हिन्दू का मतलब क्या? कुरान को मानने वाला मुसलमान। मुसलमान की क्या परिभाषा है जो कुरानको माने मुसलमान, बाइबिल को माने ईसाई, हिन्दू कौन? उत्तर दो आपसे निवेदन करते है आप आचार्यों से प्रणाम पूर्वक पूछते हैं। हिन्दू कौन? आप सबका यही उत्तर आयेगा, वेद विहित आचरण करने वाला वैदिक सभ्यता संस्कृति को मानने वाला, वेद को मानने वाला हिन्दू।

हिन्दुत्व है तभी मनुष्यता है हिन्दुत्व है जब तक संसार में सभी समुदाय, सभी सम्प्रदाय सभी तरह के विचारों को अभिव्यक्ति का मौका है। दुनियां में औरभी जगह है लम्बी चौड़ी आप देख रहे हैं सुन रहे हैं वैदिक धर्म के अभाव के कारण, आप सभी की संख्या के अभाव के कारण, ऐसी बातें ऐसा आयोजन उपस्थित नहीं हो सकता क्यों नहीं हो सकता क्यों कि वहां सर्व धर्म समभाव की बात नहीं, एक ही धर्म की बात है उसको मानों तो ठीक है नहीं तो जाओ तो हमारे यहां ऐसा नहीं क्यो? कि वेद में ही **सर्वे भवन्तु सुखिनः** का सिद्धान्त है वह हमारे यहां ही अक्षरशः लागू हो रहा है, होता आया है और होता रहेगा जब तक यह भगवान् की सृष्टि चलेगी और वैदिक परम्परा के हम अनुयायी रहें, हमारे आचार्यों का आशीर्वाद रहा, हमारे गुरुजनों का आशीर्वाद रहा तो आप हम सब जीवित रहेंगे, हमारी संस्कृति सभ्यता बची रहेगी इसके लिए आपको हमको सबको आचार्यवान् होना है। वेद की प्राप्ति बाजार से नहीं होती, स्कूल कॉलेज से नहीं हो सकती। स्कूल कॉलेज का जो वेद है जो संस्कृति नहीं अपतु वहां विकृति होती है, पैन्ट पहनके खड़े खड़े मूतने वाला क्या वेद का स्वाध्याय करा सकता है। शिखा नहीं सूत्र नहीं, सूत्र नहीं, स्वाध्याय सन्ध्या नहीं कर सकते वह सरकारी पैसे के आदमी कितनी पढ़ाई पढ़ायेंगे, वेद विरुद्ध स्वतः ही उपस्थिति वहां हो जाती है।

इसलिए वैदिक सभ्यता संस्कृति को बचाने के लिए, गुरुकुलों का सम्बर्द्धन संरक्षण करना होगा, आचार्यपीठों को आचार्य परम्परा में जो वैदिक वर्ण आश्रम व्यवस्था अनुसार वेद शास्त्र की पढ़ाई जहां होती है ऐसे आचार्यो के हाथ मजबूत करने होंगे, आपको उनको विद्यार्थी भी देने होंगे, धन भी देना होगा। तन, मन, धन, से सेवा करेंगे तब आपकी हमारी संस्कृति बचेगी। संसार को टिकाने के लिए सात बातें महात्माओं ने कहीं है इसमें वेद का ही बात कहके मैं विश्राम लेता हूँ। ये सातों बाते सुरक्षित रहेगी, गौ, ब्राह्मण, वेद, दानदाता, साधु महात्मा, सती, सत्यवादी, इत्यादि तो आप हम सब बचे रहेंगे और आनन्द मंगल होगा।

महामण्डलेश्वर पूज्य मंगलानंद जी महाराज

अध्यक्ष भारत साधु समाज

परमपिता परमात्मा की असीम कृपा और दया से यह शुभ प्रसंग हमारे अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य जिन्होंने मानव मात्र के कल्याण के लिए यहां पर व पीठ की स्थापना किया और जिसके द्वारा यहां ज्ञान भक्ति कर्म की धारायें लहलहारही सबके अन्दर वह धारायें विद्यमान और बड़े बड़े वक्ता लोग अपनी वाणी के द्वारा उनको जाग्रत करने की यह कोशिश कर रहे हैं। जरूरी है इतना बड़ा आयोजन हमारे पूज्यपाद जगद्गुरु श्रीजी महाराज निम्बार्काचार्य जी उनका यह जो परिश्रम **''बहुजन हिताय बहुजन सुखाय''** और वास्तव में वेदों की संस्कृति हमारी हैं क्यों कि यह देश ऋषि मुनियों का देश है गुरुओं का देश कहलाया है ऐसे गुरुओं की परम्परा ऋषियों की परम्परा मुनियों की परम्परा । अभी वेद के बारे में आपने सुना लेकिन परन्तु मगर लग जायगा, आप कहेंगे महाराज, वेद की भाषा हम कैसे जानेंगे। हम तो रामायण और गीता के पढ़ने वाले तो जरूर है तो यह भी वही चीज है आज हमें जितना भी लाभ हो सके मूल हमारे वेद हैं। और वेद में अस्सी हजार कर्मकाण्ड, सोलह हजार उपासना और चार हजार उसमें ज्ञान वह **''वेदस्य अन्तः वेदान्तो''** वह अन्तिम भाग जो चार हजार वही उपनिषद भाग हैं क्यों कि संहिता भाग ब्राह्मण भाग और उपनिषद् भाग और अरण्य भाग ये चार भाग वेदों में जो कहा गया तो हमारे सबसे ज्यादा अस्सी हजार उसमें जो मंत्र हैं वास्तव में वह कर्मकाण्ड के है। हमें शिक्षा पहली कर्म की शुद्धि के लिए धर्म का आदेश जरूरी है अथातो धर्म जिज्ञासा हमें वेदों को समझाने के लिए, वेदों के उपदेश देने के लिए, आदेश देने के लिए हमें जरूरी है निचली कोटि से सामान्य जनता के लिए ये जरूरी है कि हम सुनकर कान को पवित्र कर लेंगे इन्द्रियो को पवित्र कर लेगें लेकिन हमारे पल्ले पड़ना चाहिये। आज का युग जरूरी है वैदिक संस्कृति, सारी दुनियां के अंदर, वह सभी संस्कृति की जननी है और वैदिक संस्कृति के द्वारा ही जितनी भी संस्कृति, सभ्यतायें है सारे विश्व में उसके मूल में हमारा वैदिक है, हमारे वेद हैं। वह अपौरुषेय हैं बराबर है इसको कोई नकार नहीं सकता लेकिन उसके ज्ञान के लिए अभी कहा गया कि ज्ञान के लिए जरूरी है। आज वेद के पण्डित यहां पधारे उनका स्वागत है लेकिन हमारे यहां पण्डितों की भी कमी है और हमारी जनता आज भारत आजाद हुआ तो लगभग बत्तीस पैंतीस करोड़ थे आज कितने करोड सौ करोड़ हो गये उससे ऊपर जा रहे हैं। हमें पण्डित चाहिये वेद पढ़ाने वाले वेद को जानने वाले ठीक है लेकिन जो परम्परा आपने कहा हिन्दू धर्म की पहिचान वेदों से ठीक, क्या गीता रामायण से पहचान नहीं हो सकती ? आज हमारे कोर्ट में गीता उठाई जाती है वेदों को नहीं उठाते, अपितु गीता उठाई जाती है, गंगाजल उठाया जाता तो **''सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः। पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्''** वह सभी उसी के निचोड हैं, वेदों का ही निचोड़ आया हुआ। परम्परा से उपनिषद् में वहीं परम्परा गीता जिसे कहां गया। जिसे गीता और हमारा ब्रह्म सूत्र उपनिषद् इत्यादि ये प्रस्थानत्रयी इसलिए जरूरी है कि हमारी संस्कृति वेदों की संस्कृति है। यह हम स्वीकर करते हैं लेकिन हमें वेदों ने कहा **''सत्यं वद, धर्म चर, स्वाध्यायान्माप्रमदः, मातृदेवो भव आचार्य देवो भव''** इत्यादि जो सूत्र ये वेद हमें आज्ञा करता है। लेकिन वेद ने यह नहीं कहा कि कैसा सत्य बोलना, आज के युग में आप कौन सा सत्य बोलना चाहते हैं, वेद भगवान ने तो कह दिया **''सत्यं वद''** लेकिन उसका क्लीयर नहीं हो पाया, यहां कटु सत्य है, एक प्रिय सत्य है, एक जड़सत्य है, किस सत्य को हम

बोलना चाहते हैं वहां तो आज्ञा हो गई वेदों से ''**मनु स्मृति**'' आ गई। उसने कहा ''**सत्यं बूयात्, प्रियं ब्रूयात्**'' और ये प्रिय सत्य बोलो ''**मनु स्मृति**'' जो ''मनोः अपत्यम्'' यह मानव जिससे हुआ है वह, मनु महाराज ने इसकी यह व्याख्या दिया कि प्रिय सत्य बोलो लेकिन भगवान् कृष्ण ने गीता में कहा कि अभी अधूरा है-सत्यं प्रियं हितं च, भगवान् ने एक शब्द और जोड़ दिया प्रिय सत्य से भी काम नहीं चलेगा वहां हित शब्द जोड़ा है समाज का, व्यक्ति का, संस्कृति का, राष्ट्र का, जिसमें हित हो उस सत्य को बोलना चाहिये। इसलिए हमें जरूरी है एक आदमी की जान मारी जा रही है और हम उस जड़ सत्य को पकड़ कर बैठ गये कि वेद ने कहा है कि सत्यं वद नहीं चलेगा, आज के युग में कैसे चलेगा, हमें जान बचाना हैं।

राष्ट्र को बचाना है, धर्म को बचाना है, संस्कृति को बचाना है, इसलिए हमें उस भगवान कृष्ण के आदेश को ''**सत्यं प्रियं हितं च**'' हित हमारा कौन से मैं है, अगर आप एक सत्यवादी बनकर बैठे हो, एक गाय आप के सामने से गई पिछे से कसाई आया उसने पूछा महाराज आप सत्यवादी है तुम ने कहा हाँ सत्य बोलोगे, बोले हाँ बोलों यहां से गाय गई अब तुम क्या बोलोंगे? गाय गई, यह तुमने बता दिया उसकी जान मारी जायगी अब यहां पर कौन सा सत्य होगा। वह महात्मा बहुत बुद्धिमान था। उसने कहा ठीक बेटा तुमने कहा देखा आँखों ने, बोलना मुख को, यह भी गड़बड़ हो गया अगर आँख ने देखा है तो आँख को बोलना चाहिये और मुख बोलता है तो मुख को देखना चाहिये, इन्द्रिय बदल गई इसलिए सत्य नहीं है। वह भाग गया। कहने का तात्पर्य है हमें सत्य की परिभाषा पण्डितों के द्वारा, वेद के पण्डित, वैदिक पण्डित, सबको हम लोग बहुत आदर से देखते हैं, लेकिन आज हमें परिभाषा को जरा उससे **बहुजन सुखाय** और वैसी होना चाहिये। जो हम कहते हैं कि ''**सर्वे भवन्तु सुखिनः**'' ये तो कहते हैं ''**उदार चरितानांतु वसुधैव कुटुम्बकम्**'', बराबर यह तो हम कहने मात्र को कहते हैं लेकिन हमें आचरण क्या करना है? हम जब तक उसको आचरण में नहीं लायेंगे तब तक ऐसे कहने से हमारे पास सब कुछ है, वेदों को आज तक हमने पूजन ही किया, और वेदों को जर्मनी में ले जाकर उसने उसका उपयोग किया उसका प्रयोग किया लेकिन हम लोग पूजा ही करते रहे। केवल पूजा करने से क्या होग, उसके अन्दर क्या वस्तु है, क्या ज्ञान विज्ञान भरा है, उस चीज को हमने लोगों तक पहुँचाया नहीं, जनता जनार्दन तक पहुँचाया नहीं **लिमिट** मार दिया इसको राइट नहीं ये वेद पढ़ने का राइट नहीं ये कैसे होगा? यहां तो यह भी है, लेकिन आज लोग जो भी प्रवचन करने वाले यह भी कहते हैं कि वेदों का पढ़ने का सबको राइट है कि नहीं, लेकिन बहुत से लोग कहते हैं इसको ''**राइट**'' नहीं है इसको ''**राइट**'' है। अरे भाई ये बीच में जो ''**ब्रेक**'' लगाओगे तो किस तरीके से हमारी संस्कृति बचेगी, संस्कृति को बचाने के लिए आज की परिभाषा जरूरी है। और आज की परिभाषा में हमें उस वैदिक संस्कृति को बचाते हुये, वेदों को बचाते हुये और हमें हमारी इन भोली भाली जनता जिन्हें कुछ पता ही नहीं, बोलते रहो जरूरी है कर्मवाद क्या करता है? कर्मवाद जन्म देता है ठीक है, कर्म करो, लेकिन अच्छे कर्म करो। क्यों एक आकार है, एक प्रकार है, एक संस्कार है, एक विकार है, ये चार वस्तु साथ चलती है। आकार मनुष्य का हो गया! अरे किसी को कुत्ता बिल्ली का भी मिल जाय, गधा घोड़ा का आकार भी मिल जाय, कर्म की प्रधानता से आपको आकार मिल गया, आप मनुष्य बन गये। प्रकार का मतलब है, स्वभाव और स्वभाव ही ''**बैराइटी**'' है। एक घर में पैदा होने वाले के स्वभाव अलग अलग हैं क्यों कि सबके संस्कार अलग अलग हैं एक उत्तर में जायेगा, एक पूरब जायेगा।

यहां से संस्कार प्रसारित होता है विकार स्वयं होगा। तुम्हारे खेत में घास ऐसे ही उग जायेगा, घास बोना पड़ेगा नहीं लेकिन उसमें जो तुमने दाने को बोया है उसको बचाने के लिए घास को निकालना पड़ेगा। इस तरीके से संस्कार दिये जा रहे हैं। अभी तुमसे संस्कार की बात की जा रही है तुम्हारे मन में विकार अनायास हो जायगा, उसकी कोई शिक्षा देने की जरूरत ही नहीं। विकार पसीना अनायास होगा उसे धोना, तुम्हें पड़ेगा, विकार तो स्वंय होता है और संस्कार दिया जाता है इसलिए आकार, प्रकार, संस्कार, विकार हमें हमारे जीवन में हमारी जो स्वभाव की विकृतियां, फरियाद हैं लोग कहते हैं इसका स्वभाव अच्छा नहीं, महाराज क्या करें? इन महापरुषों की यह अमृतमय वाणी द्वारा तरह तरह की इनकी जो वाणी है यह ज्ञानमय, विज्ञानमय, यह भक्तिमय, रसमय,जरूरी है। कहते हैं जो भी करो वह जरूरी है, भक्ति ज्ञानं तथा मुक्ति कर्मः, हमें क्या करना है यह अगर हम एक लाइन में लग जायेंगे हमारी लाइन शुरू हो गई तो बराबर है सबसे करना चाहिये। एक छोटे से बच्चे से प्रेम करना उसका नाम स्नेह कहा जाता है। बराबरी वाले से प्रेम करो उसका नाम मित्राचारी है। जरूरी है अपने कुटुम्ब से प्रेम करोंगे उसका नाम मोह है, धन से प्रेम करोंगे उसका नाम लोभ है, स्त्री से प्रेम उसका नाम काम है, और गुरुओं से प्रेम करो उसका नाम श्रद्धा है, और ईश्वर से प्रेम करना उसका नाम भक्ति है। प्रेम एक है पात्र अनेक हैं अब तुम किस पात्र में क्या करना चाहते हो? हमारा गुरुश्रद्धा का रूप है हमारा गुरु, गुरु भी तीन हैं। तीन गुरु में सद्गुरु सर्वोपरि है। शिक्षा गुरु, दीक्षा गुरू और सद्गुरु। दत्तात्रेय भगवान् ने चौबीस गुरु किए वह सद्गुरु नहीं थे केवल शिक्षा लिया उसमें से उसमें से एक एक उपदेश लिया गुर लिया इसलिए वह शिक्षा गुरु हो सकते हैं। अनेक शिक्षा गुरु भी अनेक हो सकता है। सोलह संस्कार में तुम जो भी दोंगे लेकिन सद्गुरु तो एक ही होगा। जहां यहां यह तीर्थधाम जहां निम्बार्कतीर्थ को हम लोग ढूढ़ते ढढ़ते कहां से आ रहे हैं। मैं गुजरात से ढूढ़ते ढूढ़ते आरहा हूँ, निम्बार्कतीर्थ क्षेत्र कहां है भाई चलो पहली बार आये। कहने का तात्पर्य है ऐसे बड़े बड़े जो धाम हमारे क्षेत्र बने हैं, तीर्थ बने हैं उसमें जाकर अगर महात्मा ये बड़े विराट् रूप में बैठे हुये महापुरुष इनके द्वारा रचा हुआ यह तीर्थ वास्तव में यह तीर्थ ही हमारे जीवन का कल्याण करने वाला है। लेकिन गुरुरूपी श्रद्धा यदि मजबूत होगी तो, कैसे उदाहरण-किसी ने कहा भाई श्रद्धा किस पर रखनी चाहिये, हमारे यहां **''श्रद्धावान्लभते ज्ञानं''** ये श्रद्धा के बाद ही होता है गणेशजी को दूध पिलाया गया और मेरे से लोगों ने कहा महाराज ये क्या बात है? मूर्ति दूध पीती है क्या? मैं तब बाहर था मैंने कहा हमारे यहां दो दृष्टि हैं एक श्रद्धा की,एक अश्रद्धा की श्रद्धा वालों ने पिलाया ओर भगवान् ने पिया लेकिन अश्रद्धा से किया हुआ कोई भी कर्म तप, जप, भगवान् उसे स्वीकारता ही नहीं इसलिए अश्रद्धा वाला काम हमारा फेल हो जाता है इसलिए श्रद्धा युक्त होकर आप सभी लोग और अपने गुरुदेव को अपने ईश्वर को परमात्मा को हमारा इष्ट देव एक होनी चाहिये, गुरु एक होना चाहिये मंत्र एक होना चाहिये।

जगद्गुरु बल्लभाचार्य श्री वल्लभराय जी महाराज :- (सूरत पीठाधीश्वर)

मचं पर विराजमान जगद्गुरु श्रीमन्निम्बार्काचार्य श्री राधा सर्वेश्वर शरण देवाचार्य जी महाराज अन्य मंच पर विराजमान समस्त धर्ममप्रेमी श्रोता जनो। आज भगवन्निम्बार्काचार्य जी की जयन्ती के अवसर पर समयोजित इस विराट् सनातान धर्म सम्मेलन में हमारे श्री श्रीजी महाराज के निमन्त्रण से यहां उपस्थित होकर आप सबको मिलते हुये चित्त में बड़ा ही आनन्द अनुभव हो रहा है। आज से करीब दस बारह वर्ष पहले इसी निम्बार्कतीर्थ में निम्बार्काचार्यपीठ में स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर सनातन धर्म सम्मेलन में आने का अवसर

हमें प्राप्त हुआ था और उस समय ही यहां आकर श्रीजी महाराज से मिलकर एक विलक्षण आत्मीयता का अनुभव हमने किया था और जैसे अभी हमारे मेवाड़ महामण्डलेश्वर श्री मुरली मनोहर शरण जी ने कहा उस प्रकार निम्बार्काचार्य जी से बहुत ही विशिष्ट प्रकार का स्नेह बना हुआ है और वह स्नेह आज का नहीं परन्तु हमारे पूर्वाचायों के समय से बना हुआ है। श्री बल्लभाचार्य जी के समय में भी वह स्नेह रहा और प्रभुचरण गुंसाई जी श्री विट्ठल नाथ जी के समय में भी वही स्नेह रहा और उसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि हमारे यहां पर वल्लभ सम्प्रदाय में भगवान् की सेवा के समय भगवान् के सम्मुख केवल उन्हीं भक्तों के पद का गान होता हैं जो भगवत् कृपा से भगवत् साक्षात्कार प्राप्त किये हुये थे और उन भक्तों में वल्लभ सम्प्रदाय के भक्तों के पदों का गान तो होता है लेकिन हमारे यहां पर निम्बार्क सम्प्रदाय के जो भक्त हुये जो विशिष्ट भगवत् साक्षातकार सम्पन्न सिद्ध भगवत् भक्त हुए हैं उनके भी पदों का गान आज भी होता है श्री भट्ट देवाचर्य जी आदि के पदों का गान ''कहत श्री भट्ट ओट द्वै निरख्यौ'' इत्यादि पदों का गान आज भी होता है। इससे यह जो प्रेम का परस्पर जो आत्मीयता का सम्बन्ध है वह आज का नहीं है यह तो पूर्व से चला आ रहा है और वैसा ही आज हमारे श्रीजी महाराज निभा रहे हैं, इससे चित्त में बड़ा ही आनन्द है। वास्तव में हमारे श्रीजी महाराज के द्वारा पिछले कई वर्षों से जो कार्य हो रहे हैं वह ऐसे प्रशंसनीय हैं कि जिसके लिए शब्द कम पड़ रहे हैं। आपका हमेशा यही अभिगम रहा है, अभिप्राय रहा है कि समन्वयवाद धर्माचार्यों में स्थापित होकर सभी एक मंच पर आवें, और एक मंच पर आकर एक विशिष्ट धार्मिक संगठन का संदेश समाज में पहुंचे। पहले भी यहां पर सनातन धर्म सम्मेलन बहुत सफलता पूर्वक हुआ था और आज भी बहुत ही सुन्दरता से यह आयोजन सम्पन्न हो रहा है। जहां तक हमारे आचार्यों का प्रश्न है, चाहे रामानुजाचार्यजी हों, चाहे मध्वाचार्यजी हों, श्री बल्लभाचार्य जी हों, या निम्बार्काचार्य जी हों, हमारे आद्य ये जो भी आचार्य हुये हैं वे सभी भगवद् विभूति रूप, भगवत् रूप अवतार हैं। शास्त्रों के अनुसार और तत्द सम्प्रदाय के ग्रन्थों के अनुसार विशिष्ट स्वरूप भी माना गया है, जैसे मध्वाचार्य जी मरूद्अवतार के रूप में प्रसिद्ध हैं, या श्री रामानुजाचार्य जी शेषावतार के रूप में प्रसिद्ध हैं, शंकराचार्य जी शंकर के अवतार के रूप में प्रसिद्ध हैं, हमारे श्री बल्लभाचार्य जी श्री कृष्ण वदन वैश्वानरावतार के रूप में उसी प्रकार आदि श्री निम्बार्काचार्यजी चक्रराज श्री सुदर्शन के अतवार के रूप में प्रसिद्ध हैं। ''**अज्ञानतिमिरान्धानां विष्णोमार्गं प्रदर्शय**'' इस भगवत् आज्ञा के अनुसार श्री निम्बार्काचार्य जी का भी भूतल पर प्राकट्य हुआ जो स्वयं प्रथम श्री नियमानंद के नाम से प्रसिद्ध रहे और बाद में आप सारे विश्व में निम्बार्काचार्यजी के रूप में विख्यात हुये। हमारे शास्त्रों ने यह बहुत स्पष्ट कर दिया है कि आचार्य भगवत् रूप होते हैं। भगवान् ने कहा ''**आचार्यं माम् विजानीयात्**'' आचार्यं भगवान का ही स्वरूप है। श्रीमद्भागवत के अनुसार, ''**योऽन्तर्बहिस्तनुभृताम शमं विधुन्वन् आचार्य चैत्यवपुषा स्वगतिं व्यनक्ति।**'' इस वाक्य के अनुसार यदि देखा जाय तो परमात्मा, भगवान जीव पर दो प्रकार से कृपा करते हैं। वे ही परमात्मा अन्तर्यामी रूप से विराजकर देहधारियों के अशुभ का विनाश करते हैं उनके प्रतिबंधो का विनाश करते हैं वे ही परमात्मा द्विजवर स्वरूप से अवतरित होकर आचार्य के स्वरूप में अवतरित होकर बाह्य रूप से उसके दोषों को दूर करते हैं यही बात भागवत् ने कहीं है। परमात्मा का देहधारियों पर इतना अनुग्रह है कि उनके उस उपकार को यदि कोई ब्रह्मा के आयुष से भी उसमें से उऋण होना चाहे तो नहीं हो सकता। आचार्यों का बहुत बड़ा उपकार हम लोगों पर है जीवों पर आचार्यों का बहुत बड़ा उपकार है।

इसलिए हम लोगों को आचार्य के स्वरूप को माहात्म्य समझ कर अपने अपने सम्प्रदाय के अनुसार आचार्यनिष्ठ रहना चाहिये। आचार्य की आज्ञा में रहना चाहिये और स्पष्ट कहा है, **''आचार्यवान् पुरुषो वेद''** बिना आचार्य के कोई भी सिद्धिः जीवन में प्राप्त नहीं हो सकती। इसलिए हम अपने इन आदि आचार्यों का स्मरण करते हुये अपने अपने सम्प्रदाय की परम्परा के अनुसार अपनी अपनी साधना प्रणाली में लगाकर अपने जीवन को कृतकृत्य करें यही हमारा प्रथम और मुख्य कर्त्तव्य है। आज यहांपर सनातन धर्म सम्मेलन के अन्तर्गत जो विविध सम्मेलन हुये उसमें वैदिक सम्मेलन सम्पन्न हुआ और हो रहा है। हमारे पूर्व वक्ताओं ने वेद के विषय में बहुत मननीय विचार अपने अपने वक्तव्य में प्रस्तुत किये हैं। वेदों का क्या स्वरूप है? वेद किसको कहा जाय? इस विषय में और इन सारे विषयों के लिए हमको हमारे प्राचीन शास्त्रों का ही आधार लेना चाहिये। सायण भाष्य में वेद का स्वरूप है? स्वरूप समझाते हुये कहा है कि **''इष्टप्राप्तिअनिष्टपरिहारयोः अलौकिकउपायं यो बोधयति स वेदः''** कृष्ण यजुर्वेद की तैतत्तरीय शाखा के भाष्य में ही आरम्भ में यह वेद की व्याख्या वहां पर दी गई है, इष्टप्राप्तिः और अनिष्टपरिहार यह दोनों के लिये जो आलौकिक उपाय बताता है वह जो शब्द राशि है उसको वेद कहते हैं। जैसे शास्त्र ने कहा कि वेद ने कहा **''ज्योतिष्टोमेनस्वर्गकामो यजेत्''**, तो वेद के सिवा और कोई भी प्रमाण से हम यह नहीं जान सकते हैं कि ज्योतिष्टोम नाम के याग से हम अपनी इष्ट प्राप्ति कर सकते है। न प्रत्यक्ष से इसका ज्ञान हो सकता है न अनुमान आदि प्रमाण से इसका ज्ञान हो सकता है इसलिए

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते।
येन विद्वान् वेदमृते तस्माद् वेदस्य वेदता।।

यह वेद का स्वरूप शास्त्र में बताया गया है कि जो उपाय का ज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण से नहीं हो सकता, जो उपाय का ज्ञान अनुमान प्रमाण से नहीं हो सकता है ऐसे उपाय को बताने वाला जो शब्द राशि समुदाय है, शब्द राशि है उसको वेद कहते हैं। अभी अभी बड़ी सुन्दर चर्चा की गई कि वेद किसने बनाये? कुछ आधुनिक विद्वान् प्रत्येक मंत्रों के ऋषियों का नाम सुनकर ऐसे कल्पना करते हैं कि तत्तन्मंत्रों की रचना उन उन ऋषियों ने की है जैसे गायत्री छन्द विश्वामित्र ऋषि तो लोगों ने अर्थ कर दिया कि गायत्री मंत्र के रचयिता विश्वामित्र ऋषि हैं परन्तु आपने अभी हमारे पूर्व वक्ताओं के द्वारा सुना और यह शास्त्र का सिद्धान्त है कि वेद किसी ने बनाये नहीं हैं कोई लौकिक मनुष्य ने वेदों का प्रणयन किया नहीं है। वेद किसी ने बनाये नहीं हैं कोई लौकिक मनुष्य ने वेदों का प्रणयन किया नहीं है। वेद तो साक्षात भगवान् के परमात्मा के निश्वास का स्वरूप है। **निःश्वासस्तस्य यद् ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदः** इत्यादि कहा गया है तो ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अर्थवेद ये तो साक्षात् भगवान् का निःश्वास है। जिस प्रकार कालिदास आदि कवियों ने काव्य की रचना की हैं उस प्रकार कोई भी ऋषि ने वेद की रचना की नहीं है इसलिए हमारे यहां पर स्पष्ट रूप से शास्त्रों में कहा है कि **शिवाद्याः ऋषि पर्यन्ताः स्मर्तारोस्य न कारकाः** शिवजी से लेकर अन्यान्य ऋषि पर्यन्त जितने भी हैं वे कोई भी वेद के बनाने वाले नहीं हैं। **वेदोनारायणः साक्षात् स्वयं भूरिति शुश्रुमः** वेद साक्षात भगवान का रूप है, साक्षात नारायण का ही स्वरूप वेद है। इसलिय कभी यह भ्रमित नहीं होना चाहिये कि तत्तत् मंत्रो के ऋषि का नाम सुनकर हम ये सोच लें कि अमुक मंत्र अमुक ऋषि ने बनाया है ऐसा नहीं है वेद तो हमारे अनादि हैं। और जो ऋषि है उनकों प्रभु कृपा से उन मंत्रों का दर्शन हुआ। उन मंत्रों का उनको ज्ञान हुआ। शास्त्र में

कहा है,- ''**युगान्तेऽर्न्तहितान् वेदान्सेतिहासन् महर्षयः । तपसा लेभिरेपूर्वं अनुज्ञाताः स्वयंभुवा**'' जब इस युग का अंत होता है तब स्वाभाविक है कि वेद भी अर्न्तहित हो जाते हैं। परन्तु जब सृष्टि का फिर से आविर्भाव होता है तब ये कहा गया है कि इतिहास सहित उन वेदों को भगवान् की कृपा से तप करते हुये उन मुनियों ने प्राप्त किया ब्रह्मा स्वयं की अनुकृतियां होते हुये उन्होंने उन मंत्रों को प्राप्त किया।

इस प्रकार वेद कोई मनुष्य के बनाये हुये नहीं है वेद अपौरुषेय हैं क्यों कि वेद नित्य हैं। वेद नित्य होने के कारण वेद अपौरुषेय हैं और सृष्टि के आरम्भ में सबसे पहले परमात्मा ने उन वेदों को ब्रह्मा को प्रदान किया। **तेने ब्रह्महृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः** यह भागवत में भी उल्लेख प्राप्त होता है। अभी जैसे वेद की महत्ता का जो वर्णन किया गया उस सम्बन्ध में हमारे कुछ पूर्व वक्ता ने यह जो बात उपस्थित हुई कि भाई वेद को ही क्यों मानते हो, गीता नहीं है क्या अन्यान्य रामायण आदि शास्त्र नहीं हैं तो उसमें उस संदर्भ में हम यह कहना चाहते हैं कि भाई, वेद स्वतः सिद्ध प्रमाण है और सर्व प्रमाण का मूल है। वेद सभी प्रमाण का मूल है। वेद सभी प्रमाणों का मूल होने के कारण और समस्त विश्व में यदि प्राचीनतम सर्वप्रथम कोई वाङ्मय हो तो वो वाङ्मय केवल हमारे वेद हैं। इस रूप में स्वतः सिद्ध प्रमाणभूत वेद होने के कारण वेद का उल्लेख किया जाता है। इससे ऐसा नहीं समझना चाहिये कि गीता या रामायण या महाभारत या भागवत आदि का अस्वीकार किया जा रहा है। यदि ऐसा होता तो प्रस्थानत्रयी या प्रस्थानचतुष्टयी की बात ही निरर्थक हो जाती। इसलिये हमारे यहां पर यह भी विचार किया गया है कि केवल वेद से वेदों का तात्पर्य समझ में नहीं आ सकता, उसमें सन्देह रह जाता है तभी तो भगवद्गीता की आवश्यकता होती है। **वेदः श्रीकृष्ण वाक्यानि व्यास सूत्राणि चैव हि समाधिभाषा व्यासस्य प्रमाणानि चतुष्टयं,** कुछ आचार्यों ने प्रस्थानत्रयी को प्रमाण माना और श्री वल्लभाचार्य जी ने प्रस्थान चतुष्ट को प्रमाण माना है। वेद का संदेह भगवद् गीता से दूर होता है, भगवद्गीता का संदेह ब्रह्मसूत्र से दूर होता है और इन तीनों में आने वाले संदेहों का निराकरण सर्व संदेह निराकरण सर्व संदेह निवारक श्रीमद्भागवाद् से होता है। इस प्रकार हमारे कोई भी आचार्यों ने जिन्होंने वेद का बहुत ही महत्व प्रतिपादित किया है उन्होंने और प्रमाणों के लिए कोई उपेक्षा नहीं की, क्यों कि उसके विना काम चल नहीं सकता है। हमारे यहां तो यहां तक कहा गया है कि **विभेति अल्पश्रुतात् वेदो मामयं प्रहरिष्यति** जो व्यक्ति केवल वेद को ही मानकर चलेगा उससे तो वेद स्वयं घबडाते हैं। इतिहास पुराण को गीता आदि को छोड़ने की कहीं बात ही नहीं है क्यों कि स्पष्ट कहा गया है, जो व्यक्ति केवल वेद को ही मानकर चलेगा उससे तो वेद स्वयं घबड़ाते हैं, जब इतिहास पुराण के द्वारा वेदों का समझ नहीं लिया जायेगा तब तक वेदों का सही अर्थ प्राप्त ही नहीं हो सकेगा।

इसलिए जहां पर वेदों की महत्ता का प्रतिपादन किया जाता है वहां इतिहास पुराणादि को अस्वीकार करने की कोई बात ही नहीं है। इस बात को खास हमारे श्रोताजन ध्यान में रखे। वेद नित्य है कैसे समझेंगे ? इन सब विषयों को समझने के लिए यदि कोई परमः प्रमाण हैं तो वो हमारे शास्त्र है। श्रुति में और स्मृति में स्पष्ट रूप से बताया गया है श्रुतियों ने कहा,यह नित्य वाणी है वेद की जो वाणी है वह नित्यवाणी है और साक्षात् भगवान् ने उनको प्रकट किये हैं जैसा कि अभी आप सुन चुके। इस प्रकार से वेदों को प्रकट करने वाले स्वयं परमात्मा हैं और परमात्मा में किसी भी प्रकार का दोषनहीं हो सकता है वैसे ही परमात्मा की वाणी में कहीं कोई दोष का सम्भव नहीं है परमात्मा स्वयं जिस प्रकार निर्दोष हैं उनकी वाणी भी निर्दोष है इसलिए वेद स्वतः प्रमाण हैं। वेदों को प्रमाण मानने के लिए फिर

और कोई प्रमाण खोजने की जरूरत नहीं है वेद स्वतः प्रमाण हैं। हमारे सभी आचार्यों ने वेद का यह जो प्रामाण्य है वह स्वीकृत किया है।

हमारा ज्ञान तो इतना ज्यादा है जैसे गायत्री के लिए विश्वामित्र ऋषि यानि जो विश्वामित्र नाम के मुनि हुये उनको हम गायत्री के ऋषि मानते हैं लेकिन वहां पर **''गायत्र्यनुष्टुप् गायत्री छन्दः विश्वामित्रऋषि''** वहां पर ये विश्वामित्र नाम के जो एक मुनि हुये उनको गायत्री के लिए विश्वामित्र ऋषि नहीं माने गये हैं विश्वामित्र शब्द से साक्षात् परब्रह्म का उल्लेख किया गया है। इसका गायत्री भाष्य और अन्याय ग्रन्थो में बहुत कुछ इसका विवेचन है जिस प्रकार वेदों के ऋषियों के सम्बन्ध में भ्रम में हम हैं उसी प्रकार जैसे गायत्री है तो गायत्री में भी आने वाले सवितुः आदि पद के लिए हम बहुत भ्रमित हैं। लोग समझते है कि सविता शब्द से यह जो सूर्य का गोला, जो तप रहा है उसका उल्लेख किया गया है ये बस हमारा अज्ञान है। वास्तव में सवित शब्द प्रसविता सारे जगत को प्र कट करने वाले जो देव उनका उल्लेख, उनके तेज का ध्यान यहां पर बताया गया है। लेकिन कोई बात का ज्ञान नहीं है और मन से हम वेदादि शास्त्रों के विषय में अपने अपने विचार प्रस्तुत करते हैं। सारे के सारे वेदों का मुख्य तात्पर्य परमात्मा की महिमा का गान है। **सर्वेवेदा यद्पदमामनन्तिः वेदैश्चसर्वै रहमेव वेद्यः** इत्यादि वचनों के द्वारा बहुत सिद्ध है कि परमात्मा का प्रतिपादन वेदों में किया गया है। वेदों में भले अग्नि, वरूण, इन्द्र, यम, आदि देवताओं के नाम का उल्लेख मिलता है लेकिन वेदों का जो परम चरम तात्पर्य है वह परमात्मा श्री हरि के प्रतिपादन में किया गया है। इसलिए अग्नियम यमयम वरुणयम इत्यादि जिन शब्दों से हम जिनको पहचानते हैं वो साक्षात् परमात्मा है यह भी शास्त्रों में निर्णय किया गया है। **वहुधावदन्ति अग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः**। एक ही परमात्मा जगत् में विविध कार्य करने के लिए अनेक रूप से प्रकट हुये। इसलिए अग्नि, मित्र, वरुण, आदि नाम से भी जो विख्यात हुये लेकिन वह सभी नाम से पहचाने जाने वाले यदि कोई भी हैं तो परब्रह्म श्री हरि परमात्मा स्वयं है इसलिये **अजायमानो वहुधा विजायते तस्य धीराः परिजानन्ति योनिं** यह बात कहीं गई है हमको यह निश्चित समझ लेना चाहिये कि समस्त वेदों ने परमात्मा का ही प्रतिपादन किया है। जो विविध नाम से जो वर्णन किया गया है, उसमें परमात्मा के प्रति वह स्नेह का भाव स्पष्ट छलक जाता है। हमारे यहां पर भक्ति में आप लोगों ने यह सुना होगा और सब लोग हम बोलते हैं एक श्लोक बोलते हैं, **त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देवः** भक्ति में सर्वभाव भगवान् में होना एक स्वाभाविक भक्ति की अवस्था है। आप वेदों में देखिये कहीं वेदों में भगवान् को **''त्वं पिता सि्''** भगवान् को कहीं पिता के रूप में कहा गया है **''अदिति माताः अदितिः''** इत्यादि शब्दों में वहां माता के रूप में भी भगवान् का वर्णन आता है, **''सखे''** शब्द से भगवान को सखा के रूप में भी पुकारे गये हैं। इस प्रकार वेदों में सर्वभाव से भगवान् को देखा गया है। भगवान् को सर्वभाव से देखाना यह भक्ति का ही एक प्रकार है।

वेदों में अनेक रूप से भक्ति का प्रतिपादन सिद्ध होता है। यहां तक कि भगवान् की दिव्य लीलाओं का वर्णन भी वेदों में उपलब्ध होता है। भगवान् के दिव्य धामों का वर्णन कि भगवान् का वह दिव्य धाम, गोलोक धाम कैसा है- **यत्र गावो भूरिश्रृङ्गा अयासः** और वहां पर **''सदा पश्यन्ति सूरयः''** स्पष्ट रूप से वहां पर बताया कि भगवान् के वे जो धाम हैं जो नित्य भगवान् के जो धाम है जहां पर गऊयें जहां पर बिहार करती हैं,अनेक मृग आदि पक्षी जहां पर विहार करते हैं ऐसा

भगवान् को जो गोलोक धाम है, जहां भगवान् अपने अखण्ड नित्य लीला का विहार करते हैं राधा कृष्ण युगल स्वरूप से जहां पर विहार करते हैं वे जो भगवान् का नित्य गोलोक धाम है उस के दर्शन कौन करते है? **सदा पश्यन्ति सूरयः सूरयः माने विद्वांसः** जो विद्वान् है वह उनको सदा दर्शन करते हैं। विद्वान माने क्या? विद्वान् शब्द से केवल ज्ञानी लेना यदि केवल ज्ञानी लेंगे तो, **भक्त्याहमेकयाग्राह्यः भक्त्या लभ्येत सुजन्यः** इन सब वचनों का क्या फिर अर्थ करेंगे? भगवान् ने विश्व रूप का दर्शन कराया अर्जुन को वहां पर स्पष्ट रूप से बता दिया है। भगवान् ने कि यज्ञ वेद आदि कोई साधनों में मेरा यह दर्शन नहीं हो सकता है, मैं केवल अनन्य भक्ति से ही लभ्य हूँ। इसलिए **विद्वां सः** ऐसे का अर्थ सूरय शब्द का अर्थ जो विद्वान् हैं वो अर्थ समझना चाहिये, विद्वान् माने जो भक्त ऐसे विद्वान्। गीता में जो कहा कि भक्ति के द्वारा भगवान् का अभिज्ञान होता है। सर्वतः भक्ति से ही भगवान् का ज्ञान हो सकता है तो इन सब शब्दों से भी स्पष्ट है कि वेदों में भक्ति का स्वरूप और भगवल्लीला आदि का भी वर्णन बड़ा सुन्दर बताया गया है और वेदों का ज्ञान केवल भगवत् कृपा से ही हो सकता है, केवल लौकिक, युक्तियों से या केवल व्याकरणादि शास्त्रों के ज्ञान से, वेद का ज्ञान नहीं हो सकता। तप के द्वारा, भगवत्भक्ति के द्वारा, ही वेद का ज्ञान हो सकता है। वेद में जहां जहां परमात्मा की सृष्टि का वर्णन किया गया है कि भाई परमात्मा से ही यह जगत् का अविर्भाव हुआ है, परमात्मा में ही यह जगत् स्थित है, परमात्मा में ही यह जगत् विलीन हो जायेगा यह जो सृष्टि की बातें वेद में बताई है वह क्यों बताई? सृष्टि की बात इसलिए बताई कि परमात्मा का माहात्म्य तुम समझो, वो जो परमात्मा श्री हरिः है उनकी महत्ता को तुम समझो, कि वो कोई सामान्य तत्व नहीं है, वो कोई विभूति मात्र नहीं है, वो किसी का अंग नहीं है, वह स्वयं सारे जगत् प्रकट करने वाले हैं, उन्हीं में जगत् स्थित है, उन्हीं में जगत् लीन हो जायेगा यह उनका माहात्म्य है। भक्ति का जो स्वरूप नारद पंच रात्र में बताया वह यही बताया महात्मिक ज्ञानपूर्व वस्तु सर्वाधिक स्नेहो ऋत प्रोक्तः भगवान के महात्म्य को समझ कर भगवान के लिए सुदृढ़ यानी कभी नहीं डिगे ऐसा सर्वतोधिक यानी हम अपने आत्मा को भी जो प्रेम करते हैं उससे भी अधिक जो भगवान के लिए जो स्नेह हो जाय उसको भक्ति कहते हैं। उसमें माहात्म्य का ज्ञान होना पहले जरूरी है, जब तक महत्ता का ज्ञान नहीं होता तब तक उनके चरणों में हम झुकते नहीं। लोक में भी जब कोई चीज की महत्ता मालुम पड़े तब हम आकृष्ट होते हैं। मान लीजिये कि आप रास्ते पर से जा रहे हैं और एक पत्थर पर आपके पैर की ठोकर लगी, आप उसको ठोकर लगाकर चले जायेंगे लेकिन कोई यदि कहेगा कि भाई वह पत्थर तो हीरा है तुरन्त आप उसकी ओर आकृष्ट होंगे। किसी भी चजी की ओर आकृष्ट होने के लिए उसकी मेहत्ता का ज्ञान होना जरूरी है। तो प्रभु की महत्ता उनके माहाम्म्य को समझाने के लिए वेदों ने यत्र-तत्र सृष्टि की प्रक्रिया का वर्णन किया है। और तत्त्वमसि इत्यादि वाक्यों के द्वारा जहां पर भगवान् का परमात्मा का वर्णन किया गया है, वह इसलिए किया गया है कि हमको जब यह ज्ञान हो कि अरे ये तो मेरे आत्मा हैं तो उनके प्रति सहज प्रेम स्वाभाविक रूप से प्रकट होता है। मैं आत्मा का भी आत्मा हूँ प्रिय का भी प्रिय हूँ ऐसा जब ज्ञान हो जाय, माने भगवान् आत्मा हैं प्रिय के भी प्रिय हैं, ऐसा ज्ञान जब जीव को हो जाय तब निष्कपट स्नेह उनके लिए होता है। तो वेदों में यत्र तत्र जो जगत् सृष्टि का वर्णन आता है, **यत्र तत्र आत्मत्वेन** जो परमात्मा का वर्णन आता है उसका तात्पर्य और कुछ नहीं है केवल भगवद्भक्ति के लिए ही उसका तात्पर्य है। इस प्रकार वेदों का तात्पर्य भगवान की भक्ति में है।

इस प्राकर वेदों का स्वरूप हमको समझना चाहिये। अभी अभी जो वैदिक सम्मेलन में चर्चाओं को सुनते हुये एक बात जो श्री शंकराचार्य जी ने गीता भाष्य में लिखी है वह स्मरण में आती है कि **ब्राह्मणत्वस्य हि रक्षणेन रक्षितो भवति वैदिको धर्मः** शंकराचार्य जी की यह युक्ति बड़ी ही वास्तविक है कि यदि वैदिक धर्म का रक्षण करना है, तो ब्राह्मणत्व की रक्षण करना पड़ेगा जब तक ब्राह्मणत्व का रक्षा नहीं की जायेगी तब तक वैदिक धर्म की रक्षा नहीं हो सकती है। और वेद के विषय में हम अपने मन से आज अपने युगानुरूप विचारों को प्रस्तुत करते हैं सुनने में एक बार अच्छे भी लगते हैं लेकिल जब हम गीता को मानते हैं तो हमको यह भी मानना पड़ेगा। और स्पष्ट भागवत आदि में भी इसका उल्लेख प्राप्त हुआ है महाभारत की रचना क्यों करनी पड़ी? व्यास जी को महाभारत की रचना क्यों करनी पड़ी, इतने इतने वेद थे और सब था फिर क्यों महाभारत की रचना करनी पड़ी? सर्वजन हिताय समाज को कोई भी वर्ग छूट न जाय इसके लिए ही आपने महाभारत की रचना की। **स्त्रीशूद्रद्विजिबन्धूनां त्रयीनश्रुति गोचरा। इतिभारतमाख्यानं कृपयामुनिनाकृतम्,** इसलिये इन सब विषयों में कौन का अधिकार है, कौन का अधिकार नहीं है वेद में किसका अधिकार है और किसका अधिकार नहीं है इसका निर्णय शास्त्र ही कर सकते हैं। और शास्त्र के अनुसार ही इसका निर्णय हो सकता है उस शास्त्र के अनुसार हमको चलना चाहिये। और हमारे आचार्यों ने समाज के किसी वर्ग को भी छोड़ा नहीं है। और जहाँ तक वैष्णव सम्प्रदाय का प्रश्न हमारे यहां तो **''शूद्र स्त्वधिकतया पवित्र'' स्तेन न बुद्धिमतां,** ये कहा गया है वर्णाश्रम धर्म अपने स्थान पर सुरक्षित रखते हुये। वर्णाश्रम धर्म को अपनी जगह सम्पूर्ण सुरक्षित रखते हुये भी वैष्णव परम्परा में प्राणी मात्र के उद्धार की व्यवस्था का विचार किया गया है और भगवद्भक्ति में सबका अधिकार है यह बात बताई गई है। इसलिए सब कुछ समन्वय जब हो जाता है तब अपने मन से विभिन्न अर्थों से कल्पना करने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। आज हमको अपने शास्त्रों को छोड़कर, शास्त्र सम्बन्धी जो बात करते हैं उसी से आज बहुत बड़ा विपरितार्थ रहा हैं और उसी के दुष्परिणाम आज समाज के सामने आ रहें हैं इसलिए हम अपने शास्त्रों की परम्परा को मान्य करें।

एक बात आज हम कहना चाहते हैं कि हम जब वेद का इतना महत्व समझते हैं तो हमको वेदों का प्रचार प्रसार उसके अधिकारियों में करना चाहिये वेद के जो शास्त्र सम्मत अधिकारी हैं वो वेदों को पढें वेदों को जाने क्योंकि हमारे शास्त्रों ने वेद को पढ़ने का और उसे समझने का बहुत ही आग्रह रखा है इसलिए वैदिक पाठाशालाओं को प्रोत्साहित करना चाहिये वैदिक ब्राह्मणों को प्रोत्साहित करना चाहिये हमारे पूर्व वक्ताओं में किसी ने बहुत अच्छा कहा कि वेद का विद्वान उसकी कोई कीमत समाज में नहीं होती वह विचारा जैसे कोई भिखारी हो इस प्रकार से घूमता है। वेद के विद्वानों को बहत आदर देना चाहिये। हमारे यहां कहा है कि वेदविद् जो ब्राह्मण हैं उनको प्रतिदिन प्रणाम करना चाहिये उनका आदर करना चाहिये। आज यह संस्कृति विस्मृत होती जा रही है।

आज इस देश में पिछले दीपावली से उत्पात हो रहा है जो उपद्रव हो रहा है वो इसी का परिणाम है ये संस्कृति जो हम भूल गये है उसका दुष्परिणाम है कि आज इस भारतवर्ष में एक ऐसा कलंकित प्रसंग हुआ है कि जिसके लिए कोई शब्द नहीं है। दीपावली के ही पर्व के उपलक्ष्य में, दीपवाली पर्व के ही अवसर पर हमारे काँचीकाम कोटिपीठ के शंकराचार्य श्री जयेन्द्रसरस्वती जी का जिस तरह से नाटकीय प्रकार से

उनको जो गिरफ्तार किया गया वह बहुत बड़ा इस देश के लिए कलंक है और हमें ऐसा लगता है कि आज भी हमारा हिन्दू समाज जाग्रत नहीं हुआ है। हमारे धर्माचार्य हमारे शास्त्र इतना इतना पुकार के सब कुछ कहते हैं फिर भी आज हमारा हिन्दू समाज अभी जाग्रत नहीं हुआ है। जो हमारे कांचीकाम कोटिपीठ के आचार्य के साथ में जो दुर्व्यवहार हुआ है आप यदि उसका विचार करेंगे तो ऐसा दुर्व्यवहार तो किसी कुख्यात गुन हगार के साथ भी नहीं होता है। यदि कोई ऐसा कानूनी कोई प्रश्न आ गया तो उसके लिए भी मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुये भी कार्य हो सकता था लेकिन वह नहीं किया गया। एक धार्मिक आचार्य कोटि के व्यक्ति को उनकी पूजा आदि, उनके नित्य कर्म के लिए या उनकी भोजन की, जो उनकी व्यवस्था है वह तक उनको सम्पन्न कराने में अवरोध किया गया। यह सब क्या है ? यह स्पष्ट है कि एक प्रकार से हिन्दु धर्माचार्य को इस प्रकार से उन पर अत्याचार करके हिन्दू धर्म को नीचा दिखाने का यह स्पष्ट प्रयास किया गया है। और ऐसा प्रयास यदि हम सहन कर जायेंगे तो आगे एक समय ऐसा आयेगा कि इस देश में और विश्व में हिन्दू केवल एक इतिहास का विषय बन जायगा। इसलिए हम सबको एकजुट हो कर धर्म के माध्यम से हमको राष्ट्र के लिए आगे आना होगा। हमें पूर्ण ज्ञात तो नहीं है लेकिन यह प्रस्ताव पारित किया गया है कि हमारे श्री जयेन्द्र सरस्वती जी को शीघ्र ही मुक्त किया जाये। शीघ्र ही मुक्त कराकर उनको सम्मान के साथ उनको व्यवस्था प्रदान कराई जाये यदि ऐसा प्रस्ताव यहां परित हो चुका है, ऐसी जानकारी मिली है उसमें हमारा भी पूर्ण समर्थन है। हम भी बल्लभ सम्प्रदाय विष्णु स्वामी बल्लभाचार्य सम्प्रदाय की और से उसका समर्थन कर रहे हैं और हमारी यह मांग है कि कोई की जगद्गुरु हो हमारे यहां पर जो पद्धति और जो परम्परा है उसके अनुसार जिस प्रकार चार शंकराचार्य या जो भी पाँच चार जो भी शंकराचार्य पद हैं वो जगद्गुरु कक्षा के माने जाते हैं और वह सर्वमान्य हैं तो चाहे शंकराचार्य हों, चाहे वैष्णव सम्प्रदास के जगद्गुरु हों उन सबके लिए, और जो विशिष्ट ऐसे धार्मिक व्यक्ति हों, उनके पद की गरिमा का विचार इस देश में अवश्य होना चाहिये।

इस देश में पोप आता है तो पोप के लिए सब सुविधा और सारी प्रकार की वहां पर व्यवस्था सम्पन्न कराई जाती है। मान लो वहीं इस देश के कोई धर्म गुरु हों और यहां इसी देश में इस देश के धर्म गुरुओं का कोई मान सम्मान नहीं है। और जो इस प्रकार की जो व्यवस्था हो रही है दु:ख दायक है। इसके लिए समस्त हिन्दू समाज को एक होकर अपनी आवाज उठाने का समय अब आ चुका है अब हमको सोने का समय नहीं रहा है। **धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षित** इस युक्ति के अनुसार यदि हम जाग्रत नहीं हुये और अपने धर्म की रक्षा नहीं करेंगे तो हमारा भी विनाश हो जयेगा इसमें कोई संशय की बात नहीं है। इसलिए हम सब एक हों इस सनातन धर्म सम्मलेन का तात्पर्य यही है। सभी लोगों को एक मंच पर एकत्रित करने का तात्पर्य भी यही है कि हम सब एक होकर, चाहे हमारी साधना प्रणाली भले भिन्न हो, हमारी अपनी अपनी सम्प्रदाय प्रणाली भले भिन्न हो, लेकिन हम सब एक हैं, यह एक आवाज सारे विश्व में पहुंचे इस दृष्टि ही ऐसे आयोजन किए जाते हैं। कुम्भ के अवसर पर हम भी समस्त जगद्गुरुओं का, चतु: सम्प्रदाय और सनातन धर्म सम्मेलन करने की भावना रखते हैं, और होता है, उसका तात्पर्य भी यही है कि चाहे सम्प्रदाय भले ही अलग अलग हों लेकिन सब एक हैं, और सबकी एक आवाज है यह प्रतिफलन समग्र विश्व में हो, तो आज सनातन धर्म सम्मेलन के इस अवसर पर हम यही प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हमारे श्रीजी महाराज श्री निम्बार्काचार्यजी

श्रीराधासर्वेश्वर शरण देवाचर्य जी महाराज को भगवान् पूर्ण दीर्घयु प्रदान करे और उनका समाज को मार्गदर्शन सदैव प्राप्त होता रहे और ऐसा सबल नेतृत्व निम्बार्क सम्प्रदाय को प्रभू चिर काल तक प्रदान करें और ऐसे आयोजन सदैव यहां पर होते रहें यह हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं। यहां पर यह जो सनातन धर्म सम्मेलन की समिति है उस समिति ने यहां पर व्यवस्था का बहुत सुन्दर कार्य सम्भाला हुआ है। हमने देखा कि बहुत ही सुन्दर व्यव्स्था प्रत्येक क्षेत्र में बहुत ही सुचारू रूप से यहां पर व्यवस्था हो रही है। यह सम्मेलन जब होने वाला था तब यहां के जो संचालक लोग हैं उन्होंने हमारे कुम्भ में अखिल कुम्भ समिति के अध्यक्ष बना के रखे हैं कलकत्ता वाले जोधराज जी लड्ढा उनसे सम्पर्क किया था वह मेरे पास आये और मुझसे पूछा कि भाई मुझे वहां श्री निम्बार्काचार्यजी के यहां स्वागत में उपाध्यक्ष का पद दे रहे हैं मैं वह स्वीकार करूँ या न करूँ, हमने कहा कि इसमें क्या पूछने की बात है यह तो हमारा बहुत आत्मीय और घर का सम्बन्ध है आप अवश्य वहां पर जाइये और वहां सेवा कार्य करिये। और उन्होंने यहां पर आ करके सेवा कार्य भी सम्भाला, अन्यान्य वैष्णव जन भी यहां पर आये हुये हैं तो यह एक बहुत ही सुन्दर कार्य यहां पर सम्पन्न हुआ है और हमारे श्री निम्बार्काचार्यजी महाराज ने यहां पर सभी लोगों को एकत्र करने का प्रयास किया है और आपका यह प्रयास बड़ा ही प्रशंसनीय है कि भाई मानवमात्र के रूप में भी हम लोग आपस में एकात्मता का अनुभव करें और एकात्मता का अनुभव करके हम अपने लक्ष्य की ओर आगे बढें। वैसे हमारा तो यह दृढ़ मन्तव्य है कि मानव में मानवता की परिपूर्णता तभी आ सकती है जब वैष्णवता हम लोगों मे जगे क्यों कि बिना वैष्णवता के मानवता भी अधूरी है। इसलिए मानव मात्र को हम एकत्रित करके और अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़े यह जो दृष्टिकोण रखा है वह बड़ा ही सुन्दर है, बड़ा प्रशंसनीय है और हम प्रभु से यही प्रार्थना करते हैं कि इस प्रकार के आयोजनों के द्वारा लोग लाभान्वित हों और इससे प्रेरणा प्राप्त कर अपने अपने कर्त्तव्य में तत्पर बन कर भगवान की भक्ति और शरणागति के माध्यम से धर्म और राष्ट्र की सेवा में हम अग्रसर हों यही हमारा कर्त्तव्य है।

स्वामी श्री राघवाचार्य जी :-

रेवासापीठ - सीकर

मैं आपका समय बहुत नही लूँगा मैं तो यहाँ बैठे बैठे यह सोच रहा था, इतनी बड़ी जनता को कौन सी शक्ति बैठाये हुये है और मैं ऐसा मानने को तैयार हो गया हूँ और विश्वास कर रहा हूँ कि निम्बार्क तीर्थ है, की जो हजारों वर्ष की तपस्या है श्री श्रीजी महाराज का जो तप हैं उसका आभामण्डल, उसका प्रभामण्डल आपको यहां पर धर्माचार्यें का सदुपदेश सुनने के लिए बाध्य किए हुये हैं। यहां उनका तप और तेज यही मुख्य आकर्षण का केन्द्र है।

सनातन धर्म सम्मेलन के माध्यम से आज वेद सम्मेलन का भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ अध्यक्ष के लिए कुछ भी बाकी नहीं रहता हैं क्यों कि पूर्व वक्ताओं ने समस्त विषयों को समायोजित कर और वेद के सम्बन्ध में जो भी श्रेष्ठ चर्चायें करनी थी उन सारी चर्चाओं को आपके सामने रखा है। चाहे त्रेता का युग रहा हो और चाहे द्वापर का युग रहा हो, प्रत्येक युग में वैदिक संस्कृति के संहार रूप में उत्पाती राक्षस पैदा होते रहे हैं और उन काल में समाज के मनीषी, समाज के श्रेष्ठ, समाज के आचार्य सदैव वैदिक संस्कृति की सुरक्षा के लिए प्रयत्न किया है और आज भी भारतीय संस्कृति और संस्कारों के प्रति जो प्रहार हो रहे हैं जो परिस्थितियां पैदा हो रहीं है वास्तव में हम सब आचार्यो का भी यह दायित्व बनता है कि इस विषम परिस्थिति में हम वैदिक सनातन

धर्म की सुरक्षा कैसे कर सकें। एक काल आया था बौद्धकाल आया था उस समय वेदों की सम्पूर्ण रूप से अवहेलना हो गई थी। काशी नरेश की पुत्री के आँखों से आँसू निकले **''कः वेदानुद्धरिष्यतिः''** वेदों का उद्धार कैसे होगा और उसी गली में भारत का एक श्रेष्ठ विद्वान् कुमारिल भट्ट भ्रमण कर रहा था। उस महापण्डित ने उनके सम्प्रदाय में दीक्षा लेकर वहा से उनके सारे तर्क और कुतर्कों को पढ़कर और अपने सब तर्कों के माध्यम से वेदों की प्रतिस्थापना की। लोग उनको तर्कों के माध्यम से तो वे जीत न सके और एक षडयन्त्र रचा कि ये तो तुम्हारे वेद परमात्मा हैं, सिद्ध करके बताओ। पहाड़ की चोटी पर उस विद्वान् को खड़ा कर दिया गया और कहा कि इस चोटी से तुम गिरने के बाद यदि तुम मरोंगे नहीं तो हम मान लेगें कि वेद स्वयं साक्षात् नारायण हैं। और उस ब्राह्मण ने पहाड़ की उस चोटी पर चढ़कर ये उद्घोष किया था कि यदि वेद सत्य है तो मेरा बाल बांका भी नही हो और वहां से वो कूद पड़ा और कूदने के बाद वह मरा नहीं किन्तु उसके अंगूठे में थोड़ी सी खरोंच आ गई। कुतर्कियों ने कहा कि तुम्हारे वेद झूठे हैं क्यों कि तुम्हारे अंगूठे में खरोच तो आ गई है। उस ब्राह्मण ने कहा कि मेरे अंगूठे में खरोंच यदि मैं गिरते समय यदि शब्द नहीं लगता तो मेरे इस अंगूठे में भी चोट नहीं आती। इस तरह से वेद की रक्षा के लिए हमारे ब्राह्मणों ने हमारे वैदिकों ने अपने पूरे जीवन को समर्पित कर दिया है। इसलिए **''वेदोंऽखिलोधर्मं मूलं''** इस सिद्धान्त के अनुसार जब तक वेद को हम सुरक्षित नहीं रखेंगे, पुराणों को हम सुरक्षित नहीं रखेंगे, स्मृतियों को सुरक्षित नहीं रखेंगे इनका परिज्ञान नहीं करेंगे तो हमारी संस्कृति विनष्ट होने में कोई देर नहीं लगेगी। भगवान् इस धरती पर आते हैं धर्म की संस्थापना के लिए, भगवान् इस धरती पर आते हैं और भगवान् को धर्म की संस्थापक के लिए उपदेश भी करना पड़ता है। उनको सुदर्शन को भी धारण करना पड़ता है किन्तु भगवान् के अवतार के बाद इस धरती पर जब आचार्य अवतरित होते हैं तो आचार्य ऐसी अपूर्व शक्ति को लेकर अवतरित होते हैं जिनको सुदर्शन चक्र चलाने की जरूरत नहीं पड़ती, केवल अपने शास्त्र के माध्यम से सारे समाज को, सुप्त समाज को, भारतीय संस्कृति और संस्कारों के लिए खड़ा कर देते हैं। आज जगद्गुरु निम्बार्काचार्य जी महाराज ने इस समाज को जो स्वयं भगवान् सुदर्शन के अवतार थे पूरे समाज और हिन्दू समाज को खड़ा किया। श्री श्रीजी महाराज उस परम्परा के पावन संवाहक है। मैं प्रातः काल जब आया था मुझे बड़ा आश्चर्य होता था कि इतने इतने गूढ प्रवचनों के श्रोता इतनी संख्या में कैसे उपस्थित हैं? कैसे इनको कई बाते तो इतनी क्लिष्ट आचार्यों ने कहीं है कि जिन को समझना भी बड़ा मुश्किल है फिर भी मैं श्रीजी महाराज की तपस्या को बहुत हृदय से उनके तपः पूर्ण जीवन को नमन करता हूँ कि जिनके तप के आकर्षण से आज सारी यहां की जनता, यहां का हिन्दू समुदाय यहां का धार्मिक समुदाय, अपने जीवन का पाथेय प्राप्त करने के लिए यहां से अमूल्य वचनों का सहारा लेकर लोग जायेगे। श्रीमान् हनुमान प्रसाद जी पोद्दार इस बात से बड़ा व्यथित रहा करते कि लोग ब्राह्मणों से मजदूरी कराने लग गये लोग ब्राह्मणों से निम्न कर्म भी कराने लग गये अब वैदकि संस्कृति कैसे सुरक्षि होगी?

जहां श्रेष्ठजनों को संस्कृत पाठाशालायें खोलनी चाहिये, जहां जिनके पास भगवान् ने पैसा दिया है उनको वेद पाठाशालायें खोलनी चाहिये, परन्तु आज पता नहीं समाज में पैसा तो बहुत हो गया है किन्तु वैदिक शिक्षण संस्थायें स्वल्प हो गई हैं। मैंने जब राजस्थान संस्कृत अकादमी का पद ग्रहण किया, इसी शर्त पर मैंने ग्रहण किया कि सरकार अगर वेद पाठशालाओं का जाल बिछाने का संकल्प मेरे साथ जुटायेगी तब तो मैं यह

अध्यक्ष पद स्वीकार करूँगा अन्यथा मुझे इस पद की कोई जरूरत नहीं है। मैने राजस्थान सरकार को बाध्य किया है कि राजस्थान के प्रत्येक जिले में वेद के शिक्षण केन्द्र खोले जाये। मैंने तो दो की मांग की है अगर एक एक भी खोलती है तो पुनः वेदों का उद्घोष होगा वेदों का चिन्तन होगा और मैं यह मानता हूँ कि ये वेदों के उच्चारण ये जो शब्द राशि है इनकी जो ये ध्वनि है ये ध्वनि सारे संसार का मंगल करेगी। इस ध्वनि से इसकी ऊर्जा से सबका मंगल होगा जैसा कि पूर्व वक्ताओं ने, ऐसे ऐसे वैज्ञानिक तरीके से बताया अमुक अमुक रोग की निवृत्ति, अमुक चरण से हो सकती है। मैं समझता हूँ पुनः श्री श्रीजी महाराज के संरक्षकत्व में पुनः ये वैदिक संस्कृति अपने ऊँचाइयों को छूये, यही मैं ठाकुर जी से प्रार्थना करता हूँ और आचार्य चरणों से निवेदन करता हूँ कि हमारे इस संघर्ष में, हमारे इस आन्दोलन में, हम घर घर में वेद का उद्घोष करें, हम घर घर में पुराणों के अध्ययन अध्यापन का काम चलायें क्यों कि भारत की पहचान किसी नेता के नाम से नहीं है भारत की पहचान भगवान वेद के नाम है। सारे संसार में भारत इसलिए पहचाना जाता है कि हां भगवान् वेदों का गुँजन होता हो, जहां पुराण पढ़े जाते हो, जहां स्मृतियों का गान होता हो, जहां भगवान् श्रीराम ने अवतार लिया हो, जहां भगवान श्री कृष्ण ने अवतार लियो हो, जहां जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जी ने अवतार लिया हो, जहां जगद्गुरु शंकराचार्य जी महाराज ने अवतार लिया हो जो ऋषियों की भूमि है जहां भगवान निम्बार्काचार्य जी महाराज ने अवतार लेकर कृतार्थ किया हो यह भारती की पहचान है यह भारत की संस्कृति की पहचान है। और इसलिए यह पहचान बनी रहेगी तो भारत की पहचान बची रहेगी। इसके लिए मैं विप्र समाज से आग्रह करता हूँ मैं विद्वानों से भी आग्रह करता हूँ कि आप अपने ज्ञान को बाँटे और अपने ज्ञान को प्रचारित और प्रसारित करें ताकि हम वैदिक संस्कृति का पुनः सम्पोषण कर सकें आज अतिविलम्ब हो गया मैं आप सबके बीच में अधिक समय न लेता हुआ आचार्य चरणों में प्रणति पूर्वक और ठाकुरजी से प्रार्थना करता हुआ कि जो सामर्थ्य दिया है। श्री श्रीजी महाराज को ठाकुर जी ने यदि इनकी उमर शतायु होगी, हमारी जनता सदैव आधके उद्बोधनों से कृतार्थ होती रहेगी, इसलिए ठाकुर जी से एक ही प्रार्थना हमारी उमर भी अगर श्रीजी महाराज को लग जाय तो कोई चिन्ता नहीं है श्री श्रीजी महाराज स्वस्थ हों चिरायु है।

पूज्य जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

आज कितना अनुपम आनन्द प्रद मंगल मय पावनतम अवसर है जहां पर अनेक शीर्षस्थ मूर्धन्य विद्वज्जन विराजित हैं सन्त महन्त महानुभाव अवसित हैं और सर्वाधिक प्रसन्नता है हमारे वैष्णवजगत के परम मूर्धन्य श्रीमद्वल्लभपीठाधीश्वर श्री बल्लभाचार्य जी महाराज यहां पर सुशोभित हो रहे हैं यह और भी परम आनन्द का मंगलमय अवसर हैं। इसी प्रकार हमारे भारत साधु समाज जो अखिल भारतवर्षीय है उसके महामंत्री श्री हरिनारायण नन्दजी उसके उध्यक्ष श्री मगलांनंद जी महारा जिनका आपने पावन उद्बोधन श्रवण किया। और हमारे रामानन्द सम्प्रदाय के अग्रदेव पीठाधीश्वर श्री राघवाचार्य जी महाराज जो संस्कृत अकादमी के अध्यक्ष पद पर भी अधिष्ठित हैं जिन्होंने आज के इस वेद सम्मेलन के क्रम में अध्यक्षता ग्रहण करके अपने भाव अभी आप सबों के सामने अभिव्यक्त किए। हमारे बहुत निकट जिनकी भव्य शोभा, जिनकी नब्बे वर्ष की आयु है श्री राघवानन्दजी महाराज राजराजेश्वरी धाम, मध्य प्रदेश नर्वदाजी का पावन तट धामनोद के सुरम्य पहाड़ी पर इतना अद्भुत रमणीय परम सुरभ्य आश्रम है, प्रभु के

मंगलमय दर्शन राजराजेश्वरी के मंगलमय दर्शन और वेद विद्यालय संत सेवा न जाने कितने अनेक जहां पर आनन्द का दिव्य स्त्रोत प्रवात होता रहता है ऐसे विभूति हमारे सामने अवस्थित हैं। धर्म सम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज के विशिष्ट पार्षदों में से आप है ऐसा लग रहा है कि मानो धर्म सम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज ही, यहां पर आकर विराजमान हो रहे हों।

आज के उन्तीस वर्ष पूर्व आचार्य पीठ के इसी मंगलमय प्रांगण में धर्म सम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज ने पाँच दिवस रास पंचाध्यायी के प्रसंग में जो दिव्य प्रवचन उपस्थित किया था और उसके साथ साथ पावन प्रेरणा और उद्‌बोधन प्रदान किया था। जो हमारे सम्पूर्ण सनातन वैदिक धर्म के महान स्तम्भ है जिनके स्वरूप का जितना वर्णन किया जाय अल्प है। जिन्होंने सनातन धर्म के लिए, गो माता की रक्षा के लिए न जाने क्या क्या श्रम नहीं उठाया कल, आपने प्रवचनों में श्रवण किया था। ऐसे जिनके द्वारा धर्म संघ की संस्थापना और उस धर्म का सम्प्रति सर्वविधि रूप से संचालन आपके ही माध्यम से चल रहा है। ऐसी विभूति यहां विराजमान हैं कल आप का पावन प्रवचन श्रवण करेंगे। एक और हमारे यहां डीडवाना एवं कहें मध्य प्रदेश इन्दौर नागौरियापीठ के पीठाधीश्वर श्री विष्णु प्रपन्नाचार्य जी महाराज भी विराजमान हैं। स्वामी श्री केशवाचार्य जी महाराज जिन्होंने उन्तीस वर्ष पहले और उसके बाद में भ ी जब युगसंत मुरारी बापू की कथा का क्रम था, तब भी और उसके बाद सनातन धर्म सम्मेलन में भी और आपके पीठ पर विराजित श्री श्रीनिवासाचार्य जी महाराज भी पधारे। आज प्रभु की अद्‌भुत लीला है वो परम दिव्य धाम में आज निवास कर रहे है, उनके ही उस पद पर प्रतिष्ठित हमारे विष्णु प्रपन्नाचार्य जी महाराज यहां पर अवस्थित हैं। आपके सामने आपका भी पावन उदबोधन कल आप श्रवण करेंगे। आज वेद सम्मेलन के सन्दर्भ में विभिन्न विद्वानों ने, आचार्य प्रवरों ने विशिष्ट महामण्डलेश्वरों ने, सभी ने अपने अद्‌भुत भाव अभिव्यक्त किए मध्य में हमारे महन्त प्रवर महामण्डलेश्वर श्री महन्त श्री मुरली मनोहर शरण जी शास्त्री महाराज स्वयं सभा संचालन करते हुये, वेदों के सम्बन्ध में दिव्य भाव अभिव्यक्त किए। प्रात: काल पूर्वान्ह में हम अपने कुछ भाव व्यक्त कर रहे थे और तब चर्चा किये, अपरान्ह बेला में जब सभा का कार्यक्रम आरम्भ होगा तब अपनी भावना व्यक्त करेंगे।

वेदों का जहाँ प्रसंग आता है कि वेद काण्ड त्रयात्मक है। तीन काण्ड है तीन विभाग है वेदो को एक है ज्ञान काण्ड एक है उपासना काण्ड एक है कर्म काण्ड। जो कर्मकाण्ड है उसमें किस प्रकार यज्ञ का सम्पादन करें कर्मानुष्ठान कैसे करें, धर्माचरण कैसे करें, यज्ञ मण्डप का निर्माण कैसे हो, कुण्ड का निर्माण कैसे हो, यह समग्र विधि विधान नानाप्रकार के हमारे जितने भी कर्मानुष्ठान हैं उनका सबका परिवर्णन है। दूसरा उपासना काण्ड है। हम अपने आराध्य का चिन्तन किस विधा से करें, किस प्रकार से करें, प्रभु की दिव्य आराधना, उनकी उपासना, उनका चिन्तन,उनका अनुस्मरण, उनका ध्यान किस प्रकार हो। उन सब उपासना काण्ड के उपनिषदों में समस्त प्रसंग परिवर्णित है। एक है ज्ञान काण्ड। ज्ञान काण्ड में ग्यारह उपनिषद् प्रसिद्ध हैं - ईशकेन-कठ-प्रश्न-मुण्डक-माण्डूक-तैतरिरेय-ऐय-श्वेताश्वेतर-बृहदारण्यक- छान्दोग्य-ये ग्यारह उपनिषद हैं। इन ग्यारह उपनिषद्‌ों में गहन चिन्तन हुआ है भोक्ता, भोग्य और प्रेरिता इन तत्व् विचार किया गया है। भोक्ता है जीवात्मा, भोग्य है चेतना चेतनात्मक यह जगत्, जगत का क्या स्वरूप हैं, जगत की क्या स्थिति है, जीवात्म का क्या स्वरूप हैं ये समग्र परिवर्णत हुआ हैं। और नियन्ता, इस जगत के जो नियामक हैं जो सर्वनियन्ता हैं जो सर्वान्तरात्मा हैं, जो सर्वाराध्य हैं जो

सर्वशक्तिमान हैं, जो सर्वदृष्टा हैं जो सर्वेश्वर हैं, जो सर्वज्ञ हैं, उन उनन्त कोटि ब्रह्माण्ड अधिपतिक्षरा क्षरातीत निखिल जगद्भिन्न निमित्तोपादान कारण उन रसः परब्रह्म सर्वेश्वर का जहां पर चिन्तन किया गया है गुणगान किया गया है उनके स्वरूप का प्रख्यापन किया गया है। उन ज्ञानकाण्ड के उपनिषदों के वचनों के विविध प्रकार के वचन प्राप्त होते है। दो प्रकार के वचन। एक वचन कहता है-''**अयमात्मा ब्रह्म, एषः वसोपुरूषस्य सोऽहं अस्मिन्नेह नानास्ति किंचन अद्वैतं परमार्थत :**''इत्यादि वचन''**नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानां, एकोबहूनाम् यो विदधाति कामान्**''

''**रसौ वै सः। रसं ह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति।, आनन्दं ब्रह्म सत्य कामः, सत्य संकल्पः सः आत्मरति, आत्मक्रीडः आत्ममिथुनः सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चिता**''प्राप्त होते हैं। ये दो प्रकार के वचन है। एक वचन कहता है कि ये चेतनो चेतनात्मक जगत् जिसमें जीवात्मा भी आगया ओर जगत् भी आ गया इनका ब्रह्म से क्या सम्बन्ध है? हमारे यहां पर वैष्णव सम्प्रदाय और अद्वैत सम्प्रदाय। अद्वैत सम्प्रदाय के आद्य प्रवर्तक हुये भगवान्श्री शंकराचार्य, श्री शंकराचार्य जी महाराज जो ये भाव व्यक्त कर रहे हैं ''**आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिनंयातिक्षयं यौवनं प्रत्यायन्ति गता पुनर्नदिवसा कालो जगद् भक्षकः। लक्ष्मीस्तोयतंरगभंगचपला विद्युच् चलं जीवितं तस्मान्मां शरणागतं शरणदः त्वम् रक्षरक्षाधुनाः**'' आचार्य प्रवर कहते हैं कि ''**शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं यशश्चारुचित्रंधनंमेरुतुल्यम्।हरेरङ्घ्रिपद्मे मनःश्चेन्नलग्नं ततः किम् ततः किम् ततः किम्**'' इस प्रकार की दिव्य भावना अभिव्यक्त करने वाले आचार्य प्रवर श्री शंकराचार्य जी महाराज अद्वैत वचनों को लेकर के अपने अद्वैत सिद्धान्त का प्रतिष्ठापन करते हैं। और हमारे वैष्णवाचार्यों में जो द्वैत परक वचन हैं, **नित्यो नित्यानां चेतन श्चेतनानां एकोबहूनाम् योविदधातिकामान् तमात्मस्थं येनुपश्यन्तिधीरा** ''**रसो वै सः रसँ ह्येवायं लब्ध्वा आनन्दी भवति**'' इसका तात्पर्य हैं, जो नित्य प्राणी है जो नित्य हैं उनमें जो परम नित्य है, यह इसका तात्पर्य हो गया, और अयवमात्मा ब्रह्म इसका तात्पर्य हो गया कि एक केवल ब्रह्म हैं, अब इसमें निम्बार्क भगवान का जो संकेत हैं वह यूँ कह रहे हैं दोनों वचन हमको समान रूप से ग्राह्य है । जैसे सर्व नियतृत्व सर्वात्ममत्व, सर्वव्यापकत्व, स्वतन्त्रसत्व, सर्वाधारत्वादि जो धर्म है वो परब्रह्म परमात्मा के है। और जीवात्मा के है- ब्रह्मात्मकत्व, तम्यन्नियत्व, तत्तन्त्रसत्व, तत्परायत्त जो धर्म हैं जीवात्मा के है। इसलिए भेदाभेद सिद्धान्त, इससे प्रतिष्ठित होता है। जैसे सूर्य और सूर्य की प्रभा, सूर्य का प्रकाश। सूर्य हुआ और सूर्य का प्रकाश ये दो हुये और जब प्रकाश की पृथक कोई सत्ता नहीं है तत् जीवनस्य प्रवृत्ति है तो सूर्य के बिना प्रकाश की अलग सत्ता नहीं है, एतावता एक भी है। इसलिये द्वैत भी ठीक है अद्वैत भी ठीक है- परन्तु इतना अवश्यक कहा कि भेद सहिष्णुः भेद को सहन करता हुआ अभेद स्वीकार किया है। श्री सुदर्शन चक्रावतार श्री निम्बार्क भगवान् ने, हमारे वैष्णवाचार्यों में जैसे आप शुद्धाद्वैत प्रवर्तक श्री बल्लभाचार्य जी महाराज इस भूतल पर आविर्भूत हुये और विशिष्टाद्वैत हमारे रामानुज सम्प्रदाय में विशिष्टाद्वैत का प्रवर्तन किया। मध्वाचार्य जी महाराज ने द्वैत का किया। श्री शंकराचार्यजी महाराज ने अद्वैत का किया। लक्ष्य एक है यह विचार हैं जैसे यहां पर ये गलीचा बिछा हुआ है, ये गलीचा बिछा हुआ है यह किससे बना हुआ है।

ऊन से बना हुआ है कि रेशम से बना हुआ है, सूत से बना है कि सन से बना है या अन्य किसी पदार्थ विशेष से बना है पर ये मतभेद आप में हमारे में हो सकता है। कोई कहेंगे कि नहीं यह रेशम का है, कोई

कहेंगे नही इसमें सूत भी मिश्रित है, अमुक भी है। परन्तु गलीचा है इसमें किसी में किसी प्रकार का विभेद नहीं है। इसलिए उन परात्परसर्वरसः परब्रह्म सर्वेश्वर की उपलब्धि करना एक मात्र उद्देश्यहै। हम यहां आचार्य पीठ आये, वो चाहे किशनगढ़ से आवें चाहे परबतसर से या रूपनगढ़ से आवें, चाहे करकेड़ी से इधर आवें, पूर्व दिशा से, पश्चिम से, उत्तर से, दक्षिण से किसी दिशा से आवे गन्तव्य एक है। यहां हमारे यहां लेशमात्र भी यह विचार नहीं है कि कहीं आचार्य प्रवरों में किसी प्रकार का कोई परस्पर में विवाद होता हो, ऐसा नहीं है। हमारे आचार्य प्रवर जगत् विजयी श्री केशवकाश्मीरी भट्टाचार्य जी महाराज ने जिन्होंने **वेदान्त कौस्तुभ प्रभावृत्ति** का **वेदान्त कौस्तुभ** पर वृहद् भाष्य लिखा। उन्होंने जहां चर्चा की है श्री शंकराचार्य जी महाराज की तो वह संकेत कर रहे हैं कि, ''**श्री भगवत्पादैशंकराचार्य चरणैः**'' इतने समादर पूर्वक सिद्धान्त की चर्चा करते हुये और अपने सिद्धान्त की चर्चा करते हुये और अपना सिद्धान्त उपस्थापित किया। तो इतना सुन्दर हमारे यहां समन्वय है। सब प्रकार से, किसी प्रकार से यह न सोचें कि हमारे किसी प्रकार का विभेद है, लेश मात्र नहीं है। हम सब एक हैं समग्र विधा से हम सब एक हैं और एक होकर के सनातन वैदिक धर्म की प्रतिस्थापना के लिए अग्रसर हैं और एक मंच पर हम सब समासीन हैं। जब हम एक हैं तो ऐसे समवेतरूप से एकत्रित हो करके, संसार की कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो धर्माचार्यों के अथवा धर्म स्थानों का या गोमाता का गोमाता पर जो आघात हो रहा है उसके लिए जो, आज सामयिक परिस्थित चल रही है उसके निराकरण के लिए, हम सब अग्रसर न हो सकें सम्भव नहीं है। अभी अभी जैसे हमारे आचार्य प्रवर श्री बल्लभाचार्य जी महाराज ने संकेत किया कि श्री कांचीकाम कोटि पीठाधीश्वर शंकराचार्य जी महारज श्री जयेन्द्र सरस्वती जी के सामने एक समस्या जो उत्पन्न हुई है, इसको कभी भी धार्मिक जनता यह समग्र वैष्णव परम्परा, हमारे समस्त आचार्य प्रवर, धर्माचार्य प्रवर कभी भी इसका समर्थन नहीं कर सकते, समर्थन करना तो दूर सर्वविध इस जघन्य कर्म के लिए उस शासन तन्त्र की घोर निन्दा करते हैं कि जिन्होंने इस प्रकार का दुष्कृत्य करने की चेष्टा की हैं। अतएव मान लिया जाय कभी, प्रसंगवसात कोई अघटित घटना घट गई हो ऐसा कदाचित् सोचें, प्रथम तो ऐसी परिकल्पना ही नहीं होती, पर ऐसा भी सोचें तो उसकी एक विधा होती है उसकी एक प्रक्रिया होती है। जो एक श्रद्धा पद पर समासीन हैं जैसे एक कोई राष्ट्रपति पद पर समासीन हैं। और उनके साथ इस प्रकार का यदि कोई आचरण करे तो वो चिन्तनींय होता है जो धर्माचार्य हैं वह सारे संसार को दिशा देते है वो स्वयं इस प्रकार की सारे संसार को दिशा देते। और सबको अहिंसा का उपदेश करते हैं उनके द्वारा इस प्रकार की परिकल्पना करना ही ये अत्यन्त दुर्नीति का प्रत्यक्ष दर्शन आपके सामने है और इस दुर्नीति के निवारण के लिए हम समस्त धर्माचार्य, समस्त साधु संत महात्मा और समस्त धर्म प्राण जनता इसका घोर विरोध कर रहीं हैऔर हम सब सर्वात्मना उनको तत्काल वहां की सरकार उनको यथास्थान मर्यादापूर्वक विराजित करें अन्यथा उनके हित में अच्छा न होगा। सर्वद्रष्टा भगवान् सर्वेश्वर सर्वशक्तिमान् हैं, वो सर्वज्ञ हैं, और वो किसी भी विधा से इस प्रकार के कार्य को देख नहीं सकेंगे विपरीत परिणाम हो जायगा। हम आज आप समस्त जितने भी यहां पर विद्वज्जन, आचार्यपवर, सन्त, महात्मा, श्रीमहन्त, महन्तवर्य, महामण्डलेश्वर, मण्डलेश्वर, तथा ये धर्म प्राण भावुकजन भक्तिमती मातायें जिस प्रकार आप सब परम शान्त भाव से यहां पर विराजित हैं। ये जितने भी हमारे भक्तजन भक्तिमती मातायें कितने दीर्घकाल से बैठे है। आप सबों की तपस्या का वर्णन करना कठिन है। इतने समय तक

प्रातः काल देखते हैं दस बजे से लेकरके और ढाई तीन बजे तक एक आसन पर बैठना जलपान नहीं करना ये तपस्या कम नहीं है। हमें तो आश्चर्य होता है कि आप सब किस प्रकार से यह ऐसी विलक्षण तपः साधना कर रहे। इस शीतकाल में शीत का अनुभव करते हुये भी यहां पर किसी प्रकार का साधन सोपान नहीं, कोई व्यवस्था का, जैसे व्यवस्थापक कर रहे हैं सब प्रकार से, फिर भी सुविधायें नहीं, यह अरण्य प्रदेश और एतावता भी आप सब इस प्रकार से अपनी भावना को संजोये हुये और अपनी निष्ठा और अपनी भक्ति सर्वेश्वर प्रभु के चरणारविन्दों में समर्पित कर रहे हैं यह कहना हमारे लिए तो दुष्कर है आपके स्वरूप का वर्णन नहीं कर सकते। आचार्यप्रवरों ने इतने मार्ग के कष्ट सहन करके और यहां पर जो कृपा की है अपनी अनुकम्पा अपना मंगलमय अनुगह किया है पधार करके, हमें उद्बोधन दिया है। समस्त सभी भगवज्जनों को मार्ग दर्शन कराया है, पावन प्रेरणा दी है। विद्वानों ने हमारे समस्त महन्त महानुभावों ने, हमारे महन्त जी महाराज, उदयपुर महनत जी महाराज जो सभा का संचालन कर रहे हैं जिनका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं है जिनके बाई पास सर्जरी हुआ है, हृदय की यह व्याधि और उस अवस्था में भी आप अनवरत प्रातःकाल और इस समय रात्रि तक सभा का संचालन करना, मध्य मध्य में उसका निर्देशन करना इतना दुरूह काम है, उसका भी सम्पादन कर रहे है। ऐसे विशिष्ट विभूति आज यहां पर सब विराजमान हैं। ''नै **कं चक्रं परिभ्रमति** एक चक्का की गाडी नहीं चलती सबका समान रूप से, समवेत रूप से जब सहानुभूति होती है तभी इस कार्य का विधिवत् सम्पादन होता है। सब मिल करके जब करते हैं सबने आप सबों ने, आचार्य प्रवरों ने अनुकम्पा की, संत महात्माओं ने कृपा की विद्वज्जनों ने कृपा की इन भक्तिमती माताओं ने, भगवज्जनों ने कृपा की जब जाकर के आज आनन्द की वर्षा हुई है हम तो दर्शक हैं हम तो बीच में एक दर्शक कोई होता है वो दोनों ओर से लाभ उठा लेता है वैसी स्थिति समझें। इधर से भी लाभ है इधर से भी लाभ है हमें तो स्वतः लाभ प्राप्त हो रहा है। यही है केवल यह जीवन की वृत्ति युगल प्रिया लाल श्री राधामाधव के युगल चरणारविन्दों में सर्वदा समासक्त बनी रहे, ये चित्त वृत्ति उधर ही बनी रहे और सारे विश्व का मंगल हो सर्वभूत हितेरता का जो उदात्त उद्घोष हमारे ऋषि मुनीश्वरों ने किया है वह हमारे जीवन में प्रतिष्ठित हो। ''**सर्वे कुशलिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत्।।**'' के अनुसार हमारा दिव्य ये भाव बने। इन्हीं वचनों के साथ सबकी मंगल कामना की अभिकांक्षा करते हुये भगवान सर्वेश्वर प्रभु के चरणारविन्दों में हम अपने भावों को विराम देते है।

श्री रमेश जी माहेश्वरी (मीडिया प्रभारी)

धन्यवाद-ज्ञापन

प्रातः स्मरणीय परम पूज्य अनन्त श्री विभूषित जगद्गरु श्री श्रीजी महाराज, सभा के वेदान्ताचार्य स्वामी श्री राघवाचार्य जी, सूरत से पधारे जगद्गुरु श्री बल्लाभाचार्य जी महाराज, भारत साधु समाज के राष्ट्रीय महामंत्री महामण्डलेश्वर हरिनारायणानन्द जी महाराज पीठाधीश्वर श्री विष्णु प्रपन्नाचार्य जी महाराज डीडवाना वाले, सभी पधारे हुये महामण्डलेश्वर मण्डलेश्वर सम्प्रदायाचार्यजी, वैदिक विद्वान् एवं धर्म प्रेमी सज्जनों। वेदों का उद्घोष घर घर पहुँचाने और वेदों के माध्यम से मानव रक्षा का संदेश देने के लिए आप समस्त जनों ने पधारने की कृपा कर अपने अनन्त ज्ञान भण्डार से हम सभी श्रद्धालुओं का मार्ग दर्शन दिया इसके लिए मैं आयोजन समिति की और से आप सभी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। हमें विश्वास है कि आपके दिखाये मार्ग पर चलकर अवश्य ही मानव समाज का उत्थान होगा। आसुरी शक्तियाँ अवश्य ही परास्त होंगी। धन्यवाद!

❑❑❑

वैष्णव धर्म सम्मेलन

श्रीमती तीजन बाई

सुप्रसिद्ध लोक गायिका, पद्म-भूषण पद्म श्रीप्राप्त

मैं गृहस्थ आश्रम की नारी हूँ। नारी के आधार से ही रामायण, गीता, महाभारत भागवत सभी बना। नारी के बिना श्रीकृष्ण जी, रामचन्द्र जी, शंकरजी भी लीला नहीं कर पाते। धर्म और अधर्म की ही तो लड़ाई थी और आज भी चल रही है। सभी साधु सन्त, मेरे बड़े बड़े बुजुर्ग को मैं हार्दिक दिल से प्रणाम करती हूँ। आप तो पढ़े के ज्ञाता हो, मैं एक साधारण नारी हूँ ये पढ़ाई नहीं जानती, अंगूठा के अलावा ये पढ़ना मामला मेरे से नहीं होता मैं अनपढ़ हूँ और अनपढ़ को श्रीकृष्ण जी ने कैसे अपना भक्त बनाया ये मुझे पता नहीं। सभी से प्रार्थना है, सभी से मेरी गुजारिश है यदि मैं कोई भूल जांऊ उसकी ओर आप ध्यान नहीं देना। तो चलो नारीपक्ष ज्यादा है तो हम छोटे से सुनादें द्रौपदी चीर हरन और उन द्रौपदी चीर हरन में साड़ी खिंचने वाला दूसरा नहीं खुद ही परिवार थे। भाई बन्धु माता पिता भीष्म द्रोण कृपाचार्य सब पधारे हुये थे उनके बीच में नारी की दुर्गति किस तरीके से हुई उनके आधार पर ही महाभारत बनाया गया, यदि रावन सीता को हर के नहीं ले जाता तो सोचो रामायण नहीं हो पाती। नारी और शराब जुआ नहीं खेला होता तो महाभारत नहीं होती। ये सारी कथा मानव से जुड़ा हुआ हैं पुरुष से जुड़ा है नारी से जुड़ा हुआ है, परिवार से जुड़ा है। साधु सन्त एक तो गृहस्थ आश्रम की ओर दौडे और एक साधु सन्त भगवान् की ओर दौडे तो भक्त और भगवान से मिलन कैसे होता है आज हमें पता चला कि साधु सन्त के बीच में आकर हमें कितनी खुशी हो रही है धन्य है मेरे भाग्य जो कि इतनी बड़ी स्टेज पर मुझ छोटी से तुच्छ ग्राम की महिला को स्टेज दिया गया है इसलिए मैं उन लोगों को बार बार नमन करती हूँ प्रणाम करती हूँ।

वैदिक मंगलाचरण :-

श्री रमानाथ शास्त्री (नेपाल)

वैष्णव धर्म इतना ऊंचा धर्म है मैं कह सकता हूँ जिसको हम सनातन धर्म कहते है उसी को ही वैष्णव धर्म कहा जाता है। जैसे विष्णु की उपासना करने वाले वैष्णव होते हैं वह सनातन धर्म के अंगीभूत और सनातन धर्म के वास्तविक रूप हैं। हमारी इस संस्कृति में तीन सनातन हैं। एक सनातन ईश्वर, एक सनातन वैष्णव धर्म, एक सनातन जीव। सनातन जीव सनातन वैष्णव धर्म के माध्यम से और सनातन ईश्वर को प्राप्त कर सकता है। वैष्णवता क्या है, वैष्णव का चिन्ह क्या है? किसको वैष्णव कहा जाता है, वैष्णव होने के बाद उसका महत्व क्या है और वह क्या कर सकता है शास्त्र में बता दिया गया है कि तुलसी के पौधे को आप सब लोग जानते हैं तुलसी का महत्व आप सब लोग जानते हैं। आयुर्वेदशास्त्र में सर्वत्र इसका प्रयोग होता है और यहां तक कि मरते समय तुलसी दल उसे दिया जाता है और तुलसी जैसा पवित्र पौधा इस संसार में कोई भी नहीं है तो तुलसी कण्ठी माला गले में जिनके हो वह वैष्णव है। वैष्णव सम्प्रदाय में हमारे यहां कहा गया है, कि **देवो भूत्वा देवं यजेत् नादेवो देवमर्चयेत्** ,, देवता

हो करके ही देवता की अराधना होती है हमको विष्णु की आराधना करनी होती है तो अपने स्वरूप को विष्णु का स्वरूप बनाया जाता है। तो हम अपने शरीर में भगवान् के जो चिन्ह हैं गोपीचन्दन से नित्य शंख चक्रधारण दक्षिण बाहु और बामबाहु में किया जाय। ललाट पटल पर उर्ध्वपुण्ड जिनका है इनको वैष्णव कहा जाता हैं। वैष्णव का महत्व क्या है,''ते **वैष्णवा भुवनमाशुपवित्रयन्ति**'' जहां जहां पर उनका पदार्पण होता है जहां जहां पर वे पहुंचते हैं वह भूमि कृष्णमयी हो जाती है भूमि को वे पवित्र करते हैं वैष्णव का महत्व यहां तक बताया गया है। इतना ही नहीं जिस कुल में भगवत् शरणागत सम्पन्न हो करके और वैष्णव नाम धारण कर लेता है उसके स्वर्ग में रहने वाले पितृ भी प्रसन्न होते हैं कि यह पितृ तर्पण करेगा तो भगवत् चरणामृत से करेगा उसको विश्वास बनता है हमको सदा सर्वदा भगवत् चरणामृत प्राप्त होगा इस युक्ति से स्वर्ग में रहने वाले हमारे पितृ लोग भी उस वैष्णव के पितृ भी वहां पर धन्य माने जाते हैं। इतना ही नहीं जिस धरा में जिस धरातल में जिस भूमि में वैष्णव का जन्म हुआ और ''**कुलं पवित्रं जननी कृतार्था**'' वो जननी धन्य है, वह माँ धन्य है, जिसने जन्म दिया, वह धरा धन्य है जिसमें उसका जन्म हुआ यह वैष्णवों का महत्व है।

आज वैष्णवता के सम्बन्ध में हमको एक बात समझना है। वैष्णव सभी लोग उपासना करते हैं। और भगवत् शरणागत होना दीक्षित होना, बहुत आवश्यक है इसमें एक बात बताया गया है कि वैष्णव होने के बाद वह भक्त यमदण्ड का भागी नहीं होगा। आप लोगों ने कथा सुनी है। बताया गया है कि यमराज जी कहते हैं किसी पापी को लेने के लिए जब दूत तैयार होते हैं उपस्थित होते हैं तो उनके कान में जाकरके यमराज बताते हैं देखो भाई तुमको कहां जाना है, कहां नहीं जाना है अभी तुमको यहां पर बता देते हैं सब सूची तुमको बता देते है- मैं उनका अधिकारी हूँ जो वैष्णव नहीं हैं और उन पापियों का मैं अधिकारी हूँ पर वैष्णव का अधिकारी नहीं हूँ तो तुम लोग उन वैष्णव के पास जिन्होंने तुलसी कण्ठी धारण कर रखी है, शंख चक्र बाहु में अंकित है, उर्द्धपुण्डतिलक है, द्वादश नाम से भगवत् नाम से द्वादश वैभव नाम से जिनका शरीर ओतप्रोत है चिह्नित है ऐसे वैष्णवों के पास तुम को नहीं जाना है। इससे ऐसा मालुम होता है कि ये गारन्टी है कि भगवत् शरणागत होने के बाद, वैष्णव होने के बाद, और यमराज की जो पंजिका है, रजिस्टर है उसका नाम उसमें न रहकर और बैकुण्ठ में जा करके अंकित हो जाता है और वह यमराज वैष्णव का अधिकारी नहीं होगा। यदि कोई वैष्णव किसी प्रकार की कोई गलती करता है तो दण्ड देने वाले भगवान् होते हैं और यमराज नहीं होते। यह वैष्णव धर्म की पहली विशेषता है। ये समझ लेना चाहिये हम वैष्णव धर्म का आश्रय लेने के बाद अब हम यमराज की पंजिका से अलग हो गये, यह आपको विश्वास कर लेना चाहिये यह वैष्णव धर्म का पहला महत्व है। दूसरी बात यह है कि आज विश्व में सर्वत्र अशांति है। अशांति का कारण है हिंसा। वैष्णव धर्म को अहिंसा धर्म कहा गया है। एक चींटी को भी मारना बहुत पाप कहा गया है। और यह मान्यता है कि वैष्णव सम्प्रदाय में, वैष्णव धर्म में दीक्षित होने के बाद किसी की हिंसा नहीं करनी चाहिये यह सब लोग जानते हैं। हम देखते हैं इसका उदाहरण है कि वैष्णव लोग मांस मछली आदि कुछ नहीं खाते हैं। होटलों में कहीं कहीं देखा जाता है **वैष्णव भोजनालय**। ये परम्परा से उनको मालुम है जो वैष्णव होते है वे हिंसा नहीं करते हैं। इस दृष्टि से यदि हम वैष्णव धर्म देखते हैं उस समय यदि वैष्णव धर्म हो, वैष्णवधर्म का आश्रय लेने वाले यदि हो, उन्हें और चींटी तक की हिंसा नहीं करनी चाहिये किसी तरह की हिंसा नही करनी चाहिये। हमारा

वेद भगवान् कहता है, **मां हिंस्यात् सर्वाणि भूतानि** वेद की आज्ञा है कि किसी जानवर की हिंसा नहीं करनी चाहिये। ऐसी स्थिति में जो कि सर्वसाधारण से लेकरके महान् विद्वान् और आचार्य तक भी जानते हैं वैष्णव धर्म का विश्व में प्रचार हो। आज इस परिप्रेक्ष्य है कि हिंसा के वातावरण में इसका अगर अमल किया जाय यहां भ्रान्ति नहीं, किसी प्रकार कोई छल नहीं यथार्थ की जहां बात होती है उसका नाम है वैष्णव धर्म। नरसी मेहता ने कहा **''वैष्णव जन तो तैंने कहिये जे पीर पराई जाने रे''** ये वैष्णव धर्म है। हमारी सहिष्णुता, हमारी उपासना, हमारे जीवन की सादगी और सात्विकता वैंष्णव धर्म है कुछ एक तो वैष्णव होने के बाद वैष्णव यमराज का अधिकारी नहीं होगा उसको नरक में नहीं जाना पड़ेगा इस बात को गाँठ मार दीजिये। वैष्णव होने के बाद अखाद्य खादन नहीं किया जाता है। आज यहां पर वैष्णव धर्म की जो चर्चा हो रही है आपने जानकर या अनजान में किसी भी प्रकार से यदि भगवान् का नाम लिया भागवत की कथा आप लोग सुनते हैं यदि कथा मात्र में ही आपका परिर्वतन न होता हो, उसका यदि महत्व समझते हैं एक लड़के के नाम के बहाने नारायण भगवान् का नाम लिया अजामिल ने और वहां पर तत्काल विष्णु के दूत आये। अगर हम भगवत् शरणागत हो करके उसी धर्म में आश्रित हो करके, आश्रय लें तो भगवान् अपना लेते हैं। इस हिंसा बाहुल्य संसार में वैष्णव धर्म का सर्वत्र प्रचार हो हिंसा का कोई प्रश्न न होगा।

महन्त श्रीहरिबल्लभदास जी महाराजः-

(किशनगढ़- रैनवाल)

वैष्णव धर्म बड़ा विशाल धर्म है। इस धर्म का हृदय के अन्दर प्रवेश होना बड़ा कठिन है। वैसे तो बाह्य चिन्हो का होना आवश्यक है और वही वैष्णव होता है जो गोपीचन्द से उर्द्धपुण्ड्र करता है। गले में तुलसी की युगलकण्ठी धारण करता है और अपने भुजाओं के ऊपर शंख चक्र को धारण करता है। ये हमारे बाह्य चिन्ह हैं, ऐसे वैष्णव के द्वारा यह धराधाम बड़ा पावन है।

हमारे भागवत में वैष्णवों का लक्षण आया है। वही वैष्णव और उत्तम भागवत होता हैं जो सब प्राणियों के अन्दर परमात्मा का दर्शन करता है और परमात्मा को सब प्राणियों के अन्दर देखता है वह वैष्णव होता है। वैष्णव के बड़े बड़े लक्षण है जीव मात्र के ऊपर दया हैं। जीव मात्र के ऊपर दया होना ही वैष्णवता है। ये दया बाह्य दिखाने वाली नहीं होती है, यह तो अन्तःकरण की प्रेरणा होती है और उस अन्तः करण की प्रेरणा से ही दया जाग्रत होती है। इस प्रकार **''वैष्णवानां प्रियं कर्म दया जीवेषु नारद। श्री गोविन्दे परा भक्तिः तदीयानां समर्चनम्''**। हमारे नारद जी महाराज ने वैष्णवों के लक्षण तीन मुख्य बतलाये हैं। इन सबके अन्दर यही बात बतलाई गई कि भाई सारे प्राणियों के अन्दर आप भगवान् का दर्शन करें। भागवत में तो यहां तक आया है- **''आश्वचाण्डालगोखरं''**। वैष्णव वह होता है जो कुत्ते बिल्ली और पतित जीवों के प्रति दया रखता हुआ और भगवत् भाव रखता हुआ जो उनको नमन करता है। वैष्णव तो वो है जो सर्वत्र भगवान् को देखता है। हम देखते हैं कि कैसे कैसे यहां आध्यात्मिक, आधि भौतिक आधि दैविक सन्तापों के द्वारा संतप्त है। हम देखते हैं कि अविद्या, अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश आदि पंच क्लेशों से क्लेशित है, हमारा मन द्रवित होता है वैष्णव का मन द्रवित होता है कि हे प्रभु ये कौन से ऐसे कर्म करके आये हैं जो इस प्रकार इन विविध क्लेशों में विविध तापों से संतप्त हो रहे हैं। वे उस जीव से सम्पर्क करते हैं उसको अपने आश्रय में लेते हैं और उसे भगवत् मंत्र दे करके और ज्ञान उपदेश करते हैं। भैया तुम इसका जप करों, तुम्हारा पाप और तुम्हारा दुःख सब निवृत्त हो जायेगा। इस प्रकार अपने सारे

जीवों के ऊपर दया करना है। संतों को जो भगवान् के भक्त हैं उनको भगवान् से भी ज्यादा समझना। भगवान् हमेशा यह कहते हैं कि ये संत मेरे रूप हैं। ये सन्त हमारी ही आत्मा है चाहे वह कोई भी वैष्णव हो। चुंकि सम्प्रदाय हमारे सद् सम्प्रदाय हैं और सद्सम्प्रदायों के माध्यम से हम सबको एक उद्बोधन। भगवान कृष्ण की आराधना का होता है, भगवान श्री राधाकृष्ण की आराधना का होता है, श्री लक्ष्मी नारायण की आराधना की प्रेरणा होती है। और भाई श्री सीताराम जी की आराधना की प्रेरणा होती है। कोई भी इन देवों के अन्दर अन्तर नहीं है। जो अन्तर समझने वाला व्यक्ति है वह महान् पतित है। ऐसी भावना रख करके वैष्णव को वैष्णवता का ध्यान करना चाहिये। वैष्णव को वैष्णवता का प्रचार प्रसार करना चाहिये और वही वैष्णव होता है जो बाह्य चिन्हों और अन्तः चिन्हों से संयुक्त होता है। वैष्णवों के लिए। यह वैष्णव अपभ्रन्श शब्द का अर्थ होता है बीस और नव, वैष्णव, बीस और नव का अर्थ जो है वह वैष्णव है जो हमारे यहां क्या है। चौबीस एकादशियां है उनका निराहार रूप से व्रत करता है अथवा फलहार आदि से व्रत करता है भगवान् सर्वेश्वर को जगदीश्वर को जगन्नाथ को प्रिय होता है और जैसी एकादशी तिथि भगवान् को प्रिय हैं वैसी और कोई तिथि प्रिय नहीं है। एकादशी का व्रत करने से भगवान् प्रसन्न होते हैं। इस प्रकार बीस और नव की संख्यापूर्ति हमारे यहां इस प्रकार करते है कि यह चौबीस तो एकादशी का व्रत करो और इसी प्रकार राम कृष्ण नृसिंह और वामन की चार जयन्तियों व्रत करो तो इस प्रकार आठ हो जाती हैं और एक शिवरात्रि के अन्दर, क्योंकि भगवान् शंकर वैष्णवों के अन्दर अग्रगण्य हैं। इसलिए उनके महत्व को बढ़ाने के लिए भी और हमारे ग्रन्थकारों ने उन्तीस की पूर्ति शिवरात्रि के व्रत के माध्यय से की है। इस प्रकार यह वैष्णवधर्म है और वैष्णव धर्म का जीव मात्र, मानवमात्र को जो पालन करना है और अपने आप का उद्धार करना है। भगवान् की आराधना के बिना इस मानव जीव का किसी भी प्रकार कल्याण नहीं होगा।

वह वैष्णवों के अन्दर अग्रगण्य होता है जो इस प्रकार की तीनों लोक की सम्पत्ति भी पास में होने पर **''त्रिभुवन विभव हेतवेऽप्य कुण्ठस्मृतिः''** जो एक क्षण के लिए भी भगवान् के चरणारविन्द को नहीं भूलता है वह व्यक्ति वैष्णवांग्रगण्य होता है, वैष्णवों में उत्तम होता है आज इस संसार के अन्दर इस सृष्टि क्रम के अन्दर ब्रह्मा और शंकर से बढ़कर के कोई नहीं है परन्तु जिन चरणारविन्द का ध्यान, जिन चरणारविन्द का मनन, जिन चरणारविन्द का सतत अन्वेषण ब्रह्मा जी करते हैं जिन चरणारविन्द का अन्वेषण सदा सर्वदा शंकर जी करते हैं ऐसे भगवान् के चरणारविन्द के स्मरण करने में जो व्यक्ति और मानव जो धनवान और जो ऐश्वर्यवान हैं वह उनको नहीं भूलता है। ऐसा जो भगवान् का सतत चिन्तन करने वाला व्यक्ति है, वह व्यक्ति चाहे कोई भी हो कैसा भी हो वह परम वैष्णव है। वह चाहे किसी भी वर्ण के अन्दर वह जन्मा हुआ हो परन्तु वह वैष्णव है। ऐसे वैष्णवों के लिए हम सतत प्रणाम करते हैं।

आचार्य श्रीखेमराज केशवशरण शास्त्री

नेपाल

वैष्णवता बहुत बड़ा मर्म भरा और बड़ा सार वाला शब्द है। मैं तो जो अनुभव करता हूँ उसके अनुसार सनातन वैदिक, वैदिक सनातन धर्म का नवनीत है। वैष्णव धर्म केन्द्र बिन्दु है। वैष्णवधर्म, मैंने जैसे विश्लेषण करके देखा हैअब तक की साधना में- वैष्णव धर्म में, वैष्णव धर्मके प्रतीक हमारे जो प्रधान देवता है सबकी कृपा झुकी हुई नजर आती है। हमारे जो प्रधान पंच देव हैं जगद्गुरु शंकराचार्य जी की परिपाटी में स्थापित हुये। उन सभी प्रधान देवताओं का आशीर्वाद उनकी मंगल

कामना उनकी स्वेच्छा वैष्णव धर्म के प्रति झुकी हुई है। आप देखें हम सबसे पहले गणाधिपति के रूप में गणेश जी की पूजा करते हैं विघ्नहर्ता के रूप में। गणेश जी कौन है ? उनके परिचय के बारे में ब्रह्म वैवर्तपुराण में बड़ा सुन्दर प्रसंग आता है, गणेश जी कौन ? माता पार्वती के पुत्र की बड़ी इच्छा थी बहुत दिनों तक, नहीं प्राप्त हो रहे थे उनको पुत्र उन्होंने राधाकृष्ण भगवान् की लम्बी आराधना की और प्रभु कृष्ण प्रसन्न हो करके आये और कहा मां आपका पुत्र मैं स्वयं बन जाऊंगा, आप चिन्ता न करें तो भगवान् कृष्ण ही गणेश जी के रूप में अवतीर्ण हुये यह प्रसंग ब्रह्मवैवर्त पुराण में है। भागवत अष्टादश सहस्त्र संख्या अठारह हजार श्लोक वाला है, ऐसे ही ब्रह्मवैवर्तपुराण है महापुराण है और उसमें ऐसा प्रसंग आता है। गणेश भगवन् कौन हुये, कृष्ण के ही प्रतिरूप हुये, प्रभुकृष्ण के ही अवतार हुये प्रतिमूर्ति हुये। अब माता जगदम्बा की तरफ हम देखें, वह तो वैष्णव देवी है। हम जब दुर्गासप्तशती का अध्ययन करते हैं ग्यारहवें अध्याय में जागकर देवताओं ने बड़ी सुन्दर प्रार्थनायें की माता की। माता! संसार में तरह तरह की कामना रखने वाले साधक, आपके यहां आते हैं और प्रकार की सांसारिक वस्तुओं को मांगते हुये कोई साधक आता है आपके सामने तो, भद्रकाली, दक्षिणकाली, आदि विविध रूपों को लेकरके आप उन वरदानों को पूरा करती हो। लेकिन जिस दिन जीवात्मा आपके चरणों के सामने मुक्ति की कामना लेकर के आता है उस समय आपका यह वैष्णव शक्ति का रूप ही भक्तिदायी बनता है, हमने यह सब अनुभव किया। तो परमविद्या स्वरूपिणीं माता जगदम्बा वैष्णवी देवी का जो जम्बू में अवस्थित है। जहां हिंसा की बलिदान की तो कोई सपने में भी कल्पना नहीं कर सकता है, जहां सारे रास्ते भर भोज्य पदार्थ भी सात्विक बनते हैं यहां तक कि प्याज लहसुन तक दुकानों में नहीं चलता। इतनी पवित्रता से विराजमान जो वैष्णवी देवी है उस वैष्णवी देवी की प्रतिष्ठा के साथ ही जगद्गुरू श्री निम्बार्काचार्य भगवान् की साधना जुड़ी हुई है यह सब इतिहास जानते हैं आप लोग जगद्गुरु श्रीहरिव्यास देवाचार्य जी महाराज से जुड़ी हुई कथा है।

अब भगवान् शंकर की ओर आप देखें वे तो वैष्णवों के गुरु हैं गोस्वामी तुलसीदास जी ने भगवान् शंकर की गुरु मान दे करके वन्दना की है। और हम सभी जगह देखते हैं, भगवान् श्रीराम की गाथा किसने अवतरित की, माता पार्वती सुनने वालीं और प्रभु शंकर गाने वाले, ''मंगल भवन अमंगलहारी, उमा सहित जेहि जपत पुरारी'' भगवान् श्रीराम की अनन्त गाथा, अनन्त महिमा, भगवान् सदाशिव शंकर सदा गाते रहते हैं। वैष्णवों के परम वन्दनींय गुरु हैं और स्मरण हो आया, हम भगवान् शंकर जहां सारे राष्ट्र के देवता बनकर विराज मान हैं, उस राष्ट्र से नेपाल से हम आये है और इन दिनों वहां भी हम अपनी लगन, अपनी श्रद्धा, अपनी सेवा, वैष्णव धर्म के विकास की दृष्टि से लगा रहे हैं और भगवान् की कृपा से, श्री श्रीजी महाराज के कृपा प्रसाद से वैष्णवता का विकास वहां भी क्रमशः होता जा रहा है और अभी का जो हमारा रोजाना क्रम रहा उससे पता चला है कि तीन लाख के आस पास निम्बार्क वैष्णव साधना के साधक नेपाल में अभी पनपे हुये हैं। जगद्गुरु भगवान् विश्वगुरु भगवान् सदाशिव शंकर, वैष्णव जगत के परम वन्दनीयं आचार्य हैं। **वैष्णवानां यथा शम्भु** कहा गया है। भागवत के आखिरी अध्याय में, अन्तिम चरण में, इस प्रकार से हम देखते हैं। ऐसे ही नारायण हैं स्वयं विष्णु हैं वैष्णवता के परम सूत्र है वे तो हैं ही। तो समस्त पंच देवताओं का रूझान, उनकी कृपा उनका आशीर्वाद सदा सदा वैष्णवता से जुड़ा हुआ है हमको तो यह अनुभव होता है । इसलिए हम समझते हैं वैदिक सनातन धर्म का निचोड़ वैदि सनातन धर्म का नवनीत, वैदिक सनातन धर्म का समन्वय स्थल वैष्णवता

जीवों के ऊपर दया करना है। संतों को जो भगवान् के भक्त हैं उनको भगवान् से भी ज्यादा समझना। भगवान् हमेशा यह कहते हैं कि ये संत मेरे रूप हैं। ये सन्त हमारी ही आत्मा है चाहे वह कोई भी वैष्णव हो। चुंकि सम्प्रदाय हमारे सद् सम्प्रदाय हैं और सद्सम्प्रदायों के माध्यम से हम सबको एक उद्बोधन। भगवान कृष्ण की आराधना का होता है, भगवान श्री राधाकृष्ण की आराधना का होता है, श्री लक्ष्मी नारायण की आराधना की प्रेरणा होती है। और भाई श्री सीताराम जी की आराधना की प्रेरणा होती है। कोई भी इन देवों के अन्दर अन्तर नहीं है। जो अन्तर समझने वाला व्यक्ति है वह महान् पतित है। ऐसी भावना रख करके वैष्णव को वैष्णवता का ध्यान करना चाहिये। वैष्णव को वैष्णवता का प्रचार प्रसार करना चाहिये और वही वैष्णव होता है जो बाह्य चिन्हों और अन्तः चिन्हों से संयुक्त होता है। वैष्णवों के लिए। यह वैष्णव अपभ्रन्श शब्द का अर्थ होता है बीस और नव, वैष्णव, बीस और नव का अर्थ जो है वह वैष्णव है जो हमारे यहां क्या है। चौबीस एकादशियां है उनका निराहार रूप से व्रत करता है अथवा फलहार आदि से व्रत करता है भगवान् सर्वेश्वर को जगदीश्वर को जगन्नाथ को प्रिय होता है और जैसी एकादशी तिथि भगवान् को प्रिय हैं वैसी और कोई तिथि प्रिय नहीं है। एकादशी का व्रत करने से भगवान् प्रसन्न होते हैं। इस प्रकार बीस और नव की संख्यापूर्ति हमारे यहां इस प्रकार करते है कि यह चौबीस तो एकादशी का व्रत करो और इसी प्रकार राम कृष्ण नृसिंह और वामन की चार जयन्तियों व्रत करो तो इस प्रकार आठ हो जाती हैं और एक शिवरात्रि के अन्दर, क्योंकि भगवान् शंकर वैष्णवों के अन्दर अग्रगण्य हैं। इसलिए उनके महत्व को बढ़ाने के लिए भी और हमारे ग्रन्थकारों ने उन्तीस की पूर्ति शिवरात्रि के व्रत के माध्यय से की है। इस प्रकार यह वैष्णवधर्म है और वैष्णव धर्म का जीव मात्र, मानवमात्र को जो पालन करना है और अपने आप का उद्धार करना है। भगवान् की आराधना के बिना इस मानव जीव का किसी भी प्रकार कल्याण नहीं होगा।

वह वैष्णवों के अन्दर अग्रगण्य होता है जो इस प्रकार की तीनों लोक की सम्पत्ति भी पास में होने पर **''त्रिभुवन विभव हेतवेऽप्य कुण्ठस्मृतिः''** जो एक क्षण के लिए भी भगवान् के चरणारविन्द को नहीं भूलता है वह व्यक्ति वैष्णवांग्रगण्य होता है, वैष्णवों में उत्तम होता है आज इस संसार के अन्दर इस सृष्टि क्रम के अन्दर ब्रह्मा और शंकर से बढ़कर के कोई नहीं है परन्तु जिन चरणारविन्द का ध्यान, जिन चरणारविन्द का मनन, जिन चरणारविन्द का सतत अन्वेषण ब्रह्मा जी करते हैं जिन चरणारविन्द का अन्वेषण सदा सर्वदा शंकर जी करते हैं ऐसे भगवान् के चरणारविन्द के स्मरण करने में जो व्यक्ति और मानव जो धनवान और जो ऐश्वर्यवान हैं वह उनको नहीं भूलता है। ऐसा जो भगवान् का सतत चिन्तन करने वाला व्यक्ति है, वह व्यक्ति चाहे कोई भी हो कैसा भी हो वह परम वैष्णव है। वह चाहे किसी भी वर्ण के अन्दर वह जन्मा हुआ हो परन्तु वह वैष्णव है। ऐसे वैष्णवों के लिए हम सतत प्रणाम करते हैं।

आचार्य श्रीखेमराज केशवशरण शास्त्री

नेपाल

वैष्णवता बहुत बड़ा मर्म भरा और बड़ा सार वाला शब्द है। मैं तो जो अनुभव करता हूँ उसके अनुसार सनातन वैदिक, वैदिक सनातन धर्म का नवनीत है। वैष्णव धर्म केन्द्र बिन्दु है। वैष्णवधर्म, मैंने जैसे विश्लेषण करके देखा हैअब तक की साधना में- वैष्णव धर्म में, वैष्णव धर्मके प्रतीक हमारे जो प्रधान देवता है सबकी कृपा झुकी हुई नजर आती है। हमारे जो प्रधान पंच देव हैं जगद्गुरु शंकराचार्य जी की परिपाटी में स्थापित हुये। उन सभी प्रधान देवताओं का आशीर्वाद उनकी मंगल

कामना उनकी स्वेच्छा वैष्णव धर्म के प्रति झुकी हुई है। आप देखें हम सबसे पहले गणाधिपति के रूप में गणेश जी की पूजा करते हैं विघ्नहर्ता के रूप में। गणेश जी कौन है? उनके परिचय के बारे में ब्रह्म वैवर्तपुराण में बड़ा सुन्दर प्रसंग आता है, गणेश जी कौन? माता पार्वती के पुत्र की बड़ी इच्छा थी बहुत दिनों तक, नहीं प्राप्त हो रहे थे उनको पुत्र उन्होंने राधाकृष्ण भगवान् की लम्बी आराधना की और प्रभु कृष्ण प्रसन्न हो करके आये और कहा मां आपका पुत्र मैं स्वयं बन जाऊंगा, आप चिन्ता न करें तो भगवान् कृष्ण ही गणेश जी के रूप में अवतीर्ण हुये यह प्रसंग ब्रह्मवैवर्त पुराण में है। भागवत अष्टादश सहस्त्र संख्या अठारह हजार श्लोक वाला है, ऐसे ही ब्रह्मवैवर्तपुराण है महापुराण है और उसमें ऐसा प्रसंग आता है। गणेश भगवन् कौन हुये, कृष्ण के ही प्रतिरूप हुये, प्रभुकृष्ण के ही अवतार हुये प्रतिमूर्ति हुये। अब माता जगदम्बा की तरफ हम देखें, वह तो वैष्णव देवी है। हम जब दुर्गासप्तशती का अध्ययन करते हैं ग्यारहवें अध्याय में जागकर देवताओं ने बड़ी सुन्दर प्रार्थनायें की माता की। माता! संसार में तरह तरह की कामना रखने वाले साधक,आपके यहां आते हैं और प्रकार की सांसारिक वस्तुओं को मांगते हुये कोई साधक आता है आपके सामने तो, भद्रकाली, दक्षिणकाली, आदि विविध रूपों को लेकरके आप उन वरदानों को पूरा करती हो। लेकिन जिस दिन जीवात्मा आपके चरणों के सामने मुक्ति की कामना लेकर के आता है उस समय आपका यह वैष्णव शक्ति का रूप ही भक्तिदायी बनता है, हमने यह सब अनुभव किया। तो परमविद्या स्वरूपिणीं माता जगदम्बा वैष्णवी देवी का जो जम्बू में अवस्थित है। जहां हिंसा की बलिदान की तो कोई सपने में भी कल्पना नहीं कर सकता है, जहां सारे रास्ते भर भोज्य पदार्थ भी सात्विक बनते हैं यहां तक कि प्याज लहसुन तक दुकानों में नहीं चलता। इतनी पवित्रता से विराजमान जो वैष्णवी देवी है उस वैष्णवी देवी की प्रतिष्ठा के साथ ही जगद्गुरू श्री निम्बार्काचार्य भगवान् की साधना जुड़ी हुई है यह सब इतिहास जानते हैं आप लोग जगद्गुरु श्रीहरिव्यास देवाचार्य जी महाराज से जुड़ी हुई कथा है।

अब भगवान् शंकर की ओर आप देखें वे तो वैष्णवों के गुरु हैं गोस्वामी तुलसीदास जी ने भगवान् शंकर की गुरु मान दे करके वन्दना की है। और हम सभी जगह देखते हैं, भगवान् श्रीराम की गाथा किसने अवतरित की, माता पार्वती सुनने वालीं और प्रभु शंकर गाने वाले, ''मंगल भवन अमंगलहारी, उमा सहित जेहि जपत पुरारी'' भगवान् श्रीराम की अनन्त गाथा, अनन्त महिमा, भगवान् सदाशिव शंकर सदा गाते रहते हैं। वैष्णवों के परम वन्दनींय गुरु हैं और स्मरण हो आया, हम भगवान् शंकर जहां सारे राष्ट्र के देवता बनकर विराज मान हैं, उस राष्ट्र से नेपाल से हम आये है और इन दिनों वहां भी हम अपनी लगन, अपनी श्रद्धा, अपनी सेवा, वैष्णव धर्म के विकास की दृष्टि से लगा रहे हैं और भगवान् की कृपा से, श्री श्रीजी महाराज के कृपा प्रसाद से वैष्णवता का विकास वहां भी क्रमशः होता जा रहा है और अभी का जो हमारा रोजाना क्रम रहा उससे पता चला है कि तीन लाख के आस पास निम्बार्क वैष्णव साधना के साधक नेपाल में अभी पनपे हुये हैं। जगद्गुरु भगवान् विश्वगुरु भगवान् सदाशिव शंकर, वैष्णव जगत के परम वन्दनीयं आचार्य हैं। **वैष्णवानां यथा शम्भु** कहा गया है। भागवत के आखिरी अध्याय में, अन्तिम चरण में, इस प्रकार से हम देखते हैं। ऐसे ही नारायण हैं स्वयं विष्णु हैं वैष्णवता के परम सूत्र है वे तो हैं ही। तो समस्त पंच देवताओं का रूझान, उनकी कृपा उनका आशीर्वाद सदा सदा वैष्णवता से जुड़ा हुआ है हमको तो यह अनुभव होता है । इसलिए हम समझते हैं वैदिक सनातन धर्म का निचोड़ वैदि सनातन धर्म का नवनीत, वैदिक सनातन धर्म का समन्वय स्थल वैष्णवता

है ऐसा मुझे अनुभव होता है। और हम सनातन धर्म सनातन धर्म बोलते तो हैं, पर सनातन धर्म के मूल सूत्र क्या हैं इन पर हमें ध्यान देना है। साधनाओं के बीच में भक्ति साधना सनातन धर्म का सार है क्योंकि-

ईशावास्यमिदँ सर्वं यत्किँच जगत्यांजगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥

वेद के पावन मंत्रों ने भक्ति पर ही जोर दिया। उन प्रभु को याद करके ही संसार की किसी वस्तु को भोगा करो, यह प्रेरणा मूलतः वेद में ही है और सनातन क्यूँ नाम पड़ा। हम लन्दन में प्रवचन दे रहे थे विश्व हिन्दू परिषद के अन्दर में एक जवान ने उठ करके पूछा, महाराज आप ''**सनातन सनातन**'' बोलते रहते हैं ''**व्हाट इज सनातन धर्मः**'' विश्व में इतने सारे धर्म हैं- अनगिनत हैं किसी का नाम सनातन धर्म नहीं पड़ा, इसी धर्म का क्यों सनातन कहा जाता है इसका क्या कारण है ? हमने निवेदन किया देखिये सबसे पहला कारण तो यह हैं कि इस धर्म का संस्थापक कोई व्यक्ति विशेष नहीं है, कोई सिंगल पर्सन नहीं है, कोई पैगम्बर नहीं है, कोई अवतार नहीं है, कोई ऋषि विशेष से जुड़ा हुआ नहीं है इस वैदिक सनातन धर्म के संस्थापक के रूप में यहां तक कि भगवान श्रीराम श्रीकृष्ण पधारे वह भी कहते हैं मैं तो संरक्षण के लिए आता हूँ ''**यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत** '' इस स्थिति में हम धर्म संस्थापनार्थ **सम्भवामि युगे युगे** प्रभु स्वयं कहते हैं तो वो भी रक्षक की भूमिका निभाते हैं। कोई एक व्यक्ति विशेष नहीं और कब स्थापना हुयी, उसका कोई दिनांक नहीं और इस धर्म की कितनी आयु हुई यह भी आंकलन से परे है। यही पहला कारण है जिससे इसका नाम सनातन धर्म पड़ा। और दूसरा कारण है कि इस महान धर्म ने सिखाया है कि प्रभु के भक्त बनकर जीवों, भगवान् के आराधक, उपासक बनकर जीओ, सनातन है भगवान ? सनातन आज हैं कल नहीं ऐसा नहीं कोई पूछ सकता है, कहां लिखा है भगवान को सनातन कहते है। आप अर्जुन का स्तुति वन्दन वाला वह प्रसंग पढ़िये ग्यारहवें अध्याय में गीता मेंअर्जुन कहते हैं- ''**सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे**'' तो प्रभु सनातन की आराधना सीखाते है इसलिए इसका नाम सनातन धर्म पड़ा, ये दूसरा करण है। और तीसरा करण है इस महान धर्म ने विश्व में अग्रज बन करके, अग्र गुरु बनकर के यह सीखाया है कि तुम मेरे अंश के हैसीयत से विनाशी नहीं हो, अविनाशी हो, सनातन हो, तुम आत्मा हो, और आत्मा सनातन है। स्पष्ट रूप में भगवान ने आत्मा को सनातन बताया है गीता में। इसलिए सनातन आत्मा को बताने वाला धर्म होने के नाते इसका नाम सनातन धर्म है यह तीसरा कारण है। और चौथा कारण है कि भगवान् सनातन हम सनातन, और हम दोनों के बीच का जो सम्बन्ध है यह महान धर्म, उसको भी सनातन बताया इसलिए इसका नाम सनातन धर्म है। यह चौथा कारण है। और पाँचवा मेरे चिन्तन में अन्तिम कारण है कि वेद भगवान् की वाणी सनातन, प्रभु सनातन, प्रभु सनातन की वाणी सनातन वह सनातन, वेद वाणी से उदय हो करके इसका विकास हुआ है इसलिए उद्भव व विकास भी सनातन इसलिए इस महान धर्म का नाम सनातन धर्म पड़ा है। ये सारी बातें, ये सारी साधनाओं का केन्द्र बिन्दु भक्ति महारानी बल देती है और उन्हीं की गोद में, उन्हीं के प्रबल आश्रय में, प्रश्रय में, बढ़कर, पलकर साधक भगवान् तक पहुंचता है इसलिए वैष्णवता से जुड़ा हुआ हमारा समस्त वैदिक सनातन धर्म परिवार सनातन। एक जगह पूछा भी कि आप क्यों समस्त वैष्णव जनों की कहते हैं। हमारे यहां तो और भी बहुत सी सम्प्रदाय हैं तो मैने वही निवेदन किया। आप देखिये न भगवान गणेशजी को देखिये, भगवती माता को देखिये, भगवान् सदाशिवशंकर को देखिये, सूर्यनारायण को देखिये, और स्वयं प्रभु

नारायण को देखिये। हमारा वैदिक सनातन धर्म परिवार क्या हैं। समष्टि रूप में समस्त वैष्णव जगत् है। सात्विकता आस्था बस यही है वैष्णवता। पद्म पुराण में आता है दूसरे का धन हो, दूसरे की सम्पत्ति हो, कहीं गिरी हुई मिले कहीं पड़ी हुई मिले लेकिन वैष्णव कभी भी अपनी दृष्टि उधर नहीं बहकायेगा अपनी समझ से हड़पेगा नहीं, वह किसी का हो उसका पता लगाके वह उसे दिला देगा। यह सौमनस्यपूर्ण व्यवहार औरों के प्रति सद्भावना का यह व्यवहार, सबके प्रति करुणा, सौहार्द, यह गीता के सारे लक्षण वैष्णव के लक्षण हैं।

द्वारिकापीठाधीश्वर एवं ज्योतिष पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य श्री स्वरूपानंद जी महाराज के प्रतिनिधि

महामहोपाध्याय प्रो. पं.जयप्रकाश नारायण द्विवेदी

अनन्त श्री विभूषित ज्योतिषपीठाधीश्वर एवं द्वारिकाशारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य जी का पावन संदेश:-

सनातन धर्म क्या है इसकी परिभाषा है ''सना:'' यानि सदा ''तन'' माने रहने वाला जो ''सदा रहे'' उसे ''सनातन'' कहते हैं। सदा भव: सनातन:। यदि हम इसको विस्तार से समझना चाहें तो इस प्रकार से समझ सकते है, सनातन परमात्मा ने सनातन जीवों के लिये उनके सनातन अभ्युदय नि:श्रेयस के हेतु सनातन वेद शास्त्रों द्वारा जो प्रवृत्ति, निवृत्ति का मार्ग बताया है उसको ''सनातन धर्म'' कहते हैं। सनातन धर्म में चार चार वर्ण व आश्रम है। क्रमश: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, और संन्यास। सनातन धर्म के चौदह आधार स्तम्भ हैं। अट्ठारह पुराण न्याय वैशैषिक पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांसा धर्मशास्त्र, अट्ठारह स्मृतियां, वेदो के छ: अंग, शिक्षा, कल्प, निरूक्त, ज्योतिष, छन्द, व्याकरण तथा चार वेद, (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथवेद) यह सब मिलकर चौदह होते हैं जिनसे धर्म का ज्ञान होता है। सृष्टि के प्रारम्भ में जब से मानव का जन्म हुआ तब से वेदों पुराणों, स्मृतियों, रामायण, महाभारत आदि के द्वारा जन समूह ने ऋषि मुनियों के उपदेश से धर्म को जाना। इस प्रकार तभी से जन समाज धर्म का पालन करता आ रहा है। धर्म के द्वारा समाज में सुव्यवस्था होती है, जनता धर्म का निर्बाध रूप से पालन कर सके इसकी व्यवस्था राज्य करते थे। आज भी राम राज्य को भारत के लोग आदर्श राज्य मानते हैं।

''सबनर करहिं परस्पर प्रीति, चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति।''
''वैर न कर काहू सम कोई राम प्रताप विषमता खोई''॥

हमारे शास्त्रों में चार युगों का वर्णन है, सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर तथा कलियुग। इन चारो युगों के मनुष्यों की परिस्थिति के अनुकूल शास्त्रों में धर्म के स्वरूप का निर्णय किया गया है। कुछ आधुनिक लोगों का कथन है कि आज की परिस्थितियों में स्मृतियों का नवनिर्माण किया जाना चाहिये क्यों कि स्मृतियां प्राचीन युग के अनुरूप थी आज के युग के अनुकूल नहीं है, अत: उनमें परिवर्तन जरूरी है। किन्तु उस पर प्रश्न यह है, कि जब श्रुति में परिवर्तन नहीं हो सकता तो स्मृति में परिर्वतन कैसे हो सकता है क्यों कि स्मृतियां श्रुति की अनुगामिनी होती है। हमारे विचार से स्मृतियों में प्रत्येक युग की व्यवस्था पहले से ही है आवश्यकता उसके क्रियान्वयन की है। सनातन धर्म में जन्मना वर्ण व्यवस्था मान्य है **''चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्म विभागश:''** यहां भगवान् श्री कृष्ण ने कहा है कि गुणकर्म के विभागानुसार मुझे ईश्वर ने चातुर्वर्णों की सृष्टि की। इसका अर्थ है कि जिस प्राणी के जैसे गुणकर्म होते हैं उसके अनुसार भगवान् जन्म देते हैं। आज की परिस्थिति में धार्मिक राज्य समाप्त हो गये है। आधुनिक शिक्षा और प्रचार के साधन टी.वी., रेडियो, सिनेमा, पत्रपत्रिकायें और भौतिक वाद, नेताओं के भाषण, ग्रन्थ और

पत्रपत्रिकायें धर्म के विरूद्ध लगातार अभियान छेडे हुये हैं। वैदिक संस्कारों के लुप्त होने समान स्थिति आ गई है। शिखा यज्ञोपवीत का बहु संख्यक लोगों ने त्याग तक कर दिया है। खान-पान बिगड़ता जा रहा हैऔर लोग मनमान करते आ रहे हैं भारत के लोगों का धर्मान्तरित करने के लिए विदेशों से अरबों रूपये आ रहे हैं। जिनका संगठित रूप से विदेशी मिशनारियां हरिजनों, गरीब जनों में जाकर उपयोग करते हुये उनको सनातन धर्म का त्याग करने के लिए विवश कर रही हैं। मठ मन्दिरों की व्यवस्था उतनी सुदृढ़ नहीं है और न ही इतनी सम्पत्ति है कि उनका हम सामना कर सकें। इसके अतिरिक्त हमारा सनातन धर्म ही, वैदिक समुदाय भी अनेक सम्प्रदायों में बंटा हुआ है। फिर भी सौभाग्य से वेदों शास्त्रों को प्रामाण्य मानने वाले प्राचीन सम्प्रदायों में एकता के सूत्र विद्यमान हैं किन्तु अब नये नये पन्थ जन्म ले रहे हैं जो अपना जाल फैलाते हुये समाज को आचारहीन बना कर भीतर से धर्म को खोखला बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में आवश्यक है कि वैदिक धर्म के अनुयायी समस्त सम्प्रदाओं के धर्माचार्य मिल बैठकर सनातन धर्म के हित के लिए मार्ग खोजें। जिन समुदायों में वर्णाश्रम व्यवस्था सुदृढ़ है उनकी रक्षा के लिए संस्कृत के माध्यम से वेदों शास्त्रों का अध्ययन अध्यापन चालू रखा जाय। किन्तु जो सम्प्रदाय लुप्तः प्रायः हो रहा है उनमें नाम संकीर्तन और भगवद्भक्ति का प्रचार किया जाय। सदाचार पूर्व भगवन्नामसंकीर्तन, भगवद्भक्ति, भगवत् तत्व विज्ञान, योग और आयुर्वेद के प्रचार प्रसार द्वारा जनसमुदाय को सनातन धर्म की परिधि से बाहर न होने दिया जाय। सनातन धर्म में सामान्य धर्म और विशेष धर्म रूप से दो भाग किये गये है सामान्य धर्म ही मानव धर्म है। मनु के द्वारा उल्लिखित क्षमा इत्यादि श्रीमद्भागवत और श्रीमद्भागवत के सातवें स्कन्ध में वर्णित तीस धर्म सामान्य धर्मकी कोटि में आते हैं। इनका सब हम लोग सम्मिलित होकर प्रचार करें, सनातन धर्म का एक पृथक मंच बने, जिसमें सभी सम्प्रदायों के आचार्यों को एक मंच पर बैठाकर तात्कालिक परिस्थितियों पर निर्णय लिया जा सके। ईसाई, मुसलमान, जैन, बौद्ध आदि अवैदिक समुदायों के अपने अपने मंच हैं और हमे पंचायती बनाया जा रहा है जिससे सावधान होने की जरूरत है। धर्म की इस विषम परिस्थिति में निम्बार्काचार्य अनन्त श्री विभूषित श्री श्रीजी महाराज ने जो सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन किया है उसकी सफलता की शुभकामना और सन्देश के साथ हम अपने प्रतिनिधि के रूप में अपने प्रिय शिष्य महामहोपाध्याय डाक्टर जय प्रकाश नारायण द्विवेदी,को भेज रहे है। अनन्त श्री विभूषित स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी शारदापीठ तथा ज्योतिष्पीठाधीश्वर बद्रिकाश्रम।

महामण्डलेश्वर स्वामी श्री मंगलानंद जी महाराज

– अध्यक्ष भारत साधु समाज

परमपिता परमात्मा की असीम कृपा और दया से **''सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्''**, जरूरी है सत्संग के द्वारा ही जीवन में परिवर्तन होता है यहां पर जो सत्संग की गंगा बह रही है यह निम्बार्क नगर, निम्बार्क तीर्थ या सलेमाबाद में आज वास्तव में यहां त्रिवेणी संगम में सभी लोग डूबकी लगा रहे। जहां ये संत जाते हैं वहां यह तीर्थ बन जाता है और यह चलते फिरते तीर्थ में हमें सत्संग रूपी उस गंगा, यमुना, सरस्वती में गोता लगाने का अवसर प्राप्त होता है। आप लोग बहुत महाराज जी के कृपापात्र हैं जिनके प्रभाव के द्वारा जिनके स्वभाव के द्वारा, हम कहां कहां से, देश के कौने कौने से, इस निम्बार्क तीर्थ में, पुष्कर क्षेत्र में सलेमाबाद में आकर और यह विराट् सम्मेलन हो रहा है। आज एक दिन शेष रह गया है यहां विराट् समुदाय भक्त लोग जिज्ञासु स्वरूप में आये हुये हैं। नित्य नया सत्संग और

नित्य नये प्रसंग यहां पर बड़े बड़े सम्मेलन हो रहे हैं। किसी दिन वैदिक सम्मलेन, किसी दिन दार्शनिक सम्मलेन, गोरक्षा सम्मेलन यह विराट् सनातन धर्म अर्न्तगत के सभी सम्मेलन सनातन धर्म से जुड़े हुये सभी लोगों के लिए यह सम्मेलन यह अपने को सुलभ हो सका यह महाराज श्री की कृपा है।

वह परमात्मा हम सबको सद्बुद्धि दे हमारी एकता बनीं रहे यह जरूरी है। भगवान कृष्ण कहेते हैं **''स्वधर्मे निधनंश्रेयः परधर्मो भयावहः''** अपने धर्म में रहते हुये अपने मर्यादा का पालन करते हुये अपने दायित्व का पालन करते हुये अपने कर्म मार्ग से चलते हुये, उस भक्ति उपासना करते हुये अपनी धर्म निष्ठा पर अविचल रहे व अन्त में परमात्मा की प्राप्ति करना यह हमारा मानव मात्र का लक्ष्य है। जीवन में गृहस्थ होकर, गृहस्थ में रहना यह जरूरी है, तुम्हारा कर्त्तव्य है, तुम्हारा फर्ज है, लेकिन लक्ष्य नहीं बन सकता है। लक्ष्य हमारा है परमात्मा की प्राप्ति, आत्म कल्याण, उसको जानना यह हमारा लक्ष्य है। हम कितने जन्मों से चलते आये हैं, हमारी यात्रा चालू है यह कब समाप्त होगी ये भी पता नहीं। इसलिए जरूरी है हम यात्रा करके यात्री बनकर इस जगत् में आये हैं। **''ममैवांशो जीव लोके जीवभूतःसनातनः।''** तुम सनातन हो यहां सनातन सम्मेलन में सभी लोग सनातन हैं। उसके अन्दर यह वैष्णव धर्म भी है। सब एक ही है लेकिन उपासना में यह अलग शब्द लगाया जाता है। इसलिए हमें तो **''एकस्मिन् विज्ञाते सर्वविज्ञातं भवति''** अगर यह सिद्धान्त से चलेंगे, एक वस्तु को जानने से एक धर्म की जानकारी करने से हम सभी कुछ जान जायें, सभी धर्मो की प्रक्रिया को हम जान जाते हैं, तो उसके मूल को जानना जरूरी है। **''मूलं नास्ति कुतो शाखा''** प्रशाखा अनेक हैं और मूल एक है इसलिए उस मूल को जानना जरूरी है जिसे परमात्मा कहते हैं। **''सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज । अहंत्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः''** यह जरूरी है। अपने अपने सामान्य धर्म सबके पास होते हुये यह विशेष धर्म की व्याख्या की गई है। **''धर्मे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्मात् धर्मं परमं वदन्ति,''** सभी जगह धर्म विद्यमान है, जिस तरीके से वह परमात्मा सब जगह विद्यामान है। वह परमात्मा सगुण-साकार लीला पुरुषोत्तम बनता है वह लीला मर्यादा पुरुषोत्तम बनता है वह परमात्मा

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना॥

अभिव्यक्त है, बीच में व्यक्त होगा, फिर, अभिव्यक्त होगा निर्गुण है, सगुण है, परमात्मा जगत् में आता है, लीला करता है। इसलिए वह लीलामयी स्थली में लीलामय पुरुषोत्तम से हम प्रेम करें, उसकी हम आराधना करें उसकी हम साधना करें, उनकी हम उपासना करें, उनकी हम चिन्तन करें, उसकी हम ध्यान करें। और उसमें तन्मय होते हुये अपने जीवन का कल्याण करें, सनातन धर्म के बड़े बड़े मर्मज्ञ बड़े बड़े हमारे यहां धर्माचार्य, शंकराचार्य, यहीं हमारे निम्बार्काचार्य, वास्तव में जिनकी अध्यक्षता में और जिनकी छत्र छाया में सारा यहां पर हमारा सत्संग चल रहा है। यह संगम चल रहा है अनेक यही है हम एक यात्री और यात्रा करने निकले हैं हमारी यात्रा पूर्ण कब होगी? अगर यात्रा तुम्हारी इस गांव से प्रारम्भ होगी तो यह यहां वापस आने पर पूर्ण होती है और फिर उत्सव होता है। इसी तरह से जीव की यात्रा **''ममैवांशो जीव लोके''** **''ईश्वर अंश जीव अविनासि, चेतन अमल सहज सुख राशि।''** **''सो मायावश भयहु भवानी, बन्ध्यो तीर मरकट की नाही''** परम प्रभु परमेश्वर के पास जाने से पूर्ण होगी। लेकिन जीव इस तरीके से यात्रा करता करता, अनेक यात्रा करता हुआ यहां संसार में ही भटक रहा है। इस संसार में भटकते भटकते हमारी यात्रा पूर्ण कब होगी। जब

जहां से निकले है वहां पहुंच जायेंगे। परमात्मा से निकला हुआ यह जीव है, तो परमात्मा के पास पहुंचना जरूरी है, उसके सामने पहुंचना जरूरी है, तभी हमारी यात्रा हमारी साधना, आराधना, ये समाप्त हो जायेंगी। इसलिए जरूरी है ऐसे महान तीर्थ में आकर हमें कुछ न कुछ घर लेकर जाना चाहिये। हमारे में परिवर्तन हो जाये, हमारा जो गलत स्वभाव उसमें परिवर्तन होकर, हम अगर घर में जायेंगे, लोग हमारी पूजा करेंगे, हमारी अर्चना करेंगे, हमारा स्वागत करेंगे, कि तुम वहां निम्बार्क तीर्थ में जाकर बदलकर आये हो, तुम एक संत बन कर आये, एक देव बनकर आये हो इसलिए तुम्हारे लिए वह पूज्य भाव करेंगे इसलिये घर जाते समय जरूर कुछ न कुछ नियम करते हुये जाना। और हमारे यहां गृहस्थ के लिए जरूरी है सेवा, सत्संग, सदाचार और सन्तोष। हमारे यहां पंच सकार की बात कहीं गई सेवा निःस्वार्थ करो, भेदभाव वगैर करो, और सत्संग भी ऐसा करो कि जीवन में पवित्रन हो। सेवा सत्संग सदाचारी बनना जरूरी है, सन्तोषी बनना जरूरी है, **''जो आवै सन्तोष धन सब धन धूरि समान।''** जरूरी है स्मरण और परमात्मा का हमेशा स्मरण करना **तस्मात् सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युद्धय च,** यही सूत्र है। दुनियां का काम करते रहो, दुनियां में जौहर करते रहो, परमात्मा को मत भूलो, उसे अपने मन में हृदय से उसे याद करते रहो सर्वेषु कालेषु मा मनुस्मर युद्धय च, परमात्मा आज्ञा देता है तुम्हारे काम व्यवहार करते हुये परमात्मा को याद रखो, इसी से हमारी यात्रा पूर्ण होगी। मैं हमारे जो इस कार्यक्रम के आयोजक हमारे परम पूज्य श्री श्रीजी महाराज उनके लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ-उनको परमात्मा खूब शक्ति दे, उनको परमात्मा यह सनातन धर्म के लिए जिन्होंने अपना जीवन न्यौछावर किया है, उन्होंने सब कुछ त्याग दिया है। इतने बड़े त्यागी, इतने बड़े जो कि योगश्वर जैसे हैं, हमारे ज्ञानेश्वर,योगेश्वर, सर्वेश्वर जो जो कहो, वह हमारे ऐसे श्री श्रीजी महाराज के लिए हमारी खूब खूब शुभकामना है।

स्वामी श्रीकौशलेन्द्र प्रपन्नाचार्य जी, अलवर

वामनश्च विधिः शेषः सनको विष्णुवाक्यतः, धर्मार्थहेतवे चैते भविष्यन्ति द्विजाः कलौ। विष्णु स्वामी वामनांशस्तथा माध्वश्च ब्रह्मणः। रामानुजश्च शेषांशो निम्बार्कः सनकस्य च।

यह गर्ग संहिता का प्रमाण मिलता है, गर्गाचार्य जी ने वर्णन किया है और भगवान के गोलोक धाम का वर्णन है। आगे चल के कलियुग में जब धर्म का ह्रास होगा तो ऐसे महापुरुष अवतार लेंगे। ये वैष्णवाचार्य हुये हैं यह कलियुग में सम्प्रदाय का प्रवर्तनकरेंगे, सम्प्रदाय के कोई चलाने वाले या संस्थापक नहीं है प्रवर्तक हैं। जैसा सनतकुमार संहिता में वर्णन आता है भगवान श्री मन्नारायण बैकुण्ठ लोक में श्रीदेवीसे स्वयं कहते हैं- **''त्वया सह सदा देवी निवसामि महीतले''** तेरे साथ में मैं महितल में निवास करना चाहता हूँ। भगवती श्री देवी ने कहा कहां? बोले श्री निकेतनं से श्री रंगनाथ के रूप में काबेरी के तट पर आप क्यो आज जा रहे हैं बोले- **''द्वापरान्ते कलेरादौ पाखण्डप्रचुरे जने रामनुजेति भविता विष्णुधर्म प्रवर्तकः''** वैष्णव धर्म के प्रवर्तक रामानुजाचार्य के रूप में शेषावतारी अंश हमारे अवरति हैं। जो त्रेता में लक्ष्मण हुये वही द्वापर में बलराम और वहीं कलियुग में रामानुजाचार्य के रूप में अवतरित होंगे ऐसा वर्णन संहिताओं में पुराणों में नाना प्रकार से है। कलियुग में सम्प्रदाय के प्रवर्तक सभी वैष्णव धर्म को सिंचित करेंगे। रामानुजाचार्य जी का हमारे विशिष्टाद्वैत दर्शन, मध्वाचार्य जी का द्वैतवाद, विष्णु स्वामी बल्लभाचार्य जी महाराज का शुद्धाद्वैतवाद, निम्बार्काचार्य भगवान् का द्वैताद्वैत वाद ये सब और

रामानन्दाचार्य जी का जन्म सन् बारह सौ निन्यानवें के लगभग प्रयाग में हुआ तो उन्होंने राघवानंदजी महाराज से श्री वैष्णव सम्प्रदाय की दीक्षा लेकर और उन्होंने श्री भगवान राघवेन्द्र सरकार की भक्ति का विशद प्रचार किया। रामनुजाचार्य के पूर्व में द्वापर युग में ईसा पूर्व बियालीस सौ दो वर्ष पूर्व जब बारह अलवार दक्षिण भारत में जो हुये हैं वो भी अनेक अनेक भगवान के अंशवतार माने गये हैं जिनकी गाथायें अनेक हैं। एक शठकोपसूरी हुये। शठकोपसूरी भगवान् श्री कृष्ण नन्दनन्दन घनश्याम की जब लीला ऊखल बन्धन लीला का जब अवगाहन कर रहे थे, उस समय उनको इतनी वेदना हुई कि इतनी निर्दयी माँ ने इतने छोटे लाला कोमल कमर को मूँज की रस्सी से कसकर बांधा, कितनी पीड़ा हुई होगी भगवान् को ऐसा सोचते सोचते शठकोपसूरी बेहोश हो गये। छै: महीने तक वह बेहोशी में पड़े रहे और उसी समय भगवत् अनुभूति हुई, भगवत् साक्षात्कार हुआ, और भगवान् की विशद लीलाओं को देखा फिर उन्होंने सहस्त्र गीति नाम दिव्य प्रबन्ध लिखा एक हजार गाथायें लिखीं जो द्रविण भाषा में था, तमिल में था, आज वह चलते चलते संस्कृत से हिन्दी में भी प्राप्त हो रहा है वृंदावन में श्री रंगनाथ मंदिर से उसका प्रकाशन हुआ है। ऐसे हमारी वैष्णवता कोई आज की नहीं अनादि है। वल्लभाचार्य भगवान् जो हुये यह भी साधारण नहीं। इस भूतल में दक्षिण में मदुरा नगर में छ: सौ वर्ष पूर्व इनका अवतरण हुआ था। भूतल पर बावन वर्ष केवल रहे लेकिन ऐसा परमित कर्म किए। जिनको अधिक समय नहीं रहना होता वह कार्य जल्दी जल्दी करते हैं और जिनको अधिक समय निवास करना होता है वह कार्य धीरे धीरे करते हैं। भगवान् श्यामसुन्दर को द्वापर युग के अन्तिम में जब अनेक अनेक युगों से अनेक अनेक कल्पों से लोगों को वरदान जो दिये थे उनका जब निस्तारण जीवों का करना है, उद्धार करना है तो भगवान् अपनी छठी से पूतना उद्धार से ही अपना कर्म शुरू करते है। ऐसा पावन महापुरुषों का चरित्र अनादि, अनन्त है हम थोड़े समय में क्या कह सकते हैं। हम तो यही प्रार्थना करते हैं भगवान श्रीमन्नारायण से कि हम सबको सद्बुद्धि दें। श्री निम्बार्काचार्य भगवान् का यह पांच हजार एक सौंवा जयन्ती महोत्सव हम सभी सम्प्रदाय के आचार्यो को एक मंच में लाकर दिशा दे रहा है। घोर कली का आगमन हुआ है। इस वाद में न पड़कर एक मानववाद की रेखा खीचतें हुये सारे संसार को एक दिशा दीजिये और सबको अपना करके **''वैष्णवजन तो तने कहिये जे पीर पराई जाने रे''** चाहे गो की रक्षा हो, चाहे मानवता की रक्षा हो, चाहे धर्म की रक्षा हो, हम सबको एकजुट होकर इस पावन पवित्र भाव से भारत भूमि में, राजस्थान की पावन धरती, वीरों की वसुन्धरा और धरती में हम लोग संकल्प ले कर यहां से जाये। पावन सानिध्य जगद्गुरु निम्बार्काचार्य जी श्री श्रीजी महाराज के चरणों में सब लोग वन्दन करके आप भक्त समुदाय भी करें और सन्त समुदाय जो पीठ के अन्य अन्य जगहों में देश देशान्तर में फैले हैं सब इस पीठ के ही संरक्षण में चल रहे है। अन्य अन्य पीठों में तो स्वयम्भू बन जाते हैं लोग लेकिन निम्बार्काचार्य की इस पीठ में कोई स्वयम्भू जगद्गुरु आज तक पैदा नहीं हुआ, यही इस का विशिष्ट और सबसे बड़ा लक्षण हैं इसी श्री सम्प्रदाय में हमारे श्रीमहन्त हमारे मेवाड़ महामण्डलेश्वर श्री मुरली मनोहर शरण जी महाराज जैसी विभूति उदयपुर में हैं। आपकी निष्ठा देखिये आचार्य श्री का जब उद्बोधन होता है तो हम कई बार देखते हैं, आप नीचे बैठकर सुनते हैं। वन्दे गुरुपरम्परां, आचार्य निष्ठा ही सबसे बड़ी है। समर्पण, क्यों कि कर्म, ज्ञान, भक्ति, प्रपत्ति, शरणागति, से बढ़कर कोई मार्ग वैष्णव के लिए है ही नहीं। आचार्यनिष्ठा कर लो, शरणागति से बढ़कर कोई मार्ग वैष्णव के लिए है ही नहीं। शरणागत

हो जाओ प्रभु के चरणों में बस भगवान् आपके हैं। अगर आप भगवान् तक नहीं जाते तो आचार्याभिमान, आचार्यों के प्रति भगवान् मेरे हैं, मेरे गुरु हैं मेरे आचार्य, बस वहीं से उद्धार है ऐसा आप लोगों का भगवत्कृपा से कल्याण अवश्य है। निम्बार्काचार्यपीठ उत्तरोत्तर अपनी प्रगति की ओर चलते हुये, सारा यह भासमान जो अन्धकार संसार में फैला है, इसको जैसे भगवन्निम्बार्काचार्य ने नीम के वृक्ष में बैठ करके प्रकाशित किया था हजारों वर्ष पूर्व, हम यही चाहते हैं कि श्री श्रीजी महाराज अब पूरे विश्व को यह दिशा देने के लिए और आगे कदम बढ़ायें हम सब उनके साथ हैं औरउनके साथ रहेंगे। जय श्रीमन्नारायण।

श्रीरमेश जी अग्रवाल :-
चैयरमैन, भास्कर समूह,

आज इक्यावन सौ वीं जयन्ती भगवान् निम्बार्काचार्य जी की है। यहां पर हम सन्तों के मुख से आज बहुत सी बातों को श्रवण कर रहे हैं। मैं सिर्फ सन्तों के और आचार्यों के ध्यान में सिर्फ दो चीजें, दो रूपों में ही पहिचान पा रहा हूँ। दो रूप में ही धर्म से जुड़ पा रहे है। या तो वह भगवान् के दर्शन करता है या सन्त महात्माओं के वचन श्रवण करता हैं। लेकिन जो धर्म है वह सिर्फ श्रवण और दर्शन तक सीमित नहीं है। धर्म जो है वह हमारी एक जीवन की पद्धति है कि हम जीवन कैसे जियें।

आज अगर हमें भगवान् को प्राप्त करना है तो उसका उद्देश्य है कि हम कैसे जीव मात्र की सेवा करे, वहां से धर्म चालू होता है। कैसे हम संस्कार के साथ धर्म को जीयें, किन अवस्थाओं के साथ, किस तरीके से हम अपने जीवन को जीते हैं। जैसे आप हरदम देखते हैं कि हमारे महाभारत में भगवान् कृष्ण ने कहा, कि जब जब इस पृथ्वी पर धर्म का नाश होता है वे यहां आकर जन्म लेते हैं और धर्म की फिर से पुन:स्थापना करते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि जो भी व्यक्ति धर्म के अनुकूल आचरण नहीं करता है तो वह निश्चित रूप से धर्म का श्रवण भगवान् के दर्शन मैं कहूँ कि जिन्दगी सफल नहीं हो सकती। आज भगवान् ने हमको मधुर जीवन दिया है। माफ कीजिये जानवर को भी, जीवन मिलता है और वह जी लेते हैं लेकिन प्रभु ने मानव जीवन अगर दिया है तो इसलिए दिया है कि हम दूसरों के लिए दूसरों की कठिनाइयों में दूसरों के दु:खों में कैसे शामिल हो सकते हैं। मैं सन्त समाज के चरणों में यही निवेदन करूंगा। मैं देखता हूँ कि मन्दिर में जब जब भगवान् के दर्शन हो पाते है जितनी देर हम भगवान् के दर्शनों में या सन्तों के प्रवचनों में लीन रहते हैं तब तक तो हम दुनियां भूल जाते हैं और जैसे ही इस पण्डाल के बहार जाते हैं माफ कीजिये हम धर्म के अनुरूप आचरण नहीं कर पाते। अपने जीवन में, अपने व्यवहार में दूसरे जीव के प्रति तो दया छोड़ दीजिये हम आदमी के प्रति भी दया शायद नहीं रख पाते। क्यों कि आज की राजनीति ऐसी हो गई है जिसने धर्म को कई भागों में विभक्त कर दिया। जबकि उपासना करने का ढंग चाहे अलग है। पर धर्म सब एक ही सिद्धान्त कहते हैं कि मानव सेवा होनी चाहिये, कोई धर्म नहीं कहता कि मानव सेवा खराब है, या जीव सेवा नहीं होना चाहिये। फिर कहीं न कहीं कुछ राजनीति कुछ ऐसी चीजें हैं। गाँधीजी थे वह वैष्णवजन की बात करते थे उन्होंने कभी राजनीति की बात नहीं की। लेकिन आज मुझे दु:ख के साथ कहना पड़ता है कि जो राजनीतिक मंचों पर हमारे नेता हैं उन्होंने हिन्दू धर्म, अन्य धर्मो को भी कहीं न कहीं अपने स्वार्थ से विभाजित कर दिया है जब कि धर्म किसी को विभाजित नहीं करता है। हम सबको उपासना के साथ जो धर्मका व्यवहार हैं उसे जीवन पद्धति में हम कैसे उतार सकते हैं यह हमें सन्तों

की वाणी से, सन्तों के प्रवचनों से अपने जीवन में उतारगे, उसको ग्रहण करेंगे, तो निश्चित रूप से हिन्दुस्तान फिर से गुरु की भूमिका निभाके पूरे विश्व को एक नया शान्ति का और हिंसा रहित अहिंसा का मार्ग दे सकेगा। मैं वंशीलाल जी का आयोजकों का, बहुत ही आभार मानता हूँ कि उन्होंने मुझे यहां आने का मौका दिया आकर मैं महाराज श्री और सब लोगों के चरणों में नमन कर सका।

स्वामी श्रीविष्णु प्रपन्नाचार्य जी महाराज :-

- नागोरियामठ डीडवाना

देखो भगवान् की मंगलमयी कृपा से स्वामी श्री श्रीजी महाराज के सानिध्य में आप हम सब यहां पर बैठ कर आनन्द अनुभव कर रहे हैं। देखो हमारा धर्म सनातन है शाश्वत है और अनादिकाल से चला आ रहा है। हम सब परम श्री वैष्णवी हैं और हमारे जन्मजन्मान्तर, कल्पकल्पान्तर, युगयुगान्तरके जब पुण्यों का उदय हुआ तभी आप हम सब अपने आचार्य द्वारा बताये गये मंत्रो का तो पालन करते ही हैं इसके साथ साथ में सेवा करने का भी हमें संकल्प लेना चाहिये।

हमारे भारतवर्ष का आदर्श ही सेवा है और हमारी भारतीय संस्कृति हिन्दू, धर्म हिन्दू, सभ्यता को समझने के लिए आज का यह कार्यक्रम यह सनातन धर्म सम्मेलन विशेष महत्व रखता है। भगवान् की कृपा से हमें यह मंगलमय जीवन मिला है, शरीर मिला है, तो उसको सेवा में लगाना चाहिये। सेवा कई प्रकार से की जा सकती है। धन से, तन से, मन से। किसी के पास धन होता है वह धन से सेवा करता है, प्याऊ बनवाता है, धर्मशाला बनवाता है। पर किसी प्रारब्ध के कारण या समयानुसार शरीर भी साथ नहीं देता है तो अपने मन से भी किसी की मंगलकामना करके सेवा का लाभ ले सकता है। तो यही हमारा सनातन धर्म है सनातन धर्म एक दूसरे को करीब लाता है न कि एक दूसरे से दूर करता हैं। किसी कवि ने कहा है **''धर्म वह है हमारी जो अन्त चेतना को जगा दे, धर्म वह है जो बिछुड़ों को मिला दे और धर्म की सीधी सी पहिचान तो यही है यारों -कि वो शैतान को इन्सान और इन्सान को भगवान बना दें।''** और उसी सनातन धर्म को हम अपने जीवन में उतारकर सनातन धर्म के आदर्श को, आचार्यों के वचनों को और जो भी आचार्यों ने आपको यहां प्रवचन में जो कहे हैं, जो बातें कहीं हैं वे हमारे जीवन को एक नई रोशनी देने वाली बातें है उन्हें हमें अपने जीवन में उतारना चाहिये। आप लोग सब यहां पर आये हो तो इस सम्मेलन से कुछ सीखकर जाओं, उस चीज को अपने जीवन में उतारो जिससे आपके जीवन में आनन्द ही आनन्द हो जाय।

वैष्णव धर्म में तो, वैष्णव धर्म की पद्धति इतनी सरल है कि हम अपनी इच्छानुसार भगवान् को रख सकते हैं प्राय: सभी के घरों में लड्डू गोपालजी की सेवा होती है। कोई उन्हें पुत्र मानता है, कोई भाई मानता है, कोई पति मानता है, कोई दास भाव रखता है, यानि कि हम अपनी भावना के अनुसार भगवान् को रख सकते है, और भगवान् भी उसी के अनुसार रहते हैं। भगवान् ने कहा है कि मैं अपना अपचार सहन कर सकता हूँ पर भागवतों का अपकार मैं कभी सहन नहीं कर सकता। हमारी हिन्दू सभ्यता और संस्कृति का यही आदर्श है कि अपने जीवन में जितना सेवा कार्य हो गया तो समझो हमारा जीवन मंगलमय हो गया। जो भगवान् के शरणागत की भावना मन में रखते हैं। वह जो शरणागत हो जाता है भगवान् उसके हो जाते हैं और जब भगवान् उसके हो जाते हैं और वह भगवान् को हो जाता है। किसी ने कहा है- **''एक तू और एक मैं तीसरा कोई नहीं। यूँ कहो हम एक हैं दूसरा कोई नहीं''** यानी भगवान् को अपने समझों और आप भगवान्

के हो, यह भावना आने का मतलब है, हम भगवान् के पूर्णत: शरणागत हो गये। हमारा जीवन का लक्ष्य यही है कि जो सेवा रूपी सच्चा धन है वही हमारे साथ में जाने वाला। इन सबके साथ साथ में भगवान् के नाम स्मरण के लिए भी कुछ समय निकालना चाहिये जो हमारी सच्ची निधि है सच्चा खजाना है, सच्चा धन है, वह भगवान् का नाम स्मरण ही है और बाकी जो यह धन हैं यह साथ नहीं जायेगा। इसके ऊपर मैं आपको छोटा सा दृष्टान्त देता हूँ- अपने समाज में देखते हैं अपने आसपास भी कि आज लोग कैसे धन को तबज्जों देने लग गये, कैसे अपने माता-पिता को भूलने लग गये, और आज उसी माता-पिता की सेवा करते हैं जिनके पास बुढ़ापे में धन होता है, नहीं तो कोई भी ध्यान नहीं देता है। आचार्यों की आप सब पर कृपा है आपके साथ में शायद ऐसा नहीं होता होगा।

आज हमारे समाज में संकीर्ण विचारधारा हो गई है इसको दूर करने के लिए हमारी संस्कृति को पुनर्जीवित करने हेतु ऐसे सम्मेलनों की आवश्यकता है और इसके साथ में आवश्यकता है कि आप लोग कुछ न कुछ यहां से सीख कर जाओ। जो कुछ भी है हमारे जीवन में जो कुछ भी हो रहा है, जो कुछ भी होने वाला है वह सब नारायण पर छोड़ दो, वही सब कुछ करने वाले हैं और ऐसा करते हुये भगवान् के नाम स्मरण के साथ आचार्यों में श्रद्धा और विश्वास रखते हुये इस जीवन को आनन्दमय बनाओ क्यों कि मौत का कभी भरोसा नहीं है कि वह कब आ जाये, **''नारायण हरि भजन में और न देर लगाय, ना जाने किस रूप में मौत गले पड़ जाय''** कभी भी मौत आ सकती है, जीवन का कोई ठिकाना नहीं है इसलिए आप लोग इस जीवन को आनन्दमय बनाने के लिए सच्चे ख़जाने की तलाश में आज से लग जाओ। आप लोगों के ऊपर भगवान् की कृपा बनी रहे और श्रीजी महाराज की भी हम लोगों पर बड़ी कृपा है हमारे पीठ से अच्छा स्नेह था और वैसी कृपा आज भी है भगवान् श्री हरि से इनकी मंगल कामना के लिए प्रार्थना करते है।

श्री उम्मेद सिंह जी, धौली ठाकुर :-

आप लोगों के समक्ष गुरु की आज्ञा से मैं कुछ अर्ज करने के लिए खड़ा हुआ हूँ। महानुभाव यह राजस्थान की धरती है मैं राजस्थानी में ही बोलूंगा-आदरजोग महानुभावां पूज्यपाद गुरुवर मुरली मनोहर जी रो आदेश है, ये उदयपुर की धरती मेवाड़ की धरती का महामण्डलेश्वर है और वाय को हुकम सरमाथ मान तौ यकें मुं चन्द बाँताँ चन्द समय में निवेदन करवां को प्रयत्न करू। हे भाँयाँ, मैं श्रीजी महाराज कौ महान अभारी हूँ कि इ विराट् धर्म सम्मेलन कौ दर्शन करवाँ कौ आप सौभाग्य उठायौ। हे महानुभाँवाँ आप आज पधारिया हौ, आपरो स्वागत है आप महान सन्तों काँ प्रवचन सुन रिया हो, लेकिन एक यह क्षत्रिय बालक कौ निवेदन है कि आप यदि केवल प्रवचन सुनवाँ में ही आपणौ दिन लगाया यूँ काम नहीं चालेला। इै के लिए आपने सोचनौ पड़ेगौ कि विराट् धर्म सम्मेलन की सफलता ई क्षण में ई सोच और ई विचार क ऊपर है। मैं कुछ वर्षा पहले की बात निवेदन करूं, एक उदाहरण स्वरूप- मारवाड़ की धरती जोधपुर, बठै महाराजा कर्णसिंह जी, कश्मीर कौ पधारणों हुय्यों और सर्वधर्म सम्मेलन कौ आयोजन करियौ, महाराजा जाधेपुर व वीकी अध्यक्षता कराई। मैं बीमें मौजूद हो। एक सामाजिक क्षत्रिय समाज का कार्यकर्ता की हैसियत से मनैं हुकम कियो। सभी तरह का धर्माचार्य अलग अलग धर्मां का, मुस्लिम धर्म, ईसाई धर्म, जैन धर्म, ये लोग भी बठै विरामाना आपण सनातन धर्म का भी था मैं पाँच मिनट का प्रवचन करवौं चाहूँ, मैं अर्ज करी- मैं एक राजस्थानी कौ दूहौ पेश कर्यो और वामन या अर्ज़ करी- ''मालावाला सुन मुनी

और खगवाला महाराज, त्याग सेवा धारण बिना सुधरै नहिं हिन्दू समाज।'' हे म्हाराँ महामण्डलेश्वर, हे म्हाराँ जगद्गुरुवाँ आज आप लोगाँ ने वो उपदेश दैनौं पडैला जो उपदेश श्री भगवान रामदास जी महाराज छत्रपति शिवाजी ने दियौ। आज वीं की आवश्यकता है थई सुणरियाँ हो धणी बात कलजुग कौ प्रभाव है केवल कहँ देवाँ स काम नही चालला युगाँ नै तो मानव की शक्ति मोड़ रास्ता पै ल्यावै, शक्ति की आवश्यकता है। आज जगद्गुरू शंकराचार्य कौंचि कोटि की हालत होयेड़ी, अब देख लेंणा वही राजनीति ने रात कौ रेडियो और टेलीविजन बतारियां हा कि वह अभियुक्त बदलरिया है। पुलिस प्रताड़ना कर झूठौ नाम लगायौ है काँई हालत है और वै राजनेता रा करिया है। ई वास्ते आज लोगाँ ने ई सोचनौ पडेला आज। मैं निवेदन करनौं चाहूँ मनैं गर्व है कि भगवान चतुर्भुज नाथ, भगवान सर्वेश्वर मनें क्षत्रिय जाति में जनम दीनौं जिमैं एक नहीं अगर आप राजस्थान का इतिहास में भारत का इतिहास बलिदानमयी इतिहास और ॐ क्षत्रियाँ कौ है। जो श्रेय क्षत्रिय समाज में है। आज श्री जी रा चरणरविन्दा में मूँ काँई अर्ज करूं मूँ याँको चाकर हूं याँ कौ दास हूँ याँकि कृपा है ई पापी जीव के ऊपर लेकिन मनैं गर्व है कि आज यौ सलेमाबाद कौ जो तीर्थस्थान है ई मैं सबौं बडौं श्रेय है खेजण्य ठाकुर साहब कौ। इतिहास की बात जब बादशाह शेरशाह सूरी हो खेजण्य ठाकुर साहब बाकाँ सेनापति हा और वानैं अर्ज करी कि अन्नदाता अगर आपनैं वास्तव में सन्त देखणा है और वास्तव में वाँकी शक्ति देखणीं है तो पधारो सलेमाबाद, गुरुदेव परशुराम देवाचार्यजी विराजमान हा, वे लेर आया और शेरशाह ने वाँके पुत्र कामना ही वी कौ वरदान दीनौं, वाँ के बेटा सलीम जन्म्यौं और छैः हजार बीघा धरती कौ पट्टी बादशाह शेरशाह ई आश्रम के लिए करियौ। आज वह खेजण्य ठाकुर साहब को श्रेय दीख रहां हो। आज देख रहाँ हो ये मरूधरा की धरती। आज मी के लिए केवल भारत ही नहीं म मीरां का कई एक सम्मेलनाँ में गियौं अन्तर्राष्ट्रीय जो गोष्ठयाँ वाँ मीराँ के लिए हीं वी में भी बैठ्यो, पत्र वाचन करियाँ। आज मैं आपने अर्ज करू कि उत्तर सूँ लै और दक्षिण तक ई भारत का हृदय में मीराँ विराजमान हैं और केवल राजस्थान और हिन्दोस्तान ही नहीं, भायाँ, अब तो विदेश में भी मीरा के ऊपर कई कई प्रकार का शोध हो रिया है। वह भक्ति की गंगा और मानवता रूपी त्रिवेणी रूप जो है माँ मीराँ आज आप वाँका पद चिन्हा का अनुसरण करौ। आज मैंने बड़ी खुशी मैं कार्यक्रम ने देख्यौ मैं श्रीजी चरणरविन्दा में निवेदन करतौ थक्यौ मूँ माफी माँगूं कि मैं तारीख बीसँ न आपकी सेवा म नही हाजिर हुयौ।

आज गो रक्षा सम्बन्धी जो है आपनों पूरौ सत्र चालियौ, लेकिन याद कराँऊ भाया गो रक्षा के लिए स्वयं मैं आज नहीं पहली उला सम्राट भारत का चक्रवर्ती सम्राट महाराज दिलीप का वक्त में वह धेनु चरारिया ह और भगवान् माया कर और बाघ रूप मा प्रकट हुल्या और कियों कि हे दिलीप या गाय म्हारौ भक्षण है मूँ इनै खाँऊ तौ महाराजा दिलीप निवेदन करयो हे बाघराज आप मेरे शरीर का भक्षण करके इस गाय को छोड दिजिये है कितना मनैंत हुकम। हे श्रद्धयाँ, हे महानुभायाँ, हे मातेश्वर, हे महान विदुषि, महा मनीषीं लोगाँ, सन्ताँ कोई करै खडौ प्रतिज्ञा कि दिलीप के समान, म्हाँ कौ शरीर गौ माता के अर्पण वर सकाँ। तो भाया बातौ सूं काम लेंण नहीं है। खाली बाता अगर काम होताँ तौ ई संसार कौ इतिहास रच्यौ नहीं जातौ। आप बाबू राठौड ने देखौ ज्यो गायाँ की रक्षा के वास्ते व्हाकँ जो व्याव का गठ जोड़ा बन्ध्या हा और कूँकई देवण चारण आ र कयो म्हारी गाइने लुटेरा लूट लेगियां, तलवार निकाली तलवार लिए नहीं, गठजोड़ा का बन्धन के काटवा के लिए और घोड़ी पे सवार हुव, गायाँ की मुक्ति कराई,

बाबू राठौड। आप तीजलराज कुवाँर ने देखौ उ जाट कौ बैटो तेजा जी गायाँ के लिए गौ रक्षा के लिए अमर हियौ, तो हे महानुभावाँ आज कोई भी बात सत्य रूप में धारण करवाँ क वास्त, त्याग और बलिदान की बात हुवें आज त्याग और बलिदान की सर्वोच्च महत्तता है। महानुभाव म्हारा महामण्डलेश्वर श्री मुरली मनोहर जी शरणाँचार्य जी, महाराज की म्हारे माथै बहुत कृपा है। आप उदयपुर विराजै चित्तौड़ का जौहर मेला में आप कतरी वक्त पधारयिां और म्हानै परम हर्ष है श्री चरणरविन्दाँ मे श्रीजी ने निवेदन करना सकाँ कि हिन्दुस्थान कौ त्याग और बलिदान कौ जो शौर्य मेलौ चित्तौड़ में लागे और वीमैं पचास पचास हजार नर नारी बठैं भारत का कौना कौना सूं पधारे, आज काल तौ विदेश, सूं भी लोग आरिया है। नेपाल, मौरीशस बठै का प्रतिनिधि मण्डल जो है चित्तौड़ आरिया है तो श्रीजी महाराज कौ भी शोर्य जौहर मेला में पधार अर घणो आशीर्वाद देवां की कृपा कराई। ई केई साथे आप लोगाँ ने पुनः धर्म की मर्यादा के लिए त्याग और बलिदान धारण करवाँ कौ निवेदन करता थका यौ क्षत्रिय बालक आपनौं स्थान ग्रहण कर्र्।

महामण्डलेश्वर श्री रामलखन दास जी महाराज

अयोध्या

बहुत सारी बातें यहां मंच पर हो चुकी है, बहुत से विद्वान् अपनी अपनी बातों को कह चुके हैं। कुछ कहने के लिए शेष नहीं रह गया है। वैष्णव की परिभाषा करने के लिए बहुत सी बातों को ग्रन्थों में स्थापित किया गया है। चाहे वह आनन्द भाष्य के आधार पर हो, चाहे वैष्णवमत भाष्य के आधार पर हो, वैष्णव कुलभूषण वैष्णव धर्म दिवाकर, श्री निम्बार्काचार्य जी महाराज के श्रीग्रन्थ हों, या श्रीभाष्यम् हो आदि आदि जो मेरी सोच है मेरा जो दिल कर रहा है, जो तुलसीदास जी महाराज ने अपने सिद्धान्त में स्थापित किया है। प्रत्येक मानव समाज चाहता है कि मेरे दिल में, मेरे विचारों में, मेरी भावनाओं में, मेरे घर में, मेरे धन में, परमात्मा का निवास हो। हर आदमी चाहता है कि मेरा जीवन मेरे पुत्र का आदर्श भगवान राम, भगवान कृष्ण के समान हो, परन्तु ऐसा होता हुआ दिख नहीं रहा है। चाहे तो हमारी विचारधारायें अच्छी नहीं है या हमारा दिल अच्छा नहीं है। रामचरित मानस के आधार पर यदि देखा जाय तो वैष्णव उसे कहलाने का नैतिक अधिकार है। **''वैष्णवानां यथा शम्भु'** के सिद्धान्तों को आधार में आधारित करते हुये (श्रीमद्बाल्मीकि जी महाराज) इस बात को स्वीकार किया- तुम्हहिं निवेदित भोज करहिं, प्रभु प्रसाद पट भूषण धरहिं॥ कर नित करहिं राम पद पूजा, राम भरोस हृदय नहिं दूजा॥ तुम्हहिं छांडि गति दूसर नाहीं, राम बसहू तिन के मन माहिं॥ भगवान् राघवेन्द्र उन्हीं के हृदय में निवास करते हैं जिसकी विचारधारा वैष्णवता कीहो॥ **''वैष्णवानां नम्रतां देहि''** हमारे विचार में नम्रता हो हमारे विचारों में आदर्श हो, हमारे विचार में शिष्टता हो। आज सारा विश्व आंतन्कराज के शिकञ्जें में जाकर फँस चुका है। भारत वर्ष ही नहीं सारा विश्व आतंकवाद से जूझ रहा है। मैं आपसे निवेदन कर दूँ यदि कदाचित् भारतीय सभ्यता अपने जीवन में वैष्णवत्व को स्वीकार कर ले तो सारे देश का ही नहीं, सारे विश्व का आतंकवाद चुटकी जाते ही समाप्त हो जायेगा। एक सैकण्ड में चुटकी बजाते आतंकवाद को खत्म किया जा सकता है। मंच के आधार पर, मंच के द्वारा, लोकसभा के अन्दर, विधान सभा के अन्दर बैठ करके टैरिज्म की बात करने से आतंकवाद खत्म नहीं हो पायेगा। आतंकवाद को खत्म करना है तो वैष्णव मतक्य को स्वीकार करना होगा यदि आप वैष्णवत्व को स्वीकार कर लेंगे, मैंने एक बार नागपुर आर एस एस कार्यालय में कहा था इस राष्ट्र को हिन्दू विचारधारा की जरूरत है। हमारी मैन मैन्टीलिटी हिन्दू हो जाय हमारे राष्ट्र को सारा विश्व मिलकर के मुस्लिम नहीं बना सकता।

मैंने एक बार कहा था कि सनातन धर्म वह चिन्गारी है कि जिस सनातन धर्म के सामने मुगल गवर्मेन्ट नहीं टिक पाया, जिस सनातन धर्म के सामने ब्रिटिश गवर्मेन्ट नहीं टिक पाया जिस सनातन धर्म के सामने ईसाई मशीनरी नहीं टिक पायेगी। जबकि सनातन धर्म को नष्ट करने के लिए कंस लगा रहा रावण लगा रहा कुछ नहीं कर पाया। मैं आपसे निवेदन कर दूं लंका में रहता हुआ एक लंकाधिपति के मध्य रह कर वैष्णवत्व को स्थापित व झंडा को ऊंचा किये रहा उसका नाम था विभीषण। सम्पूर्ण विश्व में रावण का आतंक हुआ मगर विभीषण का बाल बाँका नहीं कर पाया। इसका मूल कारण यह था कि भगवान् राम के प्रति आत्मसमर्पण था। हमारे जीवन में आज परिपक्कता नहीं है हमारा शरीर वैष्णव बन गया, विचारधारा वैष्णव बन जाय, पर हम वैष्णव बनने से अभी लाचार हैं। हम वैष्णव बनें, हमारी अन्तरात्मा वैष्णव बन जाय। जब हम वैष्णव बन जायेंगे तो ये निश्चित हो जायेगा कि यह सारा जगत् ईश्वरमयी देखने लगेंगे, जब सारा राष्ट्र ईश्वरमयी हो जायगा तो आपके जीवन से विरोध खत्म हो जायेंगे। आपके जीवन में मत एक हो जायगा, मतभेद नहीं होगा। आज जो अभी शंकराचार्य की बात चल रही थी इसका मूल कारण कभी आपने पकड़ा, कहना पड़ेगा, नहीं। केवल ताली बजाने से काम नहीं चलेगा। सारे राष्ट्र के नागरिकों ने जान लिया है, सारे विश्व की सरकारो ने जान लिया कि भारतीय नौजवान केवल ताली पीटना जानते है, हिंजड़ो की तरह, ताली पीटने से देश की संस्कृति की सुरक्षा नहीं हो पायेगी, शस्त्र उठाने की जरूरत है। शास्त्र को सुचारू ढंग से, व्यवस्था को स्वीकार करने की जरूरत है सारे विश्व में एक खलबली मची हुई है। सारे विश्व के किसी धर्माचार्यो में, यह पहला स्थान है कि भगवान् शंकराचार्य के पद प्रतिष्ठित जगद्गुरु को आज करागार में रखा गया। विश्व के किसी देश में नहीं, भारतवर्ष के किसी इस्लाम के नागरिकों को और मौलानाओं को आज तक कोई सरकार गिरफ्त में नहीं ले पाई। इसका मूल कारण हम केवल बोलना जानते हैं चलना नहीं जानते, हम केवल बताना जानते है, लड़ना नहीं जानते। इसलिए मेरा निवेदन है एक कातिल जगलपुरी ने सिद्धान्त दिया है। **''जब से सुना है मौत मुकद्दर को कहते हैं, सर पे बाँधे कफन कातिल को ढूढ़ते हैं॥ ''** आप अपने हाथ में अस्त्र शस्त्र को उठायें, सिद्धान्त को उठायें और एक क्रान्ति आये विचार क्रान्ति की जरूरत है। यहां केवल आ करके कथा सुनने से काम नहीं चलेगा। अब योजनाबद्ध तरीके से संगठित होकर, धर्माचार्यों के बताये हुये मार्गों को लेकर धर्माचार्यों के साथ उठ खड़े होने की जरूरत है। वैष्णवतत्व की सुरक्षा, राष्ट्र की सुरक्षा यदि राष्ट्र में सन्त की सुरक्षा नहीं होगी तो आपकी सुरक्षा यह राष्ट्र नहीं कर पायेगा। इन्हीं शब्दों के साथ छोटा मुँह बड़ी बात मैंने की इसके लिए सभी धर्माचार्यों के चरणों में सादर नमन, सादर वन्दन।

जो बालक कहि तोतरी बाता।
सुनहिं मुदित मन पितु गुरुमाता।।

युवराजश्रीश्याम शरणदेवजी :- निम्बार्काचार्य पीठ

सभी आचार्यों ने जनकल्याण के लिए अलग अलग मार्गों की स्थापना की जिसे मैं व्यवहारिक दृष्टि से बताता हूँ। जिस प्रकार आज एक कॉलेज के अन्दर अलग अलग विषयों की स्थापना की जाती है जिससे छात्र अपनी रुचि के हिसाब से, अपने रुचिकर सब्जेक्ट को लेकर अपना अध्ययन प्रारम्भ करता है, परन्तु सभी सब्जेक्ट उसको एक ही डिग्री प्राप्त कराते है बी. ए. या एम. ए. कुछ भी कह सकते हैं। उसी प्रकार हमारे आचार्य श्री जितने भी हमारे आचार्य हैं हमें अलग अलग

सब्जेक्ट के द्वारा उपासना देते है परन्तु इन सब की डिग्री एक ही होती है भगवत्प्राप्ति। यह हम सब पर निर्भर करता है कि हम उस सब्जेक्ट में कितने आगे बढ़ते हैं और कितने परसैन्ट मार्क्स लेते हैं।

आज उन सभी सब्जेक्टों के प्रोफेसर जिसे हम कह सकते हैं आप सभी के समाने यहां मंच पर उपस्थित हैं। परन्तु आज हमारे वैष्णव धर्म में आचार्यों के नकल करते हुये जिसे हम डुप्लीकेट भी कह सकते हैं ऐसे कई असामाजिक तत्व हैं जो जनता को भ्रमित कर रहें हैं परन्तु उन्होंने अपना आत्मानुसन्धान, हमारे धर्म शास्त्रों का गूढ़ चिन्तन नहीं किया है उन पर उन्होंने मनन चिन्तन नहीं किया है उनकी गति जिस प्रकार हम कहते हैं ''धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का'' ये स्थिति होती है। कल षड्दर्शन सम्मेलन था मुझे बोलने का अवसर नहीं मिल पाया था। तो जो ये असामाजिक तत्व हैं वे इस प्रकार हैं न तो आत्मज्ञान किया और नहीं इस संसार के प्रति उनकी जन कल्याण की भावना है। उन्हें केवल अपनी प्रसिद्धि और जनता को भ्रमित करने की भावना रहती है। मुझे एक प्रसंग याद आ रहा है कि जो लोग अल्पशिक्षित होते हैं अल्पमति होते हैं वह किस प्रकार के कार्य करते हैं। तीन विद्यार्थी विद्वान् बनने के लिए गये परन्तु कुछ ही शिक्षा प्राप्त करके वापस आ गये उन्होंने गुरु की महत्ता नहीं समझी। जब रास्ते में आ रहे थे तो रात्रि हो गई और वहीं विश्राम करने का निश्चय किया। अब रात्रि में उन्हें भूख सताने लगी तो सभी ने यह विचार किया कि यहीं पर कुछ निर्माण किया जाय। उनमें से एक आयुर्वेद पढ़कर आया था। कुछ सूक्ष्म ज्ञान था। उसने कहा कि क्या बनाया जायें कि **सर्व रोग हरो निम्बः** नीम के पत्तों का अर्क बनाया जाय। तो नीम के पत्तों को भगोनी में डाल के उबालने के लिए रख दिया गया। एक न्याय का छात्र जो उनके साथ था वह किसी गांव में भीख लेने के लिए गया हुआ था। जब वह भीख लेके लौट रहा था रास्ते में तो उसे एक विचार आया क्योंकि पूर्ण शिक्षित तो नहीं था तो उसके मन में कुतर्क हुआ, **घृता धारे पात्रं या पात्रा धृतं** ये घी पात्र के अन्दर है या पात्र घी के अन्दर है अब इसी विचार मन्थन में उसने उस पात्र को नीचे कर दिया। अब बड़ा प्रसन्न हुआ और भगाभगा उन दोनों साथियों के पास आकर बोला कि आज मेरा कार्य सिद्ध हो गया तो बोले क्या हो गया कि आज मेरा सिद्ध हो गया कि कभी कोई वस्तु पात्र में नहीं होती, पात्र किसी वस्तु में नही होता। वस्तु पात्र में होती है इसमें विचार मन्थन की क्या आवश्यकता है। यह तो हमारा व्यावहारिक ज्ञान है उसी प्रकार आज हमें पूर्ण ज्ञानकी आवश्यकता है और यदि हम अपने जीवन में कुछ करना चाहते हैं तो इन धर्माचार्यों से हमें अपने सब्जेक्ट के अन्दर, पूर्ण ज्ञान की आवश्यकता है तभी हम मेरिट पाकर भगवान् बैकुण्ठ के अन्तः लोक में जा सकते हैं। क्यों कि वहां भी इसी प्रकार का वह होता है यदि तीस परसैन्ट से कम नम्बर आयेंगे तो आप फेल हो जायेंगे, पुनः वापस यहीं आ जायेंगे, उसी क्लास में और यदि आप टॉप करते हैं, मैरिट के अंक प्राप्त करते हैं तो अपने अपने धामों में आप को, अपने अपने भगवान् अपनी शरणागति में बुलायेंगे। सभी की मंगल कामना चाहते हुये और आप सभी अपने अपने सब्जेक्ट में टॉप करें यह भावना रखते हुये अपनी वाणी को विराम देते है॥

स्वामी श्री चिन्मयानन्दजी महाराज :-

पूर्व गृहराज्य मंत्री भारत

मैं इस क्षण को एक ऐतिहासिक क्षण मानता हूँ। कुम्भ आयोजित होते हैं हरिद्वार में, प्रयाग में, उज्जैन में, नासिक में, लेकिन वहां हम उस उद्देश्य तक संभवतः नहीं पहुंच पाते है जिस उद्देश्य तक पहुंचने के लिए यहां एक उचित अवसर हमें मिल रहा है। आज यह क्षण

जब देश के विभिन्न सम्प्रदायों के आचार्य श्रीजी महाराज के आग्रह पर यहां उपस्थित हैं तब हमें देश और समाज के सम्बन्ध में सोचने के लिए एक उचित अवसर मिलता हैं। और यह अवसर बहुत कम मिलते हैं। कहते हैं किसी समय में ऋषियों का ऐसा समूह एकत्र होता था और देश और समाज की चिन्ता किया करता था। विभिन्न अवसरों पर जब कभी ऋषिगण इकट्ठा होते थे, एकत्र होते थे, तो वे किसी निर्णय पर पहुंचते थे, किसी समाधान तक पहुंचत थे और वह समाधान हमारी धार्मिक इतिहास की एक निधि बन जाया करता था, एक पूँजी बन बनजाया करता था। आज भी हमें इस अवसर पर लाभ लेना चाहिये। भगवान् निम्बार्काचार्य जी ने आज से इक्यावन सौ वर्ष पूर्व इस धरती को पवित्र करने के लिए अवतार लिया था। उस अवतार के क्रम में अनेकों आचार्यों का अवतरण अब तक होता रहा है। उस परम्परा को आज भी जिस शालीनता से, जिस शिष्टता से, जिस मर्यादा से, जिस अनुशासन में रहकर निर्वाह किया जा रहा है सम्भवत: वह विश्व के चिन्तन में एक अध्याय हो सकता है। क्यों कि बहुत कम हो रहा है विचारों की परम्परायें कहीं न कहीं टूट जाती हैं। साधना की परम्परा चल नहीं पाती। लेकिन इन परम्पराओं को वर्षानुवर्ष चलाने वाले लोग साधारण प्रतिभा के लोग नहीं होते हैं। इक्यावन सौ वर्षों में कितने आचार्यों का अवतरण हुआ होगा, कितने आचार्यों ने अपनी साधना से इस धरती को पवित्र किया होगा। उन सबकी पूँजी आज पुँजीभूत होकर श्रीजी महाराज के रूप में हमारे मध्य विराजमान हैं।

मैं ऐसे पूज्य चरण को प्रणाम करता हूँ क्यों कि यह सम्मेलन एक ऐसे समय, यह सभा एक ऐसे समय में आहूत की गई है जब देश में धर्म के सम्बन्ध में विचार की बहुत बड़ी आवश्यकता थी। धर्म के सम्बन्ध में जो धारणायें आज विभिन्न माध्यमों से जनता तक पहुंच रही है, जन जन तक पहुंच रही हैं उसमें प्रामाणिकता लाने की जरूरत है। युवराज महाराज ठीक कह रहे थे कि भ्रम ज्यादा पैदा किया जा रहा है, भ्रम का निवारण कम हो रहा है। और शायद इसीलिए कि आचार्यों की मौन साधना, आचार्यों की तपस्या कहीं एकांगी तो नहीं हो गई, वे सीमित तो नहीं हो गये अपनी साधना तक ये साधना का संदेश अगर युग का सन्देश नहीं बनता है, साधना का संदेश अगर समय को प्रेरित नहीं करता है, साधना का सन्देश अगर युगीन संदेश नहीं बनता है तो उस साधना का लाभ हमें नहीं मिलेगा। हम यह जानते है यह देश वह देश है जिसने अवतार और उद्धार के सिद्धान्त को स्वीकार किया है। भगवान् का अवतार होता है जीव का उद्धार होता है। भगवान् अवतार ही जीव के उद्धार के लिए होता है। भगवान् का अवतार एक बड़ी विचित्र घटना है। मुझे स्मरण होती है। कुछ वर्ष पूर्व मैं जर्मन में था। जर्मन में वहां के पत्रकारों ने मुझसे कहा कि क्या वजह हैं क्या कारण है ? आपके भगवान् के अवतार जितने भी होते है भारत में ही होते है भारत से बाहर किसी देश में नहीं होते। मैंने पत्रकारों के इस प्रश्न से स्वयं को बचाने की कोशिश की। मैंने कहा यह प्रश्न चूंकि भगवान् से सम्बन्धित प्रश्न है इस का उत्तर देने की हैसीयत मेरी नहीं है। उन्होंने कहा नहीं आचार्य के नाते, एक सन्त के नाते, एक उपदेशक के नाते आपको इसका जवाब देना चाहिये। मैंने कहा इसका जवाब भगवान् ने स्वयं दिया है भगवान् ने कहा है - **यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत,** भले ही **भारत** शब्द अर्जुन को सम्बोधित हो लेकिन मेरा अभिप्राय भारत का सम्बन्ध इस देश से है। भगवान् ने इस देश को आश्वस्त किया था कि जब इस देश पर कभी भी संकट आयेगा, धर्म की ग्लानि होगी,धर्म में गिरावट आयेगी, धर्म विचलित होगा अपने स्वाभाविक पथ से, उस समय धर्म पथ को सुदृढ़ करने के लिए, धार्मिक विचारों को सुदृढ़ करने के लिए, धार्मिक आचरण को सुदृढ़ करने

के लिए, मेरा अवतार होता रहेगा। उन्होंने कहा उत्तर से मैं संतुष्ट नहीं हूँ आखिर भारत में ही क्यो जन्म होता है? मैंने कहा उत्तर चाहते हैं तो मैं कहना चाहता हूँ कि आगे भी भगवान् के जितने अवतार होंगे वे केवल भारत में ही होंगे, भारत से बाहर कभी नही होंगे। उन्होंने का क्यों हमने कहा जन्म के लिए **माँ** की आवश्यकता होती है, कोई भी जन्म लेना चाहता है, पशु सम्पूर्ण धरा पर सम्पूर्ण विश्व में अगर कोई देश **माँ** के नाम से जाना जाता है सम्मानित है **माँ** के रूप में तो वो केवल भारत की धरती है, भारत की धरती ही भारत माता है इसलिए जब कभी भगवान् अवतार लेगा तो इस धरती पर। ये धरती भगवान् की धरती है ये धरती देवताओं की धरती है, ये धरती आचार्यों की धरती है, साधना की धरती है, ये धरती विचारों की धरती है, और विचारों की स्वतन्त्रता है। हम भगवान् के सम्बन्ध में क्या सोचते हैं। हम भगवान् को कितना जानते है, किस तरह जानते हैं, यह करने की, समझने की बताने की स्वतन्त्रता है। इसलिए अनेकों सम्प्रदाय हैं लेकिन उन सम्प्रदायों में रास्ते अनेक हैं लेकिन लक्ष्य एक है पथ अनेक हैं लेकिन सबका पहुंचने का स्थान एक है। विवेकानंद ने शिकांगों की धर्म सभा में यही कहा था कि मत अनेक हो सकते हैं पन्थ अनेक हो सकते हैं, सम्प्रदाय अनेक हो सकते हैं लेकिन उन सबकी मंजिल, उन सबकी पहुंच, उन सबका लक्ष्य एक ही होता है।

आज हम जिस वैष्णव धर्म के चिन्तन के लिए बैठे हैं, मैं कह सकता हूँ दावे से कह सकता हूँ कि विश्व में कोई ऐसी सोच और धारणा नहीं है जिसमें विचारों के साथ आचरण की पवित्रता पर विशेष ध्यान दिया जाय। विचारों की पवित्रता की बात सब करते है, विचारों की प्रामाणिकता की बात सब करते हैं, लेकिन आचरण की भी पवित्रता हो। भगवान् श्री शंकराचार्य जी विराजमान हैं मैं निवेदन करना चाहुंगा कि भले ही शंकराचार्य, बल्लभाचार्य, निम्बार्काचार्य, रामानुजाचार्य, रामानन्दाचार्य इन आचार्यों के विचारों में अन्तर रहा, भले ही उसमें मतभेद दिखाई पड़ते हैं लेकिन आचरण की पवित्रता को लेकर इस देश के किसी आचार्य में कभी कोई मतभेद नहीं रहा हैं। सभी आचार्य आचरण की पवित्रता को स्वीकार करते हैं और इस सीमा तक स्वीकार करते हैं कि वह कह देते हैं कि हो सकता है कि कोई वैदिक विद्वान् हो लेकिन अगर आचरण उसका प्रामाणिक नहीं हैं, आचरण पवित्र नहीं है तो वह कितना ही वैदिक विद्वान् क्यों न हो, वह पवित्र नहीं हो सकता है। आचार हीन लोगों को यहां स्थान नही है। इस देश में चरित्र जैसी पूंजी पर विचार हुआ, चरित्र की पूंजी हमें प्राप्त हुई। हम भगवान् श्री कृष्ण में, भगवान् श्री राम में अपने आचार्यों में जिस चरित्र की पवित्रता का दर्शन करते है वही पूजनीय है। यही बात विवेकानंद ने विदेश में कहीं थी कि हमारी श्रेष्ठता हमारी पवित्रता, जिस चरित्र को लेकर है वह चरित्र हमें अपने धर्म से प्राप्त होता है। धर्म सबसे बड़ी पूँजी है हमारे लिए,धर्म से बड़ी कोई पूँजी नहीं है। इस देश में धर्म ही मुख्य वस्तु है। यहां रिश्ते तय होते हैं धर्म से, यहां त्यौहार तय होते हैं धर्म से, यहां दिन तय होते है धर्म से, यहां मुहूर्त तय होते हैं धर्म से, सम्बन्धों को तय करता है धर्म माता के पिता के बीच में यदि कोई सेतु है तो वह धर्म है । पति पत्नी के बीच में अगर कोई सेतु है तो वह धर्म है। भाई भाई के बीच में कोई सेतु है तो वह धर्म है। इसलिए भगवान् श्री राम को **धर्म सेतु पालक तुम ताता**, धर्म सेतु है धर्म से ही जुड़ता है। मानव मानव को जुड़ने के लिये आज धर्म के अलावा हमारे पास कोई रास्ता नही है। धर्म का सेतु जितना ही जर्जर हो रहा है उतना ही हमारे जीवन में बिखराव दिखाई पड़ रहा है। ये आज पारिवारिक सम्बन्धों में जोर दार बिखराव दिखाई पड़ रही है। सामाजिक सम्बन्धों में जो दरार दिखाई पड़ रही

है राष्ट्रीय सम्बन्धों में जो दरार दिखाई पड़ रही है।

इस दरार के पीछे कारण केवल इतना ही रहा है कि हम ओर हमारा धर्म का सेतु, कहीं न कहीं कमजोर हो रहा है। जिस देश की मातायें गगन में निकले हुये चाँद को भी, अपने शिशु को जो छोटा है गोद में लेकर जब चलती हैं तो रात का वह कौतूहल से जब चाँद की ओर देखता है, एक जिज्ञासा पैदा होती है कि ये आकाश में क्या है, तो बड़े आसानी से गैर पढ़ी लिखी वह ग्रामीण महिला कहती है, कि ये आकाश में चमकने वाला कोई अजनबी नहीं है बल्कि मेरा भैया है तेरा मामा है। **चन्दामामा दूर के** दूर चमकने वाला चाँद मामा बना जाता है ये धरती माँ बन जाती है गंगा में एक माँ दिखाई पड़ती है। गाय में एक माँ दिखाई पड़ती है जब किसी कालिदास की दृष्टि हिमालय की ओर जाती है तो उसे प्रतीत होता है हिमालय पत्थरों का ढेर नहीं है बल्कि देवतात्मा है।

जिस देश का बालक धरती को प्रणाम करता है, **मां** समझकर प्रणाम करता है, सबसे पहले जन्म देने वाली माँ को बाद में प्रणाम करता है, जगह देने वाली माँ को पहले प्रणाम करता है। हमारी सोच में धार्मिकता है वे ठीक कह रहे थे रमेश अग्रवाल जो भास्कर समूह के हैं, कि धर्म हमारे धर्म स्थानों तक, हमारा धर्म केवल तीर्थों तक, सीमित नहीं है। हमारा धर्म जो जीवन की प्रत्येक विधा को प्रभावित करता है। जीवन के प्रत्येक क्षण को प्रभावित करता है। वैष्णव धर्म आज वैष्णव धर्म की जो चेतना है जो मुख्य तत्व है वह क्या है? हमारे चिन्तन में हमारी जिन्दगी के प्रत्येक क्षण में परमात्मा की उपस्थिति हो परमात्मा सतत उपस्थित रहे, हमारे जीवन में, हमारे सोच में हमारे संस्कारों मैं हमारी अभिव्यक्ति में हमारे अभियान में हमारे आन्दोलन में परमात्मा की उपस्थिति हों परमात्मा भावात्मक रूप से सामने हो। दुर्भाग्य है इस देश का इस देश में हम आजादी की लड़ाई लड़ते रहे, धर्म का नाम लेकर इस देश में हम स्वाधीनता के लिए संघर्ष करते रहे, परमात्मा का नाम लेकर इस देश में आजादी की लड़ाई किसी गाँधी के नाम पर किसी नेहरू के नाम पर नहीं लड़ी गई थी, इस देश में स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी, गई थी, **रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम**। इस देश की राजनीति **रघुपति राघव राजाराम** से शुरू होती थी, इस देश की राजनीति इस राजनीति में पर पीड़ा का अनुभव अगर गांधी जी को होता था तो किसी वैष्णव के सिद्धान्त के अनुरूप होता था, वैष्णव नीति और सिद्धान्त के रूप में देखा जाता था। भक्त की साधना जब जब इस देश में नास्तिकता और विधर्म बढ़ा तब तब देशमें सन्त भगवान् को ही आगे लेकर चले चाहे चैतन्य हो रामानुज हों, चाहे भगवान् रामानन्द हों, उन्होंने भगवान् को आगे लेकर भगवान् को अपने सिर पर रखकर, भगवान् का नाम लेकर जन जन को मार्ग बता दिया। मैं तो वैष्णवजन को प्रणाम करता हूँ कि जिन्होंने साधना की दुरूहता को, साधना की क्लिष्टता को इतना सरल बना दिया कि **''हरि का भजै सो हरि का होय''** केवल रामनाम लेने से, भगवन्नाम लेने से। जब भगवान् रामानुज से कहा गया कि ये तुमको नामदीक्षा दी जा रही है, ये नामदीक्षा योग्य व्यक्तियों को देना, क्यों कि अयोग्य व्यक्तियों को अगर दिया। तो नरक में जाओगे, और कहा जिसका दिया गया तो वह पाप मुक्त हो जायेगा। भगवान् रामानुज ऊंचे स्थान पर खड़े होकर भगवान् का नाम जोर जोर से बोलने लगे कि सारी दुनियां पापमुक्त हो जाये, भले ही हम नरक में जाये, हमें कोई फर्क नहीं पड़ता है। जिस देश के आचार्यों, में जिस देश का आचार्य देश की पवित्रता के लिए, समाज की पवित्रता के लिए, और आज भी मैं कहता हूँ कि अगर समाज में नैतिकता कहीं बची हुई हैं, समाज में आचरण की पवित्रता कहीं बची हुई है, समाज में चरित्र की मर्यादा

कहीं बची हुई है, तो वहीं बची हुई है जहां किसी आचार्य का अनुशासन चलता है, धार्मिक है, नैतिक है, और मैं यह भी कह सकता हूँ कि जो धार्मिक है नैतिक है, वही संविधान और संवैधानिक मर्यादाओं का आदर कर सकता है जो अधार्मिक है, विधर्मी है, जिसने धर्म के अनुशासन को इन्कार कर दिया, उसके बारे में कोई गलतफैमी नहीं होनी चाहिये कि वह संविधान की मर्यादा का भी पालन करेगा। यह आज बड़ा दौर चल रहा है कि संविधान बड़ा हो गया, संविधान की मर्यादा बड़ी हो गई, संविधान की मर्यादा अगर तय करती है कि राष्ट्रपति के खिलाफ कोई मुकदमा दर्ज नहीं किया जा सकता। संविधान मर्यादा तय करता है कि प्रधानमंत्री के खिलाफ कोई मुकदमा दर्ज नहीं किया जा सकता, यहां तक कि इस देश में एक पटवारी के खिलाफ भी कोई मुकदमा दर्ज होता है तो उसे उसके पद से अलग किया जाता है उसके बाद उसको जेल भेजा जाता हैं एक संवैधानिक मयार्दा तय की गई। लेकिन मैं संवैधानिक मर्यादा के पक्षधर लोगों से पूछना चाहता हूँ कि संवैधानिक मर्यादा सन् उन्नीस सौ पचास में तय हुई उसके पहले क्या इस देश का समाज मर्यादित नहीं था, क्या इस देश के लोग मर्यादित नहीं थे? इस देश की कोई मर्यादा नहीं थी वहीं देश है जहां भगवान् श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा गया। मर्यादा जिस देश में, जहां के कोल भील भी मर्यादाओं का पालन करते हैं, जंगली जीव भी जहां मर्यादाओं का पालन करते है वह मर्यादा किसी संविधान की देन नहीं है। किसी संसद की देन नहीं है, किसी सरकार की देन नहीं है। बल्कि मैं कहता हूँ आज जितने अमर्यादित आचरण हो रहे है, उन्हीं लोगों के हैं जो संसद के सदस्य होते है, जो विधानसभाओं के सदस्य होते हैं, सरकारों के सदस्य होते हैं। धर्माचार्यों का आचरण जिनका खान, पान, रहन, सहन, सब कुछ अनुशासित है। श्रीजी महाराज कितने लोगों के प्रेरणा के प्रतीक हैं, कितने लोग ऐसे हैं हजारों लाखों लोग है जो इनके लिए अपने प्राण भी अर्पित कर सकते हैं, अपना जीवन अर्पित कर सकते है लेकिन ये अब भी अपने रहन-सहन की मर्यादा पा पालन स्वयं अपने हाथों से भोजन बनाकर करे मर्यादा है। उसे मर्यादा का पालन आज से नहीं पीढ़ीयों से चल रहा है। भगवान शंकराचार्य विराजमान हैं इनकी मर्यादा पीढ़ीयों से चल रही है। आखिर इस लोक मर्यादा की रक्षा किसने की है। हमें तो महादेवी वर्मा की वह बात याद आती है, जो प्रयाग में एक बार उन्होंने कहा था ''कि ये धर्म लोगों के दिल दिमाग में अंकित है धर्म का विधान तभी है तक संविधान का आदर होता है, जिस दिन धर्म के विधान की कड़ियां टूटेगी, संविधान की धज्जियां उड़ जायेंगी।'' मैं जानता हूँ संसद को, मैं पन्द्रह साल से लगातार संसद में रहा हूँ । संसद की मर्यादायें देश की मर्यादायें नहीं बन सकतीं संसद की मर्यादा समाज की मर्यादा नहीं बन सकती लेकिन समाज की मर्यादायें, समाज में आचरण, समाज की पवित्रता यह संसद और सविधान की मर्यादा बन सकती है अगर समाज को यह संसद और संविधान की मर्यादा बन सकती है अगर समाज को पवित्रता की ओर ले जाना है समाज के आचरण की पवित्रता को स्थापित करना है तो हमें आचार्यों की इन इस अनुशासन को स्वीकार करना होगा। हमें मानकर चलना होगा कि आचार्य ही देश और समाज में मर्यादा और अनुशासन को कायम कर सकते हैं। इसलिए महाराज जैमिनि ने जब धर्म शास्त्र की बात की थी। उन्होंने तब मीमांसा की रचना की थी, पहला सूत्र लिखा था ''**अथ धर्मानुशासनं**'' ये धर्म एक अनुशासन है, कौन सा अनुशासन? अनुशासन वह है जो आदमी स्वयं स्वीकार करता है अपने आप। ये सनातन धर्म जिस की मर्यादाओं की याद आती है तब रोमांचित हो जाता हूँ। अगर स्वर्ग के देवताओं को भी

कभी अपनी सुरक्षा की जरूरत होती थी, अपने बचाव की जरूरत होती थी वो धरती की इस भारत की धरती के धर्म पुरुषों को आमन्त्रित करते थे। अर्जुन जब इन्द्र की सभा में थे। और इन्द्र की चहेती अप्सरा रात में आकर उनसे प्रणय निवेदन करती है तो उस समय अर्जुन क्या कहता है अर्जुन कहता है कि **''तुम अगर मेरा जैसा पुत्र चाहती हो तो यह आवश्यक नहीं है कि तुम्हारे शारीरिक सम्बन्ध से जो सन्तान पैदा हो, वह मेरी जैसी हो, अगर तुम मुझे पुत्र रूप में देखना चाहती हो तो मुझे पुत्र के रूप में स्वीकार करो, तुम्हें मैं माँ के रूप में नमन करता हूँ तुम्हारे चरण छूता हूँ।''** यह देश मर्यादाओं का देश रहा है। चाणक्य अपनी कुटिया में बैठा हुआ है। एक विदेशी राजदूत आता है। वह अपनी कुटिया में जलते हुये दीपक को बुझा देते हैं और एक दूसरा दीपक जला देते हैं। जब तक वह बैठा हुआ है। जब तक वह बैठा रहता है तब तक वह दूसरा दीपक जलता रहता है जब वह जाता है तो वह दीपक बुझा कर फिर दूसरा दीपक जलाया। एक साधक बैठा हुआ वह प्रश्न करता है कि आपने ऐसा क्यों किया उस के आने पर एक दीपक जला लिया, कहा कि पहले वाला दीपक जो जल रहा था वह हमारे शिष्यों के दान से दिये हुये धन से तेल खरीदा गया था, जल रहा था। सरकारी कामकाज से कोई आया तो सरकारी तेल का दीपक जलाया गया और सरकारी काम करके वह चला गया तो सरकार का पैसा खर्च नहीं होना चाहिये इसलिए दीपक बुझा कर अपने तेल का फिर इन्तजाम कर लिया। क्या आज नैतिक जीवन में सामाजिक सरकारी जीवन में इस नैतिकता का अनुपालन करने की हिम्मत हैं, लोगों में। आज भ्रष्टाचार हमारी जीवन का एक स्थाई अंग बन गया है हम भ्रष्ट हो गये हैं। चरित्र की बात करने वाला देश किस सीमा तक चरित्र हीन हो गया है, इस चरित्र के बारे में चिन्तन करना होगा।

मैं पूर्व बात पर लौटना चाहता हूँ कि धर्म का सेतु कहीं न कहीं जर्जर हो गया है। धर्म का सेतू कहीं न कहीं कमजोर हो गया है श्रीजी महाराज के चरणों में प्रणाम करते हुये कहता हूँ कि उन्होने सेतु निर्माण का काम शुरू किया है। ये विभिन्न सम्प्रदायों के आचार्य आज बैठ करके धर्मानुशान कायम करने जा रहे हैं। अपराधी, संसद में, और आचार्य बन्दीगृह में, देश को धर्म का अनुशासन देने वाला हत्यारा कहा जा रहा है और देश की आत्मा की हत्या करने वाले राजनयिक देश के नेता कहे जा रहे हैं।

इस विडम्बना से बचाने की जरूरत है देश को और देश इस विडम्बना से बचेगा, इस देश का भविष्य और इस देश का भाग्य आज भी सुरक्षित है तो ईश्वर के लिए अपने सारे सुख छोड़कर भाव भजन में लीन रहने वाले इन आचार्यों के हाथों में सुरक्षित है। जैसे मैं निवेदन करना चाहूंगा लंका तब तक सुरक्षित थी, रावण के सैन्य बल से, ऐसा लगता था कि लंका सुरक्षित थी रावण के बाहुबल से, ऐसा लगता था कि लंका सुरक्षित थी रावण के धन बल से, लेकिन यह सब झूठ है। अभी हमारे बाबा राम लखन दास जी कह रहे थे लंका अगर सुरक्षित थीं तो केवल विभीषण के कारण। एक धार्मिक व्यक्ति एक धार्मिक परुष अगर राज्य में विद्यमान है तो राज्य का अनिष्ट तब तक नहीं होगा जब तक वह धर्म पुरुष विद्यमान है।

हनुमान जी ने सोचा कि लंका का अनिष्ट तो तब तक हो नहीं सकता है, लंका तो मिटाई नहीं जा सकती है, जब तक विभीषण मौजूद है। रावण बड़ा चतुर था, रावण बहुत चालाक था उसने सोचा कि पूरे विश्व से धर्म को मिटा दो, पूरे विश्व से धर्म को समाप्त कर दो। लेकिन एक धार्मिक व्यक्ति को बचाये रखो, जिससे जब कोई कहे कि आप धर्म का पालन नहीं कर रहे हो

तो कहेंगे कि देखो विभीषण हमारा भाई है। आज भी इस तरह के लोग हैं उन्होंने एक न एक धर्माचार्य कहीं न कहीं पकड़ लेते हैं और जब कभी अगुँली उठाई जाती है तो धर्माचार्य को पेश कर देते हैं कि यह हमारे साथ में है। हनुमान जी ने सोचा पहले इनको यहां से ले चलना चाहिये। जिस दिन विभीषण ने लंका छोड़ी, लंका को जलने में लंका को दग्ध होने में देरी नहीं लगी। मैं दूसरी बात कहता हूँ, कौरवों का अन्त तब तक नहीं हुआ जब तक कि विदुर उनके साथ थे। जिस दिन विदुर ने छोड़ा सीधे सीधे कह सकता हूँ कि कौरवो की रक्षा में अपने बाहुबलों से नहीं बल्कि विदुर मंच पर बैठे हुये थे। धर्माचार्य इस देश की वह सुरक्षा की दीवार हैं जब तक यह इनकी साधना सुरक्षित है, जब तक इनकी मर्यादा सुरक्षित है, इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूँ इस मंच के माध्यम से कि समय आ गया है कि अब ऐसी सभी व्यवस्थाओं को हमें उखाड़ कर फेंक देना चाहिये जो धर्म की मर्यादा का अतिक्रमण करती है, धर्म निरपेक्षता, धर्म निरपेक्षता क्या चीज होती है ? यहां छोटे से अणु का धर्म होता है, परमाणु का धर्म होता है। संसार में जल का भी धर्म होता है अग्नि का भी धर्म होता है। पृथ्वी का भी धर्म होता है, आकाश का भी धर्म होता है, पशुओं का धर्म होता है, पक्षियों का धर्म होता है, वे अपने अपने धर्म का पालन करते हैं। और उनका धर्म ही उनको जीवित रखता है।

इसलिए आज भी मैं कहता हूँ, संसद सुरक्षित है एक वाक्य के कारण। संसद के स्पीकर जहां बैठते है वहां लिखा हुआ है **''धर्म चक्र प्रवर्तनाय''** धर्म चक्र चलाने के लिए संसद बैठती है। जहां सुप्रीम कोर्ट का सर्वोच्च न्यायालय है वहां लिखा हुआ है- **''धर्मो रक्षति रक्षितः''**। धर्म की रक्षा करते हैं इसलिए हमारी रक्षा हो रही है। हम ये कहते हैं ये तो **''यतोधर्मस्ततो जयः''** धर्म के बारे में धारणायें क्यों बदल रही हैं। नास्तिकों का प्रभाव बढ़ रहा है, विधर्मियों का प्रभाव बढ़ रहा है। ये विधर्मियों का, नास्तिकों का बढ़ता हुआ प्रभाव, इस देश के शासकों के पास कोई नीति नहीं। मैं निवेदन करना चाहुंगा कि समय है हमें तय करना होगा कि कांची के आचार्य को गिरफ्तार नहीं किया गया ये हमारे आचार्यों के उस परम्परा को लांछित करने की कोशिश की गई हैं। मैं निवेदन करना चाहुंगा कि इस देश में एक संगठन जो हिन्दुत्व की बात करता है उसके ऊपर गाँधी हत्या का आरोप लगा दिया। इस देश में जितने आचार्य, जितने नेता हिन्दुत्व की बात करते थे, उनके ऊपर आपराधिक मुकदमें दायर कर दिये गये। और जो अचार्य आज हिन्दूत्व की बात करते हैं, सनातन धर्म की बात करते हैं उनको हत्यारा साबित करने के घटिया षडयन्त्र किया जा रहा है, वाह तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जयललिता मुझे एक सुरसा दिखाई पड़ रही है सुरसा। वह सुरसा जो हनुमान को निगलने की कोशिश कर रही है, लेकिन **''जस जस सुरसा''** जो हनुमान को निगलने की कोशिश कर रही हैं लेकिन जस जस सुरसा वदन बढ़ावा, तासु दून कपि रूप दिखावा। आज धर्माचार्यों के सम्मुख उपस्थित यह जन सैलाव साबित करता है कि आज भी इस धरती पर आचार्यों के प्रति जो आस्था हैं उसको चुनौती नहीं दी जा सकती। इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि वक्त आ गया है हमें धर्माचार्यों के अनुशासन को स्वीकार कर देश की व्यवस्था में बदलाव लाना चाहिये और संविधान में भी अगर बदलाव की जरूरत है, अगर यह संविधान किसी राष्ट्रपति के सम्मान की चिन्ता करता है, किसी प्रधान मन्त्री के सम्मान की चिन्ता करता है तो इस देश में संविधान इस प्रकार का होना चाहिये कि धर्माचार्यों के सम्मान की भी सुरक्षा हो उसके लिए भले ही संविधान व्यवस्था होनी चाहिये, जिन आचार्यों के सम्मान की चिन्ता देश का संविधान क्यों नहीं कराता है।

जगद्गुरु वल्लभाचार्य श्री वल्लभराय जी महाराज

-सूरत

निम्बार्क तीर्थ में चल रहे विराट् सम्मेलन के अन्तर्गत यहां प्रातः कालीन सत्र में आज वैष्णव धर्म सम्मेलन सम्पन्न हो रहा है। हमारे पूर्व वक्ताओं ने वैष्णव धर्म के सम्बन्ध में तथा अन्यान्य विषयों पर भी मननीय विचार प्रस्तुत किए हैं। ऐसा लगता है कि आज के युग को देखते हुये वैष्णव धर्म पर प्रकाश डालने वाला यह जो सम्मेलन यहां समायोजित किया गया है वह बड़ा ही समयानुरूप है । यह निश्चित तथ्य है कि आज के इस अशांति के युग में समस्त विश्व को शान्ति का मार्ग यदि कोई भी दे सकता है तो वह वैष्णवधर्म ही है। जिन मनीषियों ने पूर्ववक्ताओं ने विचार व्यक्त किए हैं। वह बड़े ही यथार्थ हैं। यदि हम वैष्णवता की ओर अग्रसर होते हैं तो निश्चित ही आज हम जिन परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं उससे हम मुक्त हो सकते हैं। लेकिन दुःख की बात यह है कि जब भी वैष्णव शब्द, वैष्णव सम्प्रदाय शब्द सामने आता है तब आज के लोग वैष्णव शब्द से या वैष्णव सम्प्रदाय आदि शब्दों से कुछ अनर्थ की कल्पना कर लेते हैं। यद्यपि एक बात निश्चित है कि समाज में वैष्णव शब्द का एक अपना आकर्षण भी है। हर कोई व्यक्ति यह कहना चाहता है कि हाँ भाई हम भी वैष्णव हैं। आप किसी को भी पूछेंगे तो कहेंगे हाँ हम भी भगवान् की भक्ति करते हैं हम भी वैष्णव हैं। लेकिन श्रीमद्भागवत में नारद जी के उन वचनों को याद करने की आवश्यकता है आज इस वैष्णव धर्म सम्मेलन में, नारद जी ने देखा और कहा कि **''नहिं वैष्णवता कुत्र सम्प्रदायपुरस्सरा''** कहने के लिए वैष्णव हैं लेकिन सम्प्रदाय पूर्वक वैष्णवता, सम्प्रदाय पुरस्सर जो होनी चाहिये उस वैष्णवता का दर्शन नहीं होता है, ऐसा नारद जी कहते हैं। कलि के प्रभाव से उस समय यह अनुभव नारद जी ने किया। इसमें यह वेदना का भाव सूचित होता है कि वैष्णवता सम्प्रदाय पुरस्पर होनी चाहिये। कुछ लोगों ने वैष्णव शब्द को सुनकर ऐसा समझ रखा है कि यह वैष्णव शब्द एक सीमित वर्ग के लिए कहा जाता है और वो हमारे गुर्जर प्रान्त में कुछ विद्वान् ऐसा कहते हैं कि वैष्णव शब्द का प्रयोग करके लोग वारा बना रहे हैं, यानि अलग अलग समुदाय बना रहें है छोटे छोटे समुदायों का निर्माण कर रहे हैं, अर्थात् समाज का विभाजन कर रहे है। सम्प्रदाय शब्द जब सामने आता है तो आज के राजनैतिक लोगों ने सम्प्रदाय शब्द को ऐसा दूषित बना दिया है कि सम्प्रदाय शब्द सुनकर भी हम यह समझते हैं कि कोई एक संकीर्णतावाद समाज में लाया जा रहा है। आपने बहुत से राजकीय नेताओं के भाषण, उनके विचार सुने होंगे साम्प्रदायिकतावाद भड़काया जा रहा है, सम्प्रदायवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। लेकिन हमारे यहां सम्प्रदाय शब्द कोई सीमित वर्ग की दृष्टि से प्रयुक्त नहीं हुआ, परन्तु सम्प्रदाय शब्द का अर्थ है **''सम्यक् प्रकृष्ट दान।''** **''सम्यक् प्रकृष्ट''** अच्छी तरह से यानि परम्परा से, **परम्पराप्राप्तं हरि मन्त्रादि कर्मकं सर्व प्रकृष्ट वाग्दानं सम्प्रदायो हिउच्यते**। सम्यक् अच्छी तरह से यानि परम्परा से, परम्पराप्राप्तं जो श्रेष्ठ दान दिया जाता है भगवान् मन्त्र आदि का, ब्रह्मविद्या आदि का उसको सम्प्रदाय कहते हैं। यह जो सम्प्रदाय प्रणाली है सम्प्रदाय की जो परम्परा है वो परम्परा अपने आप में बहुत महत्व रखती है जिसको आज हम बहुत तुच्छ समझते हैं या हेय समझते हैं वह वास्तव में सम्प्रदाय तत्व नहीं है। हमारे यहां पर आत्मोद्धार के लिए विविध सम्प्रदायों का आर्विभाव हुआ है।

बड़ा सुन्दर कहा हमारे प्रपन्नाचार्य जी ने कि सम्प्रदाय अनादि होते हैं। कोई संस्था को हम नई तरह से खोल सकते हैं, संस्था खोल सकते हैं, संस्था बना सकते हैं, परन्तु सम्प्रदाय साक्षात् परमात्मा से ही प्रवर्तित हैं। जितने

भी सम्प्रदाय हैं वह सम्प्रदाय साक्षात् परमात्मा से ही प्रवर्तित हैं। वैष्णव सम्प्रदायों के लिए हमारे यहां पर वैष्णव चतुः सम्प्रदाय शब्द से इनको जाना जाता है और उसके लिए यह कहा गया है कि **''श्री ब्रह्मरूद्र सनकाः वैष्णवाः क्षितिपावनाः। चत्वारस्ते कलौभव्याः सम्प्रदाय प्रवर्तकाः।''** साक्षात् परमात्मा ने इस धरातल पर उत्पन्न होने वाले विविध जीवों के अधिकार को ध्यान में रखते हुये भगवान् ने चार विशिष्ट सम्प्रदायों को प्रवर्तित किया श्री ब्रह्मरुद्र सनकादिके माध्यम से जो लक्ष्मी जी के माध्यम से आज सम्प्रदाय प्रवर्तित हुआ वह ही परिवर्तीकाल में श्री रामानुज सम्प्रदाय के रूप में जाना गया। ब्रह्मा जी से जो सम्प्रदाय प्रवर्तित हुआ वह सम्प्रदाय ही परिवर्तीकाल में मध्व सम्प्रदाय के रूप में जाना गया, सनकादिक मुनियों के माध्यम से जो सम्प्रदाय प्रवर्तित हुआ वही सम्प्रदाय परिवर्तीकाल में श्री निम्बार्क सम्प्रदाय के नाम से जाना गया और शिवजी के माध्यम से जो सम्प्रदाय प्रवर्तित हुआ वही सम्प्रदाय विष्णु स्वामी सम्प्रदाय के नाम से जाना गया है और वही सम्प्रदाय में हमारे श्री बल्लभाचार्य जी भी हुये। तो इस प्रकार से चार सम्प्रदाय हैं। श्री रामानन्द सम्प्रदाय आदि भी सम्प्रदाय इसी प्रकार से देखने को मिलते हैं लेकिन यह ध्यान में रखना चाहिये कि कोई भी व्यक्ति को यह अधिकार नहीं है कि अपने तरफ से यह घोषणा करे कि मैंने कोई सम्प्रदाय शुरू किया है। रोज नये नये मन्त्र अस्तित्व में आ रहे हैं। रोज नये नये डोरे धागे और न जाने नई नई साधना पद्धति समाज में अस्तित्व आ रही है। दुःख की बात यह है कि हमारी प्रामाणिक परम्पराओं को जितना उसका अनुसरण करके लोगों को लाभान्वित होना चाहिये उसके वजाय ऐसे जो नये नये सर्कस चलते हैं उसमें हमारी भोली भाली प्रजा ज्यादा प्रभावित हो जाती है। इसलिए सम्प्रदाय जो प्रामाणिक सम्प्रदाय है उन प्रामाणिक सम्प्रदायों का समाश्रय करते हुये हमको अपने आत्मोद्धार के मार्ग पर अग्रसर होना चाहिये। हमारे यहां पर ऐसा कोई दुराग्रह नहीं होता है कि हर किसी व्यक्ति को एक ही प्रणाली से चलना होगा। क्यों कि अधिकार भेद का विचार किया गया है इसलिये जिसकी जैसी रुचि होगी जैसा भगवान् ने जिसके लिए अधिकार निर्मित किया है उसके अनुसार उसको फल मिलेगा और उस फल के लिए उसको साधनादि अनुष्ठान करने का होता है। सम्प्रदाय तत्व की यदि प्राप्ति नहीं हुई तो हमारा आत्मोद्धार नहीं हो सकता है। इसलिए शिवजी ने पार्वती जी को यह रहस्य समझाया है **''सम्प्रदायविहीनानां समस्ताः निष्फलाः क्रियाः''** सम्प्रदाय विहीन जो होगे उनकी समस्त क्रिया निष्फल है, आप चाहे कितनी भी कर लें, लेकिन आपको कोई प्रामाणिक सम्प्रदाय प्राप्त नहीं हुआ तो वह सारी की सारी क्रिया निष्फल है- **''अदीक्षितस्य वामोरू कृतं सर्व मनर्थकं''** जो सम्प्रदाय पूर्वक दीक्षित नहीं है उसका किया हुआ सब कुछ व्यर्थ है। इन सब वचनों से यह सिद्ध होता है कि इस कलिकाल में हमको यदि अपना आत्मोद्धार और अपने जीवन का सर्वांगीण विकास करना हो, इस लोक में और इस लोक के बाद भी हमको हमारा जीवन का सम्पूर्ण विकास करना हो और परम निःश्रेयस की प्राप्ति करनी हो तो सम्प्रदाय का आश्रय करना पड़ेगा, और करना चाहिये यह निश्चित बात हैं।

आज जो धर्मान्तरण का प्रश्न चल रहा है बहुत बड़ा ज्वलन्त प्रश्न धर्मान्तरण आ जाता है। हमने एक वस्तु का बहुत अच्छी तरह से अध्ययन किया कि धर्मान्तरण के प्रभाव में वे ही लोग आ जाते हैं जिनको कोई प्राणामिक सम्प्रदाय नहीं मिला हैं।

आप देख लेना जिनको, जिनके कुटुम्ब में जिनके परिवार में या जिनको कोई प्राणामिक सम्प्रदाय नहीं मिला है, प्राणामिक सम्प्रदाय का समाश्रय करके जो लोग नहीं रहे हैं ऐसे लोगों पर ही धर्मान्तरण का प्रभाव

आता है बाकी जिन लोगों ने कोई भी सम्प्रदाय का आश्रय किया हो धर्मान्तरण कभी सम्भव नहीं है। एक बात निश्चित है कि इस राष्ट्र की रक्षा यदि करनी हो तो हमको हिन्दुत्व की रक्षा करनी पड़ेगी। जैसे हमने कल आपको श्री शंकराचार्य जी का गीता भाष्य का वचन स्मरण में दिलाया था कि- ''**ब्राह्मणत्वस्य हि रक्षणेन रक्षितो भवति वैदिको धर्मः**'' ब्राह्मणत्व के रक्षण से ही वैदिक धर्म की रक्षा हो सकती है। उस प्रकार आज के वर्तमान संदर्भ में कोई अनुचित नहीं होगा हिन्दुत्व की रक्षा हो सकती है। लेकिन हमारे यहां पर जो हिन्दुत्व की भी विचारणा की जाती है और वैष्णवता की भी जो विचारणा की जाती है उसमें कभी कभी हमको कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि महाराज जी आप अपने भाषण में वैष्णवता की बात कृपया ना करें। ऐसा कुछ लोग हमको कभी कभी आकर सुझाव देते हैं क्यों कि उनके दिमाग में वैष्णवता का अभिप्राय कोई संकीर्णता के भाव से लिया हुआ शब्द है या अर्थ है उनका ऐसा एक भ्रम है। हिन्दुत्व अपनी जगह पर यथास्थित है और वर्तमान में उस है जगाने की आवश्यकता लेकिन जहां तक हिन्दुतव और वैष्णवता का प्रश्न है हमारा ऐसा मानना है कि कि वैष्णव शब्द इतना व्यापक अर्थ को लिया हुआ है कि उसके अन्दर हिन्दुत्व भी समाविष्ट हो जाता है ऐसा हमारा दृढ़ मन्तव्य हैं। क्यों कि

विष्णुः शब्द बना कैसे। इसको आप थोड़ा देखिये। विष्णु शब्द जो है वो विष्लृ व्याप्तौ धातु से बना हुआ है तो सारे जगत् में व्याप्त होकर रहने वाला जो तत्व उसको विष्णु कहते हैं। यद्यपि हमारे शास्त्रों में अनेक ऐसे शब्द हैं कि जिसका अर्थ सन्दर्भ के अनुसार, प्रकरण को देखकर करना होता है जैसे आत्मा शब्द है तो आत्मा शब्द का अर्थ परमात्मा भी हो सकता है, कभी आत्मा शब्द का अर्थ जीवात्मा भी हो सकता है, कभी आत्मा शब्द का अर्थ, आत्म सुख जैसे शब्दों मेंअन्तः करणवाची भी हो सकता है, कभीआत्मा शब्द का अर्थ देहवाची भी शास्त्रों में अनेक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। विष्णु शब्द से जैसे ब्रह्मा, विष्णु, महेश ये त्रिदेव हैं। वो तीन देवो के अन्तर्गत एक सत्वगुण अधिष्ठता सत्वगुण अवतार रूप जो है वे भी विष्णु कहे जाते हैं। लेकिन हर व्यक्ति विष्णु शब्द को इसी अर्थ में लेता है ऐसा नहीं है इसलिए- ''**पुराणपुरुषो विष्णुःपुरुषोत्तम उच्यते**'', पुराण परुष विष्णु के रूप में जब ''**विष्णु**'' शब्द आता है तो वहां पर साक्षात् पुरुषोत्तम परमात्मा परब्रह्म ''**विष्णु**'' शब्द से लिए जाते हैं क्यों कि सर्वव्यापक कौन है। कण कण में चराचर जगत में व्याप्त होकर रहने वाला तत्व यदि कोई भी हो तो वह परमात्मा है।

इस रूप में यदि देखा जाय तो विष्णु शब्द परमात्मवाची माना जाता है, जो सर्वव्यापक तत्व हैं। सर्वव्यापक तत्व के अर्थ में ''**विष्णु**'' शब्द परमात्मावाची है। ''**विष्णु**'' शब्द से ही वैष्णव शब्द आया है। सरल अर्थ में समझें जो विष्णु का हो जाय वह वैष्णव जो विष्णु का बन गया है वह वैष्णव। इसका मतलब क्या हुआ जिसका सर्वव्यापक शब्द से सम्बन्ध स्थापित हो चुका है, जो सर्वव्यापक तत्व का हो चुका है वो वैष्णव है। अब इस रूप में यदि देखा जाय जैसे अभी पहले ही कहा गया था कि भाई एक को जानने से सभी का ज्ञान हो जाय। हमारे यहां पर शास्त्रकारों ने शौर्टकट ढूढ़ा है क्यों कि हमारी आयु कम है अनेक आधि व्याधि है, उसमें हमको जीवन में लक्ष्य प्राप्त करना हो तो शौर्टकट ढूढ़ना ही जरूरी है। जिस प्रकार एक के ज्ञान से सबका ज्ञान हो जाता है वह जो पद्धति है उसी के अनुसार यदि हम परमात्मा के बन गये यदि हम सर्वव्यापक तत्व के बन गये तो हमारा सम्बन्ध सभी के साथ स्थापित हो जाता हैं, सभी के साथ आत्मीयता का रह जाता हैं जो वैष्णव बन जायेगा उसके हृदय में सर्वव्यापक तत्व वह भगवान् विराजमान होने के कारण

वह सर्वत्र भगवान् का दर्शन करेगा, कहीं उसको भेदभाव की भावना, **''अयं निज परोवेति :''** यह भाव उसके मन में नहीं रहता है। इसलिए भक्ति का जो स्वरूप बताया है उसका तात्पर्य यही बताया है- **''एकान्तभक्तिर्गोविन्दे यत् सर्वत्र तदीक्षणम्''** सर्वत्र भगवान् को देखना यही वास्तव में एकान्त भक्ति योग है। और अभी अभी एकादश स्कन्ध के और भी श्लोक का यहां पर स्मरण आपने करवाया था हमारे निम्बार्क सम्प्रदाय के ही मनीषी हैं। **''सर्वभूतेषु यःपश्येद् भगवद्भाव्मात्मनः। भूतानि भगवत्येषस बै भागवतोत्तमः''** जो प्राणी मात्र में भगवान् का दर्शन करता भगवान् में प्राणी मात्र का दर्शन करता, यह वास्तव में श्रेष्ठ वैष्णवता के माध्यम से ही हो सकता है इसलिये, **''दयया सर्वभूतेषु सन्तुष्ट्या येन केन चित। इन्द्रियाणां प्रशान्त्या च तुष्यत्याशु जनार्दनः''** यह भी कहा गया है तो हमको वैष्णव तत्व क्या है यह समझना चाहिय। आज जो हम इन शब्दों के रहस्य को समझे बिना ही दौड़ते रहते हैं वह बहुत बड़ी हमारी भ्रमणा है।

हमारे वैष्णव सिद्धान्तों के अनुसार यदि देखा जाय तो एक तरफ वर्णाश्रम धर्म की मर्यादा, वर्णाश्रम धर्म को क्यों कि कोई भी आचार्य वर्णाश्रम धर्म का विरोध नहीं कर सकते हैं, और वर्णाश्रम धर्म के खिलाफ बोल नहीं सकते हैं क्यों कि जब भगवान ने ही चातुर्वण और आश्रम को प्रवर्तित किए हैं तो उसका कभी विरोध करना संभव नहीं है। परन्तु वर्णाश्रम धर्म की व्यवस्था को सम्पूर्ण अपने आपमें सुरक्षित रखते हुये भी प्राणीमात्र के उद्धार का मार्ग यदि कहीं पर भी प्रशस्त हुआ हो तो वो केवल वैष्णव सम्प्रदायों में हुआ हैं। वैष्णव धर्म के माध्यम से हुआ है जहां पर प्राणी मात्र के उद्धार की बात कही गई है। **''मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः। स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्''**॥ भगवद्भक्ति को प्रवर्तित करने वाले आचार्यों ने इस पर बहुत ध्यान दिया है भगवान् श्री कृष्ण स्वयं कहते हैं कि उनका आश्रय करने पर चाहे स्त्री हो शूद्र हो कोई भी हो हर किसी का उद्धार हो जाता है इसलिए भागवत में भी कहा गया है कि भगवान की भक्ति का सबको अधिकार है, भगवान् की भक्ति में सभी अधिकारी हैं भगवान की भक्ति भगवान् की जिस पर कृपा हो वह सभी कोई कर सकते हैं। **देवो सुरो मनुष्यो वा यक्षो गन्धर्व एव च। भजेन्मुकुन्द चरणं स्वस्ति मान्स्याद् यथा वयम्**।। इस युक्ति के अनुसार चाहे देव हो, मनुष्य हो, गन्धर्व हो, यक्ष हो, कोई भी हो हर किसी को भगवान् की भक्ति के द्वार आचार्यों ने प्राणीमात्र के लिए खोल दिये और हमारे श्रीनारद जी ने तो यहां तक कहा कि, मैं भगवान् का दास तब कह लाऊंगा जब मैं जन जन में और घर घर में भक्ति को प्रवर्तित कर दूंगा। आप भागवत के महात्म्य में पढ़ेंगे तो ये वहां पर प्राप्त होता है भक्ति के अचार्य श्री नारद जी कहते हैं कि मैं जन जन और घर घर में जब भक्ति को प्रवर्तित कर दूंगा तब मुझे सन्तोष होगा। यदि मैं जन जन में और घर घर में भक्ति को प्रवर्तित न कर दूं तो मैं भगवान् का दास नहीं इस प्रकार इन्होंने भक्ति के प्रर्वतन का क्यों आग्रह रखा? भगवान् की भक्ति एक ऐसा तत्व है कि जिसके माध्यम से हमारा सर्वांगीण उत्थान अभ्युदय हो सकता है। इसलिए हमारा आग्रह यह होना चाहिये कि यदि प्राणीमात्र को हम सर्वोत्तम फल का अनुभव करवाना चाहते है तो हमको घर घर में और जनजन में भगवद् भक्ति का प्रचार करना जरूरी है, वैष्णवता का प्रचार करना जरूरी है। वैष्णवता का सिद्धान्त बड़ा ही सुलभ सिद्धान्त है। इसमें कोई भी साधनों की कठिनता नहीं है। आम व्यक्ति भी इसका अनुसरण कर सकता हैं। इसलिए श्रीमद्भागवत के एकादश स्कन्ध में जब भागवत धर्म की चर्चा की गई कि भागवत धर्म कौन से है? इस पर विचार हुआ

यानास्थाय नरोराजन् न प्रमाद्येतकर्हिचित्
धावन् निमील्य वा नेत्रे नस्खलेन्नपते दिह।
ये वै भगवता प्रोक्ताः उपाया आत्मलब्धये
अञ्जः पुंसामविदुषां बिद्धि भागवतान् हि तान्।

इन शब्दों में भागवत धर्म का प्रतिपादन किया गया है। भगवान् ने साक्षात् अत्यन्त सरलता से और शीघ्र ही फल प्राप्ति के लिए जो उपाय बताये हैं उन उपायों को भागवत धर्म के नाम से शास्त्रों में बताया गया हैं। भागवत धर्म का अनुसरण करने का क्या माहात्य है,जैसे कोई बड़ा राजमार्ग हो, हाइवे हो, उस हाइवे के ऊपर आप आँख बन्द करके भी चलें जाये, आप दौड़े भी तो कहीं आपको गिरने पड़ने की या ठोकर लगने की कोई संभावना नहीं रहती, आपको कोई भय नहीं रहता है कि हम गिर जायेंगे। इसी प्रकार भागवत धर्म का आश्रय करके जो लोग चलते हैं उनको कहीं भी गिरने का, खलन होने का भय नहीं होता है और वह अपने लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं। भागवत धर्म का स्वरूप क्या है बहुत संक्षेप में उसको समझ लें कि, काया से, मन से, वाणी से, बुद्धि से, स्वभाव से, प्रकृति से, हम जो कुछ करते हैं वो भगवान् को अर्पण करने की भावना से करें और उसी प्रकार का हम हमारा जीवन बितायें, यह हमारे लिए आवश्यक हैं, हमारे भागवत सिद्धान्त के अनुसार हमको परब्रह्म परमात्मा के चरणों में दृढ़ आश्रय रखना चाहिये उनके प्रति दृढ़ भक्ति रखनी चाहिये। भक्ति का मतलब है ''भज सेवायां'' भज धातु सेवा के अर्थ में है और क्तिन् प्रत्यय जो उसमें लगा है दोनों को मिलाकर जो अर्थ प्राप्त होता है वह होता है प्रेम पूर्विका सेवा। प्रेम पूर्विका सेवा हमको भगवान् की करनी चाहिये, यही शास्त्रों का सार है। जो परात्पर तत्व हैं यद्यपि परात्पर तत्व के विषय में काफी विवाद मत-मतान्तरों के अनुसार हुआ, जिसका उल्लेख किसी ने कोई शब्दों से परमात्मा को पुकारा, किसी ने कोई शब्दों से पुकारा। जिसका उल्लेख उदयनाचार्य ने न्याय कुसुमाञ्जली के आरम्भ में किया है उसकी ज्यादा चर्चा नहीं करेंगे लेकिन जहां तक अब वैष्णव धर्म का प्रश्न है परमात्मा तत्त्व का क्या निर्णय किया गया हैं? परब्रह्म किसको कहते है? शास्त्रों में परब्रह्म किसको कहते है? शास्त्रों में परब्रह्म, परब्रह्म कहा जाता है पुरुषोत्तम कहा जाता है यह सब किसके लिए प्रयोग किया गया है? यदि हम गीता को मानते हैं तो गीता में स्पष्ट बता दिया है।

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते॥

उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः॥

यस्मात्क्षरमतीतो ऽहमक्षरादपि चोत्तमः।
अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः॥

यहां पर ''**अस्मि**'' शब्द का प्रयोग किया है उत्तम पुरूष का यह बोलने वाले कौन है? बोलने वाले स्वयं श्रीकृष्ण हैं। श्रीकृष्ण स्वयं बता रहे हैं क्षर अक्षर की चर्चा करते हुये जो पुरुषोत्तम तत्व है वह और कोई नहीं मैं स्वयं हूँ। और ''अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः'', सच्चा ज्ञानी वही है जो मुझ कृष्ण को पुरुषोत्तम के रूप में जानता है। आजकल लोग कृष्ण को महामानव कहते हैं बहुत दयनींय दशा है इस देश की, कृष्ण महामानव नहीं, कृष्ण विश्वमानव नहीं, कृष्ण साक्षात पूर्ण पुरुषोत्तम हैं। और ''**न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः**'' इस युक्ति के अनुसार पुरुषोत्तम तो पुरुषोत्तम ही है, वही अपना परिचय दे सकते हैं। इसलिए हमारे श्री मधुसूदन सरस्वती भी कहते हैं कि ''**कृष्णात्परं किमपि तत्वमहं न जाने,**'' कृष्ण से बढ़कर दूसरा कोई तत्व, मैं नही जानता हूं। भागवत में भी व्यास जी ने इस तत्व का निर्णय कर दिया। मनुष्य जो बोलते

हैं वह भगवान हैं कौन? किसको हम भगवान कहते हैं आखिर भगवान शब्द से कौन व्यवहित होता है? तो व्यास जी ने निर्णय कर दिया "**ऐतेचांशकलापुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयं**" और जितने भी अवतारों का वर्णन किया गया है वह अंश कला आदि है कौन के "**पुंसः विणोस्तु त्रिरूपाणि पुरुषाख्यानि यतो विदुः प्रथमं महतः स्रष्टुः द्वितीयं त्वऽण्ड संस्थितं, तृतीय सर्वभूतस्थं, तानि ज्ञात्वा विमुच्यते**" पुरूष के तीन रूप हैं जिसमें जो "**लीलावतारान् पुरुषस्य भूम्नः**" जो भूमा पुरुष कहे जाते हैं जिनका अन्तर्यामी ब्राह्मण में वर्णन किया गया है, "**यत्पृथिव्याम् तिष्ठन् पृथ्वी मन्तरयति**" जो पृथ्वी में रहकर पृथ्वी का नियमन करते हैं जिसको पृथ्वी नहीं जान सकती इत्यादि शब्दों में, जिस तत्व का वर्णन किया गया है उस पुरूष के यह सब अन्यान्य अवतार हैं लेकिन जो कृष्ण हैं, **कृष्णस्तु भगवान् स्वयं** कृष्ण किसी का अंश नहीं हैं। यद्यपि श्रीमद्भागवत में कहीं "**अंशत्वेन**" भी प्रश्न आया है। और अंश शब्द सुनकर कभी लोग भ्रमित होते हैं कि कृष्ण भी किसी के अंश होगें परन्तु उसका समाधान करने के लिए ही व्यास जी ने कहा कि,कृष्ण किसी के अंश नहीं हैं लेकिन "**कृष्णस्तु भगवान् स्वयं**" ऐश्वर्य सम्पूर्ण ऐश्वर्य, सम्पूर्ण वीर्य, सम्पूर्ण यश श्री ज्ञान और वैराग्य ये जिनमें विद्यमान हैं वो भगवान् कहे जाते हैं और वह स्वयं श्रीकृष्ण हैं। श्रीमद्भागवत जैसे ग्रन्थों की विवेचना के समय कई लोग ऐसी विवेचना करते है कि **सत्यं परं धीमहि** देखिये व्यास जी ने कितना अच्छा कहा जिसको जो अर्थ लेना हो "सत्य" शब्द से ले सकता है अपने अपने इष्ट को सत्य शब्द से ग्रहण कर सकते हैं। इसलिए व्यास जी ने "**कृष्णं परं धीमहि या रामं परं धीमहि**" का जिसको जो अर्थ लेना हो वह ले सके इसके लिए व्यास जीने कितना व्यापक शब्द रखा। लेकिन जिस भागवत के लिए हम कहते है कि "**धर्मः प्रोज्झितकैतवोत्र परमः**" जहाँ पर निष्ठ पद परम धर्म का वर्णन किया जाता हो, उस भागवत के मंगलाचारण में ही यदि ऐसा कपट भाव रखा जाय तो भागवत में निष्कपट धर्म की कहां से उपलब्धि हो सकती है। वास्तव में सत्य शब्द नहीं रखा है उसके आगे एक और भी है "**सत्यं परं, परं सत्यं धीमहि**" श्रेष्ठ सत्य का हम ध्यान करते हैं।

"**धीमहि शब्द धातुनां अनेकार्थत्वात् प्राचीन आचार्यों ने यहां पर धीमहि**" शब्द से "**प्रीतिम् कुर्मः**" हम उस परम सत्य, परम तत्व से प्रीति करते है या उस का ध्यान करते है यह अर्थ लिया है परम सत्य कौन यानि श्रेष्ठ सत्य कौन है? हम लोग जानते हैं कि भागवत वेदों का सार है, वेदों का फल है तो उसका निर्णय उपनिषदों की एक वाक्यता से हो सकता है "**ॐ तत्सत् गोपालः एवं परं सत्यं अवधारितं**" गोपाल तापी उपनिषद के अन्दर परं सत्यं, श्रेष्ठ जो सत्य है वह कौन, उसका स्पष्ट उल्लेख कर दिया, "**ॐ तत्सत् गोपालः एवं परं सत्यं**" त्रिकालाबाधि जो श्रेष्ठ तत्व हैं वह गोपाल गाय का पालन करने वाले जो हैं वह है।

इस प्रकार भागवत की, उपनिषदों की एक वाक्यता करते हुये जो श्रेष्ठ सत्य हैं वह भगवान् श्रीकृष्ण हैं। सभी ने इस रूप में उनके चरणों में भाव रखा हैं। स्वयं श्री शंकराचार्य जी ने भी श्री कृष्ण के प्रति अपने भाव समर्पित किए हैं और गीताभाष्य में तो इस संदर्भ में बहुत विशिष्ट विचारधारा देखने को मिलती है।

आज हमारे लिए सौभाग्य का विषय है कि यहां पर सनातन धर्म सम्मेलन के अवसरपर वैष्णव धर्म की चर्चा हुई। इस प्रसंग पर हम यह स्मरण दिलाना चाहेंगे कि यह धरती जो श्री राम कृष्ण के अवतार के रूप में महिमान्वित यहां पर श्री राम कृष्ण की जो जन्मस्थली है उसकी भी अपने महत्ता सुरक्षित रहे, उस पर भी हमारा

ध्यान आकृष्ट होना चाहिये। जहां तक प्रश्न है हमारे राज के लोगों ने इन सब बातों को केवल राजकीय मुद्दा बना कर छोड़ दिया है। जब जब उनको आवश्यकता पड़ती है वोट बैंक की तब वह हिन्दुत्व की बात करने लग जाते हैं तब राम जन्म भूमि की बात करने लग जाते है, कृष्ण जन्म भूमि की बात करने लग जाते हैं, जब उनको लगता है कि उनकी सीट खतरे में है तब इन सब बातों को वह ले आते हैं और एक मुद्दा बना देते हैं। हमको इसको मुद्दा नहीं बनाना है लेकिन अपना एक प्रण प्रश्न है और अपना एक चरम प्रथम लक्ष्य है, इस रूप में इन मुद्दों को देखना है। श्रीरा जन्मभूमि के बारे में अलग अलग राजकीय पक्ष, हम राम जन्म भूमि बनवा देंगे, हम कृष्ण जन्म भूमि बनवा देंगे, इस प्रकार की बातें करते हैं लेकिन हम आपका यह ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं क्यों कि हम उस परम्परा से जुड़े हुये हैं। हमारे कुम्भ के अवसरों पर जो हमारे तीन अखाड़े वहां पर आते हैं स्नान करने के लिए उसमें हमारा एक निर्मोही अखाड़ा है और आपको शायद यह जानकारी नहीं होगी कि आज हिन्दुओं ने जो रामजन्म भूमि पर हिन्दू लोग कहते हैं कि स्थान हमारा है यह जो दावा आज हम कर पा रहे हैं वह जो स्थान है वह निर्मोही अखाड़े से सम्बद्ध हैं और हमारे निर्मोही अखाड़े के माध्यम से यह प्रश्न कोर्ट में आज से पचास पचपन साल पहले रखा गया है, तब जाकर आज हम यह कह सकते है कि यह भूमि हमारी है। कहने का मतलब यह है कि यह दावा कोर्ट में आज से पचास पचपन साल पहले रख गया है जब जाकर आज हम यह कह सकते हैं कि यह भूमि हमारी है। कहने का मतलब यह है कि कोर्ट के माध्यम से वह सब प्रश्न अपने स्थान पर चल रहें हैं। लेकिन लोगों को भ्रमित करने के लिए क्यों कि जो होगा वह तो सिद्ध होगा वहीं हो जायेगा। और वही हो सकेगा। लोग कहते हैं कि हम आपका राममंदिर बनवा देंगे लोग अलग अलग आ आ करके भारत की जनताको इस तरह से भ्रमित करते हैं। हम इतनाही कहना चाहतें हैं कि आप इन राजनेता लोगों की बातों में न आवें। आप अपनी प्रामाणिक परम्परा का अनुष्ठान करते हुये अपने कर्त्तव्य में तत्पर बनें। और अपने कर्त्तव्य में तत्पर बन कर जहां जिस समय जो भी आवश्यक हो यदि शस्त्र की आवश्यकता है तो शस्त्र और शास्त्र की आवश्यकता हैं तो शास्त्र, इन दोनों का समन्वय करते हुये हम अपने जीवन में आगे बढ़े। एक बात निश्चित है कि हम सहिष्णुता को मानने वाले हैं। हम अत्याचार और हिंसाचार को मानने वाले नहीं है। जब हम वैष्णव शब्द से ही अपने आपका परिचय देते हैं तो वहां हिसां की कोई बात नहीं हो सकती। लेकिन वैष्णव धर्म के आदि प्रवर्तक भगवान श्री कृष्ण ने ही जब अन्याय हुआ तब अन्याय के सामने आवाज उठाने का उपदेश अर्जुन को दिया। और अर्जुन को उस समय युद्ध का उपदेश दिया है भगवान् ने। इसलिए अपने अस्तित्व को पूर्ण सुरक्षित रखते हुये अहिंसा के सिद्धान्त को मानते हैं। प्रेम के सिद्धान्त को मानते है क्यों कि भक्ति तत्व ही प्रेम तत्व है। इसलिए प्राणी मात्र में भगवत् भाव का दर्शन करते हुये भी हमको व्यावहारिक पक्षों का विचार करना होगा। और आज फिर से हम अपना हृदय का जो स्नेह भाव है उसको फिर से स्मरण करते हैं। श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय से श्री बल्लभ सम्प्रदाय का बहुत ही प्राचीन काल से स्नेह भाव परस्पर आत्मीय भाव, रहा है उस आत्मीय भाव का पूरा निर्वाह हमारे श्री श्रीजी महाराज भी कर रहें और आगे भी इसी प्रकार का निर्वाह होता रहे। ऐसे ऐसे अवसरों पर जो आयोजन होते हैं उसके माध्यम से विभिन्न सम्प्रदाय के धर्माचार्यों को, विभिन्न सम्प्रदायों के मण्डलेश्वर, श्रीमहन्त, विद्वत् जनों को एक होने का अवसर मिलता है। आज हमारे यहां पर श्री वासुदेवानन्दाजी पधारे हुऐ है मिलने का अवसर आता

रहता हैं आप समन्वयवादी विचार रखते हैं। कुछ लोगों को भ्रम है कि आचार्यो में मतभेद है। आचार्यो में मतभेद जिस रूप में आप समझते हैं ऐसा कोई मतभेद नहीं है। अपने विचार भिन्न भिन्न हो सकते हैं लेकिन उसका तात्पर्य ये भी नहीं समझ लेना चाहिये कि आपस में कोई मतभेद हैं। मतभेद को विरोध का स्वरूप नहीं समझना चाहिये विचारों में कभी कोई अन्तर हो सकता है लेकिन मत भेद जिसका कहते हैं मनोभेद का कोई प्रश्न नहीं आता है।

हम सब यद्यपि अपनी अपनी परम्परा केअनुसार अनेकता में है लेकिन अनेकता में भी एकात्मता का अनुभव आपस में करते हैं और ऐसे प्रसंगों पर जब हम आते हैं आज जैसे वैष्णव सम्प्रदाय के द्वारा आयोजित सनातन धर्म आदि सम्मेलनों में जब हम शंकराचार्य जी को आमन्त्रित करते है तब उनके प्रति सद्भाव है यह सिद्ध होता है। श्री शंकराचार्य जी आदि भी जब अपने अपने यहां पर आयोजन करते हैं तो उनके यहां वैष्णवचार्यों को भी बुलाते हैं यह सिद्ध कर देता है कि उनके हृदय में भी वैष्णवाचार्यों के प्रति सद्भाव है। इसलिए कभी आप यह भ्रमित न हों कि इस देश के धर्माचार्य ही आपस में एक नहीं हैं इसलिए जनता कैसे एक हो सकती है ऐसा सोचना गलत है। हम लोगों में एकता है। और एकता ही बनी रहेगी भगवान की कृपा से ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास हम इस सनातन धर्म सम्मेलन में प्रस्तुत कर रहे हैं। और इस एकता के द्वारा जनता को समयानुरूप मार्ग दर्शन प्राप्त होता रहे, ऐसी हम भगवान् के चरणों में प्रार्थना करते हुये हम हमारे वक्तत्व को श्री प्रभु के चरणों में समर्पित करते हैं।

परम पूज्य जगद्गुरु निम्बार्काचार्यश्री श्रीजी महाराज

जब कोई व्यक्ति किसी अगाध समुद्र में निमग्न हो जाता है, निमज्जित हो जाता है, उसमें आप्लावित हो जाता है, उसमें अवगाहन करने लगता है, डूबने लगता है, तो वह क्या बोले? जब समुद्र में कोई डूब जाये, जल में कोई डूब जाये तो वह बोल नही सकता है। वही स्थिति हमारी है। यहां यह अगाध समुद्र है यह दिव्य रस की धारा जो उड़ेली जा रही हैं, जो प्रवाहित हो रही है और इससे जो सारा समुद्र यहां पर दृष्टि गत हो रहा है और इस समुद्र में हम डूब रहे हैं तो हम कैसे बोले? बोलने का कोई मार्ग ही नहीं। जहां हमारे आचार्य प्रवर श्री शंकराचार्य जी महाराज विराजमान हैं। और हमारे श्री बल्लभाचार्य जी महाराज विराजमान हैं। अब इन दोनों के मध्य में हम हैं तो मध्य में डूबने के बाद ये दो धाराओं से जो तीर्थधारा है त्रिवेणी की धारा है और त्रिवेणी के मध्य में तो प्रयाग राज ही विराजते हैं तो इस (त्रिवेणी) धारा में अवगाहन करने पर कैसे क्या कहा जाय? तथापि संक्षेप बहुत ही संक्षेप में।

आप हम जिस पावन स्थल पर उपस्थित हैं इस स्थल का नाम ''निम्बार्क तीर्थ'' है। ये पौराणिक है, पद्मपुराण में एक अध्याय है। देखिये कितना आनन्द का प्रसंग है ऐसे परम मंगलमय अवसर पर हमारे ब्रह्म पीठाधीश्वर आचार्य वरेण्य श्री नारायणदास जी महाराज यहां सभा को अलंकृत कर रहे हैं। ये बड़े सौभाग्य की बात है। जहां हमने चर्चा की उसी पावन अवसर पर आपका मंगलयम पादार्पण हुआ। ऐसा लग रहा है कि मानों वशिष्ठ जी कहें, विश्वामित्र जी कहें, या अन्य कोई विशिष्ट, अगस्त्य महिर्ष कहें किन ऋषियों में आपका स्वरूप हम दर्शन करें, जिन्होनें भारत के विभिन्न अंचलों में, हमारे मुख्यतः राजस्थान में अनेकों बार बड़े बड़े विराट् समायोजन, बड़े बड़े विशाल महायज्ञ, चिकित्सालय आदि न जाने कितने कितने बृहद रूप में संचालित हो रहे हैं जो हमारे वैष्णवता के लिए परम गौरव का विषय है। ऐसी विभूति आपके सामने विराजमान हैं।

आप हम जिस स्थल पर बैठे हैं इसका नाम निम्बार्क तीर्थ है। पद्मपुराण में इसका वर्णन हैं। आपको एक बात सुनकर बड़ी प्रसन्नता होगी कि यहां भारत की भूमि पर समय समय पर अभी हमारे स्वामी चिन्मया नन्द जी महाराज संकेत कर रहे थे कि **''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥ परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥''** प्रभु जब इस भूतलपर अनाचार, अत्याचार, बढ़ने लगता है, आसुरी वृत्ति बढ़ जाती है। दैवी सम्पदा का ह्रास होने लगता है उस अवस्था में स्वयं प्रभु प्रकट हो करके और स्वयं किंवा कभी अपने नित्य दिव्य पार्षदों के रूप में अवतार धारण करते हैं। कभी वह सन्तों के रूप में आचार्य प्रवरों के रूप में भूतल पर पधारते हैं अनेक स्वरूप में चौबीस अवतारों का वर्णन है। चौबीस अवतारों में एक हंसावतार का वर्णन आता है।श्रीमद्भागवत में है अन्य पुराणों में भी है। अवतरण होता है, अवतार होता है, वह ऊपर से नीचे अवतरण होना, उतरना, अवतार का तात्पर्य उतरना, वह होता है। ऊपर से नीचे की ओर अवतार जितने भी हुये हैं वह सब भूतल पर हुये हैं। प्रभु उर्ध्वलोकों में, गोलोक धाम में, वैकुण्ठ धाम में वहां विराजते हैं और फिर जब देवताओं की, गो स्वरूप पृथ्वी की, जब गोरूप धारण करके यह पृथ्वी माता भूमि, धरित्री प्रार्थना करती है कि मेरे पर भीषण अत्याचार हो रहे है, अनाचार हो रहे हैं, दुराचार हो रहें है, दुर्विचार हो रहे हैं, आसुरी वृत्ति बढ़ती जा रही है, ऐसी अवस्था में देवों की प्रार्थना से, ऋषि मुनीश्वरों की प्रार्थना से और पृथ्वी माता की प्रार्थना से प्रभु फिर अवतार धारण करते हैं।

आप हम जिस क्षेत्र में है जिस राजस्थान में हैं कोई यदि यह कहें कि यहां पर अवतार कब हुआ ? राजस्थान में अवतार का कहां स्थल है ? बहुतो को जानकारी नहीं होगी। यहां पर भी है। समस्त कोटि कोटि तीर्थों के गुरु पद पर सुशोभित तीर्थ गुरु श्री पुष्कर ब्रह्माजी का पावन स्थल। ब्रह्मलोक में निवास करते हैं और इस भू लोक में भी एक स्वरूप से वह सतत निवास करते हैं। सनक सनन्दन, सनातन, सनतकुमार, ये ब्रह्मा जी के मानसपुत्र सर्वत्र लोक लोकान्तरो में विचरण करते हुये और वैष्णवता का संदेश देते हैं। वह यहां भूतल पर भी पधारते हैं। जब यहां विचरण करते हुये पुष्कर में पहुंचे और ब्रह्मा से जो उन्हीं के मानस पुत्र हैं और उनसे उन्होंने प्रश्न किया। **''गुणेष्वाविशते चेतो गुणांश्चेतसि च प्रभो।'' कथमन्योन्यसंत्यागो मुमुक्षोरतितितीर्षोः।** श्रीमद्भागवत में यह प्रश्न उपस्थापित किया। यह जगत् त्रिगुणात्मक है, मन भी त्रिगुणात्मक है एतावता यह मन जगत् से कैसे पराङ्मुख हो सकता है। इसके लिए क्या साधन सरणी है। प्रश्न बड़ा गूढ़, ब्रह्मा जी भी स्तम्भित हो गये मन ही मन चिन्तन किया।

निखिल भुवन मोहन परात्परतत्वरस परब्रह्म भगवान् श्याम सुन्दर श्री कृष्ण का ध्यान किया। प्रभु ने विचार किया कि इस समय ब्रह्मा जी व्यामोह में हैं प्रश्न का समाधान नहीं कर पा रहें है। यदि शिष्य गुरु से जाकर प्रश्न करे, पुत्र पिता से प्रश्न करें और वह दोनों उत्तर न दे सकें तो हास्यास्पद बात होती है। अतएव ब्रह्मा जी का वाहन है हँस। इसलिए ये जगन्नियामक सर्वान्तरात्मा, सर्वाराध्य, भगवान् सर्वेश्वर श्री कृष्ण, हँस के रूप में पुष्कर राज में प्रकट हुये। हँस के रूप में, और प्रकट हो करके, (ये प्रसंग तो लम्बा है) सनकादिकों के प्रश्न का समाधन किया। उनको सर्वेश्वर प्रभु की सेवा प्रदान की। सनकादिको को सर्वेश्वर प्रभु की सेवा प्राप्त हुई और वही सेवा सनकादिकों से देविर्षि नारद जी को प्राप्त हुई और नारदजी से वही सेवा, आगे चलकर इस भू मण्डल पर श्री निम्बार्क भगवान् को प्राप्त हुई। जो सर्वेश्वर प्रभु के आप दर्शन करते हैं। जो गुञ्जाफल सदृश हैं अथवा समझ लें चना की दाल, चना की दाल

जैसे छोटे विग्रह हैं दक्षिणावर्ती चक्र है, मध्य में एक बिन्दु है उसमें दो सूक्ष्म रेखायें है जो भगवान् राधासर्वेश्वर के प्रतीक रूप में है। उनके प्रभात बेला में वैदिक मंत्रों द्वारा नित्य गो दुग्ध से अभिषेक होता है और भगवज्जनों को उस समय इत्र धारण कराने के बाद चन्दन धारण कराने से पूर्व दर्शन कराते हैं।

इस निम्बार्क सम्प्रदाय में परम्परा है जिन अपने शिष्य को आचार्य प्रवर सर्वेश्वर प्रभु की सेवा प्रदान करते हैं वही एक मात्र इस सम्प्रदाय के आचार्यपीठ पर अवस्थित होते हैं। यह सम्प्रदाय की परम्परा हैं। जिनको ये सर्वेश्वर प्रभु प्रदान किये जाये। तो ये परम्परा प्राप्त सर्वेश्वर प्रभु यहां विराजित हैं। और एक विचित्र बात है कि यहां पर निम्बार्क तीर्थ है। निम्बार्क तीर्थका वर्णन पद्म पुराण में है। यहां पर इस अवनी पर, इस स्थल पर जहां आप हम सब बैठे है अपने पृष्ठ भाग में **''निम्बार्कतीर्थ सरोवर''** है वहां पर सन्त महात्मा निवास कर रहे हैं। हमारे समस्त श्री महन्त, महामण्डलेश्वर और अनेक सन्त महात्मा वहां विराजित है। यह निम्बार्क तीर्थ है इसको निम्बार्क तीर्थ सरोवर कहते है। यह कैसे यहां पर प्रकट हुआ, ये तीर्थ पुराणों में इसका क्या वर्णन है। इसके सम्बन्ध में पद्म पुराण का वर्णन है। श्री महादेव से उवच। श्री भगवान महादेव कह रहे हैं यह प्रसंग महादेव जी अपनी परम प्रिया जगदम्बा भगवती श्री पार्वती जी को सुना रहें है:-

पिप्पलादात्ततस्तीर्थात्पिचुमन्दार्कमुक्तमम्।
तीर्थं साभ्रमती तीरे व्याधि दौर्गन्ध्यनाशम्॥ 1

पुरा कोलाहले युद्धे दानवैर्निर्जिताः सुराः।
वृक्षेषु विविशुस्तत्र सूक्ष्माः प्राणपरीप्सया॥ 2

तत्रविल्वे स्थितः शम्भुः अश्वत्थे हरिरव्ययः
शिरीषेऽभूत्सहस्राक्षो निम्बे देवः प्रभाकरः। 3

एवमादियथायोग्यं वृक्षेषु विवुधास्तथा।
यावत्कोलाहलो दैत्यो विष्णुना प्रभविष्णुना। 4

हतो महाहवे तावत् स्थितास्ते वृक्षमाश्रिताः।
येन येन हि यो वृक्षो विवुधेन समाश्रितः॥ 5

स तु तन्मयतां यातस्तस्मात्तं न विनाशयेत्।
इति सूर्यस्य विश्रामात्पिचुमन्दार्कमुत्तमम्।। 6

तीर्थं रोग हरं स्नानात् साभ्रमत्यास्तटे ऽभवत्।
अत्र गत्वा विशेषेण तं रविं यदि पूजयेत्॥ 7

पूजयित्वा सुरश्रेष्ठं लभते वाञ्छितं फलम्।
अत्र द्वादशनामानि गत्वा ये वै पठन्ति च॥ 8

ते नराः पुण्यकर्माणो यावज्जीवं न संशयः।
आदित्यं, भास्करं, भानुं, रविंविश्वप्रकाशकरम्॥ 9

तीक्ष्णाशुं, चैव मार्तण्डं, सूर्यं चैव प्रभाकरम्।
विभावसुं, सहस्राक्षं, तथा पूषणमेव च॥ 10

एवं द्वादश नामानि यः पठेत्प्रयतः सुधीः।
धनं वै पुत्र-पौत्राँश्च लभते नगनन्दिनि॥ 11

एकैकं नाम आश्रित्य योऽर्चयेत् स नरो भुवि।
सप्तजन्मभवेद्विप्रो धनाढ्यो वेदपारगः॥ 12

श्रोत्रियो लभते राज्यं वैश्यो धनमवाप्नुयात्।
शूद्रो वै लभते भक्तिं तस्मात्सूक्तं परं जपेत्॥ 13

निम्बार्कतः परं तीर्थं न भूतं न भविष्यति।
अत्र स्नात्वा च पीत्वा च मुक्ति भागी भवेद्ध्रुवम्॥14

यहां भगवान विष्णु नहीं, महाविष्णु, यह आश्चर्य की बात है कि भगवान विष्णु ही नहीं महाविष्णु यहां पर प्रकट हुये और कोलाहल नामक दैत्य का यहां संहार किया। इस भूतल पर महाविष्णु प्रकट हुये, इसलिये यह भूमि कितनी पवित्र है कितनी पाव है, कितनी उज्ज्वल है, यह वाणी का विषय नहीं।

इति पदव- पुराणे पञ्च पञ्चाशत्साहस्त्र संहितायां मुक्ति खण्डे उमा-महेश्वर सम्वादे श्रीनिम्बार्क देव तीर्थ नामाष्ट पञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः॥ एक सौ अट्ठावन वाँ अध्याय। यह पूरा वर्णन यहां का है पद्मपुराण में है।

आज के तीस वर्ष पूर्व अखिल भारत वर्षीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, धर्म सम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज, पुरीपीठाधीश्वर श्रीनिरंजनदेवतीर्थ जी महाराज, शंकराचार्य जी और अनेक हमारे मूर्धन्य वैष्णवाचार्य उस समय ब्रज भूषण लालजी महाराज पधारे थे और अनेक सम्प्रदायों के आचार्य प्रवर यहां पर विराजमान थे, उस सभा में तब इसकी घोषणा जो प्राचीन इसका नाम निम्बार्क तीर्थ है की थी, पर यह सरकारी रिकार्ड में नहीं आया। और अभी अभी जब कल के प्रसंग की बात है हमारे अखिल भारतीय भारत साधु समाज के महामंत्री श्री हरिनारायणानंद जी महाराज उनसे हमने चर्चा की तो उन्होंने कहा कि हमसे आपने कभी इस बात की चर्चा नहीं की हम इसको बहुत शीघ्र ही पर्यटन विभाग से तत्काल इस कार्य का सम्पादन करायेंगे इसमें कोई विलम्ब नहीं करेंगे ऐसा आश्वासन देकर वे आज ही यहां से गये है।

ऐसे ही इसके साथ साथ एक प्रसंग और है कि निम्बार्क भगवान् का ये जो पाँच हजार एक सौ वाँ वर्ष कहते हैं, इसमें सब सन्देह करते हैं कि ये पाँच हजार एक सौ वर्ष हुये इसका क्या प्रमाण है क्या आधार है? इसका आधार कहीं दूसरी जगह तो मिलेगा नहीं। अरे भाई कोई, इतने भक्त बैठें हैं इनके घर का इतिहास यदि जानना चाहेंगे तो इनके घरवालों से जानेंगे। किसी के भी इतिहास को जानना हो कि आपके पूर्वज कौन कौन हुये कितना तक आप जानते है, वह आप बता सकते हैं पड़ोसियों को बताना कठिन होता है। तो निम्बार्क सम्प्रदाय का इतिहास निम्बार्क सम्प्रदाय के ग्रन्थों में निहीत हैं और इनमें लिखा है आप सुनें ध्यान से- निखिल भूमण्डलैकदैशिक चक्रचूडमणि सर्वतन्त्रस्वतन्त्र सुदर्शन चक्रावतार जगद्गुरु श्री भगवन्निम्बार्काचार्य जी का आविर्भावकाल अति प्राचीन है। इनके अविर्भाव का समय द्वापर के अंत का हैं। साम्प्रदायिक ग्रन्थों का यह वचन है कि, **''धर्म भृतांवारिष्ठस्य युधिष्ठिरस्य भू - भृतः। राज्यादुत्तरकालेऽभूत् वज्रनाभो नरोत्तमः स शसास महाभागों मथुरा मण्डले महीम्। तथा श्री निवासाचार्यो गुरूणां शरणं गतः॥''**

आप सब समझ गये होगें जिस समय वज्रनाभ का, (महाराज वज्रनाव अनिरूद्ध के पुत्र) उनका जिस समय शासन काल था उस समय वेदान्त कौस्तुभ भाष्यकार आचार्य प्रवर श्री श्री निवासाचार्य जी महाराज जिनको लिए हमारे यहां पांचजन्यशंखावतार कहा है। **''शंखावतारः पुरूषोत्तमस्य यस्यध्वनिः शास्त्रमचिन्त्यशक्तिः। यत्स्पर्शमात्राद् ध्रुवअमाप्तकामस्तं श्रीनिवासं शरणं प्रपद्ये''** वे श्री निवासाचार्य जी महाराज निम्बार्क भगवान् के शरणागत हो करके उन से दीक्षा ग्रहण की। विरक्त दीक्षा ग्रहण की वज्रनाभ के समय में महाराज परीक्षित के राज्यकाल में एक ही पीढ़ी का तो अन्तर आ रहा है। हमारे पूर्वाचार्य प्रवर दीर्घकाल तक धरा धाम पर रहे हैं। हमसे ब्रह्मचारी जी जब हरदा में मिले तो उनकी दौ सौ वर्ष की आयु थी। अभी आपके यहीं पर बहुत निकट में एक सौ पैंतीस वर्ष के जयपुर में है, उनका अभी समाचार पत्रों में वर्णन था हमने पढ़ा। तो अभी इस वर्तमान युग में भी इतनी अवस्था आपके मिल सकते है तो आप अनुमान कीजिये कि पाँच हजार वर्ष पहले वह अवस्था कितनी लम्बी चलती होगी तो इसलिए इसमें भ्रम करना अनुचित है। आगे फिर यह कहा है कि धर्मराज श्री युधिष्ठर के राज्यकाल के पश्चात् जब राजा वज्रनाभ मथुरा मण्डल का राज्य शासन कर रहे थे तब श्री निवासाचार्य श्री निम्बार्काचार्य जी के शरणागत हुये थे।

यही बात स्वामी हरिदास जी महाराज के निजमत नामक ग्रन्थ के आचार्य खण्ड में श्री गुरुपरम्परा के वर्णन में स्पष्ट उल्लेख हैं **''वज्रनाभ नृप की प्रभुताई**

तब श्री निवास आयो शरणाई'' ऐसे हमारे ग्रन्थों में अनेक आधार हैं उन आधारों को ले करके और फिर हमारी सदा सर्वदा से यह परम्परा चली आ रही है। कि यह हमारी आचार्य परम्परा है और इस परम्परा में इस प्रकार से सैतांलीस पीढ़ी होगई। लोग कहते हैं भाई सैंतालीस पीढ़ी के भाई पाँच हजार वर्ष कैसे होगे? आप अनुमान करें, अभी हम स्वयं को आचार्यपीठ की सेवा करते हुये इकसठ वर्ष हो गये। इकसठ वर्ष आज यह कलियुग की बात है तो पूर्वाचार्य उस समय कितना उनमें सामर्थ्य कितनी उनमें तपःश्चर्या काबल इसी से वे लम्बे समय तक धराधाम पर रहे। यह योगी महात्मा हमारे यहां रामप्रिया दास जी आये हुये हैं आगरा निवास करते हैं। योग में पारंगत है, प्राणायाम में सिद्ध है, बाईस व्यक्तियों से गले में फन्दा डालकर खिचवाते है कुछ नहीं होता। बड़े बड़े टैक्टर गाड़ियों, इन्जन को प्राणायाम से रोक देना सामान्य बात है धनुविर्द्या में पारंगत इन्होने आचार्य पीठ में रहकर भी अध्ययन किया उदयपुर महन्त जी के यहां भी रहे और वृन्दावन भी ये छियासी वर्ष के हुए। तो योग तप जप से आयु की सिद्धि होती है।

''वज्रनाभ की प्रभुताई तब श्रीनिवास आयो शरणांई'' इसके अतिरिक्त भविष्य पुराण के एकादशी वेद विषयक **''उदय व्यापनी ग्राह्याकुलेतिथिरु पोषणे निम्बार्कों भगवान् येषां वाञ्छितार्थ प्रदायकः''** इसी प्रकार से **''अर्द्धरात्रेतु केषांचित् दशम्याः वेध ईष्यते कपाल वेध इत्याहु आचार्याः ये हरिप्रियाः''** इसी श्लोंक को स्मार्त श्रेष्ठ सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री रामकृष्ण भट्टात्मज श्री कमलाकर भट्ट ने निर्णय सिन्धुं के एकादशी निर्णय में भी दिया है, इस प्रकार अनेक प्रमाण हैं आद्य आचार्य भगवान् निम्बार्क के पांच हजार एक सौ वर्ष पूर्व होने के। भविष्य पुराण में इस तथ्य का पूरा वर्णन हैं। इतना समय नहीं कि इसका वाचन हम करें विस्तृत प्रसंग है।

ऐसे अवसर पर आज यहां पर वैष्णव धर्म सम्मेलन हुआ और वैष्णव धर्म सम्मेलन में समस्त हमारे सन्त महात्माओं ने, आचार्य प्रवरों ने सभी ने अपने दिव्य भाव अभिव्यक्त किए। एक वचन है, **''परोपकार संलग्नाः परसेवा परायणाः। पर पीड़ा प्रहतारः सन्ति ते वैष्णवोत्तमाः।''** परोपकार संलग्न है जो अपने लिए कुछ नहीं करते हैं समस्त प्राणी मात्र के लिए चिन्तित रहते हें परोपकार संलग्न हैं और परसेवा परायण दूसरों की पीड़ा को हरने वाले दूसरों के कष्टों को लेने वाले, ''सन्तिते वैष्णवोत्तमाः'' ऐसे परम उत्तम वे इस विश्व में विराजित रहते हैं। परम उत्तम वो इस विश्व में विराजित रहते हैं। **''कुलं पवित्रं जननी कृतार्था वसुन्धरा पूतवती च धन्याः स्वर्गस्थितास्तत् पितरोपि धन्याः येएषां कुले वैष्णव नामधेयम्।''** ये शंख चक्र तिलक को जो धारण करते हैं जिनके ललाट पर सुन्दर कमनींय भगवत् स्वरूप तिलक विराजित हैं, हरि प्रिया वृन्दा, तुलसी जिनके कण्ठ प्रदेश में स्थित है, शंख चक्र चिन्ह जिनके अंकित हैं ऐसे वैष्णव इस सम्पूर्ण पृथ्वी को पवित्र करते हैं। वैष्णवता का स्वरूप है,

''तितिक्षवःकारुणिकाः सुहृदः सर्वदेहिनाम्।
अजातशत्रवः शान्ताः साधवःसाधु भूषणा।।''

ऐसे संतो के के वैष्णवों के लक्षण हमारे शास्त्रों में, श्रीमद्भागवत में वर्णित हैं। आज इस वैष्णव धर्म सम्मेलन के पावन अवसर पर जिन जिन महानुभावों ने अपने भाव अभिव्यक्त किए, हम परम आन्नद का अनुभव करते हैं समस्त जन मानस को कुछ न कुछ पावन सुन्दर रस की धारा मिली होगी। अहमदाबाद और अपने जो कहने का तात्पर्य है हमारे समस्त जितने भी महानुभाव यहा पर आये हुयं हैं जो सारे संदेश को

विश्व व्यापी कर रहे है सर्वत्र जो समाचारों को सम्प्रेषण करके और और यहां के समस्त कार्यक्रम को वहां पर पहुंचा रहे हैं जो सारे संदेश को विश्व व्यापी कर रहे है सर्वत्र जो समाचारों को सम्प्रेषण करके और यहां के समस्त कार्यक्रम को वहां पर पहुंचा रहे हैं इनकी सेवा और इनका निरन्तर परिश्रम और इसी प्रकार हमारे राजस्थान की सरकार यहां के समस्त कार्यक्रम इनकी सेवा ओरे इनका निरन्तर परिश्रम और इसी प्रकार मुख्यमंत्री जी ने यहां की व्यवस्था अन्यान्य व्यवस्था, सड़क का निर्माण न जाने क्या क्या उन्होंने कार्य वर्तमान में जो हमारे वसुन्धरा जी हम तो उनसे कहते हैं कि राजस्थान को राजस्थान की वसुन्धरा को वसुन्धरा मिली। वे वसुन्धरा मिली जिससे निश्चित ही कुछ न कुछ सुन्दर से सुन्दर कार्य सम्पादित हो रहे हैं और आगे और होते रहेंगे उनका शुभागमन भी होगा और इसी मंच से उनके पावन उद्‌बोधन भी आप श्रवण करेंगे।

अब हम यही अपने भावों को विराम देते हुये जितने भी ये वैष्णवजन भगवज्जन यहां पर विराजित हैं सभी की मंगल आंकाक्षा भगवान् सर्वेश्वर प्रभु के कि आज इस अवसर पर हमको संकल्प लेना चाहिये, दृढ़ संकल्प लेना चाहिये कि हम हमारे इस वैष्णव धर्म को हृदय में धारण करें। हमारी जीवन में संस्कार की पद्धति सुन्दर हो। जैसे कि बहुत से टी.वी. चैनल आ रहे हैं जिनमें कुछ सरकारी है बहुत से हैं उनमें अश्लील जो दर्शन कराया जाता है, माता का जो नग्न स्वरूप दर्शन कराया जाता है, अश्लील प्रदर्शन होता है, ये हमारे लिए अत्यन्त हानिप्रद है। किन्तु एक संस्कार टी. वी. ऐसी है, एक आस्था टी.वी. ऐसी है, एक साधना टी.वी. ऐसी है कि जिनके द्वारा हमारे सुन्दर संस्कार हमको दिये जा रहे हैं और उससे हमारे सुन्दर संस्कार हमारे अन्त: करण में प्रतिष्ठित हो रहे हैं। इनके प्रयत्न का इनको जितना साधुवाद दें जितनी भी इनकी हम अपने इस मंच से जितना भी गुण गान हो वो कम हैं। और यह इसी प्रकार समस्त जन जन में सुन्दर भगवदीय संस्कार उनमें प्रतिष्ठित करें जिससे सब जन मानस परम पावन बनें, इन्हीं वचनों के साथ विराम लेंते हैं।

❒❒❒

निम्बार्क दर्शन सम्मेलन

प्रथम भाग :-

पदगायनः- श्री भगवान दास जी (रूपनगढ)

बृजलोक गीत, गायनः-निम्बार्क सत्संग मण्डल सकना (मथुरा) द्वारा तबला संगति - पं. अशोक शर्मा, हाथरस

चिकित्सक सम्मान :- (क) प्रो. डा. जी. एस. झाला, (शल्य विशेषज्ञ) अजमेर। (ख) डा. सीताराम जी मित्तल, (हृदय रोग विशेषज्ञ) अजमेर। (ग) डा. रमेश जी क्षेत्रपाल, (नेत्र रोग विशेषज्ञ) अजमेर। (घ) डा. पी. सी. टाँक, (दन्तरोग विशेषज्ञ) अजमेर। (ड.) डा. जी. के. अग्रवाल, (सीनियर पैथोलिजिस्ट) अजमेर।

प्रो. डा. जी. एस. झाला :-

वन्दनीय पूज्यनीय श्रीजी महाराज के चरणों में मेरा प्रणाम! शंकराचार्य जी महाराज के चरणों में प्रणाम। आज हम लोगो का बड़ा सौभाग्य है कि श्रीजी महाराज की अनन्य कृपा हम पर बरसाई गई है। वैसे तो महाराज की कृपा मुझ पर वर्षों से है। उनकास्नेह भी बहुत बहुत है। मैं किन शब्दो में वर्णन करूं आप इसी से पता लगा सकते हैं कि इतना व्यस्त होते हुयें भी महाराज जी ने सुबह मुझे टेलीफोन किया आपको आज आना ही आना और अन्य चिकित्सक लोगों को भी साथ में लेना है। मैं डा. क्षेत्रपाल डा. मित्तल, डा. अग्रवाल इन सबके साथ हमको बुलाया आपका अत्यन्त कृपा है स्नेह है मैं किन शब्दों में वर्णन करूं हम आपके बहुत आभारी हैं। आपकी प्रेरणा से जो कुछ सेवा हमसे बन जाती हैजनता की हम कर रहे हैं और हमें भगवान की प्रेरणा से जो कुछ सेवा हमसे बन जाती है जनता की हम कर रहे हैं और हमें भगवान् और प्रेरणा दे आपकी कृपा दे कि हम बिल्कुल, निःस्वार्थ, निष्काम भावना से जनता जनार्दन की सेवा करें।

मैं आपको इस मंच से इतना कह दूंगा कि कोई भी रोगी हमारे सेवा के लायक हो निर्धन हो, कैसा भी हो हम उसकी अवश्य सेवा करेंगे। एक बार हमारे पास आ जाय। मैं आपको सब लोगों को आश्वासन देता हूँ हम अवश्य सेवा करेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ हम सब चिकित्सक लोग बहुत बहुत आभारी हैं जो हमारा सम्मान किया और आप सब लोगों के दर्शनों का सम्मान मिला।

डा. पी. सी. टाँक, (दन्तरोग विशेषज्ञ) अजमेर

मेरे गुरुजी श्रीजी महाराज के चरण कमलों मे मेरा प्रणाम! शंकराचार्य जी के चरण कमलों में मेरा प्रणाम!

सुमरिन लगन लगाइके मुख से कछू न बोल रे।
बाहर के पट बन्द कर ले अन्तर के पट खोल रे॥

पं. दया शंकर जी शास्त्री :- ब्यावर

अभी दो-तीन दिन में मुझे कई आत्मीयजनों ने पूछा सलेमाबाद में ये अद्‌भुत काम क्या हो रहा है, और यह कैसे हो गया, हम तो जीवन में ऐसी कल्पना भी नहीं कर सकते थे यह हो क्या रहा है ? मैंने कहा निम्बार्क भगवान् की इक्यावन सौं वी जयन्ती का महामहोत्सव सम्पन्न हो रहा है और इसमें चमत्कार क्या है, मैं दो चार मिनट में अपनी बात को कहुँगा बहुत सूत्र रूप में और आप लोगों

से भी वह बात कहना चाहता हूँ। इस अद्भुत और एक आश्चर्य जनक, मैं नहीं भारत के कौने कौने से आने वाले आचार्य और विद्वद्वृन्द भी इस बात को देख करके आश्चर्य कर रहे हैं, जंगल में एक छोटे से गाँव में यह सारा छोटा सा भारत विकसित हो गया ऐसा लग रहा है, यह क्या है ? मैंने कहा हमने अभिनंदन ग्रन्थ में भी संकेत दिया। एक राजस्थान के ज्योतिर्विद ने हम को बताया और उसने लिखा कि निम्बार्क भगवान के प्राकट्य के समय जिन ग्रहों का योग था, वैसा ही कुछ ग्रहों का योग हमारे वर्तमान आचार्य श्री जगद्गुरु निम्बार्काचार्य चरण के प्राकट्य के समय भी वैसे ही ग्रहों का योग उनकी जन्म कुण्डली के अन्दर है। कृतिका नक्षत्र में भगवान निम्बार्क का जन्म और कृत्तिका नक्षत्र में हमारे परम पूज्य आचार्य श्री का भी जन्म, तो मैंने कहा और लिखा भी कि आत्मा वैजायते पुत्र, पिता का अवतार पुत्र हुआ करता है। आचार्यों का अवतार उनके उत्तराधिकारी अचार्य हुआ करते हैं अर्थात् आचार्यों का भी परम्परागत अवतार के रूप में मानते हैं आचार्यों को तो भगवान् निम्बार्काचार्य का प्रतिरूप जो उनके संस्कारों का अंवतार आचार्य परम्परा में चल कर उन संस्कारों का विकास न्यूनाधिक रूप में होता अया है। ये जो हमारे वर्तमान आचार्य श्री के प्राकट्य के साथ साथ निम्बार्क भगवान के संस्कारों का अर्विभाव अधिक मात्रा में हुआ है इसमें कोई सन्देह नहीं और यही कारण है कि निम्बार्क भगवान अपनी इक्यावन सौं जयन्ती जो महान महोत्सव है वह स्वयं हमारे अचार्य श्री में प्रवेश करके और इतना महामहोत्सव मनवा रहे हैं। तो मैंने यही बात कहीं, यही बात सही है जो आप हम अपनी आँखो में देख रहे हैं।

द्वैताद्वैत सिद्धान्त कितना पुराना है। मैं हमारे मेवाड़ मण्डलेश्वर जी महाराज की आज्ञा से कुछ दो चार मिनट में ऐसी बात कहना चाहुँगा जो मेरे सामने वाले लोग उस बात को समझ सकें ये लोग तो सब समझे हुये बैठे हैं। द्वैताद्वैत सिद्धान्त कितना पुराना कोई कहते है पाँच हजार वर्ष पुराना है। मैं डन्कें की चोट कहता हँ कि जितनी पुरानी यह धरती है, जितना पुराना सूर्य और चन्द्रमा है उतना ही पुराना द्वैताद्वैत सिद्धान्त है। क्योंकि, हम इसको वैदिक मानते हैं यदि वैदिक मानते हैं तो द्वैताद्वैत सिद्धान्त वैदिक है और वेद अनादि है तो द्वैताद्वैत सिद्धान्त भी आनादि है और वह द्वैताद्वैत सिद्रान्त जो वेद में छुपा हुआ है दूध में जैसे घी, आप को दूध में घी दीखता हैक्या ? लेकिन दही जमा कर बिलोना करते है तो नजर आता हैं निम्बार्क भगवान् ने इसी वेद भगवान् में से विलोडन मन्थन करके और द्वैताद्वैत सिद्धान्त को प्रकट करके हमारे सामने रखा है तो निम्बार्क भगवान् द्वैताद्वैत सिद्धान्त के प्रवर्तक हैं, संस्थापक नहीं स्थापना की जाती है नई चीज की, नई स्थापना भगवान् निम्बार्क जो सिद्धान्त गुप्त रूप से वेदों में है उनका प्रकाशन किया और सम्प्रदाय के अचार्यों ने भी ऐसा ही किया ऐसी मेरी मान्यता है। कोई लोग मानें तो कोई बात नहीं। इसलिए द्वैताद्वैत सिद्धान्त **''एकोहं बहुस्याम''** जल ही जल पृथ्वी में था भगवान् ने कहा, मैं अकेला हूँ अब अनेक रूपों में परिवर्तित होना चाहता हूँ। और भगवान् के संकल्प से सबसे पहले ब्रह्मा हुये। एक से दो हो गये दो जो हुये है वह ब्रह्मा भगवान् का ही प्रतिरूप है तो ब्रह्मा और भगवान् दो होते हुये भी एक,एक होते हुये भी दो है। यह द्वैताद्वैत ब्रह्मा और भगवान उनके आत्म स्वरूप ब्रह्मा है इसलिए वह एक भी है और उनको दो भी कह सकते है ऐसे द्वैताद्वैत सिद्धान्त प्रारम्भ हुआ।

बन्धुओं द्वैताद्वैत सिद्धान्त के सम्बन्ध में जीव और ब्रह्म ध्यान दीजिए। मैंने कहा द्वैताद्वैत सिद्धान्त क्या है ? जीवात्मा और परमात्मा दो चीज है। जीवात्मा क्या हैं ? आपको समझायें क्या ? अच्छा एक मिनट में एक छोटी कहानी से जीवात्मा को समझाने की कोशिश करता हूँ। आप ध्यान देना भाईयों, आपकी समझ की बात है। एक योगीराज थे। योग का साधन करते करते सिद्ध नहीं हुआ

सिद्धि प्राप्त नहीं हुई और शरीर छूट गया। तो श्रीमद्भगवद् गीता में कहा है **''शुचीनां श्रीमतां गेहे योग - भ्रष्टोऽभिजायते॥''** उस योगी महाराज ने जन्म लिया आप जैसी किसी पुण्यात्मा माता के यहां जन्म लिया। और पहले के संस्कारों का उदय हुआ। पाँच वर्ष की अवस्था में अपनी माँ को कहा, हे माँ तू मेरे पास बैठ, मां को बिठाया और वह योगी की जो आत्मा है वह उस बालक के रूप में, वह कहता है कि मैं तो योगाराधन करूंगा लेकिन माता ने इस शरीर को अपने उदर में रखा पालन पोषण किया, मुझे पाँच वर्ष का किया तो मेरी माता का कल्याण करना चाहता हूँ, आत्मा क्या और परमात्मा क्या है, शरीर क्या है यह बात इस माता को भी जो पढ़ी लिखी नहीं है बिल्कुल अंगूठा छाप है इसको मैं समझाना चाहता हूँ। उस बालक ने कहा माँ मैं कौन हूँ?

माँ ने कहा तू मेरा बेटा है, तेरा बेटा कहां हैं उसको बताना देखें? माँ ने हाथ पकड़ा ये मेरा बेटा। माँ यह तो मेरा हाथ है, मैं कौन हूँ (यह बता) मष्तक पर हाथ रखा यह मेरा बेटा उसने कहा, माँ यह तो मेरा मष्तक है, मैं कौन हूँ? बच्चे को उठाके गोद में रखा, ये मेरा बेटा। बोले माँ यह तो अंग प्रत्यंग शरीर है सारा, मैं कौन हूँ?, मैं कौन हूँ? माँ समझती है बेटा पागल हो गया, माँ मैं पागल नहीं हुआ हूँ तू बता मैं कौन हूँ, वह बोला- मैं हाथ नही हूँ, मैं अंग प्रत्यंग नहीं हूँ, तो बेटा कौन है तू? मै आत्मा हूँ। अरे आत्मा! आत्मा कौन है? कि जिसको जीव कहते हैं वह हूँ, और इस नाशवान् शरीर के हृदय देश में मैं आत्मभाव से रहता हूँ। बेटा ये आत्मा कैसी है? इस आत्मा को किसी ने देखा है? माता यह आत्मा बहुत सूक्ष्म है, बहुत सूक्ष्म हैं। कितनी सूक्ष्म है? कहते हैं वेदान्त में आया है कि एक बाल के अग्रभाग के सौ वें हिस्से में से एक भाग के फिर सौ हिस्से करो जो हिस्सा जो होगा उसके समान इसका स्वरूप है, ऐसा अणु है। इतना छोटा है। तो कहा इसको देख सकते हैं क्या? इसको देखने के लिए ये नेत्र चक्षु काम नहीं करेंगे। इसके देखने के लिए आध्यात्मिक नैनों की आवश्यकता होती है, अनुभूति मात्र होती है। इस नाशवान् शरीर में जीवात्मा कैसा हैं, वैज्ञानिको ने बड़े आविष्कारों से परीक्षण करने पर भी वह हार गये, आज तक संसार के किसी वैज्ञानिक ने इस जीव को नहीं देखा। किन्तु भारत के मनीषियों ने, भारत के आध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने इस आत्मा का दर्शन किया और उस आत्मा का दर्शन जिसने किया उसने परमात्मा का दर्शन किया। तो अब यहाँ जीवात्मा परमात्मका का अंश है। शरीर नाशवान् हैं। जीवात्मा अविनाशी है। मैं आप से पूंछना चाहता हूँ परमात्मा मरता है क्या? बोलो तो परमात्मा के अंश आप हो आप मरोंगे क्या? अगर आप आत्मा हो तो आप मरोंगे क्या? परमात्मा नहीं मरता तो आप भी नहीं मरोंगे। मरेगा कौन? यह भौतिक शरीर, नाशवान् शरीर मरेगा। परमात्मा अजर अमर है जीवात्मा भी अजर और अमर है। फिर कहा कि जीवात्मा और परमात्मा का सम्बन्ध क्या है? कोई कहते हैं, **''सर्वं खलु इदं ब्रह्म''** यह आत्मा ही परमात्मा है। आत्मा में परमात्मा में कोई भेद नहीं। अभेद है अद्वैतद्वैत नहीं है उसको अद्वैत कहते हैं। द्वैत शब्द का क्या अर्थ है-**''द्वयो र्भावः द्विता, द्विता एव द्वैतं न द्वैतं अद्वैतं, द्वैतं च तद् अद्वैतं द्वैताद्वैत''** तो इस प्रकार जो आत्मा और परमात्मा को एक दृष्टि से मानते हैं, इसमें कोई भेद नहीं है। यह सिद्धान्त भगवान् शंकराचार्य जी का जो अद्वैत भाव से मानते हैं। हमारे यहां भगवान् निम्बार्क ने कहा कि देखो हम उसका भी आदर करते हैं। उस आत्म दृष्टि से, परमात्मा दृष्टि से, उसका अंशांशी भाव होने से वह अद्वैत है एक है लेकिन व्यावहारिक दृष्टि से जीवात्मा और परमात्मा में बहुत भेद है इसलिए अभेद होते हुये भी भेद है। निम्बार्क भगवान ने कहा- **ज्ञानस्वरूपञ्च हरेरधीनं,** ये जीवात्मा ज्ञानस्वरूप तो है सर्वतन्त्र स्वतन्त्र नहीं है यह भगवान् के

अधीन है यह छोटा है और भगवान् बहुत बड़े हैं अर्थात् जैसे सूर्य की किरण और सूर्य भगवान् एक समुद्र की बिन्दु जीवात्मा और भगवान् समुद्र। तो समुद्र में और समुद्र बिन्दु में जितना अंतर है उतना आत्मा और परमात्मा में अन्तर है। इसलिए निम्बार्क भगवान् कहते हैं कि समुद्र की तरंगे और समुद्र, तरंगे समुद्र की होने से कह सकते है कि भाई समुद्र व तरंग में कोई भेद नहीं, एक ही बात है। लेकिन स्वरूप से तो तरंगे अलग दिख रही है, समुद्र अलग है। इसलिए निम्बार्क भगवान् कहते हैं, दो हैं तरंगों का रूप अलग है और समुद्र का रूप अलग है। उस आध्यात्मिक दृष्टि से एक भी है तो इसलिए द्वैत भी है, अद्वैत भी है, द्वैता द्वैत सम्बन्ध है। निम्बार्क भगवान का स्वाभाविक द्वैताद्वैत। खीचंतान की कोई बात नहीं है एक चमत्कार की बात मैं कहूँ इस आयोजन में, इस सम्मेलन में, एक चमत्कार क्या हुआ? हमारे सभी धर्माचार्यों ने ऐसी घोषणा की थी बार बार कल भी और परसों भी। क्या घोषणा की थी? और घोषणा करके सिद्ध कर दिया द्वैताद्वैत सिद्धान्त को। बल्लभाचार्य जी महाराज ने भी और हमारे जो और वक्ता, महात्मा, बन्धु हैं उन्होंने भी, क्या घोषणा की थी कि हमारे साम्प्रदायिक दृष्टि से विचारों में मतभेद हो सकता है, तो हमारे यहां भेद भी है लेकिन सनातन धर्म सार्वभौम वैदिक धर्म की दृष्टि से हमारे में अभेद भी हैं। भेद होते हुये भी अभेद हैं।

ऐसा सब धर्माचार्यों ने कहा है तो ये चमत्कार देखिये इस मंच का, कि यहां पर हमारे आचार्य चरणों ने भी सबने बिल्कुल शास्त्रीय दृष्टि से स्वीकार किया है और यह कहा है कि यहां द्वैत और अद्वैत, द्वैताद्वैत सिद्धान्त का प्राबल्य इस प्रकार स्वीकार किया है। मैं एक बात कहना चाहता हूँ। शंकराचार्य भगवान ने स्वीकार किया। भगवान शंकराचार्य जी को एक श्रुति है हमारे परमराध्य शंकराचार्य भगवान विराजमान है, धृष्टता नहीं कर रहा हूँ, उसमें गलती होगी तो मैं अपना कान पकड़ लुँगा, लेकिन मैं सुनाना जरूर चाहुँगा, **सत्यपि भेदापगमे नाथः तावकीनोहं न माम कीनस्त्वं, सामुद्रोहितरंगः क्वचनः समुद्रः तरंगः॥** भगवान् शंकराचार्य कहते हैं भगवान् से प्रार्थना करते हुये। हे प्रभो **''सत्यपि भेदापगमे''** यद्यपि भेद नष्ट हो गया भेद नहीं होने पर भी अर्थात् अभेद होने पर भी मैं भेद का आचार्य अभेदमानता हूँ किन्तु तावकीनोहं मैं आपका दास हूँ **'न मामकीनस्त्वं'** आप मेरे हो मैं आपका दास हूँ। द्वैत को स्वीकार किया। और उदाहरण दिया कि **''सामुद्रोहितरंगः''**। ये तरंग जो है समुद्र की है तरंग समुद्र नहीं है **''तारंगोहि समुद्र''** और कहते हैं समुद्र जो है तरंग का नहीं है। इसी प्रकार मेरे में आपका भेद है समुद्र और तरंग के अन्दर भेद है और बार बार फिर अभेद भी है।

इस प्रकार भगवान शंकरचार्य जी ने भी ऐसा स्वीकार किया मैं अपनी अल्पबुद्धि से कह रहा हूँ इसमें कोई अशुद्धि होगी तो मुझे मानने में कोई दिक्कत नहीं है। तुलसीदास जी महाराज ने स्वीकार किया। **''गिरा अर्थ जल बीच सम कहियत भिन्न न भिन्न । वन्दउँ सीताराम चरण जाँय परम प्रिय खिन्न''** कहते है तुलसीदास जी महाराज गिरा अर्थ, शब्द और अर्थ राम राम का अर्थ क्या? ऐसे भगवान् रामचन्द्र दशरथ नन्दन, सीता, तो शब्द का अर्थ अभिन्न है। शब्द और शब्द का अर्थ शब्द मैं मिला हुआ है तो कहते हैं **'गिरा अर्थ जल बीच सम'** ये दोनों अभिन्न होते हुये भी अलग अलग है। किस प्रकार से कहियत भिन्न न भिन्न कहते है ''जल बीच सम'' वही बात कहिए समुद्र को जल और तरंग अभिन्न होते हुये भी स्वरूप तो भिन्न भिन्न हैं इस प्रकार तुलसीदास जी महाराज ने भी इस बात को स्वीकार किया। राधा जी कृष्ण स्वरूप हैं, कृष्ण राधा जी का स्वरूप हैं। और

राधा जी स्वयं भगवान कृष्ण के आत्मा का, यूँ कहिये कि परमानन्द स्वरूप हें। परम आनन्द स्वरूप है, उसी का अवतार श्री राधा जी हैं। भगवानकी आत्मा का ही अवतार राधाजी हैं। तो राधा में और कृष्ण में कोई भेद नहीं, किन्तु स्वरूप से भेद भी है। शक्ति और शक्तिमान का अभेद है किन्तु स्वरूप का बाह्यदृष्टि से कहते हैं भेद भी है। इस प्रकार हमारे आचार्यों ने और कवियों ने स्वीकार किया है जो स्वाभाविक है क्या खण्डन मण्डन करना जो स्वाभाविक है, स्वत: सिद्ध है उसको सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं। ऐसे निम्बार्क भगवान का स्वाभाविक सिद्धान्त लोकप्रिय हुआ जिसको सभी लोगा बड़े सुन्दर तीरके से, कोई काँट छाँट की बात नहीं, निम्बार्क भगवान के लोकप्रिय सिद्धान्त हुआ को किसी ने काँट छाँट नहीं किया किसी ने उस पर किसी प्रकार का आक्षेप नहीं किया, क्यों? लोकप्रिय सब सिद्धान्तो का समन्वय करते हुये निम्बार्क भगवान चल रहे हैं। इसी प्रकार हमारे आज निम्बार्क भगवान के अवतार, हमारे आचार्य श्री भी हमारे सब सम्प्रदायों के अचार्यों को उसी दृष्टि से उसी एकात्म भाव से जो निम्बार्क भगवान ने कहा है उसी प्रकार हमारे आचार्य श्री का स्वयं उदाहरण है निम्बार्क भगवान के साक्षात् अवतार हैं। जितने सम्मेलन, जितने धार्मिक कार्यक्रम होते हैं तो निम्बार्क सम्प्रदाय अलग नहीं सभी सम्प्रदाय मिल करके और हमारे सनातन धर्म का स्वरूप सिद्ध होता है। यह मान करके हमारे साक्षात् निम्बार्क भगवान के अवतार वर्तमान आचार्य श्री ने निम्बार्क के सिद्धान्त को उसी रूप में चरितार्थ किया। सब आचार्य सब मान्यता वालों को एक मंच पर बुला करके, अलग अलग होते हुये भी, हम एक हैं, धर्म की रक्षा के, राष्ट्र की रक्षा के लिए, हम एक हैं। अपनी उपासना की दृष्टि से हम भिन्न भिन्न हो सकते हैं लेकिन सब अभिन्न हैं।

महन्त श्री राधाकृष्णदास जी :- डूँगरपुर राजगुरु

हमारा सम्प्रदाय अनादि वैदिक सम्प्रदाय है। हंस, सनकादिक, नारद, जैसे अनेक महान् अचार्य हुये परन्तु जगद्गुरु निम्बार्काचार्य भगवान् निम्बार्क महामुनीन्द्र ने हमारे इस सम्प्रदाय का जो द्वैता द्वैत सिद्धान्त एवं रसोपासना की प्रणाली का जो उद्घोष किया है वह आज प्रत्यक्ष दिखाई देता है। हंस सनकादिक, नारद, प्रभृति जितने भी अचार्य हुये उन्होंने, अक्षर ब्रह्म की उपासना की। उन्होंने इस निम्बार्क सम्प्रदाय में जो रसोपासना जो गुह्यति गुह्य था उसको प्रकाश में ला जगद्गुरु निम्बार्कचार्य ने इस सम्प्रदाय में रसोपाना का द्वैताद्वैत सिद्धान्त, राधा कृष्ण की युगल उपासन रसोपासना का प्रचार किया इसके बाद हमारे पूर्वाचार्य श्री श्रीभट्ट जी महाराज श्री स्वामी हरिव्यास देवाचार्य जी महाराज ने तो स्पष्ट अपने मधुर लालित्य पदों में भगवान प्रिया प्रीतम राधा कृष्ण का मधुरातिमधुर वर्णन किया। जो अक्षर ब्रह्म की उपासना करने वाले थे वो हमारे भगवान परात्पर परब्रह्म गोलोकवासी भगवान श्री कृष्ण के तुलसी की मकरन्द वायु जब उनके ध्यान में गया तब वहां से रस की सिद्धि हुई।

हमारे आचार्य चरण, हमारे जितने भी अचार्य हुये हैं समस्त सम्प्रदाय के जगद्गुरु शंकराचार्य, वल्लभाचार्य, सबका प्रादुर्भाव दक्षिण भारत में हुआ और धीर धीरे आ करके पूरे भातर वर्ष में जगद्गुरु शंकराचार्य जी ने चार मठों का स्थापना की। जगद्गुरु निम्बार्काचार्य दक्षिण भारत से होते हुये गुजरात, राजस्थान, व्रज में करके मधुरातिमधुर रसोपासना प्रकाशन किया। निम्बार्क सम्प्रदाय में निम्बार्काचार्य जी की जो मधुर उपासन है वह बड़ी विचित्र है। भगवान ने अवतार तो बहुत लिए, कच्छ, मच्छ, वराह, सूकर नृसिंह इत्यादि परन्तु उससे जो हमारे रसिक भक्त थे, रसिक जो सन्त थे उनका

हृदय का ताप शमन नहीं हुआ, भगवान ने बड़ी कृपा करके बड़ी अनुग्रह करके, भगवान निम्बार्काचार्य चरणों द्वारा मधुर रस की उपासना इस धराधाम पर प्रकाशित किया और वह मधुर रस उपासना जगद्गुरु निम्बार्काचार्य भगवान सुदर्शनचक्रावतार का देन है जो आज वृन्दावन के रसिक सन्त इसका अधिक से अधिक रसास्वादन करते हैं। वृन्दावन के जितने भी पहले सन्त थे वह वृन्दावन को छोड़ करके नहीं जाते थे। **''रे मन वृन्दा विपिन निहार! विपिन राज सीमा के बाहर हरि हूँ को न निहार। यद्यपि मिले कोटि चिन्तामणि तदपि न हाथ पसार॥''** तो वृनदावन के संत, कोटि कोटि चिन्तामणि का त्याग करके वृन्दावन में निवास करते थे। देखिये वृन्दावन का रसास्वादन करने के लिए उन्होंने वृन्दावन को त्यागा नहीं। हमारे भगवान श्री कृष्ण के अनेक रूप हैं। महाद्वारिकाधीश, ब्रजेन्द्र नन्दन, श्री श्याम सुन्दर, निकुँजस्थ प्रिया प्रितम, तो देखिये महाभारत के श्री कृष्ण, महाभारत का संचालन कर सकते हैं क्यों कि वहां तो उनका राज्य है, राज्य तन्त्र हैं। सोलह हजार एक सौ रानियाँ, आठ पटरानियाँ हैं, सभासद है वह कहीं भी आ जा सकते हैं, परन्तु वृन्दावन के श्रीकृष्ण जो नित्य निकुँज में निवास करने वाले हैं,**''सखीसहस्रः परिसेवितां सदा''** उन को कहीं जाने की फुर्सत नहीं है। निम्बार्क सम्प्रदाय में जो सखीभाव प्रधान है, सारी सखियाँ वृन्दावन के निकुँज महल में भगवान् श्याम सुन्दर प्रिया लाल को एक क्षण के लिए भी कहीं बाहर जाने की अनुमति नहीं देते हैं। अष्टयाम सेवा होती है। सखियाँ भगवान् प्रिया प्रीतम के लाड़ में चौबीस घण्टा अष्टयाम सेवा करती है। वह केवल वृन्दावन में है, और निम्बार्क सम्प्रदाय में है, और मधुर उपासना में हैं। हमारे जगद्गुरु निम्बार्काचार्य ने जो निम्बार्क सम्प्रदाय में मधुरोपासना का प्रचार प्रसार किया वो एक अद्भुत है। निम्बार्क सम्प्रदाय में राधाकृष्ण की इतनी मधुर छवि का वर्णन हैं। सोलहरु श्रृंगार हैं क्या मातायें जो अपने गहने पहनती हैं उनमें सोलह श्रृंगार करती हैं उनको मालुम है कि सोलह श्रृंगार क्या हैं ? द्वै दश आभूषण जो धारण करती है उनको क्या मालुम है कि द्वादश आभूषण क्या है ? हमारे रसिको ने हमारे अचार्यों ने श्री राधारानी के श्रृंगार में, सोलह श्रृंगारका वर्णन किया। द्वादश आभूषणों का वर्णन किया है जो बहुत ही गोपनीय है। सोलह श्रृंगार क्या है मातायें सोलह श्रृंगार करती है ? उसी प्रकार हमारी राधारानी के भी सोलह श्रृंगार हैं। हमारे राधारानी के भी बारह आभूषण हैं। क्या है ? मातायें काजल लगाती है हमारे राधारानी भी काजल लगाती हैं सोलह श्रृंगार में इसका वर्णन है। सचित्र रक्तोज्वलांगी, रसिकनी, तिलकिनी षोडशकल्प राधा। राधा षोडशकल्पनीय। हमारे राधारानी के यह सोलह श्रृंगार हैं हमारे रसिकों ने वर्णन किया है। हमारी राधारानी के सीता जी के जगत जननी जानकी जी के जो श्रृंगार था, चूडामणि वह तो हनुमान जी को मिला। हनुमान जी जब लंका में गये, माता जानकी जी ने कहा कि राम जी ने तो एक मुद्रिका प्रदान की है मेरे पास तो चूडामणि है दिव्य चूडामणि, हनुमान जी ले करके आये कैसे ले करके आये ? हमारे हनुमानजी साधारण रसिक नहीं है वीर भी हैं रसिक भी हैं तो यह हमारे गुह्याति गुह्य राधा और कृष्ण का स्वरूप है, रस है, श्रृंगार है। **''राज अक्षर चिर गोर्धन ढ़ाई अक्षर घनश्याम। सहज परस्पर आत्ममति दोई मिलि श्यामा श्याम''** तो हमारे निकुँज के रस रसिक परम उपासन प्रिया लाल श्यामा श्याम की उपासना जगद्गुरु निम्बार्काचार्य की देन है। द्वैताद्वैत सिद्धान्त उन्होंने जो अभी प्रतिपादित किया है। द्वैताद्वैत सिद्धान्त क्या है ? देखिये यह ताली बजा दिया, ताली बजाने पर एक शब्द हुआ और दोनों हाथों के द्वारा ताली बजाये, तो दो हाथ और एक शब्द। गोस्वामी तुलसीदास ने बहुत ही सूक्ष्म साक्ष्य में कहा कि इसका शास्त्रों में वर्णन किया। अर्थ गिरा जल बीच

सम कहियत भिन्न न भिन्न बन्दउ सीताराम पद जिनहिं परम प्रिय खिन्न। अर्थ और गिरा में कोई भेद नही है जीव भगवान का अंश है भगवान अंशी हैं। जीव का व भगवान को जो स्वरूप है अशं अंशी को जो स्वरूप है। अंशी का जो स्वभाव है, सत्चित का आनन्द, देखिये सत् चित् आनन्द अगर सत् भी नही हो चित् भी नहीं हो फिर आनन्द कहाँ से होगा। सत्चित् का आनन्द भगवान् में भगवान् सत्य हैं। भगवान् सत्य हैं जीव सत्य हैं चित चेतन है और चेतन में जो आनन्द है उसका हम उपयोग करते हैं। आनन्द क्या है ? आनन्द का प्रादुर्भाव कहाँ से होता है ? हृदय से होता है। रसों का प्रादुर्भाव कहाँ से होता है, हृदय से होता है। रस क्या है रसों का भाव क्या है ? बहुत बड़ा विषय है, बहुत गहन विषय है रस हृदय से प्राप्त होता है। और आचार्यों के प्रति श्रद्धा, भगवान् के प्रति निष्ठा आदि जो भाव है उस से रस प्राप्त होता है।

आज आप लोगों को हमारे सनातन धर्म के प्रति भाव है, निष्ठा है, इसलिए आप यहाँ उपस्थित हैं और उस रस का आज आस्वादन करते हैं और भाव के आगे, जो आगे की सोपान है, सीढ़ी है वह है महाभाव, जिसको महाभाव कहते हैं। और इससे अगली जो सोपान है आदि रूढ़भाव है। रूढ़भाव के बाद अति रूढ़भाव है तो वह महाभाव हमारे वृषभानु की बेटी, वृषभानु नन्दिनी वह महाभाव स्वरूपा है वह भगवान् श्री कृष्ण के प्रति अत्यन्त प्रेम करती है। भगवान् रसमय है भगवान् का क्या स्वरूप बताया है राधा सुधा निधि में लिखा है कि - **''अन्तेस्थितेपि दैन्ये किमपि प्रलापं, हा मोहनेति मधुरं ददासि कस्मात् ''** प्रियाजी राधारानी भगवान् श्याम सुन्दर के अंक में, अंक में होते हुये भी हा मोहन, हा मोहन कहती हैं यही महाभाव स्वरूप है जो भगवान् के अंक में हैं। एक साथ मिले रहते हैं निकुँज में। निकुँज से एक **''क्षणिकक्षणं क्षणार्द्धं न चलतीवः''** हमारे राधारानी व हमारे श्याम सुन्दर का एक क्षण के लिए भी इधर उधर बिछुड़ना नही हैतो भगवान् प्रिया लाल अंक में प्रिया जी विराजी हुई हैं और प्रलाप कर रहीं है हा मोहन हा मोहन! मिलने के लिए। अनवरत सदा मिलते रहते हैं लेकिन ऐसा आभास है कभी नहीं मिले, हमारे प्रिया प्रीतम अभी बिछड़े हुऐ है। ऐसा जो भाव है, वह तो हमारे वृषभान नन्दिनी किशोरी जी श्री राधारानी में भाव है यह सब अवगत कराने की देन जगद्गुरु भगवान् सुदर्शनावतार श्री निम्बाकार्यचार्य जी का है और बहुत ही मधुर से मधुर भाव भर दिया गया है। निम्बार्क सम्प्रदाय में सब राधे, राधे बोलते हैं। मेरे से प्रश्न किया कि सब राधे राधे बोलते हैं, क्यों बोलते हैं ? राधे के बिना सब आधे हो जाते हैं, इसलिए सब कोई राधे राधे बोलता है।

डा. वृन्दावन बिहारी दासः- काठियाबाबा, कलकत्ता

हमारे देश में बहुत सारे आचार्य हुये हैं कुछ ही समय पहले आप लोगों ने सुना था इतने अचार्यों की क्या आवश्यकता है ? क्या निम्बार्क दर्शन की वर्तमान समय में प्रासंगिकता है कि नहीं ? सब अचार्यों के होते हुये भी निम्बार्क आचार्य की प्रासंगिता इसलिए है, कि निम्बार्क दर्शन प्रभु प्रीत का सेतु बन्ध है। जैसे आप लोग नीचे बैठे है और महाराज श्री हमारे आचार्य, ऊपर बैठे हुये हैं यह गुरू शिष्य की परम्परा आचार्य और शिष्य की जो परम्परा है यह एक विशाल पण्डाल है, यह विशाल पण्डाल का अंश है, पण्डाल बोलने पर समस्त पण्डाल आ जायेगा। जहां पर श्रोता लोग बैठे हैं वह भी पण्डाल का अशं है, तथा पण्डाल को छोड़कर भी विराज रहे हैं वे भी हमारे इस पण्डाल मंच की व्यवस्था के अन्तर्गत है ये दोनों ही पण्डाल व्यवस्था के अशं होने से,यह हो गया हमारा अभेद और इस पण्डाल की सत्ता में अलग अलग व्यक्ति विराज रहें हैं, इसलिए

यह हो गया भेद। यह भेदाभेद सिद्धान्त आचार्य श्रीनिम्बार्क ने स्वाभाविक ढंग से बोला है।

जैसे कोई व्यक्ति दो किलो सामान नहीं उठाता है पर उसमें दस किलो सामान उठाने की शक्ति है पर वह दस किलों सामान उठाने की शक्ति का प्रयोग नहीं करता हैं पर दो किलो समान उठाता है इसका मतलब यह नहीं कि वह दस किलो समान नहीं उठा सकता है। जैसे हमारे अचार्य जी ने आज इतने बड़े समारोह का आयोजन कराया इस में प्रतिदिन कई कार्यक्रम रखकर तेरह चौदह सम्मेलन रखे पण्डाल में, निम्बार्क दर्शन षड़दर्शन, ''सम्मेलन'' शब्द से सम्पूर्ण सत्ता के सम्मेलन से भी है, वैष्णव दर्शन के सम्मेलन से भी है, गोरक्षा सम्मेलन से भी हैं, साथ में शिक्षा सम्मेलन से भी है, मातृ सम्मेलन से भी है। यह सारे सम्मेलन निम्बार्क जयन्ती समारोह व ''सनातन धर्म सम्मेलन'' के अन्तर्गत हैं अत: यह अभेद है और विविध स्थान के कार्यक्रम यथा यज्ञ शाला, मन्दिर आदि में आयोजित कार्यक्रम व संगोष्ठि सम्मेलन अलग अलग भी है अत: भेद है और सनातन धर्म सम्मेलन के रूप में एक है अत:अभेद भी है। यह इस के प्रेरणादाता आचार्य श्री है, यही श्री निम्बार्क का स्वाभाविक भेदाभेद है। उसी प्रकार जैसे सब सम्मेलन कराने की शक्ति आचार्य जी के पास है। और इसके अतिरिक्त भी आचार्य श्री और भी सम्मेलन कार्यक्रम करा सकते हैं। यह शक्ति छिपी हुई है उनके अन्दर जो भगवान् की भी सत्ता है। जो भगवान् की सत्ता है। जो इस जड़ चेतन को भिन्न भिन्न रूप से प्रवृत करते हुये एक है इस भेद एवं अभेद को एक ही समय देखा जाता है, इसीलिए इसे भेदाभेदा कहा जाता है।

किन्तु ये इक्यावन सौ जन्म जयन्ती जिसको आप लोग मना रहे है, इसके बारे में हमारे भृगु संहिता में जो उल्लेख है उसकी कुण्डली के अनुसार हमारे गुरूजी ने निम्बार्क दार्शनिक मतवाद एवं साधन प्रणाली में भाटपार के पण्ड़ितो से उस जन्म कुण्डली को दिखाते हुये कलियुग के पन्द्रह गताब्द में निम्बार्क आचार्य का जन्मकाल, उन्होंने निर्धारण किया है। पर अनुसंधात्री के मत में जैसे डॉक्टर रमा चौधरी ने द्वादश शताब्दी का निम्बार्क का काल बताया था। आधुनिक जो हमारे अनुसंधात्री है उन सबों ने कोई षष्ठ शताब्दी सप्तम् शताब्दी, बताया है, किन्तु सम्प्रदाय का जो सिद्धान्त है, सम्प्रदाय के सिद्धान्त के अनुसार, भृगु संहिता की कुण्डली के अनुसार एवं हमारे अन्यान्य अचार्य एवं भविष्य पुराण के अनुसार, अचार्य का जन्म समय क्यों कि कृष्ण का जो समय था वो कृष्ण के समय महाभारत से पहले ही कृष्ण आये इसके बाद कृष्ण का नाम आप वहां पर देख सकते हैं। महाभारत का काल पाँच हजार साल का समय, हमारे आचार्य निर्धारण करते हैं। बड़े बड़े अचार्य हमारे हुये जिन्होंने महाभारत का समय कोई पाँच हजार, कोई उनके नक्षत्र आदि देख करके उससे पहले का भी निर्णय करते हैं॥

हम लोग किसी सीमित दायरे में रह करके किसी आचार्य का समय चिन्तन नहीं कर सकते हैं। अनुसंधात्री के अनुसार जो प्रामाण्य हम लोगों को मिला हुआ है, उसमें काशी में हरिव्यास देवाचार्य जिसको रसोपासना के बारे में बताते हुये हमारे अचार्य ने कुछ ही समय पहले कहा कि जैसे हरिव्यास देवाचार्य की महावाणी, युगल शतक की वाणी एवं हमारे और भी जितने भी आचार्य हुये उनके रसोपासना के बारे में बताते हुये कह रहे थे। उस समय हरिव्यास देवाचार्य जी ने भी एक ग्रन्थ का, जो ग्रन्थ मणीदास ने लिखा था। मणीदास के ग्रन्थ की प्रतिलिपी बनारस में बैठकर किया था। वह वेद का जैसे वेद का सायण भाष्य है वेद का महीधर भाष्य है। महीधर भाष्य का अनुकरण उन्होंने किया था। तो उसके अनुसार निम्बार्क का जो बनारस में जाने का भी, (हरिव्यास देवाचार्य की परम्परा की बात वहाँ कही

गई है) इससे आप प्रमाण पा सकते है वो प्रमाण आज भी हमारे पास उपलब्ध है। अतः निम्बार्क आचार्य का जो समय है वो इक्यावन सौ समय जो इक्यावन सौ जयन्ती कहते हैं वह केवल भृगु संहिता और भविष्य पुराण अन्यान्य पुराणों के अनुसार है और अनुसंधात्री के अनुसार निम्बार्क का समय षष्ठ व सप्तम शताब्दी कह सकते हैं। जैसे भारतीय तीर्थ श्रृंगेरीमठ के अनुसार शंकराचार्य का समय जैसे बताया गया है वो अष्टम नवम शताब्दी के अन्दर रखते हैं उसी प्रकार हमारे अनुसंधात्री लोगो ऐसे ही किया है। किन्तु प्रज्ञानानन्द वेदान्तदर्शन के इतिहास में आचार्य शंकर का भी बहुत पुराने समय परम्परा से उन्होंने चिन्तन किया है। उसी प्रकार हमारी अचार्य परम्परा के अनुसार निम्बार्काचार्य का काल इक्यावन सौ पूर्व हम कहते है निम्बार्क दर्शन का अनुसंधान करने के लिए कुछ साधन बताया गया। जैसे गुरु आज्ञानुवर्ती योग। उसके लिए बताया गया कर्म ज्ञान, गुरु आज्ञानुवर्ती योग, शरणागति इत्यादि। तो उसमें जो साधन गुरु आज्ञानुवर्ती योग है वह गुरु आज्ञा का पालन करना है इसके लिए निम्बार्काचार्य ने मंत्र रहस्य षोडसी में कहा है **''आदौ गुरौ न्यसेप्राणानात्मानं धनमेवच। सर्वसम्बन्धविषयं कृत्वा सेवेत नित्यशः॥''** नित्य भगवान की सेवा व गुरु को भगवान मानकर सेवा करने के लिए कहा गया है। हमारे आचार्य परम्परा इस बात को मानती हैं कि पाँच हजार एक सौ साल पहले निम्बार्क आचार्य जी का जन्म हुआ है। हमारे आचार्य जी के लिखे हुये ग्रन्थ **मंत्र रहस्य षोडशी** के अनुसार वह स्वीकार करना पड़ता है। निम्बार्क आचार्य ने किसी भी आचार्य का खण्डन नहीं किया है इसी से भी प्रमाण होता है कि निम्बार्क आचार्य हमारे अन्य अन्य सम्प्रदाय आचार्य से पूर्व ही हुए हैं। यद्यपि किसी किसी ने नियमानन्द इस नाम को सुनने पर आनन्द जैसे विवेकानन्द इत्यादि आनन्द दशनामी सम्प्रदाय से भी जोड़ा हैं। पर नियमानन्द नाम जन्म का है निम्बार्क के जीवन चरित्र के बारे में आप सब लोगों ने सुना है। तो जैसे आनन्द से नियमानन्द दशनामी नहीं है जैसे रामानन्द, आनन्द दशनामी नहीं होते हैं।

उसी प्रकार हमारे किसी सूत्र के पाने से अचार्य का समय, यह ही षष्ठ शताब्दी, सप्तम शताब्दी हुआ, ऐसी बात नहीं। गुरु के विश्वास के अनुसार निम्बार्क आचार्य के लिखे हुये मंत्र षोडशी से, गुरु के नियम का, उनके आदेश का, उनके लिखे हुये ग्रन्थ का प्रामाण्य से आचार्य निम्बार्क का काल इक्यावन सौं वां ही मानना चाहिये। निम्बार्क का जो समय के साथ साथ जो गुरु का आदेश शरणागति, भगवान को पाने के लिए कृष्ण भगवान एवं राधा का दर्शन करने के लिए उन्होंने कहा- **''आनुकूल्यस्य संकल्पः प्रातिकूलस्य वर्जनम् रक्षिष्यतीति विश्वासः''** भगवान् की प्राप्ति के लिए शरणागति की बात कहीं है उसमें षड् विधाशरणा गति की बात कही गयी है। षड्विधा शरणागति के अनुकूल परिस्थति का निर्माण करना यथेष्ट है। आज आचार्य श्री ने इस सम्मेलन के द्वारा हमारे लिए एक अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न की है। इस अनुकूल परिस्थिति से भगवान आपके अनुकूल होगा इस प्रकार सोचना चाहिये। और प्रतिकूल परिस्थिति का त्याग करना चाहिये। भगवान के ऊपर पूर्ण निर्भरशील हो करके, अंकिचन हो करके भगवान के सेवा कार्य में रहना चाहिये इस प्रकार निम्बार्क आचार्य की साधना प्रणाली है।

उसमें उन्होंने भक्ति को प्रेमलक्षणा कहा है। भक्ति दो प्रकार की होती है। जैसे वैधी भक्ति और रागानुगा भक्ति। उसमें उन्होंने प्रेम लक्षणा नाम से कहा है। इस प्रेम लक्षणाभक्ति में, इस रागानुगा भक्ति में , भगवान राधा कृष्ण जिस से प्रसन्न हों समय ऋतुनुकूल जैसे उनकों सेवा की अनुकूलता हो, वैसी ही सेवा की जाती हैं। यह परम प्रेम निर्विकार मनः स्थिति में उत्पन्न होता

है जब तक राधानुगमा प्रेम विशेष लक्षणा हो तब तक श्रवण कीर्तन इत्यादि नवधा भक्ति करने की आवश्यकता है। भगवान् में अनन्य भक्ति होने के बाद हृदय में परम प्रेम स्वभावतः प्रवाहित होने लगता है। यह भक्ति मार्ग हमारे आद्य निम्बार्काचार्य ने बताया। इसलिये हमारे अचार्य की प्रशंसा करते हुये, गोविन्दनाथ शास्त्री, गोपीनाथ कविराज, एवं हमारे अन्यान्य जितने भी आचार्य थे पुरुषोत्तम आचार्य इत्यादि जो हमारे आचार्य थे सब लोगों ने निम्बार्क दर्शन के वैशिष्टय का सम्मान किया है। उन्होंने कहा है, ''निम्बार्क दर्शन'' केवल अद्वैत की व्याख्या नहीं है, वेदान्त सूत्र में उसी की प्रशंसा नहीं किया है, न केवल द्वैत की ही मात्र व्याख्या माना है। निम्बार्क ने द्वैत एवं अद्वैत का समन्वय स्वीकार किया है। इसीलिए रामानुजदर्शन शक्ति विशिष्टा द्वैत एवं वल्लभसम्प्रदाय के शुद्धाद्वैत और शंकर सम्प्रदाय जिसको शंकराचार्य मत दिया है जिसको केवलाद्वैत कहते हैं, उन अद्वैत सिद्धान्त से और विशिष्टा द्वैत सिद्धान्त से मध्वाचार्य के बनाये हुये मध्व सिद्धान्त आदि का हमारे सिद्धान्त में स्वाभाविक भाव से सबका समन्वय किया है। इस समन्वय भाव को देखते हुये हमारे सभी सम्प्रदाय इसमें समन्वित हो सकते हैं। वह द्वैत परक हो चाहे अद्वैत परक हो। निम्बार्क दर्शन का वैशिष्ट्य है उनकी शिक्षा का वैशिष्ट्य है। यह कि वेभक्त किंञ्चित् मात्र भगवान् से अलग नहीं होना चाहते हैं। सबमें ईश्वर का दर्शन करते हुये निम्बार्क सिद्धान्त में भगवान् की सेवा में तत्पर रहने की बात कही गई हैं। निम्बार्क दर्शन में विदेह मुक्ति की बात कही गई है। निम्बार्क दर्शन में सायुज्य सालोक्य, सारूप्य सार्ष्टी इत्यादि मुक्ति के साथ जैसे शद्यः मुक्ति, क्रम मुक्ति, की बात कही, उसी प्रकार विदेह मुक्ति की बात कहीं है। जिस बात को शंकराचार्य ने जीवन मुक्ति कहा उस जीवन मुक्ति को हमारे वेदान्त दर्शन के व्याख्याता वेदान्त कौस्तुभ प्रभावृत्ति में केशव काश्मीरी भट्टाचार्य ने स्वीकार नहीं किया। केशव काश्मीरी भट्टाचार्य जी ने वेदान्त कौस्तुभप्रभा में कहा है जैसे नारियल का पेड़ से या उस की डाली के गिर जाने के बाद भी उसका निशान रह जाता है उसी प्रकार हमारी इस देह के रहते हुये भी अगर हम भगवद् दर्शन कर लेते हैं तो भी जब तक देह नहीं छूटता है तब तक जीवन मुक्ति संभव नहीं है। जब तक प्रारब्ध भोग रहेगा, यह संस्कार रहेंगे। प्रारब्ध कर्म का नाश नहीं हो जायेगा तब तक देह रहेगा और प्रारब्ध नहीं रहेगा तो देह भी नही रहेगा इसलिए हमारे निम्बार्क दर्शन में विदेह मुक्ति को हम लोगा स्वीकार करते हैं, जीवन मुक्ति को स्वीकार नहीं करते। इस प्रकार ''वेदान्त पारिजात सौरभ'' के साथ वेदान्त कौस्तुभ में श्री निवासाचार्य जी ने एवं जाह्नवहीकार सिद्धान्त सेतुकार सभी लोगों ने निम्बार्क दर्शन के वैशिष्टय को उनके मुक्ति के प्रकार को, भगवद्भावापत्ति मोक्ष को उन्होंने कहा है। भगवान् के सदृश होने का मतलब यह नहीं है। उनमें सृष्टि कृतित्व रहेगा। सृष्टि कृतित्व के साथ सृष्टि संहतित्व नहीं रहेगा। और सृष्टि कृतित्व और सृष्टि पालन, कर्म कृतित्व ये तीनों शक्ति जीव की मुक्ति होने पर भी नहीं रहेगा। जैसे एक दवा का पात्र जिसमें बिन्दु बिन्दु दवा डाल करके एक दवा का पात्र पूर्ण करते हैं उसी प्रकार जीव की मुक्ति हो जाने पर भी अनन्त बिन्दु के साथ मिला हुआ वह, मिला हुआ भी नहीं मिला हुआ रहेगा, तादाम्य सम्पर्क का कभी नाम नहीं होगा।

इस प्रकार निम्बार्क का जन्म भले ही भूगी-पैठण में हुआ हो उनका जन्म के साथ अरुण और जयन्ती का सबन्ध हुआ। वे हंस भगवान् का वह उपदेश और सनकादि ऋषि से प्राप्त परम्परा मंत्र नारद के द्वारा निम्बार्क को प्राप्त हुआ वही मन्त्र पाने के बाद वही ब्रह्म विद्या प्रवाह ले करके परशुराम देवाचार्य जी श्री सर्वेश्वर भगवान् की सेवा लेकरके आज भी आचार्य श्री के रूप में यहाँ

उपस्थित हैं। आचार्य श्री ने अपने अन्तर आत्मा की भावना बताई, बोले कि हमने करगिल का युद्ध सुना तो हमारे आँसू आने लगे, हमारे मायावादी कभी भी इसको स्वीकार नहीं कर सकता है। पर हमारे आचार्य निम्बार्क इतने राष्ट्रभाव, मानव भाव और पर दुःख कातर है कि सबमें ईश्वर को देखते हुये उनकी आँखो से आँसू आते है तो यही तो निम्बार्क दर्शन का वैशिष्ट्य है।

पूज्य श्री राघवानन्दजी महाराज :- अखिल भारतीय धर्म संघ

अपनी बात कुछ बता देना चाहता हूँ। यह अखिल भारत वर्षीय धर्म संघ, सनातन धर्म सम्मेलन अपूर्व रूप से दर्शनीय स्वरूप जो बन रहा है इसी प्रकार अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मलीन स्वामी करपात्री जी महाराज भी अखिल भारत वर्षीय धर्म संघ का अधिवेशन किया करते थे और प्रत्येक सम्मेलनों में श्री श्रीजी महाराज पीठाधीश्वर जगद्गुरु जी को भी उस सम्मेलन में आग्रह पूर्वक आमन्त्रित करते थे। श्रीजी महाराज ने उसी परम्परा को सनातन संस्कृति की रक्षा के लिए अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक परात्पर प्रभु सर्वव्यापी सर्वान्तरात्मा सर्वशतिमान भगवान अशरण शरण पूर्णतम पुरुषोत्तम सर्वेश्वर भगवान की आराधना के रूप में इस प्राँगण में यह अखिल भारत वर्षीय सनातम धर्म का सम्मेलन योजित किया है। मुझे आकर अत्यन्त हर्ष प्राप्त हुआ अनेक सम्प्रदाय के सन्त महात्मा लोग आचार्य प्रवर पधारकर इस सम्मेलन में अपने सनातन धर्म की गरिमा को वेद शास्त्र के सिद्धान्तों को पूर्ण रूप से प्रतिपादन करते रहे और कर रहे हैं। अनन्त ब्रह्माण्ड नायक परात्पर प्रभु सर्वेश्वर भगवान् की असीम कृपा से श्री श्रीजी महाराज यह ''श्री'' क्या है ? **ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः। ज्ञानवैराग्ययोचैवषष्णां भग इतीरिणा** । ये सम्पूर्ण जो परात्पर पर ब्रह्म परमात्मा श्री नारायण में सम्पूर्ण ऐश्वर्य जो प्राप्त होते हैं उसी ऐश्वर्य की छवि छटा यहाँ प्रदर्शित हो रही है यह देखकर मुझे बड़ा आन्नद प्राप्त हो रहा है। अलग अलग सम्प्रदाय का अर्थ जो विद्वानों ने आपके समक्ष उपस्थित किया, वेद शास्त्रों की मर्यादा का उद्घोष किया। सज्जन वृन्दों इन सबका अभिप्राय क्या है ? महाराज श्री ने, आचार्य प्रवर ने समस्त धर्माचार्यों को आमन्त्रित करके अखिल भारत वर्षीय धर्म संघ का उद्घोष, ये दुन्दुभी इसलिए बजाई है कि हमारे राष्ट्र में सनातन धर्म की धवल ध्वजा फहरे और एक सूत्र में सब आकर सनातन धर्म की रक्षा करें। वर्तमान की स्थिति को देखकर इसी प्रकार स्वामी करपात्री जी महाराज यह किया करते थे और करपात्री जी महाराज ने अथक प्रयत्न किया शासन तन्त्र से भी अपनी संस्कृति का रक्षण करने के लिए, सनातन धर्म का रक्षण करने के लिए, आचार्यपीठों का रक्षण करने के लिए, वैदिक धर्म मर्यादा को स्थापित करने के लिए, गोमाता का वध बन्द करने के लिए, किन्तु उन महापुरुष को भी कई बार जेल में रखा गया यह आपको विदित है।

आज धर्म सभा इसीलिए हो रही है। ज्ञान और वैराग्य की गंगा बह रही है किन्तु इस ज्ञान और वैराग्य की गंगा में डुबकी लगाते हुये हमें अपने सनातन धर्म के सिद्धान्त का भी अवलोकन करते हुये इस राष्ट्रीय तन्त्र को जो वर्तमान में धर्मनिरपेक्ष शासन की घोषणा हो रही है इसके ऊपर भी हमको विचार करना चाहिये।

राष्ट्रीय तन्त्र धर्म निरपेक्षता का उद्घोष कर रही हैं यह हमारे सनातन धर्म के ऊपर कुठाराघात कर रही है। जब तक धर्म सापेक्ष स्वरूप नहीं बनता तब तक हमारे सनातन धर्म की रक्षा होना सम्भव नहीं है इसलिए आप लोग कटिबद्ध हो करके इसकी प्रार्थना भगवान्सर्वेश्वर से करें कि भगवान् सर्वेश्वर हमको यह बल दें हमको यह शक्ति दें कि वास्तव रूप में हमारे आचार्य प्रवर ने

जो आदेश प्राप्त किया है जो यहाँ आयोजन प्रदान किया है उसकी सफलता हमें उसी में मिलेगी कि वह राष्ट्रीय स्तर पर एक उद्घोष होगा कि धर्म सापेक्ष शासन तन्त्र बनेगा और इतना ही नहीं अनादिकाल से सनातन धर्म है। सनातन धर्म की रक्षा के लिए, सनातन ब्रह्म का जो संविधान है वही सनातन धर्म हैं। सनातन धर्म की रक्षा के लिए भगवान् अपनी शक्ति आचार्यों के स्वरूप में प्रकट करते हैं और अचार्यपीठाधीश्वर अपने पीठ की स्थापना करके सनातन धर्म की रक्षा के लिए दुन्दुभी बजाते हैं वेद शास्त्र का उद्घोष करते हैं। इसी प्रकार यह निम्बार्कापीठ की स्थापना करके सनातन धर्म की रक्षा के लिए, गोमाता की रक्षा के लिए, अपने पीठों की रक्षा के लिए, ये सम्मेलन करते हैं। धर्म सापेक्ष लाने की उद्घोषणा क रते हैं। मुझे इस बात का दु:ख है कि शासन तन्त्र भगवान राम के मन्दिर को बनने के लिए संकोच कर रहा है। वेद शास्त्रों में और हमारे पुराणों में वेद शास्त्र से लेकर हनुमान चालीसा तक सनातन धर्म के सिद्धान्त का ही प्रतिपादन किया है। इसलिए भगवान् सर्वव्यापी, सर्वान्तरात्मा, सर्वशक्तिमान भगवान् कृष्ण चन्द्र रूप में प्रकट हो करके, उन्होंने अपने मुखारविन्द से जो वाणी, उच्चारण किए हैं उसका नाम गीता शास्त्र है। आज यह सुधावादी लोग मनमाने आचरण करते हैं। गीताशास्त्र को नहीं मानते, वेद शास्त्र को नहीं मानते, और सुधारवाद की घोषणा करके समाजवाद की घोषणा करते हैं। एक मुसलमान, मुसलमान धर्म को मानने वाला। मुसलमान यदि कहे कि मैं कुरान शरीफ को नहीं मानता हूँ और मैं मुसलमान हूँ तो आप पूछ सकते हो तुम किसके आधार पर मिंया जी मुसलमान हो, इसी प्रकार ये सुधारवादी लोग भी धर्म शास्त्र को नहीं मानते, वेद शास्त्र को नहीं मानते गीताशास्त्र को नहीं मानते वर्णाश्रम धर्म को नहीं मानते, तो किसके आधार पर ये हिन्दू कहलाने के अधिकारी होंगे? एक छोटी सी बात बतला दूँ- जवाहर लाल नेहरू ने एक मिंया मौलवी का भाषण करवाया और उन मौलवी साहब ने भाषण में कहा कि हिन्दू शब्द का अर्थ बतलाया। हिन्दुम, जिसकी दुम नहीं है वह पशु माने हमारा गुलाम दु:ख की बात है उस समय जवाहलाल नेहरू तालियाँ बजवा करके और उसका समर्थन किया। महाराज श्री ने कहा था कि इस भारतवर्ष में चाहे हमारा देश स्वतन्त्र न हो इसकी हमें परवाह नहीं है, किन्तु भारतवर्ष में पाकिस्तान की योजना नहीं बनना चाहिये। यदि बनेगी तो रक्तपात होगा, दुर्घटनायें होंगी हिन्दुओं की महान क्षति होगी। उनकी बात को नहीं माना और पाकिस्तान की योजन बनीं उसका परिणाम क्या हुआ? ये प्रत्यक्ष प्रमाण है। और आज भी वही है। और सनातन धर्म की मर्यादाओं को अन्तर्जातीय विवाह ये हमारे कलंक की बात है। अन्तरजातीय विवाह ये हमारे सतीत्व को नष्ट करने वाली है। देवियों साक्षात् भगवती स्वरूपा, राधारानी के रूप में आप विराजमान हो इसका विचार करो। इस धर्म के अधिवेशन में यह सनातन धर्म का अधिवेशन है इसका यदि हम विचार नहीं करेंगे व्यवहार नहीं करेगे तो हमारी भक्ति सफल तभी होगी सफल तब ही होगी जब हम वर्णाश्रम धर्म का पालन करेंगे। **''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥ परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥''** युग युग में भगवान् अवतार लेते हैं और इन पीठों की स्थापना करते हैं।

वही अवतार रूप में पीठाधीश्वर आचार्य आ करके हमको उपदेश देते हैं। उसी पीठाधीश्वर आचार्य के इस प्रांगण में आप विराजमान हो करके ये उनके आदेश को ग्रहण कर रहे हो। इसलिए वेद की आज्ञा का पालन करो शास्त्र की आज्ञा का पालन करो, और बिना भगवान की, भक्ति के मुक्ति नहीं हो सकती है। अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक ने चौरासी लक्ष योनियाँ बनाई हैं। चौरासी

लक्ष योनियों में सर्वश्रेष्ठ ये मनुष्य योनि है। मनुष्य योनि में भी वर्णाश्रम धर्म है। पशुओं में वर्ण है। समस्त संसार की सृष्टि के जितने पदार्थ हैं उनमें सब में वर्ण है। कीट पतंग जितने भी हैं सब में वर्ण हैं। सब में जातियाँ हैं। मनुष्य में जाति क्यों नहीं है ? इसलिए धर्मनिरपेक्ष शासन तन्त्र जाति पात को मिटा करके हरिजन का उद्धार करना चाहता है। हरिजन का उद्धार शास्त्रीय पद्धति से किया जा सकता है, मनमानी नहीं किया जा सकता। इसीलिए कीट पतंगों की भी जाति होती है पशुओं की भी जाति होती है। चीटियों की अनेक जातियाँ है। मकोड़ो में मकोड़े की जाति है। मकोड़ो में मकोड़े जहाँ चलते हैं उसमे चींटी नहीं जाती। पशु पक्षियों में भी जातियाँ हैं। पक्षियों में तोतों की जाति है। तोते कभी कौओं में नहीं जाते। चिड़ियाओं की जाति है। इसी प्रकार समस्त ब्रह्माण्ड के पदार्थो में, मिट्टी में जाति है, पत्थर में जाति है, वृक्षों में जाति है, इसी प्रकार मनुष्य में जाति है। वेद शास्त्र इस बात का घोषणा करता है-''**अद्येह रमणीय चरणाभ्यासो रमणीयाम् योनिमापत्द्येरन् अद्येह कपूय चरणाभ्यासो कपूयाम् योनिमापत्द्येरन् श्वा ये निम्वा सूकरयोनिम्वाश्वानयो निम्वाः रमणीय चरणाभ्यासो ब्राह्मणयो निम्वा क्षत्रिययोनिम्वा वैश्ययोनिम्वा।**'' मध्य प्रदेश में मुख्यमन्त्री उनका क्या नाम था अभी जो भूतपूर्व हो चुके ? ऐ- दिग्विजय सिंह जी ने एक वहाँ पर अधिवेशन किया भोपाल में, अधिवेशन किया ये आचार्य प्रवरों को सुना रहा हूँ। ये बड़ी कटु बात है सुनने के योग्य हैं। हमारे धर्म के ऊपर कुठाराघात है। सनातनधर्म को मिटाने की ये प्रबल प्रक्रिया है। उन्होंने क्या कहा कि यह अखबारों में आया था, मैं छूआछूत को मिटा दूँगा। और पण्डितों की सभा बुलवायी और पण्डितों की सभा में यह निर्णय किया कि मनुस्मृति के अन्दर जो वर्णाश्रम धर्म है इसको निकाल जाये यह क्षेपक है इसको निकाल दिया जाय और दूसरी मनुः स्मृति का निर्माण किया जाय ये योजना बनाई। उस समय हमारे धर्माचार्य ने गोविन्द प्रसाद शास्त्री को धर्माधिकारी नियुक्त किया है। धर्माधिकारी ने देखकरके उसको चुनौती दी और वह स्वयं अकेले उस सभा के अन्दर गये और उन्होंने कहा कि यह कदापि नहीं हो सकता श्रुति स्मृति पुराणों में इस प्रकार का कभी क्षेपक नहीं माना जाता और इसको मिटाने की कोशिश नहीं की जा सकती है ये नही मिट सकता, उन्होंने कहा अच्छा ठीक है। इसलिए उसको उन्होंने रोका और वह बन्द हो गया। इसी प्रकार ये अटल बिहारी वाजपेयी जी महाराज आपने रामराज्य परिषद रामराज्य लाने के लिए भगवान राम के मन्दिर बनाने के लिए घोषणा की थी ऐं और आपने बहुत बड़ी भूल की कि धर्म निरपेक्ष लोगों से हाथ मिला करके आप शासन तंत्र में गये इसलिए आपका मुंह बंद कर दिया और आप रामराज्य की बात नहीं करने लगे। आज कितना समय हो गया ऐं। सोमनाथ के मन्दिर को चौदह बार मुसलमानों ने ध्वंश किया। जब स्वतन्त्र भारत हुआ जवाहर लाल नेहरू के मना करने पर भी वल्लभभाई ने, वह बड़ा धर्मवीर था उसने नहीं माना और सोमनाथ का मन्दिर बना दिया। इसी प्रकार राममन्दिर को बनाने के लिए भी आपने जो कटिबद्ध हो करके प्रतिज्ञा की थी वह आपकी पूरी नहीं हो सकी ? आपने धर्म निरपेक्ष लोगो से हाथ मिला लिया। यदि आप इस प्रकार नहीं करते और भगवान राम का ही अन्तःकरण में स्मरण करते हुये उस पद के ऊपर नहीं जाते तो बहुमत पाते, यह सारी जनता बैठी हुई है, सनातन धर्म के सिद्धान्त को मानने वाली है राकृष्ण के भक्त हैं, यह आपको समर्थन दे करके बहुमत से आपको प्रतिष्ठित कर देते।

आचार्य खेमराज केशवशरण शास्त्री :- नेपाल

अभी जो सन्दर्भ चल रहा था आज के इस सम्मेलन का इस सत्र का। जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य भगवान के द्वारा प्रतिपादित तत्वों के विवेचन के प्रसंग को आप सबके समक्ष रखा जाय, यह सिलसिला चल रहा था। द्वैताद्वैत के बारे में यहाँ बात चली यह कैसा सिद्धान्त हैं। क्यों आद्य जगद्गुरु भगवान् श्री निम्बार्काचार्य ने इसको अपनाया। बात यह है कि यह अनादि वैदिक सत्सम्प्रदाय है। वेद भगवान के प्रति, वैदिक उद्घोषों के प्रति, वेद के वचनों के प्रति, जगद्गुरु श्री निम्बार्क भगवान अत्यन्त संवेदनशील थे, और बहुत आदर करते थे। हम वैदिक वांग्मय का अध्ययन करें। ''**द्वा सुपर्णा, सयुजा, सखाया समानं वृक्षं परिसष्व जाते**'', इत्यदि वचनों के द्वारा और इसी प्रकार **द्वावेवाजौ ज्ञाज्ञौ ईशानीशौ** इत्यादि जो उपनिषद वाक्य हैं इन सबके द्वारा भी और स्वयं भगवान के श्रीमुख के वचन के द्वारा जैसे निर्देश हुआ - **ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।** इत्यादि वचनों से भी ''हंस हंसित्व भाव से'' और ''द्वो सखायौ'' इत्यादि वचनों के द्वारा ज्ञ और अज्ञ इत्यादि विभेद वाचक शब्दों के द्वारा स्पष्ट रूप से जीव और परब्रह्म परमात्मा के बीच में अन्तर दिखाया गया वेद के ही वचनों के द्वारा और साथ साथ में वेद के ही ऐसे भी वचन हैं- ''**सर्वं खल्विदं ब्रह्म**'' **नेह नानास्ति किचन,** ''**अयमात्मा ब्रह्म**'' इत्यादि जो सिद्ध करते हैं जो बताते हैं कि वास्तव में जीव और ब्रह्म के बीच में द्वैत नहीं है। तो अद्वैत परक वाक्य भी वे प्रतिपादित और द्वैत परक वाक्य भी वेद प्रतिपादित, अब इसमें से किसको छोड़े और किसको अपनायें। जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य भगवान ने देखा दोनों ही प्रभु के वचन हैं। वेद तो भगवान की वाणी है। भगवान की वाणी से मुखरित हुये उन वाक्यों को, उनमें से किसको लें और किसको छोड़े। इसलिए उन्होंने देखा समन्वय के प्रतीक के तौर पर उन्होंने दोनों को समेटा और द्वैत को भी मान्यता दी और अद्वैत को भी मान्यता दी इसलिए उनके सिद्धान्त का नाम पड़ा द्वैताद्वैत। और जब कभी हम किसी को दूर से बुला रहे होते हैं खोज रहे होते हैं और वो कहीं ऐसे स्थान पर खड़ा हुआ होता है जहां से उसका पूरा शरीर दिखाई नहीं देता उसका हाथ दिखाई देता उसके कन्धे का एक हिस्सा दिखाई दे रहा है। पूरा आदमी नहीं दिखाई दे रहा है। लेकिन वो खोज रहा आदमी जब उसका हाथ देखता है अच्छा वह हाथ उसी का है न, वो तो वहीं खड़ा था न, तो देखने वाला बताता है हाँ हाँ वह वहीं खड़ा है वो हाथ जो दिख रहा है वह उसी का है। तो पूरा हाथ देख करके भी तो आदमी का पता लगता है न, है तो वो केवल अंश उसके शरीर का लेकिन उसके द्वारा अंशी भी तो दिखाई देते है। ऐसे में वों नहीं है और जब पूरा आदमी दिखता है तो उसको पूरे आदमी के तौर पर हम मान लेते हैं। इसी प्रकार से कोई पेड़ है, बरगद का पेड़ है लेकिन हमको उस थोड़े से अंश को, एक दो डालियों को, एक दो टहनियों को, देख करके भी तो वृक्ष मानना ही पड़ता है न। इसी प्रकार से वह भिन्न भी है और अभिन्न भी है वह पूरा वृक्ष नहीं है परन्तु है वृक्ष ही क्यों कि उसी की शाखा है।

और अभी अभी चर्चा में आया था बड़ा सुन्दर जगद्गरु शंकराचार्य महाराज के द्वारा लिखित-''सत्यपि भेदापगमे नाथस्तवाहम् नमामकीनस्त्वम् सामुद्रोहि तरंगः कंचन समुद्रः नतारंगः'' सुन्दर दृष्टान्त दे करके जगद्गुरु शंकराचार्य महाराज ने उस वक्त अपना सुन्दर चिन्तन प्रस्तुत किया है। वो कहते हैं तरंग को हम समुद्र का बोल सकते हैं परन्तु समुद्र तरंग का कभी नहीं हो सकता है। ऐसे मैं अंश हूँ आप अंशी हो आप परिपूर्ण है मैं अंश हूँ, इस वजह से आपको मैं सम्पूर्ण रूप में मेरा कह के नही बोल सकता आप तो स्वामी है हम आप के अंश है, इस वजह से आपका मैं हूँ ये बोला जा सकता

है यह बड़ा सुन्दर प्रतिपादन उन्होंने ही स्वयं किया है। उस वक्त तो लगता है कि जगद्गुरु शंकराचार्य महाराज कहीं द्वैता द्वैत के ही सिद्धान्त को तो नहीं समर्थित कर रहे हैं। और एक जगह बहुत सुन्दर बात कहीं है जब व्यावहारिक सत्ता में पूर्ण रूप से अद्वैत का परिपालन कठिन हो जाता है, यह बात स्वीकारी जगद्गुरु शंकराचार्य महाराज़ ने, क्योंकि जब तक गुरु और शिष्य का द्वैत नहीं होता, ज्ञान प्राप्त नहीं होगा। जब तक प्रभु और हम उपासक अलग नहीं होंगे आराधना नहीं होगी तो इन समस्याओं को आगे रखकरके उन्होंने कहा है,- **''अद्वैतं त्रिषुलोकेषु नाद्वैतम् गुरुणासह''** तीनों लोको में सर्वशक्ति सिद्धान्त तो यही है यह अद्वैत है पारमार्थिक परन्तु व्यवहार में हम अद्वैत को मान के पार नहीं पायेंगे। गुरु का शिष्य के साथ द्वैत होगा ही गुरु के साथ शिष्य का भी द्वैत होगा ही। इसलिए **''नाद्वैतम् गुरुणासह''** ऐसे मामलों में अद्वैत नहीं मानना होगा, व्यवहार जगत् में उस रूप में भी काम चलाना पड़ेगा। व्यावहारिक सत्ता अलग माननी पड़ेगी, सटीक समाधान दिया है। तो जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य भगवान ने, वेद के प्रति अत्यन्त संवेदनशील होने के नाते, अति श्रद्धावान् होने के नाते, अनादि वैदिक सनातन धर्म की परम पौष्य, परम सारपूर्ण अन्तर्भूत प्रमुख पक्ष के रूप में प्रस्तुत कर रहे है। इस वैष्णव सिद्धान्त को उन्होंने द्वैताद्वैत कहा और दोनों पखों को समेट करके स्थापित किया है। यह इसकी विशेषता है जिस वजह से इसका नाम द्वैताद्वैत है। लोग कहते है, कई विशिष्टाद्वैत कोई शुद्धाद्वैत, कोई अचिन्त्य भेदाभेद बताते हैं परन्तु गीता क्या आपका ग्रन्थ नहीं है, तो गीता वैष्णव का ग्रन्थ है कि नहीं क्योंकि गीता में तो विशुद्ध रूप से अद्वैत का प्रतिपादन किया गया है ''अद्वैतामृतवर्षणीं भगवतीमष्टादशाध्यायनीं। अद्वैत का प्रतिपादन करने वाली गीता ऐसी बताई गई है तो क्या गीता वैष्णवों का ग्रन्थ नहीं हो सकती? नहीं नहीं वैष्णवाचार्यों ने बड़ा सुन्दर समाधान किया है वहां भी द्वैताद्वैत का समर्थन करके बड़ा सुन्दर अर्थ व समाधन किया है वहाँ भी अद्वैत का मतलब क्या होता है? **''द्वयी हि प्रकृती पुरुषस्य पराचापराचेति, द्वीताये बद्धद्वयतम् नाम वासुदेवः'' अष्टद्वयतनचे अद्वैतेअद्वैतयोंअमृतम्वर्षयति इति अद्वैतामृतवर्षणीं।** ऐसा विग्रह करके आचार्यों ने समाधान किया है। वहाँ भगवान वासुदेवः हैं और वासुदेव के साथ साथ उनके अंश स्वरूप जीव को और उनकी शक्ति स्वरूपा प्रकृति को समावेश करके अद्वैत शब्द के अन्तर्गत रखा गया है। और त्रिसत्य समस्त वैष्णव जगत् का परम मान्य रहा है। प्रकृति है जीव है और परम ब्रह्म परमात्मा यह तीनों परम स्वतंत्र सत्य तथ्य के रूप में तत्त्व के रूप में प्रतिपादित है वैष्णव दर्शन में। भगवान सर्व नियामक हैं प्रकृति और जीवात्मा दोनों उनके अधीन रहते हैं और उनका परिचालन, उनका निर्देशन, उनका जीवन संचालन, जीव जगत् दोनों का प्रभु स्वयं करते हैं सर्वात्मा ऋषिकेश बनकर।

इन तथ्यों को इन वस्तुओं को ले करके ये द्वैताद्वैत सिद्धान्त अपनी महिमामय स्थिति में प्रतिष्ठित है। कुछ कुछ जगह ऐसी बातें उठाई जाती हैं कि हमारे पाँच देवता हैं सर्वमान्य, हमारे सनातन धर्म परिवार में परन्तु कोई एक विशेष उपास्य को आगे रख करके औरों को भुला देते हैं, औरों की मान्यता नहीं करते, वैष्णवों में विशेषकरके ऐसा है। कोई किसी ईष्ट देव को कोई किसी ईष्ट देव को आराधित करते हैं। परन्तु उसके अलावा और किसी को नहीं मानते, ऐसी बात नहीं है। वैष्णव जगत् इनकी मान्यता रखता है। नारायण कवच में कहा है- **सनतकुमारोऽवतु कामदेवादधयशीर्षा मां पथि-देवहेलनात्,** नारायण कवच में कहा है एक प्रार्थन की गई है। भगवान से भक्त कहता है प्रभो मैं रासते से कहीं जा रहा हूँ, कोई देवस्थल पड़ रहा हो, कोई अच्छे आराध्य, प्रतिष्ठित देवता का मन्दिर हो, उस वजह से

उसकी विस्तृत व्याख्या ''प्रभावृत्ति'' नामक श्री केशवकाश्मीरी भट्टाचार्य जी ने उसका प्रणयन किया उसमें आप बता रहें हैं आप देखिये कितना सुन्दर ''**भगवत्पादै श्रीशंकराचार्यचरणै: स्वभाष्येवृत्तिकारमतम्**'' इत्यादि ये प्रसंग विस्तृत है किस रूप में सम्बोधन किया है। आप परस्पर में आचार्य प्रवरों का स्नेह-समादर देखिये कितना सुन्दर ''**भगवत्पादै श्री शंकराचायचरणै:**'' कितनी मर्यादा के साथ तो इन आचार्य प्रवरों में किसी प्रकार का ऐसा कोई न समझे कि परस्पर में इनमें कहीं मतभेद अवमानना अंसगति और ये सब बातें है सब को एक ही उन परमात्मा तत्व की उपलब्धि करनी है किसी भी माध्यम से, किसी भी सरणि से हो, एक मात्र यह लक्ष्य और यह नारा है और इसी का अनुगमन हम करें।

द्वितीयभाग :-

डा. परमानन्द शर्मा :-

मैंने राजस्थान विश्वविद्यालय से अनन्तानन्त श्री विभूषित जगद्गुरु श्री श्रीजी महाराज के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अनुसंधान कार्य मानवीकी पीठाधीश्वर अधिष्ठाताकला संकाय डा. प्रभाकर शास्त्री के निर्देशन में सम्पादित किया। वह ग्रन्थ निम्बार्क शिक्षा समिति द्वारा प्रकाशित भी हो चुका है। कल निम्बार्क दर्शन के परिप्रेक्ष्य में विद्वानों ने काफी अभिमत अपने प्रस्तुत किये, लेकिन उस दर्शन का जो मैंने पाश्चात्य और आधुनिक समालोचनात्मक अध्ययन करते हुये मेरे शोध प्रबन्ध में प्रस्तुतीकरण किया उसमें एक समन्वयात्मक दार्शनिक दृष्टिकोण है। निम्बार्क दर्शन समन्वय की विराट् चेष्टा है। यह मुख्य उस विषय का प्रतिपाद्य रहा। उस विषय में मूलत: निम्बार्क दर्शन में समन्वयात्मक दृष्टिकोंण इतना प्रभावी रहा इसीलिए वह दर्शन इतनी वर्षों की शाश्वत शृंखला पर अनवरत चला रहा। यदि हम उस दार्शनिक परिप्रेक्ष्य को साहित्य की दृष्टि से देखें तो आचार्य श्री का समस्त साहित्य उस समन्वयात्मकता की पराकाष्ठा पर प्रतिष्ठापित होता है। उनके प्रणयन को देखिये, उन्होंने ''**श्रीस्तवरत्नाञ्जलि**'' नाम का एक ग्रन्थ लिखा जिसमें सभी देवी देवताओं का स्तवन प्रस्तुत कर उन्होंने स्वयं सिद्ध कर दिया कि उनका साहित्य समन्वयात्मक दृष्टिकोण का है, आलोचकों ने समन्वयात्मक दृष्टिकोण वाले साहित्य को ही महत्वपूर्ण माना इसीलिए क्योंकि हमारे हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल को आचार्यों ने स्वर्णयुग कह दिया वह क्यूँ कि वहां पर समन्वयात्मक दर्शनिकदृष्टिकोण था, जैसा कि डा. नगेन्द्र ने जैसा कि डा. श्याम सुन्दर शर्मा ने अभिव्यक्त किया है। जिस युग में कबीर, जायसी, सूर, भक्तिमती मीरा, प्रभृति कवि और कवियत्रियों की अन्त:करणकी वाणी देश के कोने कोने से परिव्याप्त हो गई थी, वह काल हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग है। उसको स्वर्णयुग मानने का करण एक समन्वयात्मक दृष्टिकोंण था और हमारे आचार्य श्री के साहित्य में भी समन्वय की प्रबल भावना है जैसा कि उनके ग्रंथ से समुपलब्ध होता है। स्तवरत्नाञ्जलि में जैसा कि उन्होंने समुपलब्ध करवाया है। काव्य प्रकाशकार मम्मट ने साहित्य प्रणयन का उद्देश्य प्रयोज्यप्रतिपादित करते हुये काव्य प्रकाश में लिखा है ''**काव्यं यशसे अर्थकृते व्यवहारविदे शिवेत रक्षतये सद्य परनिवृतये कान्ता-सम्मितोप देशयुजे।**'' हमारे यहां तीन प्रकार के वाक्यों का आधान होता है प्रभु सम्मित, मित्र सम्मित, और कान्ता सम्मित। प्रभुसम्मित में तो वेदादि जो वाक्य हैं, उनको ग्रहण कर लिया गया है, वह ग्रहण किया जाता है, लेकिन जो कान्ता सम्मित उपदेश होता है वह काव्य होता है और काव्य जन मानस पर अधिक प्रभाव डालता है, प्रभावी होता हैं।

क्योंकि वेद की ऋचा को हर व्यक्ति समझे न समझे पौराणिक बातों को जो मित्रवत् वाक्य की श्रेणी में आते है उनको अंगीकृत कर पाये उसका बौद्धिक स्तर नहीं हो तो नहीं कर पाये लेकिन कविता में वर्णित भावों को सहज में व्यक्ति अंगीकृत कर पाता हैं, और महाराज श्री ने जो दार्शनिक विचारधारा थी समन्वयात्मक दृष्टिकोंण की उसको अपने काव्य में अंगीकृत करके इसको आज के जनमानस तक पहुँचाने का प्रयास किया क्यों कि महाराज श्री का काव्य ही ऐसा काव्य है जिसमें यदि हम दृष्टिपात करें तो वर्थवर्थ की वो परिभाषा पूरी उतरती है- ''पोइट्री इज दा स्पोन्टनीयस और फ्लोर पावन फुल फिलिंन्स'' कविता क्या है, परमानन्दानुभूति की वह अवाध सरिता जिसमे निमग्न हो प्रत्येक व्यक्ति रसास्वादन से परिप्लावित हो, उसका हृदय मयूर नृत्य करने लगे वही कविता है। और इस शृंखला में मैं आपको निवेदन करूँ कि महाराज श्री का सम्पूर्ण साहित्य प्रसाद गुणमण्डित है और रस की स्थिति, वहां पर परमानन्द की स्थिति है जिसका हम हृदय से आस्वादन करते हैं वह मूलतः कहां से आया हमारा जो दार्शनिक सिद्धान्त युगलरसोपासना है उससे। निम्बार्क सिद्धान्त में युगलरसोपासना एक विशिष्ट महत्व है। रसो वै सः । रस क्या है उस परमानन्द का साक्षात्कार। अब परमानन्द विभिन्न लोगों के अभिमतों में चाहे भिन्न भिन्न रहा हो। येगियों की दृष्टि में वह मोक्ष और एक सामान्यप्राणी की दृष्टि में वह एक आनन्दातिरेक स्थिति हो लेकिन रस ब्रह्मानन्द सहोदर और परमानन्दानुभूति कराने वाला है। यही रसातिरेक युगल रसोपासना जो कि हमारे निम्बार्क का सिद्धान्त है उससे ग्रहण किया गया है। हाँलाकि समीक्षात्मक विवेचन के लिए मैं पाश्चात्य अभिमत दे करके उसका समीक्षात्मक अध्ययन करूं इतना समय नहीं, महाराज श्री की आज्ञा से अैर मंचस्थ विद्वानों की आज्ञा से जो मुझे क्षण मिला उसमें मैंने भावाभिव्यक्ति की।

ब्रह्मचारी श्री युगलशरणजी महाराज :-

पाटनारायण सिरोही- आबू

आज बड़े ही सौभाग्य का दिन है हमारे आद्याचार्य भगवन्निम्बार्काचार्य जी महाराज का जन्म यानी जयन्ती दिवस है। इस अवसर पर हमारे महाराज श्री ने जो यह आयोजन, विशाल आयोजन का प्रणयन किया वह अत्यन्त अनुकरणीय, प्रशंसनीय एवं चिन्तनीय है। हमारे आद्य निम्बार्काचार्य जी महाराज ने जो सिद्धान्त प्रतिपादित किया, एक ऐसा सिद्धान्त, एक ऐसा अद्वितीय विचार जो विश्व में आज तक दूसरा कोई भी आचार्य सम्पादित नहीं कर सका।

आपके दर्शन शास्त्र में सबसे बड़ा जो वैशिष्ट्य है, यह है कि आपने किसी सिद्धान्त का खण्डन नहीं किया। अपने स्वयं के सिद्धान्त का मण्डन करते हुये, प्रतिपादित करते हुये, अन्य सिद्धान्तों को, अन्य दार्शनिक विद्वानों का भी सम्मान किया है जो कि आज तक विश्व में कोई दार्शनिक विद्वान ऐसा करके नहीं बता सका। हमारी इस परम्परा में जो पाँच हजार वर्ष से सौ वर्ष अधिक हो चुका है। अनेकानेक महान विद्वान, अनेकानेक महान कवि, अनेकानेक बालक भक्त, ऐसे ऐसे उद्धहरण उपस्थित कर चुके हैं जिनका जीवन चरित्र देखने पर समस्त विश्व आज तक चकित होता है। हमारे सिद्धान्त को जो भी अपनायेंगे हमारे सिद्धान्त को जो भी स्वीकार करेंगे अपना जीवन निश्चित रूप से कृतार्थ करेंगे, निश्चित रूप से भगवान की भक्ति उनको प्राप्त होती है। हमारे आचार्य श्री ने जो कुछ प्रतिपादित किया है जो कुछ भी आदेश दिया है, निर्देश दिया है उन शब्दों पर यदि हम विचार करें, उन शब्दों पर हम उनका अवलोक न करें, चिन्तन करें, मनन करें, स्वाभाविक तौर पर हमारा अन्तः करण भगवत् शरणागति के लिए प्रेरित होता है। इसलिए बन्धुओ आवश्यक है कि हम हमारे सिद्धान्त को हमारे विचारों को , हमारे इस नियम को स्वीकार करें।

हमारे आचार्य श्री ने इस राजस्थान की पवित्र भूमि में आ करके और यहां जांगल देश में जहां की नाना प्रकार के अत्याचार होते थे, नानाप्रकार से भक्तों को सताया जाता था। हमारे पूर्वाचार्य महाराज श्री परशुराम देवाचार्य जी महाराज ने आकरके और यहां भक्ति की गंगा बहाई, भक्ती की त्रिवेणी बहाई, जिसके कारण आज हम सब इतने विशाल मंच पर उपस्थित हुये हैं। बन्धुओं समय बहुत ज्यादानहीं है इसलिए इतना ही कहता हूँ कि अगर कुछ नही हो तो ''राधे कृष्ण,कृष्ण राधे'' अगर इतना भी उच्चारण करेंगे तो निश्चित रूप से कल्याण होगा। हमारे इस वैष्णव सम्प्रदाय में बिल्कुल आवश्यक नहीं है कि ज्यादा नियम विधान रखे भाव से नाम स्मरण करते रहे ऐसा ही करने का है। यहाँ तो भगवान का चरणामृत लीजिये तो भगवत धाम प्राप्त होता है, भगवान के मन्दिर में झाडू लगाइये तो भगवत् प्राप्त होता है भक्तों का दर्शन करिये, साधु सन्तों का दर्शन करिये, हर क्षेत्र में भगवत् धाम प्राप्त होता है, भगवान के पार्षद पूजा पात्र साफ कीजिये तो भगवत् धाम प्राप्त होता है, भक्तों का दर्शन करिये, साधु संतों का दर्शन करिये, हर क्षेत्र में भगवत् धाम प्राप्त होता है। आपके अन्त:करण को शुद्ध करके भगवत् नाम का स्मरण कीजिये, निश्चित रूप से आपका अन्त:करण पवित्र होगा और भगवान आपको स्वीकार करेंगे।

महन्त श्री हरिबल्लभदासजी महाराज :- रेनवाल

यहां निम्बार्क सम्प्रदाय के प्रति काफी महत्व बतलाया गया है निम्बार्क सम्प्रदाय बहुत उज्ज्वल सम्प्रदाय है। इसमें षोडष वर्षीय श्री राधा कृष्ण की उपासना प्रधान है। हमारे ग्रन्थों में लिखा है राधा, कृष्ण एक स्वरूप हैं हमारे आचार्यों ने राधा कृष्ण के स्वरूप की अभिन्नता बतलाई है:-

''राधां कृष्ण स्वरूपां वै कृष्णं राधा स्वरूपिणं कलात्मानं निकुँजस्थं गुरु रूपमहं भजे'' बड़ा विस्तृत है, ये दोनों तत्वों को अलग अलग मानना एक ही तत्व के दो तत्वों को मानना, एक चना होता है उसकी दो दाल हो सकती है, इसी प्रकार यह हमारे दो तत्त्व है इन दोनों तत्वों की उपासना हमारे निम्बार्क सम्प्रदाय से भक्तों को करनी आवश्यक है क्योंकि सम्प्रदाय के अन्दर अपना आत्मकल्यण करने के लिए गुरु मुख से मन्त्र और उपासना प्राप्त की जाती है। और उसे प्राप्त करके उनकी आराधना करना ही एक मुख्य बात हैं। जब इस प्रकार व्यक्ति त्रिविधताप और पंचक्लेश से संतप्त हो करके और संसार के अन्दर बड़ा दु:ख का अनुभव करता है तभी तो वह कुछ तत्व जानने के लिए जिज्ञासु होकर गुरु की शरणागति प्राप्त करता है। गुरु का महत्व तो शास्त्रों के अन्दर बड़ा विलक्षण और उत्तमोत्तम वर्णन हुआ है। **''गुरु बिन भवनिधि तरै न कोय''** तुलीसदास जी महाराज रामायणके अन्दर लिखते हैं। भाई गुरु तत्व के सम्बन्ध के बिना इस जीव की कोई भी आराधना सफल नहीं होती है। गुरु का सम्बल प्राप्त होने के बाद ही आराधना प्रारम्भ होती है। वह आराधना वास्तव में यदि शिष्य करता है, वास्तव में शिष्य बन करके गुरु मंन्त्र का जप करता है तो उसका कल्याण होने के अन्दर कोई सन्देह नहीं रहता है। यह भौतिकवाद तो इतना लम्बा चौड़ा है, यह तो भगवान की एक विचित्र माया है जिस माया के अन्दर यह जीव आ करके फंस जाता है। दैवी ह्येषगुणमयी मम माया दुरत्यया ऐसी ये माया है कि इससे कोई बच नहीं सकता। चाहे महन्त हो, चाहे सद्गृहस्थी हो, चाहे माता हो, चाहे बहिन हो, चाहे बच्चे कोई भी हो यह इतनी विलक्षण माया है इस माया के अन्दर सब फँस जाते हैं। शंकराचार्य जी महाराज के वचनों के अनुसार **''पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननी जठरे शयनं''**। ये क्रम बना रहा है, ये क्रम

छुड़ाना बड़ा मुश्किल है। इस माया से बचने के लिए भगवान ने कहा है- ''मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्तिते'' जो व्यक्ति इस माया को जीतते हैं तो कैसे जीतते है भगवत् कृपा से ही जीतते हैं। भगवान की शरणागति ग्रहण करने से ही इस माया से छुटकारा वे प्राप्त कर सकते हैं, अन्यथा ये माया उसको छोड़ेगी नहीं। हमारे गुरुदेव हमें इस माया से पार होने के लिए इस माया से बचने के लिए, और इससे छुटकार प्राप्त करने के लिए हमें मन्त्र देते हैं। मन्त्र ग्रन्थों में भरे पड़े हैं। गीताप्रेस गोरखपुर में ऐसा कोई अंक नहीं है जिसमें इन मन्त्रों का विस्तृत विवरण नहीं किया हो। परन्तु भाई ऐसा नहीं होता है-ग्रन्थों में लिखा हुआ मन्त्र, मन्त्र नहीं होता वह तो केवल अक्षर समूह है और उस मन्त्र को लेकरके जो कोई जाप करता है तो उसको उसमें सफलता भी नहीं मिलती। चाहे मन्वन्तर पूरे हो जायें परन्तु उस मन्त्र से कुछ नहीं हो पाता है। वैसे इस कलिकाल मे कहां वैदिकता का अनुपालन है, कहाँ मन्त्र का जप विधि अनुपालन है वैसे इस कलिकाल में जब कोई भगवान का कृपा पात्र जीव यहां आता है तो इसके मन में यह उद्बोध पैदा होता है। मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, किस निमित्त आया हूँ, मुझे क्या करना है? ये सब बातें उसके हृदय के अन्दर उदय होती हैं। ये उदय होना ही मैं तो भगवान की कृपा मानता हूँ। बिना भगवत् कृपा के यह विचार उत्पन्न ही नहीं होते हैं। हमें क्या करना है यहाँ आ करके, क्या पशुतुल्य ही जीवन पूरा कर देना है, क्या हम पशुतुल्य जीवन के अन्दर ही अपने आपको समाप्त करदें। ये नहीं है, विचारों! कि मैं मनुष्य बन करके यहाँ आया, भगवत् कृपा से मुझे मनुष्य शरीर मिला, मुझे पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ मिलीं उनसे मैंने भगवत तत्व को गुरुतत्व को सन्त तत्व को भगवत् तत्व को समझा।

इस मानव के बिना इसको कौन समझने वाला है। मानव ही इस बात को समझ सकता है कि मैं यहाँ क्यों आया हूँ? क्या इस तरह से ये हमारा जो विषयों का चक्र है क्या इसी के लिए आये हैं, ये तीनों नास्तिकों की बात हैं, भाई नास्तिक नहीं, यहाँ तो आस्तिकता की बात है और आस्तिकता में आ करके और इस प्रकार आराधन क्रम अपने जीवन में करना चाहिये। जो व्यक्ति आराधनाक्रम करता है उसका कल्याण अवश्य होता है। हमारे यहां आराधनक्रम में और आस्तिकता में आ करके और इस प्रकार क्रम बतलाया है। एक वैदिक मन्त्रों के द्वारो पौराणिक मन्त्रों के द्वारा इन दोनों से भी कोई अनभिज्ञ रहे तो गुरुदत्त जो मन्त्र है उस मन्त्र के द्वारा प्रभु आराधना होती है प्रभु पूजा होती है। ये शालिग्राम विग्रह राधाकृष्ण का स्वरूप है। ये सभी और देवताओं का स्वरूप है मैंने इसके ऊपर भी एक विस्तृत लेख लिखा है बहुत बहुते प्रभेद है वैसी मूर्तियाँ नहीं मिलती हैं। यहाँ सर्वेश्वर की मूर्ति के जो दर्शन करवाये जाते हैं। और चने के बाराबर उस सर्वेश्वर शालिग्राम के अन्दर दो खड़ी जो रेखायें हैं वही राधाकृष्ण का स्वरूप हैं। इस प्रकार उस राधाकृष्ण रूपी और शालिग्राम की पूजा का यह फल है। यह अनादि सनकादिक भगवान से चली हुई आ रही ये जो मूर्ति है। उस मूर्ति का यहाँ वैदिक मन्त्रों के द्वारा नित्यप्रति अभिषेक होता है और मैं तो समझता हूँ कि उस अभिषेक का ही यह प्रत्यक्ष फल है कि आज कितने बाधा के बाद भी इस सर्वेश्वर के दर्शन करने के लिए आ रहे है, आते हैं। ये सर्वेश्वर की पूजा का प्रकार है इस पूजा के प्रकार को, इस मन्त्र के जप को, ये मन्त्र जप ही और सबसे बड़ी गुरु की आज्ञा है। **''जपात्सिद्धिः जपात्सद्धिःजपात्सिद्धिः न संशयः''** ऐसा शास्त्रों का कहना है कि भाई जप करोगे तो सफलता मिलेगी अन्यथा सफलता नहीं मिलेगी। इस प्रकार की गुरु परम्परा जो लोगों ने अपना ली है कि गुरु कर लो मन्त्र सुन लो और फिर जो है वह सारा भार गुरु के ऊपर छोड़ दो। अस्तु मैं तो पूजा का प्रकार बतलाने के लिए

आया था परन्तु पहले मैं सर्वेश्वर को बतला दूँ उस शालिग्राम विग्रह को बतला दूँ तब जो है वह आपको पूजा का प्रकार बतलाऊँ। पूजा बहुत सुखानन्दकर है नित्य जो करते हैं वह आनन्दित रहते हैं। और उनका मन हमेशा पूजा के अन्दर लगा रहता है। भाई, इस पूजा के साथ में यह मन्त्र जप भी प्रधान है। गुरुमन्त्र का हर एक शब्द मन्त्र होता है उस मन्त्र के जितने अक्षर होते हैं उतना ही लाख का एक पुश्चरण होता है। कुछ मन्त्र ऐसे भी हैं जिन मन्त्रों का द्विगुन तिगुन का भी उल्लेख आता है। तो ये आप लोग अच्छी तरह से समझें कि बिना पूजा के, बिना इस मन्त्र के जप के हमारी यह माया हमसे कट नहीं सकती है। ये आवागमन हमारा दूर नहीं हो सकता है उसके लिए आपको भगवान की पूजा करनी है, भगवान का गुरु महाराज के दिये मन्त्र का जप भी करना है और ऐसा ही है। ''**जपात् सिद्धिः जपात्सिद्धिः जपत्सिद्धिः नसंशयः**'' मैं आगे इस प्रसंग में नहीं बढ़ुँगा। क्यों कि आदेश इतना ही है।

श्रीवासुदेव शरणजी :- प्राचार्य- सर्वेश्वर स. म. विद्यालय, निम्बार्क तीर्थ सलेमावाद

हमारे परम आराध्य सुदर्शन चक्रावतार भगवन्निम्बार्काचार्य जिन्होनें पांच हजार एक सौ वर्ष पूर्व दक्षिण भारत की गोदावरी तटवर्ती उस मूँगी ग्राम में प्रादुर्भूत हो करके विश्व को भक्ति ज्ञान और कर्म के द्वारा आलोकित किया। स्वयं सुदर्शन के स्वरूप हैं क्यों कि अवतार जो होता है भगवान का होता है, और भगवान के पार्षदों का होता है। अवतार क्या है, हमारे अचार्यो ने लिखा है अवतार की क्या परिभाषा है? ''**अवतारो नाम अधर्मो पशमनार्थम् धर्म संस्थापनार्थम् विविध विग्रहैः आविर्भाव विशेषः अवतारः ॥**'' इसको अवतार कहते हैं ऐसे हमारे आचार्य प्रवर जिन्होंने इस भूतल में अपनी भक्ति भगीरथ को प्रवाहित किया। आपने सूत्रात्मक रूप में जो उपदेश किया है और अनेक ग्रन्थों के भाष्यों द्वारा और स्वयं अपनी सूत्रात्मक ''**दशश्लोकी**'' में भगवान ने इस भेदाभेद का सिद्धान्त स्वरूप बताया है-''**सर्वहिविज्ञानमतो यर्थाथकम् श्रुतिस्मृतिभ्यो निखिलस्यवस्तुनः। ब्रह्मात्मकत्वादिति वेदविन्मतं त्रिरूपताऽपि श्रुति सूत्रसाधिता**'' इस सिद्धान्त में आचार्य प्रवर ने ''**भोक्ता भोग्यं प्रेरितारञ्च मत्वा, सर्वं प्रोक्तं त्रिविधं ब्रह्म चैतत्**''। कह करके इस श्रुति के अनुसार चित्अचित ईश्वर का जो एक पारस्परिक भेद और अभेद है इसको ब्रह्म सूत्र के जो भगवान वेदव्यास के दो सूत्र हैं उन दोनों सूत्रों से प्रतिपादित किया है जो इस जगत् का ब्रह्म के साथ में भेद और अभेद का सम्बन्ध है। क्यों कि वेदों में दोनों प्रकार के वचन हैं। द्वैत प्रतिपादित श्रुतियाँ अद्वैत प्रतिपादित श्रुतियाँ, इन दोनों श्रुतियों का, दोनों तरह के वेद मन्त्रों का और उनका समन्वय करते हुये आपने प्रथम उभयव्यपदेशात् से ब्रह्म जगत् का स्वभाविक रूप से भेद और अभेद दोनों को स्वीकार किया। इसी प्रकार दूसरा सूत्र है- ''**प्रकाशाश्रय वद् वा तेज स्त्वात्**'' ये जीव और ब्रह्म का भेदाभेद है और दोनों सूत्रों के द्वारा भेदाभेद सम्बन्ध को स्वाभाविक रूप से जो प्रतिपादन किया और जीव क्या है जीव चेतन और ब्रह्म चेतन है। दोनों चैतन्य हैं उनका साधर्म्य औ वैधर्म्य ये उस रूप में भगवान ने बताया कि जीवात्मा अनन्त है और वह ज्ञानस्वरूप है ज्ञानवान है, क्रियावान है, इच्छावान है। ब्रह्म एक सर्वशक्तिमान, सर्वसत्ता तो दो प्रकार की सत्ता है। स्वतन्त्र सत्ता, परतन्त्रसत्ता, जीव परतन्त्र सत्ता में है। ब्रह्म स्वतन्त्र सत्ता है। इन दो प्रकार की सत्ताओं के द्वारा आपने जीव और ब्रह्म का जो स्वरूप है, जीव भी चेतन है, ब्रह्म भी चेतन है, और दोनों प्रकाश हैं और उनका आश्रय भी है और प्रकाश भी है। जैसे सूर्य स्वयंआश्रय है प्रकाश उसका कार्यरूप। इसी प्रकार जीव और ब्रह्म में परस्पर

में स्वयं चैतन्य रूप है। प्रकाशमय है और आश्रय और आश्रयी ये दोनों प्रकार से अंश अंशी रूप में ये भेदाभेद का स्वाभाविक रूप से जिसमें कोई और उसको नहीं लेना है। दोनों प्रकार की श्रुतियों का समन्वय करके आपने जगत् में इस प्रकार का एक दिव्य आदर्श प्रदान किया।

श्रीश्याम सुन्दर जी बेरीवाले :-

स्वागत भाषण

अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज, श्री ज्योतिष पीठाधीश्वर अनन्त श्री विभूषित शंकराचार्य श्री वासुदेवानन्दजी महाराज, युग सन्त श्री मुरारी बापू अन्य महामण्डलेश्वर श्री महन्त, महन्त, सन्त विद्वज्जन एवं श्रोतागण इस अति महत्वपूर्ण उत्सव में अभिवादन करता हूँ।

मैं तथा अन्य श्रोतागण हम लोग वेद, वेदान्त योग व दर्शन कुछ नहीं जानते। केवल श्री निम्बार्काचार्य जी प्रणीत रसोपासना हम चाहते हैं। हमारे लिए युगल सरकार भगवान श्री राधाकृष्ण का दर्शन ही हमारा दर्शन है। शरीरान्त के बाद हमें निकुँज की प्राप्ति हो, यही हमारा वेदान्त है एवं इस शरीरान्त के बाद भगवान युगल सरकार की कोटि कोटि सखी सहचरी गणों में हमें स्थान मिले एवं भगवान युगल सरकार का अनवरत, अखण्ड, सेवा का सौभाग्य मिले सुयोग मिले, यही हमारे लिए योग है, ऐसी अभिलाषा है। आप श्री, आप सब आचार्यगण, महन्त, सन्त यहाँ इस महोत्सव समिति से जुड़े हुये किसी भी प्रकार, के सभी कार्यकर्ताओं को, इस महोत्सव समिति में भाग लेने वाले सभी श्रोतागणों को, जो इस पूर्ण अवकाश में या अवसर से कभी भी आये हों, गये हों या पूरे समय यहां रहे हो उन सबका हार्दिक अभिनन्दन उन सब को प्रभु की कृपा प्राप्त हो ऐसी महती अभिलाषा के साथ मैं सबको नमन करता हूँ॥

रामानुज सम्प्रदायाचार्य श्री कौशलेन्द्र प्रपन्नाचार्य जी फलहारी जी महाराज :-

जगद्गुरु भी निम्बार्काचार्य, जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य।

कलयुग प्रारम्भ में ही प्रकटे, श्री वैष्णव कुल ताज, जगद्गरु श्री निम्बार्काचार्य। अरूणमुनि कुल कमल दिवाकर सनकादिक अवतार, जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य।।
दक्षिण से प्रभु ब्रज में आयौ, ब्रज जन ने भी अति सुखपायौ।
निम्बग्राम भी धन्य होई गयौ, पाय निम्बार्काचार्य, जगद्गुरु श्री निम्बाकार्च।
श्री परशुराम देवाचार्य जी ने प्रभुकृपा से आज्ञा ले के।
चल दीन्हों पश्चिम दिशा माँही आयौ राजस्थान, जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य।।
कृष्णगढ़ पर्वत मालाओं के मध्य सलेमाबाद-
जहाँ पर बनी पीठ की शान धन्य होई गयौ राजस्थान, जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य।
श्री श्री राधासर्वेश्वर जी श्री श्रीजी महाराज, जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य।।
जिन्होंने दियौ पताकागाड़ जिन्होंनें दियौ पताकागड़।
जहाँ पर लहराता ध्वज आज, जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य।
पंञ्चसस्त्राब्दी महोत्सव करके, दियौ ध्वजा फहराय, जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य।।

प्रो. श्री भास्कर श्रोतिय, जयपुरः-

अधीतदिव्या कृतिमोदभाजां व्याख्यान दानेति विच क्षणानां।
प्राज्ञेश्वराणां तपसाम्निधीनां सर्वेश्वराणां चरणौ स्मरामि॥ 1॥
वेदान्तसिद्धान्तनिरूपकानां ब्रह्मात्मनांमाधव सेवकानां,
आम्नायमार्ग प्रतिपादकानां, सर्वेश्वराणां चरणौ स्मरामः॥ 2॥
निर्भीरुकाणां श्रुतिसारभाजां सद्धर्म हेतों जन चेतकानां
हिन्दुत्वरक्षाव्रतधारकाणां, सर्वेश्वराणां चरणौ स्मरामि॥ 3॥

निम्बार्कपीठस्थजगद्गुरुणां, श्रीजीतिनाम्नाबहुवि श्रुतानां, राधासमाराधनतत्पराणां, सर्वेश्वराणां चरणौ स्मरा: मि। 4॥ अधीतबोधाचरण प्रसक्त: सत्काव्यनिर्माणविधौ सुदक्ष:। सच्छास्त्रवेत्ता सु कवि: प्रसन्न: जीव्यात्स सर्वेश्वर भक्ति लग्न: ॥5॥

युवराज श्री श्यामशरणदेवजी :– निम्बार्काचार्य पीठ

आज हमारे सनातन धर्म में कितना पावनत दिवस है कि इस वैष्णव धर्म के परम प्राचीन निम्बार्क सम्प्रदाय के आद्याचार्य श्री निम्बार्क भगवान का प्रादुर्भाव आज से ठीक इक्यावन सौ वर्ष पूर्व हुआ। निम्बार्क भगवान ने इस संसार को एक अमूल्य निधि प्रदान की **''वेदान्त कामधेनु दशश्लोकी''** जिसके अन्दर ब्रह्म, जीव व जगत् इन तीनों तत्वों का विवेचन करके संसार मात्र के लिए कल्याण का कार्य किया। उस दशश्लोकी में एक श्लोक है:– **''नान्यागति: कृष्णपदारविन्दात्''** यदि जीव की गति है, जीव का मोक्ष है तो वह है केवल भगवान श्री कृष्ण के चरणों में यदि जीव सभी कामनाओं का त्याग करके प्रभु के शरणागत हो जाता है प्रभु के प्रपन्न हो जाता है तभी जीव की गति हो पाती है।

''कायेनवाचामनसेन्द्रियैर्वा'' तन मन और वाणी से सभी प्रकार से बुद्धि से जो व्यक्ति प्रभु के शरणापन्न हो जाता है प्रभु उसका कल्याण करते हैं। मुझे एक प्रसंग याद आता है मैं कई बार कहता हूँ– एक वृद्ध माता वन मे निवास करती थी उसे प्रभु दर्शन की बहुत लालसा थी परन्तु उसे कोई मार्ग नहीं दिखाई दे रहा था। संयोगवश एक दिन नारद जी उधर से पधार रहे थे, माताजी ने नारद जी को रोका, प्रणाम किया और पूछा, हे भगवान् प्रभु प्राप्ति का साधन बताइये? नारद जी ने कहा– माता प्रभु प्राप्ति सहज नहीं है वह किसी प्राणी के लिए बहुत दुर्लभ है। फिर भी जब माता ने जिद की तो नारद जी ने कहा–ठीक है माता, तू कोई भी कार्य करे, सब प्रभु के अर्पणकर, सब मन से अर्पण कर देना, कोई भी कार्य हो प्रभु के अर्पण कर देना किसी न किसी रोज तुझे प्रभु के दर्शन हो ही जायेंगे। माता बड़ी प्रसन्न हुई और उसने सुन्दर सुन्दर भोग बनाये और प्रभु के अर्पण किए। क्यों कि उसके मनमें प्रभु के प्रति सच्चा प्रेम था प्रभु बड़े प्रसन्न हुये। परन्तु दूसरे दिन जब प्रात: काल हुआ, माता ने अपने घर का प्रच्छालन किया और जब कचरा फेंकने गई तो बोली ''श्री कृष्णार्पणं अस्तु'' तो कचरा श्री प्रभु के श्री चरणों में जाके गिरा तो प्रभु ने सोचा कोई भक्त है भूलवश ऐसा कार्य हो गया होगा। दिन में फिर माता जी ने सुन्दर बढ़िया फल भोग लगाये बोली ''कृष्णार्पणं अस्तु'' प्रभु के सुन्दर भोग अर्पण हुआ प्रभु प्रसन्न हुये, फिर जब रसोई के सब वर्तन प्रच्छालन करके जो जल बचा उसे फेकने गई बोली– ''श्रीकृष्णार्पणं अस्तु'' और वह भी प्रभु के श्री अंग में गिरा– प्रभु विचार करने लगे ऐसा कौन सा भक्त है, नारद जी समीप में खड़े थे, नारद जी से कहा कि नारद पता करों कि ये भक्त कौन है? नारदजी ने ध्यान लगाया देखा अरे यह तो वही माता है जिसको मैं प्रभु प्राप्ति का साधन बताके आया था। नारद जी तुरन्त दौड़े हुये आये और कुपित होते हुये माता के एक जोर से थप्पड़ लगाया माता बोली ''श्रीकृष्णार्पणं अस्तु'' अब वो थप्पड़ प्रभु के जाके लगी, नारदजी और गुस्सा हो गये, एक इधर लगाया बोली ''श्रीकृष्णार्पणं अस्तु'' अब नारद जी गुस्से में अत्यधिक कुपित हो गये वह इधर उधर डण्डा जो भी हाथ में लगे ढूँढ़ने लगे। प्रभु सोचे अगर थोड़ी भी देर करदी तो आज पूजा हो जायेगी, प्रभु तुरन्त माता के सामने प्रकट हो गये और माता को दर्शन दिये। तो कहने का तात्पर्य है– निम्बार्कभगवान ने हमें शरणागति का जो मार्ग उपदेशित किया, यदि हम उस मार्ग का अनुसरण करें, उस मार्ग के दिखाये हुये जितने भी हमारे उज्ज्वल जो भी भविष्य है उसको प्रशस्त करें। बड़ा सौभाग्य है कि एक मंच पर सभी देश की महान महान विभूतियों के दर्शन कर रहे हैं।

पूज्य जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराजः-

समुपस्थित श्रुति स्मृति सूत्र तन्त्र पुराणादि यावन्निखिल शास्त्र पारावारीण हमारे जगद्गरु श्री शंकराचार्य जी महाराज तथा मंचस्थ भगवत् चरणारविन्द मकरन्द सेवन परायण समस्त सन्त, महात्मा, मण्डलेश्वर, महामण्डलेश्वर, महन्तवर्य श्रीमहन्तवर्य विद्वज्जन। हमारे परमाराध्य भगवान श्री जानकीवल्लभलाल की, दिव्य कथा की रसवृष्टि में जो सदा संलग्न है जिनकी दिव्य वाणी के द्वारा न केवल भारत अपितु विश्व के समग्र क्षेत्रों में, समस्त अंचलों में, समस्त राष्ट्रों में, पधार कर जो दिव्य रससुधा का निरन्तर अभिवर्षण करके आनन्दित करते हैं, पावन प्रेरणा, उद्बोदन प्रदान करते हैं, ऐसे निम्बार्क सम्प्रदाय के परम वरिष्ठ, परम मूर्धन्य, श्रीयुगसन्त मुरारी बापू, हरिव्यासी और निम्बार्करत्न, आप सबों के मध्य यहाँ पर मंच पर सुशोभित हैं। आपकी अभी परम सुधामयी, रसमयी, वाणी श्रवण करके आप सभी पुलकायमान होगें, उल्लसित होंगे, परम आनन्दित होंगे। आज का दिन श्री सुदर्शन चक्रावतार श्री भगवन्निम्बार्काचार्य चरण की पावन जयन्ती महोत्सव का मंगलमय दिवस है। भविष्य पुराण में बड़ा सुन्दर वर्णन है- पूरी जन्मकथा है। कल्याण से मासिक पत्र कल्याण उसका विशेषाङ्क भविष्य पुराणोङ्क उसमें भी वह प्रकाशित हुई है। जो कल्याण का विशेषाङ्क होता है उसके अनन्तर दो आते हैं, परिशिष्टांकजो विशेषाकं है उसमें वह उसका समावेश नहीं हो सका एतावता उन्होंने दो परिषिष्टाकं में भविष्य पुराण का वह समग्र प्रसंग उपस्थापित किया है जिनको हिन्दी भाषा में आप सब भी बड़ी सरलता से अनुशीलन कर और श्री निम्बार्क भगवान के स्वरूप का, आपके पावन चरित्र का अनुभव कर सकते हैं। जब जब भी भूतल पर अनन्त अनर्थ होते हैं, अन्याय, अनाचार, दुराचार, दुर्विचार होने लगते हैं। पैशाचिवृत्ति सर्वत्र परिव्याप्त हो जाती है, आसुरी सम्पदा बढ़ती है उस अवस्था में स्वयं प्रभु किंवा आप स्वयं अपने नित्य दिव्य पार्षदों को आज्ञा प्रदान करके उनके माध्यम से भी अज्ञानान्धकार का निवारण, धर्म का संस्थापन आसुरीवृत्ति का परिहार कराते हैं। यह वही दिवस है आज के पाँच हजार एक सौ वर्ष पूर्व इस धरातल पर दक्षिण भारत में गोदावरी के परम पावन सुरम्य तट पर पैंठन के निकट मुँगी ग्राम में महर्षि अरूण के आश्रम में माता जयन्ती के यहाँ आप आविर्भूत हुये, इसलिये श्री निम्बार्क भगवान को जयन्तीनन्दन भी कहते हैं, अरूण कुमार कहते हैं। महर्षि अरूण बड़े वे दविज्ञ, तत्वज्ञ थे। जब देववृन्दों ने, ऋषिमुनीश्वरों ने, पृथ्वी माता ने, प्रभु के समक्ष अभ्यर्थना की, भगवान अभी तो आप स्वयं ने अपनी दिव्य लीलाओं से सारे विश्व को आलोकित किया, महाभारत संग्राम हुआ और असुरों का संहार किया। जो दुरात्मा थे जिनके कारण से सभी सशंकित रहते थे उनसे सभी भयाकुल और उनका परिहार करके आप अपने दिव्य गोलोक धाम में विराज रहे हैं। अभी पुनः महाराज परीक्षित के राज्यकाल में जब कीलयुग का आगमन हो तभी आपने अपने नित्य दिव्य पार्षद चक्रराज श्री सुदर्शन को ये आज्ञा प्रदान की- **''सुदर्शन-महाबाहो! कोटि सूर्यसमप्रभ! अज्ञानतिमिरान्धानां विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय॥''** इस आज्ञा को प्राप्त करके दक्षिण भारत में महर्षि अरूण के यहां पर आप मनुष्य स्वरूप से प्रकट हुये। उसके अनन्तर आप माता पिता सहित अपने इसी पुष्कर क्षेत्र से होते हुये और व्रज में पधारे। व्रज में गिरिराज गोवर्धन के निकट आपने तपश्चर्या की जहां आपकी तपः स्थली है निम्बग्राम। आपके ही नाम से इस ग्राम का नाम है निम्बग्राम, सामान्य भाषा में उसको कहते हैं ''नीमगांव''। तो वहां निम्बार्क भगवान ने तपस्या करके प्रस्थानत्रयी

पर भाष्य का प्रणयन किया। देवर्षि प्रवर श्री नारदजी से मंत्रोपदेश लिया और ब्रह्मा जी ने आपका पहले नियमानन्द नाम था आपने नीम में सूर्य का दर्शन जब कराया तो ब्रह्मा जी अपना वास्तविक स्वरूप को प्रकट करके और तब निम्बार्क नाम से आपको सम्बोधित किया क्योकि नीम के वृक्ष में आपने सूर्य दर्शन कराया, इसलिए आप निम्बार्क नाम से विख्यात होंगे। श्री निम्बार्क भगवान ने ''**वेदान्त कामधेनु दशश्लोकी**'' में एक बड़ा सुन्दर भाव व्यक्त किया है-''**सर्वंहि विज्ञानमतो यथार्थकं श्रुतिस्मृतिभ्यो निखिलस्य वस्तुनः। ब्रह्मात्मकत्वादिति वेदविन्मतं त्रिरूपताऽपि श्रुतिसूत्रसाधिता**''

यह सम्पूर्ण जो विविध विचित्र संस्थान सम्पन्न यावन् मात्र जीवन है ये जगत् ये ''**सर्वं हि विज्ञानमतो यथार्थकं**'' जो विधि विज्ञानमय जगत्, ये जो विचित्र संस्थान सम्पन्न जगत, ये यथार्थ है, और हम स्वयं ही नहीं कहते इसमें श्रुति सूत्र स्मृति आदि शास्त्रों के आधार पर उनके प्रमाण हैं उनके दिव्य वचन हैं और उनके अनुसार ये जो सम्पूर्ण जगत् है यह यथार्थ है, सत्य है ऐसा आपने उपदेश किया। यद्यपि जगत् सत्य है, और सत्य वस्तु के द्वारा भी हमारी जो बाधकता आ जाती है, मन की प्रवृत्ति जगत की ओर लग जाती है, ''**विष्णोर्मायाभगवतीयया सम्मोहितं जगत् दैवीह्येषा गुणमयी ममममाया दुरत्यया**'' इन वचनों के अनुसार हमारी वृत्ति संसार की ओर लग जाती है। इससे निवृत्त कैसे हो, इससे परावृत्त कैसे हो, तो बोले, ''**मामेव प्रपद्यन्ते माया मेतां तरंति ते**'' ये प्रभु ने संकेत किया श्रीमद्भगवतगीता में कि जो मेरे प्रपन्न हो जाते हैं मेरा सानिध्य प्राप्त कर लेते हें, मेरा दृढ़ आश्रय ले लेते हैं, उनके लिए फिर माया कोई हानि नहीं कर सकती यही संकेत अपनी ''**वेदान्त कामधेनु दशश्लोकी**'' में आचार्य प्रवर श्री निम्बार्क भगवान ने किया है- ''अनादिमायापरियुक्त'' अनादिमाया से परियुक्त आछ हो रहा है यह जीवात्मा अपने स्वरूप का ज्ञान नहीं कर पा रहा हैं। तो कैसे कर सकता है, ''**त्वेनं विर्दुवै भगवत्प्रसादात्**'' प्रभु की कृपा हो जाय, उनको कृपाकादम्बिनी का दिव्य अभिवर्षण जिस प्राणी पर हो जाय तो वह सहज में इस भवाटवी, इस संचक्रमण से निवृत्त हो करके, दिव्य भगवत्प्राप्तिकरके और ''**रसोवैसः**'' जो रसःस्वरूप भगवान सर्वेश्वर है, उन आनन्द स्वरूप प्रभु को प्राप्त करके, ये जीवात्मा परमानन्द करता है, ओर फिर उस दिव्य सहचरी स्वरूप में स्थित रहकरके, अनन्त अनन्त रसानुभूति करता है ये श्री निम्बार्क भगवान ने बड़ा सुन्दर विवेचन किया है। उपास्य का स्वरूप इतना सुन्दर बताया है।

स्वभावतोऽपास्त समस्तदोष मशेषकल्याणगुणैकराशिम्।
व्यूहाङ्गिनं ब्रह्म परं वरेण्यं ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिम्॥
अङ्गे तु वामे वृषभानुजां मुदा विराजमानामनुरूपसौभगाम्।

यहां पर आपने ''**राधाष्टक स्तोत्र**'' में और इसी प्रकार से ''**प्रातः स्मरण स्तोत्र**'' में वृन्दावन धाम का सबसे पहले आपने निरूपण किया- ''**प्रातः स्मरामि युगकेलि रसाभिषिक्तं, वृन्दावनं सुरमणीयमुदारवृक्षम्।**

सौरीप्रवाहवृतमात्मगुणप्रकाशं,
युग्मांघ्रिरेणुकणिकास्चितसर्वसत्त्वम्॥''

तो इस प्रकार ऐसा सुन्दर आपने उपासना का वर्णन, सिद्धान्त का वर्णन, अपना कपाल वेध सिद्धान्त एकादशी का व्रत, एककादशी में जो आ जाता है। एकादशी में आता है वह तो ठीक है घड़ियों में क्यों कि दशमी पूर्व तिथि है। दशमी, दशमी एकादशी से स्पर्श नहीं होना चाहिये। एकादशी से दशमी का स्पर्श हो जाता है तो वह व्रत करने का उसके लिए निषेध है इसलिए वह वृत दूसरे दिन द्वादशी के दिन, एकादशी को छोड़के द्वादशी में व्रत करें। यदि ऐसा हो कि एकादशी शुद्ध है, पूर्व विद्ध नहीं है, और महाद्वादशी का योग आ गया है और

एकादशी को छोड़ करके और द्वादशी को न छोड़े, द्वादशी में व्रत करे ऐसा विधान श्री निम्बार्क भगवान ने प्रतिष्ठित किया है। आज उन्हीं का यह जयन्ती महोत्सव का पावन दिवस है और इस पावन दिवस पर हम चाहेंगे कि ये हमारे युग सन्त श्री मुरारी बापू भी अपनी रसमयीवाणी से सबको आनन्दित करें।

युगसन्त श्री मुरारी बापू :-

भगवान निम्बार्काचार्य प्रभु की पाँच हजार और एक सौ वीं जन्म जयन्ती के इस परम पावन अवसर पर, आचार्य पीठ के इस पावन परिसर में, वर्तमान पीठाधीश्वर परम पूज्य जगद्गुरु श्रीजी महाराजश्री, और जगद्गुरु शंकराचार्य श्री के चरणों में प्रणाम करता हुआ और मंच पर उपस्थित सभी आचार्य, सन्त, विद्वद्वृन्द, आप सभी भाई-बहिन, मैं पूरी निम्बार्कीय परम्परा से वैष्णवी दीनता के साथ प्रणाम करता हुआ क्षमा प्रार्थी हूँ कि मैं ज्यादा समय नहीं निकाल पाया, कुछ आगे की वचनबद्धता और व्यस्तता के कारण, फिर भी मुझे बहुत खुशी है, बड़ी प्रसन्नता है कि मैं यहाँ आ सका, आपके दर्शन हुये, आशीर्वाद प्राप्त हुआ, वचनामृत से प्रेरणा प्राप्त हुई। रास्ते में ऐसी बात भी चल रही थी कि सलेमाबाद में ''**मिनीकुम्भ**'' हो गया, अब कुम्भ के आगे मिनी शब्द लगाने की जरूरत नहीं है कुम्भ, कुम्भ होता है। हम अल्प में सुख नहीं मानते ऐसी हमरे उपनिषद्कारों की मांग है, ''**नाल्पस्य सुखं अस्ति**''। क्यूँ हम मिनी कहें, क्यूँ इतना संकीर्ण शब्द को न्यून करें। कुम्भ, कुम्भ है विशेषण मुक्त है न मिनी है, न महा है। अतएवकुम्भ होता है इस कुम्भ में और आज पूर्णिमा का दिन।

आचार्य परम्परा क्या है निम्बार्क भगवान का प्राकट्य कैसे हुआ, ये पूरी प्रवाही परम्परा कैसे चली, उसके बारे में तो सप्ताह से आप चर्चा सुन रहे हैं। भगवान का सिद्धान्त क्या था, यह शास्त्रीय चर्चा भी यहां सन्तों के मुख से, आचार्य के मुख से, और विद्वानों के मुख से आप सुनते ही रहे। अभी भी आप श्री के मुखारविन्द से भी निम्बार्क भगवान के प्राकट्य के बारे में आपने जो वचन कहे सुने। हमारे एक निम्बार्कीय गरुभक्त उसको पता था कि यहाँ इतना विराट् ''सम्मेलन'' हो रहा है। सम्मेलन बड़ा प्यारा शब्द है इसमें कोई आपत्ति नहीं है लेकिन मेरी दृष्टि में यह ''सम्मेलन'' नहीं सम्मिलन और ''सम्मिलन'' है और ''सम्मेलन'' में बहुत अन्तर, यहां एक मिलन है। सम्यक् संवाद पैदा हो रहा है और यह केवल शाही जगत् ही कर सकता है। हमारे यहाँ कोई मर जाय तो ''शोक सभा'' होती है और जहां मरी मरी बातें होती हैं उसको ''लोकसभा'' कहते हैं, जहाँ कोई जीवन्त चर्चा नहीं। एक शोक सभा होती है कि जो मरे हुए के पीछे होती है और ये एक मरी मरी चर्चायें होती है। जिसमें राष्ट्र, जिसमें धर्म, जिस मे संस्कृति, हमारी सनातन परम्परायें, हमारी लोक मर्यादायें, उसके लिए कोई आदर नहीं, एक मरी पिटारी लोक चर्चा वह लोक सभा है॥ आज यहां न ''शोकसभा'' है न ''लोक सभा'' है यहां ''श्लोक सभा'' है। श्लोक सभा। उत्तम श्लोक ले लिया भागवतकार जिस भगवान श्री कृष्ण के बारे में शब्द का प्रयोग करते हैं, शुकदेव जी कहते हैं मेरी निष्ठा निर्गुण में है। मैं कोई मुरली बाले, कोई गुञ्जा की माला पहिने, कोई मक्खन चोरी करे, कोई ग्राम वधुओं से, गंवार ब्रज वधुओं से, भिक्षा मागें, ऐसे कोई बालक की लीला में मेरी निष्ठा नहीं, मेरी निष्ठा निर्गुण में है फिर भी ''**गुर्मीत चेता राजशे**'' उत्तमश्लोक जो भगवान श्री कृष्ण हैं उन्होंने मेरे चित्त को, हे राजा पकड़ लिया है, बलात् मैं बाध्य हो चुका हूँ। ऐसे उत्तमश्लोक परमात्मा और पुण्यश्लोक आचार्य चरणों की यह सभा है इसलिए न ये ''शोकसभा'' है न ''लोक सभा'' है, यह केवल भारत की ''श्लोक सभा'' है। और इस श्लोक सभा में जो आ जाते है वह क्या नहीं पाता। हम

एक वैष्णव निम्बार्कीय- अब हम इस परम्परा में हैं, इसका हमें गौरव है, इसका हमें आनन्द है। देश विदेश में कई लोग पूछंते हैं, आप तो रामकथा गाते हैं आपकी परम्परा तो।

यह परम्परा, क्या मामला है? मैने कहा-हम खाते हैं कृष्ण का, गाते हैं राम को, यह द्वारिकाधीश यहां पर बैठा है, खाते हैं उनका और इन दोनों को कोई तकलीफ नहीं है तो आपको क्यों तकलीफ है। दूसरे का गायें तो भी दोनों आनन्द में है तो आपको क्या, आप क्या है। नौबत व्यक्ति की कब आती है जीवन में अच्छी सौबात नहीं होती और परस्पर मोहब्बत नहीं होती तब नौबत पैदा होती है।

मैं यहां आया यह पूरी परम्परा है एक सन्त से मेरी चर्चा हो रहीं थी कि भगवान श्री कृष्ण इस धराधराम पर आये उनको तीन सूत्रीय कार्यक्रम था। जैसे पंच सूत्रीय, सप्तसूत्रीय, नवसूत्रीय, जैसी योजनायें होती है पंञ्च वर्षीय, त्रिसूत्रीय और केवल त्रिसूत्रीय वह खुद कहता है कि -

''परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।''

कहीं भी देखों साधु का परित्राण केवल सत्य से ही होगा, असत्य से असाधुओं का परित्राण हो, साधु को परित्राण के लिए और आश्रय की जरूरत नहीं रहती साधु का परित्राण, साधु की सुरक्षा केवल सत्य से ही होती है। कभी देर लगती है इस सत्य को प्रकट होने में, कभी कुछ मुश्किलों से गुजरना होता है जो हो, लेकिन साधु का परित्राण परमात्मा सत्य के द्वारा करता है, असत्य से कभी साधु का परित्राण थोड़े ही होता है। यदि कोइ असत्य से परित्राण पाने की चेष्टा करे और थोड़ा समय के लिए व प्रतिष्ठित भी हो जाये। अभी हमारे पूज्य श्री कह रहे थे, कि, निम्बार्कपीठ, कई लोग ऐसे बता रहे हैं कि हम भी ये हैं हम भी यह हैं। मुझे तो इतना ही कहना है कि यह हँसीय परम्परा है ये युग की परम्परा नहीं है। ये हँसीय परम्परा है, हँस की परम्परा है उसको कौन कुछ कर सकता है, इसे कौन विक्षिप्त कर सकता है। ईसाई पादरी को हुआ कि अफ्रीका के जंगलों में जो नग्न रहते हैं, माँस भक्षण करते है ऐसे लोगों में जाकर मैं धर्मप्रचार करूं और सबको ईसाई बना दूँ। इन लोगो की अपनी योजनाबद्ध नेटवर्क होता है, तो वो गया, ऐसा एक कबीला था जिसमें ये अफ्रीकन लोग जो वहां मनुष्य को पकड़ करके, थोड़ा अग्नि में सेक करके खाते थे और यह ईसाई पादरी गया तो उसको पकड़ लिया। सफेद कपड़े हैं उनके, अब सबको हुआ कि यह तो अच्छा भोजन मिला, उसको पकायें खाये। वह गया था धर्म प्रचार के लिए फँसा, लेकिन था होशियार उसने कहा कि आप मुझे खालों, इसमें कोई चिन्ता नहीं यदि आपको तृप्ति होती है तो मैं कुर्बानी के लिए तैयार हूँ लेकिन मेरा शरीर आपको स्वादु लगे न लगे फिर आपको पेट दर्द हो, पचे न पचे। मैं नगर का आदमी, आप जंगलों के आदमी को खाते है तो पहले जरा टैस्ट कर लो मुझे चख लो फिर मैं स्वादु लगूँ तो खा जाओ- सबको लगा कि बात भी तो ठीक है, कहाँ से आया कैसा है, खबर नहीं। तब इस पादरी ने स्वयं एक छुरा लेकर अपने पैर की पहली थोड़ी काटी और कहा कि लो ये जरा चख लो, ठीक लगे तो फिर खा लेना। अब मैं यहां से भागुँगा तो भी कहाँ जाऊंगा, आपके आधीन हूं और ये सब खाकर खबर नहीं, क्या क्या होने लगा तो सबने सोचा कि अच्छा हुआ उसने कहा वरना खाते तो मर जाते। छोड़ दिया जा, जा तुझको छोड़ दिया। फिर उसने ईसाई धर्म का वहां बहुत प्रचार किया। प्रचार जिन्दगी भर किया इन लोगों को इन्होंने ईसाई भी बना दिया। लेकिन उसने पैर काट कर खिलाया था वह लकड़ी का पैर था उसका सही पैर नही था लकड़ी का लगा था विकलांग था वह समाज को तो लगा लेकिन इस पादरी को तो जिन्दगी भर चुभन रही वह धर्म का

प्रचार भी कर गया लोगों को कनवर्ट भी कर गया लेकिन खुद को चुभन रही कि मेरा पग लकड़ी का है। साधु का पग कभी नकली नहीं हो सकता, साधु कभी विकलांग नहीं हो सकता, लेकिन इस तरह जो प्रचार करते हैं वह कर जाते हैं, थोड़ा सफल भी हो जाते हैं लेकिन खुद को तो चुभन रहती ही है कि मेरा पैर नकली था, मैं झूठा हूँ। मैं इसलिए कह रहा हूं कि साधु का परित्राण केवल सत्य से होता है।

किसी से हो ही नहीं सकता दूसरा **''विनाशाय च दुष्कृताम्''अशुभतत्व का नाश''** के विशुद्ध संकल्प से होता है जिस व्यक्ति में विकल्पमुक्त शुद्धसंकल्प तन्मे मन् शिवं सकल्पं अस्तु'', शुद्ध संकल्प जिसके मन में होता है, वो अशुभ तत्वों का नाश कर सकता है। धर्म के स्तम्भ की संस्थापना आनन्द से हुआ करती है। हमारे यहाँ धर्म का स्थापन, धर्म का पोषण आनन्द के द्वारा हो रहा है तो परमात्मा तीन सूत्रीय कार्यक्रम लेकर आये, लेकिन आचार्य ? आचार्य जब आते हैं तो इनका कितनी सूत्रीय कार्यक्रम होता है। मुझे तो लगता है कि आचार्य जब नहीं होते तभी भगवान को आने की जरूरत पड़ती है लेकिन जब तक आचार्य होते हैं तब तक भगवान को आने की कोई जरूरत नहीं है। ये क्रिकेट में कैप्टन नहीं है वह वाइस कैप्टन है कैप्टन तो मेरे देश की परम्पराओं के आचार्य हैं। वह यदि न हो तो भगवान को आनापड़ता है बाकी अचार्यगण जब तक बैठे हैं परमात्मा को भी कहते हैं कि आप विश्राम कीजिये हम हैं और हमारी पूरी परम्परायें है। दक्षिण भारत ने अचार्य दिये और पूर्व भारत ने अवतार दिये ये दोनों परम्परा चलीं है। आचार्यो का कितना सूत्रीय कार्यक्रम। और मैं सभी पीठों में देखता हूँ, जब जब किसी आचार्य के दर्शन का अवसर मिलता है मथ्था टेकने जाते हैं तो देखते हैं ये पंञ्च सूत्रीय कार्यक्रम हमारी पीठें दे रही हैं। ये निम्बार्कपीठ क्या है ? पंञ्च सूत्र प्रदान करती है और कुछ नहीं। पहला सूत्र वह प्रकाश प्रदान करती हैं क्यों कि हँसीय परम्परा है, निम्बार्कीय परम्परा है, एक प्रकाश की परम्परा है। मेरे भाई बहिन! प्रकाश कभी जड़ नहीं होता, प्रकाश में जड़ता नहीं होती प्रकाश तो अवसर मिलते ही फैलाता रहता है, विस्तरता रहता है। निम्बार्कीय परम्परा क्या है। मेरी समझ में जितना मैं इन आचार्यो के वचनामृतों को सुनकर, हमारी पूरी परम्परा हम उसी वैष्णव साधु से आये इस परम्परा में, जो हम सीखे हैं, यह प्रकाशीय परम्परा है। इन पीठों का जो कार्यक्रम है वह समाज को प्रभावित करने का नहीं, प्रकाशित करने का है। समाज को प्रभावित करना बहुत आसान है। झूठे लोग बनावटी लोग, नकली लोग, कैसे भी फूट पड़ते ही हर जगह से और वह समाज को कुछ समय के लिए प्रभावित भी करलें लेकिन समाज को प्रभावित करना यह कोई बड़ा काम नहीं, एक पागल भी प्रभावित कर सकता है एक बहुरूपिया भी प्रभावित कर सकता है। समाज को प्रकाशित करना, **''तमसो मा ज्योतिर्गमय''** आचार्यपीठ क्या सुवा कर रही है, क्यूँ हम यहां आते हैं, क्यों इतने लोग श्रद्धा लेकर आ रहे हैं लेकिन सबको किसी न किसी रूप में प्रकाश अनुभव होता है उनका एक प्रथम सूत्रीय कार्यक्रम है समाज को प्रकाश प्रदान करना वो प्रकाशीय परम्परा है प्रकाश देना। दूसरा प्रस्थानत्रयी के भाष्य द्वारा वे जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य भगवान हो कि उसी सम्प्रदाय के आचार्य महापुरूष हो, निम्बार्कीय परम्परा हो, रामानुज परम्परा रामानन्दी परम्परा, जितनी जितनी हमारे यहां माधवाचार्य से लेकर जितनी आचार्य परम्परा आई, वो ग्रन्थों के द्वारा अभी निम्बार्क परम्परा में तो खबर नहीं कितना लिखा गया आचार्य चरणों ने कितने कितने ग्रन्थ रचनायें की लेकिन यह ''दशश्लोकी'' पर्याप्त है। उपास्य का स्वरूप, उपासक का स्वभाव, कृपा का फल, क्या है, वृत्ति रस। अभी अभी हमारे पूजनीय युवराज श्री ने भी शरणागति की बात कहीं,

और इनमें बाधायें क्या क्या है ? पर्याप्त है जगत् के उद्धार के लिए इतने अद्भुत स्रोत और ग्रन्थों की रचाना हमारे आचार्यपीठों ने किया। आचार्यपीठ की सीधी सादी व्याख्या यदि मुझे करनी हो तो इतनी ही कहूँ कि जहां ग्रन्थ हो लेकिन ग्रन्थी गांठ न हो उनका नाम आचार्यपीठ है। ग्रन्थ तो हो लेकिन कोई ग्रन्थी - देखिये कोई ग्रन्थी है यहां मैं सोच रहा था कि एक गेरूये कपड़े में है एक सफेद कपड़े में है, गेरूये कपड़े में है एक सफेद कपड़े में है गैरूये कपड़े में आग की लपट के बीच में बैठना है और सफेद कपड़ों में एक शान्ति का स्वभाव एक ज्ञान का स्वरूप, एक शरणागति, खबर नहीं किन किन शब्दों में इस संवाद को बिरदाऊं, इस संवाद को मैं नमन करूं। तो मेरे कहने का मतलब यह प्रकाशीय परम्परा है और ग्रन्थों की परम्परा है। मैं कभी कभी यह ''दशश्लोकी'' का पाठ कर लेता हूँ उसका स्मरण करता हूँ कभी कभी कथा में जिक्र कर लेता हूँ तो लगता है कि दश में क्या नहीं है, क्या बचा है फिर कहने को शेष। और जहां ग्रन्थियाँ न हो और हम सब जानते है एक विद्वान से मैंने सुना था कि हिन्दुस्तान में ग्रन्थ कितने हैं वो गिने जा सकते हैं लेकिन हमारे भीतर ग्रन्थियाँ कितीन हैं उनका गिनना बहुत मुश्किल है। ग्रन्थियों ने संघर्ष पैदा किए, ग्रन्थियों ने बदले लेने की वृत्तियां निर्माण की, ग्रन्थियों ने संताप पैदा किए जो ग्रन्थियों को छोड़ दे ऐसी एक ग्रन्थ परम्परा है जिससे प्रेरणा मिलती है। इसलिए दूसरा शब्द दूसरा सूत्र मेरी समझ में है, एक प्रकाश देना दूसरा ग्रन्थो के द्वारा जगत को प्रेरणा देना। तीसरा वस्तु प्रसाद देना। कोई आचार्य आपको एक फल दे तो यह केवल फल नही है स्थूल रूप में जरूर फल है कि चीकू है, कि अनार है, कि मौसमी है, स्थूल रूप में वो जरूर है लेकिन किसी आचार्य का हाथ छू जाता हैतो वह फल कुछ और रूप धारण कल लेता है। यह फल प्रभाव स्वरूप बदल जाता है तो हमारी यह परम्परा एक प्रसादीय परम्परा है। प्रसाद वो केवल स्थूल रूप में, अन्न का वितरण हो, कोई ठोस रूप में, कोई प्रसाद मन्दिर में बांटे जाये इतना ही संकीर्ण अर्थ में हाँ उसकी भी महिमा है ''**अन्नं ब्रह्मेति**'' ये हमारे उपनिषदों की घोषणा है कि हम अन्न को भी ब्रह्म मानते हैं। प्रसादीय परम्परा में इसलिए कह रहा हूँ कि यहां आने वाले आचार्यों के पास से दर्शन प्रसाद ले जाने वाले को चित्त की प्रसन्नता प्राप्त होती है। चित्त की प्रसन्नता की एक परम्परा है। सुदर्शनीय परम्परा केवल दर्शनीय नहीं सुदर्शनीय, चक्रीय परम्परा, चरेवैति, जड़ परम्परा नहीं, चलती फिरती परम्परा, सदा गंगा के प्रवाह की तरह प्रवाही होनी चाहिये, चक्रीय होनी चाहिये, गतिशील होनी चाहिये और ऐसी परम्पराओं के पीठ पर विराजमान यह आचार्य चरण हमको प्रसाद देते है, प्रेरणा देते है प्रकाश देते हैं, और श्रद्धा की ओर सन्तों के संग की ओर, और इष्ट की शरणागति की ओर प्रस्थान कराते हैं, ये चौथा सूत्र, प्रस्थान त्रयी का भाष्य तो यह महापुरूष कर सकते हैं हम तो प्रेरणा ले सकते है, लेकिन इन महापुरूषों से हम तीन प्रकार के प्रस्थान जरूर कर सकते हें। श्रद्धा की ओर प्रस्थान, साधु के संग की ओर प्रस्थान करें, और परमात्मा के चरणों में प्रेम की ओर प्रस्थान करें। यह तीन है हमारे रामचरितमानस में एक बहुत बड़ा डिडिम घोष है जो- ''**श्रद्धा सम्बल रहित नहीं अरू सन्तन कर साथ। तिनहि मानस भलो अति जिन्ह हिय प्रिय रघुनाथ**'' ये प्रस्थान कराते हैं- प्रस्थानत्रयी के प्रदाता, हमको सिखाते है श्रद्धा सम्बल रहित नहिं अरू सन्तन कर साथ, तिनकहिं मानस भलौ अति जिन्हहिय प्रिय रघुनाथ, ये प्रस्थान कराते है प्रस्थानत्रयी के प्रदाता हमको सिखाते हैं। श्रद्धा की ओर गमन करो, साधु सन्तों की ओर गमन करो और इष्ट प्रेम की ओर आपकी गति हो। यह प्रस्थान की परम्परा है प्रकाश की परम्परा है, प्रसाद की परम्परा है, प्रेरणा की

परम्परा है पाँचवी मुझे जो अनुभव हुआ है सो यह है यह कि परम्परा प्रमाण परम्परा है। यहां शास्त्रों से खोज खोजकर प्रमाण दिये जाते हैं। देखो भाई अमुक पुराण में ये है वेद में ये है उपनिषद् में ये है, शास्त्रीय प्रमाणों की ये परम्परा है। ये पंञ्च सूत्रीय कार्यक्रम मेरी समझ में हैं। यहां से हो रहा है, आचार्यपीठों से हो रहा है तो ऐसी परम्परा जो प्रवाहित है जड़ नहीं।

मैं कथाओं में भी कहता हूँ कि तुम लोग सहमत हो न हो लेकिन हिन्दुस्तान में वाणी स्वातन्त्र्य है, और कोई भी आदमी स्वतन्त्रता से बोल सकता है तो साधु क्यों न बोले, साधु को अधिकार है। मैंने सुना कि भगवान कृष्ण ने वो जो त्रिभंग थी मथुरा की, कंस के यज्ञ में भगवान कृष्ण गये तो उस कुब्जा का निमन्त्रण कुबूल किया और फिर वो, आप कथा से परिचित हैं पूरे कथानक में मुझे नहीं जाना हैं। लेकिन वो जो तीन अंग से टेड़ी थी उसको सीधी कर दिया। क्या मतलब है इसका, कंस जैसे अत्याचारी मानस की प्रजा त्रिभंगी होती है। इनके पैर टूटे हुये होते हैं, इनकी कमर कूबड़ हो चुके हैं और उनकी गर्दन कभी उठे नहीं। कंस जैसा शासन संसार में अपनी प्रजा को कुब्जा ही बनाये रखना चाहता है। कृष्ण ने आकर क्रान्ति कि उनको सीधी क्रिया, मानों जनता को अपने पैरों पर खड़ा कर दिया।

जनता को पैरो पर खड़ा कर दिया मतलब कि भाई हम क्यों इन्द्र की पूजा, इन्द्र कौन लगता है हमारा हम गिरिराज की पूजा करेंगे, जहां से नदियां बहती हैं, गायो के लिए चारा मिलता है, पानी मिलता है। क्या नहीं मिलता। यह जनता को पैरों पर खड़ा करने का भगवान कृष्ण का एक बहुत बड़ी उत्कण्ठा। दूसरा लोग इतना काम करते है ऐसे शासन में कंस के शासन में, कि आदमी टूट जाता है, कमर टूट जाती है रातभर दिन भर काम ही काम। भगवान कृष्ण ने उनके सामने कहा कि थोड़ा गेंद लेकर खेलेंगे, गिल्ली-डण्डा खेलो उत्सव मनाओं ये सब करो कमर तोड़ मेहनत नहीं। परिश्रम करना चाहिये लेकिन जो शासन समाज की कमर तोड़ दे उसके सामने कृष्ण का अवातर एक आह्वान था प्रजा को। और तीसरा भगवान कृष्ण के पास क्या नहीं था पूर्ण अवतार हैं। लेकिन गुञ्जा की माला पहनतें, मोर का मुकुट पहनते है, ताकि सबको लगे कि हम भी यह कर सकते हैं और सबका गला, सबका मस्तक, गौरव से ऊपर उठे यह तीन प्रकार की बातें भगवान कृष्ण ने बताईं।

मैं प्रवाही परम्परा इसलिए कहता हूँ कि मूल को पकड़कर नये नये फूल खिलने चाहिये, यह बहुत आवश्यक है और आचार्यपीठों से मैंने देखा कि हमारे सभी आचार्य चरण मूल को पकड़ करके हमारी जो सनातनता है, हमारा जो मूल है उसमें से जरा भी इधर उधर किए बिना समाज के सामने नये नये प्रेरणा के सूत्र, प्रेरणा के पुष्प प्रदान करते हैं। और समाज को खुशबु से भरने की कोशिश करते है। आज ऐसी छाया में हम सब है- मुझे तो विदेश में किसी ने पूछा कि ये आप काली बिन्दी करते हैं इसका मतलब क्या है ? मैंने ऐसे मुस्कराकर ऐसे ही जवाब दे दिया कि भाई शंकरभगवान का तीसरा नेत्र यहां होता है हम लोग निम्बार्कीयों का भी तीसरी टीकी है हम लोग इनसे देखते हैं। लोचन नहीं, ये लोचन के अन्दर जो काली, ये पूरा जगत् निम्बार्कीय है एक एक बिन्दी नही दो दो बिन्दी कर रहे है पूरी दुनियाँ हम तो हमारे राम जी मन्दिर में रामजी को भी बिन्दी करते हैं कल अयोध्या से एक महात्मा आये, बोले महाराज आपने राम को भी निम्बार्की बना दिया। मैंने कहा हमारा राम है, हम जो चाहें करें अयोध्या में आकर बिन्दी करें तो रोकना हमको, लेकिन अभी ये हमारा है करने दो हनुमान जी को बिन्दी करते हैं, ऊपर कोई तकलीफ नहीं, तकलीफ नीचेवालों को है ऊपर किसी को कोई तकलीफ नहीं हैं।

अब सब यह आचार्य महापुरूष क्या है। हाईस्कूल में आठवीं श्रेणी में टीचर पीरिएड लेने जाता है, नोंवीश्रेणी में दूसरा जाता है, दसवीं मे तीसरा जाता हे ग्यारवीं में ओर लेकिन जब खाली घण्टा होता है अधिशेष होते हैं तब ये सभी एक कौमन रूम में बैठे बैठे चाय या दूध पीते हैं, आचार्य महापुरूष समाज को जब जरूरत पड़ी तब पीरिएड लेने आये हैं। समाज के सामने कभी गीता, कभी भागवत कभी उपनिषद, कभी ब्रह्म सूत्र, कभी दशश्लोकी , कभी भगवान जगद्गुरु शंकराचार्य ने जितने सूत्र निर्माण किये, यह सब लेकिन जब अधिशेष आती है तब सब एक ही तो हैं,''**एक सद्विप्राबहुधावदन्ति**'' इसी दृष्टि में और ये मञ्च इसी का गवाह है मैं तो आज आखिरी दिन आया लेकिन कितने महापुरूष यहां आये होंगे। बगीचे तो दुनियां में बहुत हैं विदेशो में भी मैंने देखे कि पता नहीं कितने प्रकार के लोग वर्णसंकर पुष्प बना रहे हैं जगत् में, लेकिन सच्चा बाग तो भगत का है सन्त समाज का है, न जाने कितना महक रहा है कब से महक रहा है साधु समाज की खुशबु ने कईयो को महका दिया और वहीं से हम प्रेरणा प्राप्त करें। और कुछ न कहते हुये मैं मेरी बहुत प्रसन्नता यह व्यक्त कर रहा हूँ और मैंने पहले भी कहा कि नानी के आगे ननिहाल की बातें लेकिन ''जो बालक कह तोतरी बाता'' तुलसी ने अधिकार दिया तो उस अधिकार से चेष्टा भी कर लेता लेकिन समय नहीं। रामचरितमानस में भी इसी परम्परा के सूत्र निहित है इसको कोई मना नहीं कर सकता।

इतने सूत्र तीन चारसूत्र प्राप्त होते हैं इसलिए तो तुलसी ने कहा है कि -''**नाना पुराण निगमागम सम्मतं यद् रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि। स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा भाषानिबन्धमतिमञ्जुल - मातनोति॥**'' कौन सूत्र नहीं है। अब कई लोग हमारे सामने मजाक करते हैं कि बापू आप तो रामायण कहते हैं और वह भी तुलसी की कहने लगे। तुलसी की कुछ नहीं है बाल्मिकि नहीं कहते है तो हमने कहा भाई, हम तो प्राइमरी स्कूल में टीचर थे पहले, और प्राइमरी स्कूल में सात दोरों से एक पठन होता है इसीलिए सातकाण्ड वाला एक प्राइमरी स्कूल का मैं काम कर रहा भागवत वह तो हायर सेकेन्ड्री का मामला है, उपनिषद यह तो विश्वविद्यालय है, वेद वेदान्त। लेकिन इतना याद रखना कि प्राइमरी स्कूल से हम धक्का दें वही महाविद्यालय मे जा सकता है बाकी कोई जा नहीं सकता, धक्का तो हमको देना पड़ेगा प्राइमरी स्कूल से कैसे भी क्रास करके धक्का दे देते है सात काण्ड हो जाते है, फिर वहां पहुंचे जाते हैं। तुलसी के ग्रन्थ में भी इसी परम्परा के कुछ सुषुप्त बीज हैं, गुप्त नहीं सुषुप्त ओर इस सुषुप्त जो सुषुप्त हो गुप्त हो, उसको खोजना पड़ता है सुषुप्त हो उसको खोजना नहीं पड़ता उसको जगाना होगा जो गुप्त हो उसको खोजना पड़ता है यह गुप्त नहीं है मेरी दृष्टि में। मैं हनुमानजी को देखता हूँ तो उनमें मुझे यही सूत्र गुप्त नहीं है मेरी दृष्टि में। मैं हनुमानजी को देखता हूँ तो उनमें मुझे यही सूत्र कहीं न कहीं सुसुप्त रूप से प्रकट दिखाई देता है। मैं लक्ष्मण जी के बारे में सोचता हूँ तो कहीं न कहीं इस मूल की ओर संकेत मिलता है। इस बार अवकाश नहीं इनके लिए पूरा सत्र चाहिये कि मानस में निम्बार्क कैसे प्रकट होगा और नहीं होगा आप नहीं मानेगें। क्यों कि यह आदि पुरूष सूर्यवंशी परम्परा तो है ही ''मन मुस्काय भानुकुल भानु, राम सहज आनन्द निधानु'' यह प्रकाशीय परम्परा है। वहीं- गुप्त प्रकट जहँ जेहि जेहिखानी'' वो कोई ग्रन्थ ऐसा नहीं कि जिसमें समन्वय न हो, तकरार तो हम करते हैं। ये हमारे बम्बई के एक शायर हैं राजेश रेड्डी उनका एक शेर याद आ रहा है-

गीता हूँ कुरान हूँ मैं, मुझको पढ़ इन्सान हूँ मैं।

चेहरों के इस जंगल (कितने मुखौटे आ गये है समाज में कितने दिन कितनी बार हम चेहरा बदलते हैं, जीसेसक्राइस्ट ने जरूर कहा था ''**पुट एण्ड द न्यू मैंन**'' **रोज एक नये आदमी का पहना** ''**दिने दिने नवम् नवम्नमामिनन्द सम्भवम्**'' प्रतिक्षण वर्द्धमान रामचरितमानस कहता है- छन छन नव अनुगात, लेकिन

जो प्रतिक्षण वर्द्धमान है प्रतिक्षण दैदीप्यमान है। ''लेकिन आज हूँ, चेहरों के इस जंगल में, खोई हुई पहचान हूँ मैं, मुझको पढ़ इन्सान हूँ मैं जिन्दा हूँ सच बोलके भी ये देखके खुद हैरान हूँ मैं'' ये सोचके मैं स्वयं हैरान हूँ, सच बोलने के बाद यहाँ किस को जिन्दा रहने दिया लोगों ने, मारा पीटा लेकिन सच बोलने के बाद भी मैं जिन्दा हूँ ये देखकर मुझे हैरानगी होती है। मेरे भाई बहिन, इन आचार्यो के दर्शन करके और ये अखिल भारतीय विराट् सम्मेलन नहीं सम्मिलन। सम्मिलन का अर्थ है ''संगच्छध्वम् सवदध्वम्'' हमारी जो साथ चलने की गति है ये सभी महापुरूष साथ साथ चलते हैं, ऐसे समय में धर्म की ओर ऊंगलियों उठे, धर्म के स्थानों को बदनाम करने की चेष्टा हो, हम धर्म के प्रति आदर और इज़्जत के साथ आचरण को अपनाये ऐसी आचार्य पीठो से प्रेरणा लेकर भारत की सभी जनता को साथ में चलना चाहिये, साथ में बोलना चाहिये, केवल नारे के रूप में नहीं आचरण के रूपमें। नारे तो बहुत लगाये जाते हैं मुझे दुश्यन्त कुमार एकबार फिर याद आ रहा है ''कोई हंगामा खड़ा करना मेंरा मकसद नहीं, मेरी कोशिश यह है कि यह सूरत बदली चाहिये'' पूरी सूरत बदले समाज की और ये राजगदी नहीं कर सकती, आचार्य गादी ही कर सकती है। राजपीठ कर सके उत्तम है, स्वागत है, लेकिन रासपीठ कर सकती है यह सब उत्तम गादियाँ यह काम कर सकती हैं-

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नही-
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिये

आखिर मैं इतना ही कहूँ-कि खेत अच्छा है लेकिन बीज अच्छा न हो तो फसल नहीं उगती, खेत अच्छा, बीज भी उत्तम कोटि का लेकिन समय समय पर वर्षा न हो तो फसल नहीं पक सकती, चलो समय पर वर्षा हुई खेत अच्छा, बीज उच्च कोटि का, खाद उत्तम प्रकार का लेकिन बाड़ न होतो इस खेती की अच्छी सुरक्षा न हो तो कोई कोई पशु उसको बिगाड़ सकते हैं। चलो बाड़ भी अच्छी हो खेत भी अच्छा हो, जल सिंचन भी समय पर होता हो, खाद उत्तम कोटि का हो, सुरक्षा भी अच्छी हो, लेकिन कुछ पक्षी ऐसे हैं कि जो ऊपर से आ करके शाक को बिगाड़ देते हैं कुसमय पक्षी आते हैं और उसको बिगाड़ देते हैं-ऐसे समय में क्या करें? ऊपर से आने वाले पक्षी आते हैं और उसको बिगाड़ न दें इसलिए हमारे देहातो में, गुजरात सौराष्ट्र में, राजस्थान में हर जगह हर प्रान्त में होता होगा, एक मचान बना लिया जाता है और मचान पर एक आदमी बैठता है और कुछ ऐसी रस्सी और उसमें पत्थर कंकण डाल करके, जो फेंकता है कि ऊपर से आये पक्षी पकी हुई फसल को बिगाड़ न दें। हिन्दुस्तान खेत अच्छा है इनके समान खेत कौन है? इकबाल के शब्दों में कहूँ तो **''सारे जहां से अच्छा ये हिन्दोस्ताँ हमारा''** किसी को भी मुक्ति लेनी होती है वाया हिन्दोस्ताँ जाना पड़ता है भारतीय दर्शन को पार करते हुऐ, भारतीय चिन्तन को प्रणाम करते हुये, भारतीय चिन्तन को प्रणाम करते हुऐ पड़ता है तभी कोई वहां पहुंच सकता है ऐसा यह मुल्क खेत बहुत अच्छा है। बीज सनातन धर्म का, वैदिक परम्परा का, आचार्यों की पीठो के जो बीज सूत्रात्मक बीज हैं। बीज उच्च कोटि, उच्चकोटि का खाद ऐसी सेवा समूह के साथ तन से, मन से, धन से, यह सब खाद है यह सब परदेशी खाद नहीं है देशी खाद है पसीने की कमाई लगाते हैं लोग। यह सब खाद भी अच्छा है, बीज भी अच्छा है इतने सन्त महात्मा लोग फसल बिगड़ न जाय इसलिए परिभ्रमण करते करते बाड़ रखते हैं इसकी सुरक्षा रखते हैं, इसको संभालते है। अस्तित्व का करूणा का जल समय समय पर बरसता है लेकिन ऊपर से पक्षी आकर इसको बिगाड़ न दें। इसलिए हमारे देश में इन आचार्यों की पीठ है यह एक ऊंचा मचान है वहां कोई जगद्गुरु बैठे ही नहीं रहते हैं जगद्गुरु वैसे तो पहले परिभ्रमण करते रहते है लेकिन कोई स्थूल रूप में बैठे बैठे ये बात नहीं है गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है - **''विश्वकल्याण के लिए जो व्यग्र चित्त हैं वह साधु हैं''** व्यग्रचित्त सर्वदा गोस्वामी जी विनय में

फरमाते है कि **''विश्व मण्डल के लिए जिसका चिन्त नव्यग्र है''** वरना तो यह महापुरूष,''एकान्ते सुखमास्यताम्'' का बोध देते हैं ये क्यूँ परिभ्रमण करें, लेकिन ये लोग जब बैठें तब हम खड़े हो, तब उनकी सूचना के मुताबिक हम चलने लगे, वह चलने लगें तो हम थोड़ा तेज गति से चलें, वह तेज गति से चलें, तो हम मंजिल प्राप्त करने के लिए उसके आशीर्वाद से आगे बढ़े यह सब महापुरूषों से, एक मचान पर बैंठ कर एक जीवन की ऊचाई पर बैठ कर, भारतीय संस्कृति की, भारत के गायों की, भारत के साधुता की भारत के सनातन धर्म की, फसल को ऊपर से आये कुछ राजसी पक्षी, ऊपर से उड़करके आने वाले कुछ **''तामसी पक्षी''** उड़ान भरने वाले रोग, कहीं बिगाड़ न दें इसलिए सूत्रों के मणी जैसे कंकण लेकर अपने वचनामृतों से इस भारत की सनातनता की सुरक्षा में लगे हैं। लेकिन हम भी जागरूक रहें, सावधान रहें, यह इतना ही आवश्यक है लोग इतनी श्रद्धा से सुने हैं और श्रवण-मनन और निदिध्यासन से आगे भी हमें गति करनी होती है। चले हम सब मिलकर इन आचार्यों के चरणों से यह आशीर्वाद प्राप्त करें कि हम हमारे भाग में जो जो काम आता है। हर कोई व्यक्ति को चाहिये, खुद के लिए उपयोगी हो, समाज के लिए उपयोगी हो, और परमात्मा के लिए उपयोगी हो, खुद के लिए उपयोगी होने में आत्म चरित है, समाज के लिए उपयोगी होना- हमारे धर्म को, हमारी संस्कृति को, गायों की, हमारे ग्रन्थों की, हमारी प्रवाहीय परम्परा की सुरक्षा में, समाज की सेवा में संलग्न होना है, और परमात्मा के उपयोगी हो-भगवान हमारे लिए उपायोगी हो-वो तो माँग माँग करके हमने हालत बिगाड़ ली है। माँगों तो ऐसा माँगो प्रभु तुम्हारे उपयोग में, मैं किस तरह आऊँ, हनुमान जी राम को बोझ नहीं बनें, राम हनुमान के बोझ बने, काँधे पर हनुमान जी राम को उठाते हैं खुद नहीं कहते कि मैं आपके कँधे पर बैठूँ। हम तो पूरे मन्दिरों में यही देखते है कि बस हम तुम्हारे कंधे पर बैठे हुए है हमारा इतना काम कर दो-रामायण से प्रेरणा लें कि हम परमात्मा के उपयोग में आये। इसलिए हनुमान जी महान हैं, निम्बार्कीय तक में हनुमान, अब कभी चर्चा करूंगा इसकी, लेकिन हनुमान इसलिए महान हैं-कहीं भी राममन्दिर है तो हनुमान जी का मन्दिर रहेगा, लेकिन हनुमान जी का मन्दिर हो वहां राम के मन्दिर की जरूरत नहीं है राम न हो तो भी चलेगा, अकेला काफी है इन राम को बुरा नहीं लगेगा।

आपको शायद लगे तो लगे, राम मन्दिर में हनुमान नितान्त आवश्यक हैं लेकिन हनुमान जी के मन्दिर में राम की जरूरत नहीं है, वीर हनुमान है उसमें भी ऐसे सूत्र प्राप्त होते हैं ऐसी प्रवाहीय परम्परा में हम स्नान करें, अपने आपको कृतार्थ करें, धन्य करें। विशेष कुछ न कहकर मैं आया और कर्त्तव्य में बहुत अन्तर है। वक्तव्य तो बहुत दिये जाते है कर्त्तव्य होता है। वक्तव्य में और कर्त्तव्य में बहुत अन्तर है। वक्तव्य नहीं होता है, यह हमारा कर्त्तव्य होता है। वक्तव्य और कर्त्तव्य में बहुत अन्तर है। वक्तव्य तो बहुत दिये जाते कर्त्तव्य की कमी है और यहाँ जो कहा जा रहा है यह कर्त्तव्य परायणता है। मेरे से इस वाणी की सेवा यहाँ लग गई और आपका तो इतना स्नेहादर है हमारी रामचरित मानस का सूत्र मुझे हर वक्त याद होता है ''बड़े स्नेह लघु पर करही'' जैसे पर्वत बड़े हैं लेकिन तिनके को अपने सिर पर धारण किया करते हैं, समुन्दर इतना बड़ा है लेकिन फैन को उनके ऊपर रखता है। अब मैं बोलू उसके बाद आचार्य श्री को बोलना होता है यही तो लेकिन बड़े स्नेह छोटो पर करहीं कि आप बोलें, बड़े शान्ति से सुन रहें हैं, इधर शंकराचार्य जी भगवान शान्ति से सुन रहे हैं तब मुझे एक शेर याद आता है वह कह कर पूरा करूं- कि ''वो खामोश खड़े रहते हैं वो अलग बात है लेकिन जो बड़े होते हैं वह सदा बड़े ही रहते है''॥

❑❑❑

श्रीभगवन्निम्बर्काचार्य जन्मदिन महोत्सव

कार्तिक शुक्ल पुर्णिमा शुक्रवार स.२०६१

दिनांक २६ नवम्बर २००४

अभिनन्दनग्रन्थ का विमोचन एवं समर्पण:-

माननीया श्रीमती वसुन्धरा राजे, मुख्यमत्री, राजस्थान द्वारा अभिनन्दन ग्रन्थ ''निम्बार्क गौरव'' का विमोचन

''निम्बार्क गौरव'' जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीराधा सर्वेश्वर शरण देवाचार्यजी महाराज को अभिनन्दन स्वरूप अभिनन्द ग्रंथ ''निम्बार्क गौरव'' का श्रीमती वसुन्धरा राजे मुख्यमंत्री राजस्थान द्वारा समर्पण

अभिनन्दन ग्रन्थ परिचय

अनन्त श्री विभूषित श्रीजगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्रीराधा सर्वेश्वर शरण देवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज अखिल भारतीय निम्बार्काचार्य पीठ, निम्बार्क तीर्थ (सलेमाबाद) किशनगढ़ (अजमेर) राजस्थान के गरिमामय जीवन व व्यक्तित्त्व का अभिनन्दन, ग्रन्थ समर्पण पूर्वक करने का संकल्प, आपश्री के अर्द्ध-शताब्दी आचार्यपीठाभिषेक के स्वर्ण-जयन्ति महोत्सव के अवसर पर आयोजित अ०,भा० विराट् सनातन धर्म सम्मलेन में विशाल श्रद्धालु-समुदाय द्वारा लिया गया था।

''अभिनन्दन ग्रंथ'' समर्पण संकल्प के अनुसार अभिनन्दन ग्रन्थ समिति व सम्पादक मण्डल का गठन किया गया। आभिवान्दन ग्रन्थ के प्रमुख सम्पादक प्रो.डॉ. प्रभाकर शास्त्री, जयपुर, सम्पादक- पं.दयाशंकर शास्त्री, ब्यावर,पं.वासुदेव शरण उपाध्याय निम्बार्क तीर्थ पं.रामस्वरूप गौड़, मौखमपुरा (जयपुर), डॉ.रामप्रसाद शर्मा (किशनगढ़) आदि तथा सम्पादन-प्रकाशन कार्य में पं.भँवर लाल उपाध्याय, ब्यावर, पं.ओमप्रकाश शर्मा शास्त्री, पं.ऋषि कुमार जासरावत, निम्बार्क तीर्थ व रमेश चन्द माहेश्वरी अजमेर आदि का सहयोग रहा।

अभिनन्दन ग्रन्थ के मुख्य परामर्शदाता रहे, मेवाड़ महामडलेश्वर महन्त, श्रीमुरली मनोहर शरणजी महाराज उदयपुर, महन्त श्रीहरिवल्लभ दासजी महाराज किशनगढ़ (रेनवाल) महन्त श्रीवृदावन बिहारीदासजी सुखचर (प.बंगाल) बाबा श्रीमाधव शरण जी निम्बार्क तीर्थ, श्री रसिक मोहन शरण शास्त्री, श्रीहरिशरणजी निम्बग्राम डॉ. श्री रसिक बिहारीजी जोशी, ब्यावर श्रीहरिशरण देव शास्त्री नेपाल, श्री खेमराज केशव शरण नेपाल, महामहोपाध्याय पं.गंगाधर द्विवेदी, जयपुर, डॉ.श्री वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी मथुरा, डॉ. श्री प्रेमनारायण श्रीवास्तव वृंदावन, डॉ. श्री भास्कर श्रोत्रिय, जयपुर,

सम्पादक मण्डल ने अभिनन्दन ग्रन्थ का स्वरूप तय करके एक विषयावली विज्ञापित की जिसके तहत महिमामय पदासीन व्यक्तियों के, जगद्गुरु कोटि के धर्माचार्यो, सम्प्रदाय प्रमुखों, प्रमुख-जनप्रतिनिधियों, शासन प्रमुखों, कुलपतियों, मूर्धन्य विद्वानों व श्रद्धावान

भक्तभावुकों द्वारा अभिनन्दनीय आचार्यश्री से संदर्भित लेख, प्रेरक संस्मरण आदि प्राप्त हुए जो इस अभिनन्दन ग्रन्थ में सजोये गये है।

यह अभिनन्दन ग्रन्थ सात खण्ड में विभक्त है। प्रथमखण्ड में पूज्य आचार्य श्री के प्रति भावाभिनन्दन, अभिनन्दन ग्रन्थ तथा सनातन धर्मसम्मेलन के सम्बन्ध में शुभकामनायें है। द्वितीय खण्ड में आचार्य श्री के सामाजिक, धार्मिक, भक्ति पूर्ण दार्शनिक व प्रेरक, व्यक्तित्व का दर्शन है। इस खण्ड में देश प्रदेश के विशिष्ट व्यक्तियों, संत, महन्त, श्रद्धालु वैष्णव जन के आचार्य श्री से सम्बन्धित भिसंदर्भित विविध विधा के भावा लेख है। इस खण्ड में आचार्य श्री के जीवन वृत के साथ अपने समय के सामाजिक, धार्मिक शैक्षणिक व राजनैतिक संदर्भ संग्रहीत हुए है तथा तीर्थ-स्थल प्रमुख कुम्भादि पर्व व उत्सवों का विवरण भी संस्मरण संदर्भ से रोचक बन पड़ा है। इस प्रकार यह खण्ड आचार्य श्री के प्रेरक-जीवन से भरपूर है। तीसरा खण्ड आचार्य श्री के साहित्यक कृतित्त्व के अध्ययन मूल्याकंन पर आधारित है। आचार्य श्री के रचित लगभग 35 ग्रन्थ है, इन ग्रन्थों पर अध्ययनात्मक व समालोचनात्मक कुछ ग्रन्थ लिखें जा चुके है। जिनमें केशवदेव शर्मा फरीदाबाद, पं.रामस्वरुप गौड़ मोखमपुरा जयपुर, डॉ. परमानन्द शर्मा जयपुर श्रीमती उषा चौधरी मथुरा व श्री ललित कुमार शर्मा जयपुर प्रमुख है।

इस खण्ड मे आचार्य श्री के कृतित्व पर मूल्याकंन परक विद्वानों के लेख है। चौथा खण्ड, निम्बार्क सम्प्रदायक के दर्शन व अनुचिन्तन पर आधारित है, इसमें विशिष्ठ महानुभावों के प्रवचन व आलेख संकलित है। जिनसे निम्बार्क सम्प्रदायकी समग्र विचार शरणी व स्वरुप का दर्शन होता है।

श्रीवेणी रामगौड़, धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज पं. वैद्यनाथ झा, देवर्षि कलानाथ शास्त्री,महन्त श्री धंनजयदास काठिया,वेदवाचस्पति गंगेश्वरानन्द जी महाराज, डॉ.वाचस्पति उपाध्याय आदि के आलेख सम्मिलित है।

पाँचवें खण्ड में आचार्य श्री को विभिन्न समय में विभिन्न सभा सोसायटियों व संस्थानो द्वारा समर्पित अभिनन्दन पत्र संकलित है।

छठेवें खण्ड में आचार्य श्री से हुए विशिष्ठ जनो के पत्र व्यवहार सम्मलित है। जिन से इस समय के सामयिक, धार्मिक वातावरण का ज्ञान व धर्म प्रेरणा प्राप्त होती है।

सप्तम खण्ड में आचार्य श्री के कार्यकाल में करवाये गये धार्मिक समारोह, आश्रम व मन्दिर निर्माण तथा जीर्णोद्धार आदि कार्यो का विवरण है। इस खण्ड में निम्बार्काचार्य पीठ तथा यहाँ से संचालित कार्यक्रम, संस्थाये, सम्प्रदाय के मठ मन्दिर व धार्मिक जगत का आंकलन साकार हो जाता है।

इस अभिनन्दन ग्रन्थ के मध्य में वृहद चित्रवीथी है जो आचार्यश्री के जीवन के साथ देश-प्रदेश का महत्वपूर्ण चित्र इतिहास प्रस्तुत करती है। इसमें देश के राजा महाराजा, प्रमुख जन नायक, आचार्य कोटि के धर्माध्यक्ष, सन्त महन्त, विशिष्ट विद्वान के व अन्य श्रद्धालुओं के विविध इतिहासिक संस्मरण साकार हुये है। पूज्य आचार्य, का व्यक्तित्त्व निम्बार्क सम्प्रदाय का गोरव व सनातन धर्म की गरिमा है अत: इस अभिनन्दन ग्रन्थ को आचार्य श्री के व्यक्तित्व अनुरुप ''निम्बार्क गौरव'' नाम दिया गया है। इस की छपाई सुन्दर आकर्षक और ग्लेज पेपर पर है पृष्ठक्रमश:खण्डानुसार 40+230+112+ 144+68+48+58=700 कुल है व करीब 80 पृष्ठ की चित्र वीथी है। 780 पृष्ठ का ग्रन्थ पक्की

गौ रक्षा सम्मेलन में अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते हुए जगद्‌गुरु शंकराचार्य गोवर्धन पीठाधीश्वर श्री निश्चलानन्द जी महाराज, पुरी

मानव धर्म सम्मेलन में अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते हुए रामस्नेही सम्प्रदाय के आचार्य श्री रामदयाल जी महाराज शाहपुरा-भीलवाड़ा

श्रीलक्ष्मीनारायण जी दवे पर्यावरण, खनिज, वनमंत्री सम्मेलन में उद्‌बोधन देते हुए

देवस्थान सुरक्षा सम्मेलन को अध्यक्षीय सम्बोधन करते हुए दादू सम्प्रदायाचार्य स्वामी श्री गोपाल दास जी महाराज

गौ रक्षा सम्मेलन में शिक्षा मंत्री श्री घनश्याम तिवाड़ी सपत्नीक को आशीर्वाद प्रदान करते हुए पूज्य आचार्य श्री

मानव धर्म सम्मेलन में मंचासीन हिन्दू धर्म, इस्लाम धर्म, जैन धर्म व सिक्ख पंथ के धर्म गुरु व प्रवक्ता

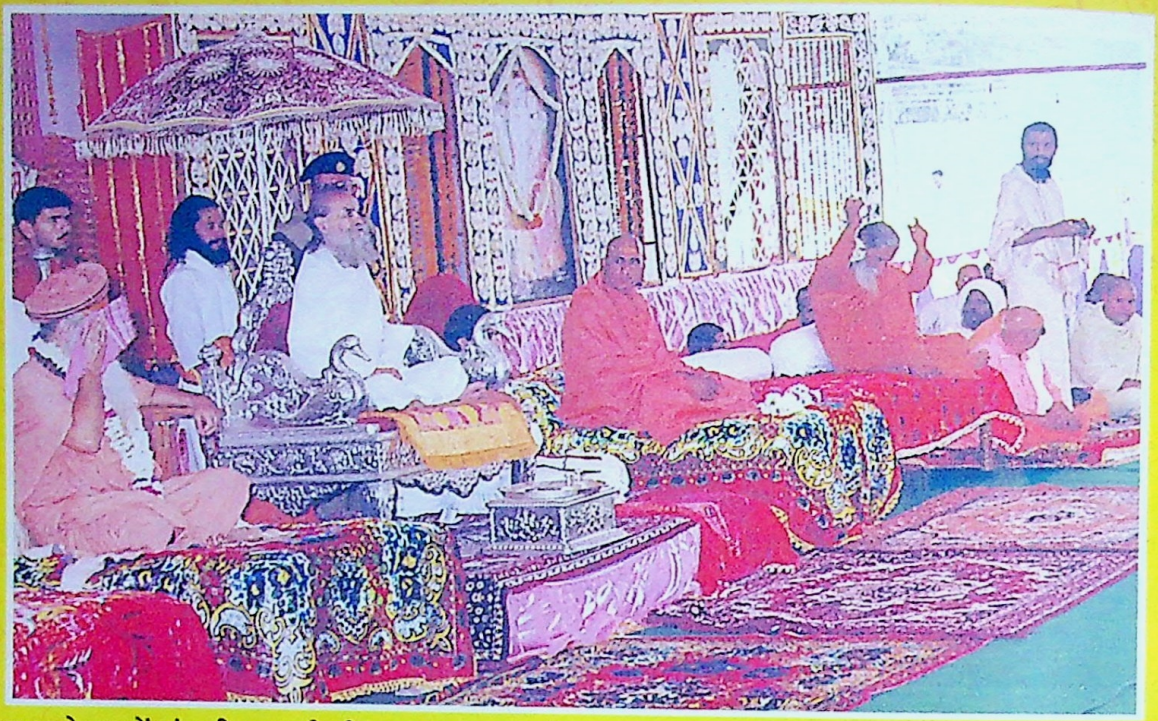

ष.द.सम्मेलन में मंचासीन स्वामी श्री गुरुशरणा नन्द जी महाराज, जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज, स्वामी श्री अवधेशानन्द जी महाराज, स्वामी श्रीहरिनारायणानन्द जी महाराज

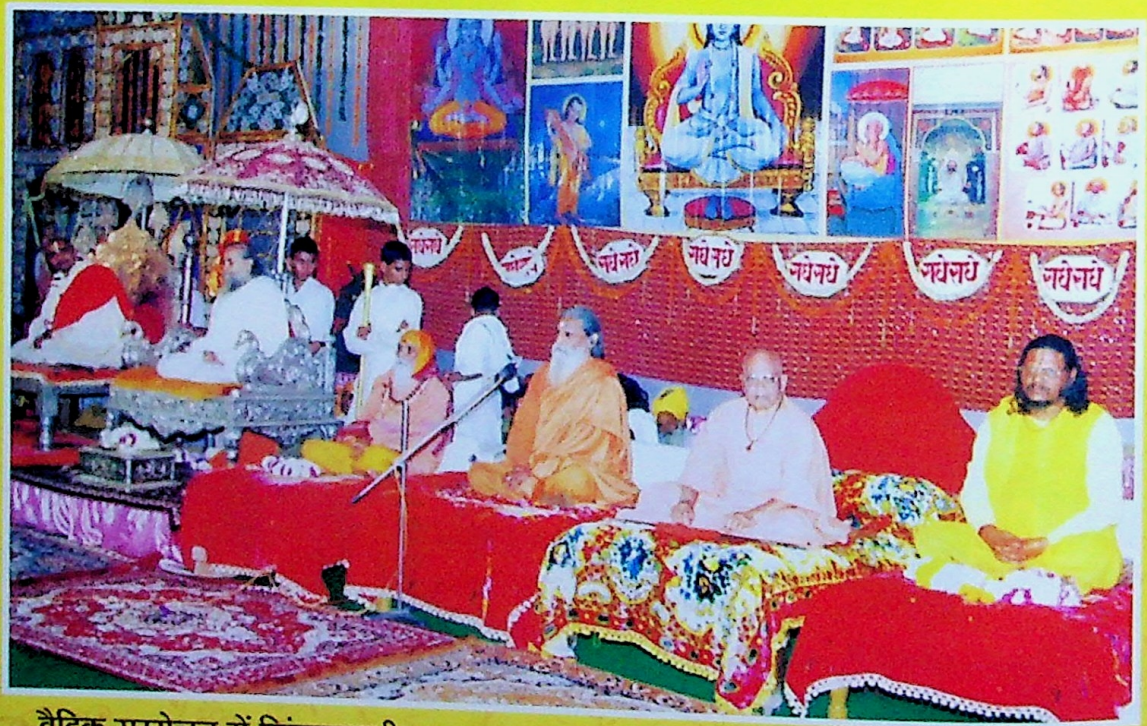

वैदिक सम्मेलन में सिंहासनासीन जगद्गुरु वल्लभाचार्य गोस्वामी श्री वल्लभराय जी महाराज, जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज, स्वामी श्रीराघवानंद जी महाराज स्वामी श्री हरिनारायणानन्द जी, स्वामी श्रीमंगलानंद जी, रेवासा पीठाधीश्वर स्वामी श्रीराघवाचार्य वेदांतीजी

ष.द. सम्मेलन में उद्बोधन करते हुए जगद्गुरु
वल्लभाचार्य गोस्वामी श्रीवल्लभराय जी महाराज
सूरत

ष. द. सम्मेलन में उद्बोधन करते हुए
स्वामी श्रीगुरुशरणानन्द जी महाराज
रमणरेती गोकुल

षडदर्शन सम्मेलन की अध्यक्षता करते
हुए महामण्डलेश्वर जूनागढ़ पीठाधीश्वर
स्वामी श्री अवधेशानन्द जी महाराज

रामानुजाचार्य स्वामी श्रीघनश्यामाचार्य जी
डीडवाना व पुष्कर

सरस सम्प्रदाय आचार्य श्रीअलवेली शरण जी महाराज
सरस कुंज, जयपुर व सुरेन्द्र गोलछा जयपुर
आचार्य श्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए

ब्रह्मपीठाधीश्वर श्रीनारायणदासजी महाराज
त्रिवेणीधाम व अन्य महानुभाव

वैष्णव दर्शन सम्मेलन में
जगद्गुरु वल्लभाचार्य गोस्वामी
श्री वल्लभराय जी महाराज, सूरत
जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज,
जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष पीठ
स्वामी श्री वासुदेवानन्द जी सरस्वती,
नागौरिया मठ रामानुजाचार्य
स्वामी श्रीविष्णु प्रपन्नाचार्य जी
व स्वामी चिन्मयानंद जी

सम्मेलन में उद्बोधन करते हुए
जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष पीठाधीश्वर
श्रीवासुदेवानंद सरस्वती जी महाराज

वैदिक सम्मेलन सभा मंच पर
स्वामी श्री विद्यानन्द जी
आचार्य श्री वार्ता करते हुए

वै.स. में मंचासीन महंत श्री हरिवल्लभदास जी रेनवाल
किशनगढ, महन्त श्री युगल शरण जी पाटनारायण,
चतुः सम्प्रदाय श्री महन्त फूलडोलदासजी
म. श्री बनवारी शरणजी शास्त्री, नवेली कुंज, म.
श्री रासबिहारी दासजी वृंदावन व अन्य संत महात्मा

पूज्य आचार्यश्री से सनातनधर्म सम्मेलन
व आद्याचार्य जयन्ती महोत्सव
का स्मृति चिन्ह प्राप्त करते हुए
युग संत श्री मुरारी बापू

निम्बार्क दर्शन सम्मेलन में शुभ आशीर्वचन करते हुए निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज
श्रवण करते हुए युग संत मुरारी बापू व अन्य

निम्बार्क दर्शन सम्मेलन में उद्‌बोधन देते हुए रामकथा प्रवक्ता 'निम्बार्क रत्न' युग संत श्री मुरारी बापू

मुख्य मंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे नवनिर्मित गो महिमा बोधक भवन(गौशाला)
गंगासागर के उद्घाटन अवसर पर आचार्य श्री से वार्ता करते हुए

पूज्य आचार्यश्री से सनातनधर्म सम्मेलन का
स्मृति चिन्ह ग्रहण करती हुई श्रीमती वसुन्धरा राजे

सिंहासनासीन पूज्य आचार्य श्री श्रीजी महाराज
मंचासीन मुख्य मंत्री राजे, मंत्री साँवरमल जाट,
राज्य मंत्री श्रीवासुदेव देवनानी, वन एवं पर्यावरण मंत्री
श्रीलक्ष्मीनारायण दवे, विधायक श्रीभागीरथ चौधरी

तुलसी के पौधे वितरित करती हुई मुख्यमंत्री
श्रीमती वसुन्धरा राजे श्री लक्ष्मी नारायण दबे मंत्री,
विधायक भागीरथ चौधरी, जिला वन अधिकारी
क्षेत्रिय वन अधिकारी श्री महेश टांक

श्रीमती वसुन्धरा राजे पूज्य आचार्य श्री के अभिनन्दन
ग्रन्थ का लोकार्पण करते हुए साथ में श्री प्रभाकर शास्त्री,
श्री दयाशंकर शास्त्री, श्री वासुदेव शरण उपाध्याय

अभिनन्दन ग्रन्थ पर हस्ताक्षर करते हुए मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धराराजे

अभिनन्दन समारोह के अवसर पर अभिनन्द ग्रन्थ का विमोचन पश्चात्
अभिनन्दनीय पूज्य निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज को अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण करते हुए
मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे एवं मंत्री श्री साँवरमल जाट एवं वासुदेव देवनानी

समापन सत्र के अवसर पर आशीर्वचन प्रदान करते हुए - आचार्य श्री

समापन सत्र पर उपस्थित विशाल जन समूह

समापन सत्र के अवसर पर आभार प्रकट करते हुए समिति अध्यक्ष श्री श्यामसुन्दर जी बेरीवाला

समापन सत्र में जगद्गुरू निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज, शंकराचार्य श्रीवासुदेवानंद जी व विशिष्ट महानुभाव

पूज्य आचार्यश्री एवं युवराजश्री एवं समिति के पदाधिकारीगण

सुदर्शन महायज्ञ

निम्बार्क तीर्थ से प्रारम्भ कलश यात्रा

यज्ञाचार्य श्री विष्णु कांत जी शास्त्री वृन्दावन

श्रीनटवरगोपाल छापरवाल
सूरत

श्रीबाबूलाल अग्रवाल,
बालोतरा

श्रीअभय अग्रवाल
हाथरस

श्रीरामगोपाल बंग
कलकत्ता

श्रीलक्ष्मीकान्त पोद्दार
मुबंई

महायज्ञ पूर्णाहुति के अवसर पूज्य आचार्य श्री,
युवराज जी एवं श्रीमहन्त श्रीमुरलीमनोहरशरण जी

सम्मेलन में रात्रिकालीन सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रस्तुति देते गायक कलाकार व कवि

सनातन धर्म सम्मेलन के अवसर पर
आचार्य श्री द्वारा विभिन्न सम्मानित व्यक्ति

किशनगढ़ नरेश श्री ब्रजराज सिंह जी पूज्य श्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए

पुलिस महानिरीक्षक श्री कल्याणमल शर्मा

आचार्य श्री द्वारा सम्मानित पत्रकार महानुभाव

पूर्व विधायक श्री नाथूराम सिनोदिया

डॉ. ए. जी. फड़के, मुंबई

डॉ. अनिल कुमार, मुंबई

प्रसाद ग्रहण करते हुए सन्त महात्मा

प्रसाद ग्रहण करते हुए भक्तजन

जिल्द में है और ऊपर आर्कषक आर्ट पेपर पर प्रिन्ट कवर लगा है, जिस पर ऊपर जगद्गुरु आद्यनिम्बार्काचार्य व मध्य में अभिनन्दनीय वर्तमान् पीठाधीश्वर ''निम्बार्क गौरव'' पूज्य श्रीश्रीजी महाराज का चित्रराज पधराया हुआ है।

ज्येष्ठ शुक्ला ७, शुक्रवार विक्रम सम्बत २०५० दिनॉक २८-५-९३ को सनातन धर्म सम्मेलन में लिया गया आचार्य श्री को अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण का संकल्प जगद्गुरु आद्याचार्य श्री निम्बार्क की ५१००वें जयन्ती महोत्सव पर आयोजित ''अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन के पावन अवसर पर कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा सम्वत २०६१ दिनॉक २६ नवम्बर, २००४, को सम्पन्न हुआ। श्रद्धालु जनो के अभिनन्दनीय आचार्य श्री के प्रति श्रद्धास्पद भाव सुमन से महकता यह अभिनन्दन ग्रन्थ ''निम्बार्क गौरव'' श्रीमन्निखिल महीमण्डलाचार्य, चक्र चुड़ामणि सर्वतंत्रस्वतंत्र द्वैताद्वैत प्रर्वत्तक यतिपतिदिनेश राजराजेन्द्रसमभ्यर्चितचरणकमल भगवन्निम्बार्काचार्य पीठविराजित अनन्तानन्त श्रीविभूषित श्री ''श्रीजी ''महाराज ''निम्बार्क गौरव'' श्रीराधासर्वेश्वर शरण देवाचार्य जी महाराज की पावन प्रतिष्ठा में राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे द्वारा समुपस्थित, पूज्य सम्प्रदायाचार्यों अभिनन्दन ग्रन्थ के सम्पादकमण्डल व अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण समिति के मुख्य सदस्यों कें साथ सभामण्डप में विराट् श्रद्धालु जन समुदाय की अभिनन्दनीय हर्ष ध्वनि व पूज्य श्री ''श्रीजी'' महाराज के जयकारों के साथ हर्षोल्लास पूर्वक पूज्य श्री श्रीजी महाराज को समर्पित किया गया।

अभिनन्दनीय वन्दनीय निम्बार्क गौरव जगद्गुरू भगवन्निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री राधा सर्वेश्वर शरण देवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज के व्यक्तित्त्व का संस्तवन

जयन्ति ते सुकृतिनः रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशः काये जरामरणजं भयम्।।

श्रेष्ठ गुण विद्या, बुद्धि, निर्मल मनोभाव, भगवत् परायणता व सत् प्रवृत्ति का श्रद्धा पूर्वक सम्मान व अभिनन्दन होना चाहिए। सुकृत व्यक्तित्व का स्मरण, श्रद्धा और अभिनन्दन करने से सुसंस्कार की धारणा व सत् प्रवृत्तियाँ प्रवृत्त होती हैं। इससे लौकिक व पारमार्थिक श्रेयः सिद्ध होते है।

शुद्ध अन्तःकरण, निर्मल जीवन वृत्ति, भक्ति-भाव, ज्ञान व आध्यात्मिक व्यक्तित्त्व के श्रद्धा पूर्वक श्रवण मनन व अभिवन्दन से तन-धन व वाणी कृतार्थ हो जाती है। जीवन में परम पुरुषार्थ का मार्ग प्रशस्त होता है। सुकृति व सुकृत जन की प्रशंसा से सुफल की प्राप्ति होती है।

सुकृत जनों की सुकृति पर जो मौन धारण करता है या उपेक्षा करता है। उनके पुण्य फल में न्यूनता आती है। जो सुकृति और सुकृत जनों की निन्दा करता है उसके पुण्य फल क्षीण होते है। जो सुकृत जनों के क्षद्धास्पद नहीं होता उसका आत्मबल कमजोर होता है। सत् पुरुषों के अभिनन्दन और श्रद्धा से हमें ही सुकृत फल की प्राप्ति और सर्वविध सफलता प्राप्त होती है। जबकी सत् पुरुषों को गुणगान की अपेक्षा नहीं होती।

जैसे सूर्य की प्रभा को कोई रोक नहीं सकता, खिले हुए फूल और उसकी महक को किसी तरह बाँधा नहीं जो सकता, वृक्ष को छाया और सागर को वर्षा का जल देते हुए किसी से कोई अपेक्षा नहीं होती। इसी तरह परम पूज्य महापुरुष समय-समय पर आते हैं और निरपेक्ष भाव से जीव जगत् का कल्याणकारी मार्ग प्रशस्त करते है। जिनके दर्शन, सत्संग व सद्वचन से जन-जन को सन्मार्ग प्राप्त होता है। ऐसे ही सत्पुरुषों में हमारे प्रातः स्मरणीय पूज्य श्री श्रीजी महाराज हैं। इनकी कृपादृष्टि

सूर्य की तरह सबका सन्मार्ग प्रकाशित करती है, वृक्ष की तरह छाया, फल, सागर की तरह बादल व वर्षा की तरह तृप्ति प्रदान करती हुई हमारा परम पुरुषार्थ सिद्ध कर रही है। महाराजश्री का अभिनन्दन, अभिवादन करके तो हम अपने आपके लिए ही सुफल प्राप्त कर रहे हैं। जैसे सूर्य को अर्ध्य, वृक्ष को जल एवं यज्ञ में घृत की आहुति देने से हमको ही सुफल की प्राप्ति होती है।

जिनके निर्मल अन्त:करण में भक्ति का अनाहतनाद देवर्षि नारद की वीणा की तरह सदा बजा करता है जिनके मन, मस्तिक कमल दल पर शुभ्र वस्त्रावृता माता सरस्वती सदा विराजमान रहती है। जो माता शारदा के वरद पुत्र हैं। जिनकी वाणी में माधुर्य है। जो श्रीहंस सनकादि, नारद, निम्बार्क की द्वैताद्वैत वेदान्त परम्परा के जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य की प्रधान पीठ के पीठाधीश्वर हैं। जो सनातन धर्म ध्वजा को अपनी तेजस्वी प्रभा से कलियुग के इन झंझावातों में भी शिखर पर लहराये हुए है और जन-जन को उर्ध्वगामी मार्ग पर लिए चल रहे हैं। जिनके सत् संकल्पों से मानव के परम पुरुषार्थ सिद्ध हो रहे हैं। जिनका व्यक्तित्व भक्ति ज्ञान, वैराग्य की त्रिवेणी से अभिसिक्त हैं।

अभिनन्दनीय श्री श्रीजी महाराज युगल स्वरूप श्री सर्वेश्वर ''शालिगराम'' के उपासक, नित्य निकुञ्ज लीला प्रवृत्त श्रीराधा कृष्ण की उज्जवल माधुर्य भक्ति के विस्तारक, अनन्य भाव भरित भक्ति के उपासना मन्त्र प्रदाता, नित्य नियमित मन्त्र उपदेष्टा कोटि-कोटि जनों के सद्गुरुदेव हैं।

पूज्य महाराजश्री कई धार्मिक, पारमार्थिक समारोह यज्ञानुष्ठान, उत्सव, भगवत् कथा, प्रवचन, भगवन्नाम सकीर्तन आदि के प्रेरणा स्त्रोत है। संस्कृत शिक्षालय, वेद विद्यालय, पत्र-पत्रिकाओं के संरक्षत्व और संचालकत्व से लोक शिक्षण, सत्प्रेरणा सद्विवेक प्रदान कर रहे हैं।

भगवद् भक्त रसिक जनों के सर्वस्व सन्मार्ग प्रेरक सरल हृदय, मन-वचन-कर्म से सत्विक, मृदुभाषी और सबसे समान स्नेह रखने वाले है हमारे हृदय सम्राट परम पूज्य महाराजश्री।

पूज्य महाराजश्री की संकल्प शक्ति अनुपम है जो भी संकल्प उत्पन्न होता है वह श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा से सहज ही निर्विघ्नतया पूर्ण हो जाता है। आपका आशीर्वाद भक्तों को फलता है। आपके दर्शन से सहज सुखानुभूति होती है। आपके मन्त्र दीक्षित शिष्य के सत् पुरुषार्थ सहज ही फलीभूत होने लगते हैं और भगवद् भक्ति में मन लगने लगता है।

धर्म और भक्ति भाव अभ्युदयकारी धारणाओं के सर्जनकार पूज्य आचार्यश्री सरस कवि हैं प्रखर वक्ता हैं और प्रभावशाली रचनाकार हैं। देववाणी संस्कृत और राष्ट्र भाषा हिन्दी दोनों में आपका विशेषाधिकार है। आपके काव्यों में भावों की प्रवणता, गम्भीर चिन्तन, गहन अध्ययनशीलता, अनुभव सघनता और व्यक्त विचारों में अध्यात्मिकी गूढता और सत्य को सामर्थ्य के साथ अभिव्यक्त करने की क्षमता है।

आपकी संस्कृत रचनाओं में स्तव स्तुति और गीतिकाएँ हैं। काव्य में छन्दों का प्रयोग अधिकार पूर्वक हुआ है। भाषा व्याकरण सम्मत, सुघटित और प्राञ्जल है।

हिन्दी में आप द्वारा रचित भक्तिमय पद, दोहा व प्रवचन संग्रह आदि मर्मस्पर्शी साहित्य है।

पूज्य श्री श्रीजी महाराज प्रणीत साहित्य, शास्त्र सम्मत, सरल तथा सुगम हैं। आपके साहित्य का केन्द्रीय विषय धर्म, भक्ति, ज्ञान, विवेक आदि श्रीवृन्दावनधाम व धामाधिपति श्रीराधाकृष्ण की ललित लीलाओं पर आधारित हैं।

पूज्य श्री श्रीजी महाराज का पदानुरुप व्यक्तित्त्व कृतित्त्व आस्था, सम्पर्कक्षेत्र और सम्मान भूमण्डलीय है। विशालजन समुदाय आपकी कृपा से उपकृत और परोपकार से प्रभावित हुआ है।

पूज्य श्री श्रीजी महाराज विश्व कल्याण, देश, धर्म, संस्कृत और संस्कृति की समृद्धि के लिए दृढ संकल्प है। समुद्र मन्थन से अमृत की प्राप्ति हुई, इस अमृत कलश को दानवों से बचाकर श्रीहरि ने देवताओं को अमृत पान कराया, इस अमृत पान से देवता प्रभावान् होकर पुण्य प्रवृत्तियों के संरक्षण में समर्थ हुए, इसी तरह पूज्य श्री श्रीजी महाराज इस घोर कलियुग में धर्म, साहित्य, संस्कृति, सदाचार व मानवीय संवेदना सहिष्णुता व दायित्व के होते क्षरण पर विविध धार्मिक, दार्शनिक, शैशणिक साहित्यक, सांस्कृतिक व भक्तिभाव पूर्ण आध्सरत्मिक प्रवृत्तियों की प्रेरणा प्रदान कर हमें अमृत पान करा रहे है सचेत कर रहे है, समर्थ बना रहे है।

विशाल सनातन धर्म सम्मलेन जैसे आयोजन कराकर मनीषी विद्वानों, तपोनिष्ठ साधु महापुरुषों, धर्माचार्यों के प्रज्ञा वर्द्धक प्रवचनों से हमें सत्प्रवृत्तियों में समर्थ बना रहे हैं तथा जन-जन में सद् विवेक सत्प्रेरणा प्रसारित कर रहे हैं।

निम्बार्क भूषण - पं. **रामस्वरूप गौड़**, मोखमपुरा, जयपुर

श्री लक्ष्मीनारायणदवे

- पर्यावरण मंत्री राजस्थान

''सत्संग की आधी घड़ी पूरे वर्ष पचास, वर्षा बरसे एक घड़ी अरट चले बारहमास''॥ ऐसे साधु सन्त के सानिध्य से, उनके प्रवचन से और उनके संसर्ग से मात्र आधी घड़ी में ही हमारा जीवन और परलोक दोनों सुधर सकते हैं। भारतीय संस्कृति, भारतीय सभ्यता और वैदिक संस्कृति में तुलसी का बहुत बड़ा महत्व है। **''हरे तत्र केशव सानिध्यं यत्रास्तितुलसीवनं तत्र ब्रह्मा च कमला सर्वारोहणे सः''** जहाँ पर तुलसी विराजती हैं वहाँ पर वासुदेव स्वयं उपस्थित होते, हैं और जहाँ पर वासुदेव विराजते हैं वहाँ पर ब्रह्मा और लक्ष्मी जी विराजते है ऐसा हमारे विष्णु पुराण के महात्म्य में कहा है। भारतीय संस्कृति भारत की सभ्यता वैदिक समय से चली आ रही हमारी सभ्यता विश्व में एक मात्र संस्कृति है। यहां कि मातृ शक्ति नित्य कर्म के पश्चात तुलसी की पूजा करती हैं। जहाँ पर तुलसी की पूजा होती है, वन्दना होती है हमारी मातृशक्ति निरन्तर रूप से तुलसी के दीपक करती हैं और जिनके परिवार में कन्या नहीं होती तो तुलसी का विवाह किया जाता है, इस आस्था और विश्वास के साथ ताकि इस परिवार के अन्दर कन्या जन्म लें। तुलसी ही ऐसा पौधा है दुनियां के अन्दर, पेड़ और पोधों के अन्दर तुलसी और पीपल का ही पेड़ ऐसा है जो चौबीस घन्टे ऑक्सीजन देता है। वेदों ने कहा है **''मूले ब्रह्मा त्वचिविष्णु शाखायांरूद्रएव च। पत्रे पत्रे तु देवानाम् वृक्षराज नमस्तुते''** हमारे राजस्थान के मुख्यमंत्री जी जो ईश्वर के प्रति अस्थावान और ईश्वर के प्रति प्रगाड़ श्रद्धा रखने वाली, पूर्व में जब राजस्थान के अन्दर अकाल की भीषण समस्या थी उस वक्त सम्माननींय मुख्मन्त्री जी ने प्रत्येक धर्म के धर्माचार्यों और प्रत्येक मन्दिर तथा गिरजाघर तथा मस्जिद के अन्दर राजस्थान के मन्त्रिमण्डल के तमाम सदस्यों को अलग अलग उन्हें जिम्मेदारी सौंपी थी। मुझे तीर्थराज पुष्कर में बहत्तर घन्टे का रूद्राभिषेक करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ उसका श्रेय सम्मानीय मुख्यमन्त्री जी को जाता है। ऐसी आस्थावान ऐसी धर्म के प्रति, जो राज धर्म के प्रति आस्थावान, और धर्माचार्यों के प्रति आस्थावान होता है तो निश्चित रूप से राजस्थान का वायुमण्डल, राजस्थान की प्रगति और राजस्थान की विचारधारा जो इस भौतिक युग के अन्दर इस कलयुग के अन्त जो नैतिक ह्रास हो

रहा है, आध्यात्मिक गिरावट आ रही है, तो इस प्रकार के सत्संग से विचारधारा रखने वाले सम्माननीय मुख्यमन्त्री जी के द्वारा एक शुद्ध वातावरण पर्यावरण युक्त वातावरण हमें प्राप्त होता है। आज इस कार्यक्रम के अन्दर यहाँ पर सलेमाबाद के तमाम घर के तमाम परिवार के अन्दर एक पौधा तुलसी का सम्मानीय मुख्यमन्त्री जी के द्वारा हर मातृशक्ति को वितरण किया गया साथ में राजस्थान सरकार की तरफ से एक लिट्रेचर भी दिया गया जिसमें ओजोनीय गुणों के बारे में, धर्म के बारे में, तुलसी की महिमा एवं महत्व के बारे में बताया गया। उसके साथ श्रीजी महाराज के आदेश के अनुसार सड़के चारों तरफ फॉरेस्ट विभाग की तरफ से, जैसा सम्माननीय मुख्यमन्त्री की इच्छा थी फैनसिंग की कार्यवाही की जा रही है, प्लान्टेशन की कार्यवाही की जा रही है। अन्त में अपनी वाणी को विराम देते हुये पुनः निवेदन करना चाहता हूँ कि मनुष्य जन्म लेता है तृष्णा मे इतना लिप्त हो जाता है कि अन्तिम समय तक इस भौतिकता इस तृष्णा में लिप्त रहता है, मायाजाल रहता है। यहां पर आद्यगुरू शंकराचार्य ने कहा है, ''**पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननी जठरेशयनं । इह संसारे खलु दुस्तारे कृपयापाया- पाहि मुरारे भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज मूढ़मते**'' इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ॥

महामण्डलेश्वर स्वामी विद्यानन्द जी महाराज :- अहमदाबाद

महोत्सव में सम्मिलित होने का जो सौभाग्य मिला है, आनन्द की उपलब्धि प्रत्यक्ष यही है। जिस महोत्सव में मैं सम्मिलित होने के लिए आया हूँ ऐसे श्रीजी श्री निम्बार्काचार्य जी महाराज उनका हृदय से हम अभिनन्दन करते हैं और इस कार्यक्रम में आयोजन में मुझे आने की प्रेरणा देने वाली इस राज्य की मैं कह सकता हूँ लोक लाड़िली सभी की लाड़िली मेरी तो लाड़िली है। यहाँ प्रत्यक्ष देखा जा सकता है कि यहाँ की मुख्यमन्त्री सन्तों के पास आ रहीं है, महात्माओं का आशीर्वाद ले रहीं हैं और सन्तों के महोत्सवों में आ करके वो तो नीचे बैठ जाना पसन्द करती है कुर्सी भी लेना नहीं चाहती है इतनी विनम्रता से सन्देश को स्वीकार करेगी। महापुरूषों के चरणों में बैठना सौभाग्य-सद्भाग्य होता है।

आज एक हमारा महापुरूष जेल में बैठा है आश्चर्य की बात हैं और हमारा खून गरम नहीं हो रहा है, हम अगर इसी बात को और किसी अल्पसंख्यक समुदाय के साथ जोड़ते और यह घटना घटित होती तो क्या जिस तरह से वर्तमान में हो रहा है क्या सम्भव था आप स्वयं अपने हृदय पर हाथ रख करके देखिये। जो एक निरपराध आध्यात्म के उच्च शिखर पर पहुँचा हुआ, वैदुष्य में जिसका कोई सानी नहीं और जिस परम्परा में मैं स्वयं जानता हूँ जो इनके गुरू थे चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती महाराज उनके यहाँ पर मिसेज गाँधी स्वयं जाकरके बैठी रहती थी दर्शन करने के लिए। आज उन्हीं के यहाँ उसी राज्य में उनको जेल में बिठाया जा रहा है और हम सब शान्त होके बैठे हुये हैं। मित्रो! यह धर्म का मंच है इसीलिए मैं कह रहा हूँ अगर धर्माचार्यों के ऊपर इस तरह से अमूल्य निर्देश होंगे तो आज एक पर हुआ है कल किसी और पर होगा और इस तरह से एक उच्चतम व्यक्तित्व के साथ में इस तरह का अपराध करके और आपके मानस में उनके प्रति अश्रद्धा का निर्माण करना यानी समाज को कोई अन्य दिशा देने का संकेत स्पष्ट दिखाई दे रहा है। इसलिए हम सभी को, सभी धर्माचार्यों को एकजुट हो करके प्रस्ताव पारित करना ही चाहिये कि किसी भी धर्माचार्य के साथ में इस तरह का खिलवाड़ नहीं होना चाहिये। महाराज श्री स्वनामधन्य स्वामी करपात्री जी महाराज यहाँ पधारा करते थे, मुझे मालुम हैं इसी मंच पर बैठ करके। वह एक ऐसी विभूति थी जो आकर के

सभी धर्माचार्यों को एकजुट करके और कोई भेद भाव नहीं, न कोई द्वैतवाद, न कोई अद्वैतवाद, न कोई द्वैतवाद, न कोई द्वैताद्वैतवाद, न कोई शुद्धाद्वैतवाद, न कोई विशिष्ट द्वैतवाद, न कोई अचिन्त्यभेदाभेद वह सभी का समन्वय करके और एक बहुत अच्छा मार्ग दर्शन कर रहे थे आज ऐसी किसी विभूति की आवश्यकता है जो सभी को संगठित करके और आज समाज के सामने एक ऐसा स्वरूप अभिव्यक्त हो जो कि कभी दुबारा ऊंगली निर्देश करने का ऊंगली उठाने का, साहस न कर सके और मुझे विश्वास है राजस्थान की धरती के ऊपर लाड़िली वसुन्धरा द्वारा तो कभी भी इस तरह होने देने का तो सवाल नहीं है लेकिन इसका भी हम सब प्रतिरोध कर रहे हैं, ये राष्ट्रपति महोदय तक पहुंचाये हम लोगों का सन्देश, ऐसे मैं उनको प्रेरणा करता हूँ और आप सभी के लिए यहाँ मुझे बुलावा समय बहुत कम है उन्हें भी जाना है अधीक मैं बोलनानहीं चाहूँगा, किन्तु बस इतना आभार आप सबका कि आप सभी लोग निम्बार्काचार्यजी महाराज के सानिध्य में राधामाधव प्रभु की उपासना करते हुये उनका अनुग्रह सिद्ध करें और श्रीजी महाराज का एक बार फिर धन्यवाद और उनके लिए शुभाशंशा। इस इक्यावन सौ वर्ष वीं जयन्ती पर आपको मेरी ओर से शुभ कामना।

ज्योतिष पीठाधीश्वर जगद्गरु शंकराचार्य :- स्वामी श्री वासुदेवानन्द जी महाराज

निम्बार्क महाप्रभु की इक्यावन सौ वीं जयन्ती के अवसर पर विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, धर्म सम्मेलन अपने पूर्णता की तरफ आगे बढ़ रहा है। आज विशिष्ट विशिष्ट महापुरूषों का समागम सम्पन्न हो रहा है। मध्यान्ह काल के सत्र में मुरारी बापू जी भी आये। वर्तमान सत्र में हमारे महामण्डलेश्वर श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती महाराज पधारे, बहुत दिनों के बाद आपका दर्शन हुआ। हमारे राजस्थान के मुख्यमंत्री और उनका मंत्रिमण्डल आज इस सनातन धर्म सम्मेलन में प्रस्तुत होकर हमारे निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज के चरण में अपने अभिनन्दनात्मक प्रणाम निवेदन करते हुये अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन भी किया।

सनातन धर्म से सम्बद्ध यद्यपि समस्त समस्याओं पर विचार विमर्श हो चुका है। हमारे महामण्डलेश्वर जी ने कांचीपीठ के सम्बन्ध में भी चर्चा की, क्या कहें। हमारे देश का दुर्भाग्य है जब हम अपने धर्म पर अपने धर्माचार्य, अपने भगवान पर भी आक्षेप करते हैं और छीटाकशी करते हैं। इतना ही नहीं अभी तो मैंने सुना एक किसी लेखक ने एक पुस्तक लिखी है जिसमें लिखा है कि ''**राम**'' सबसे बड़े पापी थे और सत्य बोलना सबसे बड़ा ''पाप'' है और ठीक उस दिन ये सन्देश मिला जिस समय भारत स्वतन्त्रता दिवस मना रहा था पन्द्रह आगस्त को। आज भारत में बुद्धिमत्ता बहुत ज्यादा बढ़ गई है, पता नहीं बुद्धिमत्ता है कि उच्छृंखलता है, स्वतन्त्रता का स्वरूप ही बदल गया नारायण। हम तो प्रभुचरणों से प्रार्थना करेंगे कि सबको सद्बुद्धि प्रदान करें विशेष हम नहीं आज बोलेंगे।

आज निम्बार्क प्रभु की जयन्ती भी है आज निम्बार्क तीर्थ पर ही इस कुण्ड पर इक्यावान सौ दीपक भी प्रज्वलित हो रहे हैं उस स्मृति में एक महान दृश्य उत्पन्न हुआ होगा वहाँ भक्त लोग दर्शन करके आनन्द प्राप्त कर रहे होंगे। हमारी वसुन्धरा राजे हमारे महामण्डलेश्वर जी स्नेह पूर्वक लाडली कह रहे हैं लाडिली तो लाडिली ही होती है। देखते ही मुझे राजमाता का स्मरण हो आया। राजमाता जी का पीठ से बहुत दिनों से सम्बन्ध था जब हमारे गुरूदेव श्रीमद् ज्योतिषपीठाधीश्वर जगद्गुरू शंकराचार्य श्रीमद् स्वामी शान्तानन्द सरस्वती जी महाराज पीठासीन थे। पन्ना नरेश महाराज श्री के शिष्य थे उनके यहाँ उत्सव होता था उस समय भी राजमाता पधरा

करती थी तब से मैं जानता हूँ उससे पहले क्या था मैं नहीं जानता हूँ। रामजन्मभूमि के आन्दोलन में जगह-जगह सम्पर्क होता रहा राजमाता मिलती रहीं। वसुन्धरा जी के प्रणाम करने की पद्धति देख करके राजमाता ही की स्मृति आई। हमेशा पंचाग प्रणाम ही करतीं थी जमीन पर बैठकर हाथ जोड़ करके नहीं काम चलाती थी। आज मुझे क्षोभ भी हो रहा है कि अन्तिमबार गोरखपुर में गोरखनाथ मन्दिर में अयोध्यानाथ जी के सानिध्य में एक छोटी सी गोष्ठी थीं वह इतने ही लोगों की गोष्ठी थी। वह माताजी का उस समय का स्वर मुझे स्मरण है ''महाराज श्री बड़ी कृपा हुई दर्शन हुये अब पता नहीं होगें कि नहीं होगे'' सच में उसके बाद से फिर माताजी नहीं मिल पाईं। भगवान राघवेन्द्र उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। उन्होंने अपना जीवन रामजन्मभूमि के लिए समर्पित कर दिया। उसी परम्परा में उसका निर्वाह करते हुये हमारे वसुन्धरा राजे राजस्थान का शासन चलाते हुये भी धर्माचार्यों के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करती रहती हैं।

एक बात तो हमें यह कहना है वह यह कि आपके निवास और आपके कर्मक्षेत्र दोनों के मध्य व्रजक्षेत्र में भगवान श्याम सुन्दर की लीला स्थलियों से सम्बद्ध जो पर्वत मालायें हैं उनमें बहुत जोरों से कटाई छटाई चल रही है। व्रजक्षेत्र की लीला स्थलियों के संरक्षण का आप प्रयास करें। उधर हरियाणा वगैरा से पहाड़ों की तुड़ाई बन्द हो गई तो यहाँ आकरके तुड़ाई बडे जोरों से चालू है बहुत क्रेसर लगे हुये है उसे बन्द करवाने का प्रयास करें। जिससे लीला स्थलियों का संरक्षण हो। ये भगवान श्री कृष्ण सबके हैं उनकी बाल लीला स्थलियाँ के संरक्षण का आप प्रयास करें। उनकी बाल लीला स्थलियाँ चौरासी कोस की यात्रा में दर्शनींय स्थल है, उन्हें विकृत नहीं होने देना चाहिये। खास कर हमारा यह निम्बार्क पीठ जो उपासना का प्रधान केन्द्र है इस पीठ पर आ करके व्रज क्षेत्र का संरक्षण करने का प्रयास करें। आज इस निम्बार्क प्रभु के इक्यावन सौ वीं जयन्ती पर हम अपने ''श्रीजी'' महाराज के प्रति हमसे तो अवस्था में बड़े हैं आचार्यपीठ के नाते आशीर्वाद और अपनी तरफ से शुभकामना और अभिनन्दन करते हुये प्रभु चरणों में प्रार्थना करते हैं कि आप दीर्घायुष्य को प्राप्त करें। फिर यह निम्बार्कपीठ जैसे अभी कुछ वर्ष पहले स्वर्णजयन्ती महोत्सव मनाया था आपके पाटोत्सव का, उसी प्रकार से हीरक महोत्सव मनायें, शताब्दी महोत्सव मनाये, निम्बार्क पीठ ऐसी हम मंगल कामना करते हैं। और हमारे युवराज अपने आचार्य के पद चिन्हों का अनुसरण करें ऐसी आपके प्रति स्नेहित मंगल कामना है इन्हीं शब्दों के साथ आप सभी के प्रति मंगलकामना व आशीर्वाद व्यक्त करते हुये वाणी को विराम देते हैं। ओइम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

युवराज श्री श्यामाशरण देव जी निम्बार्क पीठः-

जैसा कि आप सभी जानते हैं प्रभु स्वयं आज्ञा करते हैं।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥ परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

यो तो प्रभु स्वयं पधारते हैं नहीं तो अपने आयुध को आज्ञा प्रदान करते हैं ताकि जो धर्म का ह्रास हो रहा हैं उसकी क्षति न हो और पूर्णता के लिए वह अग्रसर हो। निम्बार्क भगवान का जो प्राणी मात्र के लिए सन्देश है वह मैंने सुबह आप सभी को बताया ही था ''**नान्यागतिः कृष्णपदारविन्दात्**'' यदि हम सभी को इस संसार से, भवसागर से पार होना है तो प्रभु की शरणागति ही ग्रहण करनी पड़ेगी, ''असहूँ, तसहूँ करके हरिनाम भजे सो तरे, पार उतरे'' इसके अलावा प्रभु ने कोई जीव की

गति न ही बताई है ''सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहत्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥''

सभी की मंगल कामना चाहते हुये। मैं श्रीमती वसुन्धरा राजे जी को धन्यवाद देता हूँ जो इस निम्बार्काचार्य जन्म महोत्सव के उपलक्ष में यहां पर पधार कर सभी जनता को आप्लावित कर रहीं है और आप सभी भावुक जनों को धन्यवाद देता हूँ जो सात दिवस तक आप सभी बड़ी संख्या में पधार कर यहाँ पर इस कार्यक्रम का आनन्द लेते रहे सभी का मंगल हो। सर्वेश्वर भगवान की..... जय हो॥

जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री ''श्रीजी'' महाराजः-

यह वही समय है जब निम्बग्राम में सुदर्शन चक्रावतार श्री निम्बार्कभगवान अपने बाल अवस्था में वेदाध्ययन में तल्लीन थे। जगत् स्रष्टा पितामह ब्रह्मा सुदर्शन चक्रावतार हैं कि नहीं इस जिज्ञासा से आपके आश्रम में उन्होंने प्रवेश किया एक दण्डी यति के रूप में। छद्मवेष में आये और यह जिज्ञासा की की हम आपके आश्रम में आये हैं, महर्षि अरूण से मिलना है, तो उन्हें ज्ञात हुआ कि महर्षि अरूण इससमय गिरिराज श्री गोवर्धन की परिक्रमा में गये हुये हैं तो पुनः जाने के लिए उद्यत हुये, बालरूप में श्री निम्बार्क भगवान का पहले नाम था नियमानन्द। आप आगे बढ़ करके और सश्रद्ध जो यति रूप में ब्रह्मा जी उपस्थित हुये उनसे निवेदन किया कि आप आश्रम में पधारे हैं भगवत्प्रसाद ले करके पश्चात जायें हो सकता है तब तक महर्षि श्री अरूण पधारें। उन्होंने कहा कि इस समय सूर्यास्त का समय हो गया है। यद्यपि हम भिक्षा नहीं ले सकते एतावता अब हमारा जाना ही उचित है। अपने आश्रम में, अपने घर में अपने निवास स्थल पर कोई विशिष्ट महनुभाव पधारें, अथवा कोई भी आ जाय, कोई अतिथि आ जांय उनका सत्कार करना हमारा परम धर्म होता है। आपने पुनः निवेदन किया कि नहीं आप देखिये अभी सूर्य अस्त नहीं हुये हैं, सम्मुख निम्ब का वृक्ष है, (यहां पर भी सौभाग्य से निम्ब वृक्ष विद्यमान है मंच पर, यह मंच पहले बारह वर्ष पूर्व, इसका निर्मण हुआ था यह स्वाभाविक यहां पर उत्पन्न हुये और इनकी सुरक्षा रखी गई कि इन पर किसी प्रकार का आघात न हो जाय।)

देखिये अभी तो सूर्य हैं बहुत दिन है, और आप भगवत् प्रसाद लीजिये। नैवेद्य का निर्माण हुआ, रसोई बनीं समर्पण हुआ, भोग लगा, उसमें तो समय लगा उसके पश्चात उनको भगवत् प्रसाद कराया, प्रसाद करने के बाद, जब अन्तिम आचमन लिया जल से लेने के बाद ज्योंही परिपूर्ण हो करके उठने के लिए खड़े हुये, हठात् देखते हैं, घोर अंधियारी रात्रि है। ब्रह्माजी को आश्चर्य हुआ कि एक क्षण बाद इतना परिवर्तन घोर अन्धकार हो रहा है। समाधिस्थ होकर चिन्तन किया यथार्थतः यह सुदर्शन चक्र राज ही के अवतार हैं तब आपने अपना वास्तविक रूप प्रकट किया कि मैं जगत्स्रष्टा ब्रह्मा हूँ, आपकी परीक्षा के निमित्त आया, आपने मेरा आतिथ्य किया, आश्रमधर्म का आपने बालअवस्था में निर्वाह किया, मैं परम आह्लादित हूँ और आज से आपका नाम, यद्यपि आपका नियमानन्द नाम है, किन्तु निम्ब वृक्ष में आपने ''अर्क'' माने सूर्य, नीम के वृक्ष में आपने सूर्य का दर्शन कराया इसलिए आगे जगत में निम्ब-अर्क माने निम्बार्क नाम से विख्यात होगे और साथ साथ निम्बार्क नाम से सम्प्रदाय का प्रर्वतन करेंगे ऐसा भाव व्यक्त करके ब्रह्माजी अन्तर ध्यान हुये। आगे चलकर देवर्षि प्रवर नारद जी ने आपको मंत्रोपदेश दिया। सनकादिक संसेव्य भगवान सर्वेश्वर विग्रह, यह चने की दाल जितने सूक्ष्म विग्रह हैं दक्षिणावर्ती चक्रान्कित हैं, दैनिक गो दुग्ध से वेद मंत्रों के द्वारा जिनका अभिषेक होता है, वे प्रभु उनको प्रदान किए और वह परम्परा से

अद्यावधि आचार्यपीठ में विराजमान हैं जो सहस्त्रो सहस्त्रो भवत्जन उनके दैनिक दर्शन करते हैं। आज यह वही दिन है, ये कार्तिक पूर्णिमा का वही पावन अवसर है सन्ध्या बेला का।

इस अवसर पर आपका अविर्भाव काल है और ये वही दिन पाँच हजार एक सौ वाँ वर्ष का समय आया तो हृदय में विचार हुआ कि इस प्रकार से एक विशाल समारोह हो, और इस सन्दर्भ में निम्बार्क भगवान के जयन्ती समारोह के सन्दर्भ में अखिल भारत वर्षीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन भी हो और इस भावना से ओतप्रोत हो करके हमने, भगवतभक्तों को आमन्त्रित किया, समिति का निर्धारण किया, चर्चायें हुई और निमन्त्रण पत्र प्रकाशित हुआ, और सर्वत्र हमारे जितने धर्माचार्य हैं, महामण्डलेश्वर हैं, शीर्षस्थ राजनेता हैं , और और जितने मूर्धन्य वरिष्ठ विद्वतजन हैं, सन्त, महात्मावृन्द हैं, हमारे तीनों अनी अखाड़ा के श्रीमहन्त हैं, हमारे चतु: सम्प्रदाय के श्रीमहन्त, और खालसाओं के श्रीमहन्त, सन्त महात्माओं को, सभी को, आमन्त्रित किया और समस्त भगवत्जन जो यहाँ उपस्थित हैं समस्त भगवत्जनों के पास ये वृतान्त अवगत कराया। और फिर हम जब जयपुर गये तो सोचा, विचार किया, अपने मानस में कि इतने बड़े विशाल आयोजन की कल्पना तो कर रहे हैं पर हम तो वैसे भी अस्वस्थ्य रहते हें अनुकूलता नहीं है शरीर की और वहां अरण्य क्षेत्र, जंगल का क्षेत्र है, कैसे इस कार्य का निर्वाह होगा, बड़ा कठिन है, किनका आश्रय लें, कोई न कोई अवलम्ब लें किन्हीं का बिना आश्रय के काम चलता नहीं, ''न एकं चक्रं परिभ्रमति'' एक चक्का की गाड़ी नहीं चलती। किनका आश्रय ले तो विचार हुआ यदि मातृ शक्ति का आश्रय लिया जाय, माता का आश्रय लिया जाय, तो वो सबसे बडा आश्रय होगा। स्मरण हुआ उन्तीस वर्ष पहले इसी स्थान पर हमारी राजमाता विजयाराजे सिधिंया उनका यहां पधारना हुआ था और उन्होंने आ करके इस मंच को सुशोभित किया था। उस समय का जो प्रवचन है आज भी यंत्रस्थ है आप कभी श्रवण करें। उन्होंने जो उद्गार अभिव्यक्त किए वो आज भी जब हम सुनते हैं तो इतने प्रभावित होते हैं और कभी कभी तो एकान्त में बैठके सुनते हैं तो नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगती है। आज उन्हीं के ये दिव्य स्वरूप और फिर यह तो वसुन्धरा का स्वरूप है - वसुन्धरा पूतवती च धन्या।

तो यहां इस संसार में कोई बाधायें उत्पन्न होती हैं, अन्तराय होते हैं विघ्न आते हैं और निशाचरों का प्रावल्य होता है, अत्याचार, अनाचार, दुर्विचार की अभिवृद्धि होती है। उस से स्वयं प्रभु के निकट समस्त देववृन्द और ये पृथ्वीमाता, गाय का स्वरूपधारण करके प्रभु के निवेदन करती हैं उस पृथ्वी का नाम वसुन्धरा हैं, उसे वसुधा भी कहते है। जब आप से प्रथम मिलन हुआ जयपुर में तो हमने कहा कि यह सौभाग्य की बात है राजस्थान की वसुन्धरा को वसुन्धरा प्राप्त हुई। राजस्थान की वसुन्धरा को वसुन्धरा मिली अब हमें किसी प्रकार का भय नहीं। तो हमने दूसरी बार जब आपसे चर्चा हुई और हमने यह सम्मेलन की आपके सामने भावना रखी और यह हमने कह दिया कि यह इस प्रकार का समायोजन है और सब परिस्थिति विचित्र है कोई अघटित घटना न घट जाय और जल का भी अभाव है, मार्ग भी समुचित नहीं ये सब अनेक परिस्थितियां हैं। अब हम तो जानते नहीं, अब आप जानें और आपका आचार्यपीठ जाने, यह सम्मेलन जाने हम तो निश्चिंत हैं, दर्शक के रूप में आनन्द लेंगे। और यही हुआ आपने समग्र व्यवस्था यहां की जो व्यवस्था आप देख रहे हैं ये समग्र समिति का तो सब है ही पर सब, किन्तु समग्र परिश्रम जो कुछ है जो भी कुछ निर्देशन है, जो भी कुछ व्यवस्था, समग्र व्यवस्था जो भी कुछ यहां सम्पादित हुई, वह सब आपके निर्देश पर, आपके संकेत पर और आपकी विभिन्न योजना पर है। आज हम परम गौरव का अनुभव कर रहे

हैं, परम आनन्द का अनुभव कर रहे हैं और उन अनन्त कोटिब्रह्माण्डाधिपतिक्षराक्षरातीत भगवान सर्वेश्वर श्याम सुन्दर, श्रीराधा माधव, राधासर्वेश्वर प्रभु चरणारविन्दों में मुर्हुः मुर्हुः अभ्यर्थना करते हैं आपकी समग्र श्री वृद्धि के लिए, आनन्द वृद्धि के लिए, आयु वृद्धि के लिए आप इसी प्रकार हम तो ये कहें कि जैसे आप राजस्थान में हैं और कहीं पूरे भारत के मन्त्री पद पर आप सुशोभित हों ये पूरे राष्ट्र के मंत्रि पद पर अधिष्ठित हो जाये ऐसी भावना रखते हुये यदि ऐसा हुआ तो यह और भी कितना आनन्द मिलेगा। सारे विश्व को आप एक अद्‌भुत सन्देश प्रदान करे, सारे विश्व का मंगल होगा। तो ऐसी इस भावना के साथ अब हम वाणी विराम लेते हुये समय की सीमा को हमें भी ध्यान रखना है। हम चाहेंगे कि अब महन्त जी महाराज मेवाड़ मण्डलेश्वर वो तो मेवाड़ की भूमि को सुशोभित कर रहे हैं और इस मंच को भी सुशोभित कर रहे हैं और हम सब को प्रेरित करके और फिर आपके साथ में देखिये सभी विभाग के हमारे मन्त्रिगण जो विराजमान रहे, न जाने किस किस प्रकार से पुनः पुनः पधार करके, आपके निर्देशानुसार और सारा संचालन किया है जिनके स्वरूप का वर्णन करने के लिए हमारे पास, हमारे सीमित शब्दकोष में कोई शब्द राशि नहीं है और ये सब सारे प्रसंग तो हमारे महन्त जी महाराज निर्देश करेंगे और अब हम अपने भावों को यहीं विराम देना उचित मानते हैं।

विधायक श्री भागीरथ जी चौधरी :-

मैं आपको बता दूँ सम्मलेन के सबन्ध में मुख्यमन्त्री से मैंने निवेदन किया विधान सभा में, उन्होंने बिल्कुल मुक्त दोनों हाथों से हमारे को सब कुछ दिया। यहाँ सड़कों का अभाव था, यहाँ पानी की व्यवस्था नहीं थी, यहाँ बिजली की व्यवस्था नहीं थी, इन्होंने एक मुस्त कह दिया, किसी तरह की कमी नहीं आयेगी और इन्होंने यहां तक कह दिया, वे एक मन्त्री को वहां लगा देंगे। मैं आपका बहुत बहुत आभार व्यक्त करना चाहता हूँ कि आज ऐसा धर्म सम्मेलन मुझे तो बड़ा सौभाग्य है, कि मेरे इस विधायक काल के अन्दर इस तरह का एक बहुत ही बड़ा सनातन धर्म सम्मेलन हुआ है। आज इस कलियुग के अन्दर, भौतिकवादी युग के अन्दर इस तरह का एक बहुत ही बड़ा सनातन धर्म सम्मेलन हुआ है। आज इस कलियुग के अन्दर, सारे मूल्य गिर रहे हैं ऐसी स्थिति में मैं बहुत बहुत श्री श्रीजी महाराज के चरणों में मैं वन्दन करना चाहता हूँ, नतमस्तक होकर इनको बहुत बहुत साधुवाद देना चाहुँगा इन्होंने आज इस तरह की बहुत ही भक्तिभाव और आज इस कलियुग के अन्दर हमारे सबको एक बहुत अच्छा मार्ग प्रेषित करने के लिए आपने बहुत ही एक शुभ अवसर दिया और मैं अब जब माँगने लगा तो दो बातें दो माँग और मैं मुख्यमन्त्री जी से माँगना चाहुँगा कि मुख्यमन्त्री जी एक तो हमारे जै जै श्री श्रीजी महाराज के पहले हमेशा यहां अंगरक्षक रहते थे, सिक्योरिटीगार्ड थी, दुर्भाग्य से अपनी सरकार आने के कुछ पहले काँग्रेस सरकार ने सिक्योरिटीगार्ड हटा ली और आपके पास वह फाइल है मेरा आपसे हाथ जोड़ कर निवेदन है कि आप सिक्योरिटीगार्ड इनको परमानेन्ट दिलाने की आप कृपा करिये। दूसरा मुख्यमन्त्री जी मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ **दूसरी मेरी माँग है कि इस सलेमाबाद का नाम ''निम्बार्क तीर्थ'' नगर रखा जाय,** ये मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ कि इससे हमारे को बहुत ही लाभ होगा और भगवान निम्बार्क के नाम से हम सब लाभान्वित होंगे, महाराज श्री ने तो यहां सब कुछ दिया सलेमाबाद गाँव को इस तीर्थ को निम्बार्क नगर को आपने सब कुछ दिया। आपके आर्शीवाद से यहां सेकेन्ड्री स्कूल, सीनियर सैकेन्ड्री स्कूल है उसके लिए भी मैं उनको बहुत बहुत प्रणाम करता हूँ।

श्रीमती वसुन्धरा राजे :- (मुख्यमंत्री राजस्थान)

आज के कार्यक्रम हेतु शब्द नहीं है कि मैं किस तरह से धन्यवाद दूँ सबको। आई तो थी भगवाननिम्बार्काचार्य के पाँच हजार एक सौ जयन्ती महोत्सव में अपनी पूजा अर्चना करने और सन्तगण और भक्तजनों के बीच आकर एक दफा प्रसन्नता पाने के लिए, आपके दर्शन करके, आपका आशीर्वाद पाने के लिए आई थी, आपने भरपूर दिया और महाराज श्री मैं बताना चाहुँगी कि कल रात को यह पाँच साढ़े पाँच बजे बिल्कुल राजस्थान के आखिरी गाँव शिप्रा नदी का जो एक संगम है उसके ऊपर हमारा हैलीकॉप्टर बिगड़ गया था, कल रात को चार घण्टे रास्ता करके हम लोग वापस झालावाड़ लौटें हैं। मैंने गुजरात पहुंचा वहाँ से टेलीफोन करके उनसे माँग की कि जो प्रोग्राम आज दिन का है मैं पूरा कर ही नहीं पाऊँगी अगर हमको हैलीकॉप्टर नहीं मिलता और रात भी बहुत देर हो गई थी। परन्तु गुजरात वालों ने देर से भेजा, परन्तु भेजा, हैलीकॉप्टर आया।

मैं जब वहां से निकली झालावाड़ से तो मैं यह प्रार्थना करके निकली कि महाराज श्री के यहां देर से नहीं पहुँचना चाहिये क्यों कि अब डर लगता है। तो बस इनहीं लोगों से डर लगता है जिस तरीके से माँ से डर लगता था उस तरीके से आप सबसे डर लगता है और मैं वहां जब घर से निकली मैंने कहा जिस तरीके ये हैलीकॉप्टर भी लेट हुआ है एक डेढ़ घण्टे जब लेट निकलोगे तो आधा आधा घण्टा जनता जोड़ ही देगी और मालुम नही कब पहुँचेगे फिर मैंने भगवान का नाम लिया और छोड़ दिया। मैंने कहा आप चाहते है तो किसी न किसी तरीके से पहुँचा ही दोगे। वहाँ से जब निकले महाराज जी मैं बता दूँ, आपके आज कार्तिक पूर्णिमा का यह बहुत सुन्दर दिन है, और मैं मानती हूँ कि प्रोग्राम एक के बाद एक होता गया। **पुष्कर के अन्दर हम पहुँचे तो पुष्कर का प्रोग्राम खत्म होने के बाद हमको यह खबर आई कि अभी हैलीकॉप्टर उड़ने वाला नहीं है क्यों कि आगे का परमीशन नहीं है। आधा घण्टा पुष्कर बैठे रहे फिर मैंने आपको याद किया, मैंने कहा आप चाहते हो तो पहुंच ही जायेंगे और अगर नहीं चाहते हो तो आप वहीं हमारा आना कन्सिल करवा देगे पर आपने चाहा इसलिए पांच मिनट बाद फोन आ गया कि आप निकल सकते हो। पाँच मिनट ठहरने के बाद और फिर हम वहां से निकलकर आप तक पहुंचे।** मैंने सोचा कि कार्तिक पूर्णिमा का यह बहुत सुन्दर दिवस है, इस सुन्दर दिवस के अन्दर देखो, कितने कितने काम हो गये, महाराज सब पूरे जनता के दर्शन हो गये, शिप्रानदी से होते हुये पुष्कर के अन्दर पुष्कर जी दर्शन हो गये जनता के, पुष्कर के, फिर सन्तों के और अब ये सब दर्शन करके मैं वापस जा रही हूँ आपका आशीर्वाद लेकर जा रही हूँ तो मैं तो सवासेर शेर बन गई हूँ। आप लोगों ने इतना आशीवीद दिया है कि बिल्कुल लग तो छोटी रही हूँ आपके सामने, परन्तु बहुत दूर तक पहुँचायेगा महाराज जी। यह एक डेढ़ साल पहले क्यों कि अब एक साल होने को आ रहा है एक साल पहले जब जनता ने इतना विश्वास और प्यार देकर एक महिला को राजस्थान की गद्दी के ऊपर बिठाया। पूजा में मैंने सबसे पूछा, मैंने कहा आपने यहां भेजा तो कुछ सोच के भेजा होगा ये आसान रास्ता नहीं है, और इसमें सबका आशीर्वाद जब तक नहीं होगा , जब तक सबका साथ नहीं होगा तो हम कुछ भी करने की कोशिश करें महाराज श्री ये तो होगा नहीं, और मैं बारबार जहां जाती हूँ जनता में, मैं यही कहती हूँ कि एक परिवार के रूप में हमने सबको समेटने की कोशिश की है। यह हमारे बड़े बुजुर्ग लोग, हमारे सन्त महात्मा, जो आशीर्वाद देते हैं जिनके बारे में

हमने वेद और ग्रन्थ में पढ़ा कि कोई भी काम, कोई भी राज्य चल नहीं सकता जब तक सन्त और महात्मा का पूरा आशीर्वाद न मिले तब तक कोई काम पूरा हो ही नहीं सकता। उस समय की बात तो यह थी कि बहुत पूजाअर्चना करनी पड़ती है तो कभी कुछ फल मिलता था। हठ योग करते थे और हजारों वर्ष तक तपस्या करते थे तब कुछ मिलता था। अब यह बात सही है कलियुग का जमाना है और कलियुग के जमाने में कहते हैं कि आप एक माला जप लो तो उसका भी फल मिल ही जाता है और बहुत जल्दी मिल जाता है। मैं तो इस शॉर्टकट के हिसाब से चल रही हूँ अगर आप लोगों के बीच में आ जाती हूँ और इतना बड़ा परिवार हमारे सामने है तो इस परिवार को खुश रखने को निमित्त, जब मेरे को निमित्त बनाया है उसका तो आप सक्षम बनाओंगे ही ताकि इसका काम हो सके। ये तो सेतु के हिसाब से आपके और इनके बीच का काम है आप करोगे हमको सक्षम, बना के इनकी सेवा में लगाओगे और मैं समझती हूँ यह परिवार इसलिए कभी पीछे नहीं हटेगा। आप लोगों ने मेरे सामने कुछ कुछ बातें रखीं पर महाराज उसका जवाब देने से पहले मैं सब लोगों को यहां कहना चाहुँगी कि ये यज्ञ, ये तपस्या, ये प्रवचन बार बार आप लोगो के सामने बोलना भी मेरे तो समझ में नहीं आता है ऐसे सूरज को दीया दिखाने वाली बात होती है सन्त महात्माओं के सामने ज्यादा बोलना भी ठीक नहीं समझती हूँ। आशीर्वाद जब इतना भरपूर मिल गया है तो चुपचाप से इसको बटोरके घर चले जाना चाहिये। परन्तु क्या होता है कि आप लोगों ने जब मंच बनाके मंच की प्रथा बनादी है तो मंच की प्रथा पर मैं समर्पित कर रही हूँ इनके चरणों में और मैं ये सबके सामने कहना चाहती हूँ कि हमारे आदरणींय विद्यानन्दजी महाराज ने जिसदिन हमने शपथ ली थी उस दिन महाराज जी को मैंने बुलाया था मैंने कहा महाराज यहां कोई आप में से एक होतो यही समझो सब है आप में से एक आके यहां हमको आर्शीवाद होगा तो मैं इसको पालन कर सकूँगी। महाराज श्री आये थे उस दिन मैं धन्यवाद इनको देना चाहती हूँ। उस दिन हमने कहा उनके सामने कहा और आपके सामने उससे दोहराती हूँ कि ये बहुत बड़ा आपने मौका हमें दिया, ये बार बार जहाँ जाती हूँ मैं सबको याद दिलाने की कोशिश करती हूँ कि ये बहुत बड़ा परिवार आपने हमको सौंपा है और यह आपकी अमानत से हमारी अमानत ये हमारे परिवार को पूरी तरह से सींचने उसको अपने पैरों पर खड़ा करने छत्तीस से छत्तीस कौम को गले से लगाने, सब मज़हब को इकट्ठा करके आगे बढ़ाने, ये सबसे बड़े राज्य को खुशहाल जिन्दगी लाने की, अगर हिम्मत मैंने की है तो यह आप लोगों के ऊपर की हैं और मैं मानती हूँ कि आपका आशीर्वाद और इनका प्यार साथ ये अगर मिल जाता है तो कोई बात ऐसी नहीं है जो राजस्थान की तरक्की को रोक सके।

मैं अभी ये धन्यवाद देना चाहती हूँ महाराज जी, आपने यह कहा कि हमने यह सब काम किया, आप क्यों शर्मिन्दा करवाते हो हमको। आप जब चाहते हो तो यह तो काम वैसे ही होने वाला है, ये तो अपने आप ही हुआ है जिस तरीके से आज ऐसी परिस्थिति बनीं कि मुझे तो लगा कि मैं नहीं पहुंच सकूंगी और पहुंच गई और इतने सारे लोगों से आप लोगों का आशीर्वाद लेके यहां से जाने का मौका मिला तो उसी तरीके से आपने यह तय कर लिया कि ऐसा सन्त समागम होगा, इतना बड़ा कार्यक्रम होगा तो हम कौन रोक सकते थे। यह तो होना ही था ये तो महाराज जी हमारे हौसले बढ़ा रहे हैं, यह हम जानते हैं, तो पीठ थपथपाके हमको कह रहे हैं और काम करो तो हम तो काम करने को तैयार हैं, महराज जी कृपा हुई इसलिए इतना बड़ा काम यहाँ हुआ

है। ऐसे काम आप लोग सब यहाँ मचं के ऊपर बैठे हो, मैं तो बार बार कहुँगी आप करते रहो जगह जगह के ऊपर यज्ञ, पूजा ये सब होते रहे तो वातावरण जैसे अभी लक्ष्मीनारायण जी ने कहा शुद्ध होता रहेगा और जैसे जैसे शुद्ध होता रहेगा, वैस वैसे हम लोग भी अन्दर से बदलते रहेंगे और जैसे हम बदलते रहेंगे वैसे राजस्थान को आगे फायदा होगा। विश्वास करके देखो। देखिये महाराज जी कितने लोग सन्त महात्मा के प्रवचनों के अन्दर आते हैं जयपुर के लोग, भीलवाड़ा के लोग, अभी मैं भीलवाड़ा गई थी, भीलवाड़ा के लोग आपके लोग आज जगह जगह देख लो वहाँ लोग बदल बदल के यह तय कर रहे हैं कि भगवान के चरणों में जाना किसी तरीके से, अब चाहे कैसे भी हो अपन भगवान के चरणों में चलें जायेंगे तो जिन्दगी वैसे भी बदल जायेगी। ये बहुत बड़ा काम किया है लक्ष्मीनारायण जी ने और उनके डिपार्टमेन्ट ने कि तुलसी का एक पौधा हर घर के अन्दर भेजा है, यहाँ महिलाओं की अपार संख्या है और महिलाओं की शक्ति महाराज जी देखली है। ये पाँच महिला आप लोगों को सम्भालेंगी और प्यार से ये परिवार को बढ़ायेगी। यहाँ आशीर्वाद लेके चलेंगी घबड़ाने की जरूरत नही है। महाराज जी ऐ और बात जरूर कहुँगी स्वामी विद्यानन्द जी महाराज ने अभी काँचीपीठ के बारे में बात रखी, मैं ये कहना चाहुँगी कि उनके साथ जो घटना घटित हुई है वो निश्चित रूप से हम सबके लिए और हम सब मानते हैं कि वो अत्यन्त ही दुर्भाग्यपूर्ण है। मैं इस सम्बन्ध में पूरी तरह से सन्त समुदाय के साथ हूँ और आपने जो बात कहीं है उसको ऊपर तक पहुँचाने की बात रखेंगे, शंकराचार्यजी के प्रति किये गये दुर्व्यवहार के लिए, मैं जिन लोगों ने व्यवहार किया है उनकी कड़ी निन्दा करती हूँ आप सबकी ओर से करती हूँ।

दूसरी बात कहीं है हमारे जगद्गुरू शंकराचार्य जी महाराज ने वृज क्षेत्र की बात रखी। मैं यह बताना **चाहूंगी कि वृज क्षेत्र के अन्दर जो भगवान कृष्ण ने वहां पर लीलायें की थीं उस क्षेत्र को अलग से रखकर के उसके पाँच मीटर के एक चक्कर बनाके उनके अन्दर खनन कार्य बन्द करने का निर्णय सन्तों की बैठक कर बहुत जल्दी निर्णय लिया जायेगा। यह पन्द्रह दिसम्बर को इनकी अन्तिम बैठक होने वाली है।** इस निर्णय से जो करोड़ो का लौस होगा और जो लोगों की नौकरी हटेगी, उसको ध्यान में रखते हुये, हमने जो जो पट्टे माने जो काम करने वाले हैं उसके ऊपर लेबर जो हैं उन लोगों के लिए कुछ और अलग से व्यवस्था हम लोग करवायेंगे और ये अन्तिम बैठक पन्द्रह दिसम्बर तक हम करके और यह निर्णय जरूर लेंगे क्यों कि मैं भी खुद वहाँ गई हूँ वो भी खुद वहाँ जाके हमारे वन मंत्री जी समय वहाँ बिताके आये हैं। वहां के सन्तों से उन्होंने लगातार बात की है उसको करने के बाद काँमा क्षेत्र को आगे बढ़ाने का वो परिक्रमा की बात भी हमारे ध्यान में है उसको आगे हम लोग बढ़ाते रहेंगे, ये हम आप लोग सबको विश्वास दिलाना चाहते हैं वो बात हमारी हो चुकी है। अब आप लोगो ने भी हौंसले बुलन्द कर दिये, महाराज जी ने आशीर्वाद दे दिये आप लोग सबको मैं बहुत बहुत धन्यवाद देना चाहती हूँ और मातायें बहिनो को बहुत बहुत धन्यवाद देना चाहुँगी।

❑❑❑

समापन सत्र

स्वागत भाषण:- श्री वंशी लालजी राठी

आज मेरे लिए दीपावली का दिन है। हमारे आद्य आचार्य निम्बार्क के इक्यावन सौ वर्ष की जयन्ती महोत्सव का शुभ समापन होने जा रहा है। सबसे पहले निम्बार्क पीठ के आचार्य ''श्रीजी'' महाराज जी के चरणों में मैं वन्दन करता हूँ। साथ ही साथ जगद्गुरु शंकराचार्यजी महाराज श्री वासुदेवानन्द जी को प्रणाम करता हूँ। मेरे अपने गुरु क्षमारामजी महाराज को बार बार प्रणाम करता हूँ। साथ ही साथ हमारे रामस्नेहीपीठ के पुरुषोत्तम दासजी महाराज का मैं वन्दन करता हूँ। सभी महामण्डलेश्वर, मण्डलेश्वर, सन्त और मेरी बहिनों और मेरे बन्धुओं मेरे भाइयो, और मेरे साथियों। आपने हम को इतने बड़े समारोह का स्वागत अध्यक्ष बना दिया ''जीरो से हीरा'' बना दिया। मैं राजस्थान का ही हूँ नागौर जिले का हूँ चैन्नई में पचास साल से रह रहा हूँ। और मुझे प्रभु की ऐसी कृपा है कि सभी सन्तों का आशीर्वाद मिला है। और तो और मैं क्या कहूँ सन्त समाज के शिरोमणि रामसुखदास जी महाराज के चरणों में मैं प्रणाम करते हुये, उनके पास मेरे को रहने का, चैन्नई में दो बार आठ आठ दिन का मौका मिला, साथ में महन्त जी महाराज भी थे।

इस महोत्सव में बीस तारीख से लगा करके सत्ताईस तारीख तक किसी का माथा भी नहीं दुखा, कोई विघ्न नहीं आया, आनन्द से सब भोजन किए और क्या भजन मण्डली भक्तों द्वारा पण्डाल में कीर्तन हुआ, रात के एक एक बजे तक। इसी मंच पर मानव धर्म सम्मेलन में महाराज श्री की कृपा से सारे सन्त यहां पधारे थे। जिसमें जैन भी थे मुसलमान भी थे सब तरह के लोग थे और सबकी बात एक थी कि मानव धर्म एक है अब मानव धर्म का पालन कैसे करना कि आये हुये को अपनाना, और अतिथि के रूप में उसको भगवान् मानना, और ईर्ष्या को घटा देना और सन्तों को बढ़ा देना, चाहे मुसलमान हो, चाहे हिन्दु हो, चाहे सिख हो, चाहे ईसाई हो सब हमारे हैं। दूसरा महाराज जी ने एक और सम्मेलन रखा वो था गोरक्षा सम्मेलन। वो ऐसा सम्मेलन मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि राजस्थान में चोरी-छिपे कुछ भी हो जाये परन्तु गायों का पालन पूरा होता है गाँव-गाँव में गोशाला है और कई गोशाला बहुत अच्छे तरीके से चल रही है। और उसी में हमारे ''जै जै'' ने एक किताब निकाली है गोरक्षा के बारे में उसको पढ़ो और उसको करो और मैं निवेदन करता हूँ आप समझ लो कि एक फैमिली में पाँच आदमी हैं एक गाय को जोड़, छै: हो गये। चार हजार का खर्चा है तो साढे सात सौ रूपये प्रति आया, आपकी आप सोचलो गाय को साढ़े सात सौ रूपये महिना हम दे रहे हैं तो वह दिन दूर नहीं कोई गाय के साथ अत्याचार नहीं होगा ये हमारे श्रीजी महाराज की आज्ञा हुई तब मंच से बोल रहा हूँ। शिक्षा सम्मेलन हुआ शिक्षा में बहुत नई नई बातें हमारे उपराष्ट्रपति भी कह गये कि शिक्षा बच्चों को पढ़ाना चाहिये। परन्तु एक बात मैंने मंच पर कही थी फिर दुबारा रिपीट करता हूँ कि बहिनों आदमी अपना कपडों का संस्कार नहीं भूला बहिनें नई नई तरह की ड्रैसे पहनती है मैं हाथजोड़ के प्रार्थना करता हूँ, अपने बच्चों को वही संस्कार दो जो

आप हम पहनावे में फर्क मत लाओं तो कोई आत्महत्या और कोई विवाह विछेद नही होगी। माताओं आपको अपनाना है शिक्षा के साथ यह मेरा निवेदन है पहनावा कि लिए। मुझे कोई भी आप आदमी एक भी बता दो कोई भी बहिन आकर कह दे कि कोई आदमी बिल्कुल नग्गा चल रहा हो। इसी तरह से दर्शन, वेदान्त, वैष्णव व निम्बार्क सम्मेलन भी हुआ, इसी तरह अपने विज्ञान के लिए भी बड़ी बड़ी बातें हुई। मैं आपको क्या बताउँ मैं तिहत्तर साल का हो गया, मैंने बड़े बड़े सम्मेलन देखे, मुख्य अतिथि हुआ और यहाँ ही नहीं अमेरिका भी गया परन्तु निम्बार्क पीठ के इस समारोह कोई मुकाबला नही। पुष्करराज के बराबर का तीर्थस्थान हो गया। इस तरीके की यहाँ बातें हुईं और इस तरीके से सब ज ने अपनी गांठे बाँध बाँध के लेके गये। सलेमाबाद के साथ निम्बार्कपीठ लगी हुई है। क्या मन में शान्ति, पचास हजार प्रतिदिन आने वाले आदमियों की आबादी से महाराज श्री कही विचलित नहीं हुये, वह ही अपना नियम, वो ही काम, कैसा चल रहा है ऐसी कृपा हुई कि सात दिन बहुत आनन्द पूर्वक उत्सव के साथ आज समापन होने जा रहा है और मेरे लिए आप सबके लिए दीपावली मनावें ऐसा दिन है। इसी आशा के साथ टाइम का ख्याल मैंने रखा नहीं, कुछ ज्यादा बोल गया क्षमा चाहता हूँ इसी आदर के साथ, सभी सन्त समाज एवं हमारे गुरुजन एवं श्रीजी महाराज का वन्दन करते हुये, प्रेम से बोलिये सर्वेश्वर भगवान् की जय।

खेड़ापा पीठाधीश्वर श्री पुरुषोत्तम जी महाराज : मुख्य अतिथि

संसार में एक बड़ी भारी उलझन की चीज होती है जैसा हम सद्ग्रन्थों से सुनते हैं, महापुरुषों के वचनों से सुनते हैं तो शिकायत यह रहती है प्रायः करके कि हमारा मन विषयों में फंस गया है और विषय हमारे मन में फंस गये अब इन दोनों को अलग अलग कैसे किया जा सके। मान लीजिये हम बीस रूपये किलो चीनी खरीद के लाये और बिना कीमत की मिट्टी में वो चीनी मिल गई, अब दोनों साथ मिल गया अब हम उस चीनी को कैसे निकालें, अलग कैसे करें यह समस्या होती है। विषय मन में और मन विषय में ऐसे उलझ जाते हैं इनको द्वैत दूर कैसे किया जाय? सबसे बड़ी तकलीफ की चीज है। हम सब को संसार में जब कोई उपाय नहीं मिलता है तभी हम लोग इस बात के समाधान के लिए महापुरुषों के सम्मुख जाते हैं, पर ध्यान रखना जहाँ हम महापुरुषों के सम्मुख जांय तो खाली झोली लेकरके जाये भरी हुई झोली न ले जांय। यदि भरी झोली होगी तो जो कोई भी मिलेगा ऊपर से ओखलों हो जायेगा, बाहर का बाहर गिर जायेगा और अन्दर जो है वो ही चीज बनी रहेगी और खाली झोली होगी तो जो भी चीज आयेगी उसमें समाती आयेगी।

''कर्मजिनागाचिक्कणा देवै शब्द उचाट। जन हरिया लागैं नहीं घड़े चौपड़े छाँट॥''

चिकने घड़े पर पानी की बूंद कितनी गिरोवो अन्दर नहीं बैठती, वो बाहर की बाहर गिर जाती है परन्तु वही अगर सूखा घड़ा है, नया घड़ा है तो उसपे पानी गिरते ही अन्दर सोख जायगा। तो इन बातों को हम महापुरुषों के पास में जाकर ग्रहण करें तो पहली बात तो हमें खाली झोली हो करके जाना चाहिये। ये जो विषय है। भागवत में आप लोग सुन चुके हैं। सनकादिक ऋषि को ब्रह्मा जी उत्तर नहीं दे पाये, उन्होंने भगवान् का चिन्तन किया तो उस समय सनकादिकों को जो अहंकार हो गया था कि हमने ऐसा प्रश्न पूछा अपने पिता को भी उत्तर नहीं आया, तब उन्होंने भगवान् का चिन्तन किया। भगवान् हंस का रूप धारण करके सामने प्रकट हो करके आये, और हंस रूप में प्रकट हो करके, जब आये तो आते ही इधर तो ब्रह्माजी खड़े हैं इधर सनकादिक ऋषि खड़े है

और बीच में हंस, उसे देख करके उन्होंने पूछा कि सनकादिक ने कि भगवान् आप कौन हैं जी, हम दो बातें कर रहे हैं आप बीच में आने वाले कौन? दो के बीच में अगर कोई आ जाता है वो मूर्ख कहलाता है दो बातें कर रहे हों और बीच में कोई भी अटक जाय, टपक जाय, मूर्ख की श्रेणी में, आप कौन? जब यह प्रश्न पूछा तो हंस ने वापास प्रश्न कर लिया कि आपने जो प्रश्न किया कैसे किया बताइये? यदि आप शरीर रूप में हमें पूछना चाहतें हैं कौन तो, जिन धातुओं का आपका गुण हैं वहीं ज्यों की त्यों हमारी है, और आत्मा रूप से पूछते हैं तो हमारी और आपकी आत्मा एक है। इसलिए कोई अन्तर नहीं तो जब दोनों प्रश्न आपने पूछे, दोनों प्रकार के पूछने में आपका प्रश्न ही बेकार है। स्वयं सनकादिक निरुत्तर हो गये उनका अहंकार खत्म हुआ, हमे अहंकार हुआ था कि हमने ब्रह्माजी से पूछा उनको उत्तर नहीं आया और एक हंस ने पक्षी ने, सवाल पूछा और एक हम ज्ञानी बड़े महापुरुष और जो कि पूर्वजों के पूर्वज ब्रह्माजी के मानसपुत्र प्रथम पुत्र उनको भी उत्तर नहीं आया। विनम्रता से उन्होंने जब कहा महाराज आप हमारे इस अहंकार को दूर करने के लिए पधारे हैं बड़ी अच्छी बात है लेकिन हमें जो सन्देह है कृपा करके सन्देह का निवारण कीजिये, हमारा सन्देह कैसे मिटे, दूर कैसे किया जाय, तो भगवान् ने सीधा सादा उपाय दिया, बताया कि भाई देखो यह तो बहुत सरल उपाय है, -''**मद्रूपउभयं त्यजेत**'' मेरा भाव करके तुम दोनों को छोड़ दो, विषय का भी त्याग कर दो और मन का भी त्याग कर दो। किसी विषय को मन से त्याग देना अपने आप पिण्ड छूट जायगा। या दोनों में मेरा रूप धारण कर दो, देख लो विषय भी मेरा रूप है और मन भी मेरा रूप है दोनो में मेरा रूप हो जायेगा तो आपका बंधन खत्म हो जायेगा और जिसे छोड़ना है उसको याद मत करो। सीधी सादी बात है छोड़ना है वो तो छोड़ दो अब याद करते रहोगे तो छूटेगा नहीं और नहीं तो झटपट छूट जायेगा।

इसी प्रकार सज्जनों! यदि हम किसी भी प्रकार का मन में विकार या ऐसे दुर्भाव ले करके कोई सत्संग, ज्ञान और तत्व की बात जानने के लिए जहाँ कहीं भी जायेंगे हमें कुछ उपलब्धता होगी नहीं और खाली झोली लेकर जायेंगे तो जरुर महापुरुष तो कृपा वर्षा ने वाले हैं। यह सारा इस प्रकार का आयोजन इतना लम्बा चौड़ा किया क्या खुद को कोई लाभ लेना था खुद को कुछ नहीं लेना देना है देना उनका स्वभाव और इसी कारण से उन्होंने ये सारा आयोजन किया अवश्य ही आप लोगों ने इससे बहुत कुछ लाभ प्राप्त किया होगा और उसका अब ज्यादा से ज्यादा लाभ जीवन में लेते रहें, उसका अनुभव करते रहें, उसके द्वारा सन्मार्ग प्राप्त करके अपने जीवन को परम तत्व परमात्मा की तरफ लगाते रहे मंगल कामना करते हुये अपनी वाणी को विराम देना चाहते है। जय श्री राधे..... ॥

महन्त श्री मोहन शरण जी : बाईजी राज-की कुञ्ज, उदयपुर

आज आप ये धराधाम पर पुष्कर क्षेत्र की इस भूमि पर आद्याचार्य भगवान् निम्बार्क के इक्यावन सौ वें जयन्ती उत्सव है आज यह उत्सव समापन में प्रवेश कर रहा है। इक्यावन सौ प्रारम्भ हो रही है और अभी तो ये अगले वर्ष तक ये कड़ी चलेगी एक वर्ष तक। सर्वेश्वर भगवान् की बड़ी अपार कृपा है कि हम सभी वैष्णव धर्मावलिम्बयों के लिए जो आज तक हम इस सभा का सन्त महात्माओं के सान्निध्य का, आचार्यों के सान्निध्य का अब तक आनन्द उठातें रहे। झोली भरते रहे, गाँठे भरते रहे, ये गाँठे हमारी बदस्तूर बंधी रहें, कहीं ऐसा न हो ये ढ़ीली होकर यहीं खुल के रह जायं। महापुरुषों के हृदय से निकाले हुये उद्गार एक कमेन्ट बन जाते हैं, एक थीसिस बन जाते है। जैसी कि परम्परा के अनुसार आद्याचार्य परम्परा में, सतयुग की परम्परा में

हंस भगवान्, सनकादिक तत्पश्चात श्री नारद भगवान् और द्वापर अन्त में भगवान् निम्बार्क यानी इस युग के लिए इस युग में एक आईडियोलॉजी देने के लिए, एक अवतरित स्वरूप का प्राकट्य हुआ। कलयुग में आज के जिस युग में हम चल रहे हैं ऐसे आचार्यों का महापुरुषों का हमें सान्निध्य मिलता रहे। जैसा अभी आप फरमा रहे थे कि आज हमारी ये स्थिति, वो स्थिति बन गई हैं इसकी मूल जड़ तो हम ही सब है, बहुत पैसे वाले जो लोग है समाज के लिए बहुत कुछ देते हैं और बहुत कुछ बिगाड़ भी देते हैं। आप गऊशाला भी बहुत खोलते हैं और आप कभी अलकबीर कतलखाना भी खोल देते है, बहुत सत्संग की भी बातें करते हैं पर घर आपका ही टेलीविजन रात के एक बजे तक चलता रहता है। और वो कुछ उसमें आता रहता है जो आप तो नहीं देख पाते पर वो देख लेते हैं जिन्हें नहीं जरुरत होती है और फिर उससे आप की ही जेनरेशन।

आज हमे अपने आप से ही खतरा है किसी दूसरे से नहीं है अपने आप से बड़ा खतरा है। इतने बड़े आयोजन महापुरुषों के सान्निध्य में जो होते हैं वह हमारी नई पीढ़ी को एक रोशनी देने के लिए होते हैं। नई पीढ़ी तो जभी बनेगी जब हम पहिले खुद बनेंगे तब जगत बनेगा। यह जीभ है बहुत छोटी हैं उसे चाहिये जो श्री राम ही कहे तो बहुत बढ़िया है और यह जीभ कहीं हाथ बन जाय लम्बी तो फिर जीभ कितना ही भाषण देती रहे हमारी वही हालत हो जाती है जो नेताओं की होती है।

आचार्यों की परम्परा हम कान से सुनकर हृदय में वैसे ही ले जांय जैसे कि हम कान से मंत्र सुन करके गुरुमंत्र जिसे कहते हैं, जैसे कि कोई सम्पत्ति हम हृदय में छुपाकर संभाल कर रखें। यदि खेत में डाला हुआ बीज भी ढंग से नहीं छिपे तो उसे चिड़िया चुग जाती हैं वो कोई काम नहीं आता हैं इसकी बहुत जरुरत है। आप भी चले जायेगे, आप भी चले जायेंगे हम भी चले जायेगे और इस देश का जो बोझ है नई नीढ़ी पर होगा और नई पीढ़ी हमारी तभी संभलेगी। जब हम संभलेंगे। इसलिए बहुत जरुरी है आज हम आयें हैं, दोनों हाथों से झोली पसार करके उस झोली की गाँठ में भगवान् सर्वेश्वर के सान्निध्य में आ करके कृपा का प्रसाद बड़े आराम से खूब बांधे। यह जो जुवान हैं, वाणी है, इसे हम अन्दर की तरफ जाकरके कृपा का प्रसाद बड़े आराम से खूब बाँध करके साथ लेकर जांय।

फिर कृपा करें यह तो बड़ी आलौकिक भूमि है भगवान् निम्बार्क दक्षिण भारत की परम्परा भक्ति परम्परा से चल करके भगवान् निम्बार्क की परम्परा व्रज में रही निम्बग्राम में। कालान्तरण में परम्परा से चल रही जहाँ जहाँ समय रहा वहाँ वहाँ पर आचार्य परम्परा विराजती रही और कृतार्थ करती रही। भगवान् केशव काश्मीरी भट्टाचार्य प्रभु और पूर्व पूर्व महापुरुष जहाँ जहाँ विराजे वहाँ वहाँ की जब उनकी वाणियाँ, जब उनके रचित, उनके हृदय के उद्गार पढ़ते हैं वहाँ वहाँ विराजे। कालान्तर में भगवान् परशुराम देवाचार्य जी महाराज यहां विराजे। यह जंगली क्षेत्र ''परशुराम कियो पार्षद'' और हमारा यह जो क्षेत्र है जंगल क्षेत्र इसे पार्षद क्षेत्र कहा, किनके द्वारा महापुरुषों के द्वारा यह पार्षद बना दिया। ऐसे ही बार बार कृपा करें ऐसे ही इस तरह के कार्यक्रम होते रहें, ताकि हमारे तन और मन को आध्यात्मिक बल मिलता रहे, यदि ये बल नहीं मिलता जिनकी सोच, जिनकी आत्मा मरी हुई होती है **''देअर सोल सो डैड दे हैब नॉट स्ट्रोन्गली विल पावर इन स्पीचुअली''** सर वाल्टर स्कॉर्ट कहते हें कि जिसकी आत्मा मर जाती है जिसकी आत्मा में आध्यात्मिकता नहीं बंधी हुई होती है। तो इस आध्यात्मिकता के बिना, इस आध्यात्मिकता के बिन हमारी जो व्यवस्था है सनातन की जो इतनी सुन्दर है ये इन आचार्यों के द्वारा ही, आध्यात्मिकता हम में जिन्दा है और यह ही आध्यात्मिकता हमें बहुत आगे

ले जायेगी। बार बार प्रभु ऐसी कृपा बनाये रखें यह आचार्य महाप्रभु तो इतनी कृपा करते ही हैं। और आप सोचे मेरे कहने की कोई बात नहीं मेरे जो साथी हैं, मेरे से जो बड़े बुजुर्ग हैं, सन्त है, महन्त हैं, वो भी समाज को ऐसी नई से नई दिशा दें। हर साधु अपने लिए अपने क्षेत्र के लिए, एक गाँव, एक मोहल्ला, एक परिवार भी संभालें तो हमारे देश में जहां पर भी हम देखेंगे एक ऐसी व्यवस्था जम जायगी कि वहाँ पर हम सतयुग ही नहीं गोपाल कृष्ण का युग हमारे बीच में होगा। घर घर में रस बरसेगा और हमें फिर यह कहना नहीं पड़ेगा। अध्यक्ष महोदय की तरह हमारी बहिनें ऐसे कपड़े पहिने, नहीं कहना पड़ेगा। हमारी बहिनें ऐसे कपड़े पहिने हमारे भाई ऐसे रहें, यह बात जब हमारे हृदय में हमारी, जो गुडविल है, आध्यात्मिक रूप में इतनी डूबेगी तो हमारी स्थिति वैसी ही बन जायगी। समय तो आज बहुत कम है पहले ही बहुत उन्हें प्रसाद मिला है। यहीं है मेरी तो प्रार्थना मेरे महन्त, सन्त, महात्मा, जो मेरे पूज्यगण हैं, सब महाराज श्री की तरह ऐसे ही अगुवाई में एक से एक ऐसे ही हम कार्यक्रम करते रहें तो हमारे बीच में ऐसे अध्यात्म को इतना सम्बल मिले कि हमारे रोम रोम से द्वापर के गोपाल कृष्ण का सा, रासलीला का सा रस, लीला का सा स्वप्न पूर्ण हो, शान्ति।

डा. वृदावन बिहारी दास, महन्त, काठियास्थान, कलकत्ता :-

एक राजा का सम्मेलन था उनका भी जन्म जयन्ती सम्मेलन था। राजा ने कहा था कि मेरे इस जन्म जयन्ती के अवसर पर एक मेला लगना हैं। उस मेले में बहुत सारे चीज रहेंगे उनमें से किसी को कुछ लेना है तो कोई एक ही चीज ले सकते है। सब कोई आया तो राजा के सुन्दर बाग थे। उस बाग में ही समस्त सम्मेलन लगा हुआ था और समस्त सामान यहाँ उपस्थित थे। कोई जो है किराने का सामान कोई यन्त्र, जो वाद्य यन्त्र है उनके सामान बिक रहे थे कोई कपड़ा-उपड़ा सब कुछ रखे हुये थे। महाराज ने कहा जिसको जैसी इच्छा, एक एक सामान ले जाओं। कोई आया तो वाद्ययन्त्र लिया उसने हारमोनियम लिया, तबला की इच्छा भी हुई बोला तो राजा ने एक ही चीज लेने की कहा तो तबला नहीं ले सकते हैं, अत: मन में दु:ख हो गया। किसी को कपड़ा लेना था तो उसके साथ उत्तरीय को भी लेने की इच्छा थी तो उत्तरीय नहीं ले सका। वस्त्र मिला तो उत्तरीय नही, उत्तरीय मिला तो वस्त्र नहीं और किसी को कुछ लेना था तो एक ही चीज ले गये सब असंतुष्ट थे। एक माता थी वृद्ध माता वो गई तो कहा कि कहाँ से लौटे रहे हो, बोले वो राजा का जन्म दिन जयन्ती है, वहाँ बहुत बड़ा मेला लगा हुआ है और राज ने सबको बोला है कि कोई कैसा भी एक ही सामान ले जा सकते हो। बुढ़िया कहती है अगर मैं जाऊँ तो मुझे भी तो एक ही सामान लेना पड़ेगा तुम लोग तो कोई संतुष्ट नहीं हो फिर मैं क्या लूँ ठीक है तो मैंने सोचा कि मैं जाऊँगी जरुर। उनके बाग में जा करके उनके घर के पास पहुंच गई। राजा के घर पहुंच करके दरवाजा ठोक रही है? राजा साहब है कि नहीं उन्होंने तो जन्म जयन्ती में किसी एक चीज को लेने को कहा है पर सब असन्तुष्ट हैं। मैं तो एक ही चीज लुंगी, मैं तो उनको चाहती हूँ कि वे आवे मैं भेट करूं उनके साथ। दरवाजा बहुत ठोंकने के बाद वहां का जो दरवान था उनको बार बार रोका देखती नहीं, फिर भी वह बजाती है। ऐसे समय में राजा बाहर आकर बोलते हैं तुम्हें क्या चाहिये? एक ही चीज तो हम लेने के लिए कहा, बगीचा में सब सजा हुआ है तुम कुछ भी ले सकती। वह बोली नहीं, हम तो आपको चाहते हैं आपको ले करके लौटेंगे। मैं भी इस सनातन धर्म सम्मेलन में आया जहां बहुतसी चीजें प्रस्तुत हुई हैं बहुत चीज का मेला लगा हुआ है मेले में बहुत हैं मैं तो आचार्य श्री श्रीजी महाराज के विचारो को साथ में ले कर के विदा होना चाहता हूँ।

श्री श्याम सुन्दर जी बेरीवाल :-

अतन्त श्री विभूषित अखिल भारतीय श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज, जगद्गुरु ज्यातिष्पीठाधीश्वर श्री वासुदेवानन्द जी महाराज, क्षमा राम जी महाराज, पुरुषोत्तम जी महाराज युवराज श्री श्यामशरण जी महाराज, तथा अन्य मण्डलेश्वर, महामण्डलेश्वर, श्रीमहन्त, महन्त, श्रोतागण आज का यह उत्सव वास्तव में विदाई का उत्सव है। इतना सुन्दर आयोजन जीवन में देखने को मिलेगा हम ने सोचा भी नहीं था। स्पष्ट मैंने देखा कि महाराज श्री कितने समर्थ हैं। मैंने परसों महाराज जी से पूछा कि इनती पब्लिक इस अरण्य प्रदेश में, जंगल प्रदेश में, महाराज जी कहां से आ गई। कोई शहर होता तो देखा जाता। महाराज श्री मुस्कुरा दिये कि शहर में शायद यह पब्लिक नहीं आती। रामायण में आता हैं रामविवाह के समय सारे देवी देवता वगैरा जनसाधारण के रूप में आ गये थे, कुछ ऐसा ही प्रतीत होता था। इतना विराट् पण्डाल खचाखच भरा हुआ था और जितना यहां उससे चार गुना ज्यादा बाहर सड़कों पर, ऐसा आयोजन ऐसी कृपा और किसी को कुछ भी नहीं हुआ। जैसे मेरे स्वागताध्यक्ष ने बताया, किसी को कोई तकलीफ नहीं थी, महाराज श्री अति समर्थ हैं मेरे पास तो बहुत से उदाहरण हैं, अध्यक्ष कुछ नहीं, क्या हैं। यह तो जैसे भगवान् श्री राम ने वानर सेना को सम्मान दिया, राक्षस तो पहले भी थे वानर कोई कुछ नहीं कर सका, लेकिन भगवान् श्री पुरुषोत्तम राम के अधीन हो कर सारे राक्षसों को मार भगाया। हम लोग तो कुछ भी नहीं हैं, कार्यकर्ताओं को खाली सम्मान देने के लिए महाराज श्री ने यह कार्य सौप दिया अन्यथा वह सर्व समर्थ हैं इनकी समर्थता हम बहुत जगह देख चुके हैं। इतना समय नहीं है नहीं तो हम आपको बताते। हृदय अति प्रफुल्लित है। महाराज श्री से अनुरोध है कि हम अपने कर्मों से जहाँ भी जाये जिस योनि में भी जाये, कोटि मन्मथ सुन्दर श्री राधा महारानी एवं श्री श्याम सुन्दर की सेवा उपासना, भजन एवं उनकी युगल छवि के दर्शन, **''मेरे नैनन में छिनछिन बसो''** इन्ही शब्दों के साथ मैं नमन करता हूँ।

ठाकुर उम्मेदसिंह धोनी :-

मैं निवेदन करनौं चाहूँ हूँ आचार्य श्री की म्हारे माथे बहुत बड़ी कृपा है। मैं जद भी अठे ई तीर्थ में हाजिर हियो कोई भी कार्यक्रम म पूज्य श्रीजी के मुखारविन्द सो हमेशा योही आदेश रिह्यों कि उम्मेद सिंह कुछ बोल। मैं निवेदन करनौं चाहूँ मैंने विशेष कोई अर्ज नहीं करनौं है केवले मूँ राजस्थानी कौ कवि हूँ, एक दो दोहा अर्ज कर और म्हारी वाणी ने विराम देउ। मैं कूछ साहित्य कौ सृजन कियौ है, श्रीजी के अशीर्वाद और बीकी म्हारी किताब छपी है ''एतिहासिक गढ़ चित्तौड़ दूसरी किताब जो म्हारे बुढ़ापा के अनुसार'' नीति शतक क माथे लिखी ''उमाशतक'' ई दोन्यूँ किताबाँ मैं श्रीजी महाराज की सेवा में आज प्रात: कालीन दर्शन के समय नजर की दीं, लेकिन वा वक्त भीड़ बहुत ही, मैं कुछ अर्ज नहीं कर सक्यौं, श्रीजी कौ मुखारविन्द कौ हुकम है कि उम्मेद सिंह कुछ बोले तो मैं दो देाहा निवेदन कर स्थान ग्रहण करूं।

आचार्य श्रीजी आपही निम्बारक रा रूप, जगहित सलेमाबाद में बिराज्या वृज का भूप।

उमा शतक: आपरौ जानूँ न कविता टेव, पोथी नजाराँ श्रीजी चरण आशीषा गुरुदेव।

श्री क्षमारामजी महाराज :-

कई बार यह मन होता था कि कोलायत् जी तीर्थ और पुष्कर का तीर्थ दोनों एक साथ कैसे किया जाय, क्योंकि जो कोलायत जी में मेला लगता है वही समय पुष्कर जी में भी लगता है, परन्तु कोई ऐसा सुयोग मिला नहीं, परन्तु श्रीजी महाराज के आदेश निम्बार्काचार्य श्रीजी महाराज के आदेश ने, उनकी आत्मीयता ने, उनके सौहार्द ने, और उनके कृपापूर्ण व्यवहार ने, उन सुमधुरमुस्कान ने औरआत्मीयता से ओतप्रोत हृदय ने यहां हमको खींच लिया और आज वह सपना साकार हो गया कि कोलायत जी का तीर्थ और ये निम्बार्क तीर्थ जो पुष्कर में आता है एक साथ पूरा हो गया। इस समय में आने के बाद बहुत सी बातों की जानकारी मिली वैसे निमन्त्रण पत्र से भी जानकारी थी परन्तु यहाँ अभी गतिविधिया सुनीं हैं उससे हमारा हृदय बहुत ही प्रसन्न हुआ और होने की बात ही थी कि श्री श्रीजी महाराज के नेतृत्व में जिस प्रकार से आयोजन हुआ है हम लोग यही चाहते हैं कि इस राष्ट्र के अन्दर ऐसी आध्यात्मिक की गंगा बहती रहे। और हम लोग अपने मानव जीवन की तरफ, सफलता की तरफ, विचार करें जिसमें शास्त्रों ने बहुत खुले रूप से कहा है **''लब्ध्वा सुदुर्लभमिदम् बहुसम्भवान्ते मानुष्यमर्थदमनित्यमपीह धीरः। नूनं यतेत नपतेदनुमृत्युयावत् निः शेष''** कल्याण के लिए मनुष्य को बहुत जल्दी प्रयत्न करना चाहिये समय बहुत थोड़ा है।

हमारे वन्दनीय शंकराचार्य जी महाराज नानाप्रकार के मिथ्या पराधों से जेलखाने में बन्द किए जाते हैं और उस दिन बन्द किए गये जिसदिन दीपावली का दिन था। दीपावली का दिन हिन्दुओं का सबसे श्रेष्ठ पर्व और शंकराचार्यपीठ, श्रीजी महाराज का पीठ यह हमारे सर्वोपरिपीठ और उनके ऊपर किस प्रकार से कीचड़ उछाल उछाल करके, हमारी भावनाओं को भञ्जित किया जा रहा है, तोड़ा जा रहा है खुलेआम उनके साथ होली खेली जा रही है यह हमारे लिए बहुत चिन्तनींय विषय है।

हमारे इस गो प्रधान राष्ट्र में गायों का जिस प्रकार से कत्ल हो रहा है यह भी हमारे लिए बहुत विचारणीय विषय है। एक वक्ता ने बात बहुत ठीक कही है कि यदि हम एक एक गाय भी पालेंगे तो सरकार को कोई गाय काटने के लिए मौका भी न मिलेगा। हम लोगों को चाहिये, हम हिन्दू यदि गाय की रक्षा के लिए आगे आये और केवल गोशालाओं के भरोसे न रखें, एक परिवार एक गाय रख लेगा तो हमारी गायों की रक्षा हो जायगी और यह गोहत्या का प्रश्न सदा के लिए हमारे यहाँ से समाप्त हो जायेगा। इस देश पर काला जो कलंक लगा है जो स्वतन्त्रता के पहले हमारे नेता लोग कहते थे कि गोहत्या बन्द की जायेगी हम पहले कलम से यह काम करेंगे वह सब जो ऐसा वायदा कर करके चलेगये जो नरक के अन्दर पड़े हुये सड़ रह है वे नेता जो लोग भी उस नरक से उबर जायेंगे और हमारी आने वाली पीढ़ी हमको बहुत साधुवाद कहेगी। भाई यह गायों का पालन हुआ एक गाय पालना किसी के लिए कोई बड़ी बात नहीं है और एक महानुभव के यहां क्रान्तिकारी विचार सुनने को मिले बडी अच्छी अच्छी बातें कहीं, हमको केवल नारेबाजी में और केवल प्रदर्शनबाजी में नहीं रहना है। हमको बहुत गहराई से वास्तविकता के तह में जाना है और यह देखना है कि इस धर्म प्राण देश के अन्दर हमारे धर्म के साथ कैसा खुलेआम अत्याचार हो रहा है और उस अत्याचार से हम कैसे बच सकते हैं।

निम्बार्क तीर्थ आने का यह तीसरा मौका मिला है। पिछले साल जब महाराज श्री के दर्शन करने के लिए आया था तो महाराजश्री का एक व्यथित हृदय इस बात

के लिए प्रश्न कर रहा था आखिर रामजन्म भूमि का क्या होगा? अब महाराज श्री के सामने हम बालक है लेकिन महाराज श्री का व्यथित हृदय जब इस प्रकार की बात कहने लगा तो हमारे मन में इस बात की बड़ी उत्साह की लहर जगीं कि आज हमारे ऊपर जिनका हाथ है उनके हृदय में इस राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं की एक वेदना है। इन महापुरुषों की भावना भगवान् स्वीकार करेगे सरकार व जनता तक जरुर पहुंचेंगी ओर एक दिन हिन्दू समाज का यह सारा का सरा कलंक दूर हो जायगा। हम लोग सन्त समाज से भी यही प्रार्थना करते हैं कि सन्त समाज, समाज को आध्यात्मिक जागरण के लिए एक ऐसा आदर्श जीवन प्रस्तुत करें कि लोग संतो की वाणी का आदर करें आरै संतों के बताये हुये जो मार्ग है उस मार्ग के अनुसार चलकर अपना आत्म कल्याण करे क्योकि जीवन का कोई भरोसा नहीं हैं और इस भारत वर्ष में जो जन्म लेना है वह आत्म कल्याण के लिए ही हुआ है। इस राष्ट्र का चिन्तन यह आत्म कल्याण का अंग है हमारे संयोजक महोदय उदयपुर के महन्त श्री मुरली मनोहरशरणजी महाराज जिनके साथ बहुत पुराना परिचय है उन्होंने अभी यहां कहा कि हमारे परम आत्मीय, हमको आत्मीय कहा यह तो उनका हृदय है, विशाल हृदय, वास्तव मे मैं बहुत छोटा था। मुरली मनोहर शरणजी महाराज ने भी हमारे खेड़ापापीठ के आचार्य श्री से पदक लेने की बात कहीं तो हम उस रूप से घूम करके बता दें। हमारी सत्रह अट्ठारह वर्ष की अवस्था थी और उदयपुर में हम लोग संस्कृत कॉलेज में पढ़ते थे। तब हम प्रतियोगिता में गये थे तो आपने जिस प्यार और स्नेह से हमारे पीठ का, हमारे गुरु महाराज का परिचय प्राप्त किया था क्यों कि उस दिन रात्रि के अन्दर जहाँ हमको पहुंचना था वहाँ हम नहीं पहुंच पाये और हम रास्ता घूम गये थे। इन्होंने हमको अपने आश्रम में रखा और जो आत्मीयता हमको प्रदान की वह आत्मीयता आज उत्तरोतर बढ़ती जा रही है। महाराज श्री जिस प्रकार से सौहार्द से हमारे साथ प्रेम रखते हैं स्नेह रखते हैं यह आपका बडप्पन हे। इस निम्बार्क तीर्थ में आकर हमको ऐसा नहीं लगा कि हम कोई यहां अतिथि है, या हम इस कार्यक्रम के कोई अध्यक्ष हैं या हम कोई और कुछ हैं। हम हमारे घर में आये हैं और हमारे ही घर का हमने काम किया है। हम ये चाहते हैं कि हमारा यह घर सदा फलता फूलता रहे, और इस घर से समस्त मानव जाति का कल्याण होता रहे, यही हमारी हार्दिक अभिलाषा है। नारायण॥

श्री हरिप्रसाद जी जोशी :- अहमदाबाद

विदेश जाने के लिए पासपोर्ट चाहिये। प्लेन की या स्टीमर की टिकट चाहिये, वहाँ कोई पहिचान चाहिये तब व्यक्ति विदेश जा सकता है। लेकिन कोई विदेशमें जाने वाले व्यक्ति के साथ मिठाई का वॉक्स हो और उस मिठाई के बॉक्स में कोई चीटीं चढ जाये तो बिना पासपोर्ट, बिना वीजा, बिना टिकट वह विदेश पहुंच जाती है, यही स्थिति इस हरिप्रसाद की है, कोई योग्यता नहीं है। श्रीजी महाराज की कृपारूपी मिठाई के साथ यहां मंच पर आ चुका हूँ। बस एक ही बात मुझे कहनी है कि एक मित्र अपने मित्र को आग के शोले पर चलकर भी तुमसे मिलने आ सकता हूँ, चलती तलवारों के बीच भी तुम से मिलने आ सकता हूँ, पत्र लिखता है कि मित्र मैं तुझसे मिलना चाहता हूँ चाहे प्रलय का बाढ़ का ताण्डव हो रहा हो तो भी मैं तुझसे मिलने आ सकता हूँ। मैं तुम्हें बहुत चाहता हूँ। ऐसा पत्र लिखा और पत्र के अन्त में खास बात लिखी की मित्र एक बात याद रखना अगले सण्डे को यदि वारिश नहीं होगी तो जरुर मिलने आऊंगा। बस मुझे यही बात आपको प्रार्थना करनी है

मंचस्थ महापुरुषों के लिए मैं कुछ नहीं कहुंगा, कहने लायक नहीं हूँ। आप सबको हम सब जो भगवान्

श्रीनिम्बार्काचार्य के स्वरूप, हमारे गुरुदेव भगवान् श्री श्रीजी महाराज के अनुयायी हैं उनसे, बस यही बात कहनी है, हमको जब तकलीफ होती है जब डॉक्टर के पास जाते है। बीमारी होती है डॉक्टर दवा लिख देता है और उस लिखे हुये कागज को जेब में डालने से बुखार नहीं उतरता है मेडीकल स्टोर में जाकर दवा लेनी पड़ती, दवाकी मात्रा व समय का भी पालन करना पड़ता है। ग्रामीण व्यक्ति मेडीकल हॉस्पीटल में भर्ती हुआ, उसको ग्लूकोस की बोतल चढ़ाई जा रही थी। अपनी घरवाली को बोलता है यह कि देखकोई डॉक्टर नर्स तो नहीं है, बोले नहीं है। उतार बोतल यह बूँद बूँद से कब पूरा होगा, उतारी बोतल पी गया। उससे रोग नहीं मिटता इसलिए मैं सबसे करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि हमारे धनवान लोगों ने धन दकेर, श्रमिकों ने श्रम देकर, शासन प्रशासन ने सहयोग देकर इतना बड़ा जो आयोजन किया है गुरुदेव की कृपा से वो सफल होगा ही, हुआ ही है। लेकिन उसको मूल रूप में हमें सफल यह करना है कि जिन निम्बार्क भगवान् की आज ये हम जयन्ती मना रहे है। और हमारे गुरुदेव भगवान् जो हमारे सम्मुख उपस्थित है उन निम्बार्क भगवान् और हमारे सन्तजनों के कहे हुये शब्दों को हमें जीवन में उतारने का प्रयास करना है। लोग कहते है कि खेत अगर अच्छा हो तो बीज उगता हैं मैं तो यह कहता हूँ कुशल किसना खेत को भी बराबर कर देता है तो हम अगर बराबर नहीं भी है तो हम श्री चरणों में प्रार्थना करते हैं, हे गुरुदेव आप ऐसी कृपा करिये इस क्षेत्र को बराबर बना दीजिये ताकि इससे भक्ति और योग का विज्ञान का पौधा उदय हो।

श्री सत्यनारायण जी राठी :-

परमपूज्य आचार्य जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज के चरणों में प्रणाम करता हूँ जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी महाराज के श्री चरणों में प्रणाम करता हूँ मंच पर उपस्थित सन्त महात्मा महामण्डलेश्वर, मण्डलेश्वर, मेरे गुरु भाई और श्रद्धालु जनता भाई बहिनों! सात दिन के अथक गंगा के प्रवाह को आज विराम सा लग रहा हैं मैं जब आपसे बात कर रहा हूँ तो मन में कुछ कसक है जो सात दिन तक उत्साह था आज इस उत्साह को देखकर मन में आनन्द से थे जहाँ हमारे गुरु की कृपा थी जहाँ हमारे सर्वेश्वर प्रभु की कृपा थी, जहाँ हमारे निम्बार्क भगवान् की कृपा थी और इस सबका इतना घनघोर आनन्द हम ले रहे थे कि एक चुटकी में ये सात दिन निकल गये हमें पता ही न लगा। लेकिन मन के कुछ भाव ऐसे होते हैं जब वो सात दिन की परक्रिमा देखी, उसके पहले की कार्यावाही देखी, तो मन में आता है, जिन भाइयों ने, जिन्होंने इस कार्य के लिए प्रेरणा दी सर्वप्रथम तो आज ऐसे व्यक्ति को याद कर रहा हूँ जिनकी प्रेरणा से यह इतना विशाल, इतना भव्य जो आयोजन हुआ हमारे ''जै जै'' के सम्मुख में पुरुषोत्तम जी भुजवाले, वह आज इस दुनियां में नहीं है, लेकिन जहां भी होगें, अत्यन्त प्रसन्न होगे भगवान् सर्वेश्वर प्रभु की कृपा में होंगे, तो आज इस आनन्द को देखकर अविर्भूत होते होंगे, पुरुषोत्तम जी भुजावालों ने ''जै जै श्री'' को निवेदन किया कि भगवान् निम्बार्काचार्य जी का पाँच हजार एक सौ वां उत्सव आ रहा है, इसको मनाया जाना चाहिये उनकी कल्पना आज के दो चार पाँच वर्ष पूर्व की थी और ''जै जै'' के सामने जब उन्होंने कहा, आज वह साकार रूप हुआ। किस रूप में हुआ उसमें कौन कौन सी कड़िया जुड़ी कहां कहां से लोग आये, इस निम्बार्क सम्प्रदाय के एक एक गुरुभाई भले ही वह कलकत्ता में हो, मद्रास में हो, जम्मू में हो, नेपाल में हो, हिन्दुस्तान के गाँव गाँव में हो यहाँ आया, इस गंगा में गोता लगाया औरआज जब श्री चरणों में ऐसी बात जब सामने आती है, तो भुजवाले पुरुषोत्तम जी जो भुज वाले हैं उनके श्री चरणों में भी नमन करने की

इच्छा होती है। ऐसे टाइम पर हमारे भक्त प्रवर भागीरथ भराडियाजी का भी ध्यान आता है। सन्त शिरोमणी गृहस्थों में सन्त थे, आचार्यपीठ पर अनन्य निष्ठा थी ऐसी विभूतियों की याद आ रही है, रामकरण जी बाहेती साहब मेरे पिताश्री रतन लाल जी राठी, ऐसे लोगों की प्रेरणा से आज जो ये प्रेरणा हमको प्राप्त हुई उन्होंने ही इस गुरूपीठ पर लाकर हमको सौंपा था और आज मैं बराबरी के .....।

उन्होंने अथक प्रयास किये। मेरे काकाजी वंशीलालजी राठी हैं मैं आज उनके लिए कोई शब्द नहीं कह सकता। देखिये कोई भी आयोजन को यदि करना है तो उसमें कोई तन देता है, कोई मन देता है, तो कोई धन देता है इन सबका जब मिश्रण हो जाता है तो एक उत्सव हो जाता है तो मेरे काकाजी श्री वंशीलाल जी का भी मैं आभारी हूँ कि इस कार्यक्रम के वे स्वागत अध्यक्ष बने और उन्होंने इस कार्यक्रम को विधिवत् रूप से चलाया। हमारे कलकत्ता के श्री श्याम जी बेरीबाल जो कलकत्ता के अन्दर इण्डस्ट्रीरियल है वो इण्डस्ट्रीज में वर्किंग करते हैं और जो सतत दस बारह दिन में यहाँ रहकर इस युग में जबकि अर्थ का युग है, और इस पूरे कार्यक्रम को देखा सम्भाला। हमारे भाई श्री राधेश्याम ईनानी ये तो हमारे हनुमान हैं, हमारे सेनापति हैं, हम आपको क्या बतायें हम लोग तो समय पर आये यह अथक चार महिने से स्वयं सब कार्य को देखकर, आप पूर्णरूप से देख रहे है। श्री राधेश्याम जी ईनानी साहब हृदय से, मन से, दिमाग से जो सेवा होती है कर रहे है कुछ गलतियाँ हमसे हो सकती है। क्षमाबोध हम चाहेंगे घनश्याम जी आग्रवाल जिन्होंने भोजन की व्यवस्था सम्भाली, हमारे भाई साहब ने आवास की व्यवस्था सम्भाली, तीन महीने से यहां मौजूद, ऐसे ऐसे कार्यकर्ता आज याद आते हैं। लेकिन हम लोग तो दूर बैठे थे, मैं इन्दौर रहता हूँ कोई कलकत्ता रहता है हम तो आठ दिन, दस दिन, पहले आये लेकिन इन भाइयों ने जयपुर, किशनगढ़, अजमेंर जो रहते है सब लोग लगे, आप लोगों को कोटि कोटि, हम लोग समिति की तरफ से धन्यवाद देते है, सर्वेश्वर प्रभु से प्रार्थना करते हैं आप सबका मंगल हो और मैं तो ''जै जै'' के चरणों में अनन्य कृतज्ञ हूँ सर्वेश्वर भगवान् प्रभू की ऐसी असीम कृपा से हमेशा ऐसे आयोजन होत रहे और इस प्रकार के उत्सव इस सलेमाबद में हम करते रहे।

जगदगुरु शंकराचार्य स्वामी श्री वासुदेवानन्दजी सरस्वती महाराज :-

निम्बार्क महाप्रभु की इक्यावन सौं वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में संजोजित विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आज यह पूर्णता का सत्र है। कुम्भों में तो भीड़ देखने को मिलती है लेकिन किसी के शिविर में इतना बड़ा कोई आयोजन नहीं मिलता है। पण्डाल तो बड़े बड़े दिखते है, लेकिन न तो इतने वक्ता मिलते हैं न इतने श्रोता मिलते है। या तो तीन अप्रैल सन् इक्यानवे श्रीराम जन्म भूमि के आन्दोलन के निमित्त आयोजित दिल्ली के उस राष्ट्रपति भवन के सामने वोट क्लब पर विशाल हिन्दूधर्मावलम्बियों का समागम देखने को मिला था। लाखों लाखों लोग उपस्थित थे, लगभग अट्ठारह फूटऊंचा मंच रहा होगा उस सभा की अध्यक्षता भी मैंने की थी। भूमि पर जगह नहीं पेड़ो पर लोग बैठे हुये थे इण्डिया गेट एक छोटा सा तोरण द्वार दिख रहा था जितने उस जगह उपस्थित थे उतने दिल्ली में टहल रहे थे। मेरे विचार में किसी भी राजनैतिक रैली में भी, कभी इतिहास में भीड़ नहीं रही होगी जितना वह हिन्दुत्व का ज्चार उफन करके एकत्रित हुआ था या इस विराट् सनातन धर्म सम्मेलन में निम्बार्क महाप्रभु की इस इक्यावन सौ वीं जयन्ती पर एकत्रित हुआ है तो यह उस विराट् सनातन धर्म सम्मेलन में निम्बार्क महाप्रभु की इस

इक्यावन सौं वीं जयन्ती पर सनातन धर्मावलम्बियों का जन समूह उमड़ा हुआ है। प्रयाग के कुम्भ में सामान्य मेले में भी ज्योतिष्पीठ का भी शिविर लगता है बहुत भीड़ होती हैं शायद मेले ऊपर भीड़ होती है लेकिन उस पर मैं अकेला वक्ता रहा हूँ या दो चार और सन्त विद्वान रहते हैं। इस विराट् सनातन धर्म सम्मेलन में सम्भवत: शायद ही कोई सनातन धर्मावलम्बी सम्प्रदाय हो जिस का प्रसिद्ध सन्त न आया हो, इसे सनातन धर्म सम्मेलन कहते है। सम्मेलन तो होते ही रहते हैं कहीं सर्वधर्म सम्मेलन होता है कहीं, कहीं, कुछ होता है लेकिन सनातन धर्म का पूर्ण स्वरूप यहाँ दिखाई पड़ता है, ऐसा समन्वय भगवान् श्री चक्रावतार निम्बार्क प्रभु की ही कृपा है।

चक्रस्वरूप में रहने पर भी भक्तों की रक्षा करते हैं आप सबको पता है, दुर्बासा जी जब असन्तुष्ट हो करके अम्बरीष जी को, कृत्या प्रकट करके समाप्त कर देना चाहते हैं उस समय चक्रावतार हुआ था सुदर्शन चक्रावतार हुआ था और दुर्बासा जी को त्रिलोकी में भागना पड़ा, उनको संरक्षण नहीं मिला। अरे यहां तक भगवान् के पास भी जाते हैं भगवान् भी कह देते हैं ना मेरे बस की नहीं है, **''अहं भक्तपराधीनो ह्यस्वतन्त्र इव द्विज''** हे ब्राह्मण देवता, हे ऋषि महाराज, हम भक्त के पराधीन हैं अस्वतन्त्र हैं, निश्चित है, अस्वतन्त्र हैं, हम परतन्त्र हैं, यह देख लो, जिसके तन्त्र में सारा जगत है वह कहता है कि हम भक्त के प्रति अस्वतन्त्र हैं। उन्हीं की शरण में जाओं चक्रसुदर्शन को वही शान्त कर सकते है, सनातन धर्म की रक्षा उस समय भी करते हैं सुदर्शन चक्रमहाराज, और अवतार ले करके भी अपनी परम्परा के द्वारा भी संरक्षण करते हैं और आज अपनी इक्यावन सौ वीं जयन्ती के समय भी अपने ही स्वरूप ''श्रीजी'' महाराज के द्वारा प्रेरणा प्राप्त करा करके, भक्तमण्डल के द्वारा इतना बड़ा विराट् सनातन धर्म को सम्पन्न कराया और दिखा दिया कि आज भी हम वही कार्य कर रहे हैं। नारायण, कहना बहुत चाहिये, कहा जाता है लेकिन किए जाने की आवश्यकता ज्यादा है, जो करे उस का सहयोग करना चाहिये सब विविध विषयों पर चर्चा हो चुकी उस को हम सब कैसे पालन करें, कार्यान्वयन कैसे करें इस पर विचार करके, करना चाहिये। आचार्यपीठ से बहुत बड़ी प्रेरणा समाज को मिलती हैं। इस संयोजन में सहयोग करने वाले चाहे वो कार्य समिति के लोग रहे हों, चाहे स्वागत समिति के लोग रहे हो, चाहे शासन तन्त्र के लोग रहे हो, चाहे प्रशासन तंत्र के लोग रहे हो, चाहे सुरक्षा कर्मी रहे हो, सेवक रहें हो, सबके सब सारे समाज ने मिलके जो कार्य किया है वह एक उदाहरण है उन सबके प्रति शुभकामनायें एवं आशीर्वाद व्यक्त करते हैं। आचार्य पीठ के सौहार्द से ऐसे ऐसे सम्मेलनों को करके, सबको समन्वित करके, समाज को एक प्रेरणा दे रहा है। आचार्यपीठ के प्रति हम साधुवाद और मंगलकामना करते हुये आचार्य श्री के दीर्घजीवन की भावना करते हुये, श्री सुदर्शन चक्रावतार निम्बार्क प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि आपको दीर्घ जीवन प्रदान करें, अधिक नहीं कहते हुये समस्त कार्यक्रम में सम्मिलित समस्त भक्त मण्डल के प्रति, कार्यकर्ताओं के प्रति, आशीर्वाद एवं मंगल कामनाओं के साथ वाणी को विराम दे रहे हैं। और जाना है, जाना तो सबको है परन्तु हम आवागमन से जाने के लिए, मुक्ति नहीं मांग रहे हैं आने के लिए जाने की अनुमति चाह रहे है इन्हीं शब्दों के साथ वाणी विराम! ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:।

ठाकुर श्री विक्रम सिंह :- निम्बार्क रक्षादल

मैं इस कार्यक्रम में अट्ठारह तारीख से आज तक अपने बीस साथियों के साथ महाराज श्री की सेवा में उपस्थित रहा और मेरे लिए बहुत प्रिय और जनता के

लिए बहुत कड़वा था वह सेवा कार्य सौंपा गया, आप लोगों की व्यवस्था बनाये रखने का और मैंने बहुत से भक्तजनों का मंच पर आने से, श्रीजी के दर्शन करने से, बीच में कहीं बैठने से मना किया हो उससे आप लोगों को जो कष्ट पहुंचा हो, उसके लिए मैं आपसे बार बार क्षमा याचना करता हूँ क्योकि वह मेरे दायित्व का निर्वहन मैंने किया, आपको दु:ख पहुचाने की मेरी कतई इच्छा नहीं। इसके उपरान्त मैं महाराज श्री के बारे में यहीं कहता हूँ जो कि भगवान श्री कृष्ण ने गीता के तीसरे अध्याय की इक्कीसवें श्लोक में जो कहा है-

''यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः। स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥''

कि श्रेष्ठ पुरुष इस धरती पर जो जो आचरण करते हैं बाकी मनुष्य उसको वैसे ही वर्ततें हैं और उनका अनुगमन करते हैं ऐसे ही श्रेष्ठ पुरुष श्री ''श्रीजी'' जो साहित्यकार भी हैं, तपस्वी भी है, मनीषी भी हैं, मनस्वी भी है, सरल भी हैं, विद्वान् भी हैं, ज्ञानी भी है, दयालु भी हैं, और कृपालु भी हैं ऐसे महान पुरुष के चरणों में मेरा सादर नमन और आपसे मैं यही कहुँगा कि जिस तरह श्याम प्रभु को भगवान् श्री कृष्ण ने युद्ध का निर्णय करने के बाद पूछा कि बताओं कौन जीता और कौन हारा और श्री श्यामजी ने ये उदाहरण दिया कि मैंने इस पूरे अट्ठारह दिन के युद्ध में सिवाय श्री कृष्ण के सुदर्शन चक्र के अलावा कुछ भी नहीं देखा और मैं भी यही मानता हूँ कि मैंने इस आठ दिन के कार्यक्रम में मैंने यहाँ बहुत सारे धर्माचार्य पधारे, अलग अलग क्षेत्रों में अपनी अपनी विशिष्ट प्रतिभा रखने वाले लोग पधारे, लेकिन फिर भी मैंने इस पूरे कार्यक्रम में अगर कोई देखा और जो समझा तथा अनुभव किया वह था महाराज श्री श्रीजी का आभामण्डल और उनकी कृपा दृष्टि, इसके अलावा मुझे कहीं कुछ नजर नहीं आया और आप सभी से इन दिनों में मुझसे कोई त्रुटि हुई हो तो क्षमा चाहता हूँ और महाराज श्री के चरणों में नमन।

स्वामी श्री भुवनेश्वर जी वशिष्ठ :- वृन्दावन

इतना आनन्द यहां उमड़ रहा है, जिसको रखने के लिए जगह कम पड़ गई झोली हमारी कम पड़ गई और वस्तु हमको अधिक से अधिक मिल रही है अब मन कभी कभी यह कहता है कि इस चीज को रखूं या उस चीज को रखूं या सबको रखूँ तो जगह कम पड़ जाती है और यदि वस्तु छूट जाय तो मन ललचाता ही रहता है। इसी प्रकार कृपा हमारे उपर वर्षण होती रहे और हम कृपा के पात्र बनें, क्यों कि यह सिंहनी का दूध है इसके लिए पात्रता की अति आवश्यकता है, सिंहनी का दूध या तो सोने के पात्र में ही ठहरेगा या बच्चे के पेट में ही ठहरेगा और तीसरी जगह रख दिया जाय तो या तो फट जायगा या दूध फैला जायगा इसलिए वह पात्रता हमें प्राप्त हो इन्हीं शब्दों के साथ में विराम देता हूँ और यही प्रार्थना करता हूँ कि, **''प्रभु जी मेरे अवगुण चित न धरौ,''** हमारे अवगुण जो हैं उन्हें आप ही दूर कर सकते हैं और जब गुरुदेव की कृपा हो जाती है तो कोई कार्य असम्भव नहीं क्यों कि, ''कृपा ते अनहोनी हूँ होय प्रकट प्रताप कृपा को, जानत कृपा समान न कोई कृपा तुम्हारी तन मन वचन, नैनन सदा विराजें, ओर मुझ से दीन हीन पर स्वामिनि कृपा तुम्हारी राजें। तुम्हहूँ से कछु'' कृपा तुम्हारी मैं जानी अधिकाई, कृपाधीन तुम रहत राधिके सो रसिकन मिलि गाई। सो वह कृपा होय किंहि भांति साधन कछू न पाऊँ, दिन दिन छीजत काया हाय मैं तुम बिन कौनै सुनाऊँ। ऐ हो कृपा लाडिली जू की मोहि नैसिक अपनइयै, किशोरी अलि ने श्रीरज की प्रभुतापाई कान सिरैइयै। बस इसी कृपा को हम और आप ग्रहण करते रहें उस कृपा के पात्र बनें रहें और भूल चूक हो जायगी तो गुरुदेव क्षमा कर देंगे, ये मेरा विश्वास है। और हम सभी जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज के जो दर्शन कर रहें है, यह इक्यावन सौ वीं जन्म महोत्सव की जो जयन्ती हमारे आपके

जीवन में आई, यह परम सौभाग्य हैं स्वयं श्री साक्षात् निम्बार्क भगवान् ही प्रकट हो करके अपनी आभा प्रभा हम सबको दर्शन करा रहें है उनके दर्शन हमें प्राप्त होते रहें और इसी प्रकार हमें सेवा का अवसर मिलता रहे बस यही हम सब भक्तों की मंगल कामना है॥

स्वामी श्री गिर्राज प्रसाद जी :-वृदावन

भाई, मैं तो ब्रजवासी हूँ मैं तो ब्रजभाषा बोलुँगो, कोई कोई भाषा में बोलौ। बात यह है सब कह रहे हैं कि हमहुँ जा रहे हैं, हमहुँ जा रहे हैं, भैया अब तौ आइबे को समय भयौ है। निम्बार्क भगवान् की जयन्ती मानाते है अब आइवे कौ समय भयौ है कि जाइवे कौ समय भयौ है। अरे अब तो आयगे यहाँ अब तो आय रहे हैं क्यों हम ब्रजवासी कूँ यह गौरव प्राप्त है वैसे हम तौ कछू जानै नाँइ, श्री चरणन के प्रभाव ते, हमें इतनौं यश, प्रतिष्ठा, कृपा मिली जाके हम वर्णन नहीं कर सके, विशेष बात यह है कि हम ब्रजवासी न कूँ यह गौरव प्राप्त हैं कै निम्बार्क भगवान् कूँ वहा से वृजवासी लाये। वृजवासी नीमगाँव में निम्बार्क भगवान् कूँ और वहाँ जाइकै, आपने निम्बार्क चरित्र में देख्यौ होई, तौ निम्बार्क भगवान् कूँ ब्रजवासी नीमागाँव लाय और ब्रजवासिन नेंहि सर्वप्रथम दीक्षा ली, निम्बार्क भगवान् से ब्रजवासियों को दीक्षा प्राप्त हुई। विशेष बात यह है और हमारे आचार्य तौ सर्वत्र विराजमान हैं ये तौ साक्षात् श्री सर्वेश्वर प्रभु जी राधामाधव के स्वरूप हैं विशेषकरके बात या है-

कान खोलकै सब सुनौं, जान और अन्जान।
इक्यावन सौ वर्ष के भये श्री निम्बार्क भगवान॥

महन्त श्री हरबिल्लभदासजी महाराज

- किशनगढ़, रेनवाल

श्री निम्बार्क भगवान् की पाँच हजार एक सौ वीं जयन्ती मनाई गई और बहुत ही विशाल यह आयोजन हुआ यह सर्वेश्वर भगवान् की असीम अनुकम्पा। इस का उद्घाटन करने के लिए उपराष्ट्रपति पधारे और हमारे महाराज श्री को एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया। उस प्रक्रिया को देख करके मेरा मन भी बहुत ही लालायित हुआ कि भाई महाराज श्री का अभिनन्दन हो रहा है, हम भी अपने हाथों से अभिनन्दन करें। मैंने सभा संचालक महोदय जी से प्रार्थना की कि मुझे भी महाराज श्री का माल्यार्पण आदि के द्वारा अभिनन्दन करने का मौका दिया जाय। आपने मेरे ऊपर बहुत बहुत कृपा की और उन्होंने मुझे समय दिलाया।

ऐसे कई लोग है, कई लोग नहीं है सारा संसार तो ऐसा है कि वो भूखे हैं और याचना ही करते हैं कि हमको ये मिले, ये मिले, ये मिले सारा संसार इसी प्रकार का है इसके अन्दर भी कोई तपोधन मूर्ति भी हैं जो मुक्ति की इच्छा करते हैं और हमारे महाराज श्री न भुक्ति की इच्छा करते हैं न मुक्ति की ऐसे महान जो तपोधन हैं।

मैं जब जब भी आपसे मिलता हूँ मुझे बड़े प्रेम से अपने हृदय से लगाते हैं जिस समय हृदय से लगाते है मैं बड़ा गद्गद हो जाता हूँ। मैं असत् वृत्ति का व्यक्ति इस मानव शरीर में आ करके इस सतोगुण, रजोगुण, तमोगुणत्मक मय इस सृष्टि में पड़के बड़ा तामसी और राजसी हो रहा हूँ सतोगुण का अभाव होता है। कल का अभिनन्दन देख करके मेरे मन में ऐसा हुआ कि मैं किन पुष्पों के द्वारा और आपका अभिनन्दन करूँ? जो भी चीज दी जाती है वह सब जो है नाशवान है वह स्थाई रहती नहीं हैं, मैं किससे अभिनन्दन करूँ इसलिए मैंने अपने आपमें ऐसा ही समझा कि तू तो अपने मन के पुष्पों से ही आचार्य श्री का अभिनन्दन कर।

दूसरी बात यह है कि निम्बार्काचार्य भगवान् को पाँच हजार एक सौ वर्ष हो गये, हमने तो नाम सुना,

उनका सिद्धान्त सुना, उनकी प्रक्रिया सुनी, साक्षात् रूप से हम कहाँ निम्बार्क भगवान् के दर्शन कर पाये। हो सकता है कि हम सबको उपदेश दने के लिए यह कह दें कि, हम उन निम्बार्क भगवान् के अनुयायी हैं, उनके पथ का हम अनुगमन करते हैं और हम रात दिन उन निम्बार्क भगवान् का रटन करते हैं। आज हमारे बीच में साक्षात् इस निम्बार्काचार्यपीठ पर विराजे हुये, जगद्गुरु श्री श्रीजी महाराज हम सबको पावन करते हैं। आप समझते हो यह तपोबल का ही बल है। हाँ तपोबल ही **बलं तपोबल** ही जो है वो बल होता है और सब कुछ परास्त हो जाता है उसके आगे उस तपोबल के प्रभाव से ही कल नहीं देखा लाखों-लाख जनता वह आपके सामने आकर के नमन हुई। यह विशेषता इस पद की हैं तप की है। मैं इन आचार्य श्री का जो हमेशा आते समय और जाते समय मुझको हृदय से लगाते है औरअपना स्नेह भरा अनुराग मेरे मष्तक के ऊपर बरसाते हैं आज मैं भी आचार्य श्री का पुष्पादियों के द्वारा अभिनन्दन करना चाहता हूँ।

निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्री श्रीजी महाराज

राधाकृष्णौ महारम्यौ रङ्ग देव्यादि सेवितौ, ।
परमैनियमप्रेम्णौ किशोरौरसिकेश्वरौ ॥
श्रीमतेसर्व विद्यानां प्रभवाय सुब्रह्मणे,
आचार्याय मुनीन्द्राय निम्बार्काय नमो नमः ॥

समुपस्थित जगद्गुरु वरेण्य आचार्य प्रवर श्री शंकराचार्य जी महाराज, सीथल पीठाधीश्वर श्री क्षमाराम जी महाराज, खेड़ापा पीठाधीश्वर, विद्वद्वृन्द तथा भगवत् चरणानुरागी समस्त परम भावुक भक्त महनुभाव भक्तिमती मातायें। श्री निम्बार्क भगवान् के इस पाँच सौ जैसे कह देते हैं, पाँच लगाते हैं पर उसमें एक बिन्दु का और प्रयोग कर दिया जाय तो क्या हो जाता है पांच हजार हो जाता है। ऐसे ही आचार्य प्रवर सुदर्शन चक्रावतार श्री निम्बार्क भगवान् को पाँच हजार केवल पांच हजार ही नहीं एक के साथ दो बिन्दु और लगी हुई पांच हजार एक सौ वर्ष। ये उस समय का प्रसंग है जब महाराज परीक्षित का साम्राज्यकाल था जिसकी चर्चा हम पहले कर चुके है जिसका वर्णन साम्प्रदाय के ग्रन्थों में है।

शोधकर्ताओं ने आपके शोध के सम्बन्ध में विभिन्न प्रकार की भ्रान्तियाँ उत्पन्न की। इतना ही नहीं कोई पाँचवी शताब्दी तो कोई सातवीं कोई ग्यारहवी यहां तक उन्होंने लाककर के उन्हे उपस्थापित कर दिया। निम्बार्क सम्प्रदाय के प्राचीन संस्कृत वांग्मय के ग्रन्थो का यदि कोई अनुशीलन करे स्वच्छातापूर्वक निरपेक्षभाव से तो आपको सम्यक् दिशा प्राप्त होगी। हमारे विद्वनमूर्धन्य पण्डित प्रवर श्री अमोलकरामजी शास्त्री महाराज तर्क तीर्थ, तर्क वागीश, न्याय, वेदान्त, व्याकरण के मूर्धन्य महामनीषी प्रवर, वृन्दावन में सतत निवास करते थे, उससे पूर्व वाराणसी में उन्होंने दीर्घकाल तक निवास किया। अपना शेष जीवन उन्होंने वृन्दावनधाम में श्री राधामाधव के चिन्तन में व्यतीत किया। उन्होंने बहुत कुछ सम्प्रदाय के लिए सेवा प्रस्तुत की वो अनिर्वचनीय हैं। और भी अनेक मूर्धन्य विद्वानों ने हमारे इस आचार्यपीठ के अधिकारी पद पर सुशोभित विद्वत वरेण्य अधिकारी श्री ब्रजवल्लभशरणजी वेदान्ताचार्य पंचतीर्थ, उन्होंने भी महनीय कार्य किया जिनके शोध प्रकरण में अनेकशोधकर्ता ने सैकड़ौ शोधकर्ताओं ने उनसे दिशा प्राप्त की। आज के ठीक बारह वर्ष पूर्व जब इसी मंच पर सनातन धर्म सम्मेलन हो रहा था और उस पर वे स्वयं पधारे और उस परम वृद्ध ने वृद्धावस्था में यहां पर अपने भाव अभिव्यक्त किये।

यह अत्यन्त प्रसन्नता है आज इस पावन अवसर निम्बार्क भगवान् की पांच हजार एक सौ वीं जयन्ती के मंगल मय अवसर पर जब यह विचार किया गया ये चिन्तन हुआ कि ऐसा अवसर आ रहा हैं, श्री निम्बार्क भगवान् के जयन्ती समारोह का विशिष्ट रूप से समायोजन किया जाय और फिर यह चिन्तन हुआ, इतना ही ही नहीं केवल जयन्ती ही नहीं, इसी सन्दर्भ में अखिल भारतीय स्तर पर विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का समायोजन हो, जिसमें हमारे सभी सम्प्रदायों के आचार्य प्रवर यहां एक मंच पर समासीन हो करके आज जो विश्व की विशृंखलित अवस्था है, अस्तव्यस्तता हैं, अशान्ति है, हिंसावृत्ति है, अश्लीलता है अनेक हेतु है जिन पर आचार्य प्रवर अपने पावन उद्बोधनों द्वारा पावन प्रेरणा प्रदान करें, पावन उपदेशामृत का अभिवर्षण करके दिशा प्रदान करें, जिससे जीवन में स्वस्थता उत्पन्न हो, हिसांवृत्ति का निवारण हो, प्रभु इसीलिए अवतीण होते हैं धर्म की स्थापना के लिए, अधर्म के निवारण के लिए जो दैवीय सम्पदा है उसकी अभिवृद्धि के लिए आसुरी सम्पदा का निवारण करने के लिए प्रकट होते हैं, सन्त महात्माओं की रक्षा के लिए प्रगट होते हैं, गोमाता की रक्षा के लिए प्रगट होते है ऐसे ही सन्त महात्मा आचार्य प्रवर विद्वत्जन इस भूतल पर आते हैं और अपने सुन्दर सत्कार्य का सम्पादन करते हुये अपनी आराधना, उपासना, करते हुये अपनी तपश्चर्या करते हुये मार्ग दर्शन कराते हैं।

श्रीनिम्बार्क भगवान् की असीम कृपा से जहाँ जिन जिन महानुभावों को, विद्वज्जन को, भगवतजनों को, भक्तिमती माताओं को, यहाँ जिन जिन महानुभावों का जिन जिन आचार्यप्रवरों का जिन जिन महामण्डलेश्वरों का, श्रीमहन्तों का, सन्त महात्माओं का, विद्वज्जनों का, भगवतजनों का, भक्तिमती माताओं को यहाँ से संदेश पहुंचाया गया। सभी ने कितना अनुग्रह किया है कितनी कृपा की है अपनी कृपा की कितनी अभिवृष्टि की है उसके लिए हमारे सीमित कोश में कोई शब्द राशि नहीं जो हम अपने भावों को व्यक्त कर सकें। और इसके साथ कल भी हमने चर्चा की थी, जब राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री वसुन्धरा राजे, उनसे जब चर्चा की और यह उन पर भार और दायित्व दिया कि इसकी सम्पूर्ण व्यवस्था हम नहीं जानते, हम लोग जंगल में रहते हैं यह आपके ऊपर निर्भर है और उन्होंने यथार्थ में सम्पूर्ण व्यवस्थाओं के लिए निर्देश दे करके, अपने विभिन्न विभागों को, तत्विभागों के द्वारा सम्पूर्ण कार्य यहां पर सम्पादित हुये, चाहे वह सुरक्षा व्यवस्था है चाहे विद्युत व्यवस्था है मार्ग की प्रशस्त व्यवस्था है।

जल व्यवस्था है, अनेक व्यवस्थाओं का, इनका हम कहाँ तक वर्णन करें। जब समिति का निर्धारण हुआ तो समिति के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, स्वगाताध्यक्ष, कोषाध्यक्ष और अनेक उसके सदस्य महानुभाव सभी ने मनसा, वाचा, कर्मणा, तन, मन, धन से समग्र विधा से जिस प्रकार सेवा में संलग्न हुये और फिर उनमें एक हमारे जिनका नाम किन शब्दों में व्यक्त करें नाम बड़ा सुन्दर है, बहुत ही अनुपम नाम है श्री राधेश्यामजी आगे इनाणी लगा हुआ है कार्यों का जिस विधा से कार्य सम्पादित किया है हमारे आचार्यपीठस्थ सभी जितने भी सन्त महात्मा हैं अध्यापकवृन्द हैं, छात्रवृन्द हैं, कर्मचारी वृन्द हैं, बहुत ही अनुपम नाम है, अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान नहीं दिया।

तीन चार घटनायें विचित्र हुईं जिनसे मानसिक वेदना अवश्य है। जब द्वार का निर्माण हो रहा था उस समय ठेकेदार की भूल से समझें, किसी कारण से समझें, वो गिरा और एक व्यक्ति का जीवन गया। इससे भी पूर्व एक घटना हुई निम्बार्क सरोवर पर जो वट वृक्ष था उस वट वृक्ष का आधा भाग हठात गिरा कोई दुर्घटना नहीं हुई। यह दूसरी घटना द्वार पर हुई। तीसरी घटना हमारे यहाँ विद्युत विभाग के इसी ग्राम के निवासी श्री

जगदीश प्रसाद जी विद्युत का करन्ट लगने से उनको भयंकर आघात लगा तो बता रहे थे कि इसका आघात लगने पर जीवन ही नहीं रहता है, अभी भी वह शैया पर हैं आज अनेक दिन हो गये लगभग एक मास होने पर आ गया और हमारे एक ड्राईवर एक हमारे वेद विद्यालय के प्राध्यापक व्याकरण के उद्भट विद्वान और उनका जीवन ऐसा महर्षि जैसे ऋषि मुनियों का वर्णन आता है। ऐसा उनका पावन स्वरूप श्री परशुराम शरण जी व्याकरणाचार्य वयोवृद्ध, जिनकी अवस्था लगभग नब्बे वर्ष के आसपास, वो पधारे यहाँ पर, जिस दिन पधारे पूर्ण स्वस्थ रात्रि में स्वस्थ थे प्रातः काल प्रभात बेला में स्नानादि से निवृत्त हो कर के और अपनी अराधना में बैठने ही जा रहे थे। उसी अवस्था में अकस्मात् उन्होंने यहीं पर आचार्यपीठ में ही अपना भौतिक शरीर का परित्याग कर दिया। एक यह विचित्र, घटना घटी एकादशी का दिन, देव प्रबोधिनी एकादशी राधामाधव प्रभु का सानिध्य और श्री निम्बार्क भगवान् की यह जयन्ती समारोह और अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का अवसर उन्होंने इस प्रकार से एक लीला की। साथ ही साथ अनेक वर्षों से हमारे तित्यारी ग्राम के निवासी प्रभु जी ड्राईवर जो निरन्तर, आप बहुत से जानते हैं, निरन्तर सेवा में लगे हुये थे ओर अकस्मात् उनके तीन चार दिन पूर्व शरीर पर आघात कुछ हुआ हृदय का, चिकित्सा उनकी कराई गई कुछ स्वास्थ्य लाभ भी हुआ, परन्तु दैव योग से कल ही उन्होंने अपने शरीर का त्याग किया। ये जो कुछ घटनायें हुई हैं यद्यपि आरम्भ में हमने कहा था कि जब आरम्भ में सबसे पहले वटवृक्ष का भाग गिरा और उसके बाद कुछ और अन्य घटनायें हुई। हाँ एक रतनलाल जी वाल्दी जो हमारे अनन्य भक्तों में और यहां से जो परिकर भक्त कुछ हमारे सन्त और भक्त यहाँ से गये थे बम्बई अर्थ संचय के निमित्त, उनको साथ लिया बम्बई से और उसी दिन प्रस्थान करके इचलकरंजी पहुंचे हमारे भीमकरण जी छापरवाल यहां विराजे होंगे, उनके यहां पर वह रात के लगभग आठ नौ बजे के आस पास पहुंचे, भगवत प्रसाद लेने के लिए सब बैठे थे ये दानविहारी जी इत्यादी सबके सब और वह भी प्रसाद लेने के लिए सब बैठे हाथ में ग्रास लिया ज्योंही ग्रास लिया और ग्रास लेते ही उनके हैम्रेज की स्थिति बनीं और लगभग रात्रि के एक बजे उन्होंने शरीर का त्याग कर दिया। जिनकी दीर्घकाल से अनुपम सेवायें रहीं हैं। सम्मेलन में कुम्भ पर्वों पर, उत्सव महोत्सवों पर स्वयं सभी प्रकार से एक विधा से नहीं अनेक विधाओं से जिनकी सेवायें रहीं, उनकी यह घटना हुई, तो इन सब प्रसंगों को देख करके हृदय में विचार हुआ कि विद्वानों से भी परामर्श किया सबसे चर्चायें की कि ये जो आरम्भ अभी तो सम्मेलन का शुभारम्भ भी नहीं हुआ है यह घटनायें ऐसी हो गई और इस दिशा में क्या करना चाहिये, उसके बाद इन्होंने पाठ बिठाया सुदर्शन कवच है, नारायण कवच है, हनुमान चालीसा है इत्यादि पता नहीं क्या क्या यह तो प्रचार्य जी को बताया है यह सब पाठ भी बैठाये। श्री निम्बार्क भगवान् की जो लीला हो उसका, उनके विधान का, और सर्वेश्वर प्रभु के विधान का, राधामाधव प्रभु के विधान का वर्णन करना दुरुह है वो प्राणी का प्रकरण नहीं है इसका विवेचन नहीं किया जा सकता है। यह सब प्रभु की लीला है उनका विधान कैसा क्या होता है। इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण कार्यक्र सानन्द सकुशल सम्पन्न हुआ। इतना विशाल कार्यक्रम हमें भय लग रहा था इतना जन समूह है कहीं कोई कुचल करके आघात न हो जाय,परन्तु यह परम कृपा रही और एक यह भी भाव था कि इनती दूर एकान्त में, जंगल में हैं, समस्त आचार्य प्रवर और महामण्डलेश्वर प्रवर ये सब कैसे कृपा करेंगे, कैसे अनुकम्पा करेंगे, यहाँ जंगल में निवास करते हैं वे पधारेंगे किस रूप में पधारेंगे, कैसे उनकी

परिचर्या कर पायेंगे, समिति के कार्यकर्ताओं ने यद्यपि यथेष्ट अपना प्रयास किया फिर भी विभिन्न विधाओं में सेवा परिचर्या में, सभी में हम समझते हैं कि सांगोपांग यह सब कार्य सम्पादित नहीं हुये होंगे। यद्यपि हमने आरम्भ में सबसे कहा है कि आप सबों को इस बात का विशेष ध्यान रखना, एक भी कोई व्यक्ति आवे तो उसका भी ध्यान रखों, फिर भी इतने विशाल जन समूह में अनेक त्रुटियों का होना स्वाभाविक है। समिति के कार्यकर्ता ने और इसमें खास करके हमारे महान्तप्रवर श्री महामण्डलेश्वर श्रीमहान्त श्री मुरलीमनोहरशरण जी शास्त्री जी महाराज जिनका कि स्वास्थ्य अनुकूल न होते हुये भी उन्होंनं ने जिस विधा से, कितना समय वाणी के द्वारा, सभा संचालन का किया, इस पर सारा निर्भर करता हैं, सारा सब कुछ सारे मंच को नियंत्रित करके, व्यवस्थित करके, सम्पूर्ण इसका संचाल किया किस विधा से उन्होंने किया अवर्णनीयं है। हमारे महान्त जी महाराज किशनगढ़ रेनवाल श्री हरिवल्लभदास जी महाराज, ''सहित्य दर्शनाचार्य'' उन्होंने अपने भाव अभिव्यक्त किये और अश्रुपूरित भी हो गये, वस्तुतः अनेक ऐसे महानुभावों ने अपनी आत्मीयता से, अपना ही कार्य उन्हीं का हैं हम तो समय समय पर कहते हैं कि एक तो हम अस्वस्थ चल रहे हैं व्याधिक्रान्त हैं व्याधिग्रस्थ हैं, वाणी में सार्मथ्य नहीं, शरीर में सामर्थ्य नहीं, और न कोई लेख में सामर्थ्य कुछ भी नहीं केवल एक मात्र प्रभु, पता नहीं वह किस प्रकार से जो लीला करादें, उनकी लीला है उनका कृपा प्रसाद है, यह आचार्यप्रवरो की सबकी कृपा है इन्होंने स्वयं ने जैसे मेघमाला स्वतः आ करके वृष्टि करती है ऐसे आप सबों ने पधार करके अपने जो अनुकम्पा की है, हमारे समिति शब्द कोश में कोई शब्द राशि नही जिस का व्यवहार करके भावों को प्रकट कर सकें। ये हमारे संस्कार चैनल भास्कर चैनल, हमारे पाण्डाल के निर्माता, विद्युत के संचालक, आदि आदि न जाने किन किन विभागों के समस्त महनुभावों ने पत्रकार वर्गों ने जो सेवायें अपनी मनसा, वाचा, कर्मणां प्रदान की है वह इतनी अनुपम है कि हमारे कोई शब्द नहीं कि जो उनके लिए कुछ भाव प्रगट कर सकें। किस आत्मीयता से किस उत्साह से, किस उल्लास से किस उमंग से, इस श्री निम्बार्क भगवान् और चक्रराज सुदर्शन उनकी लीला है।

यहां श्री आचार्यप्रवर श्री परशुराम देवाचार्य जी महाराज पधारे, उन्होंने तपश्चर्या की। यह निम्बार्कतीर्थ है पौराणिकतीर्थ है जहां महाविष्णु प्रगट हुये हों और कोलाहल दैत्य का जहाँ पर संघार किया है यह परम प्राचीन पद्म पुराण में वर्णित निम्बार्क तीर्थ।

उस तीर्थ की महत्ता, आचार्यपीठ की महत्ता, हम तो यहाँ के एक हमारे यहां कहते हें सोहनिया, सोहनिया कहते हें झाडू-बुहारु निकालने वाला वैसे हम किंकर हैं यहां के इस कैंकर्य भाव को ले करके। हमारे यहां परम्परा है कि आचार्यपीठ पर जो भी आसीन हो वह स्वयं पाकी हो और वो ये न सोचे कि मैं कोई किसी पद पर प्रतिष्ठित हूँ अपितु मैं प्रभु का सेवक हूँ अपने हाथ से रसोई बनावे, अपने हाथ से प्रभु के नैवेद्य समर्पण करे, इस प्रकार की परिचर्चा जीवन में हो, सेवाभाव हो, यह यहां की परम्परा रही है। यही जीवन में हो यही स्वस्थता हमारे जीवन में आवे।

अब इसके साथ साथ एक प्रसंग ओर है निम्बार्क सम्प्रदाय का यह एक मात्र आचार्यपीठ है इसमें भी बहुत सी भ्रान्तियाँ चल रही हैं। हमारे यहां परम्परा से सनकादिक हँस भगवान से सर्वेश्वर प्रभु की सेवा मिली सनकादिकों को। भगवान् सर्वेश्वर की सेवा सालिग्राम विग्रह है, जो गुञ्जाफल सदृश अथवा समझें चने की दाल जितने छोटे विग्रह दक्षिणावर्ती चक्रान्कित, वो सेवा उन्हें प्राप्त हुई। और सनकादिको से सेवा प्राप्त हुई देवर्षि

प्रवर श्री नारद जी को और आज के पाँच हजार एक सौ वर्ष पूर्व आपके प्राकट्य के बाद ये सेवा प्राप्त हुई श्री निम्बार्क भगवान् को देवर्षि नारद जी से और वो ही परम्परागत सेवा जिनको यह सर्वेश्वर प्रभु की सेवा आचार्य प्रवर कृपा करके प्रदान करते है, और जिनको उत्तराधिकारी चयन करते हैं, उनको सेवा प्रदान करते हैं वह ही निम्बार्क सम्प्रदाय के एक मात्र आचार्य होते हैं यह परम्परा निम्बार्क सम्प्रदाय की अद्यावधि रही है। किन्तु वर्तमान समय में कुछ ऐसा क्रम चल रहा है कि वह भी कहते हैं कि हम भी निम्बार्काचार्य हैं, ऐसी वह भावना करते हें। निम्बार्क सम्प्रदाय के हैं, विद्वान हैं, धीर हैं, श्रीमहान्त हैं, मण्डलेश्वर हैं, महामण्डलेश्वर हैं किसी भी रूप मे कुछ भी हैं वह समादरणीय हैं किन्तु इस प्रकार की ये परिकल्पना यहाँ अपने इस भारत में भी और अब ये नेपाल में भी ये एक समस्या उठ खड़ी हुई है। वह भी चाहते हैं कि हम इसके लिये, हमने अभी एक हमारे यहां प्राचीन आलेख है, विक्रम सम्वत् अट्ठारह सौ उन्नासी कितने वर्ष हुये यह तो आप सब विचार कर लें एक सौ और कितने हुये? तो इतना प्राचीन आलेख है नौमूड़ा उसको कहते हैं समस्त धर्माचार्यों ने विभिन्न सम्प्रदाय के समस्त धर्माचार्यों ने उस पर अपनी मोहर लगा करके अपने हस्ताक्षर किए हैं, और प्रमाणित किया है कि यह परम्परा से निम्बार्क सम्प्रदाय का यही आचार्यपीठ है, जिसको कि हम मानते आ रहे हैं और अभी वर्तमान में मान रहे हैं और मान्यता देते रहेंगे। और इर प्रकार आज के उन्तीस वर्ष पहले ऐसे ही मंच पर अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन में धर्म सम्राट करपात्री जी महाराज के तत्वावधान में जगद्गुरु गोवर्धन पीठाधीश्वर स्वामी श्री निरंज देव तीर्थ जी महाराज उन्होंने यह घोषणा की थी और उन्होंने भी अपने भाव व्यक्त किये कि निम्बार्क सम्प्रदाय का एक मात्र आचार्य पीठ यह ही है। यों लिख करके अपने भाव अभिव्यक्त किये जो इस ग्रन्थ में प्रकाशित है उनके ही हस्ताक्षर हैं सम्पूर्ण। और इसी प्रकार और और भी प्रसंग इस ग्रन्थ के अन्दर एक विवरणिका ग्रन्थ है। प्रयागराज में एक निम्बार्क सम्प्रदाय के गोस्वामी वर्ग हैं वो भी अपने आप को निम्बार्काचार्य कहते हैं यह शंकराचार्य महाराज स्वयं वहीं विराज रहे हैं आप भी परिचित है। तो इस प्रकार जो यह जो प्रसंग चल रहे हैं ऐसा करना उचित नहीं है। यही स्थिति हमारे और भी आचार्य परम्परा में जहाँ तहाँ भी श्री वल्लभाचार्य जी महाराज हमसे चर्चा कर रहे थे तो यह चर्चायें यत्र तत्र चल रहीं है केवल यहीं की बात नहीं है। ऐसा करना समुचित नहीं। हमने अभी एक प्रारूप यहां पर तैयार किया है आपको अच्छा लगे या नहीं है। ऐसा करना यह समुचित नहीं कह सकते हैं किन्तु हम इस सभा में इसको श्रवण करा देना उचित समझते हैं वह बहुत संक्षेप में है इसमें अनेक महानुभावों ने अपने हस्ताक्षर कर भी दिये है।

श्री सर्वेश्वरो जयति, श्री भगवन्निम्बार्काचार्य नमः, वैष्णवविरक्त चतुःसम्प्रदाय में श्री निम्बार्क सम्प्रदाय अत्यन्त प्राचीन हैं। महाराज परीक्षित के शासन काल में सदुर्शन चक्रावतार श्री भगवन्निम्बार्काचार्य का इस भूतल पर दक्षिण भारत के गोदावरी तटवर्ती पैठंण के अति निकट मूँगी ग्राम में महर्षि अरुण के पवित्र आश्रम में माता जयन्ती के यहाँ आपका प्राकट्य हुआ। कालान्तर मैं आप सपरिकर ब्रजमण्डलस्थ गोवर्धन की पावन उपत्यका में आपने तपःसाधना की। आपके साधना स्थल का नाम निम्बग्राम 'नीमगाँव' विख्यात हुआ। यहीं पर देवर्षि वर्य श्री नारद जी द्वारा आपको श्री सनकादिक संसेव्य गुञ्जाफल समदक्षिणावर्ती चक्रांकित श्री सर्वेश्वर प्रभु की सेवा सहित पंचपदी विद्यात्मक श्री गोपाल मन्त्र राज का उपेदश किया गया तथा जगत् स्रष्टा श्री ब्रह्मदेव ने आपको निम्बार्क नाम से सम्बोधित कर इस धराधाम

पर सम्प्रदाय के प्रवर्तन का संकेत किया। ऊर्धरेता बाल ब्रह्मचारी के रूप श्री भगवन्निम्बार्काचार्य ने प्रस्थान त्रयी पर भाष्य का प्रणयन कर निम्बार्क सम्प्रदाय के आद्य प्रवर्तकाचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हुये। आपकी आचार्य परम्परा में जगद्गुरु निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री हरिव्यास देवाचार्य जी महाराज के द्वादश विरक्त शिष्यों में भी सर्वेश्वर प्रभू की सेवा सहित श्री परशुराम देवाचार्य जी महाराज श्री निम्बार्काचार्य पीठासीन हुये। आपकी ही आचार्य परम्परा में वर्तमान हमारा नाम है इसके अन्दर और निम्बार्काचार्य निम्बार्क तीर्थ, सलेमाबाद ही एक मात्र सम्प्रदाय के सर्वमान्य सर्वमूर्धन्य केवल एक मात्र आचार्य पीठ है ऐसे ही समस्त धर्माचार्यों ने परम्परागत मान्यता दी है एवं इसी प्रकार वर्तमान और भविष्य में भी यही अक्षुण रूपेण सर्वमान्य आचार्यपीठ है तथा रहेगी जिसकी प्राचीन प्रामाणिक पत्रावली श्री निम्बार्काचार्य पीठ में सुरक्षित है और इसके अतिरिक्त एतत् सम्बन्धी शोधकर्ताओं के शोध प्रबन्धों में भी पर्याप्त प्रामाणिक सामग्री विद्यमान है वैष्णव चतु: सम्प्रदाय के श्री महन्त, समस्त अनी अखाड़े, अखाड़ों के श्री महन्त, षट्दर्शन और खालसाओं के श्री महान्त, महन्त, महात्मा, मण्डलेश्वर, महामण्डलेश्वर एवं देश के विशिष्ट राजनेता तथा श्री निम्बार्क सम्प्रदाय के समस्त अनुयायी परम्परागत अखिल भारतीय निम्बार्काचार्य पीठ निम्बार्क तीर्थ (सलेमाबाद) पुष्कर क्षेत्र अजमेर राजस्थान को ही श्री निम्बार्क सम्प्रदाय की प्रमुख आचार्यपीठ मानते है। यदि कोई इस निम्बार्काचार्य पीठ के वर्चस्व को देखकर स्वयं को निम्बार्काचार्य बताकर धार्मिक जनता को भ्रमित करता है तो वह सर्वथा अमान्य एवं पूर्णत बहिष्कृत है। हम सभी हस्ताक्षर कर्ता अति पुरातन प्रामाणिक आलेखानुसार ही इस आलेख को प्रस्तुत कर प्राचीन परम्परा का सर्वांगीण रूपेण अनुपालन कर रहे हैं जो यही तथ्यपूर्ण सर्व सम्मत है। सुदर्शन चक्रावतार आद्याचार्य जगद्गुरु श्री भगवन्निम्बार्काचार्य की शतोत्तर पंञ्च सहस्त्राब्दी जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में समायोजित विराट् सनातन धर्म सम्मेलन में समवेतरूप से एकत्रित हम सभी धर्माचार्य आदि उपर्युक्त आलेख को पूर्णत: प्रमाणित करते है। नीचे कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा शुक्रवार विक्रम संम्वत् दो हजार इकसठ दिनांक छब्बीस नवम्बर सन दो हजार चार। इसमें अध्यक्ष स्वामी मंगलानन्द जी महाराज, भारत साधु समाज के हस्ताक्षर हैं और उसके महामन्त्री भारत साधु समाज के स्वामी श्री हरिनारायणानन्दजी उनके भी हैं, रैवासा, राघवाचार्य जी महाराज रैवासा पीठाधीश्वर उनके भी है, मुरारी बापू के भी हैं और हमारी जो मुख्यमंत्री वसुन्धरा जी है उनका भी है सभी का इसमें हस्ताक्षर और इधर हमारे स्वामी डीडवाना के और स्वामी श्री राघवानन्द जी महाराज राजराजेश्वरी धाम उनके भी हैं, निर्वाण अनी अखाड़ा के भी हैं और निर्मोही अखाड़ा के भी है, निर्वाणी-निर्मोही, दिगम्बर का भी हाल यहां पधारना नहीं हुआ उनके भी होंगे और उसके साथ में जो हमारी निम्बार्क महासभा है उसके अध्यक्ष महन्त श्री मुरली मनोहर शरण जी महाराज और इसके महामंत्री श्री वृदावन दासजी और व्रजमण्डल श्री महान्त श्री बालकदासजी महाराज और इत्यादिके अनेक।

अब अन्त में विराम लेते हुये हम पुन: यह चाहते है कि आज आप सभी यहां से आचार्य प्रवरों ने जो अपने भाव अभिव्यक्त किये हैं उनको हृदय में धारण करके और हमारे सनातन धर्म वैष्णव धर्म उसके प्रचुर प्रचार के लिए और अत्याचार, अनाचार, दुराचार दुर्विचार, के परिशमन के लिए, गोमाता की रक्षा के लिए, राम जन्भूमि, कृष्ण जन्मभूमि, भगवान् विश्वनाथ, इन सब स्थानों की सुरक्षा के लिए सर्वविध हम समग्र मनसा वाचा कर्मण, तन, मन, धन, से प्रवृत्त रहेंगे, इस संकल्प को अपने हृदय में धारण करके और इस आयोजन को कार्यान्वित करने के लिए, उसको सचेष्ट बनाने

के लिए, उसको पूर्णतः सफल बनाने के लिए अग्रसर हों ये हमारे हार्दिक वचन हैं। इन वचनों के साथ हम विराम लेते हैं, लेते हुये और साथ ही हमारे अभी जो आचार्य प्रवरों ने यहां पधार कर अपना समय दान देकर, जिस प्रकार कृपा की है यह इनकी कृपा का आभार प्रदर्शन हमारे पास पहले हम कह चुके हैं कि हमारे शब्द ही नहीं हैं, जिनको हम व्यक्त कर सकें परन्तु आप पुनः हम सब एक अनुभव विचित्र कर रहे हैं कि जब हम वहाँ से यहाँ आते हैं मन्दिर से इस मंच पर आते हैं और पुनः जाते हैं मार्ग में अनेक भगवत्जन मिलने के लिए उत्सुक रहते हैं। हम उन सब भक्तों को जो पधारे हुये भक्त उनसे हम समयाभाव के कारण से उनसे मिल नहीं पायें इसका हृदय में अत्यधिक सन्ताप है, गहरा सन्ताप है, सामान्य नहीं जो भक्त हृदय से, भावना से, उल्लास से इस महोत्सव में सम्मिलित हुये और उनकी आकांक्षा यह है कि हम दो मिनट पाँच मिनट बैठ कर अपने भाव या हम सन्मुख बैंठे ऐसा भी हम समयनहीं दे सके यदि हम उधर लगते, इस मंच पर आना संभव नही होता है इस दृष्टि से हम ये चाह रहे हैं कि भक्तो का और आचार्यप्रवरों का और सन्त महात्माओं का सबका हृदय नवनीत समान कोमल होता है इसलिए वो हमारे पास तो एक ही वचन है।

क्वेदं वपुः क्वचवयः सुकुमारमेतत्, क्वेताः प्रमत्तकृत दारुण यातनास्ते। नालोकितं विषयमेतदभूत पूर्वं क्षन्तव्यमङ्ग यदि मे समय विलम्बः।।

यदि ऐसे हमारे से कोई भी किसी प्रकार की भी त्रुटि हुई हो उसके लिए एक मात्र क्षमा ही साधन है दूसरा कोई और उपाय नहीं, तो इन्हीं वचनों के साथ हम विराम लेते हैं।

श्री महामण्डलेश्वर महन्त श्री मुरली मनोहर शरण शास्त्री जी महाराज

अखिल भारतीय निम्बार्काचार्यपीठ की ओर से, भक्तों की ओर से भी, हम सबकी ओर से, आचार्य श्री शंकराचार्यजी महाराज का सादर अभिनन्दन, बोलिये शंकराचार्य भगवान् की जय हो॥

पूज्य श्रीजी महाराज स्वयं खड़े होकर (क्या अद्भुत दृश्य है) निम्बार्काचार्य, शंकराचार्य दोनों खड़े हैं आदान प्रदान हो रहा है, आदर का भावों का, यह दृश्य सनातन धर्म में कहीं अन्यत्र देखने के नहीं मिलते जो यहां देखने को मिले हैं। पूज्य क्षमारामजी महाराज और पूज्य पुरुषोत्तम जी महाराज भी साथ है इन सब दिव्य विभूतियों का एक साथ चित्राकंन हो रहा है। इस अद्भुत दृश्य का मूल्याकंन बहुत जरुरी है।

मैं अपनी और से, मैं मुरलीमनोहर शरण मेवाड़ महामण्डलेश्वर तो हूँ या नहीं, लेकिन मुरलीमनोहर शरण तो हूँ। इस स्वागत समिति के पदाधिकारियों, कार्यक्रम समिति के पदाधिकारियें, सदस्यो, सेवको भक्तों को भी अपनी ओर से, बहुत बहुत साधुवाद देना चाहता हूँ। उन्होंने दस दिन तक हमारा पूरा साथ दिया, हमें पूरा योगदान दिया, मैं उनका बहुत बहुत कृतज्ञ हूँ। श्रीजी महाराज का स्टाफ, श्रीजी महाराज के सन्त महात्मा उन लोगों ने भी मुझे बहुत साथ दिया उनका भी मैं आभार प्रकट करना चाहता हूँ। हमारे पण्डित दयाशंकर जी, हमारे पण्डित वासुदेवशरण जी इत्यादि.....। पूज्य श्री चरणों ने कार्यक्रम को संचालन करने की अनुमति प्रदान की, यहां खड़े रहने का मौका दिया, कुछ बोलना सिखाया इसके लिए पूज्य श्री चरणों का भी कृतज्ञतापूर्वक प्रणाम करता हुआ, अपनी बात को समाप्त करता हूँ और आपको साधुवाद देता हूँ, मंच अब मैं स्वागत समिति को सौंपना चाहता हूँ आप सबको बहुत बहुत धन्यवाद बहुत बहुत धन्यवाद॥

❑❑❑

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य प्राकट्य धाम, मूंगी पैठन, अहमदनगर, महाराष्ट्र

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य तपस्थली, नीम्बग्राम, गोवर्धन, मथुरा, उत्तर प्रदेश

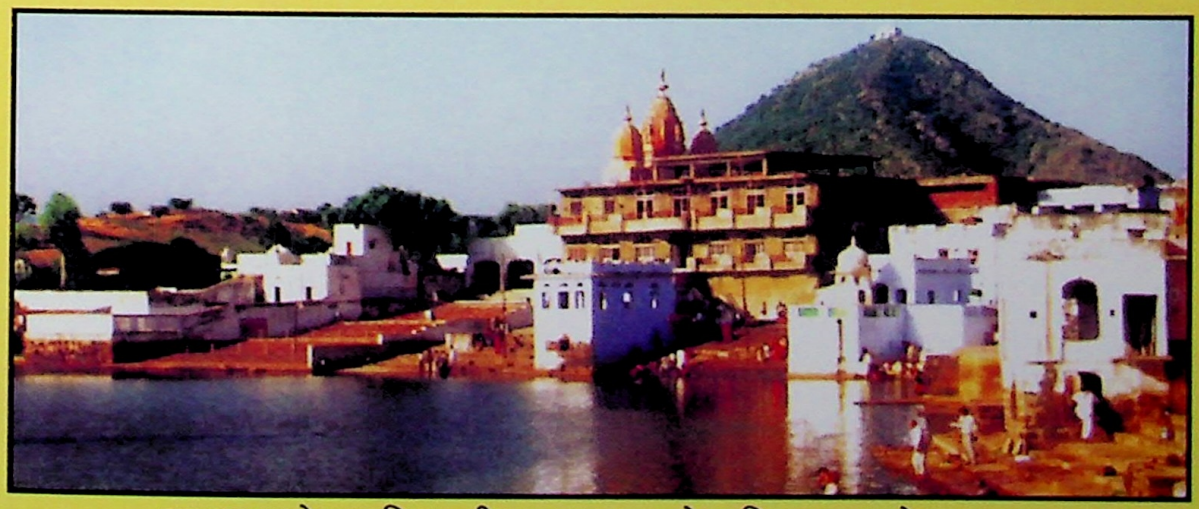

पुष्करराज के तट स्थित श्रीपरशुराम द्वारा के मन्दिर कर मनोरम दृश्य।

प्रकाशक :

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य 5100वां जयन्ती महोत्सव समिति

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्क तीर्थ-सलेमाबाद, किशनगढ़, पुष्करक्षेत्र, जिला-अजमेर (राज.) भारत

दूरभाष : 01497-227831, फैक्स : 227921, मोबाईल : 94143 65775

Jaipur Printing Center # 0141-2751522